In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

→ TO TRASLATOR
SHRI AVDESH
Mob: 981807-120
Aurvedic Congress
Punjabi BAGH.

गुरबान्गुली
बेरदीमुहामेदोव

तुर्कमेनिस्तान के औषधीय पौधे

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

गुरबान्गुली
बेरदीमुहामेदोव

तुर्कमेनिस्तान के औषधीय पौधे

I

Ashgabat
2009

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

प्रस्तावना

मातृभूमि और यहाँ की जनता के प्रति मेरे असीम प्रेम, अपने पिता एवं पितामहों के प्रति आराधना और अपनी माता के दूध की लाज ने मुझे इस ग्रन्थ की रचना के लिए प्रेरित किया। यह कार्य न केवल चिकित्सा विज्ञान और औषध निर्माण के विशेषज्ञों के लिये है अपितु इसका निर्माण हमारे देश की वनस्पतियों एवं प्राचीन परम्परागत चिकित्सा विज्ञान के विषय में जानकारी प्राप्त करने के इच्छुक सभी पाठकों के लिये हुआ है।

चिकित्सा विद्यालय के एक छात्र के रूप में मेरे मन में यह जिज्ञासा हुई कि मैं प्रकृति में उपलब्ध पौधों के विषय में गहन अध्ययन करूँ और तब से औषधीय पौधों के माध्यम से चिकित्सा सेवा का चिकित्सक बना और फिर तुर्कमेनिस्तान में स्वास्थ्य सेवा का संगठन किया और अनेक वर्षों तक इस कार्य की देख-रेख की। हमारे राष्ट्रीय ग्रामीण चिकित्सकों (तवीबों) तथा प्राचीन समय में हमारे उच्च स्तर के वैज्ञानिकों एवं चिकित्सकों के समृद्ध एवं परम्परागत ज्ञान का हमने अध्ययन किया। इसके द्वारा हमने अपने देशवासियों द्वारा विभिन्न प्रकार के उनके अनुभव और अपनी मातृभूमि में किये गये वुद्धिमत्तापूर्ण कार्यों की जानकारी प्राप्त की।

हमारे पूर्वजों ने औषधीय पौधों की सहायता से पहला प्राकृतिक औषध भण्डार बनाया। उन्होंने प्रकृति प्रदत्त स्वास्थ्यवर्धक चीजों, वृक्ष, पौधे और झाड़ियों के अंगों का उपयोग किया। मानवों ने देखा कि कई घरेलू जानवर जैसे बिल्ली और कुत्ते इन पौधों के उपयोग से कई बीमारियों से मुक्त हो जाते हैं। शिकारियों ने पाया कि घायल भेड़ लाल रंग के पौधे को खाकर घाव से छुटकारा पाते हैं अतः इन्हें रक्तरोधक समझा।

हमारे पूर्वज गहराई से ज्ञान प्राप्त करने वाले बुद्धिमान और विचारशील थे और उन्होंने समझा की सजीव और निर्जीव वस्तुओं के मिलन में वनस्पतियों की भूमिका मध्यस्थ के रूप में भूमि, जल और सूर्य की ऊर्जा से संश्लेषित कार्बनडाइऔक्साइड जैसे निरिन्द्रिय पदार्थों से आवश्यक सेन्द्रिय तत्वों को पैदा करना है। ये पौधे संयोग होने पर कार्बोहाइड्रेट (शर्करा एवं स्टार्च), ग्लाइकोसाइड्स, लिग्निन, सेल्युलोज, इथेरियल तैल, टैनीन तथा अन्य नाइट्रोजेनीय तत्वों, एमिनो एसिड, अमाइड्स, अमाइन्स, प्यूरिन्स, न्यूक्लियोसाइड्स एवं अल्कालायड्य आदि तत्वों को अपने अन्दर आत्मसात कर लेते हैं जिनका औषधीय उपयोग है।

अनेक औषधीय पौधों का चिकित्सकीय उपयोग में वैज्ञानिक चिकित्सा पद्धति ने माना है।

रसायन विज्ञान के विकास तेजी ही से होने और रासायनिक पद्धति द्वारा अनेक औषधियाँ शीघ्रता से तैयार की जाने के बावजूद औषधीय पौधों की उपयोगिता बनी हुई है। आधी से अधिक औषध औषधीय पौधों से तैयार की जाती हैं। अनेक रोगों की चिकित्सा में कल्पनाएॅ, इनमें से कुछ केवल वैद्यक उपचार है। यह स्वाभाविक भी है क्योंकि किसी भी जीवनीय तत्व की तरह मनुष्य भी अनिवार्य रूप से पौधों से जुड़ा हुआ है।

इसके साथ ही पौधों के क्रियाशील तत्वों की खोज करना रासायनिक तत्वों से खोज के मुकाबले अधिक कठिन है। यह न केवल स्थानिक अवस्थाओं, ॠतुजन्य परिस्थितियों, जल की स्थिति, मिट्टी का संगठन आदि द्वारा ज्ञात किया जा सकता है, अपितु वंशानुगत और पौधों के जैवरासायनिक तत्वों पर भी निर्भर करता है।

पौधों में उपस्थित क्रियाशील तत्वों की मात्रा पौधों की अवस्था और औषधगुणधर्मीय तत्वों का उसकी परिपक्वता पर निर्भर करता है। यह भी आवश्यक है कि पौधों का संग्रहण एवं संचयन करते समय विशेषतः उनके सुखाने के समय संभावित किण्वकीय प्रक्रियाओं को ध्यान में रखा जाय।

अपक्व औषधीय पौधों को सुखाने और भण्डारण की प्रक्रिया में गलती होने पर इनके औषधीय तत्व समाप्त होने की संभावना रहती है। इसलिये यह आवश्यक है कि अति प्रचलित औषध निर्माण प्रक्रिया जैसे फाण्ट, क्वाथ के बनाने की सही विधि का ज्ञान हो। एक चिकित्सक जब औषधीय पौधे के प्रयोग का निर्देश देता है तो उसे

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

वनस्पति विज्ञान, औषधीय रसायन विज्ञान, औषध गुणधर्म विज्ञान, औषध का रोग पर प्रभाव अर्थात् औषधीय पौधों द्वारा रोग पर होने वाले असर और रोग के निर्मूल होने की संभावना तथा कई रोगों पर होने वाले इसके प्रभाव का ज्ञान होना आवश्यक है।

सैकड़ों औषधीय पौधों का रोगों पर होने वाले प्रभाव का विवरण वैज्ञानिक चिकित्सा में वर्णित है परन्तु उनमें से अनेकों का परीक्षण नहीं किया जा सका है।

वैज्ञानिक चिकित्सा पद्धति में 100 से अधिक औषधीय पौधों का वर्णन है जबकि लोक चिकित्सा में 2000 औषधीय पौधे उपयोग में लाये जा रहे हैं।

मैं जब अपने देश की स्वास्थ्य रक्षा का प्रधान था तब हमने वानस्पतिक चिकित्सा को पूर्ण वैज्ञानिक आधार देने का लक्ष्य रखा था जिससे इसकी तार्किक व्याख्या की जा सके।

सन् 1999 में तुर्कमेनिस्तान में राष्ट्रीय औषधीय उत्पादन संस्थान की स्थापना हुई। हमारे देश में पैदा होने वाले औषधीय पौधों का गहन अध्ययन और मौलिक औषधों का निर्माण कार्य इस संस्थान को निर्धारित किया गया था।

मैं विशेष रूप से कहना चाहूँगा कि वानस्पतिक चिकित्सा विज्ञान जो चिकित्सा का प्राचीनतम क्षेत्र है उसे अति उत्तरदायी दिशा देने के लिये न केवल चिकित्सक और औषध निर्माणकर्ताओं अपितु अन्य क्षेत्र के विशेषज्ञों, वनस्पति वैज्ञानिकों, कृषि वैज्ञानिकों, जैवरसायनिकों एवं औषधीय पौधों का संग्रह एवं आपूर्ति कर्ताओं को सही दिशा में नियन्त्रित करने की आवश्यकता है। यह देखा गया है कि अक्सर बडी मात्रा में ये पौधे जमा किये जाते हैं और नष्ट कर दिये जाते हैं। इससे प्रकृति का सन्तुलन बिगड़ता है, औषधीय पौधों की संख्या में कमी आ जाती है और अनेक प्रकार के पौधे समाप्त हो जाते हैं। तुर्कमेनिस्तान के लाल किताब में 27 ऐसे लुप्तप्राय पौधों का विवरण दिया गया है।

इस संस्करण के लेखक के नाते मेरा कार्य चिकित्सा कर्मियों, कच्चे औषधियों के संग्राहकों को और उन सभी व्यक्तियों जो वानस्पतिक क्षेत्र में कार्यरत हैं उनका औषधीय पौधों के विषय में ज्ञान संवर्धन, उनके पैदा होने वाले स्थान एवं स्थिति की जानकारी देना, उनके रासायनिक संघटन, चिकित्सा में इनके उपयोग का इतिहास बताना, उनके नाम और प्राप्त करने की विधि एवं सुरक्षित रखने और भण्डारण के तरीके की जानकारी से अवगत कराना है।

मैं आशा करता हूँ कि मेरा यह कार्य पाठकों को तुर्कमेनिस्तान की विशिष्ट प्रकृति और मानव एवं उसके स्वास्थ्य के लिये वानस्पतिक मान्यताओं के विषय में ज्ञान प्राप्त करने में सहायक हो सकेगा।

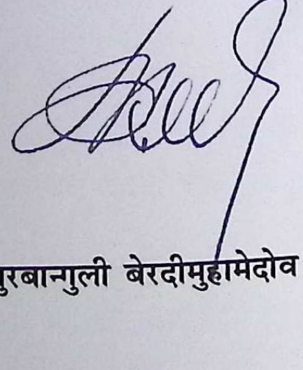

गुरबान्गुली बेरदीमुहामेदोव

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

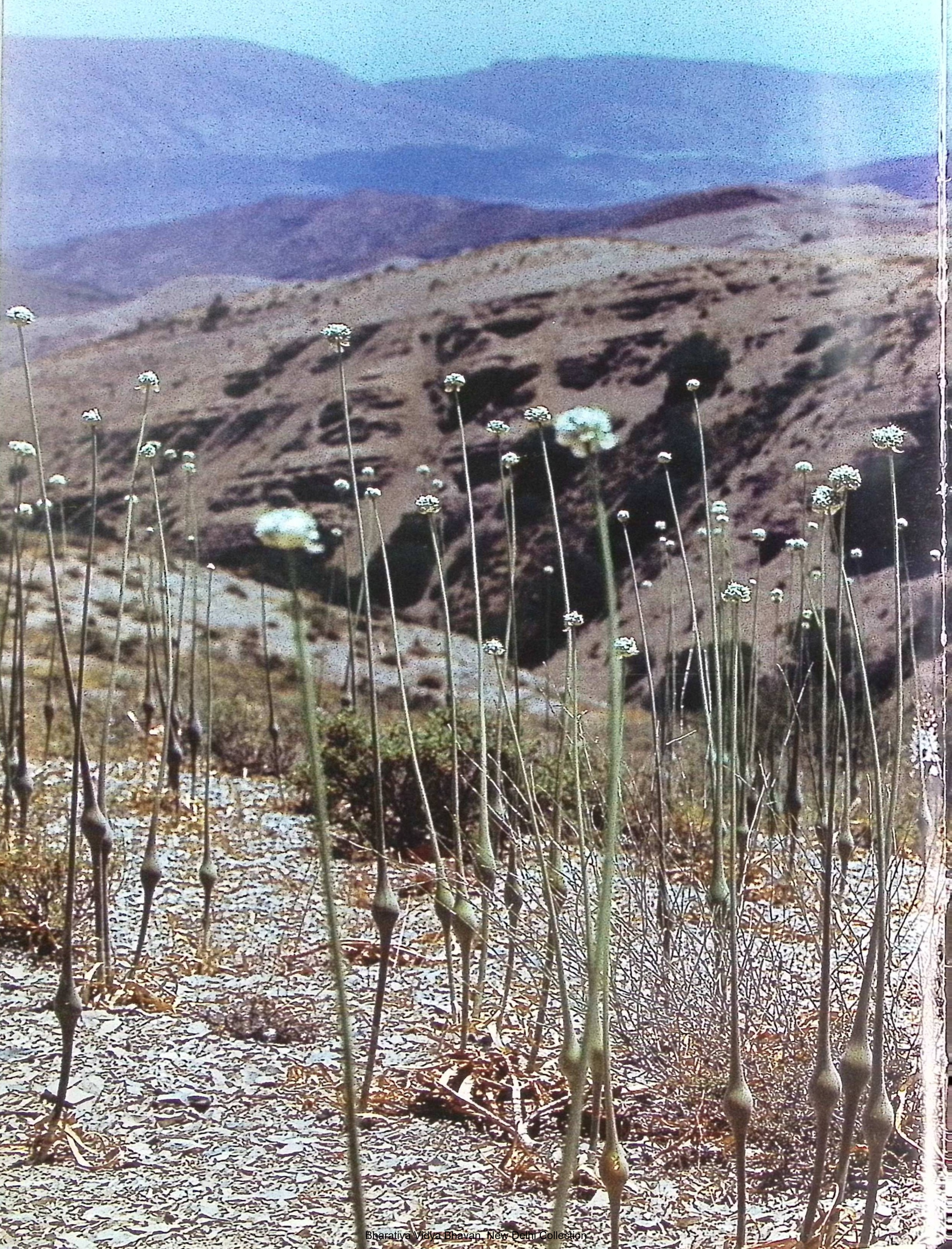

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

Ministry of Health and Medical Industry of Turkmenistan.

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

तुर्कमेनिस्तान में स्वास्थ्य सेवाः
जनता के स्वास्थ्य द्वारा राष्ट्र का स्वास्थ्य निर्माण

नये ऐतिहासिक युग के साथ जुड़े हुए वैश्विक परिवर्तन के मध्य तुर्कमेनिस्तान का नेतृत्व करते हुए और मुझे सौंपी गई जिम्मेदारी का गहराई से अनुभव करते हुए मैं नियति का आभारी हूँ कि मेरे कंधों पर सार्वजनिक स्वास्थ्य सेवाओं का गहन क्रियाशील अनुभव है जिसने मेरे द्वारा शुरू किये गये किसी भी कार्यक्रम को तार्किक अंत तक पहुँचाने की आदत डाली है। वास्तव में रोगी की सफल चिकित्सा किये बिना बीच रास्ते में एक चिकित्सक रुक नहीं सकता और रुकता भी नहीं; चिकित्सा विज्ञान की ऐसी व्यावसायिक मर्यादा है।

घरेलू सार्वजनिक स्वास्थ्य सेवाओं में और उसके पश्चात् देश में उचित समय पर ऊपर उठते हुए मैंने ये व्यावसायिक चिकित्सकीय सिद्धान्त और विश्वास, जिसने मुझमें देश के शारीरिक एवं आध्यात्मिक स्वास्थ्य की जिम्मेदारी सौंपी है, को राजकीय कार्य में परिवर्तित किया है और देश का संपूर्णतः सम्मिलित स्वास्थ्य प्रत्येक व्यक्ति का स्वास्थ्य होने से उसने, राजकीय प्रमुख के पद पर मेरे प्रत्येक कार्य को परिमार्जित किया है। व्यक्ति का स्वस्थ बना रहना ही स्वास्थ्य का मुख्य उद्देश्य है, जिसको मैंने सर्वोच्च प्राथमिकता वाला राजकीय कार्यक्रम घोषित किया है और उसकी प्राप्ति के लिये उसमें देश का विपुल सामर्थ्य एवं शीघ्र गति से बढ़नेवाली अर्थव्यवस्था के अवसर शामिल हैं। देश की सार्वजनिक स्वास्थ्य सेवाओं में आवश्यक परिवर्तन को ध्यान में रखते हुए अगर मुझे प्राथमिकता देनी थी तो मैंने सुधार की गति को जारी रखा है। ये सुधार बहुत पहले शुरू हो चुके थे और 1995 में राष्ट्रीय कार्यक्रम ''स्वास्थ्य'' (Health) में सुदृढ़ हो चुके थे।

कार्यक्रम विकसित करने के मध्य परिस्थितियों का गहन मूल्यांकन किया गया और इसके परिणाम स्वरूप सार्वजनिक स्वास्थ्य सेवाओं में सुधार की प्राथमिकता निर्धारित की गई। कार्यक्रम की प्राप्ति के पथ पर बढ़ते हुए यह कहना पर्याप्त होगा कि तुर्कमेनिस्तान के कई कानून, जो घरेलू आयुर्विज्ञान की संपूर्ण सिद्धि के प्रति पूर्व निर्देशित हैं, वे पारित किये गये। इनमें नागरिकों के स्वास्थ्य रक्षण पर चिकित्सकीय व्यवसाय एवं औषधीय संरक्षण पर खाद्य पदार्थों की गुणवत्ता एवं सुरक्षा पर नशीली दवाएँ, मनोत्तेजित करने वाले (psychotropic) पदार्थ, पुरोवर्ती और उसके गैरकानूनी संचरण को रोकने के उपाय पर ह्युमन इम्यूनोडेफिसीअन्सी वायरस (HIV) संक्रमण से उत्पन्न होने वाले रोगों के निवारण पर और सार्वजनिक स्वास्थ्य सेवाओं के स्वरूप में मूल रूप से सुधार उपलब्ध करवाने वाले अन्य कई कानून शामिल हैं।

जनवरी 1, 1996 में स्वैच्छिक स्वास्थ्य बीमा प्रारम्भ किया गया। चिकित्सकीय सेवायें सुधारने के लिये एवं नागरिकों को सामाजिक सुरक्षा सुनिश्चित करवाने के लिये यह एक महत्वपूर्ण कदम था। तुर्कमेनिस्तान के नये कानून ''स्वास्थ्य संरक्षण '' के अनुसार स्वैच्छिक स्वास्थ्य बीमा के दर को वेतन, छात्रवृत्ति, पेन्शन, भत्ता एवं आमदनी का 2% तक नीचे लाया गया है, और जिसके पास नियमित आय नहीं है ऐसे नागरिकों के लिये यह स्थापित प्राथमिक बीमा रकम रखी गयी है। स्वास्थ्य बीमा तुर्कमेनिस्तान के 16 साल से कम उम्र के बालकों तथा आश्रितों सहित नागरिकों को औषधियाँ (128 चीज़ें) और औषध उत्पाद 90% छूट के साथ खरीदने देता है। इन श्रेणियों के नागरिकों को बजट संबंधित व स्वयंधारी रुग्ण सेवा संस्थानों में सभी भुगतान वाली चिकित्सकीय सेवायें 50% छूट के साथ उपलब्ध कराई जाती हैं। साथ ही इन श्रेणियों के नागरिक, इन्हें साल में एक बार तुर्कमेनिस्तान का स्वास्थ्य एवं औषध उद्योग मंत्रालय (Ministry of Health & Medical Industry of Turkmenistan) के आरोग्य निवास और स्पा संस्थानों में 50% की छूट पर निवास कर सकते हैं। स्वास्थ्य बीमा कार्यक्रम में आज तक 92% जनता को शामिल किया गया है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

विश्व स्वास्थ्य संगठन/युरोप कार्यक्रम स्वास्थ्य 21, में विश्व स्वास्थ्य संगठन के यूरोपीय क्षेत्र की नीति सबके लिये स्वास्थ्य की रूपरेखा निर्धारित करता है कि युरोपियन क्षेत्र के सभी राष्ट्र समान पहुँच, एकता एवं सर्वोत्कृष्ट गुणवत्ता के आधार पर आर्थिक प्रबंधन और संसाधन के वितरण की चिरस्थायी व्यवस्था विकसित करें।

इसलिये स्वैच्छिक स्वास्थ्य बीमा के प्रस्तुतीकरण के बाद हमारा देश मिश्रित स्वास्थ्य बजट तथा बीमा आर्थिक प्रबन्धन की ओर अग्रसर हुआ। राष्ट्रीय स्वास्थ्य कार्यक्रम को लागू करने के लिये, तुर्कमेन स्वास्थ्य रक्षा एवं औषध उद्योग को सहायता करने के लिये तथा नागरिकों एवं स्वास्थ्य संस्थानों को औषध प्राप्ति की व्यवस्था सुधारने के लिये 1996 में राजकीय स्वास्थ्य सेवा विकास निधि स्थापित किया गया।

इस निधि का उद्देश्य औषध एवं औषध उत्पाद को बीमा औषध निर्देश पर 90% छूट के साथ खरीदना तथा बीमा-प्राप्त व्यक्तियों के अधिमान्य स्वास्थ्य सेवाओं पर किये गये खर्च को प्राप्त करना है। स्वास्थ्य सेवा संस्थानों व औषधीय उद्योग के निर्माण, पुननिर्माण तथा तकनीकी आधुनिकीकरण, विशाल स्तर अनुसंधान गतिविधि, स्वास्थ्य कार्यक्रम तथा औषध उद्योग के आर्थिक अनुदान के लिये खर्च की गई विदेशी कर्ज के किश्तों के भुगतान का और आयुर्विज्ञान संस्थानों को प्रभावपूर्ण रूप से चलाने के लिये वित्तीय रूप से प्रोत्साहित करने में स्वास्थ्य सेवा विकास निधि का उपयोग किया जाता है।

उदाहरणतः स्वास्थ्यसेवा विकास निधि का उपयोग एम्ब्युलेन्स कारें खरीदने के लिये, अति आधुनिक चिकित्सा केन्द्रों तथा स्वास्थ्य एवं औषध मंत्रालय के प्रशासन भवन के निर्माण के लिये और चिकित्सा सेवा के कर्मचारिओं की सामाजिक सुविधाओं के लिये किया जाना है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

आजादी के प्रारंभिक दिनों से ही प्राथमिक स्वास्थ्य सेवा एवं टीकाकरण सहित क्षेत्र की व्याधियों की रोकथाम तथा जनता के प्रभावपूर्ण चिकित्सकीय परीक्षण के साथ इसका विशिष्ट महत्व जुड़ा हुआ है। राष्ट्रीय स्वास्थ्य सेवा प्रणाली बनाते समय व्याधि की रोकथाम के मुद्दे विशेष महत्व के हैं, अर्थात् विविध व्याधियों के कारण होने वाले विपरीत सामाजिक एवं आर्थिक प्रभाव को कम करना, समाज के विविध स्तरों का स्वास्थ्य सुधारना तथा जीवन संभावना (Life expectancy) को बढ़ाना है। राष्ट्रीय स्तर पर अपनाये गये कई रोग रोकथाम कार्यक्रम उपरोक्त कथन के उदाहरण स्वरूप हैं। गलघोंटू, कुक्कुर खाँसी, बाल पक्षाघात तथा क्षय के लिये सामान्य टीकाकरण उपलब्ध कराने वाले जो राष्ट्रीय कार्यक्रम हैं उनका विस्तार किया गया है तथा संक्रमणजन्य व्याधियों को रोकने के लिये अनुमोदित भी किया गया है। 2002 में तुर्कमेनिस्तान को अपने क्षेत्र में वाईल्ड पोलियो वायरस का संचरण रोकने वाले देश के रूप में प्रमाणपत्र दिया गया है। 2003 में 2003 से 2020 तक के इम्युनोप्रोफाइलेक्सिस कार्यक्रम का अनुमोदन किया गया है। 1 साल से छोटे शिशुओं का वायरस बी हीपेटाइटिस के विरुद्ध टीकाकरण राष्ट्रीय रोकथाम टीकाकरण कार्यक्रम का अंग है।

आयोडीन की कमी के निर्मूलन की उपलब्धि की निर्विवाद स्वीकृति है-संयुक्त राष्ट्र बाल निधि, विश्व स्वास्थ्य संगठन तथा आयोडिन की कमी जन्य व्याधियों के निवारण के लिये अंतराष्ट्रीय परिषद् द्वारा दिया गया प्रमाणपत्र कि तुर्कमेनिस्तान मध्य एशिया के देशों में प्रथम देश तथा विश्व में चौथा देश है जिसने अंतराष्ट्रीय मानक के अनुसार वैश्वीय नमक आयोडीनीकरण (Universal salt iodination) सुनिश्चित किया है।

1997 से एक्यूट पेरेलाइटिक पोलीयोमायोलाइटिस के रोगी तुर्कमेनिस्तान में नहीं मिले हैं। 2002 में युरोपीयन डबल्यु. एच.ओ. कार्यालय ने तुर्कमेनिस्तान को पोलियो रहित प्रमाणित किया है। ड्रेकनक्युलोसिस भी समाप्त किया गया है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

S.A. Niyazov International Medical Centre.

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

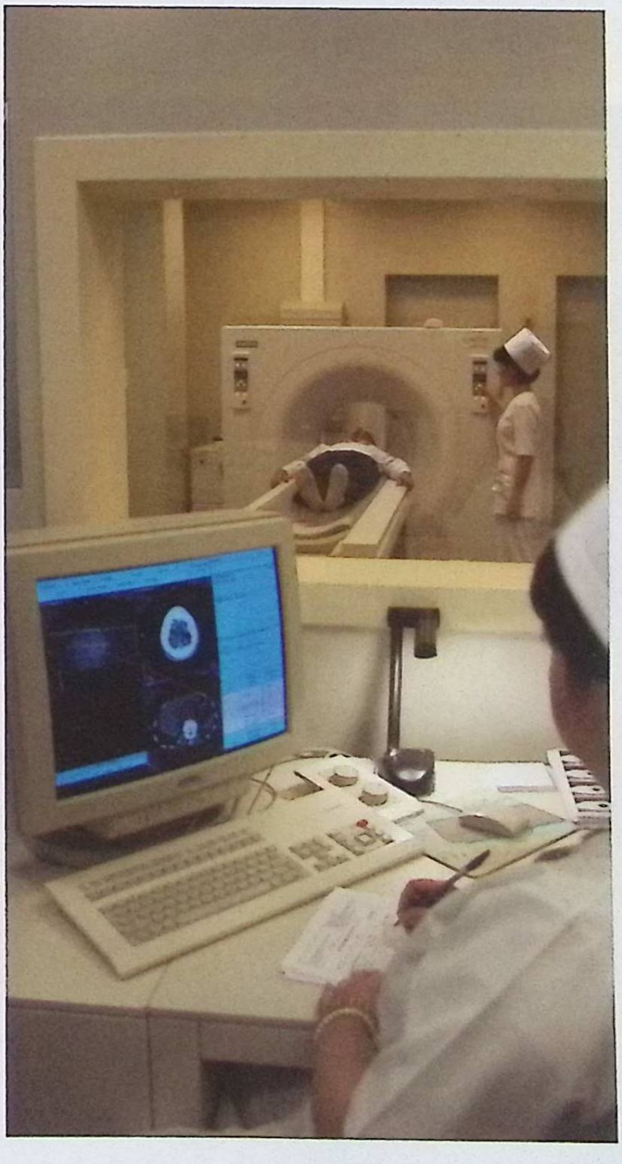

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

फरवरी 1996 से तुर्कमेनिस्तान नशीली दवाईयों एवं मनोत्तेजक पदार्थों के अवैध यातायात के विरुद्ध तीन यू एन सम्मेलनों से जुड़ा हुआ है। नशीली दवाईयों का दुरुपयोग एवं यातायात नियंत्रण के लिये तथा औषध दुरुपयोग को रोकने की अंतर्राष्ट्रीय प्रतिबद्धता को पूर्ण करने के लिये तुर्कमेनिस्तान के मंत्रियों के मंत्रालय (Cabinet of Ministers of Turkmenistan) के अधीन औषध पर राजकीय आयोग स्थापित किया गया।

मई 1996 में तुर्कमेनिस्तान ने मध्य एशियाई राष्ट्रों के साथ औषध नियंत्रण में प्रांतीय सहयोग हेतु समझौते पर हस्ताक्षर किया है। जून 1998 में विश्व औषध समस्या (World drug problem) पर हुई संयुक्त राष्ट्र सामान्य सभा के विशिष्ट अधिवेशन में तुर्कमेनिस्तान ने राजकीय उद्घोषणा पर अपने हस्ताक्षर किये हैं। अक्टूबर 9, 2004 में तुर्कमेनिस्तान ने ''नशीली दवाईयाँ, मनोत्तेजक पदार्थ, प्रीकर्सर्स (पूर्ववर्ती रोग लक्षण) एवं अवैध यातायात के निरोध पर'' बने कानून को अपनाया।

देश में नशीली दवाईयाँ, मनोत्तेजक पदार्थों तथा (प्रीकर्सर्स) पुरोवर्ती एवं अवैध यातायात को नियंत्रण करने वाले कार्य का विस्तार करने के लिये तथा इस दिशा में अंतर्राष्ट्रीय प्रतिबद्धता को प्रयोग में लाने के लिये जनवरी 2008 में तुर्कमेनिस्तान की राजकीय औषध सेवा को स्थापित किया गया। नवीन रूप से स्थापित संस्थान के प्राथमिक झुकाव में निषिद्ध और दूसरे स्वरूप के गैरकानूनी औषध यातायात को रोकना, नशीले पौधों की गैरकानूनी खेती को रोकना एवं नशीले औषध-संबंधित अपराधों को रोकना आदि शामिल हैं।

1998 से क्षय निवारण कार्यक्रम को डबल्यु.एच.ओ. की डॉट्स (DOTS) प्रणाली योजना के अधीन लागू किया गया है, 2005-2009 क्षय रोकथाम योजना को पारित किया गया। तुर्कमेनिस्तान के मंत्रियों के मंत्रालय ने अप्रैल 27, 2005 को राष्ट्रीय क्षय निवारण कार्यक्रम एवं 2005-2010 HIV/AIDS/STD रोकथाम कार्यक्रम का समर्थन किया।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

अधिक प्रभावी रोग निवारक कार्य की सुनिश्चिति के लिये सबसे अच्छी अंतर्राष्ट्रीय अभ्यास का अध्ययन करके उसे लागू किया गया। तुर्कमेनिस्तान के स्वास्थ्य एवं औषध उद्योग मंत्रालय ने अनेक अंतर्राष्ट्रीय संस्थानों से संबंध स्थापित किये। तुर्कमेन के चिकित्सा व्यवसायी संयुक्त राष्ट्र बालनिधि, संयुक्त राष्ट्र प्रजानिधि, विश्व स्वास्थ्य संगठन तथा अन्य कई संगठनों के साथ भागीदारी करते हैं। अंतर्राष्ट्रीय सहकार के विकसित होने से राष्ट्रीय कार्यक्रम HIV/AIDS की रोकथाम, खून की कमी की रोकथाम व नियंत्रण, स्तनपान, प्रजनन स्वास्थ्य, तीव्र हैजा संक्रमण नियंत्रण, बाल व्याधियों के एकीकृत प्रबंध, सुरक्षित मातृत्व, तीव्र श्वसन व्याधियों का नियंत्रण आदि सफलतापूर्वक अमल में लाये गये। ये कार्यक्रम व्याधि की चिकित्सा तथा उसके रोकथाम के कार्य को सुधारने के लिये तथा उच्च परिणाम प्राप्त करने में मदद करते हैं।

राजकीय सफाई एवं जानपदिक रोग विज्ञान संबंधी सेवा को पुनः संगठित किया गया जो सफाई तथा जनपदिक रोग विज्ञान संबंधित विषयों का अवलोकन करते हैं और आयात तथा निर्यात उत्पादों को प्रमाणपत्र देते हैं।

व्याधि की रोकथाम के सर्वोत्तम प्राथमिकता वाले सुधार को प्राथमिक स्वास्थ्य सेवा के प्रबंधन के लिये परिवर्तित होना पड़ा। परिणाम स्वरूप 1996 में पारिवारिक चिकित्सा (Family Medicine) की शुरूआत की गई। स्वास्थ्य एवं औषध उद्योग मंत्रालय ने पारिवारिक चिकित्सा पर संवैधानिक कानून बनाये व पारित किये जिसके द्वारा चिकित्सकीय एवं व्याधि की रोकथाम की सेवायें प्रदान करने वाले पारिवारिक चिकित्सकों एवं नर्सों की जिम्मेदारी स्पष्टतः नियत्रंण करने वाली है।

पिछले सालों में स्वास्थ्य सेवा पद्धति द्वारा अंतरंग रोगी सेवा प्रदान करने पर ध्यान दिया गया था जो प्राथमिक स्वास्थ्य सेवा प्रभावशाली ढंग से कार्य करने के विरुद्ध पक्षपातपूर्ण रहा। साथ ही प्राथमिक स्वास्थ्य सेवा ने मुख्यतः व्याधि की

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

चिकित्सा को महत्व दिया जबकि व्याधि की रोकथाम तथा स्वस्थ जीवनचर्या का प्रसार करने वाले स्वास्थ्य शिक्षण को उपेक्षित किया गया। परिणामतः धूम्रपान, नशीली दवाईयाँ और मदिरा का दुरुपयोग, पोषण का अभाव एवं अस्वस्थ जीवनचर्या के कारण उत्पन्न व्याधियों की संख्या देश में बढ़ गयी। इसीलिये राष्ट्रीय स्वास्थ्य कार्यक्रम ने राष्ट्रीय स्वास्थ्य पद्धति विकसित करते समय प्राथमिक सुझावों को पहचाना, जिनमें व्याधि की रोकथाम में वृद्धि एवं स्वस्थ जीवनचर्या का प्रसार, सफाई, शिक्षा, तथा प्राथमिक चिकित्सा सेवा की उन्नति के द्वारा व्यक्ति एवं प्रजा के प्रति जिम्मेदारी बढ़ाना शामिल है।

संवैधानिक कानूनों के अनुसार प्राथमिक चिकित्सा सेवा को अशखाबाद तथा अन्य प्रांतों में पारिवारिक सिद्धांतों (Family principles) पर अपनाया गया। इसके अतिरिक्त बहुक्षेत्रीय विशेषज्ञों की शिक्षा हेतु उच्च आयुर्विज्ञान संस्थान के शैक्षणिक पाठ्यक्रमों एवं कार्यक्रमों का उन्नयन किया गया। तुर्कमेन राजकीय आयुर्विज्ञान संस्थान के स्नातक स्तर के विद्यार्थियों को पारिवारिक चिकित्सकों के रूप में प्रशिक्षित किया गया। पारिवारिक चिकित्सा एवं बाल सेवा विभाग को पारिवारिक चिकित्सकों के प्रशिक्षण के लिये तथा जो विशेषज्ञ पहले जिला बाल रोग विशेषज्ञों तथा चिकित्सकों के रूप में कार्य कर रहे थे, उन्हें पुनः प्रशिक्षित किया गया।

पारिवारिक चिकित्सा के अभ्यास का विश्लेषण करने से, जनसमुदाय को चिकित्सकीय सेवा उपलब्ध करवाने में उसकी विशिष्टता देखी गई। पारिवारिक चिकित्सक तथा जिला परिचारिकाओं ने संक्रमण, हृदय एवं रक्तवह संस्थानगत व्याधियों तथा कैन्सर को रोकने के उपाय को, और स्वस्थ जीवनचर्या के प्रसार के लिये सफाई एवं स्वास्थ्य शिक्षा को मजबूत किया तथा मदिरा, औषधों का दुरुपयोग और धूम्रपान जैसे हानिकारक घटकों को कम करने के प्रयास मजबूत किये गये। स्वास्थ्य का रक्षण करना, व्याधियों की रोकथाम करना एवं कोई विशिष्ट जिले के जनसमुदाय को उत्कृष्ट योग्यता

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

वाली प्राथमिक औषधीय सहायता प्रदान करना एक पारिवारिक चिकित्सक के मुख्य कार्य हैं। पारिवारिक चिकित्सकों के प्रभावशाली कार्यों ने विविध आयु श्रेणियों में व्याधि के दर को कम किया है।

स्वास्थ्य सेवा सुधार का उद्देश्य छोटे स्तर एवं प्रभावहीन चिकित्सकीय संस्थानों से लेकर बड़े बहुविभागीय अस्पतालों के समूह को पुनः संगठित करना है। जनसमुदाय को विशिष्ट चिकित्सकीय सेवायें उपलब्ध करवाने के लिये बहुविभागीय एवं विशेषीकृत अस्पतालों तथा मातृत्व एवं शिशु सेवा अस्पतालों की स्थापना की गई।

एक वेलायत (ओब्लास्ट) बहुविभागीय अस्पताल का नये स्थापित चिकित्सा संस्थानों में एक विशिष्ट स्थान है। यह एक उच्च योग्यता वाला तथा विशिष्ट अंतरंग एवं बहिरंग रुग्ण सेवा तथा परामर्श देने वाला अग्रिम चिकित्सकीय रोकथाम संस्थान है। बहुविभागीय अस्पताल एक ऐसा केन्द्र है जो ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों में चिकित्सकीय संस्थानों को व्यवसायिक दक्षता तथा चिकित्सकीय सेवाओं की गुणवत्ता सुधारने के लिये प्रबंधन तथा कार्यप्रणाली विषयक सहायता प्रदान करता है। इसके द्वारा चिकित्सकीय सेवाओं की गुणवत्ता बढ़ाना तथा लोगों के स्वास्थ्य के संरक्षण के लिये विकलांगता एवं मृत्युदर तथा मृत्यु को कम करने के लिये क्रियाएं विकसित की जाती हैं, क्षेत्र में ग्रामीण तथा शहरी चिकित्सकीय संस्थानों द्वारा चिकित्सकीय एवं व्याधि निवारण प्रबंधन तथा कार्य प्रणाली विषयक गतिविधियों का यह संयोजन करता है, स्वास्थ्य संस्थानों के प्रदर्शन के गुणात्मक सूचकांकों का विश्लेषण करता है, व्यावसायिक विकास को प्रोत्साहित करता है, और स्वास्थ्य सेवा व्यवसाय को शिक्षण तथा पुनः प्रशिक्षण देता है इत्यादि।

वर्तमान में चिकित्सकीय सेवा पद्धति ग्रामीण क्षेत्रों में विकसित की जा रही है। ग्रामीण विकास कार्यक्रम चिकित्सकीय संस्थानों के समूह को विस्तार कर सारे देश में लागू किया गया है। देश के प्रत्येक नागरिक के स्वास्थ्य की सुरक्षा के

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

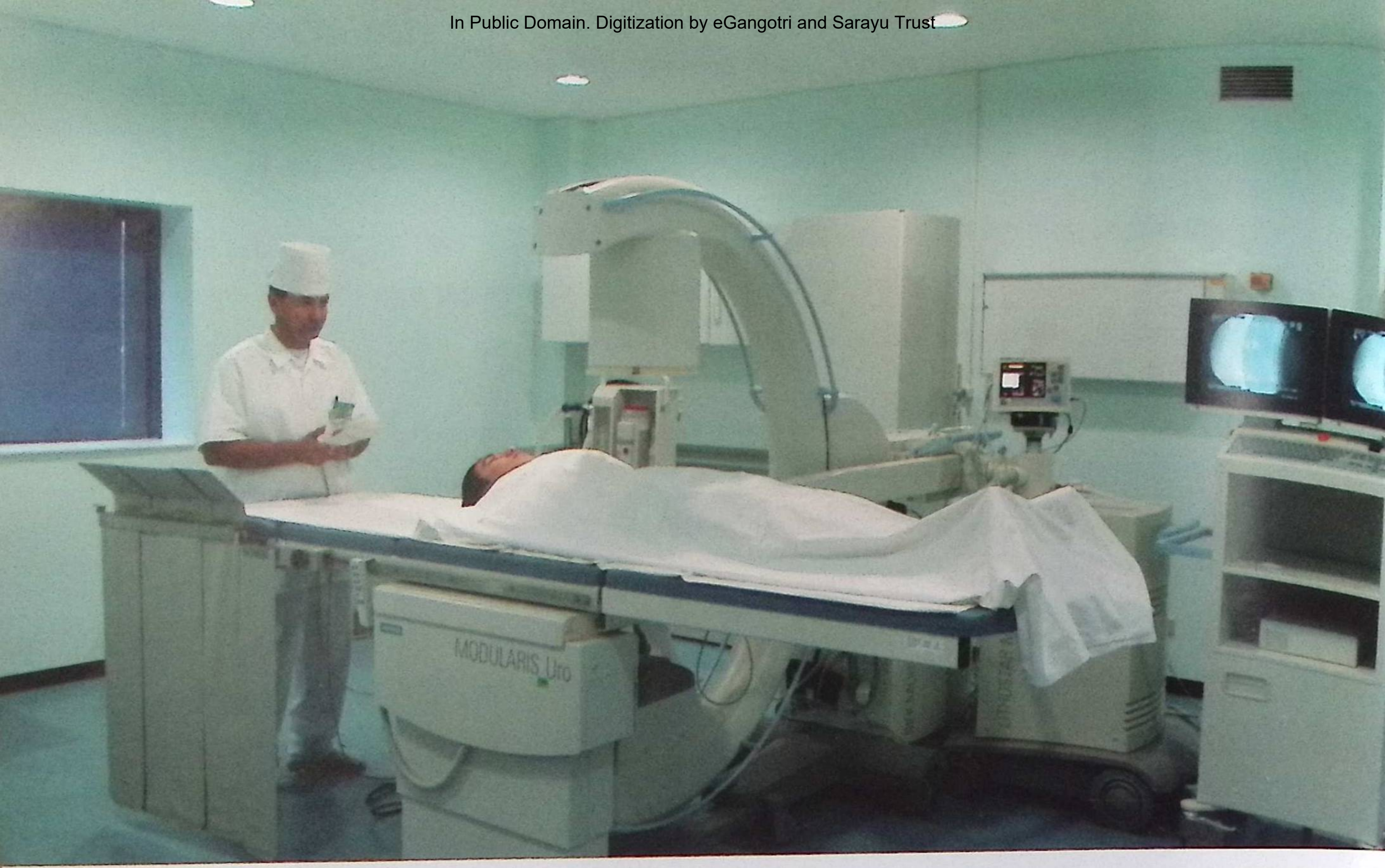

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

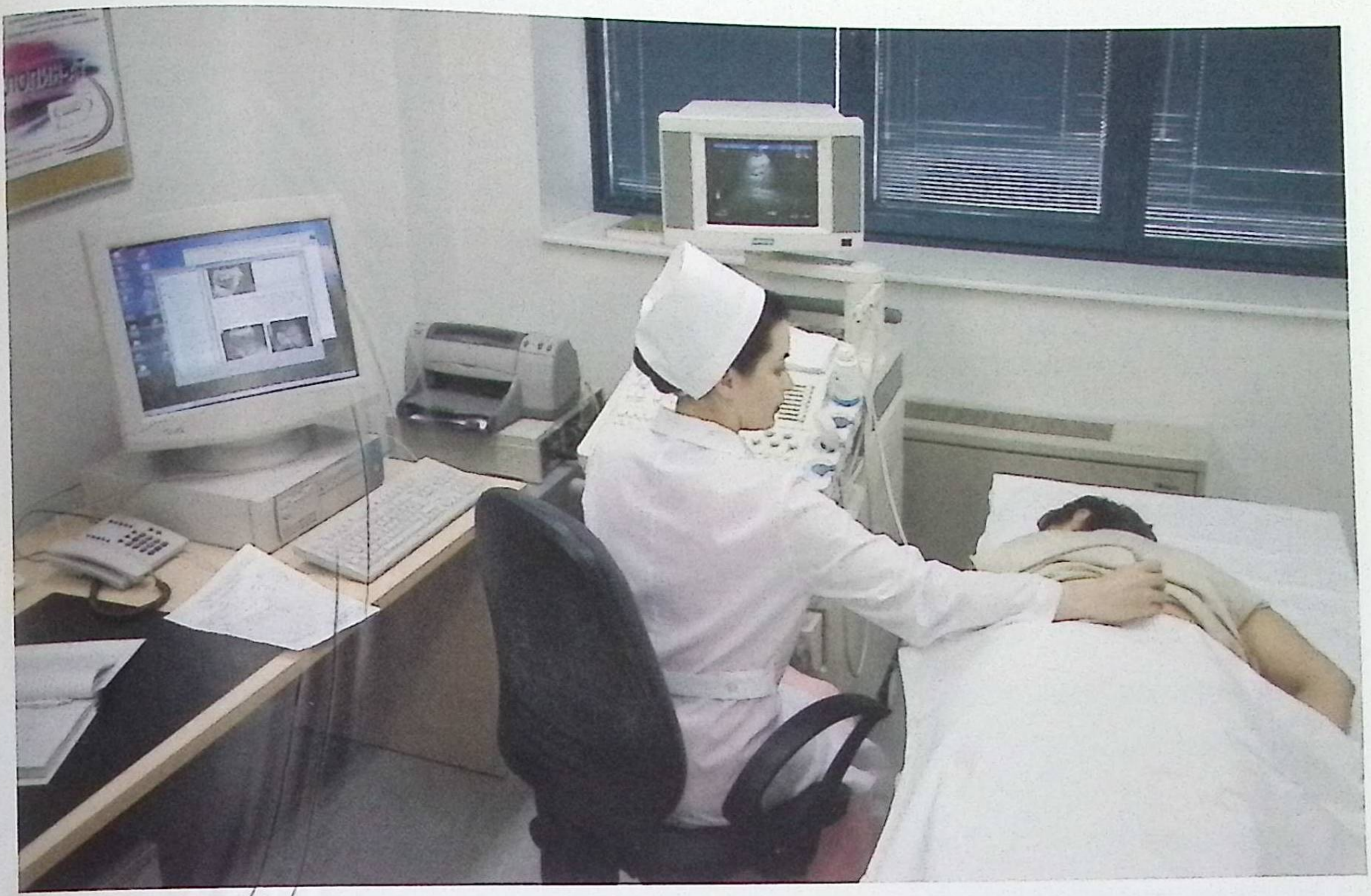

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

लिये तथा उसको बढ़ावा देने के लिये चिकित्सकीय संस्थानों द्वारा की जा रही चिकित्सा सेवा की गुणवत्ता से एवं स्थानिक चिकित्सा कार्यकर्ताओं के अनुभव से इस स्वतन्त्र एवं निष्पक्ष तुर्कमेनिस्तान के नागरिकों के स्वास्थ्य को उन्नत करने का लक्ष्य प्राप्त हो सकेगा।

सांख्यिकी डाटा दर्शाता है कि तुर्कमेनिस्तान में जन स्वास्थ्य दर आवश्यकतानुरूप है। देश में प्रति 10,000 व्यक्तियों हेतु अस्पताल में 54 बिस्तर और 20 चिकित्सक हैं। बाल रोग तथा मृत्यु दर भी कम हुए हैं। 1995 में तुर्कमेनिस्तान में बाल रोग दर प्रति 100,000 व्यक्ति 40.5462 था जो घटकर 2006 में 26.5268 हो गया अर्थात् 1.7 के गुणांक से कम हुआ। इस समयावधि के मध्य बाल मृत्युदर तीन के गुणांक से कम हुआ।

देश में स्तनपान एवं पाण्डु (खून की कमी) निवारण के राष्ट्रीय कार्यक्रम सफलतापूर्वक लागू हुए हैं। राष्ट्रीय पोलिसी के इस पक्ष का नियंत्रण ''स्तनपान के संरक्षण तथा बढ़ावे के लिये एवं शिशु फॉर्म्युला की आवश्यकता'' पर बने तुर्कमेनिस्तान के कानून के अधीन किया जाता है। आज प्रायः सभी प्रसूति संस्थानों के पास विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा अधिकाधिक रूप से प्रमाणित शिशु-अनुकूल अस्पताल का दरजा प्राप्त है और यह बात स्तनपान के मुख्य सिद्धांतों को स्वास्थ्य सेवा संस्थानों में सफलतापूर्वक लागू करने को प्रमाणित करती है।

जन्मदर लगातार बढ़ रहा है जो हर गुजरते वर्ष के साथ बढ़ते हुए जन्मदर में योगदान देता है। तुर्कमेनिस्तान में आयु की संभावना 73 साल की है।

आज रोगों के रोकथाम व चिकित्सा में विज्ञान आधारित पद्धति तथा विकसित तकनीकी संसाधनों एवं चिकित्सा पद्धतियों को लागू करना तुर्कमेनिस्तान के स्वास्थ्य सेवा विभाग की प्राथमिकताएं हैं। चिकित्सा विज्ञान को जन स्वास्थ्य

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

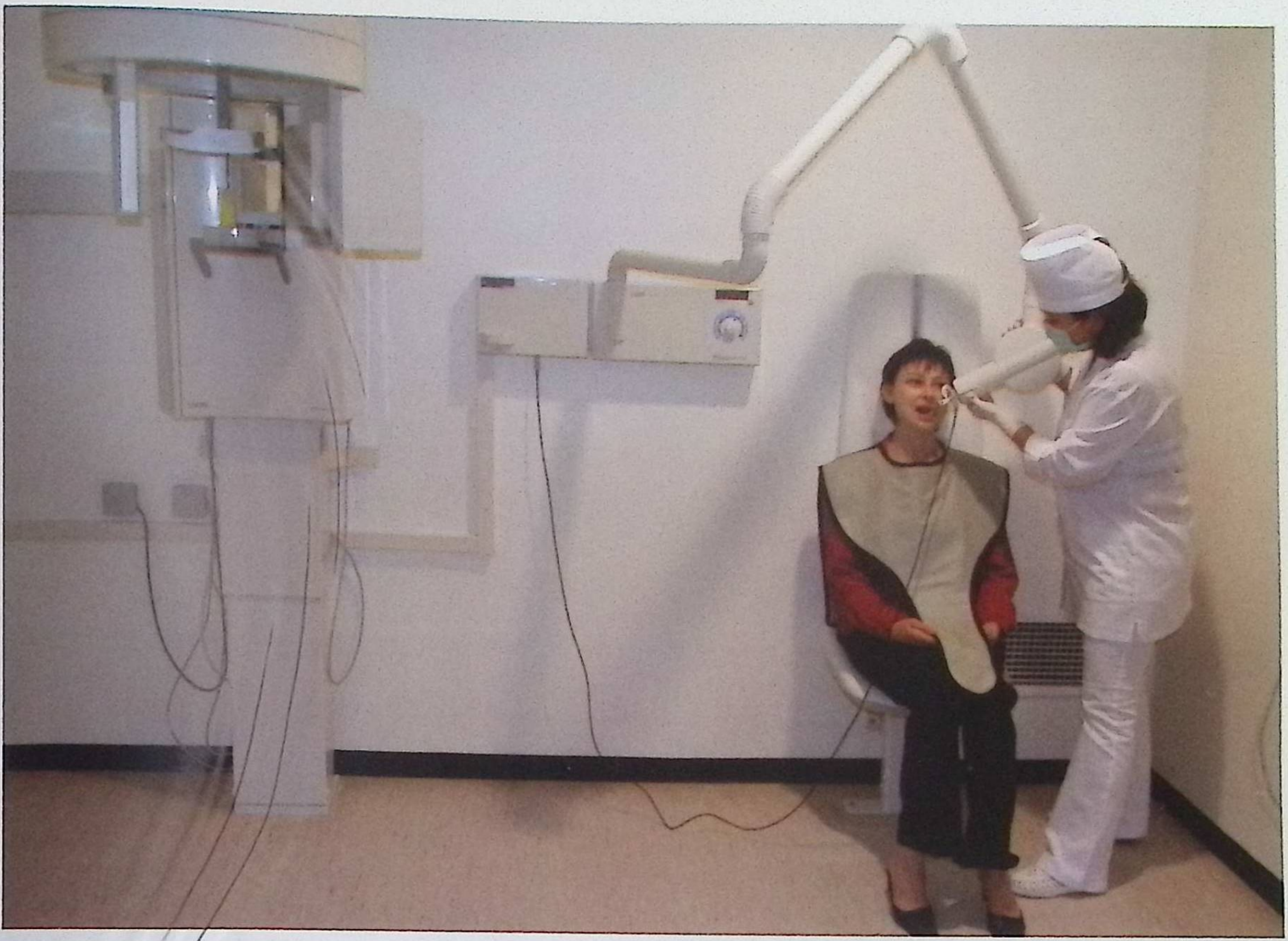

सेवा के अधिकाधिक निकट जाने के लिये आँख की व्याधियाँ, कैन्सर विज्ञान, मातृत्व एवं बाल सेवा अनुसंधान केन्द्रों के एक समूह का पुनः संगठन अनुसंधान एवं क्लीनिकल केन्द्रों के रूप में किया गया। ये प्रतिष्ठान जनता को उच्च कोटि का चिकित्सकीय, रोग निवारक, नैदानिक व परामर्श-संबंधी सहायता एवं विशिष्ट क्षेत्र में चिकित्सा प्रतिष्ठानों को संस्थानिक, प्रणाली संबंधी तथा प्रायोगिक सहायता प्रदान करता है।

स्वास्थ्य सेवा प्रतिष्ठानों के समूह के पुनर्गठन से एक नवीन तरह के संस्थानों की स्थापना-अनुसंधान एवं क्लीनिकल केन्द्र युक्त केंद्रीय क्लिनिकल अस्पताल (Central Clinical Hospital with Research & Clinical Centre) हुई है। इस पुनर्गठन से वैज्ञानिक अनुसन्धान को बढ़ावा मिला है जिसका उपयोग चिकित्सा कार्य में किया जायेगा।

राष्ट्रीय स्वास्थ्य कार्यक्रम को लागू करने के मध्य अंतर्राष्ट्रीय चिकित्सकीय केन्द्रों के निदेशालय सहित चिकित्सकीय संगठनों का एक समूह अशखाबाद की दक्षिण में कोपेतदग पर्वतों की मनोहर तराई में खड़ा हो गया जहां स्थानीय विशेषज्ञ चिकित्सा की आधुनिक पद्धतियों और आधुनिकतम चिकित्सकीय तकनीकों का प्रयोग करते हैं। इस समूह में स्वास्थ्य एवं औषध उद्योग मंत्रालय का प्रशासनिक भवन शामिल है। निदेशालय में उत्कृष्ट (State of the art) चिकित्सकीय संसाधन जैसे कि अंतराष्ट्रीय हृदयविज्ञान एवं हृदय शस्त्र चिकित्सा केन्द्रों, नैदानिक केन्द्र, अन्तरंग व्याधि केन्द्र, शिर व गले के रोगों का अन्तर्राष्ट्रीय केन्द्र तथा स्थानीय स्वास्थ्य कर्मचारियों के लिये सुविधाजनक आवास, बालवाड़ी एवं सभी सुविधाओं वाला एक विद्यालय शामिल हैं।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

2004 में मारी और दशोगुझ में तथा 2005 में बाल्कनाबात एवं तुर्कमेनाबात में नैदानिक केन्द्रों को शुरू किया गया। पहली बार तुर्कमेन स्वास्थ्य कर्मचारिओं के पास ऐसे साधन थे, जिससे असाधारण और उपद्रव युक्त व्याधियों का निदान तथा चिकित्सा की गई।

थोड़े ही समय में अंतर्राष्ट्रीय केन्द्रो ने चिकित्सकीय सेवाओं की उत्कृष्टता तथा विकसित तकनीकों से तटस्थ तुर्कमेनिस्तान की जनता और अतिथियों में उच्च्व प्रतिष्ठा प्राप्त कर ली है।

समूह के क्षेत्र में तुर्कमेन राजकीय चिकित्सा विश्वविद्यालय के नये भवन का निर्माण चल रहा है।

तुर्कमेन की राजधानी के उत्तरीय भाग में चिकित्सा संस्थानों का दूसरा समूह शीघ्र बनेगा। इसमें 150 बिस्तर वाला चर्म एवं गुप्तरोग विज्ञान संबंधी केन्द्र, 60 रुग्णों के लिये क्षय केन्द्र, 260 लोगों के लिये संक्रामित रोग केन्द्र, एड्स केन्द्र, केन्द्रीय प्रयोगशाला एवं ब्लड बैंक शामिल होंगे।

2009 में मारी और तुर्कमेनाबात में एवं म्याम्ब्री केन्द्र खुल जायेंगे।

तुर्कमेनिस्तान में जनता के स्वास्थ्य सुधार को सर्वश्रेष्ठ महत्व दिया गया है। राजकीय आरोग्य निवासों में कोई भी अपना स्वास्थ्य सुधार कर सकता है। विख्यात आरोग्य निवास जैसे कि बैरामली आरोग्य निवास, मोल्लकर मिट्टी चिकित्सा स्थान तथा अर्चमान सैरगाह का पुनः निर्माण किया गया। राज्य ने इस उद्देश्य के लिये 105 मिलीयन डॉलर खर्च किया है।

Medical diagnostic centre.

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

International Health Centre "Ene Myakhri".

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

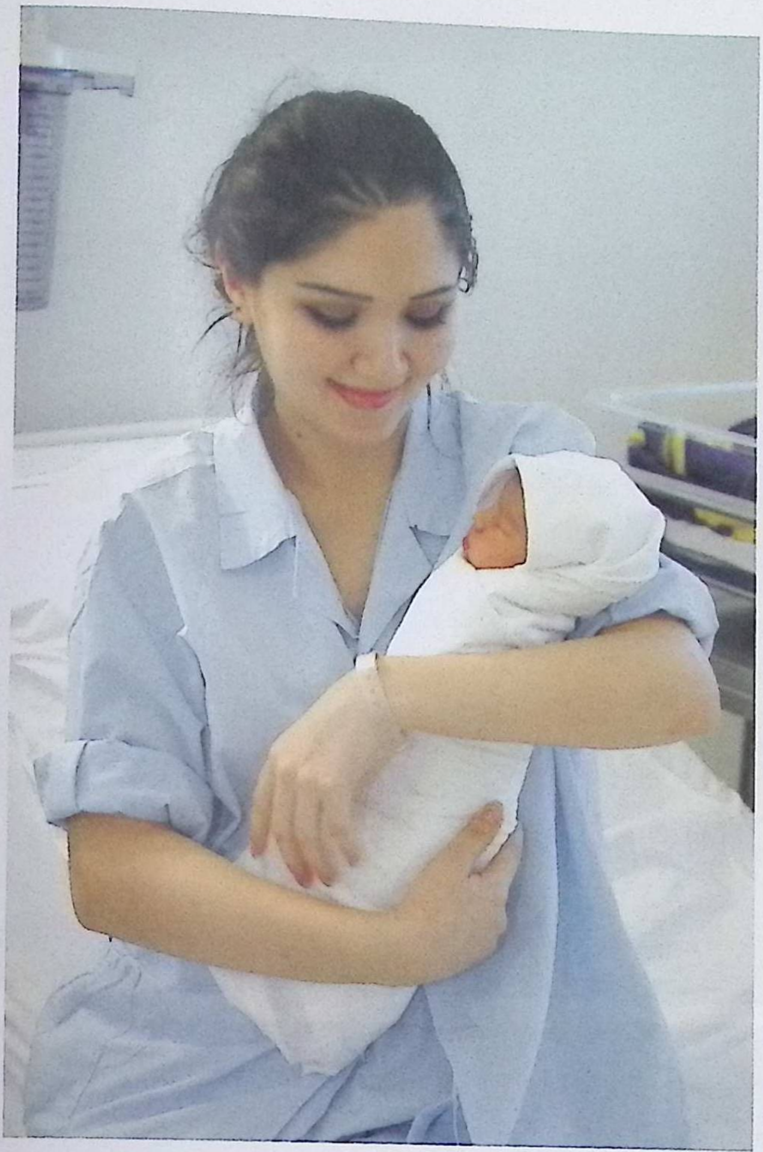

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

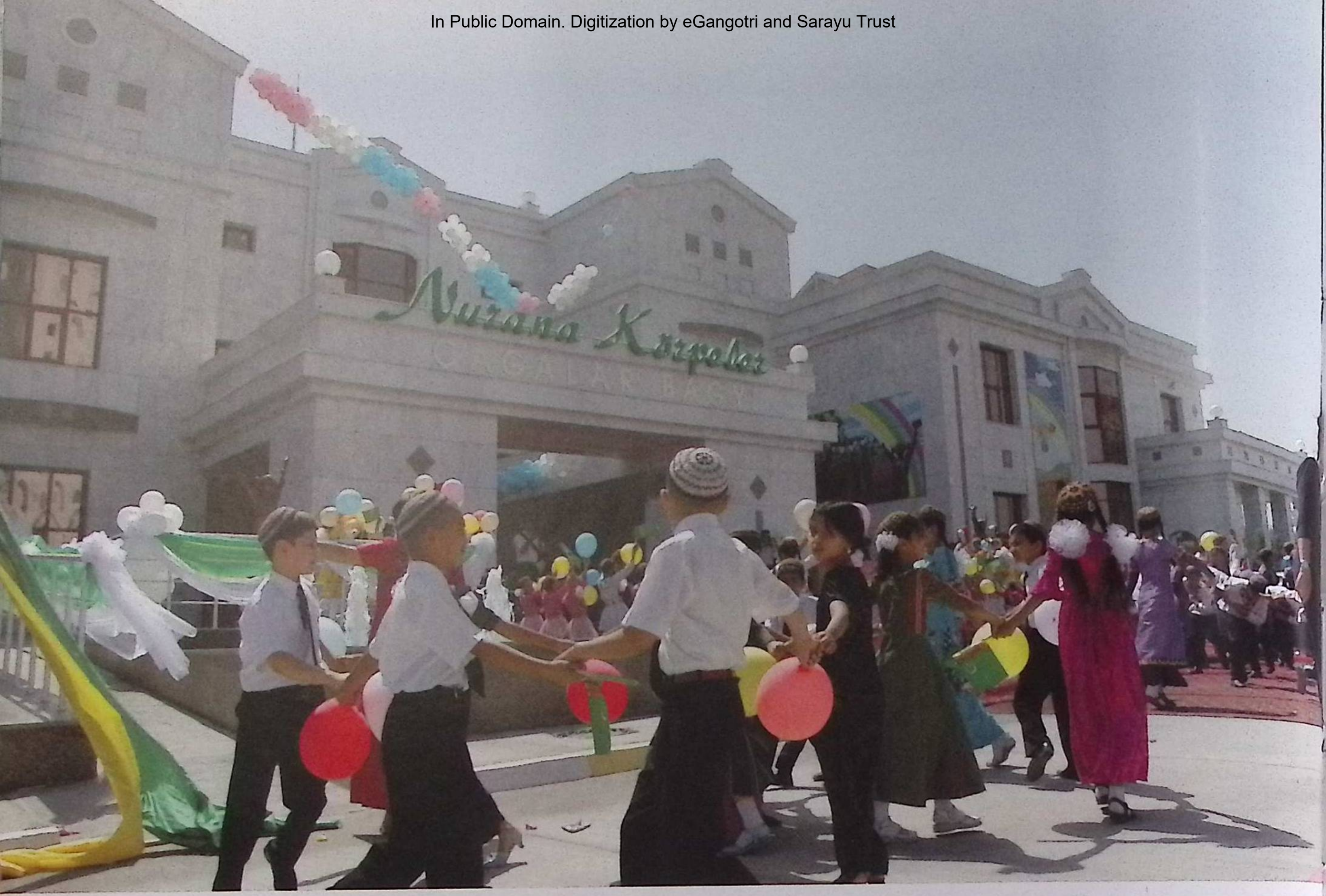

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

The state's special concern is the provision of the modern social infrastructure as a significant factor of the nation's health, the young generation's health in the first place.

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

International Oncologic Centre.

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

आरोग्य निवास एवं स्पा के समूह तथा अवकाश (छुट्टी) एवं मनोरंजन उद्योग के विकास के लिये, खेल कूद को मदद करने के लिये तथा स्वास्थ्य संबंधित विस्तारित बुनियादी ढाँचे को बनाने का लक्ष्य रखा गया है। इसका सुंदर उदाहरण अवाझा नामक एक राष्ट्रीय पर्यटन क्षेत्र है, जो केस्पीयन समुद्र के पर्यावरण की दृष्टि से समुद्रतट पर तैयार किया जा रहा है। उसमें नौका क्रीड़ा क्लब, स्वास्थ्य केन्द्र तथा खेलकूद सेवा शामिल हैं, तथा इससे पर्यावरण पर्यटन के विकास में सहायक परिस्थितियाँ उत्पन्न होंगी।

देश में स्थापित स्वास्थ्य संरचना में स्वास्थ्य सेवा केन्द्रों, स्वास्थ्य सुधार केन्द्रों एवं स्वास्थ्य स्थलों के साथ- साथ खेलकूद क्षेत्र, विश्राम तथा मनोरंजन उद्योग भी शामिल हैं। राष्ट्रीय ग्रामीण विकास कार्यक्रम ने 75,000 विद्यार्थियों के लिये 200 से ज्यादा खेलशाला एवं 100 से अधिक खेल सेवाओं का निर्माण करने का विचार किया है। निकट भविष्य में खेल तथा स्वास्थ्य सुधार केन्द्र, तरणताल के साथ स्टेडियम व हीपोड्रोम्स हर क्षेत्र में अपने दरवाजे खोल देंगे। राजधानी में ऑलम्पिक गाँव व शीतकालीन खेल भवन भी बनेंगे। उधर खेल खेलने के लिये तथा हॉकी एवं फीगर स्केटींग जैसी, तुर्कमेन युवाओं के बीच लोकप्रिय शीतकालीन खेल की प्रतियोगिता का आयोजन करने के लिये परिस्थितियाँ उत्पन्न की जायेंगी।

सामुदायिक तथा पेशेवर खेलों के विकास के लिये आधारशिला रखते समय हम स्वास्थ्य पथ के साथ लम्बी पैदलयात्रा, जो कि पारंपरिक गतिविधि है, उसको बढ़ावा देंगे जिससे जनसमुदाय के स्वास्थ्य सुधारने में मदद मिलेगी। एक जनवरी 2000 के दिन स्वास्थ्य पथ के उद्‌घाटन के समय से लम्बी पैदलयात्रा मनोरंजन की एक अच्छी परम्परा बन गई है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

प्रत्येक वर्ष अप्रैल 7 को तुर्कमेनिस्तान विश्व स्वास्थ्य दिवस के रूप में मनाता है। परंपरागत रूप से यह दिन स्वास्थ्य पथ (Path of Health) के साथ साथ हाइकींग (Hiking) से शुरू होता है जो न केवल अश्खाबाद में किन्तु उन प्रान्तों के प्रशासनिक केन्द्रों में भी जहां स्वतन्त्रता के दौरान स्वास्थ्य एवं मनोरंजन के लिये फुटपाथ रखे गये हैं।

देश की स्वतन्त्रता के बाद स्वास्थ्य विभाग के तकनीकी तथा भौतिकी आधार को मजबूत किया गया है। विशेषतः ग्रामीण क्षेत्रों में उच्च कोटि की चिकित्सा सेवाओं को सुनिश्चित करने के लिये विशिष्ट वाहनों के समूह की पुनः पूर्ति की गई है।

जैसा कि आप जानते हैं कि स्वास्थ्य सेवा का विकास प्रभावी औषधियों की उपलब्धता एवं मांग के आधार पर मुख्यतः निर्भर है। इसलिये औषध आपूर्ति की ओर एक महत्वपूर्ण झुकाव है। चिकित्सा उद्योग, विशेषतः औषध उद्योग के विकास को सक्रियतापूर्वक बढ़ाते हुए राज्य इसको अपने कठिन नियंत्रण में रखता है। आज, उच्च कोटि की औषध कल्पनाओं की एक विस्तृत श्रेणी का निर्माण देश में हो रहा है जो आयात किये गये औषधियों के साथ स्पर्धा कर सकती है।

राष्ट्रीय स्वास्थ्य कार्यक्रम तुर्कमेन्डरमान्सेनगत संघ के लिये कार्य तय करता है जिसमें संशोधन, गतिविधि को प्रोत्साहित करना, घरेलू संसाधनों से नये औषध योगों को विकसित करना, औषधीय उद्योग में कच्चे वानस्पतिक और प्राणिज औषधों का उत्पादन तथा उनकी सूची बनाना, औषधों की श्रेणी को विस्तृत करना तथा औषध उत्पादन का विस्तार करना शामिल

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

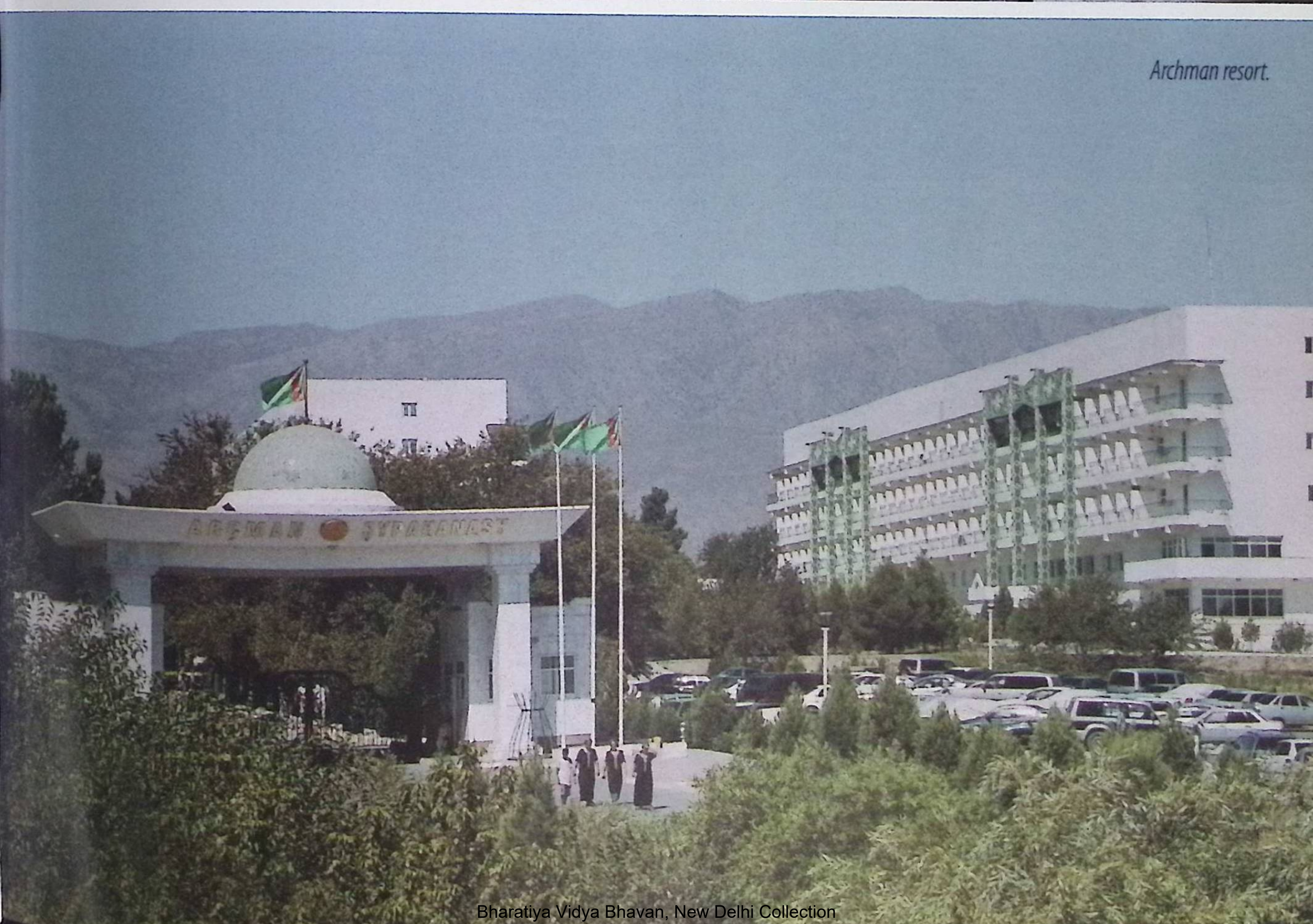

Archman resort.

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

These luxurious hotels are the first objects of international Avaza sea resort, which is under construction on the Caspian littoral. Every year thousands of Turkmenistan citizens and foreign tourists will be able to have a rest and rehabilitate here.

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

The way of health.

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

Gokdere – a favourite recreation centre of children and teenagers.

तुर्कमेनिस्तान के औषधीय पौ

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

हैं। आज तुर्कमेन्डरमान्सेनगत संघ अंतर्राष्ट्रीय मानक के अनुरूप 200 से ज्यादा औषधीय पदार्थों का उत्पादन करता है। उसमें 30 तरह की स्थानिक औषधियाँ एवं औषधीय वानस्पतिक चाय भी शामिल हैं। ज्यादातर औषधीय पदार्थ, जो संघ के अधीन जुड़े हुए औद्योगिक इकाइयों में बनाये जाते हैं, जिनें चिकित्सा बीमा पोलिसी प्रस्तुत करने पर छूट पर खरीदे जा सकते हैं।

तुर्कमेन भूमि में पर्यावरण विज्ञान के दृष्टिकोण से शुद्ध वानस्पतिक, प्राणिज तथा खनिज संसाधनों के विशाल भण्डार हैं। सूखे क्षेत्र के वातावरण की परिस्थितियाँ (गर्मी में अधिक तापमान, हवा में शुष्कता और उच्च सौर विकिरण स्तर) कच्चे पदार्थों में रोपण गुणधर्मों के साथ बहुमूल्य जैव क्रियाशील तत्वों को संचित करने में योगदान प्रदान करता है।

औषधीय पौधों एवं जड़ी-बूटी द्वारा उपचार की कृत्रिम औषध विधि के ऊपर विशेष प्रभाव प्रत्यक्ष है। वे हानिरहित और सुरक्षित हैं। वे ऐसे पदार्थों को उत्पन्न करते हैं, जो क्रिया शारीर की दृष्टि से मनुष्य के ज्यादा नजदीक हैं, और

A future Olympic Centre in the capital of Turkmenistan.

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

वे व्याधि प्रतिक्षमत्व प्रणाली को मजबूत करते हैं। ये उपचार हमारे पूर्वज, जो प्राचीन काल के कुशल चिकित्सक थे, को अच्छी तरह मालूम था। पूर्वीय चिकित्सा शास्त्र के सितारों में सैयत् इस्माईल गुर्गेन्ली, मुहम्मद गैमझ तुर्कमेन, अबु अली इब्न सिना, तथा अली इब्न साहल रब्बानी शामिल हैं। इन उत्कृष्ट चिकित्सा विद्वानों द्वारा प्रयुक्त उपाय, उनकी शुद्धता तथा उत्तम गुणवत्ता के कारण सुविख्यात थीं। आज, आधुनिक औषधीय विज्ञान पुरानी हस्तलिपि में प्राप्त प्राचीन उपायों के स्वरुप को पुनः प्रचलन में लाता है ताकि नयी पीढ़ी के उपचार के लिए औषध योग उत्पन्न किये जा सके। यह पुस्तक तुर्कमेनिस्तान के स्व- भूमि द्वारा औषधीय पौधों पर हमें दिये गये सालों के वैज्ञानिक अनुसंधान की महत्ता पर आधारित है। यह 2000 से ज्यादा औषधीय पौधों, जिनमें से अधिकतर चिकित्सा परंपरा में स्थानीय हैं, उनके वर्णन तथा इतिहास को प्रस्तुत करती है। साथ ही पाठक प्राचीन चिकित्सकों द्वारा खोजे गये अद्वितीय चिकित्सा प्रयोगों को 10 खंडों वाले सेट में देख पायेंगे।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

TÜRKMENISTANYŇ ÖSÜMLIKLERI

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

The Pharmaceutical industry of Turkmenistan produces a wide range of medicinal preparations manufactured on the basis of officinal plants.

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

औषधीय पौधों के अध्ययन एवं प्रयोग का संक्षिप्त ऐतिहासिक विवरण

आज कभी-कभी सुनने में आता है कि आधुनिक तकनीकों की सदी में जब महत्वपूर्ण मात्रा में कृत्रिम दवाईयाँ बनाई जाती हैं तब औषधीय पौधे के साथ जुड़ने की शायद जरूरत नहीं है। यह ठीक नहीं है, मैं सोचता हूँ कि औषधीय पौधों का आहार के रूप में उपयोग मनुष्य जाति के लिये कम नहीं किया जा सकता और उसकी आवश्यक महत्ता को भी भुलाया नहीं जा सकता। इसके विपरीत प्रतिवर्ष उनमें रुचि बढ़ रही है। तथ्यों से यह भी प्रमाणित हो चुका है कि पौधों से बनाये हुए औषधीय मिश्रण (योग) सुरक्षित हैं या उनके बहुत कम दुष्प्रभाव देखे गये हैं, और यह मानवजाति के व्यवहार एवं विशाल अनुभव ने भी दर्शाया है।

प्राचीन काल में हजारों पौधे पैदा हुए, जिनमें से अधिकतर चिकित्सात्मक गुणयुक्त थे, इसलिये वे औषधीय पौधे कहलाये। इन औषधीय पौधों को पर्वतों, पहाड़ियों व मरुभूमि, मैदानी क्षेत्रों, बगीचों, जंगलों तथा छिटपुट वनों में एवं रास्ते में कोई भी देख सकता है।

आज के समय में इनमें से अधिकतम पौधों पर काफी गहराई तक अध्ययन किया गया है और इनको प्रभावपूर्ण रूप से चिकित्सा विज्ञान में प्रयुक्त भी किया जाता है। लेकिन उन पौधों का जिन्हें लोगों के द्वारा रोग दूर करने के रूप में प्रयोग में लाया जाता हैं उनका गहन अध्ययन बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि इनमें से अधिकतर वनस्पतियों में चिकित्सकीय गुणों का भण्डार छिपा हुआ है।

खगोलशास्त्र, पोलीमरीक, रसायनशास्त्र एवं आण्विकी भौतिक शास्त्र की सदी में कभी-कभी यह भी सुनने में आता है कि बहुत बड़ी संख्या में जब कृत्रिम औषधियां तैयार हो रही हैं तब शायद औषधीय पौधों के बारे में ज्ञान करना आवश्यक नहीं है।

यह सही नहीं है। औषधीय वनस्पतियां, आहार रूप में प्रयुक्त पौधों की तरह नहीं हैं किन्तु जनसमुदाय को स्वस्थ जीवन के लिये ये अधिक महत्व की हैं। इसके विपरीत प्रत्येक वर्ष इनमें लोगों की रुचि बढ़ती ही जा रही है। लोगों के निरन्तर अभ्यास एवं अनुभव से प्रकट होता है कि इनसे निर्मित औषधियां सुरक्षित हैं और इनका दुष्प्रभाव बहुत कम देखने को मिलता है।

प्रागैतिहासिक युग में लोगों द्वारा इनमें से कौन से औषधीय पौधे कितने और कैसे प्रयोग में लाये जाते थे यह हमें मालुम नहीं है। यह ज्ञान लुप्त हो चुका है। तथापि मानव इतिहास के बहुत पुराने स्मारकों एवं प्राचीन मानव इतिहास में जब भाषा प्रकट हुई तब औषधीय पौधों पर पर्वतीय शिला अभिलेख शुरू हुआ।

जीवन के लिये शक्तिशाली सहज ज्ञान ने मानवजाति को चिकित्सकीय पौधों को ढूंढने में तथा इनके रासायनिक संघटन का पता लगाने में बहुत पूर्व समय तक की गई इनकी साधना तथा प्राकृतिक पदार्थों की अच्छी गुणवत्ता में काफी सहायता की है।

इस तरह आदि मानव को आसपास के वन्य जीवन की परिस्थितियों से सीखने की तथा इनके अनुकूल होने की प्रक्रिया के मध्य बहुत सारी व्याधियों की चिकित्सा करने का अनुभव हुआ।

शेनुन द्वारा 5000 साल पूर्व लिखे गये हर्बल में उल्लेख है कि चीन को 230 औषधीय एवं विषात्मक पौधों के विषय में ज्ञान था।

प्राचीन भारत में 4000 वर्ष पूर्व औषध, पौधों के संग्रहण की विधियाँ बताई गई हैं। प्राचीन इजिप्ट में 3600 वर्ष पूर्व भोजपत्र एबर्स के पैपिरस में लिखा हुआ है ''शरीर के प्रत्येक अवयव के लिये औषध तैयार करने की

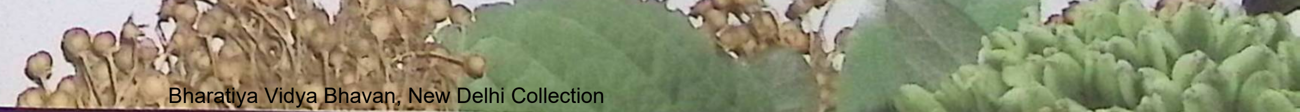

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

पुस्तक'' इन औषधीय पौधों में निद्राजनक पौधे, पुदीना, केला आदि शामिल हैं। उस समय इजिप्त के लोगों के पास फार्माकोपिया था। जब लिखित भाषा प्रकट हुई तब चिकित्सकीय उद्देश्यों के लिये पौधों के उपयोग के बारे में ऑकडों से प्राप्त ज्ञान का मूल्यांकन हुआ है। इस संदर्भ में पुराने लिखित ग्रन्थ अत्यधिक चिकित्सकीय जानकारी उपलब्ध करवाते हैं। सुमेरियन चिकित्सक पौधों के कांड तथा मूल से चूर्ण एवं अर्क बनाते थे। वे केवल जल का ही नहीं अपितु वाईन तथा बीयर का भी द्रावक के रूप में प्रयोग करते थे। बेबीलोनियन्स (ई० पू०, 11वीं शताब्दी) ने सुमेरियन लोगों से चिकित्सकीय ज्ञान एवं संस्कृति दोनों प्राप्त किये तथा वे लोग लीकोराइस (मुलैठी), स्ट्रेमोनीयम (Thorn apple), हेनबेन आदि सहित अन्य औषधीय पौधों का चिकित्सकीय उद्देश्य से प्रयोग करते थे। अन्य देशों में उनका निर्यात भी करते थे। पौधों पर सूर्य के विपरीत असर का उनको ज्ञान था इसलिये ये हेनबेन, बेलाडोना (Deadly night-shade) तथा स्ट्रेमोनीयम (Thorn apple) जैसे पौधों को रात में इकट्ठा करते थे तथा छाँव में सुखाते थे। बेबीलोनीयन्स जहाँ पौधों का संग्रहण करते थे उस कमरे के दरवाजे व खिड़कियां उत्तर दिशा की ओर रहती थी। आजकल, औषधीय पौधों की फसल काटने के लिये तथा सुखाने के लिये इन परिस्थितियों का विशेष ध्यान रखा जाता है।

असीरीयन्स, जिन्होंने बेबीलोन को जीता था, ने बेबीलोनीयन लोगों के सभी वैज्ञानिक तथा सांस्कृतिक कार्यों को बनाये रखा जिसमें वानस्पतिक चिकित्सा (Phytotherapy) के ऊपर लिखित लेख भी शामिल हैं। एसिरीयन राजा अशुरबनीपाल (ई०पू० 668) के पुस्तकालय में 22000 विविध उल्लेखों वाले मिट्टी के फलक (प्लेट) हैं, जिसमें कुछ नीनेवेह (Nineveh) में अशुरबनीपाल के महल की खुदाई के समय प्राप्त हुई। आयुर्विज्ञान चिकित्सा तथा औषधीय नुस्खे के ऊपर 33 फलक भी शामिल हैं। इसी प्रकार उस समय असीरीयन देश की राजधानी में औषधीय पौधों का एक उद्यान भी था।

इजिप्त के लोगों को वानस्पतिक चिकित्सा का ज्ञान बेबीलोनीया तथा एसीरीयत्रन लोगों से प्राप्त हुआ। मंदिरों एवं मकबरों की दीवारों पर अंकित पौधों के चित्र तथा चिकित्सकीय उद्देश्य के लिये उनके उपयोग से संबंधित लेख दर्शाते हैं कि इजिप्त के लोगों के लिये पौधों का कितना अधिक महत्व था। प्राचीन इजिप्त में औषधीय पौधे केवल वन्य ही नहीं थे किन्तु उनकी खेती भी की जाती थी। उदाहरणतः पामक्रीस्टी (Castor oil) की 2600 ई०पू० खेती की जाती थी। दूसरे देशों से आयात औषधीय पौधों की भी खेती की जाती थी।

औषधीय पौधों को अन्य देशों से आयात करने के लिये विशिष्ट खोज अभियानों (expedition) का आयोजन किया जाता था। औषधीय पौधों को उनके प्रभाव के आधार पर वर्गीकृत किये जाते थे जैसे कि विरेचक, वामक, कफनिःसारक आदि।

ग्रीस के लोगों के पास अपनी मौलिक चिकित्सा थी। कुछ औषधीय पौधों को उन्होंने दूसरों से लिया था। ग्रीक चिकित्सक हीपोक्रेट्स जो आधुनिक वैज्ञानिक चिकित्सा के संस्थापकों में से एक थे, उन्होंने 236 औषधीय पौधों का वर्णन किया है तथा अपने कार्य में उनके उपयोग की वैज्ञानिक उपयोगिता को प्रकट किया है। हीपोक्रटीस का मानना था कि प्रकृति में चिकित्सात्मक पदार्थ प्रचुर मात्रा में भरे पड़े हैं। स्वरस के रूप में अथवा किसी प्रकार की रासायनिक प्रक्रिया किये बिना अगर इनका प्रयोग किया जाता है तौ औषधीय पौधों का अच्छा प्रभाव होता है। युरोप में यह मान्यता 1500 से ज्यादा सालों तक बनी रही लेकिन (अरबी-फारसी) चिकित्सा में आज भी यह मौजूद है।

महान ग्रीक दार्शनिक थीओफ्रेस्ट, जो कि वनस्पति शास्त्र के जनक थे, ने ''पौधों में अनुसंधान'' (Investigation in plants) के 12 खण्ड लिखे उनके कार्य में उपर्युक्त, व्यावहारिक वनस्पति शास्त्र को व्यापक किया गया। यह पुस्तक पौधों के औषधीय गुणों के विषय में वर्णन करती है और उनकी उपज के बारे में सूचना प्रदान करती है।

औषधीय पौधों के ऊपर अन्य मूल्यवान कार्य डायस्कोराईड (ई०प० पहली शताब्दी) का है। डायस्कोराईड को यूरोपीयन फार्मेकोग्नोसी (औषध परिचय विज्ञान) का जनक माना गया है। उनकी पुस्तक ''औषधीय पदार्थ (Medicinal substances)" में 600 से ज्यादा औषधीय पौधों का, उनके उपयोग के साथ सचित्र वर्णन किया है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

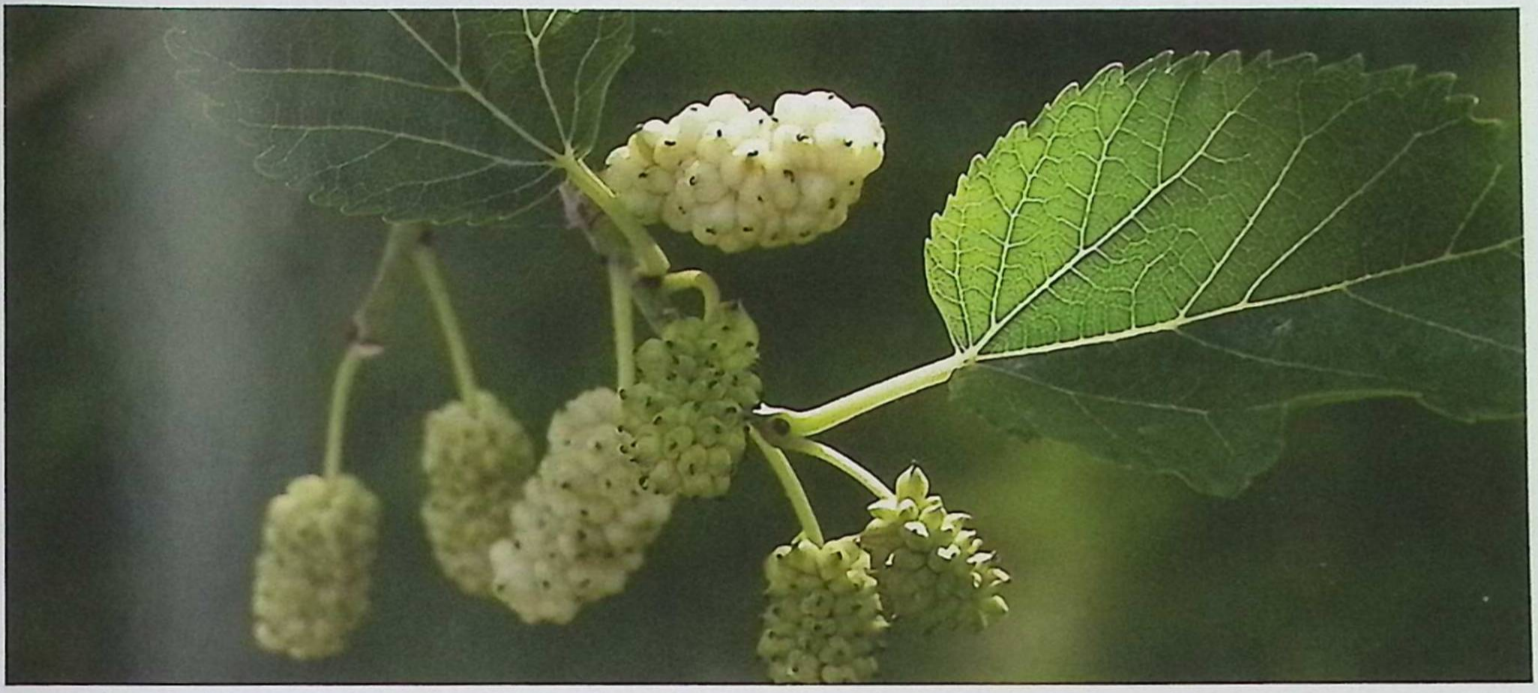

इस पुस्तक को लेटिन भाषा में अनुवादित किया गया एवं भारी संख्या में प्रसारित किया गया। 16वीं शताब्दी तक युरोप में चिकित्सकों के लिये यह पुस्तक सभी प्रकार से आधिकारिक रूप में मार्गदर्शक बनी रही। फार्मेकोग्नोसी के आधुनिक कार्यों में डायस्कोराईड के संदर्भ बहुत बार उल्लेख किये जाते हैं।

प्राचीन रोम का चिकित्सा विज्ञान ग्रीक चिकित्सा विज्ञान के प्रभाव में विकसित किया गया था। प्लाइनी वरिष्ठ (Pliny the Elder) ई0 प० पहली शताब्दी) के अनुसार रोमन लोगों द्वारा लोकिक-चिकित्सा में 1000 से ज्यादा वानस्पतिक प्रजातियों का उपयोग किया जाता था। एक उत्कृष्ट चिकित्सक के रूप में क्लौडिउस गालेन (ई०स० 130-200) का प्राचीन चिकित्सा शास्त्र में विशिष्ट स्थान है। चिकित्सा के अपने विषयक कार्य में इन्होंने लगभग 300 से ज्यादा वानस्पतिक पदार्थों का वर्णन किया है। व्याधि के तथा उनके उपचार की पद्धति एवं उपायों के ऊपर उन्होंने अध्ययन किया। अनेक विषय उनके अध्ययन के अवलोकन तथा इनके विस्तृत व्यावहारिक अनुभवों के परिणाम स्वरूप प्रकट हुए हैं। हीपोक्रटीस से उलटा गालेन ने सोचा कि औषधीय पौधों में दो प्रकार के पदार्थ हैं, एक उपयोगी या ''प्रभावपूर्ण'' है और दूसरा जीव के लिये निरुपयोगी होता है। एक पदार्थ को पानी के साथ उबाल कर अथवा औषधीय पौधे को पानी में रखकर पदार्थ का आसानी से सार निकाला जा सकता है। औषधीय पौधों का सार निकालकर बनाये गये नुस्खे (remedies) को गेलेनिक उपाय (galenic remedies) कहा जाता है। तब से आधुनिक चिकित्सा शास्त्र में इनका प्रयोग किया जाता है और इन्हें गेलेनिक्स (galenics) कहा जाता है।

अबु अली इब्न सिना ने अपनी शास्त्रीय पुस्तक ''केनन ऑफ मेडीकल साइन्स'' (1020) में प्राचीन रोम, ग्रीस, पूर्व तथा युरोप के औषधीय पौधों को चिकित्सा शास्त्र तथा फार्मेकोलोजी के संदर्भ में इकट्ठा किया दूसरी पुस्तक में उन्होंने करीब 1500 प्राणिज एवं खनिज उपचारों का वर्णन किया है। करीब 800 उपचारात्मक पौधों का चिकित्सा शास्त्र में उपयोग किया जाता था। पांचवीं पुस्तक में इब्न सिना चिकित्सकीय औषध योगों को बनाने की प्रक्रिया का वर्णन करते हैं। उसी समय उन्होंने औषधीय पौधों के लक्षणों को भी विस्तार से दिया है तथा पाचन संस्थान एवं हृदय और रक्तवाहिनियों के प्राकृतिक व्याधियों में उनको लिखा है।

कुछ वैज्ञानिक गलती से यह सोचते हैं कि अबु अली इब्न सिना ने गालेन तथा हीपोक्रेटस ने जो लिखा है उसका पुनरावर्तन किया है। इब्न सिना ने अपने सहयोगिओं के अनुभवों से सीखकर तथा उसको अपने ज्ञान एवं व्यवहार से समृद्ध करके इस विज्ञान का आगे विकास करने के लिये गहरा प्रभाव डाला है। 6 शताब्दियों तक उच्चतर चिकित्सा अभ्यास संस्थानों में केवल उनके कार्य को एक मात्र इसी पुस्तक के रूप में पढा जाता था।

स्वातंत्र्य के वर्षों के मध्य अबु अली इब्न सिना द्वारा लिखित केनन ऑफ मेड़िकल साइन्स का तुर्कमेन भाषा में भाषांतर किया गया तथा उसे 6 खण्डों में प्रकाशित किया गया।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

प्राचीन विश्व, मध्य एशिया तथा एशिया कनिष्ठ, इरान, अफगानिस्तान तथा भारत के वैज्ञानिकों द्वारा औषधीय पौधों पर लिखित कार्यों का अध्ययन करके पूर्व का एक और प्रकाशक बीरूनि, जो कि अबु अली इब्न सिना का समकालीन था, इस नतीजे पर पहुंचा कि औषधीय पौधों के गहन अध्ययन की आवश्यकता है। विरूनि यदि हमारे देश में हुए होते तथा हमारी भूमि में जो उगता वे उनके बारे में सर्वोत्तम ज्ञान प्राप्त करते तो सभी वनस्पतियाँ औषधी बन जाती, तथा प्रायोगिक रूप में वे जो साबित करते वह चिकित्सा शास्त्र में औषध बन जाता।''

अबु-अल रैहान बिरूनी द्वारा कृत ''फार्मेकोग्नोसी'' पूर्व में मध्ययुग का फार्मेकोग्नोसी के ऊपर एक बहुमूल्यवान कार्य है। 750 प्रजातियों के प्राणिज तथा खनिज औषधीय नुस्खों का इस पुस्तक में वर्णन है। इसका विषय वस्तु पूर्व तथा मध्य एशिया के देशों से एकत्रित की गई हैं।

मौखिक तथा लिखित रूप में प्राप्त डाटा, एक वैज्ञानिक के रूप में उनके स्वयं के अनुभव पर उनकी पुस्तक आधारित है। उन्होंने न केवल औषधीय नुस्खों के सामान्य लक्षण तथा उनकी गुणधर्मीय सूचना दी है अपितु उनके भौतिक एवं रासायनिक गुणों का भी संपूर्ण एवं विस्तृत वर्णन किया है। बिरूनी ने औषधीय पौधों को उगाने के लिये एक निश्चित क्षेत्र का भी निर्णय किया।

आजकल तुर्कमेनिस्तान के क्षेत्र में उगने वाले पौधेः मांड्रागोरा (Mandragora) मेर्व शहर में मिलने वाले फेरूलागो (Ferulago) का मूल, एप्रीकोट का वृक्ष, प्लम का वृक्ष तथा निसा में प्राप्त पीच के वृक्ष का गोंद एवं तुर्कमेनिस्तान के पर्वतों में मिलने वाला मील्फ तैल (Milfoil) प्राचीन समय में बड़े पैमाने पर उपयोग में लाये जाते थे।

सैयीत् इस्माइल गुर्गेन्ली (गुर्गानी) (1057-1137) का जन्म गुर्गेन शहर में हुआ था अतः उनको गुर्गेन्ली नाम दिया गया था। वे खोरेस्म (Khorezm) के तेकेश (Tekesh) तथा अत्सीस (Atsyz) शाहों (बादशाहों) के निजी चिकित्सक थे।

पर्सीयन भाषा में लिखित उनकी शास्त्रीय पुस्तक ''ट्रेज़री खोरेस्म शाह'' के रूप में प्रख्यात है। पुस्तक की भाषा, पढ़ने में बहुत ही सरल है। विशेष रूप से शास्त्रीय तथ्यों को उसमें दिया गया है। अबु अली इब्न सिना द्वारा लिखित पुस्तक कैनन ऑफ मेडिकल साइन्स (Canon of Medical Science) के बाद इस पुस्तक की लोकप्रियता दूसरे स्थान पर है।

सैयीत् इस्माइल गुर्गेन्ली के औषधीय नुस्खों के निर्माण कार्यों में 200 से ज्यादा पौधों का प्रयोग किया गया है। उसमें वर्णित सभी पौधे (अंजीर, नट, अनार, बादाम, पुदीना, बिडंनीड, गुलाब, हायासिंत, मेनिओत (स्वीट कलोवर), हायट्शेड् कैपर्स, अस्परायस, बार्बेरी, रूबार्ब, मैको आदि) तुर्कमेनिस्तान के क्षेत्र में उत्पन्न होते हैं।

स्वातंत्र्य के वर्षों के मध्य, 1995 में तेबीब का पर्सीयन से तुर्कमेन में भाषांतर किया गया तथा तुर्कमेन पाठकों को इसे पढ़ने के लिये अनुरोध किया गया।

तुर्कमेनिस्तान की लोक चिकित्सा प्राचीन ग्रीस के अनुभव, आंशिक रूप से अरेबिक चिकित्सा तथा इब्न सिना द्वारा किये गये अनुभवों पर आधारित है।

आज के समय में कोम्पोसित, लेबीएते, अम्बेलेते, लेग्युमीनोसी, बोरेजीनेसी आदि के पौधे जो कि इब्न सिना द्वारा वर्णित हैं, का उपयोग कच्चे द्रव्य के रूप में अति आधुनिक औषधीय द्रव्य एवं औषध बनाने के लिये किया जाता है।

अन्नो डॉमिनी (Anno domini) द्वारा प्रारम्भ से उपयुक्त औषधीय पौधों के प्रारंभिक मूल का विश्लेषण यह दर्शाता है कि पौधे उपचारात्मक चिकित्सा में महत्व के स्रोतों में से एक है।

औषधीय पौधों का पारंपरिक चिकित्सा में रोगी की चिकित्सा करने के लिये विस्तृत प्रयोग किया जाता है, जैसा कि प्राचीन समय में होता था, लेकिन उपयुक्त पौधों की संख्या कम होती जा रही है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

लोक चिकित्सा सदियों पुराने एकीकृत अनुभवों का परिणाम है। इसलिये इसके अध्ययन के लिये हमें तत्परता दिखानी पड़ती है। अगर हम तत्परता नहीं दिखाते हैं तो अनुभव लुप्त हो जायेंगे क्योंकि ये लिखित नहीं है, किन्तु मौखिक है। परन्तु यह मालुम है कि वानस्पतिक जगत की उपचारात्मक औषधीय भण्डार की महत्ता को सम्भाल कर रखना है।

औषधीय कच्चे माल में पौधे के विभिन्न भाग हैं- कली, पत्र, पुष्प, पुष्प विन्यास, फल व बीज, मूल, प्रकंद (Rhizome) कंद (Tuber) एवं गांठ (भूमिगत परिवर्तित काण्ड) मूल का कोर्टेक्स तथा काण्ड शामिल हैं। ज्यादातर अवस्थाओं में औषध तथा दवाईयों के कच्चे माल के रूप में उपयुक्त पौधों के औषधीय तत्व एक दिन में अपने विकास के मध्य अपने चिकित्सकीय गुण बदलते हैं। इसलिये इनके फसल का समय निश्चित करना भी बहुत महत्व का है अर्थात् कब और किस समय में कटाई की जाय यह सुनिश्चित करना बहुत महत्व का है। चिकित्सकीय उद्देश्य की दृष्टि से पौधों के विभिन्न अंगों में जीवशास्त्र की दृष्टि से इनके तत्व जब सबसे ज्यादा कार्यशील रहते हैं उस समय उसकी कटाई करनी चाहिए।

अभी हम पौधों के विभिन्न भाग जो कि चिकित्सकीय कच्चे माल के रूप में उपयुक्त होते हैं, के विषय में यह भी जान पायेंगे कि ये कब और कैसे काटे जाते हैं।

त्वक् : वसंत ऋतु में जब त्वक् से रसों का स्राव बढ़ने लगता है तब पेड़ों एवं झाड़ियों ओक ग्यूलदर रोज (स्नाउबाल ट्री) बकथोर्न की त्वक् ग्रहण की जाती है। इस समय यह तनों एवं शाखाओं से सरलतापूर्वक अलग की जा सकती है। वसंत के अंत में गर्मियों में विकास रुक जाने से त्वक् को निकालना कठिन हो जाता है। पेड़ से त्वक् निकालने के लिये कोमल शाखाओं को काटकर उसके ऊपर 25-50 से०मी० के अन्तराल में गोलाई में तेज चाकू से चीरे किये जाते हैं। इसके बाद पहले लगाये हुये चीरों को जोड़ते हुए लम्बाई में चीरा लगाया जाता है। तत्पश्चात् त्वक् को ऐसे उखाड़ ली जाती है जिससे खांचा या नली बने । अगर त्वक् के ऊपर झाड़ीदार शैवाल की वृद्धि होकर पर्त बन गई है तो उसे चाकू से अच्छी तरह रगड़कर साफ कर लिया जाता है, नहीं तो कच्चा माल खराब हो जाता है और औषधियों का पूरी मात्रा में उत्पादन करना सम्भव नहीं हो पाता है।

पत्र : आज, औषधियों के लिये वनस्पतियों की 25 प्रजातियों के पत्र कच्चे माल के रूप में उखाड़े तथा ग्रहण किये जाते हैं। तुर्कमेन लोकचिकित्सा में वनस्पतियों की 250 से ज्यादा प्रजातियाँ कच्चे औषध द्रव्यों के रूप में प्रयुक्त होती हैं। उनमें एलो (एलोई पेरुइ), बेर्बेरिस बुल्गारिस लि०, बटर-बुर हाइब्रिडस, कौबेरीस, हेनबेन, बेलाडोना (अत्रोपा बेल्लादोन्ना लि०), स्त्रमोनिउम बुल्गारिस लि०, डग-औट (एर्न-हाउस), हार्स, चेस्टनट, नेटल कौंसिआ (सेन्ना), लिली आफ़ द वैली (कोन्वालोरिया लि.), पुदीना (मेन्था पाइपेरीता लि.), कोल्ट्स फुट, फोलफुट (तिस्सिलागो फारफारा लि.), फोक्सग्लोव (दिजितालिस पुर्पुरेआ लि.), प्लेन्टैन (प्लान्टगो मैज़र लि.) बाटल ट्री (स्तेर्कलिआ लि.), फिग-ट्री (फिकुस कारिका लि.), बिअर बेरी (अरेतोस्ताफाइलोस उबाउर्सी), मार्श ट्रेफोइल (मेन्थान्थेस त्रिफोलिआते लि.), साल्विआ ओफिचिनालिस लि., गुन्त्रेआ (यूकलिप्तुस) आदि सम्मिलित हैं।

औषधीय पौधों की बहुत सारी प्रजातियाँ एलोइ (एलोइ पेरुइ), इसफगोल (प्लान्तगो माज़ोर, लि.), स्त्रायोनिडम बुल्गारिझ, लि. आदि के पत्र एक ही पौधे के अलग-अलग समय पर भी लिये जाते हैं।

समय की दृष्टि से जब क्रियाशील तत्व सबसे ज्यादा संचित होते हैं तब पौधों की एक श्रेणी में से पत्र लिये जाते हैं। इस तरह लिली ऑफ द वैल्ली के पत्ते उत्पत्ति काल के दरम्यान 25 दिन तक लिये जाते हैं, लेकिन पुष्पित होने के बाद क्रियाशील तत्वों का अंश कम हो जाता है। कोल्ट्स फुट (फालफुट तुस्सिलागा फार्फरा लि.) पत्र गर्मी की ऋतु के पहिले भाग में ग्रहण किये जाते हैं। ऐसे भी औषधीय पौधे है जिसके पत्र केवल एक ही बार लिये जाते हैं। पत्तों में आल्कलॉईड्स जब सबसे ज्यादा संचित हुआ हो तब पत्र ग्रहण किये जाते हैं। सितम्बर के पहले 10 दिन खत्म होने के बाद जब पकने की अवस्था होती है तब यह समय शुरू होता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

भाग १

औषधीय पौधों का कृषिकरण, शुष्कीकरण एवं संचयन

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

पत्र तभी ग्रहण किये जाते हैं जब ये खुल जाते हैं तथा इसका सामान्य विकास हो चुका होता है। ऋतु की शुरूवात का समय पत्र ग्रहण करने के लिये सबसे उत्तम समय है। पुष्पित होने से पहले पत्र को ग्रहण करने की सलाह नहीं दी जाती है क्योंकि कच्चे माल के रूप में वे पूर्ण गुणप्रद नहीं होती हैं। साथ ही, पौधे सूख जाते हैं एवं कमजोर हो जाते हैं।

पुष्प एवं पुष्पविन्यास : पुष्पित होने के प्रारम्भ में इनको ग्रहण करना चाहिये। इस समय इनमें सबसे अधिक प्रभावशाली तत्व रहते हैं, संग्रह करते समय कम टूटते हैं, सुखाते समय अच्छी तरह खड़े रहते हैं, तथा अपना स्वरुप बनाये रखते हैं। पुष्पों को हाथ से चुना जाता है तथा उसको हाथ से तोड़ा जाता है। कभी-कभी पुष्पविन्यास को पकड़ने के लिये विशिष्ट सुविधाओं का प्रयोग किया जाता है जैसे कि करछा। मात्रिकारिआ कामोमिल्ला लि. के पुष्पविन्यास को इसी तरह चुना जाता है।

फल एवं बीज :- चिकित्सा व्यवहार में पौधों के फल एवं बीज बहुतायत से प्रयुक्त होते हैं। उनमें अधिकतर से औषध तैयार किये जाते हैं। आजकल 22 पौधों के फल एवं बीज का उपयोग वैज्ञानिक चिकित्सा में किया जा रहा है यद्यपि 100 से अधिक का वर्णन लोक चिकित्सा में है। नीचे लिखे पौधों का फल और बीज का उपयोग चिकित्सा में किया जा रहा है :-

अनीस (पिंपिवेल्ला अनिसुम लि.) हाउथोर्न (ग्ररतउगुढ आक्सीआचात्था लि.) स्ट्रैमोनी (दतूरा लि.), पर्जिंग बकथौर्न (रामनुस काथार्तिका लि.) विबुर्नम (बिर्बुनम लि.) शिजान्द्रा (स्चिनान्द्रा लि.) पार्सनिप (पार्सिनाका लि.) स्कर्फी पी (सोराविआ लि.) मिल्क थिजिटज़ (सिलिबुम मेरिआनुमआहे) सर्विस ट्री (सोर्बुस लि.) पगोडा ट्री (सोफोरा लि.) कारवी कारुम कार्वी लि.) डिल (आनेथुम लि.) फेनेल (फोडानिकुलुम लि.) बर्ड चेरी (पाटुस मिल.) गुलाब (रोसा लि.) आदि।

पके फल और बीज में गुणवत्ता अधिक होती है अतः उन्हें हाथ से तोड़ लिया जाता है और फल के छिलके को फाड़ दिया जाता है। सर्विस ट्री, कारावी आदि के फल पुष्पछत्र और पतले कवच में होते हैं अतः उन्हें फाड़कर और सुखाकर उन्हें फलवृन्त से अलग कर लिया जाता है। गुलाब के फल वाह्य दल के साथ ही चुन लिये जाते हैं जो फल के ऊपर रहता है। सुखाने के बाद बाह्यदल को अलग कर फल प्राप्त किया जाता है। रसीले फलों को निकालना कठिन होता है। जैसे बिलबेरी, रास्पबेरी, स्ट्राबेरी आदि। टोकरी में उन्हें रखते हुए हर स्तर को पतली शाखाओं से ढ़क दिया जाता है जिससे फल दब या निचोड़े न जा सके।

मूल, कन्द और प्रकन्द :- आज की वैज्ञानिक चिकित्सा में 10 पौधों के मूल का उपयोग हो रहा है परन्तु तुर्कमान की लोक चिकित्सा में 150 से अधिक का उपयोग है। पौधे का ऊपरी भाग जब सूखने लगता है (वसन्त एवं ग्रीष्म काल) तब मूल को उखाड़ लिया जाता है। वसन्त काल के शुरु में उन्हें प्राप्त किया जा सकता है। लेकिन वसंत में फसल का समय बहुत छोटा होता है (कुछ ही दिनों का)। मूल तथा कंद को कदाली तथा कुल्हाड़ी से खोदा जाता हैं। कभी-कभी ढीली भूमि में से कांटेदार पंजे वाले या घास इक्ट्ठा करने वाले यंत्र (Rake) से भी निकाले जाते हैं। पहले मूल तथा कंद से मिट्टी हटाई जाती है तथा उसके बाद उनको पानी में धोया जाता हैं। अगर फसल ज्यादा या कम है तो उसे बड़ी नदी में बहते पानी में धोया जाता है। धोने के बाद मूल तथा कंद को दरी, साफ घास, थैले या अखबार पर सुखने के लिये रखा जाता है। तत्पश्चात् मूल एवं कंद से कांड, छोटे मूल एवं क्षतिग्रस्त तथा सड़े हुए हिस्सों को हटाकर पूरी तरह सुखाने वाले स्थल पर भेज दिया जाता है।

क्षुप :- वर्तमान समय में चिकित्सकीय व्यवहार में 50 से अधिक औषधीय पौधों का प्रयोग हो रहा है, जबकि लोक चिकित्सा में 350 से ज्यादा का प्रयोग हो रहा है। इसमें मार्शमैली मिल्क वेच, डेडली नाइटशेड, वाटर पेपर, लेडीज थम्ब, प्लीजेन्ट्स आई, मार्जोरम, सेन्टजौन्सवर्ट, सेन्टौरी, ग्राउन्ड सेल, लिली ऑफ दि वैली, पिओनी, प्लान्टेन (इसफलाल) फील्ड हौर्स टेल, कौमन वर्मउड, मदरवर्ट, यार्‌रो, कुडवीड, बर-मेरी गोल्ड एवं सेलान्डिन आदि आते हैं।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

क्षुप वानस्पति पौधों के फूल देने वाले पत्तेदार अंकुर हैं, उनके सारे अवयवों का उपयोग औषधि के लिये होता है। इनका रासायनिक औषध निर्माणीय प्रक्रिया में उपयोग किया जाता है तथा सलाह के अनुसार घरों में उपयोगी औषध के रूप में भी किया जाता है।

औषधीय क्षुपों को सामान्यत पुष्पित होने के समय और कभी-कभी उसके पूर्ण रूप से पुष्पित होने पर ग्रहण किया जाता है। दर्राती एवं चाकू से उसे काटा जाता है और जमीन के ऊपर के भाग का उपयोग में लाते हैं। यदि पौधा मोटा हो तो दर्राती या तेजधार वाले शस्त्र से काट लिया जाता है।

पौधे जब मौसम शुष्क हो तभी जमा किया जाता है। सुबह के समय ओस के कारण या वर्षा के चलते यदि पौधे गीले हों तो उसके सूखने पर ही उन्हें जमा किया जाता है। शाम होने पर इस प्रक्रिया को बन्द कर देते हैं। प्रातः 8 बजे से 9 बजे तक तथा सांय 4 से 5 बजे तक इनके संग्रहण का उपयुक्त समय है। जमीन के नीचे वाले भाग को ओस या वर्षा से गीले होने के समय संग्रहण करना अच्छा रहता है। ज्यादा यातायात वाली सड़कों अथवा राजमार्ग के नजदीक के धूल भरे एवं गंदे पौधों को ग्रहण नहीं करना चाहिये। रोग पीड़ित पौधे तथा कीड़े वाले पौधों को ग्रहण नहीं करना चाहिये। कभी-कभी भूमि के ऊपर सभी भाग होते हैं।

कच्चे माल को पात्र में रखना चाहिये। विशेषतः पुष्प, पुष्प विन्यास, पत्र, रसीले फल आदि को ग्रहण करने के लिये सबसे अच्छा पात्र टोकरी है।

कच्चे माल को तिरपाल के कपड़े पर या साफ फर्श पर सूखने के लिये बिछाया जाता है। यह भी देखना चाहिये कि उसमें उसी पौधे के अन्य अवयव या दूसरे पौधे तो नहीं मिल गये हैं। अपने जगह पर सूखे पौधों के पहुँचाने के बाद यह भी देखना चाहिये कि वे अंश जो चिकित्सा में उपयोगी न हों, पत्थर के टुकड़े एवं मिट्टी के अंश हो उसे अलग कर देना चाहिये। इसके बाद उसे तिरपाल पर या स्वच्छ फर्श पर सुखाना चाहिये।

इस प्रक्रिया के बाद कच्चे माल को जल्दी सुखाना चाहिये। यदि आप इसे समय पर नहीं सुखायेंगे तथा उसकी सफाई किये बिना तथा सुखाये बिना एक रात भी छोडेंगे तो उनके उपयोगी तत्व (ग्लायकोसाइट्स, अल्कालायड्स आदि) नष्ट हो जायेंगे और सूक्ष्मजीवाणु तथा फंगी लग जायेंगे क्योंकि उनके कोषाणु कार्यरत होंगे और कच्चा माल सड़ने लगेगा और उस पर फफुंद लग जायेंगे। अतः सुखाने का मुख्य उद्देश्य कच्चे माल से नमी हटाना है जिससे पौधों में जैविक प्रक्रिया और किण्वीकरण का काम न हो सके। जितनी जल्दी वह सूखेगा उतनी ज्यादा उसमें गुणवत्ता होगी।

सुखाने की पद्धति कच्चे माल के प्रकार तथा उसके अन्दर के उपयोगी तत्वों पर निर्भर करती है। जिनमें इथेरियल तैल होते हैं, (जैसे थाइम, स्वीट फ्लैग, वाइल्ड मारजोरम) धीरे-धीरे 30 से 35^0 पर सूख जाते हैं क्योंकि इससे ज्यादा ताप पर तैल उड़ जायेंगे।

इसके विपरीत यदि कच्चे माल में ग्लायकोसाइड्स हो तो 50 से 60^0 पर सुखाये जायेंगे जिससे किण्वकरण की प्रक्रिया न हो सके।

कच्चे माल जिसमें विटामिन सी, एस्कौरविक एसीड (गुलाब और कुरंट के फल) 80 से 90^0 ताप पर सुखाये जाते हैं जिससे उनका ओषजनीकरण न हो सके।

मौसम के अनुसार प्राकृतिक अथवा कृत्रिम ऊष्मा का प्रयोग कच्चे माल को सुखाने के लिये किया जाता है। जब मौसम साफ हो तो उन्हें बाहर धूप में, छांव में या अच्छी तरह हवादार कमरे में सुखा सकते हैं। जब मौसम खराब हो तो उन्हें सुखाने के उपकरण या चूल्हा पे सुखाये जाते हैं। धातु के छतवाली अटारिओं में पौधे जल्दी सूखते हैं, विशेषकर अगर उसमें हवा के आने-जाने के लिये खिड़कियाँ हो। जानवरों के बाड़ों में बनी अटारियां तथा जिस कमरे में तीव्र गंधयुक्त पदार्थ या सामान जैसे कि रासायनिक, खनिज उर्वरक आदि रखे हो, वे स्थान औषधीय पौधों को सुखाने के योग्य नहीं है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

पौधों के पत्र, पुष्प, कांड और भूमिगत भाग, जिनमें इथरीयल तैल तथा ग्लायकोसाईड्स हैं, उनको सुखाते समय सूर्य की रोशनी से बचाया जाता है। अन्य पौधों के कंद, मूल एवं फल तथा बीजों को सूर्य की रोशनी में सुखाया जाता है। कच्चे माल को सुखाते समय उनको बीच-बीच समय पर उन्हें हिलाया जाता है। अच्छी तरह सूखे हुए कच्चे माल में हमेशा हाईड्रोस्कोपीक नमी का कुछ अंश जरूर रहता है। 8 से 15 प्रतिशत तक इसके अंश का गुणवत्ता पर कोई प्रभाव नहीं होता है।

सुखाने की प्रक्रिया तब पूरी हो जाती है जब, मूल, कन्द एवं पत्ते मुड़ते नहीं बल्कि मोड़ने पर टूट जाते हैं या फट जाते हैं। पत्ते और फूल मसलने पर चूर्णित हो जाते हैं और रसदार फल चिपकते नहीं और गांठ जैसे नहीं बनते।

इस तरह सुखाये गये कच्चे माल में पूरी गुणवत्ता होती है और उन्हें केमिस्ट या गांवों के साधारण स्टोर्स को भेजे जाते हैं। लेकिन स्वयं के प्रयोग के लिये ग्रहण किये गये कच्चे माल को कागज या कपड़ों के थैलों में, बक्सों में, सफेद कागज लगाये हुए संदूकों में या डिब्बों में रखा जाता हैं। जहां पौधों का औषधीय प्रभाव ईथर युक्त तैल या अन्य उड़नशील तत्वों से जुड़ा हुआ है ऐसे कच्चे माल को ढ़क्कन वाले काँच पात्र में ढ़क्कन वाले धातु के पात्र में रखा जाता है। थैलों, पात्रों, संदूक या अन्य में पैक करते समय कच्चे माल का नाम तथा प्रकार तथा उसकी कटाई का समय दर्शाते हुए विवरण चिपकाना चाहिये। कच्चे माल को सूखे, अंधेरे तथा साफ स्थान में संचय करना चाहिये। पुष्प तथा पत्र का संचयन समय 1-2 साल से ज्यादा नहीं होता जब कि मूल, कंद एवं छाल 2 से 3 साल तक भण्डारण किये जा सकते हैं।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

औषधीय पौधों में जैविक रूप से क्रियाशील तत्वों का अंश

वैज्ञानिक तथा लोक चिकित्सा में प्रयुक्त औषधीय पौधों की ज्यादातर प्रजातियों का चिकित्सकीय प्रभाव उसमें स्थित विभिन्न, जैविक रूप से क्रियाशील तत्वों के अंश के साथ जुड़ा हुआ है। ये तत्व प्राणियों तथा मनुष्य के शरीर में प्रवेश करने के बाद अपने क्रियाशारीर की दृष्टि से क्रियाशील गुणवत्ता एवं उपचारात्मक प्रभाव दिखाते हैं। ये तत्व प्रभावी तत्व कहलाते हैं। इनके अलग-अलग संघटन होते हैं, तथा रासायनिक संघटन विभिन्न वर्ग के होते हैं जैसे कि एल्कलोईड्स, ग्लायकोसाईड्स, कौमरीन्स (Coumarins) इथरीअल तैल, रेझीन्स, टेनिक तत्वों तथा विटामिन्स।

एल्कलोईड्स :- ये तत्व पौधों द्वारा पैदा किये जाते हैं और इनमें नाइट्रोजन युक्त जटिल सम्मिश्रण होता है। पौधों में एल्कालायड्स की मात्रा असमान होती है। सोलेनेसी और पापावरेसी वर्ग के पौधों में एल्कालायड्स अधिक मात्रा में होते हैं। एक ही तरह के पौधे में मौसम एवं भूमि के आधार पर एल्कलायड्स की मात्रा कम या अधिक हो सकती है। अधिकतम एल्कलायड्स औषधीय गुणवत्ता वाले होते हैं। उनका प्रयोग आंतरिक अवयवों की व्याधियों, नाड़ीतंत्र, तथा अन्य व्याधियों में होता है। स्ट्रीकनीन, मोर्फीन, पापावरीन, कोडीन, इक्वीनीन, केफीन आदि एल्कलोईइस होते हैं। पौधों में एल्कलोईड्स का अंश सूक्ष्म से लेकर 2-8 प्रतिशत तक होता है।

तुर्कमेनिस्तान फ्लोरा के 115 नाइट्रोजन युक्त पौधों का वैज्ञानिक तथा लोक चिकित्सा में प्रयोग होता है।

ग्लायकोसाईड्स :- एनाझोटिक (Anazotic) तत्वों का यह एक बहुत बड़ा वर्ग है। इसके में एक शर्करायुक्त (Saccharine) भाग-ग्लीकोन तथा शर्करा रहित भाग एग्लीकोन (Aglicone) होता है। शर्करा रहित भाग का प्रभाव एल्कलोईड्स के विपरीत ग्लायकोलाईड्स पौधों के एन्ज़ाइम्स द्वारा विभिन्न भौतिक परिवर्तन द्वारा तथा संचय करते समय नष्ट होते हैं।

ग्लायकोसाईड्स किण्वों द्वारा बहुत आसानी से नष्ट होते हैं। इसलिये वनस्पतियों के तोड़ते ही किण्वीकरण से ग्लायकोसाईड्स पौधों से अलग हो जाते हैं तथा अपनी गुणवत्ता खो देते हैं। ग्लायकोसाईड्स युक्त पौधों को ग्रहण करते समय यह ध्यान में रखना चाहिये कि कच्चे माल को नमी से दूर रखें क्योंकि सूखे पदार्थों में किण्व कार्य नहीं होता है।

तुर्कमेनिस्तान के फलोरा में 140 से ज्यादा कुलों में ग्लायकोसाईड्स पाये जाते हैं। 354 प्रजातियों के पौधों में ये मिलते हैं।

वास्तव में ग्लायकोसाईड्स के निम्नोक्त वर्ग होते हैं-कार्डीआक ग्लायकोसाईड्स, फ्लेवोनोईडस, एन्थ्राग्लायकोसाईड्स (विरेचक), सेपोनीन्स,तिक्त पदार्थ आदि। इनमें कार्डीआक ग्लायकोसाईड्स चिकित्सा व्यवहार में बहुत महत्व के हैं।

वानस्पतिक औषधों में आधे से ज्यादा कार्डीआक हैं। ग्लायकोसाईड्स उत्पन्न करने वाले पौधों में फोक्सग्लोव, लिली आफ द वैली, फीआसन्त ऐ एवं कुछ अन्य हैं। हृदय रोगों की चिकित्सा में पौधों के इस वर्ग का बहुत महत्व है। कार्डीआक ग्लायकोसाईड्स वाले पौधे अति विषैले होते हैं। कार्डीआक ग्लायकोसाईड्स बहुत अस्थिर हैं। इसलिये ग्लायकोसाईड्स युक्त पौधों का संग्रहण तथा शुष्कीकरण बहुत ध्यानपूर्वक किया जाता है।

ग्लायकोसाईड्स व्यापक रूप से व्यवहार में प्रयुक्त होते हैं। विरेचन प्रभाव (वाले तथाकथित एन्थ्राग्लायकोसाईडस में बकृथोर्न, रुबाब, कैसिआ, सेन्ना (कासिआ लि.) ऐलो (ऐलोई पेरुइ) आते हैं।

बक्थोर्न, रुबार्ब, कैसिआ, सेन्ना (कासिआ लि.), एलो (एलोई पेरुइ लि.) तथा कुछ अन्य पौधों में विरेचक प्रभाव युक्त एन्थ्राग्लायकोसाईड्स होते हैं। कार्डीआक ग्लायकोसाईड्स के विपरीत ये कम विषैले तथा संचयन के लिये स्थिर हैं। इनमें से अधिकतम रक्तिमा लिये नारंगी वर्ण के होते हैं।

ग्लायकोसाईड्स वाले कुछ पौधे तिक्त होते हैं। उनमें कामन वर्मवुड जेन्थिअन डेंडिलिओन चंन्ताउरी आदि शामिल हैं। चिकित्सा शास्त्र में इनका प्रयोग तिक्त द्रव्य के रूप में किया जाता है। तिक्त द्रव्य आमाशय गति को बढ़ाकर तथा आमाशयिक रसों का स्राव बढाकर भूख को बढ़ाता है तथा आहार पाचन का कार्य करता है।

सैपोनीन्स :- ये जैविक रूप से क्रियाशील तत्व हैं। बहुत पौधों में सैपोनिन होता है जो ग्लायकोसाईड्स का एक वर्ग बनाता है। 70 से अधिक पौधों में सैपोनीन्स पाये जाते हैं। पिंक्स तथा प्रिम्रोसेस में बहुत प्रचुर मात्रा में मिलते हैं।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

सैपोनीन युक्त पौधे चिकित्सा व्यवहार में कफ निःसारक मिल्क वर्ट (पोलीगाला लि०) के मूल जाँकब लैडर के मूल ग्रीक वलेरियन से मूत्रल (जावा चरम), पित्रसारक के रूप में प्रयुक्त होते हैं। ऐसे भी सैपोनीन्स है जो रक्तचाप को कम करते हैं, वमन कारक हैं तथा इनमें स्वेदल प्रभाव आदि होते हैं।

आजकल फ्लेवोनोईड्स बहुत महत्व के हैं। ये फीनोल संयोजनों में आते हैं। अनेक फ्लेवोनोईड्स विटामीन पी, जीवाणुनाशक तथा कोलेगोग प्रभाव भी दिखाते हैं तथा रेडीयोधर्मी (radio active) तत्वों को जीव (शरीर) से बाहर निकालते हैं। तुर्कमेनिस्तान में पौधों की 168 प्रजातियों में सैपोनीन मिलते हैं।

कोमेरीन्स तथा फ्युरानोकोमेरीन्स: पौधों में ये तत्व अपने स्वरूप में अथवा शर्करा (sugar) के साथ संयुक्त बन कर ग्लायकोसाईड्स के रूप में मिलते हैं। ये पानी में घुलते नहीं तथा प्रकाश के प्रति संवेदनशील हैं। उम्बेलीफेरी लगूमिनोचेया, रूताचेया में प्रायः कोमोरीन्स मिलते हैं, विशेषतः उनके मूल तथा फलों में आज के समय में 150 से अधिक कोमेरीन बनाने वाले संयोजनों का अध्ययन किया गया है। चिकित्सा में फ्युरानोकोमेरीन वाले पौधे अधिकतम महत्व के हैं। उनमें से अधिकतर के विविध गुणधर्म हैं। तुर्कमेनिस्तान में 139 प्रजातियों के पौधों में कामेरीन्स मिलते हैं।

वाष्पशील तैल :- पौधों की अनेक प्रजातियाँ जैसे पुदीना (मैन्ता लि०), वलेरियन (वलेरिअन लि०) थाईम (तिमुस लि०), सेज-ब्रश, वर्मबुड, (आर्तेमीसिआ लि०), ड़िल (अनेथुम लि०), सेज (साल्विआ लि०) आदि उड़नशील तैलीय प्रवाही हैं जो पानी में घुलनशील नहीं है, तथा तीव्र गंधयुक्त होते हैं। विश्व में 2500 से ज्यादा वाष्पशील तैल वाली प्रजातियों की पहचान हो गई है। तुर्कमेनिस्तान फ्लोरा में 227 से ज्यादा प्रजातियों के पौधों में चिकित्सकीय/औषधीय वाष्पशील तैल मिलते हैं। पौधों में उनकी मात्रा सामान्य से लेकर 20 प्रतिशत (सामान्यतः 2-3 प्रतिशत) पाई जाती है।

वाष्पशील तैल के चिकित्सा में विभिन्न उपयोग होते हैं। उदाहरणतः वेदनाशामक निद्राजनक, नाड़ी उत्तेजक, सेज ब्रश (आर्तेमीसिआ लि०) के तैल का असर हृदय क्रिया पर असर दिखाने वाला (Camphor-कर्पूर) कासशामक, कीटाणु नाशक (bactericidal) तैल, कृमिहर तैल, आमाशयिक क्रियाओं को उत्तेजित करने वाले आदि। वाष्पशील तैलों का प्रयोग औषध की गंध बढ़ाने के लिये तथा सुधारने के लिये भी किया जाता है, उदाहरणतः लावेंडर (लावांदुका लि) पुदीना (मेन्ता लि०) धनिया (कोरिआन्द्रुम लि०) आदि के तैल। इत्र उद्योग तथा अन्य उद्योग में भी वाष्पशील तैलों का उपयोग होता है।

वाष्पशील तैलों का संघटन ऑक्सीजन के प्रभाव से बदल जाता है और नमी अलग करने वाले संयोजन का ओक्सीडेशन होता है ये राल (resin) में बदल जाते हैं तथा अपनी गन्ध खो देते हैं। तैलों का वर्ण भी प्रकाश के प्रभाव में बदलता है। प्रकाश से उनका संघटन भी बदलता है। इसलिये वाष्पशील तैलों वाले पौधों का शुष्कीकरण, प्रक्रिया, संचयन तथा औषध की विभिन्न कल्पनाओं के लिये सूचनाओं का पालन करना जरूरी है।

राल : रासायनिक संघटन में ये वाष्पशील तैलों के नजदीक हैं, तथा पौधों में अक्सर ये दोनों पाये जाते हैं। कुछ पौधों की राल में उपचारात्मक गुण होते हैं। चिकित्सा व्यवहार में ये प्लास्टर बनाने के लिये एवं विरेचन के रूप में प्रयुक्त होते हैं। एक पाईन वृक्ष (पीनुस लि0) की राल प्लास्टर क्लेओल का एक संयोजन है जो व्रण तथा चोट का रोपण करती है।

तुर्कमेनिस्तान की फ्लोरा में 50 से ज्यादा प्रजातियों के पौधों में औषधीय राल पाई जाती है। हपुषा (युनिपेर लि०) मिल्क वेच (आस्लगालुस) फुरुलागो की कुछ प्रजातियां तथा अमोनीयाक पौधों दोरेमा अम्मोबिआकम् में सबसे ज्यादा राल होती है तथा उद्योगों में इनका उपयोग करने की सलाह दी जाती है।

टैनिक पदार्थ अथवा टैनीनः त्वचा को रंगने की इनकी योग्यता के कारण उनको टैनीन कहा जाता हैं। ये त्वचा को बनाते हैं। सामान्यतः ओक (क्वेर्कम लि०) की त्वक् त्वचा को तांबे जैसे रंगने के लिये प्रयुक्त होती थी इसलिये इस प्रक्रिया को टैनिंग कहते हैं तथा इन पदार्थों को टैनिन कहते हैं।

प्रायः सभी पौधों में टैनिन पदार्थ विविध मात्रा में पाये जाते हैं और ये एमोर्फिक एनाजोटिक कम्पाउन्ड्स (Amorphic anazotic compounds) बनाते हैं जो बहुआण्वीक फीनोलस द्वारा व्युत्पन्न (derivatives) हैं। पौधों के विभिन्न हिस्सों में टैनीक पदार्थ संचित होते हैं, विशेषकर त्वक्, पेड़ के काष्ठ एवं पत्रों तथा झाड़ों तथा बहुवार्षिक पौधों के जमीन के नीचे के भाग में होते हैं। टैनिक पदार्थ विषात्मक होते हैं और उनमें विशेष तीक्ष्ण तरह का स्वाद होता है। कुछ ऐसे पौधे जिनमें टैनीन अधिक मात्रा में होता है उन्हें कब्जहर एवं कीटाणुनाशक के रूप में प्रयोग में लाया जाता है। इनका उपयोग कंठ प्रक्षालन और व्रणशोथ नाशक के रूप में भी किया जाता है।

इनमें अल्ब्युमीन वाले अंश के कारण ये कब्जहर और व्रणशोथहर का कार्य करते हैं और व्रणशोथ होने को यह रोकता है। जले हुए भाग और व्रण पर इसके उपयोग से प्रोटीन जमा होती है और इस तरह यह रक्तरोधक का काम करता है। भारी धातुओं और एल्कलायड्स के विष के प्रतिरोधी का भी यह कार्य करता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

टैनिन युक्त द्रव्य विशिष्ट किण्वों के कारण औषजनीकृत हो जाते हैं और ऐसे तत्व में बदल जाते हैं जो जल में नहीं घुलता। उनका रंग गाढ़ा भूरा या जंग (rust) के तरह का हो जाता है। इससे यह पता चलता है कि सेव, आलू, क्विन्स आदि कटने पर भूरे क्यों हो जाते हैं।

तुर्कमेनिस्तान के 90 से अधिक पौधों में टैनिन तत्व पाये जाते हैं। उनमें से कुछ का वैज्ञानिक एवं लोक चिकित्सा में उपयोग बड़े पैमाने पर होता है।

विटामिन :- मनुष्य में इन द्रव्यों की अल्प मात्रा सामान्य विकास एवं जैविक कार्यों के लिए आवश्यक है। चयापचयन, स्वांगीकरण, कार्बोहाईड्रेट्स, प्रोटीन्स, वसा जैसे प्रधान आहार द्रव्यों का उपयोगिता के लिए विटामिन परम प्रधान है। विटामिनों की अल्पता चयापचयन को बिगाड़ता है, कार्य क्षमता को कम करता है, तुरन्त थकावट को पैदा करता है, नाड़ी तंत्र की स्थिति को खराब कर देता है और अन्य विकारों को पैदा करता है। अभी तक लगभग 30 प्राकृतिक विटामिनों के विषय में जानकारी है, जिनमें अधिकतर औषधीय पौधों के योग है।

मनुष्य को लगभग 20 विटामिनें जरूरी हैं जो बाहर से मिलते हैं। अन्य विटामिनें शरीर के अंगों में उत्पन्न होती हैं।

विटामिन ए, बी,(थायामिन), बी2 (रिबोफ्लोविन), बी6 (पैरिडोक्सीन), बी12, बी15, सी (एस्कोर्बिक अम्ल), डी, ई, एफ के, पीपी, (इनोसायिट, कोलीन, बायोटीन, इत्यादि) के भौतिक एवं रासायनिक गुण लक्षण एवं उनके शरीर क्रिया संबंधी महत्व के विवरण बहुत विस्तार से दिये गये हैं। मनुष्य में विटामिन की आवश्यकता अपने जीवन तथा कार्य, स्वास्थ्य स्थिति और ऋतुओं पर आधारित होती है।

तुर्कमेनिस्तान के पौधीय राज्य में 260 जातियां हैं जिनमें विटामिन रहते हैं। उन्हें अनुसंधान, लोक चिकित्सा तथा आहार उद्योग में प्रयोग करते हैं। आहार पदार्थों में विटामिन मात्रा पता चले तो आप अपने स्वास्थ्य सुधारने हेतु इस ज्ञान का उपयोग कर सकते हैं।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

शाक तथा फलों में विटामिन की मात्रा

नाम	प्रति 100 ग्राम में विटामिन की मात्रा मि०ग्रा० में	प्रतिदिन सेवन की मात्रा
ए-रेटिनौल पौधों में कैरोटिन	0.20 से 2.0. यकृत्, कॉड मछली की यकृत तैल, मछली का अण्डा, मलाई, दूध, अम्ल मलाई, गाजर, सी-बक्थोर्न लाल मिर्ची, गुलाब, रोवान, अप्रिकॉट (खुरमानी) नारंगी, पालक, अम्ल-शाक सलाद पत्ते, टमाटर, खरबूजा फल, गोल प्याज, पेठा, बेल।	5000-6500 ई०यू०
बी$_{१}$ (थायमिन)	0.05 से 0.40. यकृत मांस, उबला रोटी, शालिधान्य (ओट जई, कुट्टू) शिम्बी, मटर, सोयाबीन, खमीर, गोधूम, हरा मटर, द्राक्षा, खुबानी, चुकंदर, छोटी गोल प्याज, इत्यादि।	1.0 से 2.0
बी$_{२}$ (राइबोफ्लैविन)	0.09 से 0.30. यकृत्, अंडे, पनीर, दूध, दही, मछली, ब्रेड, फूलगोभी, सलाद पत्ते, शालि धान्य (जई, मोती यव), ख़मीर पालक, गाजर, मटर, आलू, सोयाबीन, आलू बुखारा, आड़ू, रसभरी, हरा मटर।	1.5 से 2.0
बी$_{३}$ (पेंटोथेनिक अम्ल)	0.02 से 4.50. सोयाबीन, हरा मटर, आलू, मूंगफली, चावल, जई, गोभी, गाजर, खमीर, गेहूं, राई, टमाटर, पेठा, खरबूजा।	3.0 से 10.0
बी$_{६}$ (पाईरिडोक्सीन)	0.06 से 2.00. सोयाबीन, हरा मटर, आलू, बन्दगोभी, टमाटर, गेहूं भूसी (2.5 मि०ग्रा०) मक्का, खमीर, नाशपाती इत्यादि।	2.0
बी$_{सी}$ (फोलासिन)	50-280. तरबूजा, खरबूजा, कुकुरमुत्ता, खमीर, स्ट्राबेरी, रसभरी, चेरी, गेहूँ, मूंगफली, सेब, आलू, बन्धगोभी गाजर, पार्सली, चुकन्दर।	2.0 से 3.0
बी$_{१२}$ सायनकोबालमिन	10-130. यकृत्, पनीर, दूध, मछली, समुद्री साग।	0.001 से 0.002
बी$_{१५}$	यकृत्, खमीर।	2.0
सी (ऐस्कोर्बिक अम्ल)	10 से 1500. गुलाब, काला किशमिश, ऐश, बन्दगोभी, टमाटर, आलू, शलगम, बगीचा मूली, नारंगी, स्ट्रोबेरी, सेब, कॉर्नीलियन चेरी, चेरीबायोफ्लैविनायड।	7.0 से 100.0
पी (वायोफ्लैविनोईड-रूटिन, काटेकोल, इत्यादि)	10-75 मि०ली० चाय (विशेषकर काला चाय) निम्बू, (450-750), बादाम, गुलाब (250-680), टमाटर, गाजर काला किशमिश (500 मि०ग्रा०)	15.0 से 20.0
पीपी (निकोटिनिक अम्ल, निमसिन)	1.0 से 8.0. मूंगफली (8.6 मि०ग्रा०), हरा चाय, मटर, कुट्टू (410 मि०ग्रा०), यव, मक्का, गेहूं अंकुर (3.0 (मि०ग्रा०), ब्रेड, आलू, सेम, मसूर।	15.0 से 20.0
एच$_{१}$ (वायोटीन)	3.0 से 6.0. सोयाबीन, चावल भूसी, मूंगफली, फूलगोभी, प्याज, खरबूजा, किशमिश इत्यादि।	150-20. mkg
एच$_{२}$ (अमैनो-बेंजोइक अम्ल)	5.0 से 1600.0. चावल भूसी (1600), गेहूं अंकुर (180) गाजर, आलू, पालक।	180 mkg
यू (मिथैलमेथोनिन)	5.0-20.0. बन्दगोभी, पार्सली, टमाटर, केला, स्ट्राबेरी।	15.0 से 20.0
डी. कैल्सीफेरोल	40-500 ई०डी० कौड मछली यकृत् तैल, मक्खन (1) 500 ई०डी० दूध, अम्लीय मलाई, कुकुरमुत्ता, खमीर, अण्डपीत।	500 इं०यू०
ई (टोकोफैरोल)	3.0 से 6.0. सी बक्थोर्न, गुलाब, बन्दगोभी, पार्सली, ऐश फल, देवदारु फल, पिस्ता, जई, मक्का, अंकुर।	5.0
के (फाईटोक्विनोन)	सोयाबीन, बन्दगोभी, पेठा, टमाटर, आलू, बिच्छू बूटी (3.2 से 15 मि०ग्रा०) गुलाब, ऐश, सी बकशोर्न, स्ट्राबेरी, किशमिश, छोटी गोल प्याज।	5.0

TÜRKMENISTANYŇ ÖSÜMLIKLERI

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

ऊपर कहे गये कार्यकारी पदार्थों के अलावा अन्य रासायनिक योगों के समूह जैसे आंगिक अम्ल, श्लेष्मा, गोंद, वसा तैल, रंग द्रव्य, प्रकिण्व, खनिज लवण, सूक्ष्म घटक इत्यादि के कारण भी पौधों के आरोग्यकारी गुण जाने जाते हैं।

ज्यादा मामलों में पौधों के आरोग्यकारी कार्य का एक पदार्थ से सम्बन्ध नहीं होता परन्तु उनके पूरे जटिल पदार्थों पर होता है।

इस विषय में केवल शुद्ध पदार्थ के प्रयोग से उच्च आरोग्यकारी कार्य नहीं होता। पूरे द्रव्य के उपयोग से होता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

औषधीय पौधों की कल्पनाए

चिकित्सा में तैयार नहीं किये गये औषधीय पौधे बहुत कम प्रयोग होते हैं। अनेक आरोग्यकारी उपचार और औषधीय कल्पनाएं उनसे तैयार किये जाते हैं, अति मामूली औषधीय कल्पना चूर्ण है। पौधों के कुल भागों जैसे पत्र, फल, मूल, प्रकन्द को कूटकर छोटे-छोटे टुकड़े कर चूर्ण करते हैं। पौधों के शुष्क भागों को मामूली खरल में या कोफी चक्की में पीसते हैं। चूर्णों को आभ्यान्तर या घावों या व्रणों पर छिड़क कर प्रयोग करते हैं। औषधाीय पौधे से बने चूर्ण कदाचित् प्रयांग में आते हैं।

औषधीय पौधे ज्यादातर फाण्ट, कषायों के रूप में प्रयोग होते हैं, जो पौधों के औषधीय कच्चा माल के जलीय सार हैं। फाण्ट सामान्यतः पत्र, पुष्प, काण्डों से, कषाय मूल, त्वक्, प्रकन्द से बनते हैं, पौधे के कच्चा माल जैसे पत्ते, फूल, छोटे-छोटे यानी 5 मि०मी० से बड़ी नहीं हों काटे जाते हैं। परन्तु काण्ड, त्वक्, मूल, प्रकन्द 3 मि०मी० से बड़े न हों काटे जाते हैं और फल और बीजों का चूर्ण बनाते हैं और उनके एक-एक टुकड़ा 0.5 मि०मी० से बड़ा न हो। कटे हुए कच्चा माल को एक तामचीनी या चायदानी में डालकर उसमें पानी भी डालें। उसके ऊपर ढक्कन रखें और उसे उबलते पानी के पात्र में रखें। फाण्टों को 15 मिनट और कषाय को 30 मिनट उबालते हैं। बीच-बीच में लगातार हिलाते रहें। गरम करने के बाद उसको कमरे के तापमान तक एक घंटा ठंडा करें। छान कर, बचे हुए अवशेष को पानी से निचोड़ कर निकालें। सारों का पानी डाल कर यथावश्यक अनुपात में पतले कर सकते हैं। वजन में एक भाग कच्चा माल से 10 गुना फाण्ट या कवाथ बनता है।

कुछ पौधों का फाण्ट जो आभ्यन्तर उपयोग के लिए प्रयोग करते हैं, वे कम गाढ़े रहते हैं, कच्चामाल और पानी का अनुपात 1:20 तक या 1:30 इत्यादि, परन्तु 1:10 नहीं। फाण्ट जो बाह्य प्रयोग के लिए उपयोगी हैं ज्यादा गाढ़ा रहते हैं।

घरों में फाण्ट या कषाय बिना उबाले बनाये जाते हैं। औषधीय कच्चा माल को एक बर्तन में डालकर उसमें उबलते पानी डालकर ढक्कन कसकर बन्द करके 4-8 दिन रखते हैं। बाद में उसे छानकर प्रयोग करते हैं।

फाण्ट और कषाय शीघ्र ख़राब होते हैं। विशेषतः ग्रीष्म काल में और उष्ण स्थानों में। इसलिए उनको रोज तैयार करना चाहिए। यदि संभव नहीं हो तो उनको अंधेरे, ठंडे स्थान पर या रिफ्रिज़िरेटर (प्रशीतन उपकरण) में संचय किये जाते हैं, परन्तु 3 दिन से अधिक नहीं।

गैलेनिक्स कहे गये औषधीय सुरासार को औषध निर्माणशालाओं में और विशेष सुविधाओं से युक्त रसायन शालाओं में औषधीय पौधों से तैयार किया जाता है। औषधीय सुरासार 40 या 70 प्रतिशत मूल से बनाए जाते हैं। सुखाये और कटे हुए पौधों को एक पात्र में लेकर उस पर उचित तीव्रता/प्रबलता की सुरा डालकर पात्र को कसकर बन्द कर, 7 दिन रखते हैं। उसके बाद उसको छानकर, निचोड़ते हैं। उग्र पदार्थों वाले कच्चा माल से औषधीय सुरा सार 1:10 अनुपात में बनाये जाते हैं। परन्तु औषधीय सुरा सार अधिकाधिक पौधों से 1:5 अनुपात में बनाते हैं।

औषधीय सुरा सार को लंबे समय तक संरक्षण कर सकते हैं। उनको कम मात्रा में और बिन्दुओं के रूप में (10-30 बूंद, कम या ज्यादा) देते हैं। गैलेनिक्स को छोड़कर नव गैलेनिक्स को चिकित्सीय औषध निर्माण उद्योग में अक्सर तैयार करते हैं। वे पौधों में से बने पानीय सार और बहुत कम सुरीय सार हैं, जो हानिकर पदार्थों से शुद्ध हैं। उन्हें केवल आभ्यन्तर प्रयोग में ही नहीं परन्तु सूचीवेध द्वारा भी प्रयोग किया जाता है। सूचीवेध के लिए नियोगैलेनिक्स एम्पल्स (दवा से भरा छोटा प्रायः कांच का पात्र जिससे सूई द्वारा दवा शरीर में डाला जाता है।) और आभ्यन्तर प्रयोग के लिए नयोगैलेनिक्स बोतलों में तैयार किए जाते हैं।

चिकित्सा कर्माभ्यास में सुखाये, काटे औषधीय पौधों के मिश्रण, जिसमें कभी-कभी खनिज द्रव्य मिलाये जाते हैं, प्रजाति या फाण्ट (चाय) का विस्तार से प्रयोग हो रहा है। प्रजातियों से फाण्ट, कषाय और प्रलेपन औषध बनते हैं।

औषधीय पौधों के चूर्णों से लेप बनते हैं। वैसलीन, लवण रहित सूकर वसा, मक्खन या पौधों से निकाले तैल लेप के लिए आधार के रूप में प्रयोग होता है। वैसलिन आधारित लेपों से सूकर वसा या नवनीत आधारित लेप चर्म के भीतर जल्दी जा सकते हैं और गहराई में उसका असर दिखा सकते हैं।

कुछ पौधों के ताजा रस को आरोग्यकारी/ रोगनाशक कार्य के लिए प्रयोग करते हैं।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

औषधीय पौधों के बीजारोपण और वर्धन

लोग अपने बगीचों में और अंकित भूखण्डों में अनेक प्रकार के शाक, तरबूजा, खरबूजा और हरियाली उगाते हैं। उनके वर्धन से संबन्धित अनुभव उनके पास काफी रहता है। उपरोक्त पौधों के कृषीकरण के समय अनेक औषधीय पौधे भी पैदा होते हैं और अच्छे पैदावार उत्पन्न करने या अच्छे गुणवत्ता के कच्चामाल, जो औषध के लिए उपयोगी है, को भी प्राप्त कर सकते हैं। इन औषधीय क्षुप अपने रसायनिक संघटन और जैविकीय सचेत पदार्थों की मौजूदगी के कारण अन्य वन्य पौधों से अलग नहीं होते हैं।

अगर आप अपने अंकित भूखण्ड या बगीचे में औषधीय पौधों को पैदा करेंगे 'एक रसायनविद्'आपके बगीचा या भूखण्ड में कार्य करेगा। अगर आप ऐसा करते हैं तो आप औषधीय पौधों के कच्चा माल को प्राप्त कर सकते हैं और एक साल तक प्रयोग कर सकते हैं। और वह आपके स्वास्थ्य का ख्याल रखेगा।

अगर लोग समय से अपने बगीचों और अंकित भूखण्डों पर औषधीय पौधे उगायेंगे, वह रोगनाक पौधों को बढ़ाने में सहायक होता है और उनको पैदा करने के लिए और क्षेत्रफल बड़ा सकते हैं। समय पर उनको पाना महत्वपूर्ण है और उनके लिए पर्वत, रेगिस्तान, मैदान जैसे प्रान्तों में खोजना अति कष्ट युक्त है। इसलिए रोज़मर्रा जीवन में उपयोगी औषधीय पौधों को उगाने से हमारे स्वास्थ्य के लिए जब उनकी आवश्यकता पड़ती है, तब हम प्रयोग कर सकते हैं।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

मेन्ता लोंजीफोलिया (Mentha longifolia)

वन्य मेन्ता लोंजीफोलिया पर्वतों, नदियों तथा पर्वतीय झरनों के आसपास पैदा होता है। इसमें एस्कोर्बिक एसिड़ 25 मि०ग्रा० प्रतिशत तक, केरोटीन 7.3 mg% तथा रूटीन (Rutin) 13.8 mg% तक पाया जाता है। मेन्ता लोंजीफोलिया के इथेरिअल तैलों में 65% तक मेन्थोल रहता है।

लोक चिकित्सा में मेन्ता लोंजीफोलिया बलवर्धक उपचार के रूप में प्रयुक्त होता है। श्वसन संस्थान तथा पचन संस्थान के अवयवों की व्याधियों की चिकित्सा करते समय भी यह प्रभावी है। इसका क्वाथ पाचन संस्थान के विकारों तथा अनिद्रा की चिकित्सा में सहायक होता है। कास तथा गले की व्याधियों की चिकित्सा में इसका प्रयोग नस्य के रूप में किया जाता है। मेन्ता लोंजीफोलिया मूत्रल चाय का एक घटक है।

मेन्ता लोंजीफोलिया, लेबीएटी कुल का एक हरित द्विवर्षीय क्षुपीय (herbaceous) एवं शीत-क्षम पौधा है। उसका कांड चतुष्कोणीय तथा 60-80 से०मी० ऊँचा होता है। मूल और बीज में से जमीन के ऊपर अनेक समानान्तर अंकुर तेजी से विकसित होते हैं। पत्र लट्वाकार एवं अवृन्त होते हैं। मेन्ता लोंजीफोलिया का प्रकंद एक समानान्तर शाखायुक्त तथा जुड़ी हुई गांठोंवाला भूमिगत कन्द है जिसके ऊपर अनुप्रस्थ एवं अनेक अनिश्चित मूल लगते हैं तथा ये मेन्ता लोंजीफोलिया के पौधे के प्रसार के लिये प्रयुक्त होते हैं।

यह जुलाई-अगस्त में पुष्पित होता है। पुष्प गुलाबी, बैंगनी होते हैं। मेन्ता पिपेरिता लि. के बीज नहीं होते हैं। मेन्ता लोंजीफोलिया एक अच्छा सुमधुर पौधा है। इसका मधु स्राव स्वच्छ, नीलाभ, पुदिने की सुगन्धयुक्त तथा ताजा स्वाद युक्त होते हैं।

मेन्ता लोंजीफोलिया पर्याप्त नमीयुक्त समतल एवं समृद्ध भूमि में साथ साथ पौस भूमि पर अच्छी तरह उत्पन्न होता है। पंक तथा जल से कीचड़ भूमि इस पौधे की उत्पत्ति में उपयोगी नहीं है। 5-7 pH की अम्लता वाली भूमि मेन्ता लोंजीफोलिया की उपज के लिये सबसे अच्छी भूमि है। मेन्ता लोंजीफोलिया बहुत हरा जथ्थे के रूप में बढ़कर, उर्वरक के प्रति अपनी प्रतिक्रिया दर्शाते हैं। मेन्ता लोंजीफोलिया को संवर्धन हेतु दूसरे साल में उपले के उर्वरक पर रखते हैं।

विभिन्न क्षेत्रों में ये पौधे सर्दिओं में अच्छी तरह प्रसार करते हैं। इनके प्रसार के लिए इसे काटकर तथा कटाई के प्रजनन के लिये (इनके काटे हुए भाग को तथा जमीन में रोपकर बनाये जाते हैं) तथा भूमि के ऊपरवाले अंकुरों को पैदावार एवं प्रसार के लिये इन्हे (पूरे साबुत रोपा जाता हैं या टुकड़ों में खण्डित करके रोपे जाते हैं) पुराने उपजे मेन्ता लोंजीफोलिया के कंद के टुकड़ों का (जिनको वसंत में खण्डित किया जाता है) प्रसार में उपयोग किया जाता है।

मेन्ता लोंजीफोलिया को बड़े भूमि भाग में 50-60 से०मी० अंतरालवाली पंक्ति में 20-30 से०मी० की दूरी प्रत्येक पौधे के बीच में रखते हुए प्रतिरोपित किया जाता है लेकिन छोटे क्षेत्रों में 3 पंक्तियों वाले 1 मी० के भूखण्ड 30 से०मी० की दूरी पर प्रतिरोपित किये जाते हैं।

फसल के बाद जमीन की खुदाई कर उसे पोला किया जाता है। दूसरे साल भूमि की देखभाल के लिये पंक्तियों के बीच में जमीन की खुदाई कर उसे पोला करके उसमें उर्वरक का प्रयोग किया जाता है तथा कल्टीवेटर कुदाली की सहायता से पौधों को अंशतः पतले फैलाते हैं।

2-3 सालों के बाद मेन्ता लोंजीफोलिया की पैदावार कम हो जाती है। पौधे साथ-साथ समूह में उगते हैं। केवल समृद्ध भूमि पर ही पौधों को 4-5 साल के लिये संवर्धन करते हैं। मेन्ता लोंजीफोलिया वाले खण्डों को उनकी पंक्ति को स्थानान्तरित करके पुराने पौधों को उखाड़कर तथा नये पौधों को बनाये रखकर (नवीकरण कर) और पूर्व अवस्था में लाया जाता है। पुरानी पंक्तियों के बीच में कंद (नूतन) के टुकड़ों को भी स्थानान्तरित किया जाता है। मेन्ता लोंजीफोलिया को उष्ण गृहों में भी अंकुरित कर सकते हैं। पतझड़ ऋतु में यानि अक्तूबर में कंद को पेटी या गमलों में पुनः स्थापित करके उन्हें उष्ण गृहों में अंकुरित होने के लिये रखे जाते हैं।

पुष्पित होने के प्रारम्भ में मेन्ता लोंजीफोलिया की कटाई की जाती है। उस समय पत्तों में सबसे ज्यादा इथेरीअल तेल होते हैं। दक्षिण में हरित जथ्थों का दो या कभी-कभी 3 बार संग्रहण किया जाता है। जमीन के ठीक ठीक से पौधों को काटा जाता है। काटने के बाद तुरंत पौधे अच्छी तरह छांव में सुखाये जाते हैं।

एक मीटर वर्ग क्षेत्र से सूखे पत्तों की फसल करीब 150-200 ग्राम की होती है। सलाद तथा सब्जी की बर्तन में मसाले के रूप में इसके पत्र, पुष्प तथा नये अंकुरित भाग का प्रयोग होता है। पत्रों में से इथेरीअल तेल निकाला जाता है। पेय, चाय, मिश्रण तथा मिष्ठान्न में खुशबू के लिये भी इसका प्रचुर मात्रा में प्रयोग होता है। बेलोकोर्डीन, बेलीडोल, तथा जेलेनीन ड्राप्स में घटक के रूप में इसका प्रयोग चिकित्सा शास्त्र में होता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

क्रांबे कोत्स्चिआना (Crambe kotschyana)

पूरे तुर्कमेनिस्तान में इस पौधे की 4 प्रजातियाँ फैली हुई हैं।

यह क्रुसीफेरी (राजिका कुल) कुल का पौधा है। यह बहुवार्षिक शाकीय पौधा है। मुख्य मूल मांसल तथा क्रमशः छोटा होता हुआ यथावश्यक डण्ठल युक्त गहराई तक नीचे जाता है, जिससे ये शीत प्रतिरोधी क्षमता युक्त बना रहता है। पत्र हरे, बड़े डण्ठल युक्त एवं दन्तुर धार वाले होते हैं।

घुमाव रहित लेकिन समृद्ध, कृषित्, कृषि योग्य एवं हल्की दलदली भूमि पर इसे उत्पन्न किया जाता है।

पहले साल में पौधा, बीज में से 4–5 गुलाबी रंग के पत्रोंवाला गुच्छा बनाता है। दूसरे और तीसरे साल में पतझड़ आते आते (परिवर्धन सुरक्षा के कारण) यह 10–18 पत्र तथा एक गुच्छेदार मूल बनाता है।

बीज, चूसक तथा अंकुरों से इसका प्रसार या विस्तार किया जाता है। बीज के आश्रित रहने का एक लम्बा समय होता है और जब सूखे बीज वसंत में बोये जाते हैं तब बीज अंकुरित नहीं होते हैं। इसलिये बीजों को बोने से पहले 90–100 दिन के अंदर +5ºc से -2ºc तापमान पर बीजों का स्तर विन्यास किया जाता है। बीज कोष्ण जल से गीले किये जाते हैं। लकडी के एक कटोरे या बक्से में बीज और गीली बालू (रेत) को (1 भाग बीज तथा 3 से 4 भाग बालु) मिलाया जाता है तथा उसको तहखानों या रेफ्रीजरेटर के निचले हिस्से में रखा जाता है। वसंत में 35–45 दिन के इस के 4–5 पत्रवाले बीजों को योजना के अनुसार 60–70 से०मी० दूरी वाली पंक्तियों तथा पौधों के बीच में 30–50 से०मी० की दूरी पर रख कर उन्हें बोया जाता है।

मध्य क्षेत्र में वसंत, पतझड़ या सर्दी के मौसम में हल्की दलदली अथवा रेतीली दलदली भूमि पर बोये जा सकते हैं।

प्रति हेक्टर 1 g/m² बीज की उचित मात्रा है। बीज को 2–3 से०मी० की गहराई में जमीन में एक सीधी रेखा में पंक्तियों के बीच में 60–70 से०मी० की दूरी रखकर बोया जाता है।

गोभी कुल के घातक कीटों आदि से अंकुरित पौधों को बचाना बहुत महत्वपूर्ण है।

उपयुक्त मूल की उपज का संग्रहण दूसरे साल में किया जाता है।

मांसयूष, अचार एवं सलाद में बड़ी मूली के प्रतिनिधि के रूप में इसका प्रयोग होता है। वसंत में हरे पत्ते तथा पुष्प युक्त भूप्रसारी भाग का आहार द्रव्य के रूप में प्रयोग होता है। उसमें विटामिन सी, ए, बी2, पीपी, खनिज तत्व तथा शर्करा हैं।

तिमुस त्रान्स्कास्पिकुस (Thymus transcaspicus)

यह दक्षिण–पश्चिम तथा मध्य कोपेतदाग में फैला हुआ है। इसमें से थायमोल तथा कार्वाक्रोल वाले इथेरीअल तेल प्राप्त करने के लिये तथा तीव्र जीवाणु विरोधी गुण के लिये इसकी बहुतायत से खेती की जाती है। लोक चिकित्सा में इसका प्रयोग कुक्कुर कास, श्वसनिक प्रतिश्याय तथा पाचन संबंधित व्याधियों में चाय के रूप में तथा निसंक्रामक के रूप में मुखगुहा में गंडूष के लिये एवं अनिद्रा, नाडीमूलशोथ तथा स्नायुशूल की चिकित्सा के रूप में होता है।

इसकी साधारण प्रकार के अलावा विशिष्ट प्रकार की श्वेत पत्रों वाली तथा नींबू की तीव्र खुशबू युक्त साज सज्जा युक्त थाईम भी मिलता है। अधिकतर कलम लगाने के द्वारा इसका संवर्धन होता है।

यह लाबिआते (तुलसी) कुल का 20–30 से०मी० ऊँचा एक सदाबहार अधोक्षुपीय वनस्पति है। इसकी चतुष्कोणीय धूसर भूरे रंग की शाखाएं होती हैं। पत्र दल सूक्ष्म, अवृंत, लम्बे, अण्डाकार, भालाकार तथा धूसर हरे होते हैं। पुष्प हलके लाल या गुलाबी होते हैं। 3–6 पुष्पों के गुच्छे पत्रकोणों में लगते हैं। बीज सूक्ष्म होते हैं। 1000 बीजों का वजन 0.2 ग्राम होता है। इनकी उत्पत्ति 2–3 साल में होती है।

यह पूर्ण सूर्य की किरणों में अच्छी तरह बढ़ता है। दक्षिण में शीतकाल की समाप्ति पर यह अच्छी तरह बढ़ता है।

इसका संवर्धन बीज या बीजांकुरों से किया जाता है। मार्च–अप्रैल में बीज की बुवाई के बाद इन्हें उष्ण गृहों में या काँच के नीचे लगाते हैं। बीज 20 डिग्री से० तापमान पर लगभग दो हफ्तों में अंकुरित होते हैं।

इसे हलकी उपजाऊ भूमि पसंद है। वार्षिक उपज को भूमि में 2–3 किलो/वर्ग मी०, के हिसाब से जैविक खाद का मिश्रण तथा 10-15 ग्रा०/वर्ग मी० के हिसाब से एमोनियम नाईट्रेट, पोटेशियम सोल्ट्स तथा सुपरफोस्फेट युक्त भाग में लगाया जाता है।

इसको जमीन के छोटे टुकड़ों में पंक्ति के बीच में 35 से०मी० का अंतराल तथा एक पंक्ति के प्रत्येक पौधे के बीच में 15–20 से०मी० का अंतराल रखकर लगाया जाता है। इस सम्बन्ध में यह ध्यान रखें कि बड़े क्षेत्रों में यह दूरी भूभाग के माप के अनुसार क्रमशः 50 से०मी० तथा 20 से०मी० की होती है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

बसंत की शुरूआत में बीजों को जमीन में 0.5 से०मी० की गहराई पर बोया जाता है। प्रारम्भ में पौधे धीरे धीरे बढ़ते हैं। जमीन की निराई गुड़ाई करना तथा उसमें से खरपतवार की सफाई करना जरूरी है।

पौधा लगाने का कार्य हर 3-4 साल पर दोहराया जाता है। वसन्त में पौधे की वृद्धि के लिए झाड़ी को विभाजित किया जाता है। पहले साल में फसल ज्यादा नहीं होती लेकिन दूसरे तथा तीसरे साल में 200-300 ग्रा०/1 मी० हरी उपज के गठ्ठों को इकट्ठा किया जाता है। 3-4 साल में फसल कम हो जाती है तथा पुनः पौध लगाने का कार्य आवश्यक होता है।

इसकी फसल जून में ली जाती है। जब पौधों में फल आते हैं तब इनके कांड काटे जाते हैं जो कटाई में 5 से०मी० लम्बे होते हैं।

इसमें बहुत तीव्र मसालेदार खुश्बू होती है तथा उसका रस किंचित् अम्ल एवं कटु होता है। ताजे व सूखे थाईम का प्रयोग तडका लगाने, मांसयूष, अचार, सब्जियाँ, सलाद तथा चटनी में किया जाता है। माजोंराम जैसी पके हुए शाकीय सब्जियों में भी इसका प्रयोग होता है।

अस्परागुस ओफ्फिचिनालिस (Asparagus officinalis)

इसका वन्य प्रकार दक्षिण-पूर्व कोपतदाग, मध्य कोपतदाग तथा बध्यझ में भी उगता है।

यह लीलीएसी (रसोन) कुल की एक सदाबहार वनस्पति है। इसका क्षुप 150 से०मी० ऊँचा होता है। उसके कंद मजबूत, मोटे किन्तु छोटे प्रकन्द तथा अनेक फीते जैसे मूलयुक्त होते हैं। कांड सीधा, चिकना, पतला तथा बहु शाखा वाला होता है। पत्र छोटे होकर बहुत कठिनाई से दिखने वाले पतली परत जैसे बन जाते हैं तथा वे नोकदार आधार के कंटकों से ढ़के होते हैं। हरी धागे जैसी छोटी शाखाओं के गुच्छे 1-3 से०मी० लम्बे होते हैं। कार्बन डायोक्साईड को आत्मसात करते हुए ये पत्र की तरह काम करते हैं। उनको क्लेडोड्स (Cladodes) (पत्तियों का काम करने वाली शाखा) कहा जाता है। इसके पुष्प, सूक्ष्म, हरिताभ-पीत एकलिंगी तथा ग्रन्थि युक्त डण्ठल पर होते हैं। इसका फल एक लाल, छोटा, 6 बीजवाला गोलाकार, रसीला, बेर जैसा होता है। मई-जून में इसमें पुष्प लगते हैं।

हर 5-6 साल पर इसके मूल मर जाते हैं तथा उसकी मूल के घेरे periphery पर नये मजबूत मूल उत्पन्न होते हैं। कांड की उत्पत्ति करने वाली अंकुर उसके ऊपर होती हैं तथा प्रतिवर्ष ये ऊपर उठती रहती है। इस सन्धि पर कंद तथा मोटे मूल उत्पन्न होते हैं। पौधे की प्रकृति का ध्यान करते हुए पौधे लगाते समय गड़ढा गहरा होना चाहिये तथा प्रतिवर्ष उसमें मिट्टी मिलाना, बदलना भी जरूरी है।

इसका पौधा 15-20 साल तक जीता है। इसको प्रकाश की आवश्यकता होती है इसलिये यह जरूरी है कि सूर्य के प्रकाश वाले स्थान पर इसे लगाया जाय। पौधे के सामान्य विकास के लिये अति उत्तम तापमान 20-25^{0}C का है। इस पौधे के विषय में अधिक जानकारियाँ निम्नांकित हैं।

- बीज बोने के 4-5 साल के बाद पौधे विकसित होते हैं।
- पौधे को मुख्यतः कंद के टुकड़ों से संवर्धित किया जाता है।
- पौधे के आरोपण के लिये जून का पहला आधा हिस्सा सबसे अनुकूल समय है।
- बीज को जमीन में 3-4 से०मी० की गहराई में बोया जाता है।
- बीज से प्रथम अंकुरण 15 से 20 दिन में होता है।
- मूल की अच्छी वृद्धि के लिये, अंकुर का विकास होने के बाद उन्हें सही तरीके से तुरंत काटा जाता है।
- द्विवर्षीय अंकुरित बीजों को आरोपण के लिये सबसे अधिक अनुकूल माना जाता है।
- तीन वर्ष में पौधे के नवीनीकरण की सलाह दी जाती है।
- पौधे के अच्छी तरह विकास के लिये जैविक उर्वरक मिलाई हुई मृदु भूमि की आवश्यकता होती है।

पतझड़ या वसंत के प्रारम्भ में संग्रहित मूल सहित कंद तथा नये अंकुरों का प्रयोग चिकित्सा में किया जाता है।

कंद तथा मूल में नाइट्रोजन युक्त तत्व जैसे एस्परेगीन, ग्लायकोसाईड, कोलीफेरीन, सेपोनीन्स, कोमेरीन्स, इथेरीअल तैल, केरोटीन आदि पाये जाते हैं। तरुण अंकुर में विटामिन्स सी,बी, बी$_2$ तथा पीपी मिलते हैं। क्षुप में एस्परेगीन, सेपोनीन आदि मिलते हैं। फल में शर्करा, चर्बीयुक्त तैल तथा कुछ आल्कलोईड्स होते हैं।

- इसका वृक्क तथा हृदय की व्याधियों पर चिकित्सकीय प्रभाव है। यह मूत्रल, धमनी विस्फारक और वेदनाहर होता है।

लोक चिकित्सा में बस्तिशोथ, शोथ, रूमेटिज्म तथा एपीलेप्सी (मिर्गी) की चिकित्सा करते समय मूल के क्वाथ का प्रयोग किया जाता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

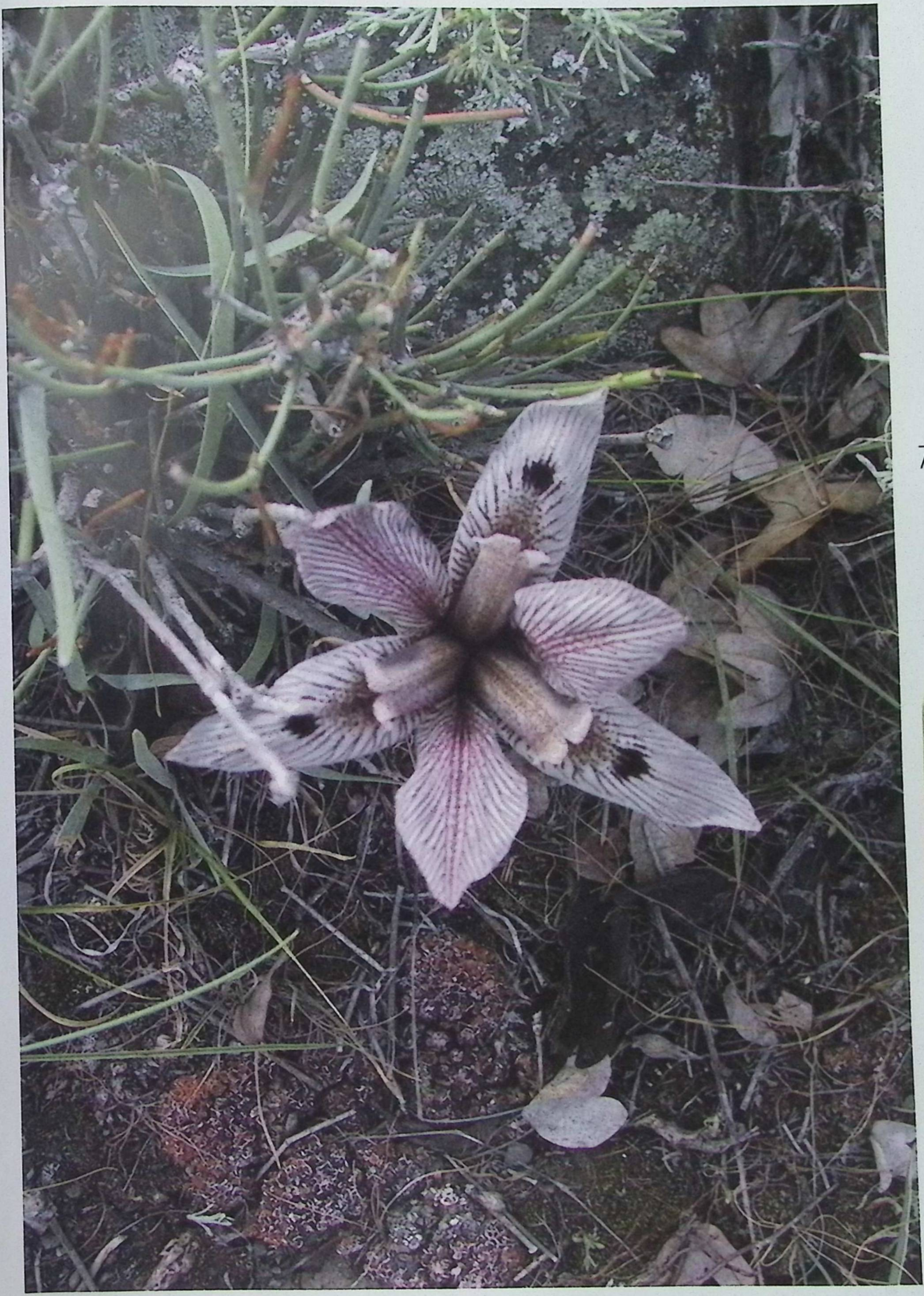

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

भाग २

औषधीय पौधों के अभिलक्षण

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

अकील्लेआ बिएबेर्स्तेंइनिई
ACHILLEA BIEBERSTEINII

अभिलक्षण :- इसके पुष्प पीत-सुनहरे होते हैं। यह कोम्पोसिते कुल के जीन्स से है। इसके अन्य स्थानीय नाम भी है जैसे गुर्तगिरान या तार्पकेसेन।

पौधा 20-35 से०मी० ऊँचा होता है। भौमिक मूल का कंद पतला होता है, ऊपर का हिस्सा काष्ठ सदृश लकड़ी जैसा होता है। यह हलके हरे वर्ण का शाकीय वनस्पति जैसा क्षुपीय पौधा है। यह मोटा रोमश ऊन जैसा होता है। पौधे के कांड ज्यादा नहीं होते, किन्तु सीधा, पतला तथा कभी-कभी एक ही होता है। कांड पर मोटे पत्ते वाली शाखाएँ होती हैं। ये कांड के लगे पत्र कोण से विकसित होती हैं। शाखा पर पत्र बिना दन्तुर होते हैं। सामान्यतः ये ऊर्ध्व दिशान्वित होते हैं। पत्र का आधार संकुचित होता है। मध्य में पत्र 3-4 से०मी० लम्बे होते हैं।

पुष्प हल्के पीत वर्ण के होते हैं। वे सभी एकत्र साथ-साथ टोकरी की तरह संयुक्त रूप में मिले होते हैं। बीज 1-1.25 मी०मी० लम्बे स्फनाकार तथा गोल शीर्ष (top) एवं अण्डाकार होते हैं।

पौधे के उगने की विशेषता :- पौधा समुद्र तल से 2500 मी० की ऊँचाई पर पर्वत के तराई पर उत्पन्न होते हैं। यह बीजों से प्रजनित होता है। यह पथरीली व कभी-कभी बालू वाली भूमि पर उत्पन्न होता है। यह पौधा मई-जून में पुष्पित होता है तथा जून-जुलाई में इसमें फल लगते हैं।

विस्तार :- यह पौधा बोल्शोई और मेली मालखान में उगता है। दक्षिण-पश्चिमी कोपेतदाग के टेमेन्डेरे, उजिन्सुख में, मध्य कोपेतदाग के होजागला, मैगतिन्गुली, यर्तिगला नार्ली, गिजिलिमाम, शार्लाबुक, आइडेरे, पोरडेरे दायना, नोहर, कोनेगुम्मे, गराबुल, देस्त तथा सेवान में मध्य कोपेतदाग में, अरबाज, होवुजलिया, केलेचेतान, डेजिरमेनली, सुलुक्ली, दक्षिण कोपेतदाग के पान्तिस्क, पायगला, अर्चमान, बहार्ली, गिलगिलाब, मुसुनेव, गेरमाप, दुशाक, हेरावत, घायेक, अर्चाविल, गोकडेरे, ग्लिन्डिवर, होवदान तथा गरायची में, गुहिहोवदान, शामली, अक्सुव, बाबादुर्माज, हरचिन्यान, डेचे बध्याज, जिजकाडिक तथा कोयतेनदाग में मिलता है।

प्राकृतिक उपलब्धि:-अकील्लेआ बिएबेर्स्तेइनिई हमारे देश में दुर्लभ पौधा नहीं है। औषधीय उद्देश्य हेतु पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध है। प्रत्येक वर्ष 40-50 टन इसका कच्चा माल इकट्ठा किया जा सकता है। इसकी खेती भी की जा सकती है।

प्रयोज्य कच्चा माल :- अकील्लेआ बिएबेर्स्तेइनिइ के पौधे तथा पुष्प औषध विज्ञान में प्रयोज्य कच्चा माल है। अकील्लेआ बिएबेर्स्तेइनिइ के प्रयोज्य पौधे को उसके पुष्पित होने के दरम्यान (मई व जून में) इकट्ठा किया जाता है। कांड के ऊपरी 15 से०मी० लम्बे हिस्से को कैंची या हंसिया से काटा जाता है।

प्रयोज्य पुष्प को अलग से 2 से०मी० लम्बे काटे जाते हैं। अकील्लेआ बिएबेर्स्तेइनिइ के मूल को इकट्ठा नहीं किया जाता क्योंकि वे समाप्त हो सकते हैं। अगर प्रयोज्य के कच्चे माल को सही ढंग से इकट्ठा किया जाता है तो वह स्थल को बार-बार प्रयुक्त किया जा सकता है। इसके बाद उस भूमि को 1-2 साल तक आराम दिया जाता है।

अकील्लेआ बिएबेर्स्तेइनिई के प्रयोज्य कच्चे माल को सामान्य परिस्थितियों में दबाव के नीचे सुखाया जाता है अथवा सुखाने के विशिष्ट कमरों में (50 डिग्री से अधिक न हो ऐसे तापमान पर) सुखाया जाता है। तैयार वानस्पतिक माल को प्रत्येक 50 किलो के बोरे में पैक किया जाता है। इनको सूखे, ठंडे, हवादार कमरों में तख्तों के ऊपर संरक्षित किया जाता है। प्रयोज्य कच्चे माल को संचय करने का समय 2 साल का है।

प्रयोज्य पुष्प के कच्चे माल को प्रत्येक 15-20 कि०ग्रा० के थैलों में पैक किया जाता है। प्रयोज्य पौधे के कच्चे माल को सूखे, हवादार कमरे में संचय किया जाता है। उसके संचय करने का समय 3-5 साल तक का है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

अकील्लेआ केर्मानिका
ACHILLEA KERMANICA

अभिलक्षण :- अकील्लेआ केर्मानिका एक तरह का औषधीय पौधा है जो अपने जीवनकाल के दरम्यान कई बार बीज उत्पन्न करता है। इरानियन समूह की क्षुपों का यह एक प्रकन्द पौधा है। अकील्लेआ केर्मानिका, संकीर्ण पुष्पवाले कुल का पौधा है। यह क्षुपीय बहुवार्षिक पौधा है। 12-35 (30) से०मी० लम्बा होता है। पौधे का प्रकन्द पतला होता है। शाखाएं, धूसर, हरे, मृदु व लगभग मोटे रोम से आच्छादित होते हैं। ये सीधे, कठिन, संख्या में अधिक, मोटे पत्रों तथा शाखाओं वाले होते हैं। पत्र धूसर, हरे, प्राय: मोटे रोम वाले, रेखांकित, 2-3 से०मी० लम्बे, सामान्यत: दराँती आकार के, व सीधे अवनत होते हैं। पुष्प के गुच्छ मुलायम होते हैं। आच्छादन मृदु, स्पर्श में रोमश, श्वेत, कोनेवाला अनियमित अंडाकार, 3-5.5 (4.5) मी०मी० लम्बे तथा लगभग 2.5-3 मि०मी० चौड़े होते हैं। फूल के आच्छाद खींचित, मन्द और कमानी आकार में होते हैं। पुष्प पीत वर्ण के त्रिपक्षवत् विभाजित छोटे तथा आच्छाद से 3-4 गुने कम, छोटे होते हैं। बीज, खींचित, स्फानोकार तथा 1.5-2 मी०मी० लम्बे होते हैं।

जीवनकाल की विशिष्टतायें :- पौधा समुद्र तल से 300-1600 मी० की ऊँचाई पर उगता है। बीज एवं अंकुर द्वारा इसका प्रजनन होता है। मार्च की शुरूआत में ये उगना शुरू हो जाता है। अप्रैल-जून तक पुष्प आते हैं। फल जून तथा जुलाई में लगते हैं। अकील्लेआ केर्मानिका चिकनी

रासायनिक संघटन:- अकील्लेआ बिएबेर्स्तेइनिई की सुगंध बहुत आनंददायी है। पौधे के काण्ड पत्र तथा पुष्प में मनोहर उत्पत् तैल, अहीलाइन (Ahillein) नामक फलेवोनोइड, ग्लायकोसाइड, विटामिन सी, केरोटीन, बीट (bit), टैनिन तथा जैविक रूप से सक्रिय पदार्थ रहते हैं।

उपयोग :- प्लाइनी, वरिष्ठ (23-29 इ०पू०) द्वारा कृत कार्य में अकील्लेआ बिएबेर्स्तेइनिई की चिकित्सकीय लाक्षणिकता के बारे में प्रथम जानकारी मिली थी।

अकील्लेआ बिएबेर्स्तेइनिई हलका, मंद, मूत्रल तथा रजोप्रवृति कराने वाला है। वृक्काश्मरी में गलने वाले के रूप में तथा गर्भाशय के विविध प्रकार के शोथ में इसका प्रयोग होता है। पौधो के कल्क का शिर:शूल तथा अपस्मार में प्रयोग किया जाता है। मस्तिष्क के विविध व्याधियों की चिकित्सा करते समय इसका प्रयोग किया जाता है। वक्ष शूल के लिये इसका प्रयोग होता है। यदि मूत्रप्रवृत्ति अथवा रजोप्रवृति के दरम्यान कोई कष्ट हो तो अकील्लेआ बिएबेर्स्तेइनिई के कल्क को उदर के अधो भाग पर लगाया जाता है। अभिघातित तथा शोथयुक्त स्थानों पर अकील्लेआ बिएबेर्स्तेइनिई का कल्क रखने से शूल का शमन होता है।

कल्क का प्रयोग प्रतिश्याय में होता है। ये नाक के बाहर या अंदर लगाया जाता है। तुर्कमेन राष्ट्रीय चिकित्सा शास्त्र एवं पारंपरिक चिकित्सा में अकील्लेआ बिएबेर्स्तेइनिई का प्रयोग अतिसार, प्रवाहिका तथा अर्श में रक्तस्तंभन के रूप में किया जाता है। साथ ही रुबार्ब एवं अकील्लेआ बिएबेर्स्तेइनिई का औषधीय अर्क अर्श के निरोधन संचय के लिये किया जाता है।

औषध कल्पना एवं प्रयोग :- 1 गिलास (400 मि०ली०) पानी में एक बड़ा चम्मच (15 ग्राम) शुष्क अकील्लेआ बिएबेर्स्तेइनिई को लेकर 15 मिनट तक उबालें। 45 मि० रहने दें। तत्पश्चात् छान लें। जठराम्ल कम हो तब प्रतिदिन 2-3 बार ये तैयार औषध लें। भोजन के 10-25 मिनट पहले उसको लेने की सलाह दी जाती है। पौधे के ताजे रस का प्रयोग मल्हम (Ointment) बनाने के लिये किया जाता है।

विशिष्ट

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

मिट्टी, भूरे, अधिकांश खारी या सुधा भूमि, पथरीली और कंकर ढ़लानों, अप्रयोज्य स्थानों, गड्डों और क्षेत्रों में उगता है।

विस्तार :- हमारे देश में अकील्लेआ केर्मानिका बोलशोई व मली बालखन में, सेकीदाग, शैर्जा, चालसुव, कुरेंदाग में, तेमेंदेरे, दक्षिण-पश्चिमी कोपेतदाग में, मगतिमगुली, होजागला, चेंदीर, सुम्बर, योल्देरे, गेदेरे, नोहुर गरवुल, मध्य कोपेतदग में, गोकदेरे, चयेक, हेराबात, दुशकेरेक दग, मेर्जेनोलेन, सुलुक्लि, देगिर्मेन्ली, तगरोव, एर्वाज़्दा, एसिल्या (हुंचा), बबज़्व, दर्गिश, दशतोई, मुसुनेव में, याब्लोनोवका, गुर्ल्लीसुव, होवदान, गरयल्चि, पूर्वी कोपेतदग में, गुरिहोवदान, एकसुव, देइशे, बधिज़, अकरचेष्मे में, कोयतेनदग, एत्रेक, कोपेतदद्येतेक, तेजेन और मुर्गब में पाया जाता है।

प्राकृतिक मात्रा :- पौधा दुर्लभ अपतृण नहीं है। चिकित्सकीय उद्देश्य हेतु पर्याप्त मात्रा उपलब्ध है। प्रत्येक साल लगभग 100 टन कच्चा माल इकट्ठा करने की क्षमता है। विशेषतः कच्चे माल की पर्याप्त उपलब्धिकोपेतदग में मिल सकता है।

औषधीय कच्चा माल :- चिकित्सा शास्त्र में औषध बनाने के लिये पत्र तथा पुष्प का प्रयोग किया जाता है। पुष्प लगने के दरम्यान 10-15 से०मी० की लम्बाई में इन्हें कैंची से काटा जाता है। अगर ये मोटे हो तो उसे अंकित करते हैं। कच्चे माल को सुखाकर सामान्य तरीके से छाँव में तैयार किया जाता है। तैयार औषधीय माल को कागज की या सूती थैलियों में पैक किया जाता है। इसको सूखे, हवादार कमरे में रखा जाना चाहिये। ये 2-3 साल तक प्रयोग में लाया जा सकता है।

रासायनिक संघटन :- पौधे के पत्रों में से मनोहर खुश्बू आती है। इसमें लगभग 0.11 प्रतिशत इथरीयल तैल तथा कटु पदार्थ (सेन्टोलीन, सेन्टोलीनोल) होते हैं।

उपयोग :- प्राचीन काल से अकील्लेआ केर्मानिका के चिकित्सकीय गुणों का ज्ञान तुर्कमेन की पारंपरिक एवं पूर्वीय चिकित्सा में मिलता है। विख्यात चिकित्सक तथा वैज्ञानिक अबु अली इब्न सीना, जो की पूर्व में रहते थे, ने अपनी पुस्तक ''कैनन ऑफ मेडिकल सायंस'' में लिखा है कि पौधे का कषाय, मूत्रमार्ग के लिए मदद रूप है तथा वृक्क एवं बस्तिगत अश्मरियों को निकालता है।

तुर्कमेन पारंपरिक चिकित्सा (माग्त्यंगुलाइ, बरलाइ, गोकदेरे प्रांतों में) पौधे से बनाये क्वाथ तथा औषधीय पदार्थों का प्रयोग आमाशय-आंत्रगत व्याधियाँ, क्षय, ज्वर की चिकित्सा के लिए तथा रक्त स्तंभक के रूप में होता है।

औषध कल्पना तथा प्रयोग :- एक तामचीनी पात्र में 1 चम्मच (5 मि०ली०) अच्छी तरह कूटा हुआ औषधि लेकर उसमें 200 मि०ली० पानी मिलाकर धीरे से उबालें। थोड़ी देर के बाद उसे छान लें। इस तरह बने हुए क्वाथ को 1 बड़ा चम्मच (15 ग्राम) दिन में तीन बार लें। एक बड़ा चम्मच (15 ग्राम) अकील्लेआ केर्मानिका के पुष्पों को तापपात्र में सारित करें। थोडी देर के बाद छान लें। एक चौथाई गिलास (50 मि०ली०) दिन में तीन बार लें।

अकील्लेआ मिल्लेफोलिउम-मिल्फोइल
ACHILLEA MILLEFOLIUM-MILFOIL

वर्णनः अकील्लेआ मिल्लेफोलिउम-मिल्फोइल एक बहुत जाना पहचाना पौधा है। विश्व में इसकी 100 मध्य एशिया में 45, तथा तुर्कमेनिस्तान में 5 प्रजातियाँ हैं। इनमें से अधिकतम के चिकित्सकीय गुणधर्म हैं। ''गुर्तकायरन'' तथा ''तर्पकेसन'' इनके तुर्कमेन नाम हैं।

अकील्लेआ मिल्लेफोलिउम-मिल्फोइल कोम्पोसित कुल का बहुवार्षिक क्षुपीय पौधा है। यह 20-40 से०मी० ऊँचा होता है। नख जैसे प्रकन्द से निकलने वाले मूल तथा चूसक (suckers) जमीन के समानांतर फैलते हैं कांड सीधे वृन्तिज रोमश युक्त हैं। पत्रफलक लंबे भालाकार, लम्बगोल, 3-5 से०मी० लम्बे, 0.5-3 से०मी० चौड़े, अधोतल पर बिंदुवत् ग्रंथियुक्त, मूलभाग तक दो से तीन बार पक्षवत् विभाजित तथा बहुत अधिक प्राथमिक भाग वाले होते हैं। पुष्पशीर्ष

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

शाखा की शीर्ष पर छोटे ढ़ाल के साथ संयुक्त होते हैं। पाँच रसनाकार पुष्प होते हैं। वे श्वेत, कभी-कभी गुलाबी होते हैं। काष्ठफल समतल, लम्बगोल, चांदी-धूसर होते है।

जून से लेकर गर्मी के अंत तक पुष्प आते हैं। बीज जुलाई से सितम्बर तक पकते हैं।

जैविक लक्षण :- अकील्लेआ मिल्लेफोलिउम -मिल्फोइल 20-25 हजार हलके काष्ठ फलों को उत्पन्न करता है। हवा से ये अलग अलग दिशा में फैलती हैं। बीज तथा प्रकन्द से इसका प्रजनन होता है। एक बीज का वजन 0.11-0.15 ग्राम होता है।

विस्तार :- अकील्लेआ मिल्लेफोलिउम-मिल्फोइल मध्य कोपतदग, हैराबाद तथा गोकदेरे में उगता है।

प्राकृतिक उपलब्धि :- अकील्लेआ मिल्ले-फोलिउम-मिल्फोइल हमारे देश की एक क्षुपीय पौधा है। औषधीय उद्देश्य हेतु भण्डार सीमित हैं।

विशिष्ट स्थानों (तेजेन, तुर्कमेनाबात, अशखाबाद में) तथा निजी क्षेत्रों में इसकी खेती होती है। मार्च में बीज बोये जाते है। प्रकन्दों को बोने का उत्कृष्ट समय मार्च के पहले 20 दिन तथा नवम्बर के आखिरी 20 दिन का होता है। प्रति पौधा में शुष्क कच्चे माल की फसल 0.4-1.4 ग्राम होती है। प्रति हेक्टर की औसतन फसल 280 किलोग्राम हेक्टर (शुष्क वजन) होती है।

औषधीय कच्चा माल :- अकील्लेआ मिल्लेफोलिउम-मिल्फोइल की दो प्रजातियों के तृण तथा पुष्पविन्यास (औषधीय उद्देश्य हेतु) इकट्ठे किये जाते हैं। पुष्प लगने के समय (मई की शुरूवात से अगस्त तक) इसकी फसल ली जाती है। तृण 15 से०मी० से ज्यादा लम्बा नहीं होता। ये पौधे के ऊपरी हिस्से तथा काण्ड के कुछ अंश से बनता है। शीर्ष दो से०मी० से ज्यादा लम्बा नहीं होता तथा उसमें अलग अलग सूखे मौसम में छाँव में सामान्य तापमान पर सुखाया जाता है।

पौधे को मूल के साथ खींचकर नहीं निकालना चाहिये। ऐसा करने से पौधा निकल जाता है। अगर फसल सही तरीके से ली जाय तो योज्य स्थानों में ये कई सालों तक फसल देता है। विश्राम 1 से 2 साल का होता है।

कच्चे माल में मनोहर खुश्बू तथा स्वाद होते हैं। संख्यात्मक सूचकांक इस प्रकार हैं। नमी 13 प्रतिशत से ज्यादा नहीं होती, राख 15 प्रतिशत से ज्यादा नहीं होती, आर्गेनिक मिश्रण 0.56 प्रतिशत से आगे नहीं बढ़ता तथा खनिज मिश्रण 1 प्रतिशत से ज्यादा नहीं होता।

तैयार कच्चे माल को 30 किलो के गट्ठर में पैक किये जाते हैं। सूखे, ठंडे, हवादार कमरों में अलमारी के ऊपर संचित किये जाते हैं। समाप्ति अवधि 2 साल तक की हो सकती है। संचित पुष्प 15-20 किलो वाले थैलों में पैक किये जाते हैं। उनको सूखे हवादार कमरों में संचित किये जाते है। पुष्पों के लिये समाप्ति अवधि 5 साल तक की होती है।

रासायनिक संघटन :- पत्र तथा पुष्प विन्यास में एस्युलेन्स (एसालिएन्स) संग्रथित, इथर्स कपूर, तुओल, सीनीओल, केरीओफाइलेन फोर्मीक, एसीरीक व आसोवेलेरीआनीक अम्ल होते हैं। पौधे में टैनीक पदार्थ, तिक्त पदार्थ खनिज लवण उड़नशील उत्पाद सूक्ष्म घटक, एलयुमीनीयम, क्रोमियम, फेर्रम, क्युप्रम, मेग्नेशीयम, वीटामिन्स, केरोटीन्स, रेझीन्स, असीलाइन एवं अल्कलाइड जैसे पदार्थ भी मिलते है।

प्रयोग :- प्राचीन समय से ही पचन संस्थान की व्याधियों की चिकित्सा के दरम्यान अकील्लेआ मिल्लेफोलिउम-मिल्फोइल का प्रयोग किया जाता है। अन्नवह संस्थान के विविध विकारों में पौधा बहुत असरदार है। विश्व में अन्नवह संस्थान के लिये सबसे अच्छी दस औषधियों में यह एक है।

प्लाइनी वरिष्ट (23-79 ई०पू०) की नेचुरल तथा डायस्कोराइड (पहली शताब्दी इ०पू०) में अकील्लेआ मिल्लेफोलिडम-मिल्फोइल के औषधीय गुणधर्मों के सर्वप्रथम डाटा मिले हैं। उनका मानना था कि इनमें रोपण तथा हीमोस्टेटीक कर्म हैं। अपने समय के विख्यात चिकित्सकों में से एक मुहम्मद हुसेन ने अकील्लेआ मिल्लेफोलिउम -मिल्फोइल के औषधीय गुणधर्मों के बारे में लिखा है ''.... ..मृदु करता है, अवरोध को दूर करता है, मूत्रल, रक्तस्तंभक तथा शोफ विरोधी असर हैं।

पारंपरिक तथा लोक चिकित्सा में अकील्लेआ मिल्लेफोलिउम-मिल्फोइल का प्रयोग प्रतिश्याय, अन्नवह संस्थान की व्याधियाँ विशेषत: व्रण तथा प्रवाहिका की चिकित्सा के दरम्यान किया जाता है। पौधे के फांट तथा क्वाथ का प्रयोग आमाशय की व्याधियाँ, गर्भाशय से तथा नासा से तीव्र रक्तस्राव एवं अर्श की चिकित्सा के लिये किया जाता है। यह पौधा आमाशयिक कार्य तथा क्षुधा बढ़ाने की चाय का एक घटक है।

अर्श की चिकित्सा के लिए पौधे के पत्रों से बनाई गई चाय अत्युत्तम उपाय है। जठराग्नि को बढ़ाने के लिये अकील्लेआ मिल्लेफोलिउम-मिल्फोइल के पत्रों का ताजा रस तथा मधु का मिश्रण एक उपाय है। चयापचय को सुध ारने के लिये, यकृत् तथा स्त्री प्रजनन संस्थान की व्याधियों के लिये भी इस औषध का प्रयोग किया जाता है। पुराने पूयस्रावी व्रणों के रोपण के लिये भी असरकारी है। पौधे

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

को शान्त करने का यह असर है। इसलिये अपस्मार तथा चेतनतंत्र के विकारों (दौर्बल्य) की चिकित्सा के लिये इसके प्रयोग की सलाह दी जाती है।

अकील्लेआ मिल्लेफोलिउम-मिल्फोइल का क्षुपीय क्वाथ मुखक्षत का रोपण करता है तथा श्वसन संस्थान के शोथ की चिकित्सा के दरम्यान भी इसको दिया जाता है। आघात जन्य क्षत, व्रण तथा दग्ध व्रण के ऊपर पत्र तथा पुष्प विन्यास के क्वाथ का बाह्य प्रयोग किया जाता है। तिब्बती चिकित्सा में यकृत् तथा अन्नवह संस्थान के पुराने व्याधियों की चिकित्सा के लिये उपयुक्त औषधीय मिश्रण में अकील्लेआ मिल्लेफोलिउम-मिल्फोइल भी एक घटक है। बुलगेरिया में पत्र तथा पुष्प के क्वाथ का प्रयोग शिरःशूल, तथा कृमि में किया जाता है।

औषध कल्पना तथा प्रयोग :- एक लीटर उबलते हुए पानी की दो बड़े चम्मच (30 ग्राम) अकील्लेआ मिल्लेफोलिउम-मिल्फोइल के शुष्क पत्रों पर डालें तथा उसको सारित होने दें। तत्पश्चात् उसको छान कर ठंडा करें। आधा गिलास (100 मि०लि) दिन में तीन बार लें। अर्श के लिए यह चाय असरदायी है।

अकील्लेआ मिल्लेफोलिउम-मिल्फोइल के पत्रों का ताजा स्वरस एक चम्मच (5 ग्राम) तथा शहद 3 चम्मच (15 ग्राम) का मिश्रण करें। यह मिश्रण क्षुधा की वृद्धि के लिये है।

तामचीनी कटोरे में रखे 3 बड़े चम्मच (45 ग्राम) अकील्लेआ मिल्लेफोलिउम-मिल्फोइल के शुष्क क्षुप पर एक लीटर पानी डालकर धीमी आँच पर 10-15 मिनट तक उबालें। तत्पश्चात् इसे छान लें। इससे गंडूष करें। यह औषध मुखक्षत का रोपण करता है तथा मसूड़ों को मजबूत बनाता है।

अकील्लेआ मिल्लेफोलिउम-मिल्फोइल पत्र चूर्ण तथा नेटल (Nettle) पत्रचूर्ण प्रत्येक एक बड़ा चम्मच (15 ग्राम) का मिश्रण बनायें। एक चम्मच (5 ग्राम) दिन में तीन बार भोजन पूर्व लें। यह रक्तस्तम्भक द्रव्य की तरह काम करता है।

अदिआन्तुम कपिल्लुस वेनेरिस
ADIANTUM CAPILLUS VENERIS

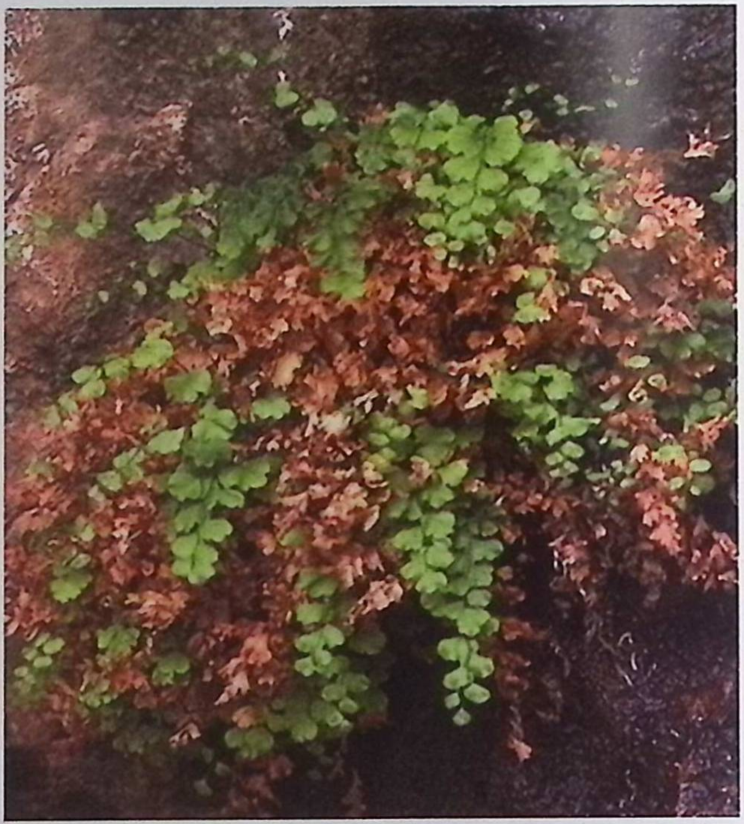

अभिलक्षण :- औषधीय तथा शानदार क्षुप की लगभग 200 प्रजातियाँ विश्व में उगती हैं। दो प्रजातियाँ मध्य एशिया तथा 1 प्रजाति तुर्कमेनिस्तान में मिलती है।

अदिआन्तुम कपिल्लुस वेनेरिस कुल का अदिआन्तुम कपिल्लुस वेनेरिस एक बहुवार्षिक क्षुपीय सदस्य है, जो 10-30 से०मी० ऊँचा है। वनस्पति का ऊपरी हिस्सा भूमि पर फैलता है। इसका सरंडा आकार मूल सीधा होता है। बाहर के परत भूरे पतले क्षिलकों से आच्छादित होते हैं। पत्र पक्षवत् कुछ रेखांकित हैं। सिराएं चमकीली तथा काली होती हैं। इसके पत्रों की सिराएं रोमवत्, चमकीले और तीक्ष्ण रहते हैं। सुन्दर पत्र स्त्री की (बालों की) चोटी के समान होते हैं। वनस्पति के पत्र पानी को निकालने वाले हैं। बीजाणु कोश शिराओं के पास रहते हैं।

उत्पत्ति स्थान :- वनस्पति ऊँची खड़ी चट्टानों के दरारों में, पर्वतीय नदियों के किनारों पर तथा कुँए क्यारियों में उगता है। उसके बीजाणुओं से वह प्रजनन करता है। यह जून-अक्तूबर में पकता है।

विस्तार लक्षण :- बोलशोई बालखन में, कुलेजे, गमिशालिज़ा, कुरेंदग में, नार्बिज़्ली, गरसुव, दक्षिण-पश्चिम

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

कोपेतदग, कोनेगुम्मी, गर्बुल, नोहुर, सामवन, देश्त, बगनली, गोचदेमीर, ऐदेरे, मध्य कोपेतदग, द्रुषकेरेकदग, गेर्मार्प, सेकिज़िअप, दगिश, उली-गरंकि, अर्चाबिल, बदिमुनोवस्किइ के पर्वत पर मुसुनेव, अर्वीज़, पान्तिउश, तुर्नाव, तेजेवे बधिज़, नार्दिनान्ली, दमज़ा, कुगितांग, बुलकदेरे, दराईदेरे, उमरदेरे में यह पौधा उगता है।

प्राकृतिक उपलब्धि :- ये वनस्पति हमारे देश की दुर्लभ वनस्पतिओं के समूह की नहीं है। उसका भण्डारन सामान्य है। खेती की सलाह दी जाती है।

औषधीय उत्पाद :- इसका क्षुप तथा सरकंडा आकार मूल का प्रयोग औषध उत्पाद के रूप में किया जाता है। इसको सुखाना तथा तैयार करना प्रचलन रूप में किया जाता है। औषध उत्पाद को कागज़ के बक्सों में रखा जाता है। समाप्ति अवधि 1-2 साल की है।

रासायनिक संघटन :- वनस्पति के रासायनिक संघटन का ज्ञान अभी तक नहीं हुआ है। इसके क्षुप में कटु पदार्थ, नमी, शर्करा तथा उत्पत् तैल तय किये गये हैं।

उपयोग :- वनस्पति के औषधीय गुणधर्म का ज्ञान प्राचीन चिकित्सकों को था। पूर्व के चमकते सितारे अबु अली इब्न सीना की विख्यात पुस्तक ''कैनन ऑफ मेडिकल सायंस'' तथा अबु-अल-रैहान बीरुनी की पुस्तक ''फार्मकोग्वोसी इन मेडिसिन'' में यह दर्शाया गया है। मध्ययुग के वैज्ञानिक तथा चिकित्सक सैयीत इस्माइल गुजैन्ली ने अपनी पुस्तक ''ट्रेजरी ऑफ सोरेज़्म शाह'' में ये दर्शाया है कि यह वनस्पति पुराने कास तथा वृक्क रोगों में उपयोगी है।

राष्ट्रीय चिकित्सा में कषाय, फांट, सिरप और चूर्ण काख श्नैरीड़ियन परत के प्रतिश्याय, पित्तसारक, श्लेष्म तथा स्वेदजनन उपचारों में प्रयोग करते हैं। श्वास रोग, कास और खुखुर खाँसी में भी यह प्रयोग होता है।

स्वाभाविक मूत्रप्रवृत्ति तथा वृक्क की व्याधियों के लिये इस वनस्पति से बनाये हुए द्राव तथा फाण्ट का प्रयोग तुर्कमेन राष्ट्रीय चिकित्सा (पर्वतीय ग्राम बखर्ली, जीयोक्देपे एवं अग्नुंगली etraps) में प्राचीन काल से हो रहा है। यह अपने इस गुण से प्रख्यात है। इसलिये इसको सायपन (बाखर्ली इट्रेप) ''मूत्रप्रवृत्ति करने वाली वनस्पति'' कहा जाता है। इसके उगने के स्थलों पर स्थानीय लोग इसका उपयोग गंडूषार्थ तथा अक्षि प्रक्षालनार्थ करते हैं। औषधीय लेप (balm) और द्राव रक्तस्राव को बंद करता है तथा व्रण का रोपण करता है।

कल्पना :- एक बड़ा चम्मच (15 ग्राम) अच्छी तरह सूखे हुए क्षुप को तामचीनी पात्र में पानी के साथ धीमी आँच पर 10 मिनट उबालें। थोड़ी देर उबालने के बाद कपड़े से छानकर आधा गिलास प्रतिदिन पियें। फलास्क में 2 बड़े चम्मच (30 ग्राम) क्षुप की चाय बनायें। कुछ घंटों तक रहने दें। फाण्ट को दिन में तीन बार पियें।

एक चम्मच क्षुप को पानी में डालकर तामचीनी पात्र में धीमी आँच पर उबालें। ठंडा करके कपड़े से छान लें। इस फाण्ट को पांडु के लिये लिया जाता है। वृक्क के अर्बुद के लिये भी इस औषध का प्रयोग किया जाता है।

आग्रीमोनिआ आसिआतिका
AGRIMONIA ASIATICA

79

वर्णन :- आग्रीमोनिआ आसिआतिका एक औषधीय पौधा है। विश्व में 15 प्रजातियां हैं जिनमें 8 प्रजातियाँ मध्य एशिया की तथा एक प्रजाति तुर्कमेनिस्तान की शामिल हैं।

आग्रीमोनिआ आसिआतिका रोझेसी कुल का 30-40 से०मी० ऊँचा बहुवार्षिक क्षुपीय पौधा है। इसके सुविकसित प्रकन्द होते हैं। कांड सीधा, घना, ऊपरी हिस्से शाखायुक्त तथा लंबगोल होता है। पत्र 6.30 से०मी० लम्बे एवं 3-5 से 12 से०मी० चौड़े होते हैं। फलक का पृष्ठ भाग रोमश तथा छोटी सघन ग्रंथियुक्त होता है। पुष्प छोटे वृन्त वाले 2-3 (4) मि०मी० लम्बे, 10-12 मि०मी० चौड़े होते हैं। बाह्य दल कोश पंचविभक्त पांच आभ्यन्तर दल सहित तथा सामान्यत: पीला होता है। इसको जून-अगस्त में पुष्प तथा फल लगते हैं।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

जैविक लक्षण :- आग्रीमोनिआ आसिआतिका पर्वतों में तथा तराई क्षेत्रों, खासकर गहरी घाटियों में उगते हैं। पौधे को नम जगह तथा पेड़ों की छाँव पसन्द है।

रासायनिक संवर्द्धन :- आग्रीमोनिआ आसिआतिका के पत्र में 1.5 प्रतिशत तक ग्लायकोसाईड्स के फ्लैवोनोइड्स (रुहिन हाइपर्रासाइड आदि) 11 प्रतिशत तक शर्करा, 0.1 प्रतिशत इथरीअल तैल, 0.15 प्रतिशत तक युर्सोलिक एसीड, 1448.88 मि०ग्रा० प्रतिशत तक विटामिन सी, 16 प्रतिशत टैनिक तथा अन्य पदार्थ होते हैं। भूमिगत अंगों में 1.18 प्रतिशत तक युर्सोलीक एसीड, 2.4 प्रतिशत तक ल्यूकोएन्टोसायेजीडीन्स, 11 प्रतिशत तक सुगरीनीकस, स्टेनी staininy व अन्य पदार्थ होते हैं।

विस्तार :- आग्रीमोनिआ आसिआतिका पहाड़ियों की तथा पर्वतों के निचले विशेषकर गहरी घाटियों में फैली हुई है। पौधे को गीली, नम जगह तथा वनस्पतियों की छाँव पसंद आती है।

प्राकृतिक उपलब्धि :- तुर्कमेनिस्तान के दुर्लभ क्षुपीय पौधों में से यह एक है। औषधीय उद्देश्य हेतु प्रयोग करने के लिये संसाधन पर्याप्त है।

औषधीय कच्चा माल :- आग्रीमोनिआ आसिआतिका के मूल, प्रकन्द तथा तृण औषध तैयार करने के लिये प्रयोग में लाने वाला कच्चा माल प्रदान करते हैं। कच्चा माल प्रचलित स्थितियों में तैयार किया जाता है। समाप्ति समय 2-3 साल का है।

तैयार कच्चे माल को कपड़े के थैलों में अथवा कागज़ की पेटियों में संग्रह किया जाता है।

प्रयोग :- आग्रीमोनिआ आसिआतिका के भूमिगत हिस्सों तथा क्षुप के क्वाथ का प्रयोग अन्नवह संस्थान का संक्रमण, कामला, हाइड्रोप्स (शिशुशोथ) ज्वर में होता है। यह मूत्रल तथा रक्तशोधक के रूप में उपयोगी है। मुखगुहा के प्रक्षालन के लिये भी प्रयुक्त है। अर्श, खुजली शीतपित्त तथा रक्तस्तंभक के लिये इसके पुष्प के क्वाथ का प्रयोग होता है।

कल्पना एवं प्रयोग :- एक बड़ा चम्मच (15 ग्राम) आग्रीमोनिआ आसिआतिका के सूखे चूर्णित मूल के ऊपर 1 गिलास (200 मि०लि०) पानी डालकर उसको तामचीनी कटोरे में धीमी आंच पर 5-6 मिनट तक उबालें। प्रतिदिन एक गिलास (100 मि०ली०) सुबह तथा शाम को भोजन पूर्व लें।

एक लीटर थर्मोस में 1 चम्मच (5 ग्राम) आग्रीमोनिआ आसिआतिका के पुष्प को लेकर उसमें उबलता हुआ पानी डालें। बाद में इसमें से सत निकलने दें। दिन में चाय के रूप में इसका प्रयोग करें।

अल्हागी पेर्सारुम
ALHAGI PERSARUM

लक्षण :- असाधारण औषधीय एवं खाद्य वनस्पतियों की, मधु देने वाली लगभग 10 प्रजातियाँ विश्व में पायी जाती है। 5 प्रजातियाँ मध्य एशिया के देशों में, 4 प्रजातियाँ तुर्कमेनिस्तान में मिलती हैं।

अल्हागी पेर्सारुम ये उसी जाति के बुल्बाकुस कुल का है। यह बहुवार्षिक क्षुपीय वनस्पति है। 30-150 से०मी० ऊँचा होता है। लंबगोल पत्र, एकान्तर, बड़ा वृन्त के कंटक होते हैं, जो पत्र पर अपना प्रकार बदला देते हैं। ज्यादातर कंटकों पर 3-8 लाल या गुलाबी छोटे पुष्प होते हैं। वनस्पति में पुष्प (मई) जून-अगस्त में लगते हैं तथा फल जुलाई-सितम्बर में लगते हैं। इसका फल एक शल्क कन्द है, जिसमें चार या पांच वृक्काकार बीज होते हैं।

उत्पत्ति स्थान:- अल्हागी पेर्सारुम को मैदान, पर्वततल, तंग घाटी, नदियों की कम नमक वाली भूमि व मिट्टी, विरान स्थलें में उगना पसंद है। ये मूल से अंकुर पैदा कर सकती हैं। इसी से इसकी वृद्धि होती है। इसके बीज में पुनरात्पत्ति शक्ति 100 साल तक रहती है।

विस्तार :- बहुत ज्यादा संख्या में यह वनस्पति दक्षिण-पश्चिमी कोपतग, मध्य कोपेतदग, सुलुकी, चोपांदग, दक्षिणी, कोपेतदग:, कयार्लक, बधीइस, काराकुम (दक्षिणी-पूर्वीय) इझर्याक रण, कोपेतदगेतेक, तेजेन, मुर्गष एवं अमुदार्या नदी के सांस्कृतिक सिंचाई स्थानों में पाई जाती है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

प्राकृतिक उपलब्धि :- अल्हागी पेर्सारुम हमारे देश की दुर्लभ वनस्पति नही हैं। चिकित्सकीय उद्देश्य के लिए उसका पर्याप्त जत्था उपलब्ध है।

औषधीय संसाधन :- चिकित्सा शास्त्र में औषधि उद्देश्य हेतु स्रोत, वनस्पति का जमीन पर उगने वाला हिस्सा (कभी-कभी फल एवं मूल) है। संपूर्ण पुष्पित अवस्था के दरम्यान (जून में) वनस्पति को इकट्ठा किया जाता है। इकट्ठा करने वाले व्यक्ति को हाथ में मोजे पहनकर पुष्प तथा ऊपरी अंकुर को तेज हँसिया(दराती) से बहुत सावधानी से इकट्ठा करना चाहिये।

अल्हागी पेर्सारुम को इकट्ठा करने के बाद खुली हवा में सुखाना चाहिये। सूखने के बाद उसको तोकमक नामक विशिष्ट औजार से काटना चाहिये। इससे उसके पुष्प, पत्र वृन्त एवं छोटी शाखाओं को बराबर रूप में मिलाने के लिये मदद मिलती है। धागों से बने थैलों में इस संसाधन को रखना चाहिये। समाप्ति तिथि एक साल की होती है।

पतझड़ जुलाई के दरम्यान अल्हागी पेर्सारुम के मूल को इकट्ठा किया जाता है। मूल को अच्छी तरह साफ करना तथा धोना चाहिये। उसको कलम कैंची से काटकर छोटे छोटे टुकडे बनाने चाहिये। इसको छांव में सुखाना चाहिये। तथा स्वच्छ पात्र में अंधेरे स्थान पर रखना चाहिये।

रासायनिक संघटन :- वनस्पति के मूल में स्टार्च, आर्गेनिक एसीड, 0.75 प्रतिशत युर्सोलीक एसीड, अल्कलाईड्स, विटामिन सी, कैरोटीन, टैनींग, द्रव्य एवं एन्थ्राग्लायकोसाईड्स मिलते हैं। ये निर्णीत किया गया है कि इसके क्षुप में ट्राइटर्पेनोइड्स, सैपोनीन, वीटामिन्स सी, बी एवं के, केरोटीन 2.28 प्रतिशत टैनिंग तत्व और फ्लैवोनोईड्स होते हैं। ये भी सुनिश्चत किया गया है कि कंटीले वृन्त, पत्र अग्रिम कली, पुष्प तथा सहभागी फल में टैनिंग द्रव्य 6.1 प्रतिशत ओर्गेनिक एसीड्स 0.17 प्रतिशत कोमरिन, 5.5 प्रतिशत कैटेचिन 1.3 प्रतिशत क्वेर्सेटीन तथा रूटीन फलेवोनोईड्स होते हैं। बीज में 20 प्रतिशत तैल रहता है। साथ ही पत्र में नेट्रीयम, कैल्शियम, मैग्नेसीयम, आयरन, एल्युमिनियम, टाइटेनीयम, फोस्फरस, मेंगेनीस एवं सीलीकोन रहता है।

प्रयोग :- अल्हागी पेर्सारुम में उच्च कोटि के औषधीय गुण होने से प्राचीन समय से ही इसका चिकित्सकीय उद्देश्य हेतु प्रयोग हो रहा है। अबु अली इब्न सीना की "कैनन आफ मेडिकल सायंस" अबु रैहान बीरुनी की "फार्मकोग्नोसी इन मेडिसिन" सेयीत इस्माइल गुर्गेन्ली (जुर्जनी) की "ट्रेजरी आफ खोरेज्म शाह" तथा मुहम्मद हुसेन की "ट्रेजरी आफ ओइक्टमेंट्स" जैसी शास्त्रीय पुस्तकों में इसके औषधीय गुणों का वर्णन किया गया है।

वनस्पति के क्षुपीय भाग से बने औषधीय सुरा सार में जीवाणुनाशक त्वक् मृदुकारी एवं रक्तस्तम्भक गुण हैं। मूल के सार का प्रयोग रक्तस्राव तथा अर्श में होता है। इसके जलीय सार 10 प्रतिशत टींक्चर का प्रयोग पित्त विरेचक तथा मूत्रल रूप में होता है। सिरा का बल बढ़ाने के लिये तथा तन्तुकीयता बढ़ाने के लिये अल्हागी पेर्सारुम के प्रयोग की सलाह दी जाती है।

अल्हागी पेर्सारुम के जमीन के ऊपर उगने वाले हिस्से (सपुष्प क्षुप) से बनाये हुए टींक्चर का प्रयोग रक्तस्राव, गला खराश, तुण्डिकेरी शोथ, स्त्री रोगों में होता है। साथ ही निःशेषण व मूत्रल के रूप में भी उसका प्रयोग होता है। रक्तस्राव, आंत्रशोथ तथा आन्त्रशूल में इस औषध की असरकारिता चिकित्सकीय रूप से साबित हो चुकी है। लेप आमाशय के गतिशील तथा विसर्जन कार्य को सामान्य बनाता है। आमाशय के व्रण व्याधि में एसिड़ के स्राव तथा किण्वता को रोक कर व्रण रोपण प्रक्रिया को सुधारता है।

लोक चिकित्सा में अल्हागी पेर्सारुम से बने फांट व औषधीय सुरा सार का प्रयोग मूत्रल तथा स्वेदजनक के रूप में होता है। सामान्य रूप से अन्नवह संस्थान के विकार, पित्ताशय, प्लीहा, यकृत, वृक्क, रक्तवह संस्थान की व्याधियों में, बेरीबेरी विशेषतः जब अतिसार तथा रक्तस्राव अत्यधिक हो तब इनका प्रयोग किया जाता है। कभी कभी शोथजन्य व्याधियों से उत्पन्न कास में इसके फांट को पिया जाता है। पौधे की शाखा से स्रावित शर्करीय चिपचिपाहट का उसके सख्त होने के बाद प्रयोग किया जाता है। इसका अवक्षयी, मूत्रल तथा ज्वरहर के रूप में प्रयोग होता है। मूल से बनाये एक औषधीय सुरा सार का प्रयोग अर्श तथा रक्तस्राव में होता है।

अल्हागी पेर्सारुम व्रण तथा शीतपित्त की चिकित्सा में मूल्यवान नुस्खा है। यदि अल्हागी पेर्सारुम के फाण्ट से प्रक्षालन किया जाये तो व्रण का जल्दी रोपण होता है तथा शीतपित्त मिट जाते हैं।

गर्भाशय शोथ तथा प्रसवोत्तर गर्भाशय के श्लेष्मा परत के क्षत से पीड़ित वर्गीओं को अल्हागी पेर्सारुम के सुखोष्ण फाण्ट में बैठना चाहिये। यह रुग्णाओं को केवल मदद ही नहीं करता अपितु वैकारिक कीटाणुओं से भी बचाता है। इसके परिणाम स्वरूप ये प्रक्रिया जननांगों को स्वस्थ तथा स्वच्छ रखने के लिये हमेशा मदद प्रदान करती है।

पौधे के मूल से बने औषधीय सुरा सार का प्रयोग रक्त युक्त मूत्र जो कि मूत्राशय तथा वृक्क में क्षोभ के कारण होता है, में होता है। कभी कभी व्यक्ति थका हुआ व श्रमित महसूस करता है इसकी आँखों के आसपास कृष्णता दिखाई देती है और कभी कभी व्यक्तिलडखडाता है। ऐसी अवस्था

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

में अगर व्यक्ति अल्हागी पेर्सारुम को शहद के साथ पीता है तो उससे प्राप्त मदद रूप तत्व जैसे कि ग्लुकोज, सुक्रोस, एस्कोर्बीक एसीड और विटामिन शरीर पर बहुत असरदायी प्रभाव डालते हैं। ये मस्तिष्क के संतुलन संचालक केन्द्र के कार्य को सामान्य बनाता है, आंखों की आसपास की कृष्णता तथा भ्रम भी दूर हो जाते हैं।

अल्हागी पेर्सारुम को हिलाकर फूलों को इकट्ठा करना ज्यादा अच्छा है। पौधा टूट ना जाये उसकी सावधानी रखनी चाहिये। इन पुष्पों से बनाया हुआ मुरब्बा (Jam) बहुत ही स्वादिष्ट होता है। अगर किसी व्यक्ति को प्रतिश्याय हुआ हो, बुखार जैसा लगता हो अथवा ठंड महसूस होती हो लेकिन पसीना ना आता हो तो इसके मुरब्बे से बनी हुई चाय पीने से तुरन्त पसीना आता है। वह जल्द ही स्वस्थ हो जायेगा तथा उसका जठराग्नि बेहतर होगा।

पुष्पान्वित होने के दरम्यान, कांटेदार छोटी शाखाएं जहां से जुड़ी हुई है वहां लगे पुष्पों के एक बाजू में लगे पत्रों के तल भाग से थोड़ी मात्रा में आर्द्र स्राव स्रवित होता है। ये भूरे कृष्ण वर्ण के छोटी बूंदों में बदल जाते हैं तथा कठिन हो जाते हैं। पौधे के पत्र, शाखा तथा डंठल पर पतले श्वेत पुष्प लगे होते हैं। इनको सावधानी पूर्वक झुकाकर स्वच्छ वस्त्र पर हिलाकर इकट्ठा करना चाहिये। इसको पानी में मिलाकर पीने से गले के व्रण, ठंड लगना तथा शुष्क कास में आराम मिलता है। विख्यात geater इब्न सीना इसमें से शर्बत बनाते थे क्योंकि ये बहुत ही मधुर होता है। इस शर्बत का कई सारी व्याधियों में प्रयोग करने की सलाह वो देते थे।

औषध उत्पाद तथा इसके प्रयोग :- अल्हागी पेर्सारुम के पीसे हुए एक बड़ा चम्मच (15 ग्राम) कल्क को आधा लीटर उबलते हुए पानी में डालकर 10 मिनट तक उबालें। बनान(पतले) कपड़ा से छान लें। भोजन करने से 10 मिनट पहले आधा गिलास (100 मि०लि) दिन में तीन बार लें। इस फाण्ट का प्रयोग अत्यधिक शूलयुक्त तथा पुनः पुनः होने वाले रक्तस्राव, आंत्रशोथ, शूल, अजीर्ण, आमाशय शोथ, आमाशय तथा पच्यमानाशय में होने वाले क्षत एवं अर्श में होता है।

दो गिलास (400 मि०लि) पानी में 2 बड़े चम्मच (30 ग्राम) औषधि तामचीनी पात्र में लेकर 15 मिनट तक उबालें। बनान(पतले) कपड़ा से इस फाण्ट को छान लें। 100-200 मि०लि० की मात्रा में इसे दिन में तीन बार भोजन के पूर्व पियें। हफ्ते में एक या दो बार रात को सुखोष्ण पट्टी के रूप में प्रयोग करें। अर्श के लिये ये बहुत मददायी है।

आल्लिउम पारादोक्सुम
ALLIUM PARADOXUM

वर्णन :- हमारे देश में आल्लिउम पारादोक्सुम की लगभग 68 प्रजातियाँ हैं। तुर्कमेनिस्तान में आल्लिउम पारादोक्सुम की केवल एक प्रजाति है। इस पौधे का नाम पलाण्डु (का पेड़) है। आल्लिउम पारादोक्सुम पलाण्डु (प्याज) के कुल का प्रतिनिधि है। पौधा 20-30 से०मी० ऊँचा होता है। पौधा एक बहुवार्षिक तृण है। पौधे का प्रधान काण्ड झुर्रीदार, पर्णसमूह वार्षिक तथा दिखने में पट्टा या रेखा समान होता है। पर्णसमूह सीधा तथा भूमि में रहते हैं।पुष्पान्वित समय में श्वेत, सुंदर पुष्प लगते हैं। ये झुर्रीदार पुष्प जैसे दिखते हैं। इस पौधे के पत्र कुण्ठित सख्त होते है, लेकिन कण्टक नहीं होते।

आल्लिउम पारादोक्सुम वार्षिक पौधे के रूप में उगता है, परन्तु प्रकन्द से पौधे नहीं रहते हैं। आल्लिउम पारादोक्सुम पश्चिम-पूर्वीय कोपेतदग में कर्कापदेर, मगत्यामगुली, होझलीद पोडरैड, सुंन्द, हसरदत्र, अगायलबेदेर, कोनेगुम्मेबद, मध्य कोपेतदग में गारायलचीड, (सर्वप्रथम ए० अकमुरादोव ने 2007 में इस पर जोर दिया) नोकुर में आल्लिउम पारादोक्सुम उगता है।

आल्लिउम पारादोक्सुम का कच्चा माल :- यह पौधा तृण के रूप में उगता है। हमारे देश में यह दुर्लभ है। कच्चे माल के लिये इसकी मात्रा पर्याप्त है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

तुर्कमेनिस्तान की लाल पुस्तक में यह पौधा 1999 से प्रतिनिधि करता है। इस पौधे के पत्र, प्रधान काण्ड तथा कल्की कन्द औषध कच्चे माल के रूप में प्रयुक्त होते हैं। इस कच्चे माल को खेतों में उगाया जाता है। जब पौधा ताजा होता है तब उसको कच्चे माल के लिये इकट्ठा किया जाता है। पौधे के (bulbs) वल्की कन्द को सुखाकर कागज़ के थैलों में एक साल तक रक्खा जा सकता है।

रासायनिक संघटन :- पौधे के पत्र, कांड तथा पुष्प में विटामिन ए तथा सी होते हैं।

प्रयोग :- पौधा बहुत स्वादिष्ट तथा मधुर होता है। लोक चिकित्सा में आल्लिउम पारादोक्सुम का प्रयोग होता है। पचन संस्थान की व्याधियों में अम्लों को निष्क्रिय बनाने के लिये इसका प्रयोग होता है।

कल्पना एवं प्रयोग :- भोजन के पूर्व इस पौधे के 3 से 6 पत्र खायें।

शुष्क पौधा :- उबले हुए एक गिलास पानी में एक बड़ा चम्मच (15 ग्राम) पुष्प डालें। उसे छान लें। इसमें से एक बड़ा चम्मच (15 ग्राम) दिन में तीन बार भोजन पूर्व लें।

आल्लिउम पोरुंम
ALLIUM PORRUM

अभिलक्षण :- आल्लिउम पोरुंम एक तरह का आश्चर्जनक पलाण्डु है। यह पलाण्डु 150 से०मी० ऊँचा होता है। इसका जीवनचक्र दो साल का है। पौधा भूमध्य समुद्र के नजदीक से प्रारंभ होता है। पौधे की सभी जातियों को आल्लिउम आम्पेलोप्रासुम कहते हैं। हमें यह पौधा भूमध्य समुद्र के नज़दीक इंग्लेण्ड के दक्षिण में तथा ईरान में मिलता है। यह अमेरिका, उत्तर अफ्रिका, युरोप (फ्रांस तथा इंग्लैण्ड) में उगता है।

प्रथम वर्ष में इसमें लम्बे पत्र तथा एक मोटा, रेखांकित वृन्त होता है। दूसरे वर्ष में वृन्त की लम्बाई 150 से०मी० पहुँचती है तथा इसको एक पुष्पकली लगती है। इस साल में पलाण्डु उगता है। पलाण्डु की पलाण्डु-कली बड़ी होती है। पलाण्डु 800-3000 कलीयाँ बनाता है। पौधे का वर्ण श्वेत होता है। कभी-कभी ये गुलाबी होते हैं। किन्तु कन्द बड़ा नहीं होता। बीज छोटे, झुर्रियों के साथ तथा वर्ण में काले होते हैं। 1000 बीजों का वजन 2.2-3.7 ग्राम रहता है।

जीवनचक्र की विशेषता :- साधन संपन्न, पर्याप्त नमी और मृदु भूमि में यह पौधा प्रजनन करता है। इस पौधे के लिए अम्ल भूमि अनुकूल नहीं है।ये पाला पड़ने के दरम्यान 7 डिग्री से० तापमान पर भी जिंदा रह सकता है।

इसको नाइट्रोजन की आवश्यकता है। इसको पुष्प देर से (जुलाई-अगस्त, अक्तूबर-नवम्बर) में लगते हैं। पत्र पतझड़ के अंत तक लगते हैं। इसकी तीव्र गंध या स्वाद नहीं होते लेकिन यह स्वादिष्ट है, पलाण्डु से ज्यादा स्वादिष्ट है।

विस्तार :-अहल तथा लेबप वेलयत के क्षेत्रों में करन्तन (Karantan) तथा बोलगार (Bolgar) जातियों को बीज से उगाया जाता है। प्रति हेक्टर 6-8 कि०ग्रा० बीज को बोना जरूरी है। यह पलाण्डु इस क्षेत्र की भमि में अच्छा बढ़ता है।

प्राकृतिक मात्रा :- देश के क्षेत्र में यह जंगल में देखने को मिलता है। यह आहार तथा औषध दोनों के लिये उगाया जाता है।

औषधीय कच्चा माल :- इस पलाण्डुऔर बीज का औषध में प्रयोग होता है। पलाण्डु को 5-6 महीने तक बालू में रखा जा सकता है।

रासायनिक संघटन :-इस पलाण्डु में बहुत विटामिन्स होते हैं। पोटेशियम, उत्पत् उड़नशील तैल, विटामिन सी, 80 मि०ग्रा०%, केरोटीन 0.7 मि०ग्रा०%, ई 3 मि0ग्रा0%, बी$_1$, 0-1 मि०ग्रा०%, बी$_2$ 0-06 मि०ग्रा०%, पी.पी. 0-5 मि०ग्रा० प्रतिशत होते हैं।

प्रयोग :- लोक चिकित्सा में बहुत पूर्व समय से ही यह आश्चर्यजनक पलाण्डु औषधीय उद्देश्य हेतु प्रयुक्त हो रहा है। सेयीत् इस्माइल गुर्गेन्ली की विख्यात पुस्तक ''ट्रेजरी आफ खोरेज़्म शाह'' में उन्होंने पौधे के आहार तथा औषधीय गुणकर्मों को दर्शाया है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

इसी पुस्तक में उन्होंने दंतशूल में इसके प्रयोग का उल्लेख किया है। एथेरोस्क्लेरोसीस, रुमेटीज़्म, मेदाधिक्य, वृक्काश्मरी तथा चयापचय के विकारों में भी इसका प्रयोग होता है। यह पौधा लैंगिक अंगों की प्रक्रिया को बढ़ाता है। यह जठराग्नि की वृद्धि करता है तथा मनःस्थिति को हल्का करता है।

सेव के साथ पौधे का सलाद : आल्लिउम पोरुम को प्रक्षालन कर साफ करें। हँसिया से ऊर्ध्वाध काटें। सेव का छिलका उतारकर उसे छोटे टुकड़े करें। पौधे तथा सेव को मेयोनेंझ में मिलायें। पौधे के बारीक कटे हुए पत्तों से सलाद को सजायें। सलाद की इस व्यंजन का सलाद में 200 ग्राम आल्लिउम पोरुम, 1 बड़ा चम्मच मेयोनेंस, लवण, स्वादुनसार चीनी तथा बीनेगर (सिरका) या नींबू का रस होता है।

टमाटर के साथ एलीयम पोरम :- पौधे को धोकर साफ करें। पौधे के मोटे हिस्से को लम्बाई में काटें। टमाटर को टुकडों में काटें। पौधे व टमाटर के टुकड़े को मेयोनेज के साथ मिलायें। सलाद को आल्लिउम पोरुम के पत्तों से सजायें।

सलाद की व्यंजन :- 300 ग्राम टमाटर, 150 ग्राम पौधा, नमक, चीनी, मेयोनेस।

आल्लिउम पोरुम के प्याज को स्टीम करें। पौधे के काण्ड को थोडी देर तक स्टीम करें। सिरका तथा मक्खन मिलाकर गरम खायें। सलाद की व्यंजन 300 ग्राम पौधे का काण्ड, 1/3 गिलास पानी, एक बड़ा चम्मच (15 ग्राम) मक्खन तथा सिरका।

प्याज के दूध का सूप :- काटे हुए प्याज को उबलते हुए दूध में डालें। स्वादानुसार नमक मिलाकर 10-15 मिनट तक उबालें। उबलते हुए सूप में आलू को भी मिला सकते हैं।

व्यंजन की सामग्री :- 0.5 लीटर दूध, 150 ग्राम पौधा, 50 ग्राम आलू, नमक।

औषध कल्पना तथा प्रयोग :- पौधे के कूटे हुए बीज 2 चम्मच (10 ग्राम) को 6 बड़े चम्मच (90 ग्राम) मधु के साथ मिलायें। 1 बड़ा चम्मच (15 ग्राम) औषध को भोजन के पूर्व, दिन में तीन बार पियें।

एक गिलास (200 मि०लि०) पानी में 1 चम्मच (5 ग्राम) बीज मिलाकर एक तामचीनी में 5-10 मिनट उबालें। तैयार क्वाथ को छान लें। प्रति रोज 1 बड़ा चम्मच (15 ग्राम) क्वाथ दिन में तीन बार, भोजन के पूर्व पियें।

आल्लिउम सूवोरोविई
ALLIUM SUVOROVII

वर्णन :- आल्लिउम सूवोरोविई लिलियेसी कुल का बहुवार्षिक क्षुपीय 50-80 से०मी० ऊँचा पौधा है। आल्लिउम सूवोरोविई का वल्की कन्द एकल, गोलाकार व्यास में 2.3 से०मी० का तथा प्रायः चमड़े जैसे भूरे परत से आच्छादित होता है। काण्ड मजबूत होता है। 5-20 मी०मी० चौड़े 2-6 पट्टी आकार के पत्र होते हैं। पुष्पविन्यास अर्धगोलाकार या गोलाकार छत्रक होते हैं। आल्लिउम सूवोरोविई में अप्रैल में पुष्प लगते हैं तथा जून में फल लगते है।

जैविक लक्षण :- आल्लिउम सूवोरोविई समुद्र तल से 1000 से 2500 मी० की ऊँचाई पर प्रायः पहाड़ियों की तराई में पर्वतों के नीचले हिस्से में टूटे हुए पत्थरों की ढलानों में तथा खड्ड़ो में उगते हैं।

पौधे का विकास का चक्र छोटा होता है। सभी उपयुक्त तथा आवश्यक तत्व कन्द(bulb) में संग्रहित होते हैं।

विस्तार :- अ०सू० कुगितांग में : बुलकदेरे, होजा-पिल, कुगितांग, तानरिदेपे, होजाकरकुल, गर्लीक, बधिज़ में, पिन्हानचेश्मे, आकारचेश्मे, क्यारिज़ में उपलब्धि है।

प्राकृतिक उपलब्धि :- आल्लिउम सूवोरोविई तुर्कमेनिस्तान का एक दुर्लभ क्षुपीय पौधा है। औषधीय उद्देश्य हेतु संसाधन सीमित है। इस प्रजाति की खेती होती है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

औषधीय कच्चा माल :- आल्लिउम सूवोरोविई के गोलाकार वल्की कन्द का चिकित्सा हेतु प्रयोग होता है। कच्चे माल को अप्रैल-मई में इकट्ठा किया जाता है। परिपाटीबद्ध परिस्थितियों में उसको सुखाया जाता है। तैयार कच्चे माल को कांच के पात्र में अथवा कागज़ के थैलों में पैक किया जाता है। समाप्ति तिथि 2-3 साल की होती है।

रासायनिक संघटन :- आल्लिउम सूवोरोविई के वल्की कन्द में विटामिन सी, फायटोन्साईड्स तथा इथरीयल तैल रहते हैं। पौधे का रासायनिक संघटन अब तक पूरा नहीं खोजा गया है।

आल्लिउम सूवोरोविई का प्रयोग अधिकतर शिरोरोग जैसे कि मस्तिष्क के श्लेष्म अर्बुद, अपस्मार, विषाद, शिरःशूल, भ्रम, अवसाद पक्षाघात स्मृतिभ्रम, स्मृतिमांद्य आदि की चिकित्सा में होता है।

दृष्टि की बल वृद्धि के लिये, अधिमंथ, श्वासकष्टता, पुराना कास, रक्तष्ठीवन, आमाशय तथा पचन की क्रिया को बढ़ाने के लिये, मूत्राशय की अश्मरी को पिघलाने के लिये, मूत्रकष्टता, स्प्लीनोस्क्लेरोसीस, संधि तथा चेतनातंतु की व्याधियों में तथा खालित्य में पौधे का प्रयोग होता है।

आल्लिउम सूवोरोविई अंगों में से श्लैष्मिक तथा स्निग्ध दोषों को बाहर निकालता है क्योंकि उसमें शोधन तथा मार्गो को खोलने, तथा गाढे स्रावों को मृदु तथा पतला बनाकर रेचक की तरह अंगों से बाहर निकालने के गुण हैं।

स्त्री तथा पुरुष वंध्यत्व में तथा काम दौर्बल्य में वनस्पति के वल्की कन्द अत्यधिक असरदायी है।

यह माना जाता है कि ताजे (उबले हुए या सिरका के साथ बनाया न हो) आल्लिउम सूवोरोविई की गंध मक्खियां तथा gadflies (मक्खी की एक जाति) का नाश करती है।

इस पौधे को चूहा खायें तो वह तुरंत मर जाता है। सफर या पैदल सैर के दरम्यान अगर आपके पास ताजा और प्रक्रिया न किया हो ऐसा आल्लिउम सूवोरोविई हो तो इसकी गंध खतरनाक जानवरों सहित प्राणियों कीड़ों, सांप आदि को दूर भगाती है।

कल्पना तथा प्रयोग :- भ्रम, अपस्मार, विषाद तथा मौखिक उद्वष्टन के लिये 4-5 ग्राम तला हुआ आल्लिउम सूवोरोविई का वल्की कन्द अथवा ताजे वल्की कन्द का मधु के साथ मिश्रण का सेवन करें।

तमक श्वास के लिये इस प्याज का मधु के साथ बनाया मिश्रण बहुत असरदार है। उबालने से पहिले छिलके को निकाला जाता है। पंद्रह ग्राम आल्लिउम सूवोरोविई इस औषध बनाने के लिये पर्याप्त है। दिन में तीन बार इसको पियें। उदरशूल, कमजोर पाचन शक्ति, पुराना कास, रक्तष्ठीवन, शूल तथा कष्टपूर्वक मूत्रप्रवृत्ति के लिये इसका उपयोग किया जाता है।

6.24 ग्राम ताजा वल्की कन्द, काम दौर्बल्य, स्त्री बंध्यत्व तथा वाजीकरण के लिये असरकारी है। एक गिलास (200 मि०ली०) उबले पानी और एक बड़ा चम्मच (15 ग्राम) बीज एक तामचीनी पात्र में लेकर मंद आंच पर 30 मिनट उबालें। छानकर, एक बड़ा चम्मच (15 ग्राम) दिन में 3 बार भोजन के पहले लें। इस पौधे का बीज चूर्ण एक स्वास्थ्य द्रव्य के रूप में प्रजननेन्द्रियों में रक्तप्रसारण बढ़ाने हेतु प्रयुक्त होता है। 0.2 से 0.3 ग्राम चूर्ण (चाकू के नोक पर) दिन में 3 बार भोजन से पहले लें। प्रयोग काल 3-4 सप्ताह है। वह काम दौर्बल्य और स्त्री पुरुष बंध्यत्व के लिए भी प्रयोग होता है। ताजा और असंस्कृत प्याज़ की एक मात्रा 6 ग्राम से ज्यादा नहीं होती है। अतिमात्रा स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है।

ऐलोक्रूसा जिप्सोहिलोइदेस
ALLOCHRUSA GYPSOHILOIDES

अभिलक्षण :- तुर्कमेनिस्तान में इसकी दो प्रजातियाँ पाई जाती हैं। पौधे के अन्य नाम बुग्रातिकेन, सर्सेपील और सब्यन्कोक भी हैं।

ऐलोक्रूसा जिप्सोहिलोइदेस , कारिओफिल्लद चेस्तोदेस कुल का बहुवार्षिक क्षुप तथा 50-80 से०मी० ऊँचा होता है। पौधे का मूल तीर के आकार का (30-70 से०मी० लम्बा, तथा 3-10 से०मी० चौड़ा) अशाखी, खड़ा तथा 6 मीटर गहरा होता है। मूल कड़ा होता है तथा सूखी परिस्थिति में

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

टुकड़ो में विभाजित हो जाता है, और विभजन वाले स्थान पर श्वेत होते हैं। तना मजबूत बहुशाखी पतला तथा गोलाकार है। पत्र नीचे अभिमुख पतले, भालाकार, कण्टकहीन एवं थोड़े खुरदरे, (1-2.5 से०मी० लम्बे) होते हैं।

पुष्प छोटे, श्वेत अथवा गुलाबी तथा गुच्छ में इकट्ठे होते हैं। पौधे में जून में पुष्प तथा अगस्त में फल लगते हैं। अण्ड गोलाकार या अण्डाकार, एक या दो प्रजनक बीजकोष युक्त (प्राय: 0.2 से०मी० लम्बा) होता है।

उगने की विशिष्टता:- हमारे देश में समुद्र तल से 400-1700 मीटर की ऊँचाई पर यह पौधा उगता है। सूखे में भी स्थिर रहता है तथा इसे प्रकाश की आवश्यकता जरूरी है। बीज से इसका प्रजनन होता है।

हमारे देश में पौधा केवल कोयतेनदाग में खोजायपीलत में मिलता है। पर्वत की तलहटी में नदी के किनारों पर यह उगता है।

प्राकृतिक संरक्षण :- यह पौधा कम मिलने वाला नहीं है। आवश्यकता के अनुरूप उपलब्ध है।

प्रयोज्य कच्चा माल :- इस का कच्चा माल उसके मूल तथा वनस्पति पत्ते हैं। इसको पारंपरिक पद्धति से सुखाया जाता है। प्रयोग में लाने वाले कच्चे माल को कपड़े के थैलों में संग्रहित किया जाता है। समाप्ति अवधि 2-3 साल की है।

रासायनिक संघटन :- पौधे के मूल में 10-30 प्रतिशत ट्रायपीन सेपोनीन मिलता है। ग्लायकोसाईड जीप्सोजेनीन तथा एकेन्टोफाइलेसाईट बी एवं सी इसके निष्यंद है। पत्तों में काफी मात्रा में सेपोनीन्स मिलते हैं।

उपयोग :- लम्बे समय से कोयतेनदाग की प्रजा को ऐलोक्रूसा जिप्सोहिलोइडेस के मूल की जानकारी 'बेही' 'बेह' अथवा 'बेहदरी' के रूप में थी। मूल के ज्यादातर हिस्से मीठा पेय ''नीसोलेनी'' बनाने के लिये प्रयुक्त होता है। यह श्वेत वर्ण का गाढ़ा, झागदार मधुर पेय है और यह बलवर्धक है।

लोक चिकित्सा में पौधे के मूल का फाण्ट श्वासनलिका का शोथ तथा श्वसन संस्थान की अन्य व्याधियों में कफनि:सारक तथा मूत्रल के रूप में प्रयुक्त होता है।

पौधे के मूल से बनाई हुई चाय का प्रयोग आमाशय-ग्रहणी की व्याधियाँ, चर्म व्याधि जैसे विपादिका, विचर्चिका, फोड़ा-फुन्सी तथा गुप्त रोगों में, चयापचय के विकारों में तथा यकृत्, प्लीहा एवं वृक्क की व्याधियों में होता है।

वनस्पति से बनाये हुए फाण्ट का प्रयोग कब्जहर तथा कफनि:सारक के रूप में होता है। यह सेपोनीन्स का एक समृद्ध स्रोत है। इसके सेपोनीन्स का प्रयोग औषध तथा आहार उद्योग में शरबत, हलवा तथा मिठाई उद्योग में, मकान (झागदार कंक्रीट बनाने के लिए) तथा कपड़ा उद्योग में (रेशमी तथा ऊनी कपड़ों की धुलाई तथा ब्लीचिंग के लिये) होता है। यह अंत:स्रावी ग्रंथियों की कार्यशीलता को सुधारते हैं। शुद्ध सेपोनीन्स का प्रयोग प्राणी चिकित्सा शास्त्र (ऐन्थेकम, बृसेलोसिस) में होता है।

औषध कल्पना तथा प्रयोग :- एक छोटा चम्मच (15 ग्राम) बारीक कटे हुए ऐलोक्रूसा जिप्सोहिलोइडेस के मूल को एक गिलास (200 मि०ली०) उबालकर ठंडे किये हुए पानी में डालकर 8-10 घण्टे के लिये रखें। छानकर तैयार हुए फाण्ट को दिन में तीन बार लें।

एक छोटा चम्मच ऐलोक्रूसा जिप्सोहिलोइडेस के मूल को एक चायदानी (एक लीटर) में डालकर उसमें उबलता हुआ पानी डालें। इस चाय को छानकर पीयें।

एक छोटा चम्मच (15 ग्राम) बारीक कटे हुए ऐलोक्रूसा जिप्सोहिलोइडेस के पौधे को उबालकर ठंडे किये एक गिलास (200 मि०ली०) पानी में डालकर मिलायें। छान लीजिये। तैयार हुए तरल को एक चम्मच (15 ग्राम) दिन में तीन बार प्रतिदिन लें।

आल्तेआ आर्मेनिआका
ALTHAEA ARMENIACA

अभिलक्षण :- यह एक सौन्दर्ययुक्त तथा औषधीय पौधा है। यह बहुवर्षिक 0.8-1.5 (2.0) मीटर ऊँचा क्षुपीय पौधा है। उसका तना रेसों से आच्छादित होता है। आल्तेआ आर्मेनिआका मालवेसी कुल का है। तना सीधा, साधारण

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

या कम शाखायुक्त होता है। पत्र रेसेदार तथा 3-5 खण्डों में विभाजित होते हैं। पत्रखण्डक 7-10 से०मी० लम्बे तथा अंगुली की तरह विभाजित होते हैं, उसकी धार दन्तुर होती है तथा रेसों से आच्छादित होती है। पुष्प नारंगी होते है जून से सितम्बर तक लगते हैं तथा जुलाई-अक्टूबर में फल लगते हैं।

फल एक त्वचा से आच्छादित होता है तथा उसमें 14-20 बीज होते हैं। बीज वृक्काकार तथा औसतन 3 मि०मी० लम्बे होते हैं। 1000 बीज का वजन प्रायः 3 ग्राम होता है।

प्रधान स्वरूप :- समुद्र तल से 500-900 मीटर की ऊँचाई पर इसका पौधा उगता है। उसको नमी पसंद है और सामान्यतः नम स्थानों पर उगता है। बीज से इसका प्रजनन होता है।

तुर्कमेनिस्तान में विस्तार :- आल्तेआ आर्मेनिआका पश्चिम कोपेतदाग की दक्षिण में माग्तीमगुली, डुझलीडेप, यसक में, कुरीझडी तथा इदर में, मध्य कोपेतदाग में अर्कबील, गीर्कदेपे, गीर्गीलोवे, मेर्गेनोम्ने, जर्मन तथा सुलुकली में, पश्चिम कोपेतदाग में रोहबदान में तथा शामली में गुरीखोवदान तथा घीर्लक में उगता है।

प्राकृतिक उपलब्धि :- हमारे देश में यह पौधा कम मिलता है। औषधीय उद्देश्य हेतु पौधे की उपलब्धि पर्याप्त है। प्रति हेक्टर 8-10 बोरियों भर फल उत्पन्न होते हैं।

औषधीय कच्चा माल :- आल्तेआ आर्मेनिआका के मूल को चिकित्सा हेतु उपयोग करते हैं। बेलचा की मदद से वसंत अथवा पतझड़ में मूल निकाले जाते हैं। इसको धोने के बाद खराब (सड़े) हिस्सों को निकालना भी जरूरी है। तत्पश्चात् इसके 20 से०मी० मोटे टुकड़े काटकर इसको 50-60 डिग्री सेण्टीग्रेड पर सुखाया जाता है। 30-40 किलोग्राम की क्षमता वाले बोरियों में भरकर 3 साल तक संग्रह किया जाता है।

रासायनिक संघटन :- पौधे के मूल में 25-30 प्रतिशत श्लेष्मा, पोलीसेकेराइड्स, स्टार्च लगभग 10 प्रतिशत सेकेरोझ, बीटेन, वसा, पेकटीन तथा अन्य तत्व होते हैं।

औषध प्रयोग :- आल्तेआ आर्मेनिआका चिकित्सा शास्त्र में एक प्रसिद्ध औषधीय पौधा है।

उसके मूल से निर्मित औषध कास में मदद करता है। बाल धोने के लिये भी इसका प्रयोग होता है। वैज्ञानिक चिकित्सा शास्त्र में इस पौधे का प्रयोग कफनिःसारक, मृदुजनक तथा शोफहर के रूप में होता है। तमक श्वास, श्वासनली शोथ तथा तीव्र कास, आमाशयशोथ, अन्नवह संस्थान की व्याधियों में, आंत्रशोथ तथा आंत्र विकारों में, विचर्चिका, मुखपाक, सोरीयासीस, मूत्राशय शोथ तथा मुख की श्लेष्म कला के व्रणों में यह मदद करता है।

औषध भण्डार में पौधे के मूल का शुष्क सत्व, सीरप तथा आल्तेआ आर्मेनिआका के मिश्रण मिलते हैं। आल्तेआ आर्मेनिआका की गोलीयाँ म्युकालटिन के नाम से निर्मित की जाती है। कफनिःसारक के रूप में इन गोलियों का प्रयोग होता है।

कल्पना एवं प्रयोग :- उबलते हुए एक गिलास पानी में 2 छोटी चम्मच मूल का चूर्ण डालकर एक घण्टे तक छोड़ दीजिये। कपड़े से छानकर 1 बड़ा चम्मच (15 ग्राम) दिन में प्रति दो घण्टे पर सेवन करें। क्योंकि इसकी औषधीय मदिरा अत्यधिक तिक्त होती है, इसलिये इसमें शर्करा अथवा मधु मिलाया जा सकता है। सुखोष्ण अवस्था में यह ज्यादा अच्छा असर दिखाता है।

एक छोटा चम्मच (5 ग्राम) मूल का चूर्ण करें। कपड़े से छानकर 1.2 ग्राम की मात्रा में बच्चों को भोजन के पश्चात् दें। यह औषधि श्वसन संस्थान के शोथ में तथा आंत्र के विकारों में लाभप्रद है।

आल्तेआ ओफ्फिचिनालिस
ALTHAEA OFFICINALIS

अभिलक्षण :- प्राचीन काल से इस पौधे के चिकित्सकीय गुणकर्म मालूम है। विश्व में इसकी 12 प्रजातियाँ, मध्य एशिया के देशों में 8 प्रजातियाँ तथा तुर्कमेनिस्तान में 6 प्रजातियाँ मिलती हैं। इसके अत्यधिक औषधीय गुण हैं।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

आल्तेआ मालवाचेआ कुल से है और बहुत कीमती औषधीय पौधा है। यह बहुवार्षिक क्षुपीय पौधा 0.8–1.2 मीटर लम्बा है। पौधे का प्रकन्द वृक्ष सदृश छोटा, मोटा तथा पीताभ–धूंसर, शाखा युक्त होता है। इसके सीधे बढ़ने वाले वृक्ष सदृश प्रकन्द छोटे–छोटे कई संख्या में होते हैं। आल्तेआ के पत्र लम्बे, सिरा युक्त, पौधे के नीचे के पत्र उभरी हुई धारी वाले अंडाकार होते हैं। ऊपर के पत्र पूरी तरह अंडाकार होते है। पुष्प वृन्त युक्त तथा उपर के पत्रों की कोण में लगे हुए होते हैं। पुष्प हलके गुलाबी होते हैं।

पौधे के बीज काले–धूसर तथा वृक्काकार होते हैं। जुलाई, सितम्बर में पुष्प लगते हैं तथा जुलाई से अक्तूबर तक फल लगते हैं।

प्राप्ति स्थान :–आल्तेआ नम स्थानों में नदी तथा तालाब के किनारों पर उगना पसंद करता है। बीज से पौधे का प्रजनन होता है। पहले साल में पौधे में फूल तथा फल कम लगते हैं। दूसरे साल में तथा उसके बाद अधिक संख्या में फूल तथा फल लगते हैं।

पौधा पश्चिम–पूर्वीय कोपेतदाग में ऐदेरे तथा दुझलीदेपे में तथा बधीस में मोर्गुनोव में पाया जाता है। उपरोक्त बताये नये स्थानों में यह नम जगह पर झरनों तथा नदी के निकारों पर उगता है।

प्राकृतिक उपलब्धि :– आल्तेआ कम पाये जाना वाला पौधा नहीं है। प्राकृतिक स्रोत से उपलब्धि चिकित्सकीय उद्देश्य हेतु पर्याप्त है। हमारे देश में यह विशिष्ट क्षेत्रों में चुना जाता है।

प्रयोज्य कच्चा माल :– 2-3 साल के पौधे का प्रकन्द तथा मूल काम में आने वाला कच्चा माल है। परंपरागत तरीकों से इस के कच्चे माल को इकट्ठा किया जाता है और तत्पश्चात् उसे सुखाया जाता है। 26 देशों की फार्माकोपिया में इसके प्रकन्द को तथा 10 देशों में इसके पत्ते तथा प्रकन्द का तथा तीन देशों में इसके पुष्प का समावेश किया गया है।

प्रयोज्य कच्चे माल को 20-30 किलोग्राम के थैलों में संचय किया जाता है।

प्रकन्द को संचय करने का समय तीन वर्ष का तथा क्षुप का 5 साल का है।

रासायनिक संघटन :– आल्तेआ के प्रकन्द में लगभग 37 प्रतिशत स्टार्च, 35 प्रतिशत श्लेष्मा, 25 प्रतिशत शर्करा 14 प्रतिशत बीटेइन, एपल एसीड, एस्परेजीन पेकिटन, टैविन्स, वसा, फायटोस्टेरोल तथा वाष्पशील तैल रहते हैं। पत्तों में श्लेष्मा 75 मि.ग्रा.% वीटामिन सी तथा 39 प्रतिशत तक तैल वाष्पशील केरोटीन मिलते हैं।

प्रयोग :– बहुत साल पहले से पौधे का प्रयोग कच्चे माल के रूप में होता था। विज्ञान में पौधे को आलथोस (Althos) नाम से जाना जाता है तथा इसने अपनी ख्याति साबित की है। ग्रीक से आलथोस का भाषांतर औषध के रूप में हुआ है।

प्रख्यात वैज्ञानिक एवं चिकित्सक अबु अली इब्न सीना ने आल्तेआ प्रकन्द के सत्व का प्रयोग मूत्राशय शोथ, आंत्र व्याधियों में, ज्वर में, गुदा रोगों में करने की सलाह दी है तथा पत्रों के सत्व का प्रयोग अतिसार में करने की सलाह दी है। बीज के सत्व का प्रयोग छोटे बच्चों में मूत्रप्रवृत्ति तथा पुराने कास की चिकित्सा के लिये किया जाता है। वैज्ञानिक तथा पारंपरिक चिकित्सा शास्त्र में आल्तेआ के प्रकन्द के सत्व का प्रयोग आमाशय की व्याधियों तथा आंत्र की व्याधियों में आमाशय–ग्रहणी शोथ, कामला, दंत तथा चर्म व्याधियों, प्रतिश्याय, श्वसनसंस्थान का शोथ, कास, श्वासनलीशोथ, लोहित ज्वर, श्वासनली प्रदाह तथा बच्चों के श्वसन संस्थान के रोगों में किया जाता है।

तुर्कमेनिस्तान लोक चिकित्सा में इसके कन्द के सत्व का कास, श्वसनकज्वर, वृक्कशोथ, तमक श्वास, गले का दर्द, आमाशय–ग्रहणी शोथ तथा विशेषकर बच्चों के अतिसार में अधिक प्रयोग होता है।

कल्पना तथा प्रयोग :– एक गिलास (200 ml) पानी में दो बड़े चम्मच (30 ग्राम) बारीक कटा हुआ कन्द डालकर 30 मिनट के लिए उबालें। सत्व को छान लें तथा दिन में तीन बार खाना खाने के पश्चात् लें। इसे प्रतिदिन सुखोष्ण लें। आवश्यकता हो तो शर्करा मिलावें।

एक लीटर ठंडे पानी में 1 बड़ा चम्मच (15 ग्राम) बारीक कटा हुआ कन्द डालें। 8 घण्टे तक रखें। तैयार हुए फांट को छान लें। दिन में 4-5 बार 2 बड़ा चम्मच (30 ग्राम) मात्रा में लें।

औषधीय पानक बनाने के लिए प्रकन्द 2 चम्मच (10 ग्राम) लेकर इसके सूखे सत्व को 200 मि०ली० चीनी की चासनी में मिलावें। उसको उबालें तथा धीरे धीरे चलायें। इस तरह से तैयार पानक का प्रयोग शुष्क कास में होता है।

आल्तेआ से रोगहर चाय का निर्माण :– 1 बड़ा चम्मच मिश्रण 2 भाग (15 ग्राम) आल्तेआ का कन्द, 2 भाग क्लोट्सफूट (clotsfoot) के पत्र तथा 1 भाग मार्जोरम (marjoram) के क्षुप को 2 गिलास (400 मि०ली०) पानी में मिलाकर 20 मिनट तक रखें। छानकर प्रतिदिन आधा से एक गिलास (100-200 मि०ली) सुखोष्ण लें।

पौधे के क्षुप 2 बड़ा चम्मच (30 ग्राम)को आधा लीटर (500 मि०ली०) पानी में मिलाकर 2 घण्टे तक रखें। छानकर तैयार किये हुए फाण्ट का गले के लिये गरारे तथा नेत्रों के प्रक्षालन के लिये प्रयोग करें।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

अमीग्दलुस कोम्यूनिस
AMYGDALUS COMMUNIS

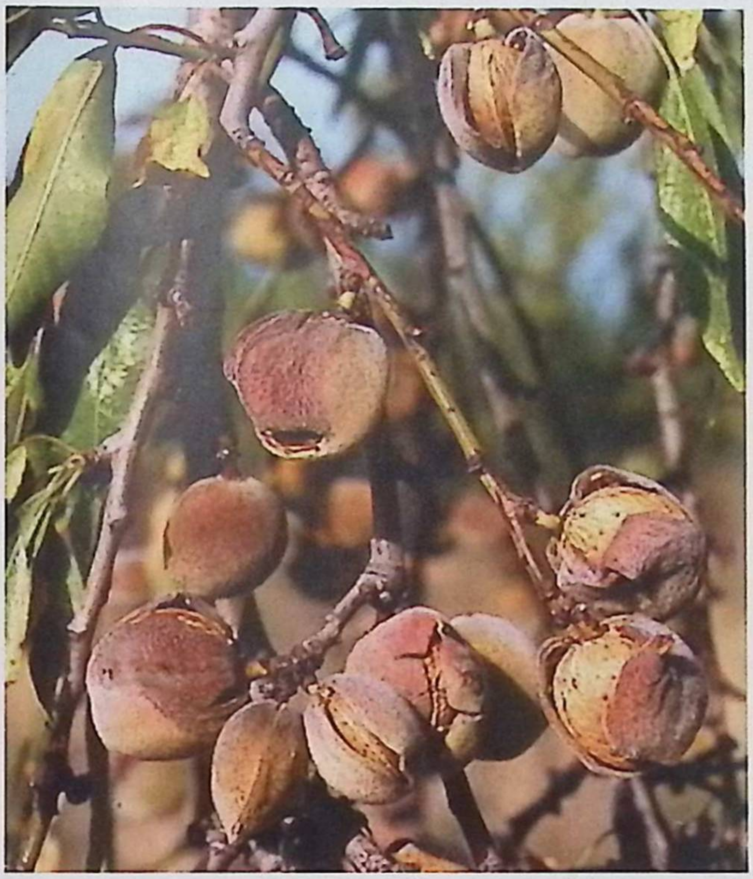

वर्णन :- अमीग्दलुस कोम्यूनिस रोजेसी कुल का 2-4 मी० ऊँचाई वाला क्षुप है। इसके अंकुर चिकने लाल-धूसर त्वचा युक्त तथा बहुत छोटी कंटक रहित शाखाएँ होती हैं। पुरानी शाखाओं की त्वचा भूरी-धूसर, लगभग काला होता है। पत्र एकान्तर, नोकदार अथवा लम्बे एवं दीर्घवृन्तीय होते हैं। एकाकी पत्र निकलने से पहले पुष्प खिलते हैं। पिछले वर्ष में उगे शुंग पर इनके क्षुप विकसित होते हैं।

इसके फल पत्थर सदृश सख्त, हरित कृष्णाभ अखाद्य, पतली त्वचा युक्त तथा 3-3.5 सै०मी० लम्बा, 2-2.5 सै०मी० चौड़ा, 1-1.6 सै०मी० मोटा, बड़ा, गुठली युक्त होते हैं। पुष्प श्वेताभ धूसर होते हैं। अमीग्दलुस कोम्यूनिस फरवरी-मार्च में पुष्पित होता है तथा उसमें जून-जुलाई में फल लगते हैं।

जैविक लक्षण :- अमीग्दलुस कोम्यूनिस पर्वतों पर, घास के मैदान में, पथरीले, उबड़-खाबड़ भूमि पर जमा मलबा वाले ढ़लानों पर समुद्र तल से ७००-१००० मी० की ऊँचाई पर उगता है। वसंत की शुरूआत (फरवरी-मार्च) में इसमें पुष्प लगते हैं। अमीग्दलुस कोम्यूनिस गर्मी पसंद करने वाला पौधा है। इसकी उत्पत्ति के समय कलियाँ वर्फ-रोधी त्वचा से आच्छादित होती हैं। वसंत के तुषार से पौधा काफी प्रभावित होता है। दूसरे फलों की अपेक्षा अमीग्दलुस कोम्यूनिस की खेती को प्रकाश की जरूरत होती है लेकिन यह भूमि तथा उसकी उर्वरता के प्रति उदासीन रहता (indifferent) है। यह पथरीली मलबा वाली भूमि तथा अधिक मात्रा में चूनायुक्त लेकिन सतह पर भूमिगत पानी की उपलब्धि होती हो ऐसी भूमि में उगता है तथा फल देता है।

रासायनिक संघटन :- मीठे बादाम की गिरी का छिलका पतला, वसायुक्त, स्वादिष्ट तथा गंधरहित होता है। उसमें 60.47 प्रतिशत वसा तैल, 7.80 प्रतिशत कार्बोहाईड्रेट्स, 23.36 प्रतिशत प्रोटीन्स, ग्लायकोसाईड्स, एमीग्डेलीन, हेमेटीन, बेन्झालडीहाईड, सायनीक एसीड, विटामिन बी2, लगभग 20 प्रोटीन तत्व तथा 2-3 प्रतिशत सकरोज़ होते है।

विस्तार :- अमीग्दलुस कोम्यूनिस कोपेतदग के मलवा वाले स्थान में, मगत्यमगुली में, सम्बर की वादियों में, तुतलयनल, फेदेरे, पोर्वेरे तथा दयना में फैला हुआ है। मगत्सयगुली, गोकदेपे, अर्कबील, सेर्दार तथा अश्खाबाद में इसकी खेती होती है।

प्राकृतिक उपलब्धि :- अमुदर्या नदी की घाटी के 2/3 हेक्टर क्षेत्र सहित 3000 हेक्टर क्षेत्र में अमीग्दलुस कोम्यूनिस पाया जाता है। उसका घनत्व कम (प्रति हेक्टर 10-20 पौधे) है। वार्षिक पैदावार बारिश तथा बर्फ गिरने की मात्रा पर निर्भर करता है और 1.2 से 4 किलो तक फल पैदा होते हैं। फल की वार्षिक पैदावार 5-10 टन की है।

सामान्य परिस्थितियों में अमीग्दलुस कोम्यूनिस कम मात्रा में पैदा होता है क्योंकि लोग फल तोड़ लेते हैं और चूहे खा जाते हैं। इसका कलम लगाने से पौधे की वृद्धि होती है। नवम्बर-जनवरी में बोये गये बीज से अंकुरित छोटे पौधे मौलिक तत्व हैं। ये पतझड़ (सितम्बर-अक्तूबर) अथवा वसंत के प्रारम्भ में लगाये जाते हैं। तुर्कमेनिस्तान में अमीग्दलुस कोम्यूनिस की तीन प्रजातियों की खेती होती है। ये है ''कगीझचानीक (Kagyzshyanik)", डेझर्ट (Dessert)" तथा ''तुर्कमेनीस्तान''।

औषधीय कच्चा माल :- औषधियाँ बनाने के लिये अमीग्दलुस कोम्यूनिस की गिरी का कच्चा माल के रूप में उपलब्ध कराते हैं। इसका मीठा मिश्रण मीठे बादाम से बनाया जाता है लेकिन कड़वी बादाम से पानी निकाला जाता है। पके फलों से हरा छिलका तथा गिरी का छिलका हटाकर सफाई की जाती है तथा उन्हें खुले में तीन-चार दिन सुखया जाता है। इस तैयार माल को सूखे, हवादार कमरों में कांच, धातु अथवा लकड़ी के पात्र में संग्रहीत (एकत्र) किया जाता है।

प्रयोग :- प्राचीन काल से पूर्व में अमीग्दलुस कोम्यूनिस के चिकित्सकीय गुणों की जानकारी थी। अबु अली इब्न सीना ने अपनी पुस्तक ''कैनन आफ मेडिकल सायंस'' में इनका वर्णन किया है। उन्होंने यह रेखांकित किया

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

कि गेहूं के साथ कड़वी बादाम रक्तष्ठीवन, लगातार होने वाली खाँसी, श्वास, वर्ण-विकार, कृष्ण तथा नीले चिन्ह, सूर्यदग्ध, चेहरे की झुर्रियाँ तथा अलर्क विष (पागल कुत्ते का विष) में प्रभावकारी है। इस विख्यात चिकित्सक ने इसे अर्बुद (Tumors) गर्भाशय की व्याधियाँ, सकष्ट मूत्र प्रवृत्ति तथा वृक्क विकारों के लिये प्रयुक्त करने की सलाह दी है।

लोक चिकित्सा में मीठी और कड़वी बादाम के बीजों का मिश्रण पाचन संस्थान के लिये प्रयुक्त होता है। बादाम का तैल कब्जहर तथा त्वचा को मृदु करने वाला है।

नाड़ीतंत्र की व्याधियों में कड़वी बादाम का पानी शामक के रूप में प्रभावी है। पौधे के बीज के चूर्ण को मुख की त्वचा को चिकना बनाने के लिये तथा साफ करने के लिये लगाया जाता है। औषधीय द्रव तैलों के लिये इसका तैल पायसीकारक है। लोक चिकित्सा में आमाशय तथा क्षुद्रान्त्र के पहला भाग के विकारों के लिये कड़वी बादाम के फलों का प्रयोग होता है।

मीठी बादाम आभ्यन्तर अंगो की शुद्धि करता है, नबात के साथ प्रयोग करने पर मस्तिष्क को मजबूत करता है, दृष्टि को बढ़ाता है, शरीर तथा गले में मृदुता लाता है। यह छाती के रोगों के लिये भी लाभदायक है। शर्करा के साथ सेवन करने पर श्वास, फुफ्फुसावरण शोथ रक्तष्ठीवन तथा आंत्र एवं मूत्राशय के व्रणों में उपयोगी है।

कल्पना तथा प्रयोग :- अमीग्दलुस कोम्यूनिस का मुरब्बा (Jam) मजबूती प्रदान करता है तथा वृक्क की व्याधियों के लिये उपयोगी है। इसका पूर्णतः पाचन हो जाता है। अमीग्दलुस कोम्यूनिस उच्च कोटी का आहार द्रव्य माना जाता है। इसका मुरब्बा बनाया जाता है। दिन में भोजन से पूर्व 25-50 ग्राम लें। इस के बीज (100-150 ग्राम) प्रतिदिन भोजनपूर्व लेना लाभदायी है।

आंकुसा ईतलिका
ANCHUSA ITALICA

लक्षण :- विश्व में इसकी 40-50 प्रजातियाँ हैं जिनमें 10-12 मध्य एशिया में तथा तुर्कमेनिस्तान में एक प्रजाति मिलती है। आंकुसा ईतलिका ब्रेकनीक कुल का है। यह द्विवार्षिक 40-100 (120) सै०मी० ऊँचा पौधा है। पौधा मोटे, लम्बे, कड़े, श्वेत बालों से आच्छादित होता है।

तना नियमित तथा शाखा युक्त होता है। पत्र बड़े, नोकदार, आधारभूत तथा अंडाकार होते हैं। इसकी लम्बाई 10-30 से०मी० तथा चौड़ाई 5-6 से०मी० होती है। तने के नीचे पत्र संकीर्ण होते हैं। पुष्प एक गुच्छे में इकट्ठे होते हैं तथा एक मजबूत, शाखायुक्त पुष्प गुच्छी युक्त विन्यास बनाते हैं। ऊपरी हिस्सा हलका बैंगनी, 7 मि०मी० लम्बा होता है इसके फल काष्ठफल जैसे दिखते हैं। पौधे में अप्रैल-मई में पुष्प तथा जून-जुलाई में फल लगते हैं।

जैविक लक्षण :- पौधा ज्यादातर पर्वतों तथा नदी की खाईयों में उगता है। एक पौधा प्रायः 10,000 बीज देता है।

तुर्कमेनिस्तान में विस्तार :- आंकुसा ईतलिका, दक्षिण-पश्चिम कोपेतदग में, चेंदीर, सुंबर, आइदेरे तथा मध्य कोपेतदग के अर्कबील गोलडेरे तथा जुलगे में उत्पन्न होता है।

प्राकृतिक उपलब्धि :- हमारे देश में यह पौधा दुर्लभ पौधे के समूह में है। औषधीय उद्देश्य के लिये पौधे

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

का भंडार पर्याप्त है। प्रतिवर्ष 10 टन से ज्यादा कच्चे माल को इकट्ठा करना सम्भव है।

औषधीय कच्चा माल :- पत्र, तृण, पुष्प तथा मूल कच्चे माल के रूप में प्रयुक्त होते हैं।सावधानी पूर्वक इकट्ठा करके तैयार करना आवश्यक है।

रासायनिक संघटन :- पौधे के मूल में रंजक द्रव्य अन्हुजीन $C_{15}H_{14}O_4$ (लाल आभा देता है), इसमें अन्हुजीन एसीड, रेझीन तथा मोम होते हैं।

प्रयोग :- प्राचीन काल से इस औषधीय पौधे का प्रयोग हो रहा है। विश्व विख्यात अबु अली इब्न सीना ने अपनी पुस्तक ''कैनन आफ मेडिकल सायंस'' में आंकुसा ईतलिका का कामला में प्रयोग के विषय में उल्लेख किया है कि तुर्कमेन लोक चिकित्सा में बखर्ली तथा मगत्यंगुली में इसका मूल गाय की गर्म वसा के साथ मल्हम के रूप में लगाया जाता था। मध्य तथा तुर्कमेन लोक चिकित्सा में पुष्प का प्रयोग मानसिक अवसाद तथा श्वास के लिये किया जाता है। पौधे में उच्च तापमान को कम करने के गुण भी हैं।

कल्पना तथा प्रयोग :- एक गिलास पानी में 1 छोटा चम्मच पत्ते डालकर 5-10 मिनट तक उबालें। छानकर उसमें से 1 बड़ा चम्मच दिन में तीन बार भोजन से पूर्व लें।

आर्क्तिउम लेइओस्पेर्मुम
ARCTIUM LEIOSPERMUM

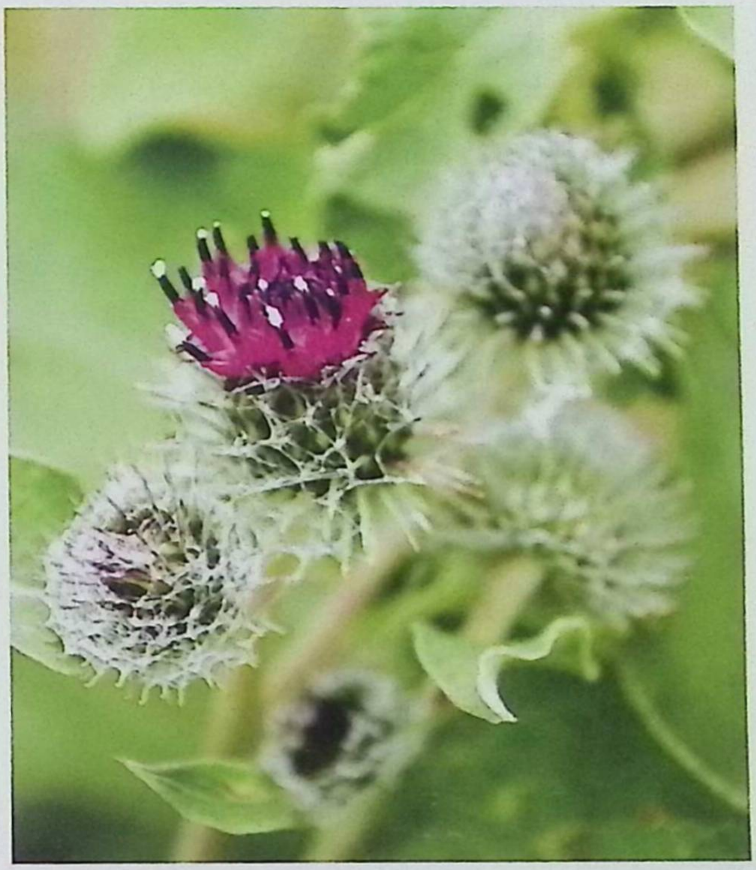

अभिलक्षण :- आर्क्तिउम लेइओस्पेर्मुम एक तृणमूलीय औषधीय पौधा है। विश्व भर में इसकी 12 प्रजातियाँ हैं जिनमें मध्य एशिया की 8 तथा तुर्कमेनिस्तान की एक प्रजाति शामिल है।

आर्क्तिउम लेइओस्पेर्मुम गर्मी में पर्वतों पर उगता है। इसके बड़े मुड़े हुए पत्र तथा गुम्बत सा फल होते हैं।

आर्क्तिउम लेइओस्पेर्मुम कोम्पोसिते (भृंगराज कुल) का बड़ा, द्विवर्षायु 75-120 से०मी० ऊँचा पौधा है। मूल शाखायुक्त, बहुसंख्यक तथा मूलकाकार होते हैं। पत्र बड़े नहीं होते, छोटे डंठल युक्त चौड़े हृदयाकार अथवा अंडाकार होते हैं। पत्र का ऊपरी भाग हरा होता है, लेकिन नीचे की ओर भूरा, मृदु रोमयुक्त होता है। पुष्प गहरे भूरे तथा गोलाकार गुच्छे में इकट्ठे होते हैं। फल चर्मल फल, आयताकार तथा पसलीदार होता है।

जैविक लक्षण :- आर्क्तिउम लेइओस्पेर्मुम के पत्र जीवन के पहले वर्ष में खुलते हैं। मजबूत तना निकलता है। पहले पुष्प खिलते हैं, बाद में पौधे में फल लगते हैं। उसके बाद आर्क्तिउम लेइओस्पेर्मुम का पौधा नष्ट हो जाता है।

रासायनिक संघटन :- आर्क्तिउम लेइओस्पेर्मुम के मूल में पोलीसेकेराईड इन्युलीन, प्रोटीन, ईथेरीयल तैल, वसा

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

आर्तेमीसा पेर्सिका
ARTEMISA PERSICA

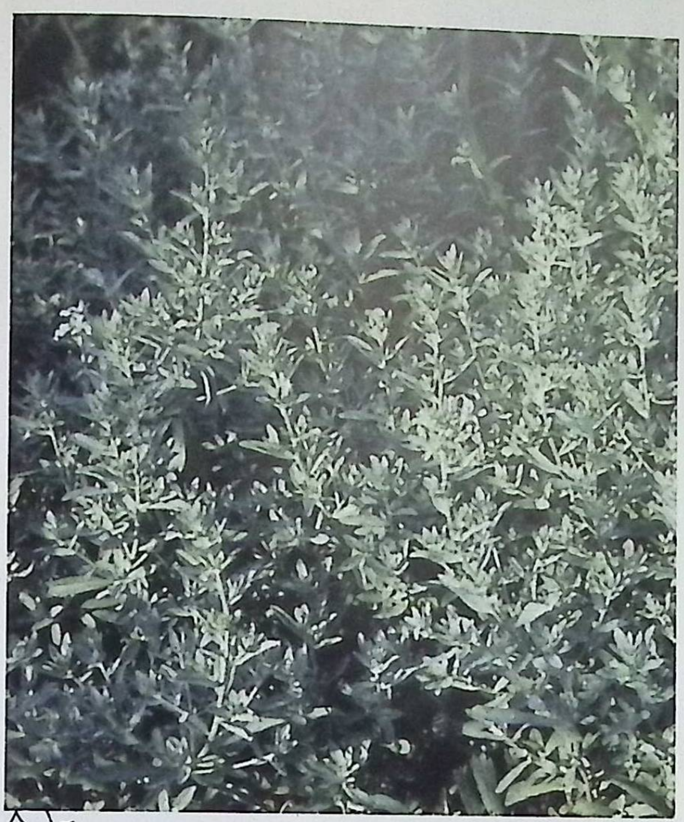

अभिलक्षण :- यह पर्वतीय पौधा भूरे वर्ण का, रेसों से आच्छादित तथा 25-70 से०मी० ऊँचा होता है। यह कम्पोजिटी (भृंगराज) कुल का पौधा है। पौधे का मूल मोटा होता है। यह द्विवार्षिकी पौधा है। इसका तना झुका हुआ तथा हलके भूरे रंग का होता है। ऊपरी हिस्सा बहुशाखीय होता है। फल पीताभ भूरा, 1 मि०मी० लम्बा होता है।

जैविक लक्षण :- हमारे देश में यह पौधा केवल कोपेतदाग में मिलता है।

प्राकृतिक उपलब्धि :- यह पौधा दुर्लभ पौधों में से नहीं है। चिकित्सा हेतु इसका पर्याप्त भण्डार है।

औषधीय कच्चा माल :- चिकित्सा हेतु इस पौधे के तृण का प्रयोग होता है। पुष्प आने के समय पौधे को इकट्ठा किया जाता है। कच्चे माल को अंधेरे स्थान में सुखाया जाता है। तैयार कच्चे माल को कागज के थैलियों में रखा जाता है। संग्रहण समय 1-2 साल का है।

रासायनिक संघटन :- पत्र तथा पुष्प में 0.21-0.4% आवश्यक तैल, 16% कपूर, 12-14% कैम्फीन, 7-12% पाइनिन, 18% बार्निओला, 25-5% बौर्निका प्रोनाटा, 1.5% फेनौल, कीटोन आदि पाये जाते हैं। तृण में एल्कलोइड्स, फ्लेवोनोइड्स तथा कोमेरीन्स होते हैं।

प्रयोग :- हिंदू चिकित्सा शास्त्र में इस पौधे का प्रयोग बल्य तथा ज्वरहर तत्व के रूप में किया जाता है।

कल्पना तथा प्रयोग :- पौधे के तृण के चूर्ण 1 चम्मच को 200 मि०ली० पानी में मिलायें। थोड़ी देर इंतजार कीजीये। छानकर दिन में तीन बार प्रतिदिन पियें।

आर्गुसिआ सिबिरिका
ARGUSIA SIBIRICA

अभिलक्षण :- आर्गुसिआ सिबिरिका की विश्व में तीन प्रजातियाँ, मध्य एशिया के देशों में तथा तुर्कमेनिस्तान में दो प्रजातियाँ मिलती हैं। आर्गुसिआ सिबिरिका द्विवार्षिकी पौधा है। 15-40 से०मी० ऊँचा है। तना विकसित होता है। कुछ शाखायें होती हैं और ये शाखायें छोटे रोम से आच्छादित होती हैं। आर्गुसिआ सिबिरिका के पत्र सिरा रहित तथा गोल चपटे स्वरूप के होते हैं। पौधे ज्यादातर प्रसृत, खिंचे हुए, भालाकार एवं चपटे पत्र वाले होते हैं।

पत्र 1-3 से०मी० लम्बे, धूसर वर्ण के तथा मोटे, छोटे रोम से आच्छादित होते हैं। पत्र कांड के ऊपर एक के पीछे एक लगते हैं और अग्र चिकने होते है।

पुष्प छोटे एक साथ इकट्ठे हुए तथा श्वेत अथवा पीताभ होते हैं। कली कीप के रूप में होती है, नोक सादे अंडाकार रूप में होता है। इसके फल दो घोंसला (पत्थर) वाले, अण्डाकार या गेन्द की तरह के 8-10 मी०मी० व्यास के होते हैं।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

जैविक लक्षण :- आर्गुसिआ सिबिरिका के रस्सी आकार के सीधे भूमितल सम मूल होते हैं। यह नम खारी भूमि पर रहना पसंद करता है तथा उसी पर उगता है। इसके अलावा इसको समुद्र के किनारे पर भी उगना अच्छा लगता हैं। आर्गुसिआ सिबिरिका के अप्रैल-जून में पुष्प लगते हैं तथा जून-अगस्त में फल लगते हैं।

विस्तार :- इसकी उत्पत्ति पूरा दशोनुस मरुद्यान, कैस्पियन सागर के रणवाले क्षेत्र, गरबोगाझ तथा तुर्कमेनिस्तान में होती है।

प्राकृतिक उपलब्धि :- चिकित्सकीय उद्देश्य के लिये पर्याप्त भण्डार होने से इसको कम पाये जाने वाले पौधों में नहीं रखा गया है।

औषधीय कच्चामाल :- औषधि के लिये पत्र तथा मूल का उपयोग होता है। पारंपरिक तरीकों से कच्चे माल को इकट्ठा किया जाता है तथा कागज अथवा कपड़े के थैलियों में संग्रहित कर 1-2 साल तक उपयोग में लाया जाता है।

रासायनिक संघटन :- पौधे में कार्बोहाइड्रेट्स तथा कार्बोहाइडेट्स के प्रकार यथा 5.81 प्रतिशत् शर्करा, पेक्टिन 6.5 प्रतिशत्, 0.93 प्रतिशत्, टुमेफोर्सिन 0-93% लिकोप्समिन होते हैं। आर्गुसिआ सिबिरिका के तृण में हाइड्रोकार्बोनेट संयोजन, आलकलोईड्स, कोमेरीन्स भी होते हैं। कुछ टैनिक तत्व जैसे कि सफ्रानाल, हेलिओट्रोपिन, कैराटोल तथा उत्पत् तैल भी होते हैं।

औषध के रूप में प्रयोग :- लोक चिकित्सा में कन्द, तृण तथा पुष्प का प्रयोग उदररोग तथा फुफ्फुस के रोगों में होता है। तिब्बती चिकित्सा में मसूरिका में इसका प्रयोग होता है।

कल्पना तथा औषध प्रयोग :- 1 लीटर चायदानी में 1 बड़ा चम्मच (15 ग्राम) पुष्प का फांट बनायें तथा किण्वन करें। तैयार प्रवाही को कपड़े से छानकर उसे 100 मि०ली० दिन में तीन बार लें।

एक छोटा चम्मच (5 ग्राम) कन्द को 1 गिलास पानी के साथ 10 मिनट के लिये उबालें। प्रवाही को कपड़े से छानकर उसमें से 1 बड़ा चम्मच दिन में तीन बार पियें।

आर्नेबिआ देकुम्बेन्स
ARNEBIA DECUMBENS

अभिलक्षण :- इस पौधे की विश्व में 25 प्रजातियाँ है। मध्य एशिया के देशों में 14 प्रजातियाँ तथा तुर्कमेनिस्तान में 4 प्रजातियाँ हैं। बुरैचनिक कुल का यह एक वार्षिक पौधा है। यह 5-30 से०मी० ऊँचा होता है। यह नोकदार, दीर्घाकार, 2.5 से०मी० लम्बा तथा 3-10 से०मी० चौड़ा होता है। पत्र के नीचे का हिस्सा चौड़ा तथा ऊपर का हिस्सा तेज धारदार होता है। पुष्प लगभग अवृन्त होते हैं। पुष्पविन्यास सादा बीजाणु पात्रयुक्त होता है। आभयन्तरदल चक्र लगभग नलिकाकार छेद युक्त, 10-15 से०मी० लम्बा होता है। फल काष्ठफल होता है।

पौधे में अप्रैल-मई में पुष्प लगते है तथा मई-जून में फल लगते हैं।

जैविक लक्षण :- यह एकवर्षीय पौधा है। यह एफेमेरा (ephemera) कुल का है। यह पर्वतों, पहाड़ियों, रेतीली-पत्थरीली जंगलों पर उगता है। इसको मरुस्थलों में भी उगना पसंद है।

विस्तार :- यह वनस्पति करकुम रज, उर्सुझ, रेपेलेक, उख्गारा, चरीगर्सुदा, युकाजी, एसेन्डेनलीक, केलटेशोर, एझर्याका, गरबोगाझ, तुर्कमेनबाशी, केलकुलुक, बोलशोई, बलखन, दक्षिण-पश्चिम कोपेतदाग्र तर्सकन्द,

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

मगत्यंगुली, शेबरगोटा, अस्यद, शाम्ली, गोकदेरे, बीटरप, गयेखेराबात तथा मेर्गेनोलेन्च में फैला हुआ है।

प्राकृतिक उपलब्धि :- औषधीय उद्देश्य के लिये इसका भण्डार पर्याप्त है इसलिये इसे कम मिलने वाले पौधों की सूची में समाविष्ट नहीं किया गया है।

औषधीय कच्चा माल :- औषधीय उद्देश्य के लिये मूल तथा तृण का प्रयोग होता है। मूल तथा तृण को खुली हवा में छाया में सुखाया जाता है। पौधे में जब पुष्प लगते हैं तब कच्चे माल को इकट्ठा किया जाता है। इन्हें कपड़े अथवा कागज़ की थैलियों में पैक किया जाता हैं। इनका संग्रहण छाया में करना चाहिये। इनका संग्रहण 2 साल तक तथा मूल का संग्रहण तीन साल तक किया जा सकता है।

रासायनिक संघटन :- तृण में आल्कलोइडस, कॉमेरीन तथा फ्लैवोनोइड्स होते हैं। मूल में स्टीगैस्टिरिन, स्टीरोइड्स, शिकोनिन, एसिटिसिकोनिन तथा नैफथोजुनोन होते हैं।

प्रयोग :- जीवाणु तथा फंगस के लिये तृण के बनाये हुए मिश्रण का प्रयोग होता है। तुर्कमेन लोक चिकित्सा में (बहर्ली, गोकदेपे, सेरदर तथा मगत्यंगुली एस्बाप में) रक्तातिसार तथा त्वचा की व्याधियों में इसका प्रयोग किया जाता है।

मूल का प्रयोग ऊनी कपड़े को लाल रंग में रंगने के लिये होता है। भेड़, बकरी, ऊँट आदि इसके तृण को खाते हैं। सजावट के फूलों के रूप में भी इसका प्रयोग होता है।

कल्पना तथा प्रयोग :- 1 बड़ा चम्मच (15 ग्राम) अच्छी तरह धोये कूटे हुए तृण को 200 मि०ली० पानी में 5-10 मिनट तक उबालें। कपड़े से छान लें। एक बड़ा चम्मच (15 ग्राम) मिश्रण को दिन में तीन बार भोजन के 20-30 मिनट पहले लें।

दो बड़ा चम्मच (30 ग्राम) तृण को 200 मि०ली० पानी में प्रवाही गाढ़ा होने तक उबालें। इसका प्रयोग त्वचा के विकारों तथा व्रण रोपण के लिये करें।

आर्तेमीसिआ बल्कानोरुम
ARTEMISIA BALCHANORUM
वर्मवुड WORMWOOD

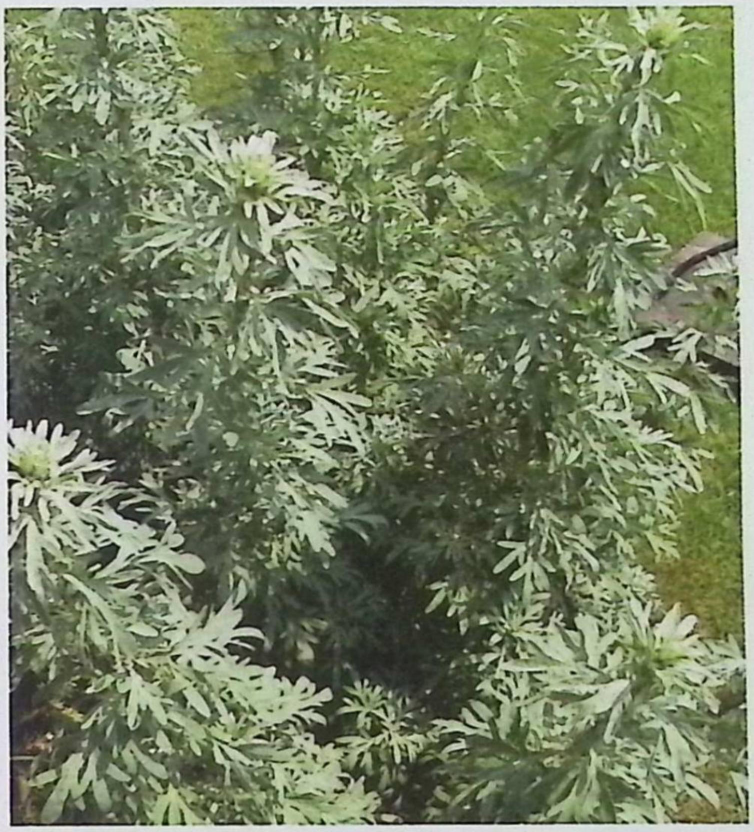

लक्षण :- यह औषध और मसाले में काम आने वाला कम ऊँचाई वाला छोटा पौधा है। स्वाभाविक परिस्थितियों में यह केवल तुर्कमेनिस्तान में ही उगता है। कोम्पोजिटी कुल का 40-80 से०मी० ऊँचाई वाला यह पौधा है। फल लगने वाले कांड बहुत अधिक संख्या में तथा सीधे होते हैं। प्रारम्भ में पत्र भूरे-श्वेत तथा रोमल होते हैं, जो बाद में हरे तथा लगभग रोम विहीन हो जाते हैं। पुष्पविन्यास दीर्घाकार, अण्डाकार 3-4 से०मी० लम्बा, पुष्प गुच्छ होता है। कांड के मध्य भाग के पत्र मोटे दिखते हैं। फल अण्डाकार तथा धूसर होता है।

जैविक लक्षण :- यह पौधा समुद्र तल से 400-1600 मीटर की ऊँचाई पर उगता है। यह बीज अथवा मूल द्वारा पैदा किया जाता है। 1000 बीजों का वजन 0.3 ग्राम होता है। पौधा 10-15 साल तक जिंदा रहता है। यह फरवरी एवं मार्च में विकसित होना शुरू करता है। कलियाँ जुलाई में आती हैं। नवम्बर में बीज पकते हैं। बीज में से अंकुर +10 से +12 सेंटीग्रेड तापमान पर आ सकते हैं।

यह पौधा किसी भी तरह की भूमि पर विकास कर सकता है। यह खारी तथा नमकीन जमीन पर भी उग सकता है। रोग तथा विनाशकारी कीट के प्रति भी यह प्रतिरोधी शक्ति रखता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

आर्तेमीसिआ आब्सिंतिउम
ARTEMISA ABSINTHIUM
कॉमन वम्वुड
COMMON WORMWOOD

वर्णन :- आर्तेमीसिआ आब्सिंतिउम कोम्पोसिते कुल का एक तीव्र आनुवंशिक सुगंध वाला द्विवार्षिकी पौधा है। कुछ लेखकों के मत से आर्तेमीसिआ आब्सिंतिउम का आनुवंशिक नाम प्राचीन यूनान से आया है। प्राचीन यूनान की देवी आर्तेमीस के नाम से इस पौधे का नाम दिया गया है। कुछ अन्य विद्वान यह मानते हैं कि लैटिन शब्द आर्तेमिस ''अपेय'' अथवा ''पीने लायक नहीं'' के नाम से आया है। कांड तृण-सदृश, आरोही, रेशमी-भूरा घने रोम युक्त तथा 60-125 से०मी० ऊँचा होता है। जड़ के पत्ते लम्बे डंठल वाले, त्रिकोणीय गोलाकार, त्रिपक्षवत् होते हैं। काण्ड पत्र बड़े आकार के त्रिकोणाकार तथा त्रिपक्षवत् है। पुष्प विन्यास गोलाकार होता है। मुण्डक झुका हुआ, लगभग 3 मी०मी० व्यास वाले तथा छोटे पत्तीदार एक ओर गुच्छे में जुड़े हुए रहते हैं। सभी पुष्प नलिकाकार, पीत तथा सूक्ष्म होते हैं। फल धूसर, लंबगोल होते हैं। चर्मफल लम्ब होते हैं। यह जून-अगस्त तक पुष्पित होता है।

जैविक लक्षण :- यह समुद्र तल से 800-1600 मीटर की ऊँचाई पर उगता है। पौधा दुष्काल, रोग तथा विनाशकारी कीट के प्रतिरोधी (resistant) है।

विस्तार :- यह पौधा बोलशोइ बलखान में उगता है। हाल में कुछ खोजकर्ताओं ने कोपेतदग के पर्वतों में इसको पाया है।

प्राकृतिक उपलब्धि :- औषध रूप में प्रयोग के लिये यह काफी मात्रा में संग्रहित है। यह हमारे देश के 1-8 मिलियन हेक्टयर में फैला है। इसकी अन्य जातियाँ मध्य एशिया के देशों(यूक्रेन,क्रिमिया,मोल्डोवा) में खेती की जाती है।

उत्पादन के लिये कच्चा माल :- जब पौधे को पुष्प आते हैं तब कच्चे माल को इकट्ठा किया जाता है। इसका ऊपरी हिस्सा (पुष्प के साथ 10-12 से०मी०) कैंची से काटकर कागज़ के थैलियों में इकट्ठा किया जाता है। तृण के ताजे हिस्सों को बरामदे में अथवा विशिष्ट स्थानों पर सुखाया जाता है। तृण का स्तर 30 से०मी० से ज्यादा मोटा नहीं होता है। सूखे माल को कागज़ के थैलों में पैक करके सूखे कमरों में रखना चाहिये। दो साल में तृण की उपज लगभग 10 टन की हो जाती है।

रासायनिक संघटन :- पौधे में 1.56 प्रतिशत इथरीअल तैल होता है। साथ ही इसमें सिट्रोल, लिथालौल, गेरानिऔल, 14% प्रोटीन, 5-8 % वसा, 3% सेल्युलोज, 35% अनाजोटिक सार तत्व तथा 510 मि.ग्रा. विटामिन सी भी मिलते हैं।

सीट्राल को इथेरीअल तैल से प्राप्त किया जाता है। यह वीटामिन ए के उत्पादन के लिये जरूरी है।

प्रयोग :- पौधे के इथेरीअल तैलों का प्रयोग इत्र एवं श्रृंगार के सामान तथा आहार उत्पादन में किया जाता है। इस के ताजे तृण से बनाये हुए मिश्रण का प्रयोग ज्वर तथा उच्च रक्तचाप में होता है। वृश्चिक तथा अन्य जंतु के दंश में भी इसका प्रयोग होता है। कीड़ों से कपड़ों की, विशेषतः ऊनी कपड़ों तथा कालीनों की सुरक्षा के लिये भी यह बहुत उपयोगी है।

इस के कच्चे माल का प्रयोग आहार उत्पादन में विविध तरह के मद्य बनाने के लिये, डिब्बा बंद खाद्य पदार्थ बनाने के लिये, मछली, पनीर तथा अन्य खाद्य पदार्थ बनाने के लिये किया जाता है। ये अच्छी खुशबू तथा स्वाद देता है। नींबू के स्वाद वाला वर्मवुड, प्रतिदिन की जिंदगी में मांस-मछली तथा सब्जियाँ तलने के लिये तथा चाय बनाने के लिये विशाल रूप में प्रयोग किया जाता है।

औषध निर्माण :- 5 ग्राम शुष्क पत्तों को 200 मि०ली० उबले पानी में डालकर 1-2 घण्टे रखें। तैयार मिश्रण को दिन में तीन बार लें।

एक चम्मच (15 ग्राम) सूखे पत्तों को 200 मि०ली० पानी में 5 से 10 मिनट तक उबालें तथा उसके बाद कपड़े से छान लें। एक चम्मच प्रवाही दिन में तीन बार लिया जाता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

बीज से इसका संवर्धन होता है। यह अपने जीवन के तीसरे साल में फल देता है। बीज की अंकुरित होन की अवधि दो साल तक की होती है।

प्राप्ति स्थान :-इसकी मध्य कोपेतदग के पर्वतों में इपायकला (बहर्ली क्षेत्र) तथा हेयराबात में विस्तृत रूप में खेती की जाती है।

प्राकृतिक उपलब्धि :- आर्तेमीसिआ आब्सिंतिउम तुर्कमेनिस्तान का तृणीय पौधा है। चिकित्सा के उद्देश्य से प्राकृतिक भण्डार पर्याप्त है। इसकी खेती की जाती है। इसकी उपज 20-25 टन प्रति हैक्टर है।

औषधीय कच्चा माल :- चिकित्सा उद्देश्य से तृण को इकट्ठा किया जाता है, विशिष्ट स्थिति में पत्ते काटे जाते हैं। पुष्प निकलने की शुरूआत में तृण को इकट्ठा किया जाता है। तृण एक टुकड़े में होता है। इसका पुष्पित अग्रिम हिस्सा होता है जो 25 से०मी० से ज्यादा लम्बा नहीं होता। हँसिया अथवा चाकू से पौधे के कांड के खुरदरे हिस्सों के अलावा पुष्पान्वित अग्रिम भाग को काटा जाता है। तृण में पौधे के ऊपरी भाग जिसमें बाकी के कांड का 15 से०मी० से ज्यादा लम्बा हिस्सा ना हो वह भाग लेते हैं। तृण तथा पत्रों को हवादार छत पर छाया में अथवा खुले में सुखाया जाता है। इनको कागज़ अथवा कपड़े पर पतले स्तर में फैलाया जाता है, ज्यादा पलटा नहीं जाता। शुष्क माल में नमी 13 प्रतिशत से ज्यादा नहीं होनी चाहिये।

पूरे कच्चे माल को बोरे अथवा थैलों में पैक किया जाता है। बोरों का वजन 50 किलोग्राम से ज्यादा नहीं होना चाहिये। थैलों का भार 25 किलोग्राम से ज्यादा नहीं होना चाहिये। समाप्ति अवधि 2 साल की होती है।

रासायनिक संघटन :- आर्तेमीसिआ आब्सिंतिउम में इथेरीयल तैल (absintol) होते है जिसमें युजोन, स्पिन्ट्स, पिन्न, कैडेनिन, फेलोन्ड्रिन तथा थुजोन का ईथर, एसिटिक एसीड, आइसोवेटेरिअेनिक तथा पाल्कि एसीड होते है। साथ ही, आर्तेमीसिआ आब्सिंतिउम के तृण में कड़वे ग्लायकोसाइड्स होते हैं। ये ऐवसिन्थिन, एनासिन्थिन, सक्सिनीक तथा मैलिक एसीड और टैनिन तत्व, विटामिन सी, कैरोटीन तथा फाइरोन्साइड्स है।

प्रयोग :- अपने समय के विख्यात वैज्ञानिक लुक्रेसीयस कार (98-55 बी०सी०) ओवीडीयस (43-17 बी०सी०) तथा प्लाइनी वरिष्ठ (23-79 बी०सी०) की कृतियों में आर्तेमीसिआ आब्सिंतिउम के चिकित्सकीय गुणों का पहला पहला उल्लेख मिलता है।

प्राचीन काल से ही आर्तेमीसिआ आब्सिंतिउम को जठराग्नि प्रदीप्त करने के लिये सर्वोत्तम औषधियों में से एक माना गया है। आर्तेमीसिआ आब्सिंतिउम से निर्मित हमाजुलेन "Hamazulen" का प्रयोग श्वास, गठिया, चर्मदल एवं जीर्णप्रतिश्याय की चिकित्सा में किया जाता है। यह व्याधि क्षमत्व बढ़ाने के लिये तथा अर्बुद में एवं क्ष-किरण से उत्पन्न दग्ध व्रण में स्थानीय प्रयोगार्थ प्रयुक्त किया जाता है।

अपनी शास्त्रीय पुस्तक ''कैनन आफ मेडिकल सायंस'' में मध्य युग के प्रख्यात वैज्ञानिक तथा चिकित्सक अबु अली इब्न सीना ने लिखा है, आर्तेमीसिआ आब्सिंतिउम चेहरे के वर्ण को सुन्दर बनाता है, आँखों के आसपास के कृष्ण मंडल को हटाता है तथा शरीर पर से गहरे धब्बों को हटाता है। इस का कांड, कर्णशूल के लिये प्रभावी है। पौधे का औषधीय मदिरा (tincture) आमाशय को बेहतर बनाता है। इसका प्रयोग यकृत्, आमाशय तथा वृक्क के विकारों में भी होता है।

लोक चिकित्सा में आर्तेमीसिआ आब्सिंतिउम विस्तृत रूप में प्रयुक्त होता है। 17वीं शताब्दी में व्रणरोपणार्थ इस के स्वरस को अच्छी औषध माना जाता था। अभी तक इसका प्रयोग पाण्डु तथा कृमिघ्न औषध के रूप में किया जाता है।

आमाशय के विकारों के लिये आर्तेमीसिआ आब्सिंतिउम के पत्रों का कषाय दिया जाता है। आस्य (असह)दुर्गंध को दूर करने के लिये इसके फाण्ट का प्रयोग किया जाता है। यह नाड़ी तन्त्र के विकारों में वेदनाशामक के रूप में, अनिद्रा, यकृत् तथा पित्ताशय की व्याधियों में, मस्तिष्कावरण शोथ, बच्चों में दंतशूल में तथा वयस्क व्यक्तियों में कृमि के लिये असरदायी है। मद्य विरोधी द्रव्य के रूप में भी इसका प्रयोग होता है।

कल्पना तथा प्रयोग :- एक गिलास (200 मि०ली) उबलते पानी में 2 बड़े चम्मच (30 ग्राम) पौधे का चूर्ण डालकर 5 घण्टे तक रखें। छान लें। एक गिलास (200 मि०ली०) दिन में तीन बार लें।

पौधे की ऊपर की शाखाओं के चूर्ण पर 0.5 (आधा) लीटर उबलता हुआ पानी डालकर 3 घण्टे रखें। छान लें। एक गिलास (200 मि०ली) दिन में तीन बार लें।

दो बड़े चम्मच (30 ग्राम) मूल के चूर्ण पर 0.5 लीटर श्वेतमद्य डालकर 10 मिनट उबालें। ठंडा होने के बाद छान लें। अगर इच्छा है तो मधु डाल सकते हैं। तीन छोटा चम्मच (45 ग्राम) भोजन के पूर्व लें।

दो बड़े चम्मच (30 ग्राम) मूल के चूर्ण पर 0.5 लीटर बिअर (beer) डालें। पाँच मिनट तक उबालें। चिरकालीन

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

अतिसार में ग्राही औषध के रूप में 3 बड़ा चम्मच (45 ग्राम) लें।

एक बड़ा चम्मच (15 ग्राम) इस के पत्र पर एक गिलास (200 मि०ली) उबला हुआ पानी डालें। उसको छान लें। तीन चम्मच चाय 10 दिन तक लें, सुबह खाली पेट और शाम को निद्रा के पूर्व। वयस्क तथा बच्चों के कृमि (ascarides) के लिये उपयोगी है। चाय के बाद आधा गिलास सलाखदार (चूर्णित) गाजर खायें।

इस का जलीय अर्क तथा रसोन के क्वाथ का प्रयोग कृमि निर्हरणार्थ किया जाता है। 1 गिलास प्रवाही, 1/3 भाग रसोन क्वाथ तथा 1-1.5 गिलास साधारण वर्मवुड के जलीय अर्क का बस्ति द्रव्य बनाया जाता है। कृमि के निर्हरण के लिये ऐसी बस्तियाँ कई दिन तक दी जाती हैं।

एक बड़ा चम्मच (15 ग्राम) इसके पत्ते तथा एक छोटा चम्मच (5 ग्राम) अजवायन के मिश्रण में एक गिलास (200 मि.ली.) पानी डालकर तामचीनी पात्र में 5 मिनट तक धीमी आँच पर उबालें। पश्चात् छान लें। इसमें से 0.5 गिलास (100 मि०ली) लें। पुराने मदात्यय के लिये इस नुस्खे का प्रयोग किया जाता है। लेकिन ज्यादा तथा लम्बे समय के लिये इसका प्रयोग न करें। इसे लम्बे समय तथा ज्यादा मात्रा में प्रयोग करने से भ्रम तथा आक्षेप होते हैं।

आर्तेमीसिआ आन्नुआ
ARTEMISIA ANNUA

अभिलक्षण :- यह 30-80 से०मी० ऊँचा वार्षिकी पौधा है। पौधे को योवसान् (Yowsan) कहते हैं। आर्तेमीसिआ आन्नुआ कम्प्रोजिटी कुल का है। पौधे का मूल संस्थान (root system) भूमि में 1 मीटर जाता है। कांड सीधा, धूसर-हरा तथा बहुशाखी होता है। इसके नीचे के तथा बीच वाले पत्र ठूँठ पर होते हैं और ऊपर के पत्र अवृन्त होते हैं। नीचे के पत्रों के धारा अण्डाकार (3-5 से०मी० लम्बे तथा 2-4 से०मी० चौड़े, एवं त्रिपक्षवत् होते है। पुं पुष्प गोलाकार(2-3 मी०मी० व्यास के) तथा पुष्पगुच्छ में इकट्ठे होते हैं। पार्श्व के पुष्प 15-20 स्त्रीकेशर युक्त, पतले अंकुर वाले तथा वर्णविहीन अग्र भाग वाले होते हैं। मध्य के पुष्प अधिक संख्या में (35 तक), पतले शंकु आकार के तथा चमकदार पीत अग्रभाग वाले होते हैं। फल की लम्बाई 1-1.3 मि०मी० अण्डाकार तथा बीज युक्त होता है।

उगने की विशिष्ठता :- यह पौधा समुद्रतल से 3000-1600 मीटर की ऊँचाई पर मिलता है। पौधे से वर्मवुड की विशिष्ट गंध आती है। पौधा दुष्काल तथा विनाशकारी कीट के प्रति प्रतिरोधक होता है। एक हजार बीज का वजन 0.5-0.6 ग्राम होता है। बीज का प्रजनन कार्य 15-20 साल तक रहता है। इसको नमी, गीले स्थान, पर्वतीय नदियों के किनारे, ऊँचाई वाली भूमि, तराई, बगीचे तथा पार्क पसंद है। मार्च-अप्रैल में अंकुर निकलते हैं। अगस्त में पुष्प तथा अक्तूबर-नवम्बर में फल लगते हैं। बीज द्वारा इसका प्रजनन होता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

प्राप्ति स्थान :- हमारे देश में आर्तेमीसिआ आन्नुआ दक्षिण-पूर्वीय कोपेतदाग में मगत्यम्गुली, पर्हे, ऐदेरे, सुंबर, गोकदेरे, युली गरंकी, अर्चबील, गीलगीलाव तथा पश्चिमी कोपेतदाग और कोयतेनदग में मिलता है।

प्राकृतिक उपलब्धि :- यह दुर्लभ पौधा नहीं है। चिकित्सकीय उद्देश्य के लिये पर्याप्त भण्डार है।

प्रयोज्य कच्चा माल :- औषधीय उद्देश्यार्थ आर्तेमीसिआ आन्नुआ के वसंत में आये पत्र तथा पतझड़ वाले पौधे का प्रयोग प्रयोज्यांग कच्चे माल के रूप में होता है। इकट्ठे किये कच्चे माल को ठंडे, हवादार कमरों में संग्रहित किया जाता है। तैयार किये हुए कच्चे माल को कागज़ के थैलों में रखा जाता है। इसे1-2 साल तक रखा जा सकता है।

रासायनिक संघटन :- पौधे के क्षुप में आर्टेमिजिन, आर्टिनुइन लीटोन्स, स्कोपोलिटिन काडमैन तथा 0.12-0.65 प्रतिशत आवश्यक तैल हाते है। आर्टेमीसीआ एन्युआ के क्षुप में फ्लेवोनोइड्स, फीनोलकार्बोकसीलिक एसिड, शर्करा, ओर्गेनिक एसिड्स, टेनीन्स, आलकलोईड्स, वीटामिन्स बी2, सी तथा के मिलते हैं।

प्रयोग :- आर्तेमीसिआ आन्नुआ के ताजे पत्र त्वक् रोगों (कंडू, हर्पीस आदि) की चिकित्सा के लिये पारम्परिक चिकित्सा शास्त्र में प्रयुक्त होते हैं। चर्मदल की चिकित्सा के लिये 10 प्रतिशत मल्हम (Ointment) बनाने के लिये शुष्क पत्रों का प्रयोग होता है। पौधे के क्षुप से बनाये हुए कल्क का प्रयोग जठराग्नि उत्तेजनार्थ होता है। त्वचा की शुष्कता तथा शीतपित्त (rashes of skin) की चिकित्सा के लिये आर्तेमीसिआ आन्नुआ के फांट का प्रयोग होता है।

पौधे का औषधीय अर्क ग्रन्थिवृद्धि की चिकित्सा में प्रयुक्त होता है। इसके प्रयोग से शरीर में किसी प्रकार की विकृति नहीं होती और यह जीवाणु तथा कोषाणु पर दुष्प्रभाव नहीं उत्पन्न करता है अत: भविष्य में इसका औषधीय उपयोग व्यापक स्तर पर हो सकेगा।

आर्तेमीसिआ आन्नुआ के आवश्यक तैलों का प्रयोग इत्र उद्योग में तथा साबुन बनाने के लिये होता है।

सुगंधयुक्त पत्रों का प्रयोग मसाले के रूप में होता है। पौधे के मूल के सार का प्रयोग रेशम तथा ऊन को पीला रंगने के लिये होता है।

मंगोलीयन चिकित्सा विज्ञान में पौधे के floscules तथा पत्रों का प्रयोग एन्थ्रेकस, चर्म विकार तथ उच्च (तीव्र) ज्वर के लिये होता है। तिब्बती चिकित्सा विज्ञान में चिकित्सार्थ पुष्पों का प्रयोग होता है। चाइनीस तथा भारतीय चिकित्सा विज्ञान में पौधे के herbs के कल्क का प्रयोग जठराग्नि प्रदीपनार्थ तथा पत्रों के sap का प्रयोग त्वक् रोगों की चिकित्सा के लिये एवं औषधीय क्वाथ तथा ointment बनाने के लिये होता है। भारतीय चिकित्सा विज्ञान में पौधे के herbs प्रयोग कामला के लिये तथा मूत्रल द्रव्य के रूप में होता है।

भैषज्य कल्पना तथा उपयोग :- 1 टी स्पून (5 ग्राम) ताजे पत्रों का sap दिन में तीन बार भोजन पूर्व लें। इस sap का Ointment के रूप में तथा प्रक्षालनार्थ प्रयोग होता है। औषधीय sap का प्रयोग कंडु, पूययुक्त विस्फोट तथा अन्य त्वक् रोगों में होता है।

शुष्क, बारीक काटे हुए 1 टेबलस्पून (15 ग्राम) पत्रों को 100 ग्राम सनफलावर बीज के तैल अथवा प्राणीज वसा में डालकर एक पात्र में मजबूत ढाँककर 10 दिन तक छोड़ दें। तत्पश्चात् छान लें। Ointment के रूप में प्रतिदिन इसका प्रयोग सुबह-शाम करें। इसका प्रयोग चर्मदल की चिकित्सा के लिये होता है।

एक टेबलस्पून पौधे को 1 ग्लास (200 मि०ली०) पानी में मिलाकर 10 मिनिट्स तक उबालें। तत्पश्चात् छानकर 1 टी स्पून (5 ग्राम) की मात्रा में भोजन पूर्व लें। इससे जठराग्नि प्रदीप्त होता है।

आर्तेमीसिआ चीनीफोर्मिस
ARTEMISIA CINIFORMIS

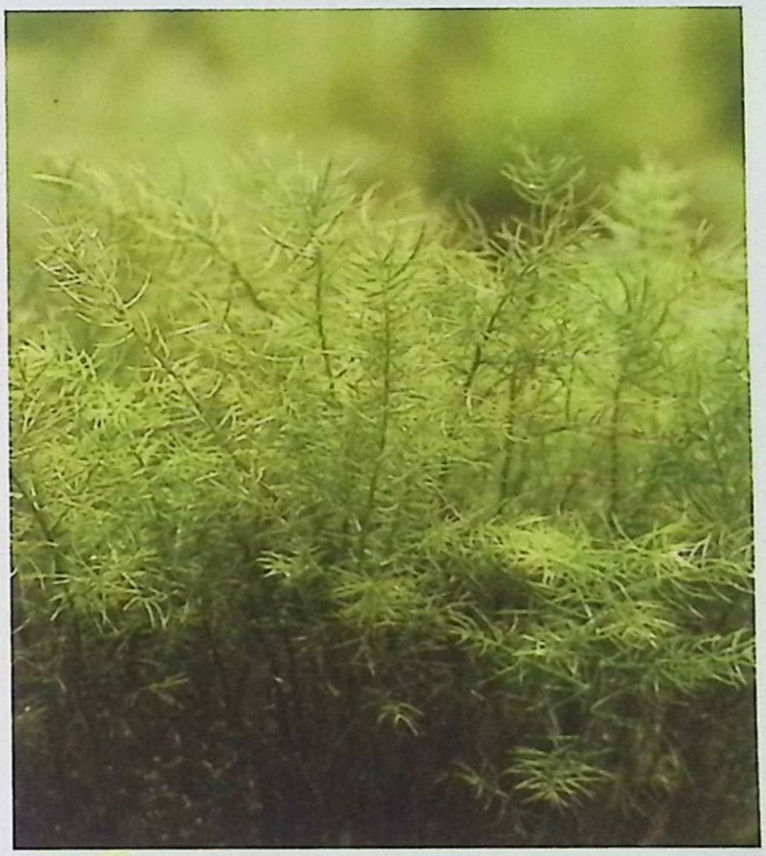

लक्षण :- ये छोटा अंश तक क्षुपीय प्रकार का कम्पोझीटी कुल का वॉर्मवुड है जिसके incrassate काष्ठमय अधिमूल होते हैं। वृन्त लगभग सादा द्विपक्षवत् विभाजित होते हैं। पतला, छोटा, कुछ अवनत शाखायुक्त होता है। anthodia वृन्त सहित अंडाकार, 3-4 से०मी० लम्बे तथा ढीला अवृन्त पुष्प विन्यास शाखाओं पर एकत्रित होते हैं। 4-5 पुष्प होते

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

है। फल लंबाकृति अंडाकार, मृदु, धूंसर भूरा या भूरे वर्ण के 0.8-1.6 मी०मी० लम्बे होते है।

उत्पत्ति स्थान :- पौधा समुद्र तल से 1200-2800 मीटर की ऊँचाई पर उगता है। यह मिट्टी वाली जमीन अथवा rubby ढलानों पर उगता है। 1000 बीज का वजन 0.2-0.3 ग्राम होता है। अक्तूबर में पुष्प तथा नवम्बर में फल लगते है। कीट रोधी है।

विस्तार :- आर्तेमीसिआ चीनीफोर्मिस कुरेनदय में तेमेन्देरे, दनीना, जीगीर्देक में, दक्षिण-पश्चिम कोपेतदग में कोनेकेसीर, पोर्देरे में, मध्य कोपेतदग में दुशाकेरेक, गोकदेरे, गेर्मप, मेर्गेनोलेन, सुलुकली, ताग्रोव, अर्वाझ, गरयाल्वी, असाखलमा, दगीज, हौदान में पूर्व कोपेतदग में गुर्यहोतदान में तथा बध्यझ में अकरचेश्मे, नारद्यवान्ली, गीझगादीक, प्यनटानचेश्मे, केर्लेक तथा पुलहट्यन में उगता है।

प्राकृतिक उपलब्धि :- पौधा हमारे देश के विरक्त पौधों में से नही है। चिकित्सकीय उद्देश्यार्थ इसके पर्याप्त भंडार है। विशेषत मध्य कोपेतदग में यह प्रचुर मात्रा में पाया जाता है। यहां प्रति हेक्टर प्रति वर्ष 9-10 टन इकट्ठा कर सकते है।

औषधिय उत्पाद :- औषध उद्योग में भूमि-उपरी हिस्से तथा पुष्प विन्यास का उत्पाद के रूप में प्रयोग होता है। उत्पाद को सामान्य पद्धति से इकट्ठा किया जाता है। इसको कागज़ की थैलियों में प्रकाश से दूर रखा जाता है। समाप्ति अवधि 1-2 साल की है।

रासायनिक संगठन :- पौधे में अधिक मात्रा में सेन्टोनीन्स (7%) तथा 0-3-2-7% आवश्यक तैल (सीनीओल, केम्फर, कांवक्रोल आदि सहित), फलेवोनोइड्स, कॉमेरीन तथा अन्य तत्व पाये जाते है।

प्रयोग :- प्राचीन तथा मध्य युग के वैज्ञानिक तथा विद्वान जयस्कोराइड, प्लाइनी, गालेन, झाखरीआ रोझी को इसके कृमिहर गुण के बारे में जानकारी थी।

तुर्कमेन राष्ट्रीय चिकित्सा विज्ञान में स्थानीय लोग आंत्रकृमि निर्हरणार्थ वॉर्मवुड चाय बनाने के लिये इसके विन्यास का प्रयोग करते हैं। इसका मलेरिया, टाइफस तथा आक्षेपक में भी प्रयोग करते है। तदुपरांत श्वासकष्टता, मलेरिया, ज्वर एवं ड्रोप्सी में तथा वृश्चिक एवं कीट दंश के लिये स्थानीय विद्वान वॉर्मवुड तैल तैयार करते है।

पारंपरिक चिकित्सा में आन्त्र कृमि के लिये वॉर्मवुड से निर्मित औषधियाँ सबसे अच्छी मानी जाती है। इस उद्देश्यार्थ इसके विन्यास का प्रयोग होता है। तमक श्वास, आमवात तथा चर्मदल की चिकित्सा के लिये इस पौधे से निर्मित Guayazulein का प्रयोग होता है।

कल्पना तथा उपयोग :- एक बोतल में 1 बड़ा चम्मच (15 ग्राम) विन्यास को 1 गिलास (200 मि०ली०) ओलीव अथवा बादाम के तेल में मिलाकर अच्छी तरह ढ़क्कन लगा दें। बार बार हिलाते रहें। तैयार औषध को 1 चम्मच(5ग्रा.) की मात्रा में दिन में तीन बार पीयें।

भेंड़ की पुच्छ के 1/2 गिलास तेल में 3 बड़े चम्मच (45 ग्राम) पौधे की मसी को मिलायें। दिन में दो बार सुबह-शाम लें।

आर्तेमीसिआ कोपेतदघेन्सीस (कोपेतदग सेजब्रस)
ARTEMISIA KOPETDAGHHENSIS (KOPETDAGH SAGEBRUSH)

लक्षण :- कोपेतदग के पश्चिमी भाग में यह पौधा अपने जीवनकाल के दरम्यान कई बार बीज देता है। आर्तेमीसीआ कोपेतदघेन्सीस कोम्पोसिते कुल का है। पौधे का शिखर श्वेत रोम युक्त होता है तथा बाकी का पौधा भूरा-हरा होता है। इसका मूल भूमि में गहरा जाता है। इसका नीचला हिस्सा काष्ठमय तथा मोटा एवं उपरी हिस्सा बहुवार्षिक मोटा काष्ठमय तथा फल रहित होता है।

यह धूंसर-भूरी त्वक से आच्छादित होता है। इसका फल रहित वृन्त सीधा तथा नग्न होता है। इसका वृन्त दण्डाकार होता है तथा इसके पत्ते जल्दी गिर जाते है। इनका निचला हिस्सा 1.5-2 से०मी० मोटा होता है। ये लम्बाकृति तथा

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

द्विपक्षवत् रूप में विभाजीत होता है। मध्य कांड के पत्ते पर कुछ कंटक होते हैं ये संयुक्त आकार के होते हैं। ऊपरी हिस्से में पत्र तथा पुष्प होते हैं तथा यह not acerate सादा, रेखांकित एवं दो पार्श्व वाला होता है। शाखायें प्राय: 4-7 से०मी० लम्बी होती है। गुच्छे शाखा रहित, ऊर्ध्वगामी, अण्डाकार 3-3.5 मी०मी० लम्बे तथा 4-5 पुष्पयुक्त होते है।

जीवनकाल की विशिष्टतायें :- पौधा समुद्रतल से 400-1600 मीटर की ऊँचाई पर उगता है। ये तराई में, पथरीले स्थानों में तथा नदी के कोनरों gorges में उगता है। कोपेतदग सेजब्रश में अगस्त से नवम्बर पुष्प तथा फल लगते हैं। बीज द्वारा प्रसार होता है।

उत्पत्ति स्थान :- कोपेतदग सेजब्रश कुरेनदश में, सोनुदग, तेमेन्देरे, दनीआंता, गारागोझ, इस्गेन्दर, दक्षिण-पचिम भी कोपेतदद्य में मारकाव तथा पूर्वीय कोपेतदद्य में गुर्चकोदान में मिलता है।

कुदरती गुण :- यह पौधा विरल पौधे के समूह का नहीं है। इसके भण्डार औषध की आवश्यकता के हिसाब से पर्याप्त है। ये ज्यादातर कुरेनदद्य तथा भागत्यंगुली में उगता है। दक्षिणी कोपेतदग में बाहर्ली से बामी तक ये प्राय: एक हेकटर में फैला हुआ है। उधर करीब 25 टन्स पौधे को इकट्ठा कर सकते हैं।

औषध आधार :- पौधे के ऊर्ध्व भाग की पुष्पित होने वाली शाखायें औषध प्रयोग में आधार बनती है। पौधे में जल पुष्प लगते है तब कैंची से 10-15 से०मी० लम्ब टुकड़े काटे जाते हैं । छत के नीचे सामान्य रूप से उनको सुखाया जाता है। इस तरह तैयार माल को कागज़ के थैलों में शुष्क, अंधेरे स्थानों में रखा जाता है। संग्रह समय 1-2 साल का है।

रासायनिक संघटन :- कोपेतदग संजब्रश में alant starch, colophony, तैल तथा अति आवश्यक तैल मिलते हैं। आवश्यक तैल में थुजा (thuja) तथा केटोन थुजा (Ketone thuja) एलकोरोल रहते हैं।

प्रयोग :- तुर्कमेन तथा पूर्वीय लोक चिकित्सा में प्राचीन काल से पौधे का औषध रूप में प्रयोग हो रहा है। प्रख्यात वैज्ञानिक एवं चिकित्सक मुहम्मद हुसैन की पुस्तक मेडिकल ट्रेजरी में इसका उल्लेख है। लेखक लिखता है, ये अंधत्व में कार्य करता है ये कफ नि:सारक तथा स्रावक है एवं कृमि को आंत्र से बाहर निकालता है।

तुर्कमेन लोक चिकित्सा में (मागत्यंगुली तथा बेरेकेट के पर्वतीय प्रदेशों में) इसके पौधे से निर्मित फांट तथा सीरप का प्रयोग हृद्रोग, आमवात में प्रयोग करते हैं। इसके अतिरिक्त इसका वामक औषध के रूप में भी प्रयोग होता है।

औषध कलपना तथा प्रयोग :- 1 बड़ा चम्मच (15 ग्राम) पौधे के चूर्ण को 200 मि०ली० उबले हुए पानी में मिलाकर थोड़ी देर तक छोड़ दें। छानकर इस तैयार औषध में से 1 बड़ा चम्मच दिन में तीन बार भोजन पूर्व लें। एक एनेमल पात्र में एक गिलास (200 मि०ली०) पानी में एक बड़ा चम्मच (15 ग्राम) पौधे को मिलाकर धीरे से 5-10 मिनिट तक उबालें। थोड़ी देर रखकर छान लें। एक चममच दिन में तीन बार भोजन के 20-30 मिनिट पूर्व लें।

शुष्क पौधे का चूर्ण दो बड़ा चम्मच (30 ग्राम) को एक गिलास (200 मि०ली) स्पीरीट में एक काँच बोतल में बंद करके अंधेरे स्थान में 15 दिन तक रखें। बीच-बीच में हिलाते रहें। तत्पश्चात् छानकर 10-15 बूंद दिन में तीन बार भोजन पूर्व लें।

अच्छी तरह शुष्क पौधे के चूर्ण को 100 मि०ली० ओलीव (जैतुन) तथा वानस्पतिक तैल में मिलाकर एक बोतल में बंद करके रखें। बीच बीच में हिलाते रहें। इस तरह तैयार औषध का स्वेदन के रूप में दिन में दो बार सुबह-शाम प्रयोग करें।

आर्तेमीसिआ लेउकोदेस
ARTEMISIA LEUCODES
सेज-ब्रश,वॉर्मवुड,मगवर्ट (SAGE-BRUSH, WORMWOOD,MUGWORT)

लक्षण :- आर्तेमीसिआ लेउकोदेस मरू प्रदेश का औषधिय पौधा है। यह वार्षिक अथवा द्विवार्षिक 30-60

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

(70 से०मी०) ऊँचा पौधा है। मोटे श्वेत रोम के कारण पौधा श्वेताभ होता है। इसी चिन्ह के कारण इसको आर्तेमीसिआ लेउकोदेस नाम दिया गया है। आर्तेमीसिआ लेउकोदेस कोम्पोसिते कुल का पौधा है। फल उगने वाली डालीयाँ एकाकी अथवा ऊपर जाने वाली सीधी शाखायुक्त होतीहै। पत्रफलक (3-7 से०मी० लम्बे, 2.15-4 से०मी० चौड़े) गोलाकार मूल तक त्रिपक्षवत् विभाजित तथा लंबे भालाकार होते हैं।

नीचली कांड के पत्र वृंतयुक्त तथा मध्य के पत्र अवृत होते है। पुष्प पीत वर्ण के तथा अंडाकार-दीर्घाकार, अवृंत आन्तोडिया (5-7 मी०मी० लम्बे) में संयुक्त होते हैं। चर्मफल अभिअंडाकार धूंसर भूरे होते हैं।

जैविक लक्षण :- पौधे ने रज-परिस्थितियों का अनुकूल बना लिया है। यह दुष्काल-तथा गर्मी प्रतिरोधी है। पौधे का प्रजनन बीजों से होता है। आर्तेमीसिआ लेउकोदेस

को अगस्त से अकतूबर तक पुष्प तथा फल लगते हैं।

उत्पत्ति स्थान :- इस प्रजाति का झौंगुझ काराकुम में विस्तृत फैलाव है। यह रेतीली,बालुकाश्म भूमि में उगता है।

प्राकृतिक उपलब्धि :- आर्तेमीसिआ लेउकोदेस (सॅज-ब्रश, वॉर्मवुड, मगवोर्ट) विरल पौधा नहीं है। औषधीय उद्देश्य के लिये प्राकृतिक भण्डार पर्याप्त है।

औषधीय कच्चा माल :- औषधिय उद्देश्य के लिये आर्तेमीसिआ लेउकोदेस के पौधे उपयुक्त होते है। पुष्पान्वित होने के समय कैंची से काटकर पौधें को इकट्ठा किया जाता है। कच्चे माल को छांव में अथवा हवादार कमरों में सुखाया जाता है। तैयार कच्चे माल को कागज़ के थैलों में अथवा काँच के पात्र में पैक किया जाता है। संग्रहण समय 1-2 साल तक का है।

रासायनिक संगटन :- पौधे में सेन्टोनीन (Santonin) तथा इथरीयल तैल रहते हैं। कर्पूर के सबसे अच्छे उत्पादों में से यह एक है। इसके अतिरिक्त पत्र, आन्तोडिया तथा चर्मफल मेंसेक्सवीतेर्पीन के लैक्टोन्स , कोमेरीन, फलेवोनोइड्स, गोंद तथा अन्य तत्व पाये जाते हैं।

प्रयोग :- लोक चिकित्सा में फुफ्फुसगत राजयक्ष्मा के उपचार के लिये आर्तेमीसिआ लेउकोदेस के फांट का प्रयोग करते हैं। यह रक्तस्तम्भक तथा कृमिघ्न के रूप में भी असरदायी है।

औषध कल्पना तथा प्रयोग :- बारीक कटे हुए सेज-ब्रश, वॉर्मवुड, मगवोर्ट के 1 टी स्पून (5 ग्राम) टुकड़ों में एक ग्लास (200 मि०ली०) उबलता हुआ पानी मिलाकर उसको ढांक दें। थोड़े समय के बाद छानकर तैयार क्वाथ का स्नानार्थ प्रयोग करें।

आर्तेमीसिआ संतोलिना
ARTEMISIA SANTOLINA

लक्षण :- यह पौधा इरान-तुरान से है। यह सुगंधित पौधा वॉर्मवुड अथवा लेमनी वॉर्मवुड से अच्छी तरह जाना जाता है।

वॉर्मवुड संतोलिना कम्पोजिटी कुल का पौधा है। यह 24-34 से०मी० ऊँचा होता है। पौधे के मूल मोटे होते हैं। इसका ऊपरी हिस्सा कड़ा छोटा तथा श्वेत टेड़े रेसों से आच्छादित होता है। ऊर्ध्व हिस्सा शाखायुक्त होता है। प्रकन्द तथा कांड का पत्रयुक्त अधोभाग छोटा एवं रोमश होता है। यह 1-7 से०मी० लम्बा होता है। पुष्पगुच्छ ढीले होते हैं। इसके पुष्पविन्यास 5 से०मी० तक लम्बे, अण्डाकार तथा रोमश अथवा रोमरहित होते हैं।

जैविक लक्षण :- इस प्रजाति को रेगिस्तान (मरू) में उगना पसंद है। इसका प्रजनन बीज द्वारा होता है। वॉर्मवुड दुष्काल तथा शीत-प्रतिरोधी है। पौधे को अगस्त तथा सितम्बर में पुष्प एवं फल लगते हैं।

उत्पत्ति स्थान :- यह पौधा काराकुम के रेतीले स्थान में तग्तादेवेझ में, मध्य काराकुम में बहर्ली-काझी, झेंगीत, जेढोल, यवलयम्यश, तुर्कमेनबाशी, नार्ट, गुबादश,

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

गरबोगाझ, तुवरगुर, चग्याल, चालसुव, श्यारज तथा पेलवेक में पाया जाता है।

प्राकृतिक उपलब्धि :- यह वॉर्मवुड विरल पौधा नहीं है। इसके भण्डार का प्रयोग चिकित्सार्थ किया जाता है।

औषधिय कच्चा माल :- पुष्प लगने के दरम्यान पौधे को इकट्ठा किया जाता है। इस पौधे के तृण का चिकित्सा में प्रयोग होता है। कच्चे माल को सुखाकर प्रकाश से दूर संग्रहित किया जाता है। संचयन समय एक साल का है।

रासायनिक संघटन :- इस पौधे में फलेवोनोईड्स, कोमेरीन्स, लेकटोन्स, अल्कलोईड्स तथा सेपोनीन्स मिलते हैं।

प्रयोग :- प्रख्यात तुर्कमेन चिकित्सा में पौधे के तृण से तैयार कषाय तथा टिंचर का कृमिघ्न औषध के रूप में प्रयोग होता है।

औषध कल्पना तथा प्रयोग :- एक तामचीनी पात्र में पौधे के बारीक कटे हुए एक बड़ा चम्मच (15 ग्राम) टुकड़े में एक गिलास (200 मि०ली०) पानी मिलाकर धीमी आंच पर उबालें। कपड़े से छान लें। तैयार कषाय को 1/2 गिलास की मात्रा में दिन में दो बार (सुबह-शाम) पीयें।

1 चम्मच (5 ग्राम) पौधे के बारीक कटे हुए टुकड़े में 200 मि०ली० पानी मिलाये। इससे दिन में तीन बार कवल करें। सुखोष्ण कषाय का प्रयोग किया जाता है।

आर्तेमीसिआ स्कोपारिआ
ARTEMISIA SCOPARIA

अभिलक्षण :- यह एकवर्षीय अथवा द्विवर्षीय 30-90 से०मी० ऊँचा पौधा है। इसका अन्य नाम सुवसेलीक (Suwselik) है।

आर्तेमीसिआ स्कोपारिआ कोम्पोसिते वंश का है। इसका मूल पतला तथा जमीन में सीधा (vertical) होता है। इसकी फलरहित शाखाएँ एक के बाद अथवा 2.5 सीधी उगती है। इनका पीताभ-भूरा अथवा रक्ताभ भूरा वर्ण होता है। मध्य में ये अधिक संख्या में शाखान्वित होती है। पौधे के नीचले हिस्से के पत्र को पादमूलवृन्त होते हैं। पत्र गोल अथवा अण्डाकार (2-4 से०मी० लम्बे तथा 3 से०मी० चौड़े) होते हैं। मध्य तथा ऊर्ध्व भाग के पत्र पादवृन्त के बिना तथा त्रिपक्षवत् विभाजित होते हैं।

पुष्प का गुच्छा एक चौडे पीरामीड सदृश होता है। यह 2.5 से०मी० लम्बा होता है। बाह्य दल अण्डाकार अथवा दीर्घ अण्डाकार होता है। पौधे के पार्श्व पुष्प से पतले वृंत वाले 6-8 बेर लगते हैं। मध्य हिस्से के पुष्प 10 की संख्या में थैले के रूप में होते हैं। इसका फल अण्डाकार पसलीयुक्त होता है तथा बीज भूरे होते हैं।

जीवन चक्र की विशिष्टतायें :- यह समुद्र तल से 400-1600 मीटर की ऊँचाई पर उगता है। पर्वत की तराई में खाई, रज, नमकीन ना हो ऐसी रेतीली जमीन में यह उगता है। बीज द्वारा इसका प्रजनन होता है। यह शुष्क

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

तथा प्रकाश वाले स्थानों में उगता है। 1000 बीज का वजन 0.15 ग्राम होता है। इसको अगस्त–नवम्बर में पुष्प तथा फल लगते हैं।

उत्पत्ति स्थान :– यह पौधा झौन्गुझ, पूर्वी, काराकुम में मध्य काराकुम में दक्षिण–पूर्वीय कोपेतदग्र में, हसर के उत्तरी भाग में, दशोगुझ प्रांत, कुरेन्दश, तेमेन्देरे, दनीएता, चुझीन्सुव, इस्गेन्दर, जीगीर्देक, दक्षिण–पश्चिम कोपेतदग्र, मागत्यंगुली, पार्हे, एयदेरे, सुम्बर, सैवन, देश्न, मध्य कोपेनदग्र, गींडीवर, गोकदेरे, केलेते, अर्बबील, हौडान, पूर्वीय कोपेतदग्र, शामलय, बध्यझ तथा गाराबील, कोपेतग की तराई में, मुर्गब, तेजेन, अमुदर्य के नजदीक तथा कोयेतेनदग में उगता है।

प्राकृतिक उपलब्धि :– यह पौधा विरल मिलने वाले पौधों में से नही हैं। औषधीय उद्देश्यार्थ इसका भण्डार पर्याप्त है। ये अधिकतर काराकुम तथा बध्यझ में उगता है। सॅजब्रश पेनीक्युलेट का हरित उत्पाद 8–10 टन हेकटर है।

औषध आधार :– आवश्यक तैल के लिये पौधे के तृण को मूल भाग (बेस) अथवा कच्चा माल के रूप में लिया जाता है। जब पुष्प लगते हैं तब पौधे इकट्ठे किये जाते हैं क्योंकि इस समय इसमें सार एकत्रित होता है। सॅजब्रश पेनीकयुलेट के ऊर्ध्व भाग के 10–15 से०मी० लम्बे टुकड़े काटे जाते हैं। इनको छत के नीचे सुखाये जाते हैं। तैयार मूल भाग को कागज की थैलियों में अंधेरे स्थानों में रखा जाता है। संचयन समय 1–2 साल का है।

रासायनिक संघटन :– ये खोज की गई हैं कि पौधे में करीब 20 तत्व मिलते हैं। इसमें टाईटेनीयम तथा हीलियम, जो कि विरल रासायनिक तत्व होते हैं कोलोफोनी में 4.35-5.60% मात्रा में (पुष्प में 7.91 प्रतिशत) मिलते हैं। सॅजब्रश पेनीकयुलेट के पुष्प तथा फल में कोमेरीन होता है। साथ ही सीट्रीक एसीड, मेलिक, वेलेरिअन तथा एसीटिक ओर्गेनिक एसीड्स 31.3 mg% वीटामिन सी, ए (तृण में 3.61–4.47 प्रतिशत) तथा मूल में 2.1–2.6 प्रतिशत मिलते हैं।

जब पुष्प लगते हैं तब उसमें 1 प्रतिशत सार रहता है।

प्रयोग :– तुर्कमेन लोक चिकित्सा में सॅजब्रश पेनीक्युलेट के ऊपरी हिस्सों से तैयार किये गये सीरप का प्रयोग वृक्क व्याधियों में तथा स्वेदल, मूत्रल, कृमिहर में होता है।

आन्तोडिया से बनाया हुआ सीरप एपीलेप्सी, आमवात, ज्वर, श्वसनसंस्थान के शोथ में प्रयुक्त होता है। इसके तृण की मसी का प्रयोग कफनिःसारक के रूप में होता है। औषध विज्ञान (Pharmacological) संबंधित वैज्ञानिक कार्य दर्शाते हैं कि पौधे के तृण से बना अर्क शूल में तथा मूत्रल औषध के रूप में अच्छा कार्य करता है।

आधुनिक चिकित्सा विज्ञान में आर्तेमिज़ोल नामक औषध में आवश्यक है तथा इसका प्रयोग विविध प्रकार की वृक्काश्मरी में होता है।

औषध कल्पना एवं प्रयोग :– पौधे के बारीक चूर्ण 1 चम्मच (5 ग्राम) को एक तामचीनी पात्र में एक गिलास (20 मि०लि०) पानी में मिलाकर धीमी आंच पर 10 मिनट तक उबालें। ठंडा होने पर छान लें। तैयार कषाय को दिन में तीन बार (15 ग्राम) मात्रा में लें।

चायदानी में एक बड़ा चम्मच (15 ग्राम) सॅजब्रश को 1 लीटर उबलते हुए पानी में मिलाकर थोडी देर के लिये रखें। तत्पश्चात् छानकर आधा गिलास (100 मि०ली०) दिन में तीन बार लें।

पौधे का चूर्ण 1–2 ग्राम की मात्रा में दिन में दो बार सुबह शाम लें। इसका अच्छे कफ निःसारक के रूप में प्रयोग होता है।

आरुम कोरोलकोविई
ARUM KOROLKOVII

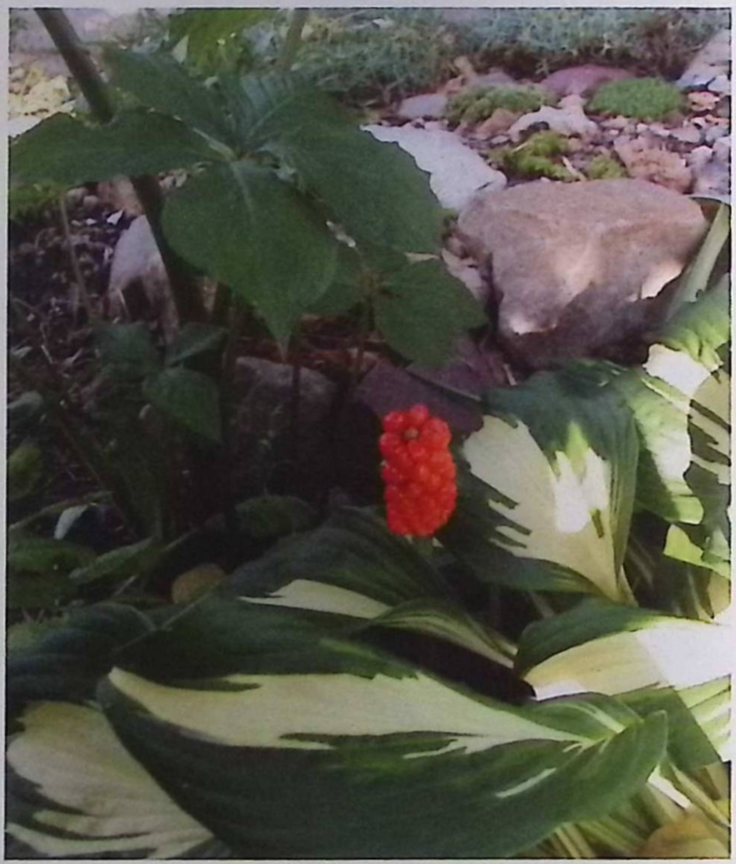

वर्णन :– आरुम कोरोलकोविई आश्चर्यजनक तथा नाजुक पौधों में से एक है। साल में एक बार इसको श्वेत बड़े पुष्प लगते हैं। पुष्प के मध्य में पुंकेसर आग जैसा दिखता है। फल हरा वर्ण का होता है तथा बाद में रक्त वर्ण का बन जाता है। वैज्ञानिक तथा शोधकर्ताओं ने पौधे के औषधीय तथा विषैले लक्षणों को स्वीकार किया है। पौधे को ''पेयकम्याप्राक'' के नाम से भी जाना जाता है। यह

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

अरोइदेए कुल का पौधा है यह 50-60 से०मी० ऊँचा होता है तथा बहुवर्षीय पौधा है। कांड का स्वरूप नलीकाकार होता है। पत्र बड़े तथा त्रिकोणाकार होते हैं। फल गोल तथा बहु बीजयुक्त होता है। पौधे को मई-जून में पुष्प तथा जून-जुलाई में फल लगते हैं।

जैविक लक्षण :- पौधे को नमी पसंद है तथा पेड़ो के नीचे खेतों में उगते हैं। अपने जीवनकाल के दरम्यान पौधा सभी आवश्यक तत्वों को कांड में इकट्ठा करता है।

विस्तार : तुर्कमेनिस्तान में आरुम कोरोलकोविई मध्य कोपेतदग में, गोकदेरे, अर्चबील, जुलगे, गारंकी, होवदान, गंर्तलयसुव, गोर्मप, केलेते, यापे, नोहुर, दक्षिण पश्चिमी कोपेतदग में देश्त, संयवन, कोजगाला, सुंत, एझरदत्र, पैकाल्ली योलदेरे, कोयतेनदग में केम्पीर्देपे में विशाल रूप में फैला हुआ है।

प्राकृतिक उपलब्धि :- यह विरल पौधा नहीं है। औषधीय कच्चे माल के लिये इसका भण्डार पर्याप्त है। प्रति वर्ष 5-8 टन्स इक्ट्ठा करना शक्य है। पौधा पश्चिम-पूर्वीय कोपेतदग में विशाल रूप में उगता है।

औषधीय कच्चा माल :- कांड का औषधीय कच्चे माल के रूप में प्रयोग होता है। यह वसंत की शुरूआत में अथव पतझड़ में इकट्ठा किया जाता है। सूखने के बाद इसका प्रयोग किया जाता है। कंद को काटकर लटकाकर सुखाया जाता है। ताजे कंद विषैले है। तैयार माल को कागज के थैलों में सुखाया जाता है। संचयन काल अवधि 2-3 साल की है।

रासायनिक संघटन :- पौधे में पोली सेकेराईड्स तथा कोमेरीन रहते हैं। फल में अत्यधिक स्टार्च तथा एल्कलोईड्स रहते हैं (ये विषैले होते हैं)।

प्रयोग :- प्रख्यात वैज्ञानिक ए० वेक्केरी, जी. राड्डेनी, डबल्यु लीपस्की, वाइ. चेर्नीकोव्सकाय तथा एन. एन्ड्रोसोव द्वारा इस पौधे के विस्तार तथा प्रयोग के बारे में प्रथम जानकारी लिखित में दी गई थी। इस पौधे से तैयार औषध व प्रतिश्याय, वृक्काश्मरी तथा पित्ताधिक्य में प्रयोग होता है।

एक बडा चम्मच शुष्क कंद को 200 मि०लि० पानी में मिलाकर 4 घण्टे तक रखें। छानकर सेवन करें।

आर्तेमीसिआ सेरोतिना
ARTEMISIA SEROTINA

अभिलक्षण :- यह पौधा राख जैसा भूरा, जंग वर्ण के सूक्ष्म रोमयुक्त होता है। इसका मूल कुण्ठित तथा लम्बाई में सीधा होता है। विभाजित होने वाली कई शाखाएं होती हैं, जो लम्बाई में सीधी बढ़ती हैं, नीचे का 1/3 हिस्सा शाखायुक्त (15-18 से०मी० लम्बा) होता है। नीचे के कांड के पत्र वृन्तसहित होते हैं। ये प्राय: 4-5 से०मी० लम्बे तथा बालों से ढके विभाजित होते हैं। पत्र धारदार अण्डाकार, पक्षवत्, रेखीय, 2-4 मि०मि० लम्बे, छोटे तथा चौड़े होते हैं। मध्य तथा ऊर्ध्व कांड के पत्र छोटे वृन्तसहित अथवा उसके बिना भी होते हैं, सामान्यत: इनका विभाजन कुछ जटिल होता है। ऊर्ध्व हिस्से के टहनियां सादे तथा रेखांकित होती हैं।

पुष्पविन्यास इतने विवर्धित और छोटे गुच्छे वाले नहीं होते हैं। मुण्डक वृन्त से आच्छादित नहीं होते, अण्डाकार, 3-4 मि०मी० लम्बे, खड़े सीधे होते हैं। कई मुण्डक छोटी शाखाओं पर पाये जाते हैं।

आर्तेमीसिआ सेरोतिना छोटे गुल्म है, जो 40-65 (80) से०मी० ऊँचा कोम्पोसिते कुल की विशिष्टता वाला है।

जैविक लक्षण :- पौधा समुद्रतल से 300-1600 मी० की ऊंचाई पर उगता है। यह मरु भूमि में उत्पन्न होता है, झाड़ियों के समूह में, निचली जमीन के खुले मैदानों में, रेतीले क्षेत्रों में तथा पानी की आवश्यकता हो ऐसे क्षेत्रों में,

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

ऊसर/बंजर भूमि में तथा चरने के लिये उपयुक्त जमीन में उगता है। बीज द्वारा इसका प्रजनन होता है। यह अगस्त तथा नवम्बर में पुष्प तथा फल देता है।

प्राकृतिक उत्पत्ति स्थान :- आर्तेमीसिआ सेरोतिना अधिक मात्रा में पूर्वीय काराकम, मध्य काराकम, दक्षिण-पूर्वीय काराकम, उत्तर-पूर्वीय काराकम दशोगुझ क्षेत्र – गुर्बानसोलटान इजे, कोन्युरगेन्च बीतेनदग, टजर समुद्र के इट्रेक-दक्षिणी समुद्र किनारों में, झेरीक में, बेकीबेन्ट, कुरेन्दग क्षेत्रों में, झीर्क, ओलम्यंगुश्लुक, दक्षिण-पश्चिमी कोपेतदग में मागत्युंगुली, सुम्बर, गरवुल, मध्य कोपेतदग में गोकदेरे, गाराजाख, चुली नारान्की, पूर्वीय कोपेतदग के पर्वतों में, गुर्यहोवदन, अखल, मुर्गब तथा हमारे देश के लेबप प्रान्तों में मिलता है।

प्राकृतिक उपलब्धि :- यह हमारे देश के दुर्लभ पौधों में से नहीं है। औषधीय उत्पाद के लिये भण्डार पर्याप्त है। कोपेतदग पर्वतों में यह विरल पौधा होने से खेती के लिये सलाह दी जाती है।

औषध उत्पाद :- आर्तेमीसिआ सेरोतिना का औषधीय उद्देश्यार्थ प्रयोग किया जाता है। जब पौधे हरे होते हैं तब उसके उपरी हिस्से को करीब 5–10 से०मी० लम्बाई में कैंची से काटे जाते हैं। इसको छांव में अथवा हवादार साफ कमरों में सुखाते हैं। तैयार कच्चे माल को कागज़ के थैलों में रखा जाता है। इसकी संचय करने की समय अवधि 1–2 साल की है।

रासायनिक संघटन :- पौधे के फल में फ्लेवोनोइड्स, कोमेरीन्स तथा लेक्टोन द्रव्य मिलते हैं।

प्रयोग :- आर्तेमीसिआ सेरोतिना से तैयार की गई औषधी का प्रयोग लोक चिकित्सा में मलेरिया तथा हृद्शूल (angina) की चिकित्सा के लिये किया जाता है। साथ ही, कुछ त्वक् विकारों में भी इसका प्रयोग किया जाता है।

औषध कल्पना तथा प्रयोग :- पौधे का चूर्ण एक चम्मच (15 ग्राम) लेकर उसमें एक कप (200 मि०ली०) उबला हुआ पानी मिलाकर तैयार होने तक रखिये। छानने के पश्चात् इससे दिन में तीन बार गंडूष करें।

आस्त्रागालुस स्कुआर्रोसुस
ASTRAGALUS SQUARROSUS

अभिलक्षण :- इसकी 3 प्रजातियाँ हमारे देश में उत्पन्न होती हैं। इनमें से दो काराकम के मरुस्थल में उगती हैं। इन सभी में औषधीय गुण होते हैं।

आस्त्रागालुस स्कुआर्रोसुस 40–70 से०मी० ऊँचा बहुवर्षीय औषधीय पौधा है। प्रतिवर्ष उसकी नई शाखायें निकलती हैं। यह 15–25 से०मी० लम्बी तथा मोटे रोम से आच्छादित होती है। पुष्प 2.3 से०मी० लम्बे तथा एक दूसरे से जुड़े हुए होते हैं। इसके पत्र की लम्बाई 1.5–7 से०मी०, तल में 2–3 जोड़ी, शिखर में दो लम्बाकार, अंदर की ओर मुड़े हुए तथा अण्डाकार होते हैं। फलियों की लम्बाई पत्र सदृश अथवा इससे कुछ ज्यादा लम्बी होती है। इसमें सूक्ष्म, दबी हुई (चपटी) श्वेत कलियाँ होती हैं। पुष्प रक्ताभ पीला होता है। फल अवृंत प्रायः 7 मि०मी० लम्बी फली होती है।

उत्पत्ति स्थान :- हमारे देश में समुद्र तल से 800–1200 मीटर की ऊँचाई पर यह उगता है। यह पर्वतीय प्रदेश में मिलता है। यह दानेदार मिट्टी वाली जगहों तथा ढलानों पर अच्छी तरह उगता है। यह मुख्यतः पर्वतीय प्रदेश में उगता है। इसको अप्रैल-मई में पुष्प आते हैं तथा मई-जून में फल लगते हैं। बीज से इसका प्रजनन होता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

जैविक लक्षण :- आस्त्रागालुस स्कुआर्रोसुस कुरेन्दग में, दनीएला, दक्षिण-पश्चिमी, गींदीवर, बाम्य, पूर्वीय कोपेतदग, बाबादुर्मझ, गावेर्स, बध्यझ, येरोयलान्दुझ, ताग्ताबझर, कोयतेनदग: खोजयजीलात, तथा कुगीतांदग में मिलता है।

प्राकृतिक उपलब्धि :- यह पौधा हमारे देश के दुर्लभ पौधों के समूह का नही हैं। इसका भण्डार औषधीय उद्देश्यार्थ पर्याप्त है। हमारे देश में प्रतिवर्ष 20-30 टन प्राप्त करने का मौका मिलता है, मुख्यत: दक्षिण-पश्चिमी कोपेतदग में।

औषधीय उत्पाद :- औषधीय उत्पाद के रूप में इसके पुष्प, फल तथा क्षुप का प्रयोग होता है। पुष्प लगने के समय (अप्रैल-मई) इसको इकट्ठा किया जाता है। इसको छाँव में सामान्य तरीके से सुखाकर तैयार किया जाता है। तैयार उत्पाद को कागज़ के बक्सों अथवा थैलों में रखा जाता है। संचय की अवधि 1-2 साल की है।

रासायनिक संघटन :- पौधे के रासायनिक संघटन का ज्ञान पूरी तरह नहीं हुआ है। क्षुप में ग्लायकोसाईड, स्टार्च, फ्लेवोनोईड, कुछ असूक्ष्म तथा सूक्ष्म तत्व, आर्गेनिक एसीड्स, पोलीसेकेराइड्स तथा नमी एवं रंजक पदार्थों का निर्धारण किया गया है।

प्रयोग :- आस्त्रागालुस स्कुआर्रोसुस का प्रयोग मलहम, फांट तथा चाय के रूप में तुर्कमेन राष्ट्रीय चिकित्सा (गोकदेपे, बाखर्ल, मागत्यंगुली एवं कुगीतांदग) में होता है। यह रक्तचाप को सामान्य बनाता है। नसों (चेतनातंतुओं) को शांत करता है सरल मूत्रप्रवृत्ति कराता है तथा मूत्रनलिका को साफ करता है। यह रक्तवह संस्थान की चिकित्सा करते समय तथा अन्य अवयवों की गांठ के लिये उपयुक्त है। फेफड़ों की व्याधियों की चिकित्सा करते समय भी इसका प्रयोग किया जाता है।

औषध कल्पना एवं प्रयोग :- एक फ्लास्क में अच्छी तरह सुखे हुए पुष्प एक चम्मच लेकर उसमें 1 लीटर उबला हुआ पानी मिलाकर कुछ घण्टों के लिये छोड़ दें। छानकर आधा गिलास चाय के रूप में दिन में तीन बार भोजन पूर्व पीयें। मलहम नसों को शांत करता है तथा रक्तचाप को सामान्य बनाता है।

अस्परागुस ओर्फ़्फिचिनालिस
ASPARAGUS OFFICINALIS

तुर्कमेनिस्तान में वन्य अस्परागुस ओर्फ़्फिचिनालिस दक्षिण-पश्चिमी तथा मध्य कोपेतदग में एवं बध्यक्ष में भी मिलता है।

अस्परागुस ओर्फ़्फिचिनालिस लिलिएसी कुल का 150 से०मी० ऊँचा बहुवर्षीय, क्षुपीय पौधा है। इसके नाटे प्रकन्द मजबूत तथा धागे जैसे असंख्य मूल युक्त होते हैं। कांड सीधा खड़ा, चिकना, पतला तथा अधिक विभाजित होता है। पत्र मुश्किल से दिखने वाले शल्कल जितने सूक्ष्म होते हैं तथा आधार के पास ये छोटे कंटकों से आच्छादित होते हैं। 1-3 से०मी० लम्बी छोटी शाखाओं के गुच्छे पत्र के आधार भाग से निकलते हैं, ये कार्बन डायोकसाईड को एकत्रित करके पत्र के रूप में कार्य करती हैं। इनको पर्णक स्तम्भ कहा जाता है। पुष्प सुन्दर, हरिताभ-पीत, झूलते हुए वृंत पर झुके हुए होते हैं। फल एक लाल, गोलादार, 6 बीज वाला बेर जैसा होता है। इसको मई-जुलाई में पुष्प लगते हैं।

प्रत्येक 5-6 साल पर अस्परागुस ओफ्फिचिनालिस के मूल सूख जाते हैं तथा उसके बाहरी किनारे पर नये मजबूत मूल निकल आते हैं। इसके ऊपर शाखा बनाने वाली कलियाँ होती हैं, जो साल दर साल निकलती रहती हैं। इस तरह प्रकन्द तथा मोटे मूल उगते हैं। पौधे की इस विशेषता को

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

ध्यान में रखते हुए जमीन में बोते समय गड्ढा गहरा किया जाता है तथा उसमें प्रतिवर्ष मिट्टी डाली जाती है।

अस्परागुस ओफ़िचिनालिस 15-20 साल तक जीवित रहता है, यह बर्फ प्रतिरोधी पौधा है तथा 25-30 डिग्री सेल्सियश सेंटीग्रेड पर भी मरता नहीं है। इसको प्रकाश की आवश्यकता होती है। इसको सूर्यप्रकाश मिले ऐसे खुले स्थानों में बोया जाता है। पौधे के सामान्य विकास के लिये उत्कृष्ट तापमान 20-25 डिग्री सैल्सियस सेण्टीग्रेड है।

अस्परागुस ओफ़िचिनालिस के बोने के बारे में अधिक जानकारी इस तरह है :

* बीज को बोने के 4-5 साल के बाद पौधा उगता है।
* पौधे का प्रजनन मुख्यतः प्रकन्द के टुकड़ों से होता है।
* बोने के लिये जून का पहला आधा समय अधिकतम अनुकूल समय है।
* बीज को जमीन में 3-4 इन्च की गहराई में बोया जाता है।
* अंकुर के विकास के बाद उनको तुरंत काट दिया जाता है, ताकि मूल अच्छी तरह बढ़ सके।
* द्विवर्षीय अंकुरण बोने के लिए सबसे ज्यादा उत्कृष्ट है।
* अंकुरण को बोने के तीन साल के बाद पौधे को इकट्ठा करने की सलाह दी जाती है।

पौधे के संपूर्ण विकास के लिये उसको मृदु जमीन की आवश्यकता होती है। चिकित्सा व्यवहार में पतझड़ अथवा वसन्त के प्रारम्भ में इकट्ठा किया हुए मूल तथा तरुण अंकुरवाले प्रकन्द का प्रयोग होता है।

प्रकन्द तथा मूल में नाइट्रोजन- युक्त तत्व एस्पर्जीन, ग्लायकोसाइड, कोनीफेरीन, सेपोनीन्स, कोमेरीन्स, इथरिअल तैल तथा केरोटीन मिलते हैं। तरुण अंकुर में वीटामिन्स सी, बी1, बी2 तथा पीपी होते हैं। क्षुप में एस्पर्जीन, सेपोनीन्स आदि होते हैं। फल में शर्करा, वसायुक्त तैल तथा असंख्य मात्रा में आल्कलोईड्स मिलते हैं।

अस्परागुस ओफ़िचिनालिस का वृक्क तथा हृदय विकारों पर औषधीय प्रभाव है। यह मूत्रल, रक्तवाहिनी विस्फारक तथा शामक (वेदनाहर) है।

लोक चिकित्सा में मूत्राशयशोथ, शोथ, आमवात, अपस्मार की चिकित्सा के लिये प्रयोग होता है। बलगेरियन लोकचिकित्सा में अस्परागुस ओफ़िचिनालिस के मूल का मूत्राश्मरी में प्रयोग करने की सलाह दी जाती है तथा फलों के फांट का लैंगिक नपुंसकता के लिये प्रयोग किया जाता है।

अस्परागुस पेर्सिचुस
ASPARAGUS PERSICUS

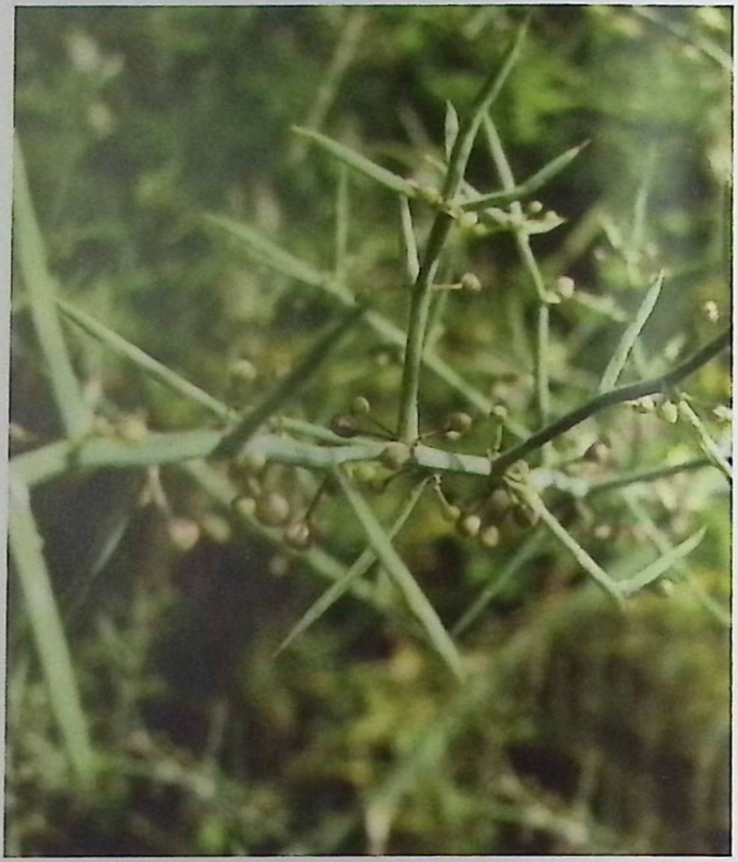

अभिलक्षण :- पूरे विश्व में इस आश्चर्यजनक पौधे की 300 प्रजातियाँ मिलती हैं, उनमें से 23 प्रजातियाँ मध्य एशिया के देशों में तथा 9 प्रजातियाँ तुर्कमेनिस्तान में पाई जाती हैं।

अस्परागुस पेर्सिचुस 50-100 से०मी० ऊँचा अस्परागुस पेर्सिचुस कुल का बहुवर्षीय पौधा है। कांड पतली शाखायुक्त होते हैं, शलक क्लोरोफिल रहित होते हैं। पुष्प सूक्ष्म तथा बेर लाल गोलाकार होते हैं।

उत्पत्ति स्थान :- हमारे देश में यह पौधा समुद्रतल से 400-800 मीटर की ऊँचाई पर उगता है। इसके पुष्प तथा फल अप्रैल-जून में आते हैं। यह पर्वतों पर कृषि लायक प्रदेश, रेतीले भू भाग, खाई, नमकीन स्थानों तथा नमकीन जमीन पर उगता है।

जैविक लक्षण :- अस्परागुस पेर्सिचुस बोलशोइ बालकन, सेकीदज, दक्षिण-पूर्वीय कोपेतदग, मध्य कोपेतदग, गेर्मप, हौदान, पश्चिम कोपेनदग, कोबेरगौक्की, शामलय, गुर्यहोब्दान, बध्यज्ञ, गीजगादीक, येरोयलांडुज, नार्डी, मुर्गब, अमुदर्या तथा दशोगझ के कृषीय प्रांतों में मिलता है।

प्राकृतिक उपलब्धि :- यह हमारे देश के दुर्लभ पौधों में से एक नहीं है। चिकित्सकीय उद्देश्यार्थ इसके पर्याप्त भण्डार है। इसकी खेती करने की सलाह भी दी जाती है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

औषध उत्पाद :- इसके मूल तथा तरुण कांड औषध उत्पाद के लिये प्रयुक्त किये जाते हैं। इसके मूल तथा कांड पतझड़ तथा शुरूआती बसंत में इकट्ठे किये जाते हैं। मूल को ठंडे पानी से धोकर छाँव में सुखाते हैं। तैयार माल को कागज़ के बक्सों में रखा जाता है। संचय की अवधि 2-3 साल की है। इसके तरुण कांड को केवल बसंत के प्रारम्भ में इकट्ठा किया जाता है।

रासायनिक संघटन :- पौधे में एस्पर्जेनियम, सेपोनीन, कोमरीन, आवश्यक तैल, वीटामिन सी, ऐलीकोन एसिड, कोनीफ्रीन के ग्लायकोसाईड्स मिलते हैं। इसके बेर में केस्पेन्टीन के कुछ आल्कलोइड्स शर्करा तथा तैल का निर्धारण किया जाता है।

प्रयोग :- बहुत शुरूआत के समय से ही अस्परागुस पेर्सिचुस को मूत्रप्रवृत्ति के लिये सर्वोत्तम माना गया है। राष्ट्रीय चिकित्सा में मूल के क्वाथ का प्रयोग मूत्राशय शोथ, रूमेटीझ्म, सकष्ट मूत्रप्रवृत्ति तथा हृद्रोग के लिए सर्वोत्तम औषध है। वर्तमान में पौधे के तरुण कांड का प्रयोग हृद्रोग में होता है।

पौधे के कांड को आहार में उपयुक्त माना गया है। सलाद बनाकर डिब्बाबंद पैक किया जाता है। इसका प्रयोग आहार बनाने में होता है। वायु निष्कासन के लिये प्राचीन समय से ही तुर्कमेन राष्ट्रीय चिकित्सा में इसका प्रयोग होता है। पौधे के कांड का प्रयोग आहार में होता है।

विधि :- एक गिलास गरम पानी में पौधे के अच्छी तरह सूखे हुए मूल तीन चम्मच मिलाकर 2 घण्टे तक रखें। छानकर इसमें से 1-2 चम्मच दिन में तीन बार प्रतिदिन पीयें।

अच्छी तरह सूखे हुए पौधे के मूल को काटकर सिगरेट के रूप में दिन में तीन बार धूम्रपान करें। यह हवा निकालने के लिये उपयोगी है।

आस्प्लेनिउम अवदिआंतुम-नीग्रुम
ASPLENIUM ADIANTUM-NIGRUM

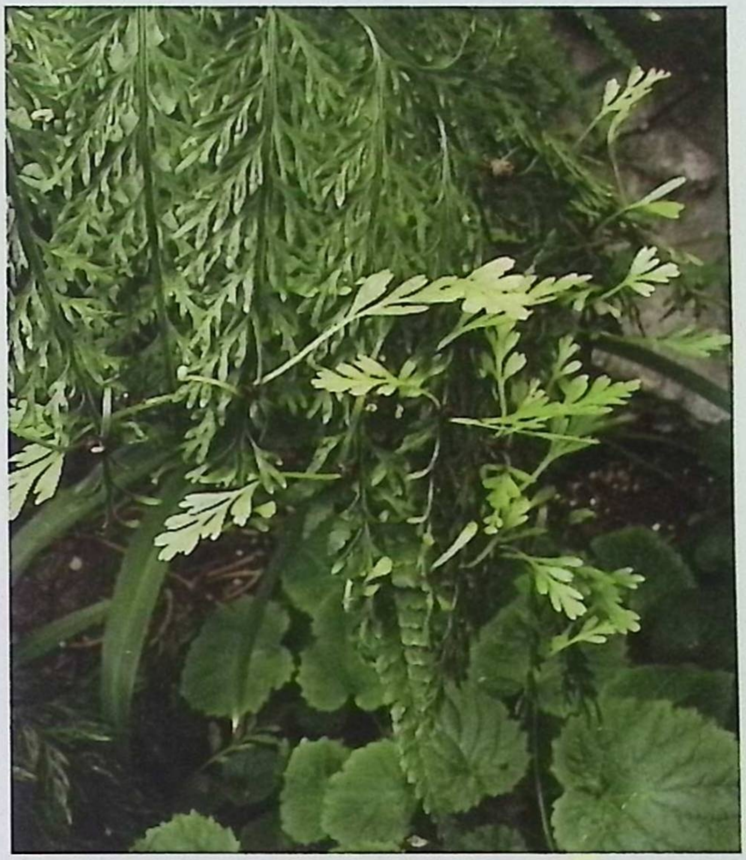

वर्णन :- आस्प्लेनिउम अवदिआंतुम-नीग्रुम दुर्लभ पौधा है। यह पौधा चारागाह में उगने की वजह से इसकी प्रजातियों की संख्या सीमित हो गई है। आस्प्लेनिउम अवदिआंतुम-नीग्रुम एक औषधीय पौधा है और सजावट में भी इसका उपयोग किया जा सकता है। आस्प्लेनिउम अवदिआंतुम-नीग्रुम बहुवर्षीय पौधों के कुल का प्रतिनिधि है। लम्बाई 10-20 से०मी० होती है।

पत्र तरंगित, अण्डाकार तथा चमकीले होते हैं। प्रथम कांड पर विभाग लम्बे तथा कभी-कभी सीधे होते हैं। ऊपरी कांड के विभाग तरंगित तथा पत्र के छोर दंतीले रहते हैं। पौधे के पत्र में गहरे भूरी चमकीली डोर होती हैं बीजाणु भूरे तथा पत्र के अधोभाग में होते हैं।

जैविक लक्षण :- समुद्रतल से 1200-1600 मीटर की ऊँचाई पर यह उगता है। यह पर्वतीय झरनों तथा उत्तरीय सरहद के पास उगता है। आस्प्लेनिउम अवदिआंतुम-नीग्रुम का प्रजनन बीजाणुओं के द्वारा होता है। पौधे को जून-अगस्त में पुष्प लगते हैं।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

विस्तार :– आस्प्लेनिउम अवदिआंतुम–नीग्रुम पूर्व तथा पश्चिमी कोपेतदग मेझेट्ली जंगल में उगता है। आस्प्लेनिउम अवदिआंतुम–नीग्रुम हमारे देश में केवल मेझेटली जंगल में उगता है।

पारिस्थिकी :– पौधा दुर्लभ मिलने वाला है। इस पौधे का कच्चा माल बहुत नगण्य है। 1999 से इसकी प्रजातियों की संख्या कम हुई है।

औषधीय कच्चा माल :– पत्र कच्चे माल के रूप में प्रयोग होता है। इसको इकट्ठा करने के बाद ठंडे स्थान पर सुखाया जाता है। तैयार कच्चे माल को कागज़ के थैलों में संचय किया जाता है। संचय समयावधि 1–2 साल की है।

रासायनिक संघटन :– आस्प्लेनिउम अवदिआंतुम–नीग्रुम का रासायनिक संघटन अच्छी तरह ज्ञात नहीं है। सूखे पौधे में फ्लेवोन्स, कड़वे ग्लायकोसाइड तथा सेपोनीन होते हैं। बीजाणु में स्टार्च, शर्करा तथा खनिज होते हैं।

प्रयोग :– लोक तथा वैज्ञानिक चिकित्सा में इसका प्रयोग इन्फ्लुएन्सा, कास में तथा मूत्रल के रूप में होता है। यह औषधीय पौधे का प्रयोग कामला तथा बन्ध्यत्व में भी होता है।

उपयोग विधि :– सूखे पौधे के 1 बड़ा चम्मच (15 ग्राम) को 200 मि॰ली॰ पानी में डालकर उबलने तक अग्नि पर रखें, फिर छान लें। इस तैयार क्वाथ का एक बड़ा चम्मच (15 ग्राम) दिन में तीन बार लें।

एक बड़ा चम्मच सूखे पौधे के टुकड़ो को 200 मि॰ली॰ पानी में 10–15 मिनट तक उबालकर छान लें, दो बड़े चम्मच दिन में तीन बार लें।

आस्प्लेनिउम रूता–मुरारिआ
ASPLENIUM RUTA-MURARIA

वर्णन :– दुनिया में 700 प्रजातियां, मध्य एशिया देशों में 23 प्रजातियां और तुर्कमेनिस्तान में 3 प्रजातियां मिलते हैं। यह पौधा आस्प्लेनिउम रूता–मुरारिआ कुल से संबंधित है, यह 5–10 (25) से॰मी॰ ऊँची है। यह भूमि समतल में फैलता है और नाटा प्रकंद है। इस पौधे के काण्ड तरंगित और गहरा धूसर वर्ण का होता है। पत्र द्वि या त्रि पक्षवत्, पत्रों की लम्बाई 3–15 से॰मी॰, उस पर मखमली हरा रंग होता है। पत्रों के धागे हरे, परन्तु शीर्ष भाग में गहरा हरा रंग होता है। पत्र त्रिकोणाकार और अंडाकार में होते हैं। पत्रों के पिछले भाग संग्रहित किया जाता है। पत्रों के अन्तभाग मकोडे जैसी जाल से आच्छादित होता है।

जैविक लक्षण :– यह पौधा समुद्र तल से 1800–2000 मीटर ऊँचाई पर पैदा होता है। यह नमी, नदी, घाटियों, पथरीले ढ़लानों, पथरीय दरारों और पर्वतों पर उगता है। यह बीजाणु द्वारा प्रजनन करता है। यह जून–अगस्त में फूल देता है।

विस्तार :– यह पौधा बोलशोई बालखन, देशिक्लिदाशाद, एशेक्योल्द, बाशमोर्गुद में, मध्य कोपेतदग: सांदिकिल्जाद जिनोलिवार्द, अर्चाबिल में, बुद्योनोवस्क, तुल्लिंशुशांगदें,

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

सरिहाज़ावद में, सेमन्सुर्द में, कोयतेनदग और खोजापिल में फैला रहता है।

प्राकृतिक उपलब्धि :- यह दुर्लभ पौधा है। जहां यह पैदा होता है वहां इसकी संख्या सीमित है और इस कारण कोपेतदग और कोयतेनदग प्राकृतिक अभयारण्य में यह संरक्षित किया जाता है।

औषधीय कच्चा माल :- औषधीय कार्य के लिए इसका घास और प्रकन्द प्रयोग होता है। कच्चा माल सुखाकर प्रयोग में लाया जाता है। तैयार कच्चा माल कागज के थैलों या पेटियों में रखा जाता है। संचयन करने की समय अवधि 2-3 साल है।

रासायनिक संघटन :- इस पौधे का रासायनिक संघटन का अध्ययन अभी तक हुआ नहीं है। पौधे के पत्रों में ग्लायकोसाईड्स, एल्कलोईड्स और विटामिन सी रहते हैं।

प्रयोग :- लोक चिकित्सा में यह पौधा गले के रोगों में, शिरःशूल, अपस्मार, शीताद में उपयोगी है।

प्रयोग विधि :- लोक चिकित्सा में मूत्रल के लिए, पीड़ा के लिए प्रयोग होता है। पश्चिम यूरोप और अमेरिका में इस पौधे का फांट केश प्रक्षालन के लिए प्रयोग होता है। इसका प्रकंद केशों के बल और पुनर्जीवन के लिए लगाया जाता है।

कल्पना और प्रयोग :- एक बड़ा चम्मच इस पौधे के सूखी घास एक गिलास (200 मि०ली०) पानी में डालकर मंद आंच पर 10 मिनट उबालें और छान लें। यह फांट को भोजन से पूर्व 3 बार पियें।

एक बड़ा चम्मच इस पौधे के सूखी प्रकंद एक गिलास उबलते पानी में डालकर छानें। आधा गिलास फांट को सवेरे और शाम पियें। यह फांट शोथ युक्त रोगों में उपयोगी है।

आस्प्लेनिउम त्रिकोमनेस
ASPLENIUM TRICHOMANES

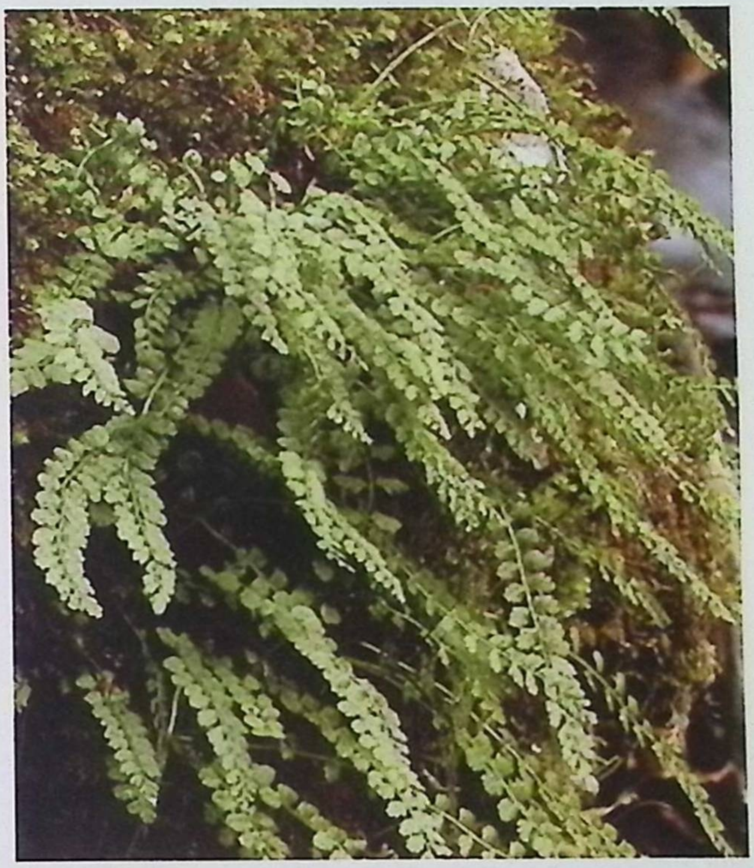

अभिलक्षण :- यह सबसे पुराने पौधों में से एक है। मध्य एशिया देशों में तीन प्रजातियाँ तथा तुर्कमेनिस्तान में केवल एक प्रजाति हमें मिलती है। आस्प्लेनिउम त्रिकोमनेस कुल के पौधों की ऊँचाई प्रायः 10-20 से०मी० होती है। इनके पत्र पक्षवत् विभाजित हैं। ये हलके वर्ण का तथा इसके तंतु गहरे लाल वर्ण के, लम्बे, पतले होते हैं।

जैविक लक्षण :- आस्प्लेनिउम त्रिकोमनेस समुद्रतल से 1800-2000 मीटर की ऊँचाई पर उगता है। यह ढलानों पर ऊंची चट्टानों की दरारों के बीच में तथा वृक्षों की छाया में उगता है। इसको मार्च, अप्रैल में कलियाँ लगती हैं। अप्रैल से अगस्त तक इसके बीजाणु आते हैं। इसके पत्र मौसम की मदद से प्रजनन करते हैं। ये बीजाणुओं (spores) द्वारा प्रजनन करते हैं।

विस्तार :- यह पौधा केवल मध्य कोपेतदग तथा एन्यायला में मिलता है। आजकल यह बुड्योनोव्सक पहाड़ियों पर सर्वोझपोक, सान्डीकलयझड तथा सेमान्सुर्द में भी देखने को मिलता है।

प्राकृतिक उपलब्धि :- यह दुर्लभ पौधा है तथा हमारे देश में इसके भण्डार कम हो गये हैं। तुर्कमेनिस्तान

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

में इसका समावेश लाल पुस्तक (1999) में किया गया है। इसका कोपेतदग प्राकृतिक अनुसंधान में संरक्षण किया जाता है। साल 2007 के रिकार्ड के अनुसार बुड्योनोटस्क पहाड़ियों के लगभग 100 मीटर क्षेत्र में आस्प्लेनिउम त्रिकोमनेस 4-5 मूल मिले थे। इसको उगाने की सलाह दी गई थी।

औषधीय कच्चा माल :- वनस्पति का पौधा औषध आवश्यकता के लिये कच्चा माल प्रदान करता है। इसको उखाड़कर छाँव में रखा जाना चाहिये अथवा सुखाकर ठंडे स्थान पर संचय किया जाना चाहिये। आस्प्लेनिउम त्रिकोमनेस को कागज़ के थैलों में रखकर सूर्यप्रकाश में रखना चाहिये। संचयन की समय अवधि 1-2 साल है।

रासायनिक संघटन :- आस्प्लेनिउम त्रिकोमनेस के घटक द्रव्य बहुत ही कम जाने गये है। इसमें मोकौस्टोनीक पाया गया है।

प्रयोग :- राष्ट्रीय चिकित्सा में मलेरिया की चिकित्सा में इस वनस्पति के पौधे का प्रयोग किया जाता है। तैयार प्रवाही तथा फांट का प्रयोग मूत्र विकारों तथा मूत्राशय की व्याधियों में होता है।

औषध कल्पना तथा प्रयोग :- आस्प्लेनिउम त्रिकोमनेस 15 ग्राम लें 200 मि०ली० उबले हुए पानी में डालकर थोडी देर रखें। तत्पश्चात् इस प्रवाही को छाना जाता है तथा आधा गिलास (100 मि०ली) प्रवाही दिन में तीन बार लिया जाता है।

एक तामचीनी पात्र में पौधा 1 चम्मच (15 ग्राम) को एक गिलास (200 मि०ली) पानी में मिलाकर 5-8 मिनट के लिये उबाला जाता है। तत्पश्चात् इस क्वाथ को छानकर आधा गिलास (100 मि०ली) दिन में तीन बार लिया जाता है।

आस्प्लेनिउम विरिदे
ASPLENIUM VIRIDAE

अभिलक्षण :- यह औषधीय सजावटी का पौधा है। यह उत्तर ध्रुवीय दुर्लभ प्रजाति है।

आस्प्लेनिउम विरिदे एस्प्लेनीयम कुल का 5-10 से०मी० ऊँचा बहुवर्षीय पौधा है। प्रकन्द घास से आच्छादित तथा पतले भूरे कला से चिपका हुआ है।

पत्र सीधे, भालाकार, एक पक्षवत्, पतले, हरे तथा वृन्तयुक्त होते हैं, तथा पत्र की धार मेंहदीवत् लाल होती है। समचतुर्भुजीय, अण्डाकार, मुख्य आकार कीलाकृति लगभग वृन्तयुक्त होते हैं। बीजाणुकोष भाजित होते हैं तथा विच्छेद के मध्य में स्थित होते हैं। बीजाणु भूरे होते हैं।

जैविक लक्षण :- यह पौधा समुद्र तल से 1600-2800 की ऊँचाई पर मुख्यत: चट्टानों की दरारों में तथा गीले गहरी घाटी में उगता है। इसका प्रजनन बीजाणुओं से होता है। बीजाणुजनन समय जून-जुलाई का है।

विस्तार :- तुर्कमेनिस्तान के क्षेत्र में यह पौधा कुगीतांग (खोजापीक्त तंगघाटी) में उगता है।

प्राकृतिक उपलब्धि :- यह हमारे देश के दुर्लभ वानस्पतिक पौधों में से एक है। चिकित्सा उद्देश्यार्थ इसके भण्डार नगण्य है। कुगीतांग राष्ट्रीय बाग में इसका संरक्षण किया जाता है। इसकी खेती करने की सलाह दी जाती है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

औषधीय कच्चा माल :- औषधीय कच्चे माल के रूप में पत्र इकट्ठे किये जाते हैं। इकट्ठा करना, सुखाना तथा कच्चे माल को तैयार करना सामान्य रूप से किया जाता है। इसको कागज़ के बक्सों में संचय किया जाना चाहिये। संचयन समय अवधि 1-2 साल की है।

रासायनिक संघटन :- पौधे के रासायनिक संघटन का अध्ययन पर्याप्त नहीं हुआ है। पौधे में फ्लोरोग्लुसिनोल, सायेनोजेनिक ग्लायकोसाइड्स तथा टैनिन मिलते हैं।

प्रयोग :- तुर्कमेन लोक चिकित्सा में (कुगीतांग के पर्वतीय गांवों में) आस्प्लेनिउम विरिदे के पत्र का व्रण रोपणार्थ तथा उसका क्वाथ पाचन संस्थान की विकृतियों के लिये प्रयुक्त किया जाता हैं। आघात तथा व्रण में पौधे के पत्र के चूर्ण का स्थानीय प्रयोग होता है। आमाशयिक व्रण तथा आमाशय शोथ में इसकी चाय पी जाती है।

कल्पना तथा प्रयोग :- आघातजन्य घाव तथा व्रण पर एक टेबलस्पून (15 ग्राम) पत्र के चूर्ण को दिन में दो बार (सुबह-शाम) लगायें।

एक टेबल स्पून (15 ग्राम) पौधे के चूर्ण में एक गिलास (200 मि०ली) उबलता हुआ पानी मिलाकर ऊष्मायुक्त स्थान पर 1-2 घण्टे के लिये रखें। छानकर दिन में तीन बार भोजन पूर्व सेवन करें।

आत्रिप्लेक्स तातारिका
ATRIPLEX TATARICA

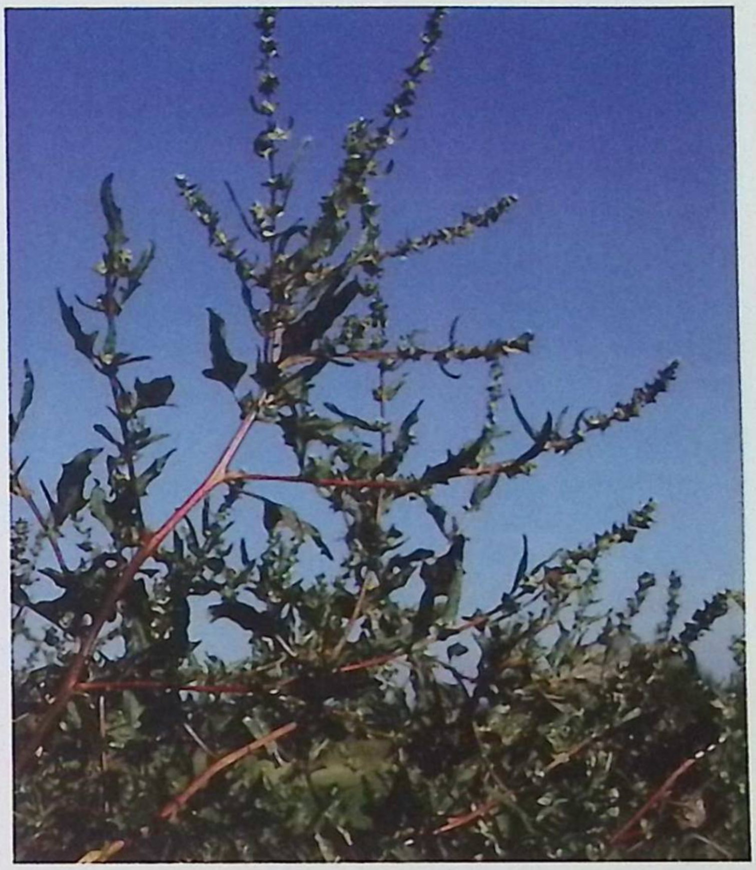

वर्णन :- आत्रिप्लेक्स तातारिका एक आहारीय तथा औषधीय अपतृण पौधा है। विश्व भर में इसकी 200 प्रजातियाँ है जिनमें मध्य एशिया एवं तुर्कमेनिस्तान की 40 प्रजातियां भी शामिल हैं।

आत्रिप्लेक्स तातारिका एक 10-150 से०मी० ऊँचा एकवर्षीय औषधीय पौधा है। पत्र भालाकार तथा मृदुरोम से आच्छादित होते हैं। पत्र अभिमुख होते हैं। पुष्प कोशिका-गुच्छ में होते हैं अवृन्त-काण्डज जैसे पुष्पविन्यास अथवा आंथेला बनाते हैं। अंडकोश युक्त पुष्प ज्यादातर बिना दलकोश के होते हैं। आत्रिप्लेक्स तातारिका में जुलाई से सितम्बर तक पुष्प एवं फल लगते हैं।

जैविक लक्षण :- आत्रिप्लेक्स तातारिका ऊष्मा पसंद करने वाला पौधा है। यह रेतीली भूमि पर उगता है। पौधे का प्रजनन बीज द्वारा होता है। एक पौधा 600 तक बीज देता है जो अंकुरित होने की शक्ति 3-4 साल तक बनाये रखते हैं।

विस्तार :- पूरे तुर्कमेनिस्तान में इस प्रजाति का व्यापक विस्तार है जैसे कि समतल मैदान, तराई, नमकीन भूमि, नदियों के मुखों में, चट्टानों की दरारों में, पथरीले ढलानों पर। पौधा एक घास-पात है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

प्राकृतिक उपलब्धि :- आत्रिप्लेक्स तातारिका हमारे देश में दुर्लभ पौधा नहीं है। औषधीय आवश्यकता के अनुसार इसकी उपलब्धि पर्याप्त है। प्रतिवर्ष 50-60 (100) टन औषधीय तथा आहारीय कच्चा माल इकट्ठा किया जाता है। केस्पियन समुद्र तटों पर इसकी पैदावार 100 टन प्रति हेक्टर की है। लेकिन समतल रेतीले स्थान पर 60-120 सी प्रति हेक्टर की पैदावार है। पौधा नमकीन भूमि पर अच्छी तरह उगता है।

औषधीय कच्चा माल :- आत्रिप्लेक्स तातारिका के बीज तथा पत्र औषधीय आवश्यकता के लिये इकट्ठे किये जाते हैं। पुष्प लगने की समाप्ति के समय पर उपज को इकट्ठा किया जाता है। पौधे का सूखे तथा ताजे स्वरूप में औषधीय तथा आहार के लिये प्रयोग किया जाता है। पारंपरिक तरीकों से इसे सुखाया जाता है।

रासायनिक संघटन :- सूखे पौधों में आल्कलोइड्स कोमेरीन्स, फ्लेवोनोईड्स (0.48-0.5 प्रतिशत) तथा ऑक्जेलिक एसिड मिलता है। बीज में सेपोनीन्स होते हैं।

पत्र तथा कांड में विटामिन्स तथा सूक्ष्म मौलिक तत्व (trace elements) होते हैं।

प्रयोग :- आत्रिप्लेक्स तातारिका के फांट तथा क्वाथ के बारे में प्रथम जानकारी डायोस्कोराइड (ई०पू० प्रथम शताब्दि) तथा प्लाइनी वरिष्ठ (ई०पू० 23-79) द्वारा अपने कार्य में दी गई है।

पाचनवह संस्थान की व्याधियों में आत्रिप्लेक्स तातारिका के फांट तथा क्वाथ का प्रयोग तुर्कमान लोक चिकित्सा में होता है। पौधे के विटामिन्स तथा (trace elements) अल्प तत्वों से समृद्ध तरुण पत्र से सलाद बनाया जाता है। मेरीनाड्स (marinades) तथा ओक्रोश्का (शीतल दही में कटी हुई सब्जियाँ, मांस तथा अंडो के साथ सूप) बनाने के लिये पौधों का प्रयोग किया जाता है। पालतू जानवर, घोड़े तथा ऊँट के लिये भी यह आहार (चारा) है।

बेर्बेरिस तुर्चोमानिचा
BERBERIS TURCOMANICA

लक्षण :- विश्व भर में उस वनस्पति की प्राय: 500 प्रजातियाँ हैं। इसमें मध्य एशिया की 16 प्रजातियाँ तथा तुर्कमेनिस्तान की 3 प्रजातियाँ शामिल हैं।

पौधा ज़िर्क कुल की वनस्पतियों का प्रतिनिधि है। शंकुधारी की लम्बाई 2-4 मीटर होती है। उसको कई शाखायें होती हैं। जमीन के अंदर इसका मूल शाखायुक्त होता है। कांड भूमि के समानान्तर फैलता है तथा मुख्य मूल इससे निकलता है। वर्ण पीला या नींबूवत् होता है। एक मूल से कई सारे कांड निकलते हैं जो लम्बाई में वृद्धि करते हैं। कांटे की लम्बाई प्राय: 2 से०मी० होती है। पत्र गुच्छे में उगते हैं। ज्यादातर ये सादे होते हैं लेकिन कभी-कभी दन्तुर होते हैं। पुष्प के गुच्छे छोटे तथा पीत वर्ण के होते हैं। छ: कलियां, छ: अन्त: पुष्पदल, छ: केसर के साथ एक बाह्य दल रहते हैं। पुष्प निर्यास तथा काफी शहदयुक्त होते हैं। फल में 2-3 बीज होते हैं जो नीले अथवा काले होते हैं।

जीवनचक्र की विशिष्टता :- हमारे देश में यह शंकु समुद्रतल से 400-2800 मी० की ऊँचाई पर (निचले पर्वतों से लेकर ऊँचाई तक) उगता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

पौधें को प्रकाश पसंद है, संपूर्णतः विकास करता है तथा छाँव में तथा पर्वतीय झरनों के किनारों पर बहुत बगीचे बनाता है। यह अप्रैल से सितम्बर तक पुष्प तथा फल देता है।

इसकी हरियाली गुल्म हमारे देश में बोलशोइ बालखन में, अर्लन, बारामोन्गुर, कुरेन्दग में, दनीएला, ग्याइयलचेरमे, दक्षिण-पश्चिम कोपेतदघ में, चेंडीर नदि के किनारों पर, सुंट, ऐदेरे, योलदेरे, गारागदे कोनेकेसीर, मध्य कोपेतदघ में अस्यलमा, बाबासाव, दग्यश, दशनोय,अर्चबील, चोपानदग, मुसुन्यु, दुशाकेरेकदग, ताग्रोव, अर्वाझा, हौदान, गेर्मप, दोग्रीदेरे, झुपी, लयुजे, मेर्गेनोलेन, देगीरमेन्ली, सर्यमसाकली, युलय बकजा, गोकदेरे, यायलक, पूर्वीय कोपेतदघ में गुर्यहोवदान, बध्यझ में येरोयलान्दुझ तथा कोयतेनदघ में फैली हुई है।

प्राकृतिक संसाधन :- हमारे देश में पौधों की विरल प्रजातियों में barberry (बर्बेरी) नहीं है। औषधीय आवश्यकता के लिये इसके भण्डार पर्याप्त है। हमारी गिनती (2006-2008 ए. अकम्यारादोव, जी. गुर्बानमाम्मेदोवा) के आधार पर हम कह सकते है कि बर्बेसी जंगल मध्य कोपेतदग में सुलुकली देगी रमेन्ली प्रांत में 3-3.5 हैक्टर (1600-2000 वृक्ष) जमीन पर तथा 1-1.5 हैक्टर (800-1000 वृक्ष) जमीन पर किसी तथा उली बकजा प्रांत में फैला हुआ है। सुलकुली-देगीरमेन्ली क्षेत्र के वृक्ष 1600 किलोग्राम पत्र कच्चे माल के रूप में उत्पन्न करता है तथा 3-5 टन्स फल इकटठे किये जाते है। किरवी तथा उलय बकजा में यह अंक 500-750 किलोग्राम तथा 1.5-2 टन्स क्रमशः है।

औषधीय कच्चा माल :- पौधे के पत्र, मूल तथा फल का प्रयोग होता है। इस पौधे से औषध निर्माण बहुत अलग तरह से होता है। शुरूआती बसंत में जब कलियां लगी नही होती है अथवा पतझड़ में जब फल पके हो तब पौधे के मूल से बालसम बनाने की सलाह दी जाती है। मूल को हाथ से अथवा यंत्रों से निकाला जाता है। सभी टुकड़े, छोटे टुकड़ों सहित निकाले जाते हैं।

जब मूल निकाले जाते है तब प्रति 10 वर्ग मीटर में एक मूल छोड़ दिया जाता है। क्योंकि हरियाली के भूमिगत हिस्से अच्छी तरह वृद्धि नहीं कर सकते इसलिये एक पौधा उखाड़ने के स्थान पर नया पौधा लगाया जाता है तथा उसी स्थान से नई फसल पाने के लिये 5-10 साल का समय निकालना पड़ता है। जो मूल निकाले गये है उनको धोना नहीं चाहिये क्योंकि मूल में मिलने वाला बर्बेरी एल्कलोइड आसानी से पानी में घुलता है। पौधे के मूल को 10-20 से०मी० लम्बे टुकड़ों में काटा जाना है। इनकी चौड़ाई प्रायः 6 से०मी० होनी चाहिये। कच्चे माल को हवादार कमरे में प्राकृतिक रूप से सुखाना चाहिये।

पौधे के पत्रों को मध्य मई से मध्य जून तक इकट्ठे करने चाहिये। ताजे पत्र भी खाने लायक हैं, ये खट्टी भाजी को बदल देते हैं। औषधीय पत्र पौधे में जब पुष्प लगते हैं तब इकट्ठे किये जाते हैं तथा छाँव में सुखाये जाते हैं। इससे इनके वर्ण, गंध तथा स्वाद बने रहते हैं। 90 प्रतिशत पत्र नुकसान रहित तथा उनका वर्ण गहरा हरा होना चाहिये। नमी 14 प्रतिशत से ज्यादा नहीं होनी चाहिये। इन नियमों का पालन करने से अंतःराष्ट्रीय मानक का पालन हो जायेगा। संचय समय अवधि 2-3 साल की है।

पौधे के बिनमौसमी फल विषैले होते हैं। इसलिये फलों को सितम्बर-अक्टूबर में जब वे पके होते हैं तब इकट्ठे किये जाते हैं। ऐसा माना जाता है कि सुबह का शुरूआत का समय फल संग्रह करने के लिये सर्वोत्तम है। फल को छाँव में सुखाना चाहिये। जब पतझड़ की सर्दीयाँ आती है तब वे ज्यादा मधुर बन जाते हैं। जब फल अच्छी तरह सूख जाते हैं तब 20-30 किलोग्राम के बोरियों में भरकर विशिष्ट कमरों में अलमारियों पर रखें जाते हैं। संचय समय अवधि 3 साल की है।

झाड़ी की त्वक् को अप्रैल-मई में निकालकर प्राकृतिक रूप से छाँव में सुखाई जाती है।

रासायनिक संघटन :- पौधे के रासायनिक संघटन बहुल आश्चर्यजनक है। हाँलाकि अभी तक उसका अध्ययन पर्याप्त रूप से नहीं हुआ है। इसके संघटन में बर्बेरीन (18 प्रतिशत) पामेटीन, कोलम्ब्बेमीन, एपल, लेमन, एलकोहल एसीड, शर्करा, विटामिन सी तथा ई एवं कैरोटीन है।

प्रयोग :- बेबीलोन तथा भारत में बार्बेरी के औषधीय गुणों की जानकारी प्राचीन समय से है। असीरीयन इ०पू० 650 राजा अशुरबनीपाल के पुस्तकालय में मिट्टी के फलक में बार्बेरी के औषधीय गुणों का वर्णन लिखा है।

सुविख्यात मध्ययुगीय वैज्ञानिक तथा डाक्टर अबु अली इब्न सिना ने खोज की थी कि इस पौधे से यकृत् एवं आमाशय की व्याधियों की चिकित्सा होती है, यह पित्त का उत्पादन करवाता है तथा इससे बनी औषध से रक्तस्राव बंद होता है।

तुर्कमेन लोग (मगत्यंगुली, बहलर्य तथा कोयतेनग प्रांत में) इस पौधे का प्रयोग हृदयगति को ठीक करने के लिये तथा रक्तचाप को कम करने के लिये, वृक्क के तथा पित्तजन्य व्याधियों में, शरीर जब औषधग्रस्त हो गया हो तब रक्त के शोधन के लिये तथा गर्भाशय की अन्तर्कला शोथ की चिकित्सा के लिये करते थे।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

पौधे का फल तृषा की शांति करता है, अग्नि को बढाता है तथा मन को शांत करता है। यह हृदय की मांसपेशियों को मजबूत बनाता है, अधिक पित्त का उत्पादन करवाता है, शरीर में गर्मी कम करता है तथा रक्त संबरण में सुधार लाता है। यह अतिसार तथा अर्श में भी बहुत उपयोगी है। इसका प्रयोग पित्त एवं मूत्र के उत्पादन के लिये होता है।

पत्र का उपयोग चाय के प्रतिनिधि के रूप में होता है। चीन, जापान तथा तिब्बत में मूल से बने हुए पानक का प्रयोग राजयक्ष्मा की चिकित्सा के लिये तथा मूत्रल औषध के रूप में होता है। फार्मास्यूटीकल में बार्बेरीन बायसल्फर प्राप्त किया जाता है। इसका प्रयोग पित्ताशयशोथ, यकृतशोथ तथा यकृत्पित्ताशय शोथ की चिकित्सा के लिये होता है। पत्र से बना 20 प्रतिशत पानक का प्रयोग गर्भाशयिक रक्तस्राव की चिकित्सा के लिये तथा 5 प्रतिशत पानक का प्रयोग यकृत् व्याधियों के लिये होता है।

जब शरीर औषध के विषाक्त लक्षणों से ग्रस्त हो जाता है तब मसूड़े की सूजन तथा चर्म व्याधियों के लिये पौधे के त्वक् तथा मूल का प्रयोग किया जाता है। यकृत् तथा वृक्क की व्याधियाँ, पैरों के जोड़ों के लिये, गर्भाशयिक रक्तस्राव के लिये भी इसका प्रयोग होता है तथा न्युमोनिआ एवं अन्य बुखार के लिये भी यह मददगार है।

बर्बेरी के फलों से पानक, कावा तथा मुरब्बा बनते हैं। अल्कोहोली पेय, मद्य तथा अन्य पेय बनाने के लिये भी इसका प्रयोग होता है। वनस्पति की लकड़ी विविध प्रकार के औजार बनाने के लिये अच्छी है।

कल्पना तथा प्रयोग :- एक कांच पात्र में एक टेबलस्पून (15 ग्राम) पत्र का चूर्ण 40 प्रतिशत अल्कोहल में मिलाकर अंधेरे स्थान में एक सप्ताह तक रखें। बीच-बीच में हिलाते रहिये। तैयार पानक में से 30 बूंद दिन में तीन बार भोजन से पूर्व लें।

एक कांच के पात्र में पत्र के चूर्ण 2 टेबलस्पून (30 ग्राम) को 200 मि०ली० औषधीय अल्कोहल में मिलाकर ढककर अंधेरे स्थान में रखें। बीच-बीच में हिलाते रहिये। 10 दिन तक रखना चाहिये। छाना हुआ सीरप 1 टी स्पून (5 ग्राम) दिन में तीन बार लें। औषध की विषाक्ता कम करने में यह मदद करेगा।

एक कांच के पात्र में शुष्क त्वक् का चूर्ण आधा चम्मच (2.5 ग्राम) को 200 मि०ली० औषधीय अलकोहल में मिलाकर ढक्कन लगाकर अंधेरे स्थान में 10 दिन तक रखें। बीच-बीच में हिलाते रहिये। छाने हुए पानक का 20-30 बूंद की मात्रा में दिन में 3-4 बार भोजन पूर्व सेवन करें। यह अनिद्रा में लाभदायी होगा।

बार्बेरी के फल से घर में (मुरब्बा), स्क्वास, पानक तथा चटनी बनाये जा सकते हैं। यहां इसकी विधि प्रस्तुत है।

जैम (मुरब्बा) :- पौधे के फल को सुखोष्ण पानी से धोयें। प्रति एक किलोग्राम फल में 1200 मि०ली० पानी तथा 2 किलोग्राम चीनी मिलाकर 30 मिनिट्स तक उबालें।

बार्बेरी स्क्वास :- 1 किलोग्राम फल को मसल लें। कांच पात्र में डालकर उसमें तीन लीटर्स उबला हुआ पानी तथा प्रति लीटर 100 ग्राम चीनी मिलाकर अच्छी तरह मिला लें।

नमकीन बार्बेरी :- एक जार में फल लेकर उसमें उबला हुआ नमकीन पानी (प्रति 600 ग्राम पानी में 100 ग्राम नमक मिलाकर) डालें। पात्र को ढक्कन लगाकर ठंडे स्थान पर रखना चाहिये।

बार्बेरी पानक :- एक कांच पात्र में 2 टी स्पून्स फल लेकर उसमें 200 मि०ली० अल्कोहोल मिलाकर ढक्कन लगाकर 7-10 दिन तक रखें। मिश्रण को सतत हिलाते रहना चाहिये। छानकर इस पानक का भोजन के पूर्व दिन में तीन बार सेवन करें।

बार्बेरी जैम, स्क्वास तथा नमकीन बर्बेरी का प्रयोग प्रतिदिन करने पर भी इनके औषधीय गुण का नाश नहीं होता।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

बिदेन्स त्रिपार्तिता
BIDENS TRIPARTITA

अभिलक्षण :- विश्व भर में इस औषधीय पौधे की 200 प्रजातियाँ हैं जिनमें से 12 प्रजाती मध्य एशिया तथा तुर्कमेनिस्तान में हैं। पौधे को जांडीस हेर्ब, कैट हेर्ब, कैचिंग हेर्ब, डॉग बर्ट और ब्लैक गर्ल भी कहा जाता है। पौधे का नाम लेटिन शब्द "bis" अर्थात् दुगुना तथा "dens" अर्थात् दांत से आया है।

बिदेन्स त्रिपार्तिता कोम्पोसिते कुल का 10-50 (70) से०मी० ऊँचा एक वार्षिकी पौधा है। इसके मूल पतले तथा शिर आभूषण जैसे नलिकाकार होते हैं। इसका कांड लम्बाई में सीधा बढ़ता है तथा अधिक शाखाओं वाला होता है। बिदेन्स त्रिपार्तिता का काण्ड प्रायः रक्ताभ दुर्लभरोम के साथ चिन्हित होता है। यह ज्यादातर शाखायुक्त स्थान पर तथा पत्रों के बीच में मिलता है। इसके पत्र छोटे, सुन्दर रंग एवं अभिमुख रहते हैं। पौधे का शिखर गढढों से आच्छादित होता है। इसके पुष्प छोटे, टोकरी में इकट्ठे होते हैं। पुष्प का वर्ण पीत तथा इसकी विशिष्ट सुगंध होती है।

इसका फल किनारों से दबा हुआ अथवा तीन तरफ तथा दो-तीन दांत वाला होता है। पौधे को जून से अक्टूबर तक पुष्प लगते हैं, फल अक्टूबर के आखिर में पकते हैं। इसमें तिक्त रस होता है।

जैविक लक्षण :- बिदेन्स त्रिपार्तिता का प्रजनन बीज द्वारा होता है। इसकी ज्यादा जैविक शक्ति के कारण इसको खरपतवार माना गया है।

प्राकृतिक उत्पत्ति स्थान :- यह औषधीय पौधा दक्षिण-पश्चिमी कोपेतदग में, सुंबर, चेंदीर, मध्य कोपेतदग में, गारावुल, नोहुर, मेर्गेनोलेन, गोकदेरे, अर्चबील, कोयतेनदग में, मुर्गाब के निवासीत प्रदेशों में मिलता है। बिदेन्स त्रिपार्तिता मुख्यतः मैदानों में, पर्वतों पर, गीले स्थानों में, समुद्र तट पर, पर्वतीय स्रोतों के किनारों पर, जलाशयों के नज़दीक तथा नदी किनारे एवं नालों के पास उगता है।

प्राकृतिक उपलब्धि :- बिदेन्स त्रिपार्तिता हमारे देश के चाराओं में से एक है। औषधीय उद्देश्यार्थ इसका भण्डार पर्याप्त है। प्रतिवर्ष 10-15 टन्स कच्चा माल इकट्ठा करना शक्य है।

औषधीय उत्पाद :- बिदेन्स त्रिपार्तिता का पत्र निकलने वाला ऊर्ध्व भाग, जिसमें पुष्प नहीं लगते, का प्रयोग चिकित्सार्थ किया जाता है। पुष्प लगने से पूर्व इसे इकट्ठा किया जाना चाहिये। इसे छांव में अथवा हवादार स्थानों में सुखाना चाहिये।

रासायनिक संघटन :- पौधे के संघटन में आवश्यक तैल, श्लेष्मा, केरोटीन, वीटामिन सी, मेंगेनीस, फ्लेवोनोइड्स तथा रंजक तत्व रहते हैं।

प्रयोग :- बिदेन्स त्रिपार्तिता का विस्तृत प्रयोग यकृत् व्याधि, शिरःशूल, चर्मदल में तथा लोक चिकित्सा एवं वैज्ञानिक चिकित्सा में भय, चर्म व्याधि, वृक्क तथा आमाशय की व्याधियों में किया जाता है।

पौधे से निर्मित चमकदार हरा एन्टीबायोटीक शोफ में प्रयुक्त होता है। प्रयोग के परिणाम दर्शाते हैं कि पौधे से निर्मित औषधियाँ रक्तचाप को कम कर सकती हैं।

बिदेन्स त्रिपार्तिता के फांट का प्रयोग उत्साह बढ़ाने के लिये तथा त्वचा पर बने पूयदार स्थानों को साफ करने के लिये किया जाता है

अन्य व्याधियों की चिकित्सा में भी बिदेन्स त्रिपार्तिता से निर्मित औषधी बहुत अच्छा लाभ देती है। इस हेतु साफ पत्रों को नीचोड़कर निकाले इस ताजा चारे को व्रण पर लगाना चाहिये। बिदेन्स त्रिपार्तिता का ऐसा प्रयोग व्रण को सुखा देता है। वर्तमान में बिदेन्स त्रिपार्तिता का प्रयोग sudorific तथा मूत्रल औषध के रूप में होता है।

औषध कल्पना तथा प्रयोग :- बीडेन्स ट्रायपार्टीटा के 75 ग्राम ईंट को 10 हिस्सों में विभाजित किया जाता है। इसमें से एक भाग (7.5 ग्राम) को एक गिलास (200 मि०ली०) उबले पानी में मिलाकर 10 मिनिट्स तक रखें। तत्पश्चात् कपड़े से मिश्रण को छान लें। तैयार औषध में से एक टेबल स्पून सुबह शाम को पीना चाहिये। मिश्रण को पानी में मिलाने के बाद स्नानार्थ भी यह उपयोगी है। सार का एक गिलास एक शिशु को नहलाने के पर्याप्त है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

एक तामचीनी (कलईदार) पात्र में पौधे का चूर्ण (लगभग 5 ग्राम) लेकर उसमें एक गिलास पानी मिलाकर 10-15 मिनट धीमी आंच पर उबालें। बीच-बीच में हिलाते रहें। तत्पश्चात् 45 मिनट तक ठण्डा होने दें। उसमें एक चम्मच औषधी दिन में तीन बार लें।

पौधे के कल्क का 2 चम्मच (10 ग्राम) को उबले हुए पानी में मिलाकर 4-5 घण्टे तक गुनगुना रखें। तैयार सार में 100 ग्राम नमक मिलायें। जिनको त्वचा रोग हैं उनके लिये इस मिश्रण को पानी में मिलाकर स्नान करने से रोग शमन होता है। पानी का तापमान 37-38 डिग्री सैल्शियस से अधिक नहीं होना चाहिए।

बिएबेर्स्तेइनिआ मुल्तिफ़िदा BIEBERSTEINIA MULTIFIDA

वर्णन :- इस पौधे का कुल बिएबेर्स्तेइनिआ मुल्तिफ़िदा है। लम्बाई 20-40 से०मी० होती है। यह बहुवर्षीय पौधा है। पौधे की प्रकाण्ड तथा शाखाएं बहुत ताकतवर तथा रेशेदार स्तर से आच्छादित होती हैं। यह एक असाधारण पौधा है। इस पौधे के पुष्प सीधे उगते हैं। पुष्प के 5 बाह्यदल रहते हैं। 10 पुंकेसर होते हैं। इस पौधे के पत्र लम्बे, मोटे तथा पीत-कृष्ण होते हैं।

जैविक लक्षण :- बिएबेर्स्तेइनिआ मुल्तिफ़िदा का पौधा समुद्रतल से 400-3000 मीटर की ऊँचाई पर उगता है। इस स्थान में यह पौधा कभी-कभी उगता है। पौधा बहुत कम समय में उगता है, लेकिन जीवन के लिये सभी आवश्यक पदार्थ इसके प्रकन्द से प्राप्त होते हैं।

विस्तार :- यह बिएबेर्स्तेइनिआ मुल्तिफ़िदा बान्डेपेर में, बोलशोइ बालखन में, कुरेनदग में, सुनुताग में, सेर्दार में, मध्य पश्चिमी कोपतदग में, मागत्यंगुली में, नालयर्ड में, नोखुर में, कोनेगुम्मेयद में, सैवांद में, देश्त में, मध्य कोपेतदग में, देगीरमेन्ली,केलेचैद में, बृहत् तथा लघु बालकन्स में, हैयराबान में, चसीक्ये में, गेर्मप में, गोकदेरे में, अर्चबील में, खोवदान्दा में तथा कर्टलय-सुब्दा में उगता है।

उपलब्धि :- औषधीय उद्देश्यार्थ कच्चा माल पर्याप्त है। प्रतिवर्ष इस पौधे का प्रायः 10-15 टन इक्ट्ठा करना शक्य है। पौधा दुर्लभ नहीं है। इस कच्चे माल को बाखलर्य प्रांतों में प्रायः 5-6 टन्स इक्ट्ठा करना शक्य है। वास्तव में 1 टन शुष्क कच्चे माल से 213 किलोग्राम आलकोहोल प्राप्त करना शक्य है। यह पौधा वन्य है, लेकिन अब इसकी खेती की जाती है।

औषधीय कच्चा माल :- औषधीय उद्देश्यार्थ मूल तथा कभी-कभी शुष्क पौधे का प्रयोग होता है। कच्चे माल को जून-जुलाई में इकट्ठा किया जाता है क्योंकि इस समय पौधे में सभी आवश्यक जैविक पदार्थ मिलते हैं। इस पौधे के मूल को साफ स्थानों में तिरपाल के नीचे सुखाया जाता हैं। मूल को साफ कर 0.5-1 से०मी० के समान टुकड़ों में काटा जाता है। संचय की समय अवधि 3-4 साल है। कच्चे माल को काँच के प्याले में अथवा कागज़ के थैलों में अंधेरे स्थान में रखा जाता है।

रासायनिक संघटन :- बिएबेर्स्तेइनिआ मुल्तिफ़िदा के मूल में 33.9 प्रतिशत कार्बोहाइड्रेट, 2.59 प्रतिशत मोनोसेकेराइड्स, 6.3 प्रतिशत डायसेकेराइड्स, 16.6 प्रतिशत डेकस्ट्रीन, 0.1 प्रतिशत vazisinonin, 8.36 प्रतिशत टेनीन, 0.45 प्रतिशत फ्लेवोनोइड्स मिलते हैं। सूखे पौधे में इथरिअल तैल तथा सेपोनीन के ट्रायटर्पेन मिलते हैं।

प्रयोग :- प्राचीन समय से इसको गांदेपर-गनी देपेदर नाम से जाना जाता है। इसका अनुवाद रक्त स्थापक पौधा है इसकी कलियों से तैयार औषध श्वसन संस्थान की व्याधियों, तमक श्वास, कामला तथा काम दुर्बलता को ठीक करने में मदद करता है। लोकप्रिय चिकित्सा में पौधे के मूल का प्रयोग आंतरिक तथा बाह्य रक्तस्राव की चिकित्सा के लिये तथा बच्चों में रक्त स्कंदन (रक्तस्तभक) के लिये किया जाता है। तजाकिस्तान में इसका प्रयोग उच्च रक्तचाप की चिकित्सा के लिये किया जाता है। प्रख्यात तुर्कमेन चिकित्सा में इस पौधे का प्रयोग मसूरिका, पुरुष काम दुर्बलता, स्त्री बंध्यत्व तथा विविध प्रकार के व्रणों के रोपण के लिये होता है। औषध कल्पना तथा प्रयोग के लिये बाखालर्य में, नोखुर

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

में, यारद्जा में इस पौधे के मूल का प्रयोग होता है। मूल से फांट, सार, पानक तथा चूर्ण तैयार किये जाते हैं। रक्त स्तंभन के लिये यह बहुत उपयोगी है। 2 बड़ा चम्मच (30 ग्राम) को 1 लीटर पानी में मिलाकर धीमी आंच पर 20 मिनिट्स उबाला जाता है। छानकर ठंडा करके 1/2 गिलास (20 मि०ली०) भोजन से पूर्व पीयें। बच्चों के लिये केवल 0.25 ग्राम की अनुमति दी जाती है।

200 मि०ली० पानी अथवा दूध में 1 बडी चम्मच (15 ग्राम) मूल को मिलाकर 1 चम्मच (5 ग्राम) दिन में तीन बार भोजनपूर्व पीयें। यह पुरुष काम दुर्बलता में तथा स्त्री बंध्यत्व में फायदा करता है।

औषधीय अल्कोहल 200 मि०ली० में एक चम्मच (5 ग्राम) मूल का सूक्ष्म चूर्ण मिलाकर 7-10 दिन रखें। बीच बीच में हिलाते रहिये। छानकर प्रतिदिन 10-20 बूंद दिन में तीन बार भोजन पूर्व लें। समाप्ति अवधि 1 महिने की है।

बोंगार्दिआ क्रिसोगोनिउम
BONGARDIA CHRYSOGONUM

वर्णन :- मध्य एशिया देशों तथा तुर्कमेनिस्तान में यह औषधीय पौधा केवल एक बार मिला हैं। बोंगार्दिआ क्रिसोगोनिउम झीर्क कुल की वनस्पति है। यह 30-40 से०मी० ऊँचा होता है। यह पौधा बहुवर्षीय है। यह पौधा भूमि में कन्द बनाता है। पौधा वसंत के आरम्भ में उगता है। पौधा 1 से०मी० चौड़ा तथा 5-10 से०मी० लम्बा होता है। पत्र हरे वर्ण तथा किनारे तरंगित होते हैं। 2-3 सप्ताह के बाद यह पौधा 50-60 से०मी० ऊँचा हो जाता है तथा उसका तना पीत तथा नारंगी पुष्पों से आच्छादित हो जाता है। बोंगार्दिआ क्रिसोगोनिउम को मार्च-अप्रैल में पुष्प लगते हैं तथा बीज द्वारा प्रजनन होता है। पौधे के मूल का उभार युक्त भाग सुनहरे रंग का होता है। यह फुलाव 10-30 से०मी० की गहराई में होता है।

जैविक लक्षण :- हमारे देश में बोंगार्दिआ क्रिसोगोनिउम को वसंत में पुष्प लगते हैं। कन्द इस पौधे का जैविक लक्षण है। कन्द में उपयोगी तत्व होते हैं। यह बोंगार्दिआ क्रिसोगोनिउम के नये अंकुर को खराब मौसम की परिस्थितियों से बचाता है। बोंगार्दिआ क्रिसोगोनिउम एक आश्चर्यजनक पौधा है। इस पौधे का प्रयोग औषधीय तथा खाद्य दोनों के रूपों में होता है।

पौधा समुद्र तल से 800-200 मीटर की ऊँचाई पर उगता है।

विस्तार :- हमारे देश में बोंगार्दिआ क्रिसोगोनिउम शोनपुदग तथा एट्रे के बीच में, चाट एडेरेडे नोखुर साजवान, देश्तेन, आर्गनापे, बाखर्लेय, दुरुन, चाचेक, अर्गाबील, गोकदेरे, बध्यझ, कुरेनदग, गोकदेपे तथा सेरदार एवं बागीर में उगता है।

उपलब्धि :- हमारे देश में यह पौधा दुर्लभ नहीं है, क्योंकि कुछ स्थानों में यह बहुत विस्तृत रूप में फैला हुआ है। इस पौधे का कच्चा माल हमारे देश में पर्याप्त है। हमारे देश में प्रति वर्ष 5-6 टन औषधीय पौधे को इकट्ठा किया जा सकता है।

औषधीय कच्चा माल :- इस पौधे के कन्द का औषधीय उद्देश्यार्थ प्रयोग होता है। कन्द खाने लायक होता है। कन्द का वजन 100-150 ग्राम होता है। इस पौधे के कन्द को वसंत की शुरूआत में सामान्यतः मार्च के आखिरी 10 दिन तथा अप्रैल के पहले 10 दिन में इकट्ठा किया जाता है। केवल इस समय ही कन्द में उपयोगी तत्व होते हैं। इस पौधे का तना 20-25 अप्रैल के बाद सूख जाता है। कन्द को 2-3 हिस्सों में विभाजित करके सामान्य रूप से सुखाया जाता है। कच्चे माल को कागज़ की पेटियों में रखा जाता है। संचय समय अवधि 2-3 साल है।

रासायनिक संघटन :- पौधे के कन्द में 12 प्रतिशत आल्कलोईड् और 0.11 प्रतिशत लीयोन्टीसीन सूखे पौधे में होते हैं। पौधे के पत्र में विटामिनें तथा 50 प्रतिशत तक कार्बोहाइड्रेट होते हैं। पौधे का तना बहुत अमूल्य है क्योंकि तने में आल्कोहोल होता है। इस पौधे में स्टार्च भी होता है जो आहार के रूप में उपयोगी है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

औषध कल्पना तथा प्रयोग :- विख्यात तुर्कमेन चिकित्सा में मागत्यंगुली, बाखली तथा गोकदेरे प्रांतों में बोंगार्दिआ क्रिसोगोनिउम के कन्द का प्रयोग सर्पविष तथा कीटविष में होता है। इस पौधे के कन्द का प्रयोग मुखगुहा की व्याधियों, खुले व्रण, वात व्याधियों तथा मधुमेह से उत्पन्न व्याधियों की चिकित्सा में होता है।

इस पौधे के कन्द का प्रयोग रसा या शोरबा के रूप में किया जाता है। पौधे के पत्र में विटामिनें होते हैं।

पौधे के कंद में 200 मि०ली० उबलता हुआ पानी मिलाकर 1-2 घण्टे तक रहने दें। इसमें से 1-2 टेबलस्पून (15-30 ग्राम) दिन में तीन बार पीयें। इस टींचर का गंडूषार्थ प्रयोग किया जाता है। पौधे के 2-3 कंदों को 2 गिलास (400 मि०ली) पानी में मिलाकर धीमी आंच पर 10-15 मिनट तक कलाईदार पात्र में उबालें। इसका प्रयोग सर्पविष तथा कीटविष में दिन में तीन बार करें। एक बड़ा चम्मच कंद को तेल में तथा आटे में मिलाकर विषैले प्राणिओं के दंश स्थान पर लगाया जाता है।

ब्रिओनिआ आल्बा
BRYONIA ALBA

वर्णन :- ब्रिओनिआ आल्बा कुकुरबिटेसी कुल का बहुवर्षीय तृणीय पौधा है। मूल मोटा, मांसल तथा छोटे, मोटे भूमिगत चूसक युक्त होते हैं। शाखायें पतली, नंगी तथा शाखारहित, चक्राकार अंकुरित तन्तुओं के सहारे आरोही होती हैं। पत्र वृंतयुक्त खाली अथवा नुकीले कांटे एवं रोम युक्त श्वेत उभार युक्त होते हैं। पत्र के फलक 10 से०मी० लम्बे होते हैं।

आधार के पास पत्र हृदयाकार तथा दंतुर किनारे वाले होते हैं। पुष्प एकलिंगी, मैले, पीले वर्ण के होते हैं। फल काले, गोलाकार बेर की तरह होते हैं, जो 7-8 मि०मी० लम्बे तथा 5-4 मि०मी० चौड़े होते हैं। ब्रिओनिआ आल्बा को मई-जून में पुष्प लगते हैं।

जैविक लक्षण :- ब्रिओनिआ आल्बा समुद्र तल से 1000-2500 मीटर की ऊँचाई पर उगता है। पौधे को नम, छाँव वाले स्थान पसंद आते हैं।

विस्तार :- ब्रिओनिआ आल्बा , दक्षिण- पश्चिमी कोपेतदग में, मध्य कोपेतदग में, बाबाझो, काशयाचलय, मीसीनेवे, पूर्वीय कोपेतदग में शेर्लोक, गार्वेरसदण तथा शामलय में मिलता है।

प्राकृतिक उपलब्धि :- ब्रिओनिआ आल्बा हमारे देश का दुर्लभ पौधा है। इसके प्राकृतिक भण्डार को औषधीय उद्देश्यार्थ सुरक्षित रखा गया है।

कच्चा माल :- पौधे के मूल को कच्चे माल के रूप में इकट्ठा किया जाता है। सामान्य पद्धति से ही इकट्ठा किया जाता है तथा सुखाया जाता है। इसके गुण समाप्ति समय 3 साल का है। कच्चे माल को कागज़ के अथवा घास के पात्रों में अंधेरे स्थानों में संचय किया जाता है।

बीज में 25 प्रतिशत तक वसा होता है, लेकिन पत्रों में एस्कोर्बिक एसिड़ भी होता है।

प्रयोग :- लोक चिकित्सा में ब्रिओनिआ आल्बा का प्रयोग विस्तृत रूप से पक्षवध, आमवात, अंगमर्द तथा संधिशूल में, रक्तस्तम्भक के रूप में तथा व्रण रोपणार्थ किया जाता है। ग्लायकोसाईड्स के कारण पौधे का प्रयोग संज्ञाहरण के रूप में होता है। यह हृदय के कार्य को उत्तेजित करता है तथा धमनीगत रक्तचाप की वृद्धि करता है। पौधे के मूल एक सुरा सार के रूप में अकोफाईट द्रव्य क साथ मिलाया जाता है। यह शरीर तथा संधिगत वेदना शामक के रूप में बहुत प्रभावी है तथा रुमेटिज्म, कुक्कुर कास तथा श्लेष्मस्राव में लाभदायी है।

कल्पना तथा प्रयोग :- ब्रिओनिआ आल्बा के मूल का चूर्ण 1 चम्मच (5 ग्राम) में 200 मि०ली० उबला पानी मिलाया जाता है। तत्पश्चात् छानकर उसमें से 1 चम्मच (5 ग्राम) फांट को दिन में तीन बार पीयें।

ब्रिओनिआ आल्बा की 20-30 बूंद 10 प्रतिशत का सुरा सार का दिन में तीन बार सेवन करें।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

ब्रिओनिआ दिओइका
BRYONIA DIOICA

वर्णन :-ब्रिओनिआ दिओइका एक आश्चर्यजनक औषधीय पौधा है। दुनिया में इसकी लगभग 10-12 प्रजातियाँ हैं जिनमें से 6 मध्य एशिया के देशों में तथा 3 तुर्कमेनीस्तान में मिलती हैं। सभी प्रजातियों में औषधीय गुण धर्म होते हैं। पौधा तुर्कमेनिस्तान के लोगों में बहुत प्रख्यात है।

ब्रिओनिआ दिओइका कुकुरबिटेसी कुल का एक बहुवर्षीय क्षुपीय पौधा है। मूल मांसल तथा चुकन्दर की तरह विभाजित होती है। यह बाहर से पीताभ, अंदर से श्वेताभ तथा तिक्त होती है। असंख्य पतली लम्बी (2.4 मीटर) शाखायें मूल से निकलकर अपने तंतुओं के सहारे ऊपर चढती हैं। अगल बगल में उगे हुए वृक्ष तथा छोटे वृक्ष इनके चढ़ने के लिये आधार का काम आते हैं। पुष्प एकलिंगी, स्त्री पुरुष पुष्प अलग-अलग पौधों में अथवा एक ही पौधे में होते हैं। पुंकेसर युक्त पुंपुष्प समस्थ आकार के एकत्रित होते हैं। पुष्प सूक्ष्म तथा कभी-कभी छोटे सवृन्त पुष्प काण्ड बनाते है। इनको 5 दल तथा बाह्यदल होते हैं। फल रसीले गोलाकार बेर की तरह होते हैं।

जैविक लक्षण :- ब्रिओनिआ दिओइका समुद्रतल से 1000-2500 की ऊँचाई पर उगता है। पौधे को नम, छाँवयुक्त स्थान पसंद आते हैं। इसमें मई-अगस्त तक पुष्प लगते हैं। ब्रायोनीआ डोमेस्टीका एक विषैला पौधा है।

विस्तार :- ब्रिओनिआ दिओइका विस्तृत रूप से दक्षिणी-पश्चिमी कोपेतदग में, नोहुर, सायवान, देश्त, कोनेगुमेय, ऐदेरे, पारहाय, बोगुन्दर, सुन्टे, अकगाया, मध्य कोपेतदद्य में, अर्चबील, गोकदेपे, सर्यमसाकलय, सुलुकली, मेर्गेन्युलया, हैराबात, नाशंकी तथा हौदान में फैला हुआ है। पौधा पर्वतों के मध्य तथा ऊपरी क्षेत्रों में उगता है।

प्राकृतिक उपलब्धि :- ब्रिओनिआ दिओइका तुर्कमेनिस्तान का दुर्लभ पौधा है। उपलब्धि का प्रयोग औषधीय उद्देश्यार्थ तक सीमित किया गया है। इसकी खेती करने की सलाह दी जाती है।

औषधीय कच्चा माल :- औषधीय उद्देश्यार्थ ब्रिओनिआ दिओइका के मूल का प्रयोग किया जाता है। कच्चे माल को छाँव में संचय करने के लिये तैयार किया जाता है। मूल के 1-3 से०मी० लम्बे टुकड़े किये जाते हैं तथा टुकड़ें को धागे में माला के रूप में पीरोये जाते हैं। कच्चा माल सुगंधित तथा हलका सा तिक्त होता है। यह अपना औषधीय गुणधर्म 3 साल तक बनाये रखता है। तैयार कच्चे माल को कांच पात्रों में अथवा कागज़ के बक्सों में प्रकाश से दूर संचय किया जाता है।

रासायनिक संघटन :- ब्रिओनिआ दिओइका में विशेषत: मूल में ब्रायोनाइन, ब्रायोजेनाईन सहित एमोर्फिक विषैले ग्लायकोसाईड्स, ग्लुकोस तथा स्टार्च, टैनिक पदार्थ, गोंद, लवण तथा मैलिक एसीड्स के आदि तत्व होते हैं।

प्रयोग :- शूल तथा पांडु के लिये लाल ब्रिओनिआ दिओइका के सार तथा फांट का प्रयोग होता है। न्युमोनिआ के लिये मूल के ताजे नीचोड़े रस का कषाय भी असरदायक है। लोक चिकित्सा में गर्भाशयिक रक्तस्राव की चिकित्सा के लिये रक्त ब्रायोनीआ का प्रयोग होता है।

ब्रिओनिआ दिओइका का व्रणरोपण तथा संज्ञानाशक औषध के रूप में कास, सतत होने वाला संधिशूल तथा आमवात में प्रयोग होता है।

लोक चिकित्सा में रक्त ब्रिओनिआ दिओइका का पानी में बनाये हुए कषाय का प्रयोग अपस्मार, संधिशूल तथा दंतशूल में होता है। stewed मूल पूयदार ग्रंथि के लिये एक औषध है। इसके रेचक तथा मूत्रल गुण भी हैं।

कल्पना तथा प्रयोग :- 0.5 चम्मच (2.5 ग्राम) ब्रिओनिआ दिओइका मूल के चूर्ण में 2 ग्लास (400 मि०ली) उबलता हुआ पानी मिलाकर कलईदार पात्र में धीमी आँच पर 10-15 मिनट तक उबालें। ठंडा करके छान लें। इसमें से 50 ग्राम दिन में तीन बार भोजन पूर्व लें।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

1 चम्मच (5 ग्राम) ब्रिओनिआ दिओइका तथा आधा गिलास (100 मि०ली) सूर्यमुखी का तैल मिलायें। इस मिश्रण को शरीर पर लगाने के लिये तथा रुमेटिझम में प्रयुक्त होता है। लेकिन इसका अधिक प्रयोग हानिकर है।

एक चम्मच (5 ग्राम) ब्रिओनिआ दिओइका मूल में 1 गिलास (200 मि०ली०) उबलता हुआ पानी मिलाकर छान लें। 1 टी स्पून (5 ग्राम) दिन में तीन बार लें।

ब्रिओनिआ दिओइका के 10 प्रतिशत सुरीय औषधीय सार की 20-30 बूंद का दिन में तीन बार सेवन करें। 20-30 प्रतिशत टिंचर बाह्य प्रयोग के लिये है।

ब्रिओनिआ दिओइका मूल 1 चम्मच (5 ग्राम) में 2 गिलास (400 मि०ली) पानी मिलाकर कलईदार पात्र में धीमी आंच पर 10 मिनट तब उबालें। छान कर 1 चम्मच गुनगुना अपस्मार, गले की खराश तथा दंतशूल में, मुखगुहा में गंडूषार्थ प्रयोग करें।

बूनिउम आफ्घानिकुम
BUNIUM AFGHANICUM

वर्णन :- तुर्कमेनिस्तान में इसकी 12 प्रजातियाँ मिलती हैं।

बूनिउम आफ्घानिकुम उम्बेलीफेरी वंश का बहुवर्षीय 20-30 से०मी० ऊँचा क्षुपीय पौधा है। काण्ड मूल के ऊपर वक्र, रबर लोमश, शाखायुक्त नलिकाकार, गोल तथा खंडीय होता है। निचले पत्र लम्बी शाखाओं पर होते हैं। उनके फलक त्रिकोणाकार तथा दो बार पक्षवत् खण्डित होते हैं। काण्ड पत्र अवृंत तथा छोटे पत्रकों वाले होते हैं। छत्रक 8-10 विकिरक, छोटे में 10-15 पुष्प होते हैं। दल लंब-अण्डाकार तथा कुछ अंतगौल होते हैं। फल रेखाकार नलिकाकार तथा 6 मि०मी० लम्बे होते हैं।

जैविक लक्षण :- पौधा समुद्र तल से 400-1200 मीटर की ऊँचाई पर उगता है। इसको रेतीली भूमि पसंद है। बीज द्वारा इसका प्रजनन होता है। इसको पुष्प तथा फल अप्रैल-मई में लगते हैं।

विस्तार :- हमारे देश में पौधा केवल बध्यझ में ही मिलता है।

प्राकृतिक उपलब्धि :- यह हमारे देश का दुर्लभ क्षुपीय पौधा नहीं है। इसके भण्डार औषधीय उद्देश्यार्थ पर्याप्त है। इसकी खेती की जा सकती है।

औषधीय कच्चा माल :- बीज तथा कंद का औषधीय कच्चे माल के रूप में संग्रहण किया जाता है। इकट्ठा करना, सुखाना तथा कच्चा माल प्राप्त करना सामान्य रूप से किया जाता है। इसको कागज़ के बक्सों में ही संचय करना चाहिये। संचयन समय 5-7 साल का है।

रासायनिक संघटन :- पौधे के रासायनिक संघटन का अध्ययन अपर्याप्त रूप से हुआ है। इस पौधे के बीजों में आवश्यक तैल एवं अत्यधिक मात्रा में वसाएं हैं। सुगन्धित मसाले एवं औषध रूप में इस पौधे का प्राचीन काल से उपयोग होता आ रहा है। इसका वर्णन अब्बु अली इब्न सीना, सैयत इस्माइल, गुर्गेन्ली तथा मुहम्मद हुसेन के कार्यों में शामिल है। इसका प्रयोग आमाशय तथा बृहदांत्र के लिये शक्तिवर्धक बल्य औषध के रूप में तथा मूत्रल के रूप में किया जाता था।

तुर्कमेन लोक चिकित्सा (सेर्हेताबाद, नाग्ताबाझार, साराएस) में मूत्राश्मरी तथा सोरीआसीस के लिए इसके तले हुए बीज एवं मधु का प्रयोग किया जाता है। लोक चिकित्सा में पौधे के बीज का प्रयोग सामान्य आरोग्य -वर्धन, व्रण रोपण, रक्तस्तम्भन, दीपन के लिये, आमाशय शूल तथा प्लीहा की ग्रंथि के लिये तथा तले हुए बीज का मूत्रल द्रव्य के रूप में प्रयोग होता है। कंद से निर्मित चूर्ण को व्रणजन्य आमाशयिक शोथ में लिया जाता है।

पौधे से प्राप्त आवश्यक तेल यकृत् तथा लाला ग्रंथियों का कार्य में सुधार करता है।

कल्पना तथा प्रयोग :- दो बड़ी चम्मच (30 ग्राम) बीज के चूर्ण में 100 ग्राम शहद मिलाकर उसमें से 1 चम्मच (5 ग्राम) दिन में तीन बार भोजन के पूर्व लें। इसका प्रयोग मूत्रवह संस्थान की व्याधियाँ तथा वृक्काश्मरी में किया जाता है।

शुष्क पौधे को 1 बड़ी चम्मच (15 ग्राम) तामचीनी पात्र (कलईदार) में धीमी आंच पर तलें। ठंडा करके तीन हिस्सों में बांट दें। दिन के समय सेवन करें। यह अच्छा मूत्रल औषध है।

एक कांच पात्र में 4 बड़ी चम्मच (60 ग्राम) बीज लेकर उसमें 1/2 गिलास जैतुन तेल (ओलीव ऑयल) मिलाकर ढक्कन लगाकर 10 दिन के लिये रखें। बीच बीच में हिलाते रहें। एक चम्मच (5 ग्राम) दिन में तीन बार भोजन से पूर्व लें। इस नुस्खे का प्लीहा के कार्य पर सकारात्मक प्रभाव होता है।

बीज का चूर्ण 1 बड़ी चम्मच (15 ग्राम) को 1 बड़ी चम्मच (15 ग्राम) सेम के पौधे के साथ मिलायें। मिश्रण पर 1 गिलास (200 मि०ली०) उबलता हुआ पानी डालें। छान लें। एक चम्मच (5 ग्राम) दिन में तीन बार भोजन पूर्व लें।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

बूप्लेउरम एक्साल्तातुम
BUPLEURUM EXALTATUM

वर्णन :- इसकी लगभग 150 प्रजातियाँ विश्व भर में तथा 5 प्रजातियाँ तुर्कमेनिस्तान में मिलती हैं।

बूप्लेउरम एक्साल्तातुम अम्बेलीफेरी कुल का बहुवर्षीय 40-60 से०मी० ऊँचा पौधा है। जमीन के बाहर निकले तन्तु असंख्य, पतले तथा सीधे होते हैं। अफीटल बल्लमों के शिखर पर पत्र प्रधान रूप में गुच्छ में रहते हैं। गुच्छ में 5-10 पुष्प होते हैं। फल (फैला हुआ) नलिकाकार, प्राय: 4-5 मि०मी० लम्बे तथा तीव्र धार वाले होते हैं।

जैविक लक्षण :- इसके पुष्प तथा फल जुलाई-अगस्त में आते हैं। बीज द्वारा इसका प्रजनन होता है।

विस्तार :- उत्पत्ति स्थान बोलशोइ बालखन, मध्य कोपेतदग, कुगीतांग में फैला हुआ हैं।

प्राकृतिक उपलब्धि :- यह हमारे देश का दुर्लभ क्षुपीय पौधा नहीं है। इसके भण्डार औषधीय उद्देश्यार्थ पर्याप्त है। प्रति वर्ष दसों टन पौधे इकट्ठा किये जा सकते हैं।

औषधीय कच्चा माल :- क्षुप को औषधीय उद्देश्यार्थ इकट्ठा किया जाता है। सुखाना तथा कच्चे माल को प्राप्त करना पारंपरिक पद्धति से किया जाता है। इसको कांच पात्र में अथवा कागज़ के थैलों में 3-5 साल तक संचय किया जाता है।

रासायनिक संघटन :- पौधे के रासायनिक संघटन का अपर्याप्त रूप से अध्ययन किया गया है। पौधे में सेपोनीन्स, टैनिन, उत्पत् तैल, विटामिन सी, कैरोटीन तथा फ्लेवोनोइड्स होते हैं।

प्रयोग :- तुर्कमेन लोक चिकित्सा में इसका पैत्तिक तथा नाड़ीतंत्र विकारों में प्रयोग होता है।

अति प्राचीन समय से पत्र, मूल तथा फल के क्वाथ तथा फांट यकृत् विकारों, पित्ताशय शोथ, आमाशय विकार तथा स्त्री रोगों में तथा व्रण रोपणार्थ नुस्खे के रूप में प्रयोग किया जाता है।

कल्पना तथा प्रयोग :- एक बड़ा चम्मच (15 ग्राम) सुखे फल को 1 गिलास (200 मि०ली) उबलते हुए पानी में मिलाकर तामचीनी पात्र में धीमी आंच पर 10-15 मिनट तक उबालें। छानकर 1 बड़ा चम्मच (15 ग्राम) गुनगुना दिन में तीन बार भोजन से 20-30 मिनट पहले सेवन करें। इसका यकृत् व्याधियों तथा पित्ताशय शोथ में प्रयोग किया जाता है। औषध देने की अवधि 3-4 सप्ताह की है।

दो बड़ा चम्मच (30 ग्राम) मूल चूर्ण में 1 गिलास (200 मि०ली) उबलता हुआ पानी मिलाकर धीमी आंच पर 20-30 मिनट तक उबालें। छानकर आधा गिलास (100 मि०ली०) गुनगुना दिन में तीन बार लें। इसका प्रयोग स्त्री रोगों में किया जाता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

काप्पारिस हेर्बाचेआ
CAPPARIS HERBACEA

अभिलक्षण :- विश्व भर में इस क्षुपीय पौधे की 250 प्रजातियां, मध्य एशिया देशों में 2 प्रजातियाँ तथा तुर्कमेनिस्तान में 1 प्रजाति मिलती है।

यह काप्पारिस हेर्बाचेआ कुल का उष्णकटिबन्ध के झाड़ीदार प्रदेश का पौधा है। यह 10-150 से०मी० लम्बा होता है। इसका उत्पत्ति स्थान एशिया है। हमारे देश में इसे गोयुल कहते हैं।

इस पौधे के मुख्य लक्षणों में से एक लक्षण यह है कि यह पौधा अयोग्य स्थान जैसे अर्धरजीय क्षेत्रों, रास्तों के किनारों पर तथा पत्थर के बीच में पुष्प तथा फल देता है। मुख्य तने की शाखायें अलग अलग दिशा में फैलती हैं। ये 2 मीटर तक पहुंचती हैं। तने की लम्बाई 10-150 से०मी० होती है। इस पौधे के पत्र सामान्यतः गोल अथवा धनुषाकार, संपूर्ण तथा तीक्ष्ण अग्र वाले होते हैं। कई सारी कंटकयुक्त शाखायें होती हैं। इसके पुष्प एकाकी तथा बड़े 3-5 से०मी० व्यास वाले होते हैं। ये श्वेत तथा कभी-कभी गुलाबी होते हैं। पौधे के पुष्प 3-4 से०मी० तक के हो सकते हैं। उसमें असंख्य पुंकेसर होते हैं। एक शाखा पर लगभग 500 पुष्प होते हैं। मधु तथा सुंदरता लाने वाली मधुमक्खी इसका परागीकरण करती है। फल मांसल गोल होते हैं तथा सामान्यतः 2-4 से०मी० लम्बे होते हैं। इस क्षुपीय पौधे के फल तरुण तरबूज जैसे दिखते हैं। इसमें मई के अंत से लेकर सितम्बर तक पुष्प लगते हैं। जून-जुलाई में फल लगते हैं।

विशिष्टतायें :- काप्पारिस हेर्बाचेआ जहां उगता है वहां पानी गहराई में होने से यह अपने मूल गहराई तक फैलाता है। वे 10-12 से०मी० अथवा उससे भी ज्यादा गहरे जाकर पानी प्राप्त करके इसको जीवन प्रदान करते हैं। नमी पत्रों को शुष्कता से बचाती है। इसको पुष्प तथा फल लगने के लिये कुछ समय लगता है। एक पौधे से प्रति 1 किलो 200 ग्राम पैदावार होती है।

बीज द्वारा पौधे का प्रजनन होता है। शून्य से 15-20 सेण्टीग्रेड ऊपर तापमान पर यह हरा हो जाता है। पहले 2-3 साल यह बहुत तेजी से बढ़ता है। 4-5 साल में यह तीव्र गति से बढ़ता है। पांचवे साल में इसको फल लगने शुरू हो जाते हैं। इस पौधे की प्रजनन शक्ति लगभग 50 साल की है।

विस्तार :- हमारे देश में प्रत्येक हिस्से में यह पौधा आपको मिल सकता है। यह विस्तृत रूप में काराकुम रज, पहाड़ियों, गाराबेकेवुल, आकजाग्या जिलों, ठाझार समुद्र के किनारों, तुर्कमेनबासाी गाराबोगाझ समुद्र किनारे, उस्तयुर्ट, एट्रेक, जेलीले, मागत्यंगुली, कोनेकेसीर, गाराचागील, जिल्लों में, बालकन पर्वतों पर, अर्चाबील गोकदेरे, नोहुर, आर्चमान, सायवान, देश, बाहात्र्य्य गावेर्स, चावे, ताग्बाबाझार तथा साराहस जिलों में फैलता है।

हमारे देश में यह विरल पौधा नहीं है। उत्पादन उद्देश्यार्थ पर्याप्त भण्डार है। प्रतिवर्ष फल तथा बीज 40-50 टन इकट्ठा कर सकते हैं। गाराचागील क्षेत्र में उत्पादन 6-4 टन पहुंच जाता है। माने तथा चाचे के बीच का क्षेत्र यह क्षुपीय पौधे से समृद्ध है। इसकी उपज 10-12 टन है। आर्चमान तथा नोहूर भी इसमें समृद्ध है, उत्पादन 3-5 टन पहुंचता है।

औषधीय कच्चा माल :- पुष्प, फल, नहीं खिली हुई कलियाँ, शाखायें तथा बीज औषधीय उद्देश्यार्थ तथा आहार के लिये प्रयुक्त होते हैं। कच्चे माल की समाप्ति अवधि 3-5 साल की है। इसको कागज़ के बक्सों में रखा जाता है। मई-जून में इसको पुष्प लगते हैं। पत्रों को अप्रैल-मई में इकट्ठा किया जाता है। पौधे में पूरी गर्मी के दरम्यान कलियाँ लगती रहती हैं। ये छोटी, गोल होती हैं तथा ये दर्शाना जरूरी है कि सख्त कलियाँ अच्छी होती हैं। जुलाई में जब इनकी लम्बाई 10 से०मी० अथवा ज्यादा हो जाती है तब नहीं खिली कलियों को इकट्ठा करना शुरू करते हैं। सितम्बर तक हर 8-10 दिन में एक बार कलियां इकट्ठी की जाती है।

कच्चे माल को सामान्य रूप से सुखाया जाता है। फलों को धागे में पिरोकर हवादार स्थान में लटकाया जाता है। ये जल्दी तैयार हो जाते हैं तथा गुणवत्ता अच्छी रहती है। मूल को विशिष्ट साधन द्वारा शून्य से 40 सेण्टीग्रेड ऊपर

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

तापमान पर सुखाया जाता है। क्रियाशील तत्व तथा लम्बे समय संचय करने से औषध अधिक ताकतवर तथा आहार के रूप में शक्तिप्रद बनता है। फल में शर्करा 12 प्रतिशत तथा विटामिन सी (शुष्क भाग 150 मि०ग्रा० 1 प्रतिशत) से यह सिद्ध होता है। इसका स्वाद तथा मधुरता हम को तरबूज की याद दिलाती है। यह फल के रूप में खाया जा सकता है। इस विशिष्ट पौधे में उत्पत् तैल, विटामिनें सी, इ, कैरोटीन, स्टेकोड्रीन 12 प्रतिशत सेपोनीन्स, रुटिन 0.3 प्रतिशत, केम्फेरोल, क्वेसैटिन होते हैं, तिक्त रस है तथा तीव्र तेल, कार्बोहाइड्रेट उड्द, ग्लुकोप्रीन, रंजक पदार्थ, केपरेडीन, टायोग्लुकोराइड्स होते हैं। यह वर्णित है कि किण्वित फल में आयोडीन होता है।

प्रयोग :- प्राचीन काल से इस पौधे का प्रयोग जानते हैं। लोग रक्तचाप के लिये औषध के रूप में इसका प्रयोग करते हैं। यह वेदना को दूर करता है। यह पित्ताशय, आमाशय तथा आंत्र की व्याधियों में, तमक श्वास में, आंत्रकृमि को दूर करने के लिये तथा पक्षाघात में उपयोगी है। प्राचीन काल से सिरा शैथिल्य तथा रक्तस्राव की चिकित्सा के लिये जाना जाता है। रूमेटीझम तथा ब्रुसेलोसीस के लिये अमेरिकन लोग पौधे के मूल का प्रयोग करते हैं।

विख्यात चिकित्सक अबु अली इब्न सीना ने अपनी पुस्तक "कैनन आफ मेडिकल सायंस" में लिखा है कि पौधे के मूल का प्रयोग कामला तथा विष में कर सकते हैं एवं पुष्प (निचला भाग) व्रण का रोपण जल्दी से करता है। इस चिकित्सक ने कहा कि इसका प्रयोग पक्षाघात, तमकश्वास, पाण्डु, दंतशूल तथा कर्णशूल में होता है। मूल का सार airrhoea को बढ़ाता है।

यकृत् तथा प्लीहा की व्याधियों की चिकित्सा के लिये मूल को अमूल्य नुस्खा माना गया है। शाखायें तथा पत्र का मधुमेह में प्रयोग होता है, बीज शिरःशूल के लिये उपयोगी है।

तुर्कमेन लोक चिकित्सा में पौधे के मूल का सार अर्श के लिये उपयुक्त होता है। भूमिगत सिरा से प्राप्त 255 एलकोहोलों का सार रक्त को जल्दी स्कन्दन के लिये उपयुक्त है, यह एन्टीसेप्टिक के रूप में, न्युरोसिस, पक्षाघात, प्लीहा की व्याधियाँ, प्रतिश्याय, दंतशूल तथा वृक्क से अश्मरी को निकालने के लिये भी उपयोगी है। साथ ही मध्य एशिया में चर्म व्याधियों की चिकित्सा के लिये इसका धूमपान किया जाता है।

लोग इसके बीज से तैल बनाते हैं। यह तैल मधुमेह की चिकित्सा के लिये उपयोगी है। फलों से निर्मित सार का प्रयोग से वैवाहिक काम सम्बन्ध की कमी दूर हो जाती है। कामोत्तेजना तथा स्त्री-पुरुष दोनों के बंध्यत्व में भी प्रयोग होता है। पौधा उपयोगी औषधि के रूप में मध्य एशिया (तुर्कमेनिस्तान में भी) में जाना जाता है। यह अर्श तथा दंतशूल के लिये उपयोगी औषधि के रूप में जाना जाता है। रात के भोजन में आचार के रूप में इसे शामिल किया जाता है।

पौधे का आहार के रूप में भी प्रयोग होता है। मध्य एशिया के देशों में इस पौधे को विशेष गमलों में लगाया जाता है। एक प्रकार के सलाद के लिए भी इसे शामिल करने का प्रयोग होता है। भूमध्य समुद्र के देशों में तथा अमेरिकी खंड के देशों में इस पौधे के पुष्प तथा कलियों से बनाया हुआ अचार रात्रि के भोजन में बहुतायत से प्रयुक्त होता है।

काप्सेल्ला बुर्सा पास्तोरिस
CAPSELLA BURSA PASTORIS

अभिलक्षण :- इस पौधे की विश्व में 5-7 प्रजातियाँ हैं जिनमें 3 मध्य एशिया देशों में तथा 1 प्रजाति तुर्कमेनिस्तान में मिलती है। इस पौधे के पुष्प आरपार रेखाकार के आकार के होते हैं। यह क्रुसीफेरी कुल का पौधा है। इसकी ऊँचाई 5-50 से०मी० होती है। यह वार्षिकी पौधा है। पौधे के पत्र पक्षवत् संयुक्त होते हैं। पत्र अधिकतर कांड के निचले हिस्से में रहते हैं, बिलकुल मूल कांड पर होते हैं। इसके पुष्प श्वेत तथा मृदु होते हैं। पुष्प अधिकतर गुच्छे में रहते हैं। पौधे में मार्च से मई तक पुष्प आते हैं तथा जून में फल पकते हैं।

जैविक लक्षण :- पौधे का प्रजनन बीज द्वारा होता है। पौधे की एक शाखा से 50,000 बीज प्राप्त होते हैं। बीज 6 साल तक जीवंत रह सकते हैं।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

विस्तार :- पौधा रेतीले प्रदेश को छोड़कर सब स्थानों पर फैला हुआ है। यह जंगली घास की तरह बगीचों में, कृषि क्षेत्रों में तथा pastures में उग सकता है।

प्राकृतिक उपलब्धि :- यह दुर्लभ वर्ग का पौधा नही है तथा औषधीय उपयोग के लिये इसका पर्याप्त भण्डार है।

औषध रूप में उपयोग :- कच्चे माल के रूप में पौधे की शाखायें, पत्र तथा पुष्प का उपयोग कर सकते हैं। पुष्प लगने के समय पर (अप्रैल-मई) इनको इकट्ठा किया जाता है। इकट्ठा किया हुआ कच्चा माल को खुली हवा में छांव में सुखाया जाता है।

रासायनिक संघटन :- शुष्क पौधे में मैलिक तथा सिट्रिक अम्ल, वीटामिन ए तथा के होते हैं। इसके बीजों में 38 प्रतिशत तैल होता है।

प्रयोग :- बहुत समय से इस पौधे को औषध के रूप में जाना जाता था। इसके औषधीय गुणधर्मों का वर्णन कतुलस (84-54 ई०पू०) सेनेका (55-39 ई०पू०) पत्रोनियस (1 शताब्दी ई० पश्चात्) तथा गेलियस (दूसरी शताब्दी ई० पश्चात्) की पुस्तकों में दिया गया है। इस पौधे की शामक तथा रोग निवारक शक्ति का प्रयोग लोक तथा वैज्ञानिक चिकित्सा, दोनो में किया जाता है। इसका प्रयोग औषध के रूप में रक्तस्राव, उदर तथा पित्तरेचक औषध के रूप में होता है। पौधे के पत्र का प्रयोग सलाद् के रूप में किया जा सकता है।

औषध प्रयोग :- पौधे का ताजा स्वरस 50-60 बूंदे दिन में तीन बार सेवन करें। ताजे सूखे हुए पौधे 2-3 बडी चम्मच (30-45 ग्राम) लेकर उसमें 200-400 मि०ली० उबला हुआ पानी मिलायें। एक घण्टे के बाद तरल को कपड़े से छानकर 1-2 गिलास (200-400 मि०ली०) दिन में तीन बार लें।

काप्सिकुम आन्नुउम
CAPSICUM ANINUM

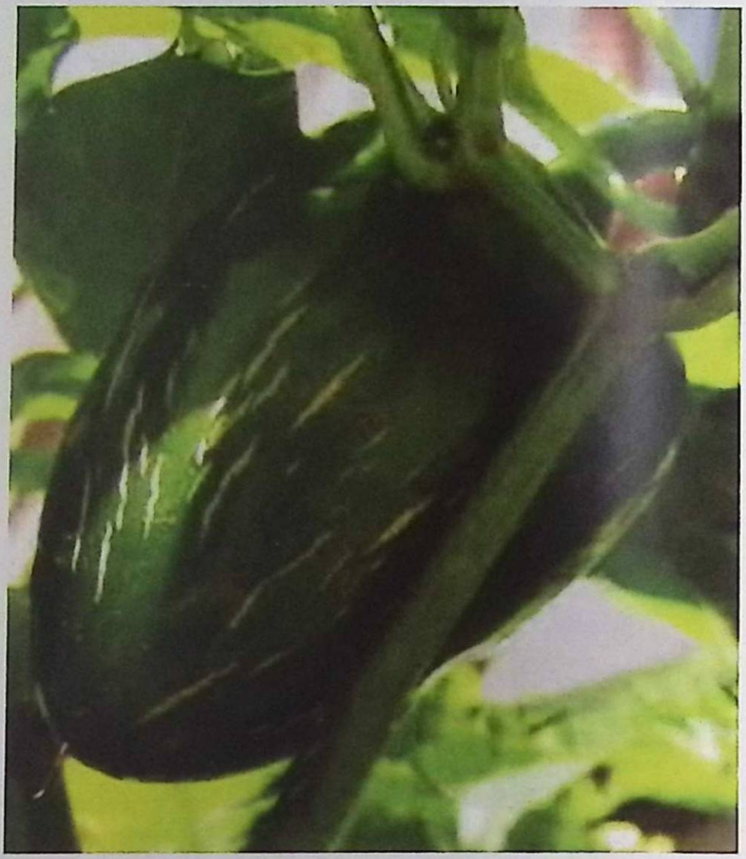

वर्णन :- विश्व में इसकी 50 प्रजातियाँ पाई जाती है। तुर्कमेनिस्तान में एक प्रजाति पाई जाती है।

काप्सिकुम आन्नुउम का मूल निवास मैक्सिको माना जाता है। अमेरिकन इन्डियन्स द्वारा इस पौधे को उगाया जाता था। वर्तमान में यह पौधा हर स्थान पर उगाया जाता है। काप्सिकुम आन्नुउम क्यूरेन्ट्स कुल का एकवर्षीय क्षुप है। हमारे देश में यह बहुवार्षिक, काष्ठमय क्षुप है।

तना पतला, सीधा, नलिकाकार रूप में होता है। मूल भाग शाखायुक्त तथा नीचला हिस्सा काष्ठमय होता है। पौधा 30-60 से०मी० लम्बा होता है। पत्र लम्बे, अण्डाकार अथवा बाणाकार तीव्र लोम lanate किनारों वाले अथवा नग्न होते हैं। पुष्प श्वेत, एकाकी, क्वचित् युग्म अथवा संयुक्त होते हैं। फल शंकु आकार के, 5-15 से०मी० लम्बे तथा अधि कतर रक्तवर्ण के होते हैं। बीज चपटे हलके पीत वर्ण के (3-4 मि०मी० लम्बे) होते हैं।

उगने की विशिष्टतायें :- काप्सिकुम आन्नुउम का प्रजनन बीज द्वारा होता है। 1000 बीजों का वजन 4-6 ग्राम होता है। काप्सिकुम आन्नुउम गर्मी को पसन्द करने वाला तथा प्रकाश की आवश्यकता रखने वाला पौधा है। बीज 20-25 डिग्री से० पर अंकुरित होते हैं। बीज का प्रजनन कार्य 3 साल बना रहता है। पौधा शीत-सात्म्य नहीं है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

विस्तार :- तुर्कमेनिस्तान के सभी जिलों में काप्सिकुम आन्नुउम मिलता है।

प्राकृतिक उपलब्धि :- हमारे देश में काप्सिकुम आन्नुउम विरल पौधा नहीं है। औषधीय उद्देश्यार्थ इसके भण्डार पर्याप्त है।

औषधीय कच्चा माल :- काप्सिकुम आन्नुउम का कच्चा माल जो औषधीय उद्देश्यार्थ उपयुक्त होता है वह फल है। फल जब लाल होते हैं तब उन्हें इकट्ठा किया जाता है। सामान्यतः फल साल में दो बार इकट्ठे किये जाते हैं। औषधीय कच्चे माल को खुली हवा में सूर्य प्रकाश में अथवा विशिष्ट सुखाने वाले कमरों में सुखाया जाता है। काप्सिकुम आन्नुउम के बीज जब फल पक जाते हैं तब इकट्ठे किये जाते हैं। एक टन फलों से लगभग 15-18 किलो बीज उत्पन्न होते हैं। बीजों को 13 प्रतिशत नमी तक सुखाया जाता है।

रासायनिक संघटन :- पौधे के फल में तिक्त, संक्षोभ उत्पन्न करने वाले पदार्थ, आलकलोइड, कैप्सैसिन (0.22 प्रतिशत), उत्पत् तैल, गाढे तेल, स्टीरोइड सेपोनीन्स, केरोटीनोइड्स, अत्यधिक मात्रा में विटामिन सी (1000 मि०ग्रा० प्रतिशत तक) तथा रंजक तत्व होते हैं।

प्रयोग :- हमारे देश में काप्सिकुम आन्नुउम का लम्बे काल से चिकित्सा तथा आहार उत्पाद के रूप में प्रयोग होता रहा है। प्रख्यात चिकित्सक मुहम्मद हुसैन ने अपनी पुस्तक ''मेडिसिन ट्रेज़री'' में इस पौधे के औषधीय गुणधर्मों के बारे में लिखा है। उनका मानना था कि यह पौधा पाचन के लिये है, मस्तिष्क तथा आमाशय से द्रव को दूर करता है, एक टोनिक है, वायु का शोषण करती है तथा विविध प्रकार के शोफ को दूर करती है।

हमारे देश में काप्सिकुम आन्नुउम का मसाले के रूप में प्रयोग होता है। हमारे पूर्वजों ने कहा है, काप्सिकुम आन्नुउम को तिक्त तथा उष्ण रहने दें, लेकिन यह औषध है''। पारंपरिक चिकित्सा में विविध व्याधियों की चिकित्सा के लिये इसका विस्तृत प्रयोग होता है।

वैज्ञानिक चिकित्सा में काप्सिकुम आन्नुउम पट्टीयों (bandage) का प्रयोग मांसपेशिओं के शोथ के लिये होता है तथा काप्सिकुम आन्नुउम अल्कोहल का प्रयोग जठराग्नि की वृद्धि के लिये होता है 15-20 बूंद भोजन के पूर्व दिया जाता है। रक्तवह संस्थान की व्याधियों के लिये काप्सिकुम आन्नुउम का प्रयोग औषध रूप में होता है। इसका प्रयोग अस्थि तथा सन्धियोग के व्याधियों में, आंत्रकृमि तथा पाचन संस्थान की व्याधियों में भी होता है।

औषध कल्पना तथा प्रयोग :- सूखे केप्सीकम के फल 1 चम्मच (5 ग्राम) को एक गिलास (200 मि०ली०) 70 प्रतिशत अल्कोहोल अथवा अल्कोहलिक पेय में मिलाकर ढ़क कर 10 दिन के लिये प्रकाश रहित स्थान पर रख दें। बीच-बीच में धीरे से हिलाते रहें। तत्पश्चात् औषधीय फांट को छान लें। उसमें से 15-20 बूंद दिन में तीन बार भोजन के पूर्व सेवन करें।

औषधीय फांट बनाने की इस पद्धति का अस्थि शूल तथा सन्धिगति की व्याधियों में प्रयोग होता है।

चेल्तिस काउकसिका
CELTIS CAUCASICA

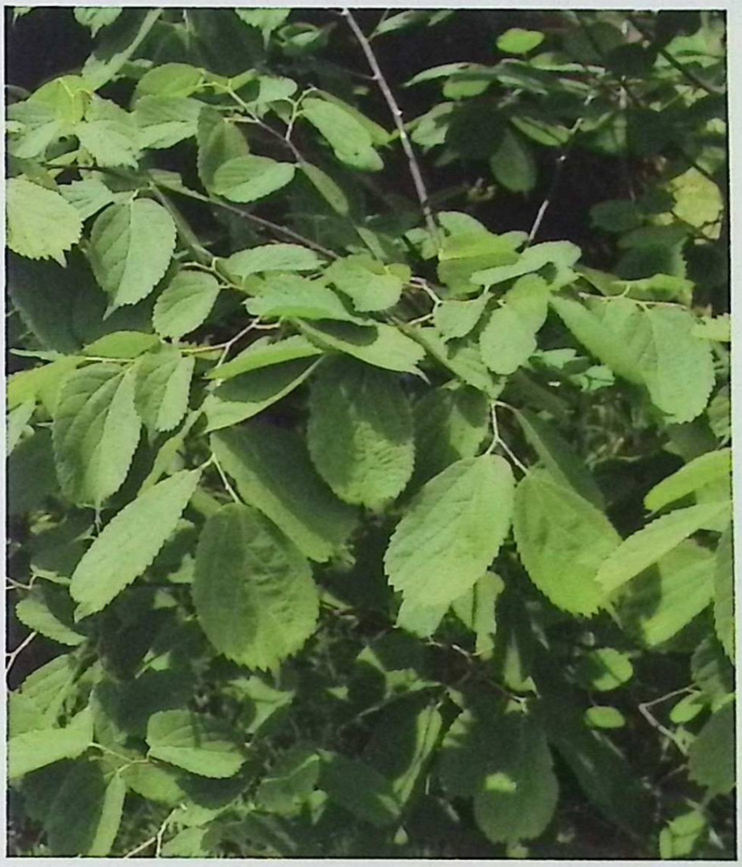

वर्णन :- चेल्तिस काउकसिका सबसे पुराने तथा आश्चर्यजनक पौधों में से एक है। इस पेड़ की विश्व में 50 से ज्यादा प्रजातियाँ हैं, मध्य एशिया में 4 प्रजातियाँ तथा तुर्कमेनिस्तान में केवल 1 प्रजाति मिलती है।

चेल्तिस काउकसिका सेलटिस कुल का है। इसकी लम्बाई 10-15 मीटर होती है। यह पथरीले स्थानों पर उगता है।

पुष्प में स्त्री पुष्प तथा पुंपुष्प दोनों होते है। पेड़ का तना मजबूत तथा सख्त होता है, इस तरह वह अपने नाम ''कठिन वृक्ष अर्थात् दाग-दान'' को सार्थक करता है।

जैविक लक्षण :- चेल्तिस काउकसिका बहुत धीरे से बढ़ता है तथा प्रायः 200 साल जीता है, कभी-कभी 600 साल भी। 7-8 साल की उम्र में इसको पुष्प लगने शुरू हो जाते हैं तथा 8-16 साल की उम्र में फल लगते हैं। फल अगस्त के पहले आधे हिस्से में पक जाते हैं। पेड़ का प्रजनन बीज से होता है। 81-85 प्रतिशत बीज जिंदा

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

रह सकते हैं। यह मुख्यतः पर्वतों पर तथा पथरीले स्थानों पर उगता है।

हमारे देश में फैलता हुआ यह पेड़ बोलशोइ बालखन में, कुरेनदाग, सेर्दार, सोनुदाग, पूर्व-पश्चिमी कोपेतदग में, देश्त, सायवान, ओकातान, कोझलय, ऐदेरे, पोर्देरे, मागतुंगली, सुंबर, मध्य कोपेतदग में, अर्चबील, गोकदेरे, अबेझलयाजा, आर्वाझ, नोहुर, पूर्वीय कोपेतदग में गुर्यहोवदान, च्यर्लाक, बध्यझ में, कोयतेनदग, दायदेरे में उगता है।

प्राकृतिक उपलब्धि :- यह दुर्लभ पौधों में से नहीं है औषधीय उद्देश्यार्थ इसके अधिक भण्डार हैं। हमारे देश में प्रतिवर्ष 3-5 टन औषधीय कच्चा माल इकट्ठा करने की क्षमता है।

औषधीय कच्चा माल :- औषधीय कच्चे माल के रूप में फल तथा बीज का प्रयोग होता है। फल में अम्ल रस होता है। औषधीय उद्देश्यार्थ पेड़ के फल अगस्त के अंत में इकट्ठे किये जाते हैं।

कच्चे माल को कागज़ पर अथवा केतेनी पर अंधेरे स्थान में सुखाया जाता है। तैयार कच्चे माल को कागज़ के थैलों में अथवा बक्सों में संचय किया जाता है। संचय समय अवधि 2-3 साल की है। पेड़ के बीजों को किसी पात्र में दबाया जाता है जिससे तल भाग में तेल इकट्ठा होता है। इसे दो बार छानें। तैयार औषधीय तेल को कांचपात्र में रखा जाता है।

रासायनिक संघटन :- इसमें mucilage, टैनिंन पदार्थ, रंजक पदार्थ, ग्लायकोसाइड्स, कार्बोहाइड्रेट्स, पोलीसेकेराइड्स, तेल, विटामिन सी, साइट्रिक एसिड तथा टैनीन होते हैं।

प्रयोग :- प्राचीन काल से ही तुर्कमेन लोगों में चेल्तिस काउकसिका बुरे नज़रों तथा शब्दों (इस पैड़ का पारंपरिक अर्थ) के विरुद्ध में रक्षक के रूप में जाना जाता है।

मध्य एशिया तथा कोकेसस में फल का प्रयोग आमाशय के शोफ में करते हैं। बीज के तेल का प्रयोग विविध प्रकार के ब्रण की चिकित्सा के लिये प्रयुक्त होता है। तने की त्वक् का प्रयोग कपड़े को रंगने के लिये किया जाता है। पालतू जानवरों के चारे के लिये चेल्तिस काउकसिका के कच्चे पत्रों का प्रयोग किया जाता है।

कल्पना एवं प्रयोग :- 1 बड़ी चम्मच (15 ग्राम) फलों को 1 लीटर उबलते हुए पानी में डालकर 30 मिनट तक रखें। छानकर 100 मि०ली० दिन में तीन बार पियें।

1 बडी चम्मच (15 ग्राम) फलों को दो गिलास (400 मि०ली०) उबलते हुए पानी में धीमी आंच पर 15 मिनट के लिये पकायें। तत्पश्चात् छानकर इसमें से 15-20 बडे चम्मच दिन में तीन बार पियें।

चेन्ताउर्रेआ चिअनुस
CENTAUREA CYANUS

अभिलक्षण :- इसकी विश्व में लगभग 600 प्रजातियाँ हैं जिनमें लगभग 200 प्रजातियाँ मध्य एशिया देशों में तथा 13 प्रजातियाँ तुर्कमेनिस्तान में मिलती हैं।

कोम्पोसिते कुल का यह लगभग 25-60 से०मी० ऊँचा पौधा है। कांड (तना) शाखायुक्त होता है। पत्र भूरे-हरे तथा मकड़ी के जाले जैसे रूंएदार होते हैं। पुष्प टोकरीनुमा गुच्छों (बास्केट) में कांड के शीर्ष पर उत्पन्न होते हैं, कांड विभाजित होती है। पुष्प नपुंसक, नीले वर्ण के, लगभग 2 से०मी० ऊँचे, अन्दरुनी प्रकाशक नलिकाकार होते हैं। फल रेसेदार, पीताभ भूरे, लाल बीज युक्त होते हैं। फल मई-जून में पकते हैं।

विस्तार :- दश्केरे में, मागत्यंगुलय तथा अश्खाबाद के कुछ हिस्सों में होता है।

पारिस्थिक :- चेन्ताउर्रेआ चिअनुस एक अपतृण पौधा है। इसको रेतीले तथा अर्धरेतीले प्रदेश पसंद आते हैं। चेन्ताउर्रेआ चिअनुस के पुष्प का प्रयोग औषधीय कच्चे माल के रूप में होता है। इनको 14 प्रतिशत नमी वाले अंधेरे मकानों में सुखाते हैं। इससे राजकीय मानक का पालन होता है। 15-20 किलोग्राम के थैलों में संचय किया जाता था। समाप्ति समय 1 साल का है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

रासायनिक संघटन :- चेन्ताउर्रेआ चिअनुस के पुष्प में सायेनीन ग्लायकोसाइड, खनिज लवण मिलते हैं। ये ज्ञात पदार्थ नहीं हैं। फलों में अल्कलोइड्स करते हैं।

प्रयोग :- राष्ट्रीय चिकित्सा में इसका प्रयोग मूत्रल के रूप में तथा वृक्कशोथ, छोटे आंत्र का ऊपरी भाग की व्याधि, नेत्र व्याधि, कैन्सर, हृद्रोग, नाड़ीतंत्र के विकार, वृक्क रोग तथा आमाशय की व्याधियों में होता है।

कल्पना तथा प्रयोग :- पुष्प 1 चम्मच को 200 मि०ली० पानी में मिलाकर 15 मिनट के लिये उबालें। 45 मिनट के लिये ठण्डा करें। छानकर अंधेरे स्थान में दो दिन के लिये रखें। तत्पश्चात् तीन बार सेवन करें। मूत्रविसर्जन की चिकित्सा में दो चम्मच mays तथा 2 चम्मच चेन्ताउर्रेआ चिअनुस के पुष्प लें।

इसबगोल 15 ग्राम को 1 लिटर पानी में मिलायें। इस सार का प्रयोग शूल के स्थान पर पट्टी के रूप में करें। इससे आंखों का प्रक्षालन करें। यह कन्जक्टीवाइटिस की चिकित्सा में मददगार है।

चेन्ताउरिउम पुलकेल्लुम
CENTAURIUM PULCHELLUM

वर्णन :-चेन्ताउरिउम पुलकेल्लुम एक औषधीय पौधा है। विश्व में 50 प्रजातियां है जिनमें मध्य एशिया की 3 तथा तुर्कमेनिस्तान की तीन प्रजातियां शामिल हैं।

पौधा बहुत सुंदर है तथा प्राचीन काल से जाना जाता है। सेंतार चिरोन जो कि आस्कलेपिअस और शिक्षक था, उसके सम्मान में डायोस्कोराइडी ने इस पौधे को यह नाम दिया था। प्राचीन ग्रीक मान्यतानुसार चीरोन पेलिओन (पर्वत) में रहता था, देवों तथा नायकों की चिकित्सा करता था तथा उनको पौधों की पहचान कैसे करना, उनके औषधीय गुणकर्म तथा कैसे प्रयोग करना ये सिखाता था। इसके व्रण रोपण गुण के कारण इस पौधे को चेन्ताउर का पौधा भी कहा जाता है। लेकिन उसके लैटिन नाम सेंतारिआ का अर्थ 100 सोना (जैतुम-एक सौ तथा औरुम- सोना) होता है। इस पौधे का तुर्कमेन नाम ''अतिंगुल'' ''स्वर्ण से बना पुष्प'' इसकी नरम संरचना तथा पुष्प, जो स्वर्ण वर्ण के होते हैं, के आकार के साथ जुड़ा हुआ है।

चेन्ताउरिउम पुलकेल्लुम एकवर्षीय 10-40 से०मी० ऊँचा जेन्टीमेसी कुल का क्षुपीय पौधा है। मूल rachis तथा शाखारहित होता है। तना सीधा, चतुष्कोणीय होता है। पत्र लम्बाकार, द्विभाजित होते हैं। नीचे के पत्र rosette में मिले हुए नहीं होते हैं, ये अण्डाकार, elliptic अथवा लम्बगोल अधिकतर 5 सिरायुक्त होते हैं। ऊर्ध्व पत्र लम्बे, भालाकार, कुंठित अथवा तीक्ष्णाग्र, अवृंत, 2-5 से०मी० लम्बे तथा 0.5-1.5 से०मी० चौडे होते हैं।

जैविक लक्षण:- चेन्ताउरिउम पुलकेल्लुम का प्रजनन बीज द्वारा होता है। पौधा अल्पजीवि है।

विस्तार :- चेन्ताउरिउम पुलकेल्लुम बोलशोई बालखन में, जीगीर्देक, गाराजाचेश्मे, दक्षिण-पश्चिमी कोपेतदग में, मध्य कोपेतदग में, गारायालच्य, शोर्सुव, सार्यमसाकलय, प्रोटलादनोये, सुलुकली, सेकीइयप, गोर्माब, गोकदेपे, बागीर, रोबरगोवस्कीय, दाश्तोय, पूर्वीय कोपेतदग, गुर्यहोवदान, बध्यझ, ग्यझयल्ज़ार, तथा कुगीतांग में फैला हुआ है।

प्राकृतिक उपलब्धि :- चेन्ताउरिउम पुलकेल्लुम तुर्कमेनिस्तान का दुर्लभ क्षुपीय पौधा है। औषधीय उद्देश्यार्थ प्रयोग के लिये भण्डार को सीमित किया गया है।

रासायनिक संघटन :- चेन्ताउरिउम पुलकेल्लुम में तिक्त आल्कलोइड्स, ग्लायकोसाइड्स, एस्कोर्बिक एसीड तथा इथरीयल तेल होते हैं।

प्रयोग :- प्राचीन समय में चेन्ताउरिउम पुलकेल्लुम के औषधीय गुणधर्मो के बारे में प्रख्यात वैज्ञानिक फीओफ्रास्ट (39-65 ई०पू०) प्लाइनी, वरिष्ठ (23-79 ई०पू०) के कार्यो में वर्णन है। प्रख्यात वैज्ञानिक तथा चिकित्सक मध्य युग में सेन्टारियम का प्रयोग शूल, आंत्र तथा गर्भाशय की चिकित्सा में करते थे। यह पित्तस्रावक के रूप में असरदार है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

पारंपरिक चिकित्सा तथा चिकित्सा में चेन्ताउरिउम पुलकेल्लुम जठराग्नि उद्दीपनार्थ, अपस्मार (epilepsy) तथा ज्यादा अच्छे पाचन के लिये प्रयोग होता है। साथ ही यह कामला, यकृत्, वृक्क तथा आमाशय की व्याधियों में तथा कृमिहर के लिये बहुत असरदार है।

कल्पना तथा प्रयोग :- 1 बडी चम्मच (15 ग्राम) चेन्ताउरिउम पौधे में 1 गिलास (200 मि०ली०) पानी मिलाकर धीमी आंच पर 15 मिनट तक उबालें। इसमें से 1 बडी चम्मच (15 ग्राम) क्वाथ दिन में तीन बार भोजन के पश्चात् लें।

1 बडा चम्मच शुष्क चेन्ताउरिउम पौधे में 1 ग्लास (200 मि०ली) उबला हुआ पानी मिलाकर रखें। छान लें। इस फांट में से 1 बड़ा चम्मच (15 ग्राम) दिन में तीन बार भोजन के पूर्व लें।

1 बडा चम्मच चेन्ताउरिउम पौधे को एक गिलास (200 मि०ली०) पानी में मिलाकर 2 घण्टे तक रखें। छान लें। 1-2 बड़े चम्मच दिन में 3-4 बार भोजन पूर्व लें।

दो बड़े चम्मच (10 ग्राम) चेन्ताउरिउम पौधे में 2 बड़े चम्मच (10 ग्राम) 70 प्रतिशत स्पिरिट एक तामचीनी पात्र में मिलाकर ढक्कन लगाकर 1 सप्ताह तक रखें। बीच बीच में हिलायें। छानकर 20-30 बूंदे 15-20 मिनट भोजन के पूर्व 3 बार लें।

चेफालारिआ सीरिआका
CEPHALARIA SYRIACA

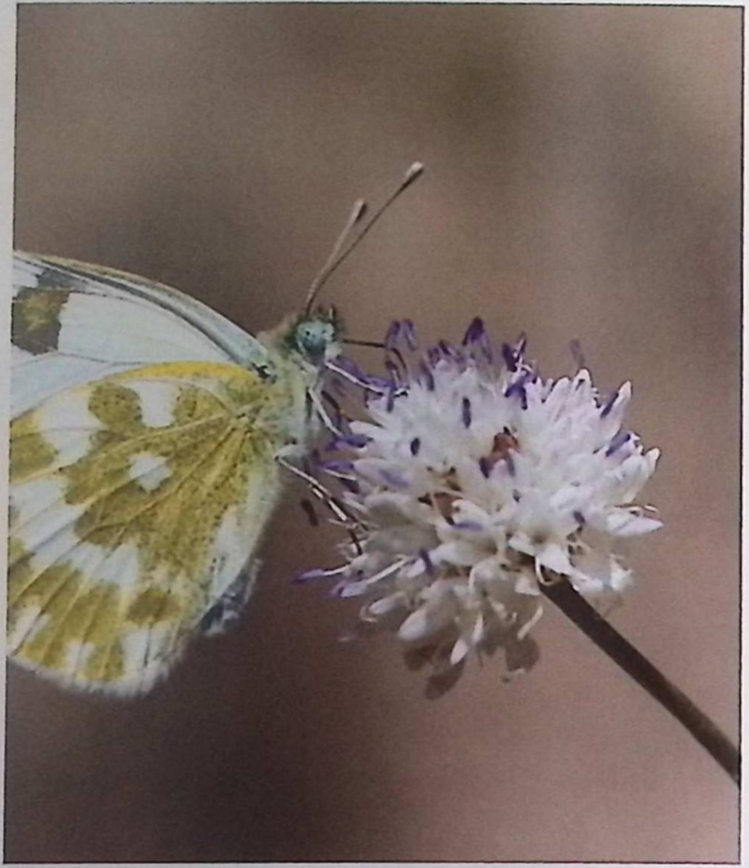

अभिलक्षण:- इस प्रयोज्यांग पौधे की 65-70 प्रजातियाँ मिलती हैं, मध्य एशिया देशों में 21 प्रजातियाँ तथा तुकमेनिस्तान में 2 प्रजातियाँ मिलती हैं।

चेफालारिआ सीरिआका एक एकवर्षीय, क्षुपीय 20-50 से०मी० ऊँचा पौधा है।

विशिष्टतायें :- हमारे देश में यह समुद्र तल 400-800 मीटर की ऊँचाई पर उगता है। इसको पुष्प तथा फल मई तथा जुलाई में लगते हैं। बीज द्वारा इसका प्रजनन होता है।

विस्तार :- हमारे देश में चेफालारिआ सीरिआका दक्षिण-पश्चिमी तथा मध्य तुर्कमेनिस्तान में पाया जाता है। गोकदेरे में, रोबेरगोस्कीय, पूर्वीय कोपेतदग, बोध्यझ, ग्यझगादीक तथा कोयतेनदग में मिलता है।

प्राकृतिक उपलब्धि :- हमारे देश में यह दुर्लभ पौधा है। औषधीय उद्देश्यार्थ इसकी खेती करने की सलाह दी जाती है। क्योंकि यह दुर्लभ पौधा है इसीलिये इसको प्राकृतिक अभयारण्य सुंट-हासारदाग, कोपेतदग, बध्यझ तथा कोयतेनदग में संरक्षित किया जाता है।

प्रयोज्य कच्चा माल :- पौधे का पुष्प इसका प्रयोज्य कच्चा माल है। चेफालारिआ सीरिआका के पुष्प आने के दरम्यान मई-जून में इन्हें इकट्ठा किया जाता है तथा

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

ठंडे स्थान पर सामान्य तरीके से सुखाया जाता है। प्रयोज्य कच्चे माल को कपड़ों के थैलों में संग्रहित किया जाता है। वीर्यकाल समाप्ति अवधि 1-2 साल की है।

रासायनिक संघटन :- चेफालारिआ सीरिआका में 7.89 प्रतिशत सैपोनीन्स, 0.29 प्रतिशत आल्कलोइड्स, विटामिन सी, उपयोगी पदार्थ 2.86 प्रतिशत होते हैं। पत्र में मीथाइलग्लायकोसाइड्स, कार्बोहाइड्रेट्स, 3.6 प्रतिशत सैपोनीन्स 0.15 प्रतिशत आल्कलोइड्स, विटामीन सी, उपयोगी पदार्थ 0.3 प्रतिशत होते हैं। तने में 2.06 प्रतिशत आल्कलोइड्स, विटामिन सी, 1.3 प्रतिशत उपयोगी पदार्थ होते हैं। पौधे में सैपोनीन्स तथा आल्कलोइड्स होते है। पौधे के पुष्प में 2.9 प्रतिशत सैपोनीन्स, विटामिन सी, उपयोगी पदार्थ 3.3 प्रतिशत होते हैं। फल में इरीडोइड्स होते हैं। बीज में 19.6 प्रतिशत से 25 प्रतिशत तेल (जिसमें लोरेन, मीरीस्टीन, पामीटीन, स्टीएरीन, ओलीन तथा लीनोलीन होते हैं।

प्रयोग :- राष्ट्रीय चिकित्सा में पौधे के पुष्प को नेत्र रोग की चिकित्सा के लिए फांट तथा कल्क बनाने के लिये प्रयोग करते हैं। उद्योग में बीज का प्रयोग होता है। इसका आटा तैयार करते समय उसको अच्छी खुश्बू देने के लिये मिलाया जाता है। बीज उद्योग में तथा तकनीकी उद्देश्यार्थ प्रयुक्त होते हैं।

कल्पना तथा औषध प्रयोग :- 1 चम्मच (5 ग्राम) पौधे में 1 गिलास (200 मि०ली०) ऊबला हुआ पानी मिलाकर 30 मिनट रखें। फांट को छानकर उसमें से 1 बड़ा चम्मच (15 ग्राम) भोजन पूर्व दिन में तीन बार लें।

चेफालारिआ सीरिआका के पुष्प में 2 गिलास (400 मि०ली) पानी मिलाकर धीमी आंच पर 5-10 मिनट तक उबालें। छानकर उसमें से एक गिलास (100 मि०ली०) दिन में तीन बार लें।

चेर्चिस ग्रिफ्फितीई
CERCIS GRIFFITHII

वर्णन :- चेर्चिस ग्रिफ्फितीई एक आश्चर्यजनक पौधा है। तुर्कमेनिस्तान सहित दुनिया में 7 प्रजातियां मिलती हैं। ये वन्य पौधे के रूप में वर्णित हैं।

तुर्कमेन शास्त्रीय साहित्य में चेर्चिस ग्रिफ्फितीई को अर्पित कवितायें लिखी गई है। चेर्चिस ग्रिफ्फितीई 3-5 मीटर ऊँचा पत्र गिराने वाला वृक्ष या गुल्म है। पत्र गोल अथवा हृदयाकार, पत्रधार अखंड, पत्रफलक (सतह) निस्तेज-चिकना होता है। पुष्प बैंगनी-लाल तथा नज़दीकी गुच्छों में पत्रकोण में तथा कांड पर लगते है। चेर्चिस ग्रिफ्फितीई को अप्रैल में पुष्प लगते हैं तथा फल मई-जून में लगते हैं। फल एक से०मी० चौड़ा तथा 5 से०मी० लम्बा नाशपाती होता है।

जैविक लक्षण :- चेर्चिस ग्रिफ्फितीई भूमध्य समुद्र की प्रजातियों के समुह का वृक्ष है। यह समुद्र तल से 600-1000 मीटर की ऊँचाई पर उगता है। पौधे में छोटे छोटे पत्र आने के समय अथवा उससे पहले इसको पुष्प लगते हैं। चेर्चिस ग्रिफ्फितीई का प्रजनन बीज द्वारा होता है।

विस्तार :- चेर्चिस ग्रिफ्फितीई दक्षिण-पश्चिमी कोपेतदग में, एयदेरे, मागत्यंगुली, सुंबर, कोझलय, एकीझदाग में, मध्य कोपेतदग में, नोहुर, आर्वाझ, होर्पान, केन्योन ऐझ, काशयालच्य, ग्यर्कग्यझ, गुर्नुसु, पूर्वीय कोपेतदग में, पौधा सूक्ष्म मलबा तथा पथरीली ढलानों पर उगता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

प्राकृतिक उपलब्धि :- चेर्चिस ग्रिफ्फितीई तुर्कमेनिस्तान का एक दुर्लभ पौधा है। भण्डार को औषधीय उद्देश्यार्थ प्रयोग करने के लिये सीमित किया गया है। पौधे की खेती होती है। चेर्चिस ग्रिफ्फितीई का प्राकृत स्थान पूर्वीय कोपेतदग में गुर्यहोवदान तक है। यहां 3.5 हैक्टर क्षेत्र में उसका निवास है, घनत्व 450 वृक्षों का है। इसमें से लगभग आधे वृद्ध (पुराने) 3-5 मीटर ऊँचे पेड़ हैं। प्रति हैक्टर 100-200 पेड़ उगते हैं। पेड़ों का समुदाय अर्थात् आर्गुवान का उपवन, कोपेतदग अभयारण्य की गुर्यहोवदान शाखा में संरक्षित है।

औषधीय कच्चा माल :- औषधीय उद्देश्यार्थ चेर्चिस ग्रिफ्फितीई के पुष्प इक्ट्ठे किये जाते हैं। कच्चे माल को सामान्य परिस्थितियों में तैयार किया जाता है। तैयार माल को कागज़ के बक्सों अथवा कांच पात्र में इकट्ठा किया जाता है। समाप्ति अवधि 1-2 साल की है।

रासायनिक संघटन :- चेर्चिस ग्रिफ्फितीई के रसायनिक संघटन का अभी तक पूरा अध्ययन नहीं हुआ है। पौधे की त्वक् में 3.45 प्रतिशत टैनिक पदार्थ होते है, लेकिन पत्र में पोलीसेकेराइड्स सहित 1.36-1.65 प्रतिशत तक होता है।

प्रयोग :- तुर्कमेन लोक चिकित्सा में (सायवान गांव, देश्त, बाहालर्य, etrap का बोर्मे) क्षेत्रों में चेर्चिस ग्रिफ्फितीई के पुष्प के फांट तथा क्वाथ का प्रयोग तमक श्वास में प्रयोग किया जाता है। पौधे के पुष्प की चाय एक निद्राजनक नुस्खा है। पुष्प तथा भेड़ की पूंछ की वसा का मिश्रण चर्म व्याधियों में लाभप्रद है।

कल्पना तथा प्रयोग :- चेर्चिस ग्रिफ्फितीई के शुष्क पुष्प दो बड़े चम्मच (30 ग्राम) में 1 लीटर पानी मिलाकर रखें। सार निकलने दें। छानकर एक गिलास (100 मि०ली०) दिन में तीन बार भोजन पूर्व लें।

एक तामचीनी पात्र में 1 बड़ा चम्मच चेर्चिस ग्रिफ्फितीई के पुष्प में एक गिलास (200 मि०ली०) उबला हुआ पानी मिलाकर धीमी आंच पर 10 मिनट के लिये उबालें। ठंडा होने दें। छानकर एक बड़ा चम्मच (15 ग्राम) दिन में 3-4 बार भोजन पूर्व लें।

खरल में दो बड़े चम्मच (30 ग्राम) चेर्चिस ग्रिफ्फितीई के शुष्क पुष्प का चूर्ण डालकर उसमें भेड़ के पूँछ की वसा 50 ग्राम मिलायें और पीयें। एक कटोरे में रखकर ढक्कन लगाकर 1 सप्ताह के लिये छोड़ दें। त्वचा के घाव (आघात या चोट) पर मलहम के रूप में लगायें।

चेताराक ओफ्फिचिनारुम
CETARACH OFFICINARUM

लक्षण :- हमारे देश में यह प्राचीन पौधों में से है तथा तुर्कमेनिस्तान में उसकी 17 प्रजातियाँ मिलती हैं। यह प्रयोज्य पौधा नाजुक असामान्य स्वरूप का है। तुर्कमेनिस्तान के वनस्पति जगत में यह पुराना, सुविकसित पुष्पहीन पौधा है। चेताराक ओफ्फिचिनारुम अपनी तरह का अकेला, बहुवर्षीय 5-10 से०मी० ऊँचा पौधा है। पत्र शल्कल से आच्छादित होते हैं।

उगने की विशिष्टतायें :- चेताराक ओफ्फिचिनारुम समुद्र तल से 1000-2500 मीटर की ऊँचाई पर मध्य तथा ऊँची पर्वत श्रृंखला पर उगते हैं। इसके बीजाणु जून-जुलाई में पकते हैं। इस पौधे में 750 हजार से 750 मिलियन तक बीजाणु होते हैं। गर्मी की शुरूआत में चेताराक ओफ्फिचिनारुम के पत्र आभ्यन्तर तथा बाह्य रोमश भाग के साथ इकट्ठे किये जाते हैं। पौधे को प्रकाश की आवयकता होती है तथा यह खुले स्थानों में उगता है।

विस्तार :- इसके विस्तार के आधार पर, चेताराक ओफ्फिचिनारुम को भूमध्य समूह में माना गया है। हमारे देश में यह पौधा कुरेनदाग में दुएची बोलशोइ बालखन नाझारेकेरेम, दक्षिण-पश्चिमी कोपेतदग, एयदेरे, गुर्यगोल तंगघाटी, मध्य कोपेतदग, मुर्झेदाग, गोकदेरे, गुर्तलयसुव, खुंचे, गींदीवार, दुशाक, तुतलय, शुशांगा, आर्वाझ (काझी मेझोवो

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

तथा कोयतेनदग में मिलता है। यह पथरीली ढलानों पर तथा पर्वत की दरारों में मिलता है।

प्राकृतिक उपलब्धि :- चेताराक ओफ्फिचिनारुम एक दुर्लभ पौधा है। औषधीय उद्देश्यार्थ भण्डार पर्याप्त नहीं है। प्रयोज्य कच्चे माल सामान्य पद्धति में तैयार किया जाता है। तैयार कच्चे माल को कागज़ के थैलों में संचय किया जाता है। संचय की समय अवधि 1-2 साल है।

रासायनिक संघटन :- पौधे के तिक्त रस, श्लेष्मा, मधुर रस तथा उत्पत् तेल इसके उपयोगी पदार्थ हैं।

प्रयोग :- प्राचीन काल के चिकित्सकों को चेताराक ओफ्फिचिनारुम के औषधीय गुणों के बारे में पता था। होरेस(65-8) वीर्गील(70-19)तथा कोलुमेलान (1) ने अपने कार्यों में इसके बारे में लिखा हैं। पूर्वीय राष्ट्रीय चिकित्सा में चेताराक ओफ्फिचिनारुम का प्रयोग लम्बे समय से हो रहा है। चेताराक आफ्फिचिनारुम का प्रयोग मागत्यंगुलय, नोहुर, कोर्नगुम्मे, सायवान, बाहालर्य, गोकदेपे, गेमाप, आर्चबील, बागीर तथा कोयतेनदग में मायग्रेन, उदरशूल तथा आंत्रकृमि में किया जाता है। इसका प्रयोग रोपक तथा स्थापक औषध के रूप में भी किया जाता है। प्रख्यात वैज्ञानिक तथा चिकित्सक सेयीत् इस्माइल गुर्गेन्ली ने अपनी पुस्तक ''ट्रेज़री आफ खोरेज़्म शाह'' में चेताराक ओफ्फिचिनारुम का कृमिज रोगों में प्रयोग के बारे में लिखा है। पौधे का प्रयोग रोपक तथा स्थापक रूप में होता हैं।

हमारे समय में चेताराक ओफ्फिचिनारुम का औषधीय फांट आमाशयशोथ, आमाशय के व्रण तथा आंत्रशोथ में किया जाता है।

पत्रों से निर्मित की गई औषध रेचक कृमिहर (कृमि निः सारक) तथा गर्भपातजनक असर दिखाती है। पारंपरिक चिकित्सा में इसका प्रयोग प्लीहा तथा मूत्राशय की व्याधियों के लिये भी होता है। चेताराक ओफ्फिचिनारम का प्रयोग विविध व्याधियों में युरोप, एशिया, अमेरिका, अफ्रीका, ऑस्ट्रेलिया में तथा अरब, चीन, तिब्बत एवं भारत की पारंपरिक चिकित्सा में तथा होमियोपैथी में होता है।

औषध कल्पना तथा प्रयोग :- चेताराक ओफ्फिचिनारुम का पौधा एक बड़ा चम्मच (15 ग्राम) का चूर्ण बनाकर वस्त्र से छानकर व्रण पर लगायें। तैयार किये चूर्ण को मक्खन अथवा वैसलीन में मिलाकर पट्टी के रूप में प्रयुक्त करें।

एक ताप रहित पात्र में 1 बड़ा चम्मच (15 ग्राम) चेताराक ओफ्फिचिनारुम एक लीटर पानी में मिलाकर 1-2 घण्टा तक रखें। तैयार फांट को छानकर 1 गिलास (200 मि०ली०) गर्म औषध दिन में भोजनपूर्व तीन बार लें।

एक गिलास उबलते हुए पानी में 1 बड़ा चम्मच चेताराक ओफ्फिचिरारुम की पत्तियों का चूर्ण मिलाकर धीमी आंच पर 5-10 मिनट तक उबालें। तैयार क्वाथ को छानकर आधा गिलास (100 मि०ली) दिन में तीन बार भोजन पूर्व सेवन करें।

केइलांतेस पर्सीका
CHEILANTHES PERSICA

वर्णन :- यह एक सजावटी तथा औषधीय पौधा है। प्राचीन भूमध्य समुद्र से यह अवशिष्ट पौधा है। तुर्कमेनिस्तान में इसकी दो प्रजातियां मिलती हैं।

यह तृणीय पौधा 5-10 से०मी० ऊँचा रहता है तथा समुद्र तल से 600-2800 मीटर की ऊँचाई पर गीले स्थानों तथा देवदार के जंगलों में उगता है। बीजाणुओं की मदद से इस पौधे का प्रजनन होता है।

विस्तार :- हमारे देश में यह बोलशोइ बालखान, आलेकपेर, गीर्कदेपे, बागीर, एन्वा, गीनोहवार, गोर्माप, सुलुकली, नेध्रोनोस्कय, कोइतान, आकसुव दाराइदेप, खोजायपीलाल तथा ग्यरयकग्यझ में उगता है।

प्राकृतिक उपलब्धि :- तुर्कमेनिस्तान में यह दुर्लभ पौधा है। कोपेतदग तथा कोयतेनदग के प्राकृतिक अभयारण्यों में इसका संरक्षण किया गया है।

औषधीय कच्चा माल :- इस पौधे के पत्रों का प्रयोग औषधीय उद्देश्यार्थ किया जाता है। इसको इकट्ठा

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

करना तथा सुखाना सामान्य रूप से किया जाता है। कच्चे माल को कागज़ की पेटियों में रखा जाता है। संचय समय अवधि 1-2 साल की है।

रासायनिक संघटन :- अभी तक पौधे के रासायनिक संघटन का पूरी तरह अध्ययन नहीं किया गया है। इसके कांड में श्लेष्मा तथा शर्करा है।

प्रयोग :- तुर्कमेन की लोकप्रिय चिकित्सा में पौधे से निर्मित चूर्ण का प्रयोग रक्तस्राव रोकने वाले औषध योग के रूप में किया जाता है। पौधे के पत्र से निर्मित सिरप तथा औषधीय सुरासार आमाशय शोथ तथा आमाशय व्रण में प्रयुक्त होते हैं।

कल्पना तथा प्रयोग :- पौधे के पत्रों से निर्मित चूर्ण 1 बड़ा चम्मच (15 ग्राम) का प्रयोग व्रण से होने वाले रक्तस्राव तथा अन्य व्याधियों में किया जाता है।

केइलांतेस प्तेरीदिओइदेस
CHEILANTHES PTERIDIOIDES

वर्णन :-इसका प्रयोग औषधीय तथा सजावटी पौधे के रूप में होता है। तुर्कमेनिस्तान में केवल 2 प्रजातियाँ मिलती हैं।

यह तृण साइनेटेरस पौधों के कुल का है। लम्बाई 5-15 से०मी० होती है। यह बहुवर्षीय पौधा है। पौधे के मूल, एक गुच्छा बनाते हैं। मूल से निकला हुआ कांड भूरे रंग के त्वक् से आच्छादित होता है।

पत्र की धार चिकनी नहीं है तथा पत्तियां भूरी हरी होती है। ऊपर का हिस्सा नंगा तथा नीचे का हिस्सा कभी-कभी लोहयुक्त होता है। पत्र के धारी भूरे अथवा काले होते हैं। इसका सिरा विन्यास हरी त्वचा से आच्छादित होता है। पत्र का आकार अंडे की तरह लंबाकृति होता है। पत्र के अंतिम भाग तीन बार पक्षवत् विभाजित होता है तथा प्रत्येक पक्षवत् भाग के अंत में एक त्रिकोणाकार होता है।

जैविक लक्षण :- यह औषधि समुद्र तल से 500-1200 की ऊँचाई पर उगता है। यह पथरीली जगहों पर तथा पर्वत के दरारों अथवा छाँव वाले नम स्थानों पर उगना पसंद करता है। बीजाणु द्वारा पौधे का प्रजनन हो सकता है। ये मई-जून में पकते हैं।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

विस्तार :- यह पौधा बोलशोई बालखन के पहाड़ों में देशीकलीदाशाद, जेबेल, नाझारेकेरेम, मध्य कोपेतदग पर्वतों, गोकदेरे, स्नो लेपर्ड केन्यन, स्कोबेलेव गेट, कोयतेन पर्वतो अकसुवदेरे, दारायदेरे तथा खोजायपीलात में फैला हुआ है। ग्यझयकग्यड में यह ओक वृक्षों, हरियाली वाले वृक्षों तथा अन्य तृणों के बीच में मिलता है।

प्राकृतिक उपलब्धि :- यह तृण दुर्लभ माना जाता है इसका औषधीय उद्देश्यार्थ संरक्षण करना चाहिये। इसलिये कोपेतदग तथा कोपेतदग पर्वतों पर इसके भण्डार का संरक्षण किया गया है। इसको उगाने तथा खेती करने की भी सलाह दी जाती है।

औषधीय कच्चा माल :- औषधि बनाने के लिये ताजे पत्र को कच्चा माल माना गया है। इसको कैंची से काटकर खुली हवा में तथा छांव में सुखाते हैं। कच्चे माल को कागज़ की पेटियों में संचय किया जाता है। संचय की समय अवधि 1-2 साल है।

रासायनिक संघटन :- रासायनिक संघटन का अध्ययन नहीं किया गया है। यह ज्ञात है कि तृण में टैनिंग पदार्थ एंव ग्लायकोसाईड्स भी हैं।

प्रयोग :- गोकदेपे तथा कोइतेन में लोक चिकित्सा में तृण के ताजे पत्रों का प्रयोग होता है। इसका प्रयोग आमाशय शोथ तथा आमाशय के व्रण पर होता है।

कल्पना तथा प्रयोग :- एक बड़ा चम्मच पीसे हुए पत्रों के चूर्ण को व्रण पर दिन में दो बार (सुबह तथा शाम) लगायें। कूटे हुए पत्र 1 बड़े चम्मच 200 मि०ली० उबलते हुए पानी में मिलाकर 1-2 घण्टों के लिये रखें। तत्पश्चात् छानकर 100 मि०ली० दिन में तीन बार सेवन करें।

केनोपोदिउम आल्बुम
CHENOPODIUM ALBUM

वर्णन :- प्राचीन काल से इसका औषधीय पौधे के रूप में चिकित्सार्थ प्रयोग किया जाता है। विश्व में 100-150 प्रजातियाँ है जिसमें मध्य एशिया में लगभग 36 प्रजातियाँ तथा तुर्कमेनिस्तान में केवल 9 प्रजातियाँ मिलती हैं।

यह पौधा सेलमेलर कुल का है। यह 40-120 से०मी० लम्बा, वार्षिकी, पत्र अण्डाकार, पुष्प छोटे हरा, क्षेत्र का गुच्छा बनाते हैं। पौधे का पुष्प काल एवं प्रजनन जून-अक्तूबर में होता है। एक पौधा 1000 बीज देता है।

विस्तार :- हमारे देश में ये पौधे नदी की खाईयों में तथा पर्वतीय झरनों के समीप उगते हैं।

औषधीय उत्पाद : यह पौधा दुर्लभ नहीं है। कच्चे माल के लिये पौधों का भण्डार पर्याप्त है। कच्चे माल को पुष्प लगने से पहले इकट्ठा करना चाहिये तथा सुखाना चाहिये। तैयार कच्चे माल को कागज़ के थैलों में संचय करना चाहिये। संचय समय अवधि 2 साल है।

रासायनिक संघटन :- पौधे में प्रोटीन, विटामिन सी, इ, ए, उत्पत् तत्व तथा अन्य पदार्थ मिलते हैं।

प्रयोग :- पौधे में उत्तेजना शामक तथा मृदु जनक गुण हैं तथा प्रतिश्याय के लिये प्रयुक्त किया जाता है। पौधे का प्रयोग न्युरोसिस में भी होता है। लोक चिकित्सा में इस पौधे का प्रयोग यकृत्, प्लीहा के रोग, शरीर के शूल, संकोच, अपस्मार तथा शोथ में होता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

प्रयोग विधि :- एक बड़ा चम्मच पौधे में 200 मि०ली० उष्ण जल मिलाकर 15 मिनट तक रखें, तत्पश्चात् छान लें। एक बडा चम्मच पत्र लेकर 200 मि०ली० पानी में 10 मिनट के लिये उबालें। ठंडा करें तथा छान लें। 50 ग्राम दिन में तीन बार लें।

चिकोरिउम इंतीबुस
CICHORIUM INTYBUS

अभिलक्षण :- विश्व में इस अपतृण औषधीय पौधे की 12 प्रजातियाँ उगती हैं, जिनमें 4 मध्य एशिया देशों में तथा एक प्रजाति तुर्कमेनिस्तान में मिलती है।

चिकोरिउम इंतीबुस कोप्पोसिते कुल का 30-120 से०मी० ऊँचा बहुवर्षीय पौधा है। इसका कांड सीधी, शाखायुक्त तथा रोमाच्छादित होता है। मूल के पास रहने वाले पत्र लम्बे तंतुमय, पक्षवत् विभाजित, दबे हुए तथा अंत में कटे हुए होते हैं। कांड पत्र अण्डाकार रंग के बैंगनी, पुष्प टोकरी रूप में इकट्ठे होते हैं।

इसके फल में 3-5 अंडाकार छोटे बीज वाले होते हैं। यह 2-3 मि०मी० लम्बा होता है। इसका वर्ण हलका धूंसर, बाहरी सतह छोटे बिन्दुओं से आच्छादित तथा इसके अंत में भूसा होता है।

उत्पत्ति स्थान :- पौधा समुद्र तल से 400-600 मीटर की ऊँचाई पर उगता है। इसको मई-जुलाई में पुष्प लगते हैं। पुष्प दिन के समय में खिलते हैं तथा सुबह एवं शाम को बंद हो जाते है। इसको उर्वरीकृत भूमि पर उगना पसंद है। इसे मुख्यतः गलियों में, बगीचों के पास, पहाड़ी प्रदेशों में तथा पर्वतीय नदियों के मुहाने एवं झरणों के पास उगना पसंद है।

जैविक लक्षण :- हमारे देश के मरुभाग तथा मिट्टी वाले स्थानों को छोड़कर हर क्षेत्र मध्य कोपेतदग, युलय-गारांकी, आर्चबील, एयर्सदेरे, मुसुनेव, युलयतथा कीची बाकजा, हौदान, पूर्वीय कोपेतदग, गुर्यहोवदान, च्यरलाक में यह पौधा उगता है।

प्राकृतिक उपलब्धि :- इसके मूल तथा पौधे का प्रयोग औषधीय उत्पाद के रूप में प्रयुक्त होता है। इसके मूल को पतझड़ तथा शुरूआती वसंत में इकट्ठा किया जाता है। इनको खुली हवा में, छांव में सुखाया तथा तैयार किया जाता है। तैयार मूल को कपड़े के बोरों में रखा जाता है। संचय का समय 2-3 साल है।

औषधीय उत्पाद :- औषधीय उत्पाद के रूप में इसके पुष्प, फली तथा अपतृण भाग का प्रयोग किया जाता है। इनको पुष्प लगने के समय (अप्रैल-मई) में इकट्ठा किया जाता है। इनको सामान्य पद्धतिसे छांव में सुखाकर तैयार किया जाता है। तैयार उत्पाद को कागज़ के बक्सों अथवा थैलों में संचय किया जाता है। संचयन की अवधि 1-2 साल है।

रासायनिक संघटन :- पौधे के मूल में अधिक मात्रा में इन्युलीन (49%, planted form 65%) विटामिन्स सी एवं बी, होलिग, शर्करा तथा टेनींक पदार्थ होते हैं। उसके सभी हिस्सों में क्षीरीय रस होता है और यह हिस्सा नुस्खों में समृद्ध है।

प्रयोग :- इस पौधे का राष्ट्रीय चिकित्सा में विशाल रूप में प्रयोग होता है। इसके मूल तथा पुष्प से बना फांट नाडी संस्थान को शांत करता है तथा हृदय के सामान्य कार्य में मदद करता है। साथ ही इसका मूलभूत उद्दीपनार्थ, वृक्कशूल, अतिसार, पांडु तथा मधुमेह में प्रयुक्त होता है।

इसके चिकित्सकीय गुणधर्मों की सूचना प्राचीन देदिप्यमान अबु अली इब्न सीना द्वारा रचित "कैनन आफ मेडिकल सायंस" अबु रयहान बीरूनी द्वारा रचित "मेडिसिनल फार्मकोग्नोसी" सैयीत इस्माइल गुर्गेन्ली (जुर्जानी) द्वारा रचित "ट्रेज़री आफ खोरेज़्म शाह" तथा मुहम्मद हुसैन द्वारा रचित "ट्रेजरी आफ बाम्स" आदि विख्यात कार्यों में दी गई है।

इब्न सीना ने पौधे को उबालकर उसका प्रयोग कंडू, लघु मसूरिका, छोटी माता तथा चर्म के अन्य व्रण, छर्दि, नेत्रशूल तथा वृश्चिक एवं सर्प दंश में किया था।

राष्ट्रीय चिकित्सा में इसकी सलाह अपस्मार, अत्यधिक नाड़ी उत्तेजना, आध्यात्मिक असामान्यता, हाइपोकोन्ड्रिआ तथा अवसाद से ग्रस्त लोगों को दी जाती है। साथ ही इसको रक्तवहन तथा रक्तचाप सामान्य करने के लिए भी प्रयुक्त किया जाता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

पौधे के फांट का प्रयोग चर्म विस्फोट, यौवन पीड़िका तथा पनसिका के लिये भी किया जाता है।

मध्य एशिया तथा तुर्कमेनिस्तान में इसकी भस्म से निर्मित बाम का प्रयोग पूय युक्त व्रण, उद्भद पिडिका (खरौंच) तथा पुराने घाव एवं व्रण में किया जाता है।

औषधीय उद्देश्यार्थ इसकी वन्य जाति सबसे ज्यादा उपयुक्त है क्योंकि इसमें तिक्त पदार्थ होते हैं। वैज्ञानिक चिकित्सा में इस औषध का विस्तृत प्रयोग जठराग्नि दीपन के रूप में किया जाता है तिक्त रसयुक्त भोजन आमाशय शोथ तथा आंत्र शोथ में प्रयोग से आमाशय तथा आंत्र के कार्य सामान्य करता है, तथा इन्जेक्शन के रूप में भी प्रयुक्त होता है।

औषध कल्पना :- दो चम्मच बारीक काटा हुआ पौधे में 0.5 लीटर पानी मिलाकर एक तामचीनी पात्र में 20 मिनट तक उबालें। तैयार फांट को छानकर इसमें से एक चम्मच चाय के रूप में प्रतिदिन तीन बार पीयें। बारीक कटे हुए पौधे के मूल 2 चम्मच (10 ग्राम) में एक गिलास उबला हुआ पानी मिलाकर थोड़ी देर रखें। छानकर ठंडा करके इस फांट को तीन बार भोजन पूर्व पीयें। यह फांट यकृत् आमाशय तथा पित्ताशय की व्याधियों में उपयोगी है।

पौधे के मूल 1 चम्मच (5 ग्राम) को एक गिलास उबले हुए पानी में मिलाकर थोड़ी देर तक रखें। प्रवाही को छानकर दिन में 3-4 बार 1 मास तक सेवन करें।

ताजे पौधे से निर्मित रस 1 चम्मच (15 ग्राम) को 1/2 गिलास दूध में मिलायें। इस प्रवाही को प्रतिदिन तीन बार पीने की सलाह दी जाती है। यह पांडु के लिये उपयोगी है।

चिन्नामोमुम कास्सिआ
CINNAMOMUM CASSIA

वर्णन :- तुर्कमेनिस्तान में प्राचीन काल से इस औषधीय वनस्पति का प्रयोग होता रहा है। इस पौधे में मनमोहक सुगंध तथा स्वाद होते हैं। चिन्नामोमुम कास्सिआ हमारे देश में नहीं उगता है। इस पेड़ की ऊँचाई 15 मीटर की होती है।

इस पेड़ के पत्र अण्डाकार तथा 3-5 सिरायुक्त होता है। पुष्प छोटे पीताभ हरे तथा पुष्पक गुच्छा बनाते हैं।

विशिष्ट लक्षण :- चिन्नामोमुम कास्सिआ 15 साल तक अपने लक्षण बनाये रखता है। समुद्र तल से यह 1000 मीटर की ऊंचाई पर उगता है। यह पौधा गीलीजमीन पर नहीं उगता।

इस स्थान में अवक्षेप 200-250 मि०ली० तक पहुंचता है। पश्चिम भारत में चिन्नामोमुम कास्सिआ खनिज पदार्थों के साथ मिला हुआ है तथा मरुभूमि में उगता है। कुछ साहित्य में सारांश में इस पौधे का आह्लादक सुगंध तथा रसयुक्त औषध के रूप में वर्णन मिलता है।

विस्तार :- चिन्नामोमुम कास्सिआ का मूल निवास श्रीलंका, दक्षिण-पश्चिमी भारत, दक्षिण-पश्चिमी चीन तथा ब्राजील, जमैका, माडागास्कार, इन्डोनेशिया तथा कम्बोडीया भी है। श्रीलंका मुख्य आपूर्ति करने वाला है।

परिस्थिति विज्ञान :- तुर्कमेनिस्तान के स्वातंत्र्य के बाद इस पौधे को सुगम बनाया गया है। यह पौधा बाजारों तथा मार्केट में मिलता है।

औषधीय उद्देश्यार्थ कच्चे माल के शाखाओं के तने तथा त्वक् प्रयोग होता है। औषधीय उद्देश्यार्थ पहली उपज के 3 साल के बाद इसका प्रयोग होता है। जब शाखाओं की त्वक् को इकट्ठा करना आसान हो तभी उसको इकट्ठा किया जाता है। त्वक् गहरी भूरी तथा 1-1.5 मीटर लम्बी तथा 1.2-1.3 मीटर चौडी होती है। त्वक् के नीचे आह्लादक सुगंध होती है इसे सुखाकर संग्रह करें।

रासायनिक संघटन :- चिन्नामोमुम कास्सिआ में 2 प्रतिशत उत्पत् तैल, पौधे के ज्यादातर हिस्सों में आल्डीहाइड्स (55-65 प्रतिशत) युगेनोल (4-8 प्रतिशत) उत्पत् तैल, स्टार्च, म्युसीलेज, प्रोटोक्साइड तथा कैल्शियम ओक्सीलेटम होते हैं।

प्रयोग :- प्राचीन समय से चिन्नामोमुम कास्सिआ का प्रयोग औषध तथा मसाले के रूप में होता रहा है। ई०पू० 270 में चिन्नामोमुम कास्सिआ का अच्छी तरह ज्ञान था। ''कैनन आँफ मिडिकल सायंस'' में इब्न सीना ने चिन्नामोमुम कास्सिआ के बारे में लिखा है।

इस पौधे की सुगंध अति तीव्र है तथा अन्य सुगंध को मात देती है। यदि चिन्नामोमुम कास्सिआ को सिरके के साथ मिलाये तो यह औषधीय सुरीय सार शीतपित्त, कर्णशोथ तथा यकृत्शोथ एवं आमाशय शोथ की चिकित्सा में प्रयुक्त होता है। इसका प्रयोग मलहम के रूप में गर्भाशय के आंतरिक कला के शोथ तथा वृक्कशोथ में भी होता है। प्रख्यात चिकित्सक मुहम्मद हुसेन ने कहा यह पौधा शरीर को गरम करता है मनोभाव बढ़ाता है। तथा मस्तिष्क, हृदय एवं यकृत् का कार्य ठीक करता है। यह दृष्टि, नाड़ीशूल तथा कास के लिये बहुत उपयोगी है। पौधा जठराग्नि को बढ़ाता है तथा आमाशय का कार्य ठीक करता है। चिन्नामोमुम कास्सिआ जीवाणु विरोधी है तथा आहार उत्पाद है। चिन्नामोमुम कास्सिआ का प्रयोग मांस, मत्स्य को सब्जी बनाने के लिये तथा पनीर, दही, आईसक्रीम बनाने के लिये भी होता है।

बहुत लोगों को चिन्नामोमुम कास्सिआ वाली चाय पीना पसंद है। इसका मुख्यत: प्रयोग काकेसस तथा काकेसस के क्षेत्रों में होता है। खार्चो सूप तथा चेहिर्त्मु को केवल चिन्नामोमुम कास्सिआ के साथ ही पकाया जाता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

क्निकुस बेनेदिक्तुस
CNICUS BENEDICTUS

वर्णन :– यह आश्चर्यजनक पौधा विश्व भर में मिलता है। केवल 1 प्रजाति तुर्कमेनिस्तान में मिलती है। पौधे को अन्य नाम बोरीचेक से भी जाना जाता है।

क्निकुस बेनेदिक्तुस कोम्पोसिते कुल का 10–40 से०मी० लम्बा पौधा है। यह एकवर्षीय, तीर के आकार के मूलवाला पौधा है। पौधे का तना लोम से आच्छादित होता है। कांड शाखायुक्त सीधी तथा सामान्यत: रक्ताभ होती है। पत्र अंडाकार तथा पक्षवत् (20 से०मी० लम्बे), तीक्ष्ण दन्तुर तथा सिरे, पत्र के आधार भाग के पास होती हैं। पुष्प के पास ऊर्ध्व भाग के पत्र मकड़ी के जाले जैसे 5.5 से०मी० लम्बे तथा कुछ दन्तीले होते हैं। पुष्प छोटे, पीत वर्ण के, अलग–अलग टोकरिओं के रुप में एकत्रित, शाखा तथा कांड पर स्थित (0.9–1.9 से०मी० लम्बे तथा 2 से०मी० व्यास वाले) होते हैं।

फल पीताभ–भूरा, आकार में नलिकाकार, बीज अनावृत (0.6–1 से०मी० लम्बे) होते हैं। संस्पर्शक दो पंक्तियों में और दो कतार वाले, उसमें से 10 बाह्य तथा 10 आंतरिक होते हैं।

पौधे में अप्रैल–मई में पुष्प लगते हैं तथा मई–जून में फल पकते हैं।

उगने की विशिष्टतायें :– क्निकुस बेनेदिक्तुस लम्बे समय तक बढ़ता है। यह बीज द्वारा प्रजनन करता है। 1000 बीजों का वजन 22–28 ग्राम होता है।

विस्तार :– हमारे देश में पौधा बोलशोई बालान में, युम्बुलेमेझ, सेकीझदग, कयुरेनदग में, सेकीझखान, मार्ण्यझ, ओयलेगुशलुक में, दक्षिण–पश्चिम कोपेतदग में, होजागाला, नोहूर, गारावुल, चेन्दीर, सुंबार में, मध्य कोपेतदग में, गोकदेरे, गोर्मांप, आर्चबील, अस्यलभा, बृहत् गारांकय, वानोवस्कीय, कोमोश्वका, याब्लोनोवका, गुर्ललयसुव में, होवदान में, पूर्वीय कोपेतदग में गुर्यहोवदान शामलय, हारचीन्चान, हीवेआबान में, बध्यझ, कोयतेनदग ओएसीस (बाहारल्य, गोकदेरे, अश्खाबाद, काका) तेजेन तथा मुर्गाब ओएसीस में मिलता है।

प्राकृतिक उपलब्धि :– क्निकुस बेनेदिक्तुस हमारे देश में दुर्लभ पौधा नहीं है। औषधीय उद्देश्यार्थ भण्डार पर्याप्त है। प्रतिवर्ष 50–60 टन कच्चा माल इकट्ठा किया जा सकता है।

प्रयोज्य कच्चा माल :– पौधे का ऊपर का हिस्सा प्रयोज्य कच्चे माल के रूप में प्रयुक्त किया जाता है। इसको पुष्प लगने के समय इकट्ठा किया जाता है। प्रयोज्य कच्चे माल खुली हवा में छांव में सुखाया जाता है। तैयार कच्चे माल कागज़ के थैलों में अथवा बक्सों में संचय किया जाता है। संचयन की समय अवधि 2 साल हैं।

रासायनिक संघटन :– क्निकुस बेनेदिक्तुस के पौधे में 5 प्रतिशत pitch पदार्थ, गोंद 13 प्रतिशत, श्लेष्मा 8 प्रतिशत, टैनिन 8 प्रतिशत, मेग्नेशियम, मैलिक एसिड, स्टीरीन, फ्रुकटोझ, मेन्वेन्टीन ग्लायकोसाइड तथा लगभग 0.2 प्रतिशत लेकटोन कनीसीन सेक्सवाइटेरेने होते हैं। पौधे के पत्र में 26 प्रतिशत विटामिन सी होता है। साथ ही पौधे के गुल्म में कार्डोबेनेडीक्टाइन के कड़वे पदार्थ तथा उत्पत् तैल होते हैं।

प्रयोग :– पारम्परिक चिकित्सा में पौधे का प्रयोग यकृत् की चिकित्सा में, व्रण की चिकित्सा में, आमवात, अशान्ति पचन संस्थान में, श्वसन संस्थान के संकोच में, ज्वरघ्न के रूप में, कामला, वृक्कशोथ, मूत्रप्रवृत्ति की बाधायें तथा वामक रूप में होता हैं। कटे हुए छोटे पौधों का प्रयोग कैन्सर तथा अग्न्याशय की केन्सर की गांठ में भी प्रयुक्त होता है।

पौधे के पत्र तथा पुष्प से बनाया हुआ सार शोफ तथा श्वसन संस्थान के जीर्ण शोथ न्युमोनीआ, तमक श्वास, विबंध तथा कामला में प्रयुक्त होता है।

पत्र तथा कांड के ऊर्ध्व भाग से निर्मित फांट का प्रयोग वनस्पति चिकित्सा में पचन संस्थान के विकार विबंध, अतिसार उत्पन्न करने वाले शोथ, आमाशय शोथ, आंत्र शोथ यकृत् व्याधियाँ कामला, आर्तवप्रवृत्ति न्यूरोसिस, अन्त:स्फानता, पांडु, श्वसन संस्थान की व्याधियों (प्रतिश्याय, श्वसननलिका शोथ, तमक श्वास) की चिकित्सा में होता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

वैज्ञानिक चिकित्सा में क्विनकुस बेनेदिक्तुस के सार तथा फांट का प्रयोग अजीर्ण की चिकित्सा के लिये, जठराग्नि उद्दीपनार्थ, अम्लोद्गार में उपयुक्त होता है। विविध प्रकार के व्रण की चिकित्सा के लिये इसकी जीवाणुरोधी असर के लिए प्रयोग किया जाता है। कड़वे मद्य बनाने के लिये भी इसका प्रयोग किया जाता है।

कल्पना तथा प्रयोग :- पौधे 1.5 बड़ा चम्मच (22.5 ग्राम) को 2 गिलास (400 मि०ली०) उबले हुए पानी में मिलाकर रखें। छानकर दिन में तीन बार लें। (यह मात्रा 24 घण्टे के लिये है)।

कोल्किकुम केस्सेल्रिंगीइ COLCHICUM KESSELRINGII

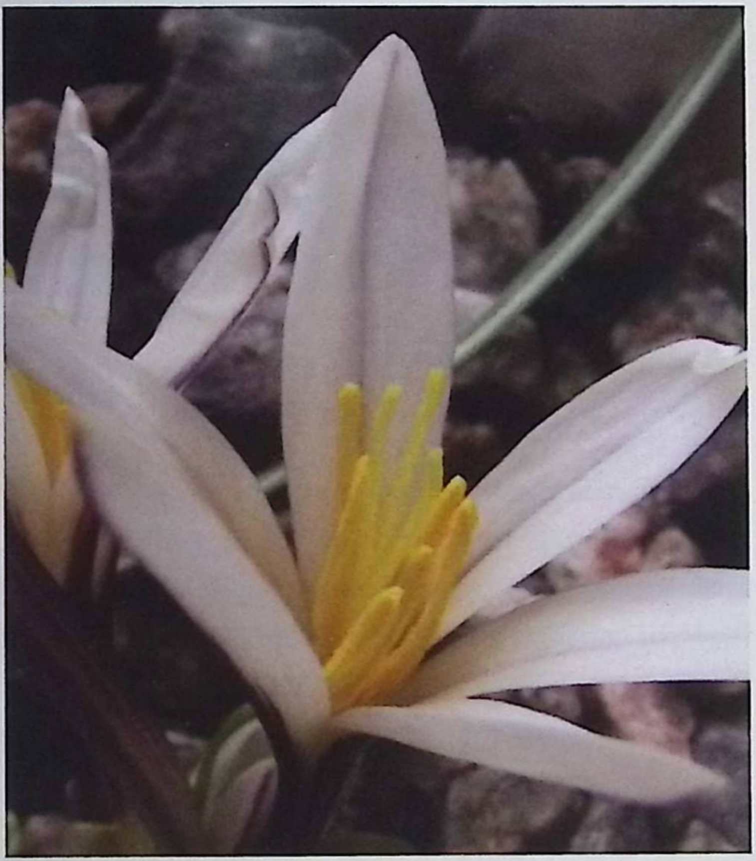

इस सुंदर तथा नाजुक पुष्पवाले पौधे की विश्व में लगभग 65 प्रजातियां जिनमें 11 प्रजातियां मध्य एशिया में तथा 3 प्रजातियां तुर्कमेनिस्तान में मिलती हैं।

यह 10-15 से०मी० लम्बा, बहुवर्षीय पौधा है। यह अण्डाकार होता है तथा काली भूरी कला से आच्छादित होती है। क्लुबेन सोगनलिगी 3 से०मी० लम्बी तथा 1-2-5 से०मी० चौड़ा होता है। पत्र एक कांटे जैसा अथवा पट्टी जैसा होता है। इसको 2-8 पत्र होते हैं। इससे 1-5 पुष्प दोनों लिंगों में होते हैं। गुलिआनी के टुकड़े श्वेत होते हैं। गुलिआनी के सतह तथा पिछली सतह पर काली तथा नीली रेखाएं होती हैं। फल एक कोष है जो 1-3 से०मी० लम्बा होता है। पौधा फरवरी-जून में पुष्प देता है।

जैविक विशिष्टतायें :- पौधा पहाड़ों की तराई में, वन्य भूमि में तथा पहाड़ों के शिखर पर (समुद्र तल से 3000 मीटर की ऊँचाई पर) उगता है। सामान्यतः यह पेड़ों तथा शंकु वृक्षों के बीच में, शिथिल भूमि तथा पथरीली रेत पर उगता है। यह केवल कोयतेनदग में ही मिलता है।

प्राकृतिक उपलब्धि :- यह हमारे देश के दुर्लभ पौधों में से एक है। औषध उद्देश्यार्थ भण्डार पर्याप्त नहीं है। इसकी खेती करने की सलाह दी जाती है। इसका कोयतेनदग के अभयारण्य में संरक्षण किया जाता है।

औषधीय कच्चा माल :- औषधीय उद्देश्यार्थ कोल्किकुम केस्सेल्रिंगीइ का उपयोग कच्चे माल के रूप में होता है। इसको पुष्प आने के समय इकट्ठा किया जाता है। औषधीय कच्चा माल 2-3 साल तक रखा जाना चाहिये।

रासायनिक संघटन :- कोल्किकुम केस्सेल्रिंगीइ में 0.15-0.6 प्रतिशत आल्कलोइड तथा अन्य 23 आल्कलोइड्स होते हैं।

प्रयोग :- पौधे का कोल्किकुम केस्सेल्रिंगीइ का प्रयोग राष्ट्रीय चिकित्सा में खसरा (measles) रूमेटीझम, अंगमर्द तथा हृद्रोग जैसी व्याधियों में किया जाता है। लेकिन यह पौधा बहुत खतरनाक है क्योंकि इसमें बहुत विष रहता है।

कल्पना तथा औषध प्रयोग :- पौधे के कूटे हुए कंद का 1-2 ग्राम दिन में प्रयोग करें। यह खसरे के लिए लाभप्रद है।

एक चम्मच सावर्रजा को 100 मि०ली० स्पिरिट के कांच पात्र में मिलाकर 15 दिन तक रखें। तैयार पानक का दिन में दो बार प्रयोग करें।

लक्षण :- यह सुंदर पुष्प सोवसंलार कुल का है। 10-15 से०मी० लम्बा होता है। पौधे को बचचक, सोरमगुल तथा सावरमचा भी कहते है।

पौधे का कंद जमीन में होता है तथा 2-4 चमकीले, कृष्णाभ-हरे मोटे पत्र बीज में से उगते है। 1-4 सादे, पीत पुष्प होते हैं। फल-अण्डाकार, निस्तेज 2-3 से०मी० लम्बे होते हैं। बीज कृष्णाभ भूरा, अण्डाकार होता है।

पौधे में अप्रैल-मई में पुष्प तथा मई-अगस्त में फल लगते हैं।

जैविक लक्षण :- पौधा समुद्रतल से 1500-2900 मीटर की ऊँचाई पर उगता है। यह जंगल तथा रेतीले स्थानों में उगता है।

यह बीज द्वारा तथा शाकीय प्रहार द्वारा प्रजनन करता है।

हमारे देश में पौधा केवल कोयतेनदग में मिलता है। यह पौधा ऊँचे पर्वत शिखरों पर प्रजनन करता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

प्राकृतिक उपलब्धि :- हमारे देश में इस पौधे को दुर्लभ पौधों में शामिल किया गया है। औषधीय उद्देश्यार्थ इसका बहुत कम मात्रा में प्रयोग होता है। इस पौधे की खेती करने की सलाह दी जाती है।

औषधीय उद्देश्यार्थ सोवरंजान को कोयतेनदग प्राकृतिक अभयारण्य में संरक्षित किया गया है। सोवरंजान के कंद का कच्चे माल के रूप में प्रयोग होता है। इसको सामान्य रूप से तैयार किया जाता है। इसको लगभग 3 महिने तक रखा जा सकता है।

रासायनिक संघटन :- पौधे के कंद, बीज तथा पुष्प में विषैले आल्कलोइड्स, कोलीसीन, कोलचेमीन तथा अन्य तत्व होते हैं। सोवरेजान के कंद में 0.5-2.5 प्रतिशत, कांड में 0.12-1.5 प्रतिशत तथा बीज में 1.5 प्रतिशत आल्कलोइड्स होते हैं। कुछ स्रोत से यह सूचना मिली हैं कि सोवरंजा 19 आल्कलोइड्स (कोलरोमीन, कोल्टीसाइन, कोलडेमाइन, केसेलरींगीन तथा अन्य) उत्पन्न करता है।

प्रयोग :- यह सबसे पुराने पौधों में से एक है। यह ग्रीक काल्पनिक कथाओं में ज्ञात है। कोलचीस में एक रहस्यमय बगीचा था तथा देवी आर्तेमीस के नेतृत्व में उसमें औषधीय तथा विषैले पौधे उगाये गये थे। जब ग्रीक लोगों ने कोलचीस की पेड़-पौधों को जानना शुरू किया तब उन्होंने बगीचें को विषैले पौधे के साथ पाया।

इन्होंने इन पौधों को अपनी मातृभूमि ''कोल्चीकम'' के आधार पर नाम दिया। महान ग्रीक वनस्पति शास्त्री ने कोल्चीकम के उगने तथा पुष्प निकलने का एक चित्र बनाया और वो सर्वप्रथम था जिसने इसका संपूर्ण वर्णन लिखा।

अंग्रेजी तथा ग्रीक हस्तलिखित प्रपत्रों में इस पौधे की औषधीय लाक्षणिकता के बारे में जानकारी मिलती है।

पौधे के बीज का चूहों के नाश के लिये प्रयोग होता है। शिकारी लोमड़ी तथा भेड़ियों को विषाक्त बनाने के लिये इस पौधे का प्रयोग करते हैं।

प्रयोग :- शुष्क तथा पीसे हुए पौधे का 1 बड़ी चम्मच (15 ग्राम) को 0.5 गिलास सुरा में कांच पात्र में मिलाकर कसकर ढक्कन लगाकर अंधेरे स्थान पर 10-15 दिन तक रखें। बीच-बीच में हिलाते रहना चाहिये। तैयार सिरप को शूल मिटाने के लिये त्वचा पर प्रयोग करें।

कोल्कीकुम लूतेउम
COLCHICUM LUTEUM

वर्णन :-कोल्कीकुम लूतेउम सुंदर पुष्पों वाला गांठदार कंद वाला बहुवर्षीय शाकीय पौधा हैं। जिसको 2-4 चमकीले, कुंठीताग्र, गहरे हरे, अनावृत, मांसल पत्र होते हैं। 1-4 पुष्प होते हैं, जिसमें सामान्य संयुक्त शाखा पीत परिदल पुंज होता है। यह परिदल 6 भाग वाली तथा घण्टाकार में 5 से०मी० लम्बी होती है। फल गोलाकार अथवा अण्डाकार छिलकायुक्त, त्रिकोषीय, द्राक्षाकार 2-3.5 से०मी० लम्बा, जो अन्तराल में मध्य तक फटता है। बीज गहरे भूरे, लगभग गोलाकार (2.5 मि०मी० तक व्यास वाले) होते हैं। अप्रैल-मई में पुष्प तथा मई-अगस्त तक फल आते हैं।

जैविक लाक्षणिकतायें :- कोल्कीकुम लूतेउम पथरीली ढलानों पर, मरुभूमि तथा हपुषा के क्षेत्रों में 1500-3000 मीटर की ऊँचाई पर उगता है।

विस्तार :- यह केवल कुगीतांग में मिलता है।

प्राकृतिक उपलब्धि :- यह हमारे देश के दुर्लभ पौधों में से है। इसके भण्डार को औषधीय उद्देश्यार्थ सीमित रखा गया है। इसको कुगीतांग राष्ट्रीय उद्यान में संरक्षण किया गया है।

औषधीय कच्चा माल :- कोल्कीकुम लूतेउम के गांठदार कंद को पुष्प आने के समय ताजा प्राप्त करके भण्डार करने वाले केन्द्र को भेजा जाता है। संचय समय अवधि 3 महिने की है। चिकित्सा के लिये एल्कलोइड्स

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

प्राप्त करने के लिये कच्चे माल को भेजा जाता है। हमारे देश की परिस्थितियों के अनुसार इसका कोई औद्योगिक महत्व नहीं है।

रासायनिक संघटन :- कोल्कीकुम लूतेउम का फार्मेकोलोजीकल गुणधर्म के अध्ययन ने दर्शाया है कि इसका रसायन एल्कलोइड कोलचीसिन बहुत विषैला है। चिकित्सा शास्त्र में पादतल गत वातरक्त तथा रूमेटीझम की चिकित्सा के लिये 1853 से कोल्चीसिन का प्रयोग किया जाता है। 13 साल के बाद वीयेनीस प्रोफेसर स्कोदा ने अपने भाषण में कहा कि रूमेटीझम के लिये कोल्कीकुम लूतेउम से अच्छा कोई उपचार हमें पता नहीं है।'' कोल्चीकुम लूतेउम वाले कई औषध विश्व के प्राय: सभी भेषजशास्त्र में तथा संयुक्त राष्ट्र संस्थान द्वारा प्रकाशित अंतराष्ट्रीय भेषज शास्त्र में भी पादतल मत वातरक्त तथा कई अन्य व्याधियों की चिकित्सा के उपचार के रूप में समाविष्ट किया गया है। कोल्कीकुम लूतेउम का एक अन्य आल्कलोईड कोलचेमाईन प्लीहा, लसीका ग्रंथियों तथा श्वेतकणों की संख्या कम करता है। यह नयष्ठीला के विभाजन की प्रक्रिया पर प्रभाव दिखाता है तथा केन्सर विरोधी कार्य दिखाता है। कोलचेमाइन का उत्पाद (ओमाइन) अन्ननलिका के केन्सर तथा आमाशय का ऊर्ध्व भाग स्थित केन्सर, जिसमें शल्य क्रिया नहीं हो सकती, में मौखिक औषध के रूप में 0.006-0.01 ग्राम सप्ताह में तीन बार किया जाता है। यही योग का स्थानीय 0.5 प्रतिशत कोलचमीन मलहम के रूप में त्वचा के केन्सर अवस्था 1 तथा 11 में होता है (औषधीय चिकित्सा का चक्र 18-25 दिन का होता है)। मलहम विषैला है।

कोल्कीकुम लूतेउम के गांठदार कंद में 0.5-2.5 प्रतिशत, भूमि ऊपरी भाग में 0.2-1.5 प्रतिशत बीज में 1.5 प्रतिशत तक आल्कलोइड्स होते हैं। कोल्कीकुम लूतेउम से 19 आल्कलोइड्स प्राप्त किये गये हैं तथा पहचाने गये हैं (कोलचेमीन, कोलचीसीन, कोलचेमाईन, केसेक्रीगीन आदि)।

प्रयोग :- कोल्कीकुम लूतेउम सबसे प्राचीन प्रयोज्य पौधों में से एक है। ग्रीक काल्पनिक कथानुसार हमें पता है कि कोलचीस (कोकेसस) में एक जादुई बगीचा था जिसमें देवी आर्टेमीस की संरक्षण में अधिक संख्या में औषधीय तथा विषैले पौधे उगे थे। जब ग्रीक लोग कोलचीस की पौधों से परिचित हुए तब उन्हें प्रतल केसर के जैसा रसप्रद विषैला पौधा मिला, जिसको अपनी मातृभूमि के नाम के आधार पर ''कोलचीकोन'' नाम दिया था। ग्रीस के प्रसिद्ध वनस्पति वैज्ञानिक डायोस्कोराइड सबसे पहला था, जो फलधरी, पुष्पित और विकसित कोलिचकोन के विस्तार वर्णन एवं चित्र दिया। इजीप्त तथा ग्रीस के हस्तलिखित पत्रों में इस किमती पौधे के औषधीय गुणधर्मों के बारे में जानकारी मिलती है। जिसमें पादतलगत वातरक्त तथा रूमेटिझम में इसका प्रयोग होता था। प्राचीन भारतीय वेदों (ई०पू० दो हजार ई०पू० पहले हजार के पूर्वार्ध) में अन्य प्रयोज्य पौधों के साथ कोल्चीकुम लूतेउम का उल्लेख मिलता है। प्राचीन ग्रीस के विख्यात चिकित्सक गालेन के बीज के प्रयोग के द्वारा पोडाग्रा के रुग्णों की चिकित्सा की थी। 13वीं शताब्दी में ग्रीक चिकित्सक दिमिनी पापाजीनोस ने पादतलगत के लिये एलो जेर्मोडकटैल (Indian colchicum) के बीज तथा त्वक् से निर्मित योग का वर्णन किया है। 1618 में प्रथम ''ब्रिटिश फार्माकोपिआ'' में कोल्कीकुम लूतेउम का समावेश किया गया। शताब्दी के मध्य में पादतलगत वातरक्त तथा रूमेटीझम के लिये एक योग गुसोन पानी बहुत प्रख्यात था जिसको तैयार करने की विधि कई सालों तक गुप्त रखी गई। बाद में यह स्पष्ट हुआ कि उस योग का मुख्य घटक कोल्कीकुम लूतेउम का औषधीय सुरा सार था।

अबु अली इब्न सीना अपने चिकित्सा व्यवहार में कोल्कीकुम लूतेउम का प्रयोग पादतल गत वातरक्त में, ''कुलींज'' (बृहदांत्र की एक व्याधि) तथा विपरीत उत्तेजक के रूप में जोड़ो तथा प्रतिश्याय में करते थे।

तुर्कमेन लोक चिकित्सा में कोल्कीकुम लूतेउम के ताजे गांठदार कंद का प्रयोग अंगमर्द तथा संधियोजन के लिये करते थे। बीज का प्रयोग कृन्तक (चूहा तथा मूषक) के नाश के लिये तथा शिकारी लोमडीयों एवं भेड़ियों को विषाक्त करने के लिये होता था।

कल्पना तथा प्रयोग :- दिन में एक गांठदार कंद खायें, यह अंगमर्द तथा जोड़ों के लिये प्रयुक्त होता है।

एक बड़ा चम्मच (15 ग्राम) गांठदार कंद पर आधा गिलास (100 मि०ली०) शराब डालकर एक कांच पात्र में कसकर ढक्कन लगाकर 10-15 दिन के लिये रखें। बीच-बीच में हिलाते रहें। छानकर दूषित स्थानों पर लगाने के लिये स्थानीय प्रयोग करें। यह जोड़ों में तथा रूमेटीझम में उपयुक्त होता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

कोनिउम माकुलातुम
CONIUM MACULATUM

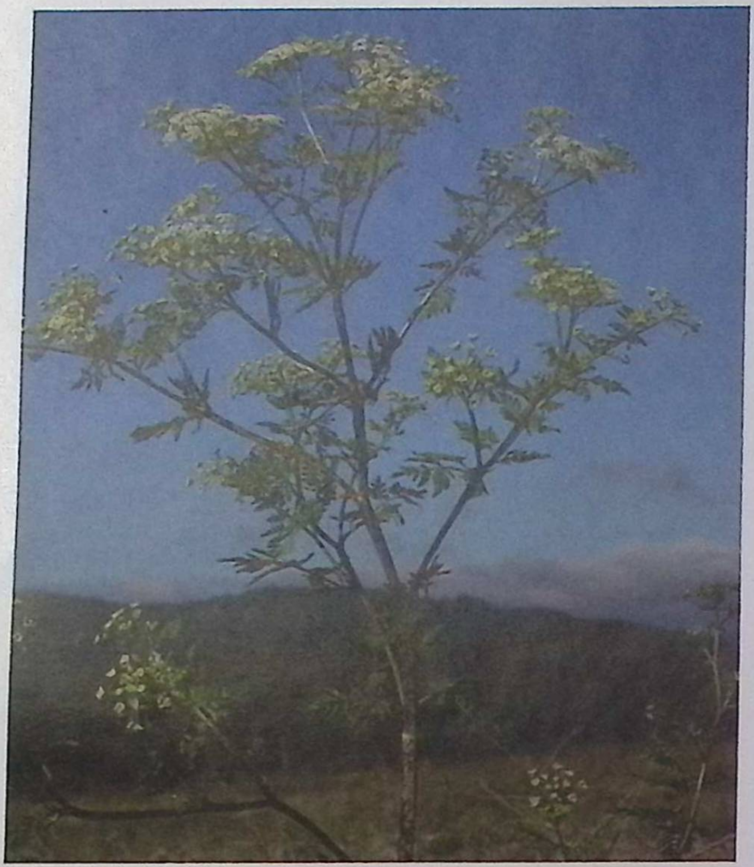

वर्णन :- कोनिउम माकुलातुम एक चिकित्सकीय विषैला पौधा है। विश्व में 5 प्रजातियां है, जिनमें मध्य एशिया तथा तुर्कमेनिस्तान की 1 प्रजाति भी शामिल है।

कोनिउम माकुलातुम एक द्विवर्षीय, क्षुपीय एंव अम्बेलीफेरी कुल का पौधा है।

पत्र बड़े, लम्बाकार तथा गाजर अथवा अजमोदा के पत्र की तरह विभाजित होते हैं। पुष्प श्वेत, सूक्ष्म, पंचमानक, कई मिश्रित छत्रो में इकट्ठे होते हुए समस्थ काण्डाकार, छोटे गुच्छों वाले पुष्प विन्यास बनाते हैं।

फल डायाचेनिअम्स् हैं, जो दो आधे हिस्सों में विभाजित, लगभग गोल तथा उन्नत तरंगित सिरा वाले होते हैं। पौधों को मई-जून में पुष्प तथा जून-सितम्बर में फल लगते हैं।

जैविक लक्षण :- कोनिउम माकुलातुम की एक लम्बी, शाखायुक्त, झीरीदार टहनी होती है जो अधोभाग में जंग-वर्ण के धब्बों से आच्छादित होती है। प्रथम वर्ष से मूल पत्र निकलते हैं। द्वितीय वर्ष में छोटे न हो ऐसे पत्रोंवाली टहनी विकसित होती है। पौधे में चूहे जैसी विशिष्ट गंध होती है। कोनिउम माकुलातुम 20-25 हजार हलके चर्मल फलों को उत्पन्न करता है। हवा से ये अधिक दूर तक फैलते हैं। पौधे का प्रजनन बीज तथा प्रकंद द्वारा होता है। 1000 कलियों का वजन 0.11-0.15 ग्राम होता है।

प्रचलन :- कोनिउम माकुलातुम कुरेनदाग में, दानाता, गारागोझ, सोनुलाग, दक्षिण-पश्चिमी कोपेतदग, मध्य कोपेतदग, वानोवस्कीय, गोकदेपे, गेर्माब, रोबेरगौस्कीय, नोहूर, सायवान, सार्यमसाकलय, पूर्वीय कोपेतदग में, गुर्यकोवदान, शामलय, शेरलोक, बध्यझ तथा कुगीतांग में फैला हुआ है।

प्राकृतिक उपलब्धि :- कोनिउम माकुलातुम तुर्कमेनिस्तान के दुर्लभ पौधों में से नही है। औषधीय उद्देश्यार्थ इसके भण्डार पर्याप्त है। पौधा मुख्यतः मध्य कोपेतदग में उगता है।

औषधीय कच्चा माल :- कोनिउम माकुलातुम के पौधों को चिकित्सा उद्देयार्थ अप्रैल-मई में (दिन के उत्तरार्ध में) इकट्ठा किया जाता है। कच्चे माल को बक्सों में अथवा थैलों में रखा जाता है। पौधों को इकट्ठा करते समय बहुत ध्यान रखना आवश्यक है। प्रथम वर्ष में कोनिउम माकुलातुम के पत्र अजामोद अथवा गाजर के पत्र जैसे होते हैं, लेकिन बीज जीरे के फल के जैसे होते हैं। पौधे का प्रयोग करते समय विषाक्तता उत्पन्न होने की शंका रहती है। मुखदाह, गले में व्रण, लालास्रावाधिक्य, शिरःशूल, भ्रम, छर्दि, वांति, निद्रालुता तथा दृष्टि विस्फार लक्षण विषाक्तता के हैं।

रासायनिक संघटन :- कोनिउम माकुलातुम के मूल, कांड तथा फल में आल्कलोइड्स, कोनाइन, मीथाइल-कोनाइन, कोनीसेटीन, केनहाइड्रीन, स्युडोकोनहाइड्रीन रहते हैं, बीजों का तेल रहते हैं, पेट्रोझेलीन, पेट्रोझेलीजेन अम्लों से बना हुआ है।

कोमेरीन्स, क्वेरसाइटी, कम्फेरोल पुष्प के रासायनिक संयोजक हैं। पौधों में विषैले तत्व भी रहते हैं। कोनाइन एक तरह का तिक्त आल्कलोइड इस पौधे का संयोजक (compound) हैं। ये तत्व अंदर जाते ही विषाक्तता उत्पन्न करता है। इसलिये इसका प्रयोग करते समय सावधानी रखनी चाहिये।

कोपेतदग तथा उसकी तराई से प्राप्त कोनिउम माकुलातुम में आल्कलोइड के अभाव की वैज्ञानिकों ने पुष्टि की है। स्थानीय प्रजातियाँ अविषाक्त मानी गई हैं।

प्रयोग :- प्राचीन समय से कोनिउम माकुलातुम के औषधीय गुणधर्मों का ज्ञान था। प्रख्यात ग्रीक वैज्ञानिक फीओफ्रेस्ट (372-287 ई०पू०) तथा एफ. मोन्टाइन्स ने इसके औषधीय गुणधर्म तथा जैविक गुणों का वर्णन किया है। विख्यात वैज्ञानिक तथा चिकित्सक अबु अली इब्न सीना

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

ने अपनी शास्त्रीय पुस्तक ''कैनन ऑफ मेडिकल सायंस'' में कोनिउम माकुलातुम के औषधीय गुण धर्मों के बारे में जानकारी दी है। इन्होंने छर्दि तथा हेर्पीस के लिये पौधे के ताजा निकाला स्वरस को तथा संधिशूल के लिये पौधे के चूर्ण को लेने की सलाह रोगी को दी है।

लोक चिकित्सा में पौधे के औषधीय सुरा सार तथा स्वरस का प्रयोग संज्ञाहरण के रूप में, तमक श्वास, कैन्सर की गांठे, संकोच, शामक, आमाशय तथा आंत्रशूल, मूत्रनाश, पाण्डु, कष्टार्तव, प्रदूषण, उपदंश में होता है। रूमेटीझम तथा संधिशूल के लिये पत्र असरकारक है। ताजीकिस्तान में पौधे के फलों का प्रयोग अपस्मार, रक्तवह संस्थान की व्याधियों तथा त्वचा के केन्सर में होता है।

पारंपरिक चिकित्सा में पौधे के फलों का बाह्य प्रयोग किया जाता है। कोनाइन संज्ञाहरक द्रव्य है।

कल्पना तथा प्रयोग :- खरल में कोनिउम माकुलातुम के कोमल पौधे 1 बड़ी चम्मच (15 ग्राम) पीस लें। दिन के समय में शूल वाले स्थान पर लगायें। एक गिलास (200 मि०ली०) औषधीय सुरा सार को उतनी ही मात्रा में कच्चे माल के साथ एक कटोरे में मिलाकर कसकर ढक्कन लगाकर 10-15 दिन तक रखें। बीच-बीच में हिलाते रहें। छानकर शूलयुक्त स्थान पर लगायें तथा 4-5 बूंदों का प्रयोग करें। औषध लगायें हुए स्थान को सुखोष्ण कपड़े की पट्टी से बांध दें।

एक बड़ा चम्मच (15 ग्राम)पौधे के पत्र में 1 गिलास (200 मि०ली०) पानी मिलाकर 1 घण्टे के लिये रखें। छानकर पट्टी के रूप में रूमेटीझम तथा संधिशूल में प्रयोग करें।

एक तामचीनी कलईदार पात्र में एक गिलास (200 मि०ली) पानी में मिलाकर इसे धीमी आंच पर 5-10 मिनट तक उबालें। छानकर 1 चम्मच (5 ग्राम) दिन में तीन बार लें।

एक कटोरे में 1 गिलास (200 मि०ली०) सूर्यमुखी के बीज का अथवा जैतुन का तैल और 1 चम्मच (5 ग्राम) कोनिउम माकुलातुम के पौधे का चूर्ण मिलाकर कसकर ढक्कन लगायें तथा 10-15 दिन तक रखें। बीच बीच में हिलाते रहे। छानकर शूल युक्त स्थानों पर लगायें।

कोन्वोल्वुलुस आर्वेन्सिस
CONVOLVULUS ARVENSIS

अभिलक्षण :- विश्व में इस क्षुपीय पौधे की 250 प्रजातियां है जिनमें मध्य एशिया देशों में 38 प्रजातियां तथा तुर्कमेनिस्तान में 13 प्रजातियां मिलती हैं।

औषधीय गुणधर्मों वाला यह पौधा बन्यवल्ली एक अति विस्तारित पौधा है तथा पेचेकलर कुल का है। पौधे के जमीन पर फैलते हुए कई कांड होते हैं। कांड पतला, मरोड़दार, रोमाच्छादित कुन्तल होता है। यह 30-40 से०मी० लम्बा होता है। मूल संस्थान मज़बूती से फैला हुआ है।

प्रकंद लम्बा, शाखायुक्त होता है। मुख्य मूल 2 मीटर गहरा जाता है। पत्रों का विन्यास काण्ड पर सिरावत् है। इनका आधार भाग दीर्घवृंताभ होता है।

पौधे के पुष्प श्वेत-जामुनी, मुख्य अंतर्दल घंटाकार होता है। पुष्प हलके, मृदु होते हैं। पौधे को मई-जुलाई में पुष्प तथा जुलाई-सितम्बर में फल लगते हैं। फल गोल चिकनी उलीचक है।

उगने की विशिष्टतायें :- बीन्डवीड के पुष्प सुबह सात अथवा आठ बजे खिलते है तथा रात को बंद हो जाते हैं अगर ये दिन में बंद रहते है तो बारिश की आशा की जाती है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

विस्तार :- हमारे देश में यह पौधा काराकुम रज तथा सभी जिलों में फैला हुआ है। कोन्वोलव्युकस अर्वेन्सीस खेती किये जाने वाले पौधे में ज्यादा स्थल घेरते हैं। यह sweage forms तरबूज के खेतों तथा बगीचों में एवं aryks के किनारों पर भी उगता है।

प्राकृतिक उपलब्धि :- हमारे देश में बीन्डवीड दुर्लभ पौधा नहीं है। औषधीय उद्देश्यार्थ भण्डार पर्याप्त है।

प्रयोज्य कच्चा माल :- पौधे के मूल तथा क्षुप प्रयोज्य कच्चा माल है। ताजे क्षुप का प्रयोग होता है। मूल को पतझड़ अथवा बसंत में इकट्ठा किया जाता है। इकट्ठे किये हुए कच्चे माल से मिट्टी साफ करनी पड़ती है। यह सामान्य पद्धति से तैयार किया जाता है। छांव में इसे सुखाया जाता है। तैयार कच्चे माल को कागज़ अथवा कपड़ों के थैलों में संग्रह किया जाता हैं संग्रहण समय अवधि 3-5 साल की है।

रासायनिक संघटन :- बीन्डवीड (कृतृण) के पत्र में विटामिन सी तथा केरोटीन होते है। पौधे के प्रकन्द तथा अन्य भाग में रेचक पदार्थ कोन्वोलब्युलीन ग्लायकोसाइड होता है। तदुपरांत पौधे के गुण में म्युकस ग्लायकोसाइड्स, सेपोनीन्स, कड़वे पदार्थ, वीटामिन ई, तथा बीज में आल्कलोइड्स होते है।

प्रयोग :- पौधे के औषधीय गुणधर्मो की सर्वप्रथम जानकारी सीसेरोन (106-43 ई०पू०), केटोन (234-149 ई०पू०) प्लाइनी वरिष्ठ (23-79 ई०पू०) के कार्यों में पूर्व के विख्यात वैज्ञानिक अबु अली इब्न सीना के "Canon of Medical Science" में मिलता है। तमक श्वास फुफ्फुस, यकृत् तथा प्लीहा की व्याधियों की चिकित्सा के लिये कोन्वोलव्युलस अर्वेन्सीस का प्रयोग होता है। प्राचीन रोमन लोग तने से निकला दूध जैसे द्रव का प्रयोग अतिसार की चिकित्सा में करते थे।

बीन्डवीड का चिकित्सा शास्त्र में प्रयोग मूत्रल तथा रेचक के रूप में किया जाता है। पौधे के द्रव में कोन्वोलब्युलीन है। इसका प्रयोग वायुशामक तथा आमाशयिक नलिका की चिकित्सा के लिये तथा गर्भाशय के संकोचन के लिये किया जाता है।

पारंपरिक चिकित्सा में बींडवीड के ताजे पौधे रक्तस्थापक के रूप में तथा सशोफ व्रण को सुखाने के लिये किया जाता है। बींडवीड के सुखे पौधे का प्रयोग नहीं करने के लिये सलाह दी जाती है। पौधे का शुष्क कच्चा माल अपने जैविक क्रियाशील तत्वों को खो देते हैं।

पौधे के मूल से निर्मित सार का प्रयोग अतिसार में विस्तृत रूप से किया जाता है। तुर्कमेन पारंपरिक चिकित्सा में पौधे के पुष्प से तैयार किये गये सार का प्रयोग श्वसनवह संस्थान के शोथ की चिकित्सा के लिये होता है। पौधे का प्रकन्द तन्द्राजनक है। पौधे के बीज से बनाया हुआ फांट स्वेदजनक के रूप में प्रयुक्त होता है।

पूर्वीय चिकित्सा में बींडवीड के पौधे तथा उसके द्रव का प्रयोग श्वसन नलिका शोथ धमनी काठिन्य, राजयक्ष्मा तथा ज्वर में होता है।

औषध कल्पना तथा प्रयोग :- औषध के सीरप का प्रयोग व्रणयुक्त त्वचा पर होता है। ताजे पौधे, पुष्प 70 प्रतिशत आल्कोहोल अथवा एल्कोहोलिक पेय, 1 बड़ा चम्मच (15 ग्राम) पौधे के द्रव को आधा गिलास (100 मि०ली) एल्कोहोल मिलाकर कसकर ढक्कन बंद करें। 10-15 दिन तक रखें। समय समय पर हिलाते रहें। तैयार सीरप को छान लें। प्रयोग करने से पूर्व सीरप में पानी मिलाना चाहिये। एक बड़ा चम्मच (15 ग्राम) सिरप आधे पानी के लिये चाहिये। तत्पश्चात् हिलायें। व्रण के ऊपर दिन में तीन बार यह सिरप लगाया जाता है।

एक बड़ा चम्मच पुष्प अथवा पौधे को 1 गिलास पानी में मिलाकर 10-15 मिनट तक उबालें। छान लें। तैयार सार आधा गिलास दिन में तीन बार लें। इस सार का अतिसार में प्रयोग होता है।

एक चम्मच प्रकंद को 1 गिलास (200 मि०ली) उबलते हुए पानी में मिलाकर 5-10 मिनट तक उबालें। तैयार सार को छान लें तथा दिन में तीन बार उसका सेवन करें। यह औषध तमक श्वास तथा ऊर्ध्व श्वसनवह संस्थान के शोथ में प्रयुक्त होता हैं। पौधे के प्रकंद के शुष्क चूर्ण को कपड़े से छान लें। एक चम्मच चूर्ण को 1 लीटर पानी में मिलाकर थोड़ी देर रखें। सोने से पूर्व 1 कप पीयें। यह एक अच्छा तन्द्राकर औषध है।

1 चम्मच पौधे के शुष्क बीज को 1 गिलास पानी में मिलाकर थोडी देर रखें। कपड़े से छानकर आधा गिलास दिन में तीन बार भोजन पूर्व लें। यह फांट स्वेदल के रूप में प्रयुक्त होता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

कोतोनेआस्तेर नुम्मुलारिउस COTONEASTER NUMMULARIUS

अभिलक्षण :- इस फलों वाले पौधे की 7 प्रजातियाँ हैं। इस पौधे को यिल्गो भी कहा जाता है।

कोतोनेआस्तेर नुम्मुलारिउस रोझेसी कुल का पौधा है। यह छोटा झाड़ीदार 20-100 से॰मी॰ ऊँचा पौधा है। तरुण हरे पत्र श्वेत रजाई की तरह शुद्ध होते हैं तथा एक दूसरे के समीप रोम से आच्छादित होते है। एक साल के बाद पौधा अनावृत तथा गहरे भूरे वर्ण का दिखता है। उसकी शाखायें धुंसर होती हैं। इसके पत्र मोटे होते हैं जैसे कि सिसे के बने हो तथा उसकी सतह चमकीली हरी होती है, सामान्यत: पत्रहीन तथा क्वचित् झाड़ीदार होता है। पत्र की नीचे की सतह श्वेत रजाई जितनी श्वेत होती है तथा उसके ऊपर घने रोम होते हैं। यह अण्डाकार होता है। इसके नाजुक पत्र 7-12 मि॰मी॰ लम्बे तथा 4-10 मि॰मी॰ चौड़े होते हैं। इसका संयुक्त पुष्प श्वेत रजाई की तरह घने रोमों से आच्छादित होता है। प्रत्येक में 3-5 पुष्प होते हैं। इसके प्रकाशभरे श्वेत दल 3-4 मि॰मी॰ लम्बे होते हैं। छोटे फल का कद 7-8 मि॰मी॰ का होता है, जो सामान्यत: रोमाच्छादित होता है। इसका वर्ण गुलाबी तथा इसमें दो गुठली होती हैं। इसमें पुष्प तथा फल अप्रैल-अक्तूबर में आते हैं।

निवास विशिष्टतायें :- हमारे देश में यह झाड़ीदार पौधा समुद्र तल से 150 मीटर की ऊँचाई पर उगता है। यह चट्टानों तथा खाइयों में उगता है। अगर वातावरण बारिशवाला तथा सुखोष्ण हो जाये तो छोटे जंगल बन जाते हैं। इसका प्रजनन मूल द्वारा होता है।

विस्तार :- यह बोलशोई बालखान में, मध्य कोपेतदाग, आवाझा, देगीरमेन्ली, सुलुकली, गोकदेरे, चायेकदे, होवदान, गोमपि, अर्चाबील, चोपानदाग, कोयतेनदग तथा खोजायपीलात में फैला हुआ है।

प्राकृतिक उपलब्धि :- हमारे देश में यह दुर्लभ पौधों की सूची में नहीं है। औषधीय उद्देश्यार्थ पर्याप्त भण्डार है।

औषधीय कच्चा माल :- त्वक् तथा कलियों को वसंत में, पत्र मई-जून में, पुष्प अगस्त-सितम्बर में तथा इसके मूल सितम्बर-अक्तूबर में इकट्ठे किये जाते हैं। माल को कागज़ अथवा कपड़े के थैलों में संचय करना चाहिये। इसकी अवधि 1-2 साल की है।

रासायनिक संघटन :- पौधे के रासायनिक संघटन का पूरी तरह अध्ययन नहीं हुआ है। इसके फल में नाइट्रोजन, संयुक्त सायेनहाइड्रीक एसीड, वीटामिन सी, फ्लेवोनोइड्स, एन्टोसीयान्स होते है। पत्र में फीनोलकार्बोन एसीड, केटेचीन तथा वीटामिन सी होते हैं।

प्रयोग :- पूर्व के विख्यात वैज्ञानिक अबु अली इब्न सीना द्वारा लिखित विश्व प्रसिद्ध पुस्तक ''कैनन ऑफ मेडिकल सायंस'' तथा अबु रैहान बीरूनी द्वारा लिखित अविसेन्ना तथा फार्मकोग्नोसी इन मेडिसिन में वर्णित है कि इस पौधे का रेचक गुण है।

वैज्ञानिक चिकित्सा में इस पौधे का प्रयोग जीवाणु के विरुद्ध किया जाता है। लोक चिकित्सा में इसके मूल की चाय, गठिया में पी जाती है। शाखा द्वारा निर्मित मधुर द्रव का प्रयोग लोमशातन के रूप में होता है। इरान में इसको घुलाकर विसूचिका में प्रयोग किया जाता है। फल का प्रयोग आहार में होता है। याकुत पैड़ का सीरप कंडू में तथा भोजन में प्रयुक्त होता है। तिब्बती तथा मोंगोलीयन चिकित्सा में इसका प्रयोग रक्त विषमयता, रक्तातिसार, अन्य संक्रमणजन्य व्याधि तथा आनाह में होता है।

कल्पना तथा प्रयोग :- शुष्क मूल एक चम्मच (5 ग्राम) में एक गिलास (200 मि॰ली) उबला हुआ पानी मिलाकर 20-30 मिनट रखें। छानकर दिन में 100 मि॰ली॰ तीन बार पियें। एक बड़ा चम्मच (15 ग्राम) बीज तैल को एक गिलास (200 मि॰ली) जैतुन तैल अथवा सूर्यमुखी के बीज के तैल में मिलाकर 10-15 दिन उष्ण स्थान पर रखें। बीच-बीच में हिलाते रहें। छानकर इस फांट के 10-15 बूंद दिन में तीन बार लें।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

क्राम्बे कोत्स्चिआना
CRAMBE KOTSCHYANA

अभिलक्षण :- तुर्कमेनिस्तान में क्राम्बे कोत्स्चिआना की चार प्रजातियाँ मिलती हैं। पौधे का वैज्ञानिक नाम "क्राम्बे" है जो ग्रीक "गोभी जैसा" से भाषांतर किया हुआ है। वास्तव में गोभी के पत्र तथा क्राम्बे कोत्स्चिआना के वार्षिकी पत्र में भेद करना मुश्किल है। यह बड़ा बहुवर्षीय क्षुपीय पौधा है। प्रकंद 75-150 से०मी० लम्बा होता है। पौधा 100-160 से०मी० चौड़ा होता है। पत्र प्रकंद से निकलते हैं। ये हरे होते हैं तथा उसका अधोभाग घना रोमाच्छादित होता है। इसका व्यास 50-80 से०मी० होता है। कटींग की लम्बाई 20-50 से०मी० तथा चौड़ाई 2.5-3 से०मी० होती है। प्रत्येक मुख्य शाखा में 5-15 पत्र होते हैं, आकार में अण्डाकार होते हैं, तथा 10-15 छोटी श्वेत पुष्पों वाली शाखायें होती हैं। पौधे में अप्रैल-मई में पुष्प लगते है। फल कान की वाली जैसे आकार वाले एक बीजवाला होता है। ये मई-जून में पकते हैं।

उगने की विशिष्टतायें :- एक पौधा लगभग 35-250 ग्राम बीज उत्पन्न करता है। क्राम्बे कोत्स्चिआना का प्रजनन बीज द्वारा होता है। विकास का दर बहुत ऊँचा है। प्रति 100 में से 87 बीज अंकुरित होते हैं। बीज से अंकुर निकलने के लिये 100-150 डिग्री से० तापमान चाहिये। सात से नौ साल में पौधे बीज उत्पन्न करते हैं जिनमें तैल होता है। प्रयोज्य मूल का वजन 3.5 किलोग्राम तथा कभी-कभी 8-10 किलोग्राम होता है। प्रकंद का व्यास 10-15 से०मी०, लम्बाई 100-110 से०मी० होती है। मुख्य मूल से 2-5 से०मी० व्यास वाले, अतिरिक्त मूल निकलते हैं। ये 200-280 गहरे जाते हैं। पौधे के ऊपरी भाग का वजन 230-250 ग्राम रहता है। भूमिगत हिस्सा 2-3 गुने ज्यादा भारी होता है। छोटे काल में पौधा मोटा प्रकंद बनाता है जिसमें पोषक पदार्थ होते हैं।

विस्तार :- हमारे देश में क्राम्बे कोत्स्चिआना कुरेनदग में, मध्य कोपेतदग में आर्चाबील, गोकदेरे, गोर्माप, सुलुकली, सर्यमसाकलय केलेते, होवुझलथजा, बृहन् बाकजा, आर्वाझ, दक्षिण-पश्चिमी कोपेतदग में आर्चमानः नोहुर में, गारावुल, मागत्यंगुलय, ऐदेरे, थोलदेरे, बाध्यझ, सरेहेताबाद, चेमेनेबीत, ग्यइयलजार,वोरोबेय, केपेले, होवदान, प्यनहनचेश्मे, नाडर्यवानली में मिलता है। इन स्थानों पर यह तराई में मिलता है तथा क्राम्बे कोत्स्चिआना के मैदान बनाता है।

प्राकृतिक उपलब्धि :- पौधा हमारे देश में दुर्लभ नहीं है। औषधीय उद्देश्यार्थ भण्डार पर्याप्त है। एक हैक्टर क्षेत्र में पौधे उगाने के लिये 8-10 किलो बीज चाहिये।

प्रयोज्य कच्चा माल :- तरुण शाखायें पत्र, कृन्तन, बीज तथा मूल का प्रयोग औषधीय तथा औद्योगिक उद्देश्यार्थ होता है। वसंत के आखिर में मूल को इकट्ठा करके साफ किया जाता है। इनको 0.5 से०मी० के टुकड़ों में काटकर रस्सी में पिरोया जाता है। इनको छाँव में, हवादार स्थानों पर सुखाया जाता है। पत्र के मोटे तथा लम्बे टुकड़ों को छोटे टुकड़ों में काटकर अप्रैल में सामान्य रूप से सुखाया जाता है। क्राम्बे कोत्स्चिआना के बीज मई के आखिर में अथवा जून की शुरूआत में इकट्ठा किया जाता है तो प्रभाव कम होता है। तैयार कच्चे माल को कांच पात्र में अथवा कागज़ के थैलों में इकट्ठा किया जाता है। बीज तथा मूल को 2-3 साल तक संचय किया जाता है।

रासायनिक संघटन :- इसमें विटामिन्स सी, ए, बी, बी2, पीपी बहुत प्रकार के खनिज पदार्थ, शर्करा तथा स्टार्च, पत्र में 400 मि०ली० प्रतिशत एस्कोर्बीक एसीड, फलेवोनोइड्स तथा पोलीसेकेराइड्स, मूल में 40 प्रतिशत, साथ ही इन्युलीन, पेकटीन, लीझोलीन तथा बीज में 40-45 प्रतिशत तेल होते हैं।

क्राम्बे कोत्स्चिआना की एक और विशिष्टता है, इसमें कोबाल्ट होता है।

प्रयोग :- बीज का तेल तथा प्रकंद का स्टार्च आहार में प्रयुक्त होते हैं। तकनीकी स्पिरिट मूल से प्राप्त किया जाता है। एक टन कच्चे माल से 120 लीटर प्रवाही प्राप्त होता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

इसके स्टार्च का प्रयोग इत्र उद्योग में होता है। स्थानीय लोग आलू के स्थान पर इसके प्रकंद का प्रयोग करते हैं। स्थानीय लोग इसमें से पशु के लिये चारा भी बनाते हैं।

पौधा परागकण उत्पन्न करता है। बहुत सारे कीट तथा मकडियां उसके समीप रहते हैं। प्रति हैक्टर 75-100 किलोग्राम मधु प्राप्त होता है।

उझबेकिस्तान में प्रकंद को सुखाकर भोजन में प्रयोग किया जाता है। पत्रों से तैयार किया हुआ सीरप भोजन तथा औषध के रूप में प्रयुक्त होता है।

पौधे के औषधीय गुणधर्मों के बारे में बहुत वर्षों पहले से पता है। वसंत में ताजे पत्र तथा तने का प्रयोग आहार के रूप में करते हैं।

पौधे से तैयार किये हुए फांट, सीरप तथा द्रव का प्रयोग विटामिन्स की कमी तथा जठराग्निमांद्य में किया जाता है। श्वसनवह संस्थान की चिकित्सा के लिये भी इसका प्रयोग होता है।

कल्पना तथा प्रयोग :- दो चम्मच (10 ग्राम) मूल को एक गिलास (200 मि०ली) पानी में मिलाकर 5-6 घण्टे के लिये उबालें। कपड़े से छानकर उसमें से एक बड़ा चम्मच (15 ग्राम) दिन में तीन बार लें। एक बड़ा चम्मच मूल को एक गिलास (200 मि०ली) पानी में उबालें। 20-25 मिनट तक रखें। छानकर 50 ग्राम दिन में तीन बार लें।

1 चम्मच (5 ग्राम) पौधे को एक गिलास (200 मि०ली) पानी में 10-15 मिनट उबालें। छानकर एक बड़ा चम्मच दिन में तीन बार लें।

1 बड़ा चम्मच बारीक कटे हुए पत्र अथवा मूल को 10 मि०ली० अल्कोहल में मिलाकर कसकर ढक्कन लगा दें। 10-15 दिन तक अंधेरे स्थान पर रखें। बीच बीच में हिलाते रहें। तैयार औषध को छानकर 5-6 बूंद दिन में एक बार प्रयुक्त करें।

पत्र के टुकड़ों को मुरब्बा (jam) बनाने के लिये प्रयुक्त किया जाता है। तैयार करने की विधि दूसरे फलों की विधि की तरह है।

क्रातेगुस पोन्तिका
CRATAEGUS PONTICA

वर्णन :- क्रातेगुस पोन्तिका आहारीय तथा औषधीय पौधा है। तुर्कमेनिस्तान की 8 सहित विश्व में 100 प्रजातियाँ हैं। सभी के औषधीय गुणधर्म हैं।

क्रातेगुस पोन्तिका रोझेसी कुल का 3-4 मीटर ऊँचा पेड़ है। शिखर अव्यवस्थित प्रसार युक्त सुन्दर होता है। तना शक्तिशाली बिना कांटे वाला होता है। तरुण शाखायें मृदुलोमश श्वेत केचे (हाथ से बनी तुर्कमेन ऊन कंबल) को याद दिलाने वाली होती हैं। पत्र व्यवस्था एकान्तर होती है। पुष्प सूक्ष्म, श्वेत होते हैं। पुष्पविन्यास 3-5 से०मी० तथा 8-12 तक पुष्प होते हैं।

क्रातेगुस पोन्तिका को मई-जून में पुष्प आते हैं। इसको सितम्बर-अकतूबर में फल लगते हैं। फली, पीले हरिताभ वर्ण से लेकर नारंगी-पीला तथा गुलाबी आभायुक्त होती है एवं 13-22 मि०मी० व्यास वाले होते हैं। अपने बड़े फल के कारण इस वनस्पति को मध्य एशिया में मूल्यवान फल देने वाला पेड़ माना जाता है।

पौधे के तुर्कमेन नाम आलयच, एमशेन, एरा, चेकेन हैं। लक्षणानुसार तुर्कमेनिस्तान में सभी प्रजातियाँ एक जैसी हैं।

जैविक लक्षण :- क्रातेगुस पोन्तिका समुद्र तल से 400-1200 मीटर की ऊँचाई पर पर्वतों के मध्य क्षेत्र में उगता है। पौधा एकाकी अथवा समूह में घाटी की पथरीली तथा मलबा ढलानों पर उगता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

एक पेड़ की पैदावार 20-30 किलो की है। पौधा बहुवर्षीय है। औसतन यह 200-400 साल जीता है।

क्रातेगुस पोन्तिका बीज द्वारा प्रजनन करता है वसंत में मूल निकलते हैं। अंकुरित बीज लम्बे समय में विकसित होते हैं। पेड़ में 10-15 वें साल में फल लगते हैं।

विस्तार :- क्रातेगुस पोन्तिका, दक्षिण- पश्चिमी कोपेतदग में, ऐदेरे, केसेयोल, आलीचली, नोहूर, सायवान, देश्त, सुंबार, गारलन्लय, येमशेन्ली, चान्दयर, मध्य कोपेतदग में, गेकदेपे दुशाकेरेकदान, शेबेरगोवस्कीय, बालागौन, बृहत्कारांकी, दिगिश, कुर्तुस्थ, आर्चबील, मुसुन्यु, बृहत् तथा लघु बाकस्या, पूर्वीय कोपेतदग में गुर्यहोवदान तथा वाहचा में विस्तृत रूप से फैला हुआ है।

प्राकृतिक उपलब्धि :- क्रातेगुस पोन्तिका तुर्कमेनिस्तान की दुर्लभ वनस्पति नहीं है। औषधीय उद्देश्यार्थ प्रयोग करने के लिये भण्डार पर्याप्त है। प्रति हैक्टर 3 पेड़ का घनत्व है। औसतन पुष्प की वार्षिक उपज 1.2 टन की तथा फल की 10-15 टन की है। औषधीय भण्डार मुख्यतः दक्षिण- पश्चिमी कोपेतदग के जलप्रधान सायवान-सुंबार में स्थित है।

औषधीय कच्चा माल :- क्रातेगुस पोन्तिका के पुष्प तथा फल को औषधीय उद्देश्यार्थ इकट्ठा किया जाता है। जब पौधे में पुष्प लगते हैं (मई पूर्वार्ध-अगस्त) तब पुष्प इकट्ठे किये जाते हैं। पौधे में ऊर्ध्व भाग के साथ बाकी की शाखायें 15 से०मी० लम्बे न हो वैसे पुष्प विन्यास शामिल हैं। इनको सामान्य तापमान पर सूखे मौसम में सूखे खुले स्थान में छांव में सुखाये जाते हैं।

पुष्प चिपचिपा एक विशिष्ट हलकी सुगंध युक्त तथा तिक्त रसवाले होते हैं। सामान्य तरीके से सुखाये जाते हैं। नमी 14 प्रतिशत से ज्यादा नहीं होनी चाहिये। तैयार कच्चे माल को प्लायवुड के बक्सों में अंदर कागज़ रखकर 10-15 किलोग्राम पैक किया जाता है। समाप्ति समय अवधि 1-2 साल की है।

केवल पके फल ही इकट्ठे किये जाते हैं। इनका मधुर स्रावरोधक स्वाद, सुगंधरहित होता है। इनको ओवन में 50-60 डिग्री से० पर सुखाया जाता हैं। तैयार कच्चे माल को कागज़ अथवा कपड़े के थैलों में 50 किलोग्राम से ज्यादा न हो उतने पैक किये जाते हैं। समाप्ति समय अवधि 2 साल की है।

रासायनिक संघटन :- क्रातेगुस पोन्तिका के पुष्प में इथरीयल तैल तथा टैनिक एसीड्स होते हैं। बीज संयुक्त होते हैं, 9.9 प्रतिशत कार्बोहाइड्रेट, 0.3 प्रतिशत शर्करा, 4.6 प्रतिशत पेक्टिन, विटामिन सी, केटेकोल लयूकोएन्टोसाटीनाइडीस, एन्टोसायेनाइडीस, सूक्ष्म मात्रिक तत्व पोटाशियम मेंगनीझ, लोहा, नसीय तैल बीज में पाया जाता है।

प्रयोग :- क्रातेगुस पोन्तिका के फल तथा पुष्प को प्राचीन काल से रोगहर माना गया है। हमारे देश के लिये यह पौधा बहुत महत्व का है। पौधे के औषधीय गुणधर्म तथा प्रयोग का वर्णन बुक आफ मेडिसिनल प्लाँट्स में वर्णित है।

क्रातेगुस पोन्तिका के फल तथा पुष्प हृद्रोग, अनिद्रा तथा भ्रम के लिये असरकारक माने जाते हैं।

प्राचीन ग्रीक चिकित्सक डायोस्कोराइड (ई०पू० 1वी शताब्दी) ने पौधे में रक्तवह संस्थान के लिये प्रभावी होने का वर्णन किया है। कुछ स्रोतों में इसको डायास्कोराईड् का सर्वरोगहर कहा गया है।

क्रातेगुस पोन्तिका के औषधीय गुणधर्मों का वर्णन पूर्वीय चिकित्सा के सुप्रसिद्ध चिकित्सक मुहम्मद हुसैन की पुस्तक "ट्रेजरी आफ मेडिसिन" में किया है जिसमें लिखा है "कुछ प्रजातियों के फल पेय के लिये, वजन बढ़ाने के लिये, शक्तिप्रद, आरोग्य लाभ के लिये, रक्त शोधन के लिये, आमाशय के लिये, निद्राकारी तथा भूख बढ़ाने वाली है। क्रातेगुस पोन्तिका का क्वाथ शर्करा के साथ शिरःशूल के लिये प्रयुक्त नुस्खा है। कठिन ग्रंथियों के लिये पीसा हुआ पौधा मलहम के रूप में प्रयुक्त होता है।

पुष्प का प्रयोग शान्तिकारी द्रव्य के रूप में तथा रक्तवह संस्थान में प्रयुक्त होता है। ये रक्तचाप को कम करने के लिये तथा नाड़ी तंतुओं को शांत करने के लिये, हृदय तथा मस्तिष्क रक्त का संचरण फिर से शुरू करने के लिये असरकारक है।

पौधे का ताजा रस हृदय तनाव को दूर करने, हृदयशूल तथा आरोग्यदायक नुस्खे के रूप में प्रयुक्त होता है।

हृद्रोग तथा उच्च रक्तचाप में टिन्चर क्रातेगुस पोन्तिका का औषधीय सुरा सार ताजा रस हृद्य का कार्य करता है। इसके फल तथा पुष्पों के फांट हृदयधमनी तन्त्रिका विकार, उच्च रक्तचाप, तीव्र मस्तिष्क विघात, वृद्धों में हृद्शूल, सतत् शारीरिक एवं मानसिक परिश्रम तथा संपूर्ण नुस्खे के रूप में असरदायी है।

पौधे के फलों का रस हृद्य होता है। पारंपरिक चिकित्सा ने क्रातेगुस पोन्तिका के औषधीय प्रभाव को साबित किया है।

इसके फलों से मुरब्बा, कई अन्य प्रकार तथा सुगंधित चाय बनते हैं। पीसे हुए फलों को पकाने के लिये प्रयोग होता है।

इसके पत्र, त्वक् तथा मूल का फांट भूरा तथा पीला रंजक द्रव्य देता है। क्रातेगुस पोन्तिका एक अच्छा मधु पैदा करने वाला है।

कल्पना तथा प्रयोग :- इसके पुष्प 2 बड़े चम्मच (30 ग्राम) में एक गिलास (200 मि०ली०) उबलता हुआ पानी मिलाकर 2 घण्टे के लिये रखें। छानकर 1/4 गिलास (50 मि०ली) दिन में तीन बार भोजन पूर्व सेवन करें।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

इसके ताजे पुष्प के कल्क (15 ग्राम) पर 90 प्रतिशत वाला मद्य डालें। इसे एक गिलास में रखकर ढक दें और 15 दिन तक छोड़ दें। बीच-बीच में हिलाते रहें। छानकर 20-25 बूंद दिन में तीन बार भोजन के पश्चात् सेवन करें।

एक बडा चम्मच इसके फल में एक गिलास (200 मि०ली) उबलता हुआ पानी मिलाकर ढक्कन लगाकर गर्म स्टोव पर घण्टे के लिये रखें। गरम न करें। छानकर तीन बड़े चम्मच (45 ग्राम) दिन में 3-4 बार भोजन पूर्व लें।

औषधीय उद्देश्यार्थ फल की एक मात्रा 50-100 ग्राम की है। इसके केंडी बनाये हुए फल के मिश्रण को नरम होने तक पकायें। पानी निकाल लें। इसको कद्दू कस करें। बीज तथा छिलके दूर करें। मिश्रण में चीनी (1:1 अथवा 1:0.5) मिलायें तथा डिब्बे में भर लें। 20-25 मिनट के लिये हिलाते रहें तथा संग्रह करें।

फलों को सीझने के लिए अपक्व फल जरूरी हैं। बीज निकालकर 50 प्रतिशत मात्रा को शर्करा पानक में डालकर 8-10 घंटे रखें। पश्चात् इसे एक मर्तबान में रखकर ऊपर से गरम चीनी पानक डालें, हिलाएं और सुरक्षित रखें।

क्रातेगुस तुर्केस्तानिका
CRATAEGUS TURKESTANICA

वर्णन :- मध्य एशिया के देशों में 50 प्रजातियाँ तथा तुर्कमेनिस्तान में 8 प्रजातियाँ होती हैं। पौधे को एलिक अथवा येमसन भी कहते हैं।

क्रातेगुस तुर्केस्तानिका, रोझेसी कुल का है। इसकी ऊँचाई 3-7 मीटर तक पहुँचती है तथा यह झाड़ीदार पेड़ है। पेड़ की लकड़ी ज्यादातर अनावृत, रक्ताभ भूरी होती है। कभी-कभी 10-12 मि०मी० लम्बे कंटक होते हैं। पत्र चमकीले हरे होते हैं। पत्र का ऊर्ध्व भाग रोमाच्छादित होता है। इसका आकार अण्डे की तरह लम्बा होता है। ये 10-35 मि०मी० लम्बी तथा 8.30 मि०मी० चौड़ी, शाखाओं पर होते हैं। अधोपत्र त्रिपक्षवत्-विभाजित तथा ऊर्ध्वपत्र 5-पक्षवत् विभाजित होते हैं।

पुष्प की 4-5 छोटी शाखायें होती हैं तथा पुष्प गुच्छ में 10-12 छोटे पुष्प होते हैं। पुष्प दल का चमकीला गुलाबी वर्ण होता है पुष्प का कद 16-18 मि०मी०, फल 11-13 मि०मी० लम्बा तथा 9-11 मि०मी० चौड़ा, रक्त वर्ण तथा एक गुठली वाला होता है। इसके जून में पुष्प आते हैं तथा सितम्बर में फल पकते हैं।

जैविक लक्षण :- यह समुद्रतल से 800-1200 मीटर की ऊँचाई पर उगता है। यह 10-15 साल के बाद फल देता है। यह पेड़ 100-200 साल जीता है। प्रत्येक पेड़ 10-15 किलोग्राम फल देता है। उष्ण मौसम में पेड़ में बहुत फल लगते हैं। फल स्वाद में अम्लीय होते हैं, लेकिन पतझड़ के आखिर में (पहले बर्फबारी के बाद) ये मीठे हो जाते हैं।

विस्तार :- क्रातेगुस तुर्केस्तानिका का फैलाव दक्षिण-पश्चिमी कोपेतदग में योलपेदेप (मागत्यमगुलय गात्राप) से लेकर आर्वाझ (बाहालर्य डालाप तक, मध्य कोपेतदग में, सुलुकलय में, गोकदरें, आर्चबील गारांकय, नोहुर कोयतेनदग में है। यह चट्टानों की धारीयों पर, खाई पर तथा पहाड़ियों पर भी उगता है।

प्राकृतिक उपलब्धि :- क्रातेगुस तुर्केस्तानिका के औषधीय प्रयोग के लिये पर्याप्त भण्डार है। बाहार्ली इलाके से 10-15 टन तक प्राप्त हो सकता है। मागत्युंलय से 8-10 टन फल तथा 2-3 टन पत्र भी प्राप्त होता है।

औषधीय कच्चा माल :- कच्चे माल के रूप में हम पत्र, पुष्प तथा फल का प्रयोग कर सकते हैं। पुष्प को पूरा विकसित होने पर ही इकट्ठा किया जाना चाहिये। इनको सुबह में बहुत पहले तथा बारिश के बाद इकट्ठा नहीं करना चाहिये। इकट्ठे किये हुए पत्रों को बरामदे में सुखाना चाहिये तथा कागज़ के थैलों में पैक करना चाहिये। संरक्षण समय 1-1.5 साल का है।

फल जब पके हों तब ही उन्हें इकट्ठा करना चाहिये। इकट्ठा करते समय सड़े हुए तथा कच्चे फलों को अलग करना चाहिये। केवल अच्छे फलों को ही सुखाया जाता है तथा कागज़ तथा कपड़े के थैलों में संरक्षित किया जाता है। संरक्षण समय अवधि 2 साल की है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

रासायनिक संघटन :- पूरे रासायनिक संघटन का ज्ञान नहीं हुआ है। लेकिन इसका संघटन क्रातेगुस तुर्केस्तानिका के संघटन से नज़दीक है। इसके पुष्पों में केफीन, खट्टा क्लोरोजन, होलिंग, इथरीयल तैल हैं। फल में मैलिक सिट्रिक अम्ल, शर्करा, फ्लैवोनोइड्स, ग्लायकोसाइड्स, विटामिन सी तथा कैरोटीन है। साथ ही इसमें लोह, ताम्र, यशद, मैंगेनीझ है, ये सूक्ष्म तत्व मनुष्य के स्वास्थ्य के लिये बहुत उपयोगी है। विटामिन पी के उत्पादन के लिये इसे सबसे अच्छा स्रोत माना जाता है। पेड़ के नीचे गिरे हुए पत्रों से भी इसे बनाना शक्य है।

प्रयोग :- प्राचीन काल से पेड़ के औषधीय गुणधर्म ज्ञात हैं। प्राचीन ग्रीक चिकित्सक डायोस्कोराइड ने इस वृक्ष के बारे में लिखा है तथा इसका प्रयोग हृद्रोग में किया है।

पेड़ के पुष्प का प्रयोग स्वरस बनाने के लिये किया जाता है जो हृद्रोग की चिकित्सा में प्रयुक्त होता है। बाहालींय तथा मागत्यंगुली एलाप्स में (लोक चिकित्सा के रूप में) पुष्प, पत्र तथा फल का प्रयोग उच्च रक्तचाप, इस्कीमक हृद्रोग, कोरोनरी आर्टरीस को चौड़ा करने के लिये, ऑक्सीजन प्रवाह सुधारने के लिये, हृद्नलिकाओं के लिये, निद्राजनक के रूप में, नाडी तंतुओं को शांत करने के लिये, विविध शिरःशूल की चिकित्सा के लिये तथा अपस्मार में होता है। साथ ही, इसका प्रयोग रक्त का शोधन करने के लिये आमाशय तथा यकृत् के कार्य को सुदृढ़ बनाने के लिये, जठराग्नि उद्दीपनार्थ, रक्तातिसार को रोकने के लिये, मूत्राशय शोथ की चिकित्सा के लिये, सकष्ट मूत्रप्रवृत्ति में, तथा शोथ एवं मधुमेह की चिकित्सा के लिये भी होता है।

कल्पना तथा प्रयोग :- एक बड़ा चम्मच (15 ग्राम) पुष्प लेकर उसमें 200 मि०ली० उबला हुआ पानी मिलायें। दो घण्टे तक कसकर ढक्कन लगाकर रखें। कपड़े से छानकर 50 मि०ली० दिन में तीन चार बार लें। एक बड़ा चम्मच (15 ग्राम) कूटे हुए फल में 200 मि०ली० उबला हुआ पानी मिलाकर 2 घण्टे तक उबालें, कपड़े से छानकर, तैयार प्रवाही 45 ग्राम दिन में तीन बार लें। फल से निर्मित मलहम 55 ग्राम का प्रयोग करें। फल का रस 75-80 मि०ली० पीने के लिये प्रयोग करें।

दो बड़े चम्मच पुष्प (30 ग्राम) 200 मि०ली० स्पिरिट में मिलाकर 10-15 दिन तक रखें। समय समय पर हिलायें। कपड़े से प्रवाही को छानकर 10-15 बूंद दिन में तीन बार लें।

क्रोकुस मीकेल्सोनिई
CROCUS MICHELSONII

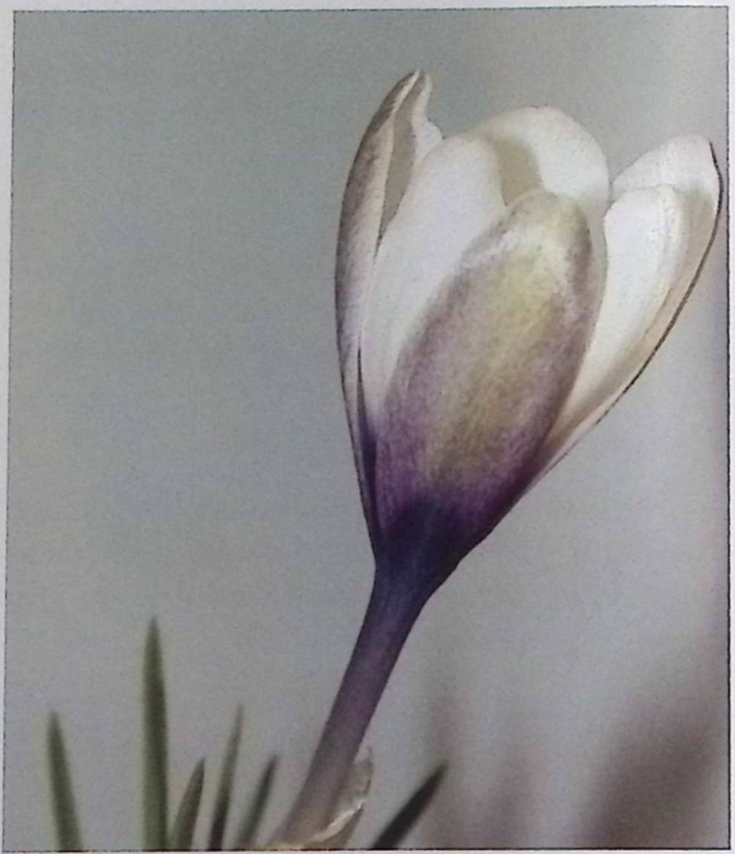

वर्णन :- विश्व में 70 से ज्यादा प्रजातियाँ, मध्य एशिया के देशों तथा तुर्कमेनिस्तान में 20 प्रजातियाँ हैं।

यह तेकेसाकगाल कुल का तथा 10-12 से०मी० ऊँचा पौधा है। यह बहुवर्षीय पौधों का प्रतिनिधि है। यह जमीन में गहरा उगता है। यह सफेद होता है तथा सूखी त्वक् से आच्छादित होता है। त्वक् के ऊपर के भाग पर बहुत रोम होते हैं। यह प्याज एक गेंद जैसा होता है तथा उसका व्यास 2.5 से०मी० होता है। इसके नीचे के हिस्से पर मूलों का ढेर होता है। पत्र तथा पुष्प प्याज के शिखर पर निकलते हैं।

पौधे के 6-9 पत्र होते हैं जिनकी निचली सतह पर दो श्वेत रेखाएँ होती है। पुष्प खिलने के समय पत्र निकलते हैं। इसको पीत अथवा श्वेत वर्ण के तथा संपूर्ण सुगंधवाले 1 अथवा 2 पुष्प होते हैं।

जैविक लक्षण :- हमारे देश में यह समुद्रतल से 1500-2800 मीटर की ऊँचाई पर उगता है। इसको खड़ी चट्टान पर उगना पसंद है। कंद के द्वारा इसका प्रजनन होता है तथा मार्च-अप्रैल (2-3 सप्ताह) में पुष्प आते हैं। फल अप्रैल-मई में पकते हैं।

विस्तार :- हमारे देश में दक्षिण-पश्चिमी कोतेतदग में, मध्य कोपेतदग में, दुशाकेरेदाग, हेयराबात, आसयलमा, हौदान में उगता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

प्राकृतिक उपलब्धि :- क्रोकुस मीकेल्सोनिई हमारे देश की दुर्लभ वनस्पतियों का एक प्रतिनिधि है। इसका भण्डार औषध उद्योग की जरूरत के अनुरूप पर्याप्त नही हैं। खेती करने की सलाह दी जाती है। कोपेतदग प्राकृतिक अभयारण्य में इसका संरक्षण किया गया है।

औषधीय कच्चा माल :- पौधे के पुष्प का कच्चे माल के रूप में प्रयोग है। जब पौधे में पुष्प लगते हैं (मार्च-अप्रैल) तब इनको दिन के उत्तरार्ध में इकट्ठा किया जाता है तथा इनको सामान्य पद्धति से अच्छी तरह हवादार कमरे में सुखाया जाता है। इनको छन्नी में रखकर 15 मिनट तक सुखाया जाता है। इन्हें कमरे के तापमान पर सुखाने पर ज्यादा गुणात्मक होते हैं। इनको कागज़ के थैलों में रखा जाता है। संरक्षण समय अवधि 1-3 साल की है।

रासायनिक संघटन :- क्रोसीन, पिक्रोक्रोसीन, केरोटीनोईड्स, फ्लैवोनोईड्स, इथर तैल, थाएमीन तथा रीबोफ्लेवीन विटामिन्स इसमें मिलते हैं। ये भी ढूंढा गया है कि पौधे के संघटन में ग्लुकोज भी रहता है।

पौधे के गुणधर्म के बारे में सर्वप्रथम वर्णन प्रख्यात ग्रीक चिकित्सक गालेन तथा चिकित्सा के पूर्वीय सितारें इब्न सीना, अबु रेहान बिरूनि, सेयीत इस्माइल गुरगेन्ली एवं मुहम्मद हुसैन ने किया था।

क्रोकुस मीकेल्सोनिई व्यक्ति को अच्छी अनुभूति कराता है, ज्ञानेन्द्रियों को मजबूत बनाता है तथा प्रदुष्ट होने से इनको बचाता है। यह यकृत्, श्वसन संस्थान के अवयव, मूत्राशय तथा अन्य आंतरिक अवयवों के कार्य को सुधारता है। यह मनुष्य का चेहरा साफ करता है।

इस पौधे की चाय अगर जन्म के तुरन्त पूर्व पी जाय तो यह बहुत मददगार होता है। यह वृक्क तथा मूत्राशय में उत्पन्न अश्मरी को पिघलाता है, यदि उसका प्रयोग मधु के साथ किया जाय। इस पौधे को अगर सूंघा जाय तो यह उरस्तोय को मिटाता है तथा निद्रा लाता है। इसके पानी में भीगोई हुई कपड़े की पट्टी ललाट पर रखने से तीव्र शिरःशूल तथा अनिद्रा को दूर करता है। क्लीनिकल (व्यवहारिक) चिकित्सा में पौधे का प्रयोग विबंध की चिकित्सा में, चयापचय को सुधारने के लिये तथा ज्यादा पित्त उत्पादक द्रव्य के रूप में किया जाता है।

कल्पना तथा प्रयोग :- क्रोकुस मीकेल्सोनिई के सूखे द्रव सार दो चम्मच (10 ग्राम) को 100 मि०ली० उबलते हुए पानी में मिलाकर एक घण्टे के लिये रखें। 1 बड़ा चम्मच (15 ग्राम) तैयार सीरप को दिन में तीन बार लें।

कुर्कुमा दोमेस्तिका
CURCUMA DOMESTICA

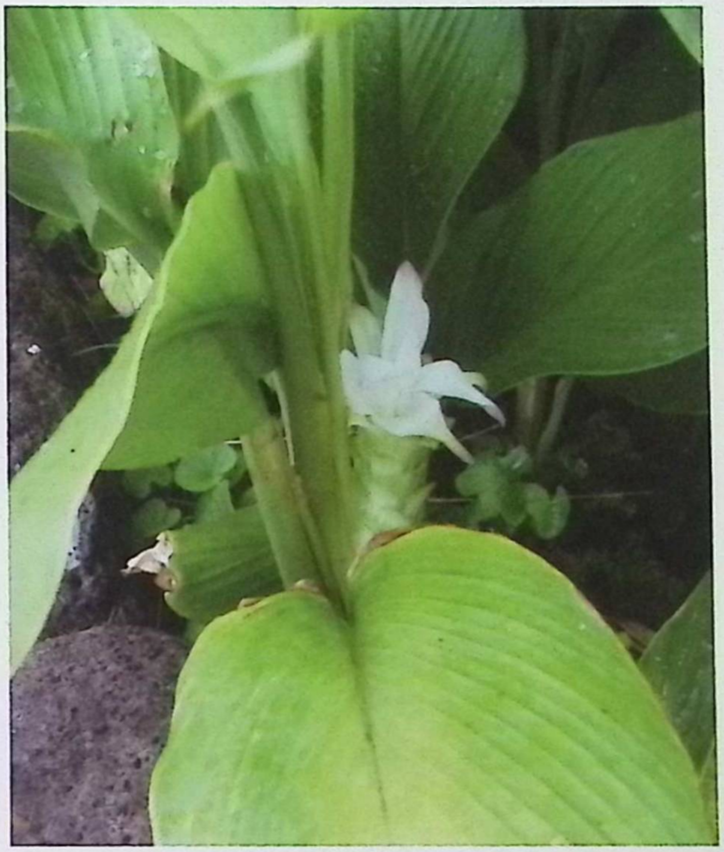

वर्णन :- इस पौधे की मातृभूमि दक्षिण- पूर्वीय भारत को माना जाता है। केवल वहां पर पौधे की जंगली प्रजाति के रूप में उगता है। यह हमारे देश में नहीं उगता है। यह भारत, कम्बोडीया, श्रीलंका, इन्डोनेशिया, चीन, जापान, फीलीपीन, माडागास्कार में मिलता है। बहुवर्षीय गुल्मीय पौधा कुर्कुमा दोमेस्तिका झेन्जेबिल कुल का 1 मीटर ऊंचा है। अन्य मूल इस पौधे के भूमि में रहने वाले एरकामूल से आते हैं। पत्र लम्बे मरोड़दार होते हैं। पुष्प का वर्ण पीला, 15 से०मी० ऊँचा होता है।

जैविक लक्षण :- समुद्र तल से 1500 मीटर की ऊँचाई पर यह पौधा उगता है। यह 20-30 डिग्री से० तापमान वाले तथा 1500 मि०मी० बारिश वाले स्थान पर उगता है। मध्य एशिया देशों के उष्णकटिबंधीय स्थानों में कुर्कुमा दोमेस्तिका की खेती लोगों को अधिक पसन्द है। यह पूरे पानी में रहने वाला दंडमूल द्वारा अथवा छोटे मूल द्वारा प्रजनन करता है। यह आवश्यक है कि प्रति हैक्टर 2.5 टन बोया जायें। पानी में स्थित दण्डमूल की उपज 20-25 टन/हैक्टर पहुंच सकती है। इसका 20-30 प्रतिशत औषधीय माल के रूप में प्रयुक्त होता है।

विस्तार :- कुर्कुमा दोमेस्तिका दक्षिण-पूर्वीय भारत में मिल सकता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

प्राकृतिक उपलब्धि :- यह दुर्लभ प्रजातियों में से नहीं है। औषधीय उद्देश्यार्थ भण्डार पर्याप्त है। स्वातंत्र्य प्राप्त होने के बाद हमारे देश के मार्केट में यह बहुत आसानी से मिलता है।

औषधीय कच्चा माल :- औषधीय उद्देश्यार्थ इसके लाल अन्तः मूल कच्चे माल के रूप में प्रयुक्त होते हैं। बोने के बाद 7-9 महिने के दरम्यान जलस्थ दण्ड मूल की खुदाई करनी चाहिये। खुदाई के 2-3 दिन बाद 40-45 मिनट तक इसको उबालना चाहिये। तब ये नरम हो जाते हैं। इसको धूप में सुखाना चाहिये। इसको चक्की में पिसवाना चाहिये। तैयार पीले चूर्ण को ढके हुए कांच पात्र में रखना चाहिये। समाप्ति समय अवधि 2-3 साल की है।

रासायनिक संघटन :- कुर्कुमा दोमेस्तिका के जलस्थ दंड मूल में 3.5 प्रतिशत उत्पत् तेल, चमकता लाल कुर्कुमीन (0.3-0.5 प्रतिशत), स्टार्च, प्रोटोक्साइड, गमीएरेबीक तथा तेल होते हैं।

प्रयोग :- प्राचीन समय से पूर्वीय तथा तुर्कमेन चिकित्सा में कुर्कुमा दोमेस्तिका का प्रयोग ग्रंथि, प्रतिश्याय तथा एलर्जी की चिकित्सा में एवं आमाशय के कार्य को सुधारने के लिये होता आ रहा है आज भी यह इसी उद्देश्य के लिये प्रयुक्त हो रहा है।

भारतीय चिकित्सा में कुर्कुमा डोयेस्टिका का प्रयोग कंडु तथा चर्मशोथ में होता है।

तुर्कमेन राष्ट्रीय चिकित्सा में कुर्कुमा दोमेस्तिका का प्रयोग विशेषतः यकृत् शोथ में होता है। इसका चूर्ण सामान्यतः ब्रेड के साथ खाया जाता है अथवा भोजन में 1 चम्मच डाला जाता है।

चाईनीज चिकित्सा में कुर्कुमा दोमेस्तिका को रक्तस्राव रोकने अथवा शूल निवारण के लिये उपयोग किया जाता है। इसका प्रयोग रक्तस्राव, अनार्तव, अर्श तथा आमाशय व्रण की चिकित्सा के लिये प्रयुक्त किया जाता है।

वैज्ञानिक चिकित्सा में कुर्कुमा दोमेस्तिका जिसमें होलगोल औषध भी शामिल है, का प्रयोग पित्त में अश्मरी कम करने के लिये, ग्रंथि की अर्बुद के लिये, लिवर सीरोसीस तथा यकृत् शोथ के लिये होता है।

कुर्कुमा दोमेस्तिका में कुछ तिक्त रस तथा आह्लादक सुगंध होते हैं तथा यह आहार को लम्बे समय तक बनाये रखता है। अमेरिकन तथा युरोपियन देशों में इसको कन्फेक्शनरी, अचार, पनीर, मक्खन तथा मद्य में सुगंध तथा वर्ण के लिये डाला जाता है। सब्जी मिश्रण के घटक तत्वों में से यह एक है।

यह आश्चर्यजनक पौधा स्वाद के लिये पूर्वीय देशों में अच्छी तरह जाना जाता था। मांस, मत्स्य, चावल तथा सब्जी वालें भोजन बनाते समय इसको डाला जाता है। मध्य एशिया में लोग कुर्कुमा दोमेस्तिका के बगैर अपने भोजन की कल्पना नहीं कर सकते। उझबेक लोग जब पीलाउ, गायनात्मा (राष्ट्रीय भोजन) पकाते हैं तो अक्सर इसका प्रयोग करते हैं। ताजिकिस्तान में पेय को वर्ण देने के लिये इसका प्रयोग होता है।

औषध बनाने की विधि तथा प्रयोग :- एक चम्मच जलस्थ दण्ड मूल को तामचीनी पात्र में लेकर उसमें एक गिलास (200 मि०ली) पानी मिलाकर 5-10 मिनट धीमी आंच पर पकायें। उबालने के बाद छान लें। प्रतिदिन 8-10 ग्राम तैयार औषधीय फांट लें। औषधीय फांट का प्रयोग आमाशय के व्रण (जब आमाशय के व्रण से रक्तस्राव हो रहा हो) रक्तमूत्रता तथा अन्य आंतरिक रक्तस्राव में होता है।

कुर्कुमा दोमेस्तिका के भूमिस्थ एरका मूल एक चम्मच में एक गिलास (200 मि०ली०) उबलता हुआ पानी डालकर 2 घण्टे के लिये रखें। औषधीय फांट को छान लें। दिन में तीन बार 1/3 गिलास का सेवन करें।

इस औषधीय पौधे के 2 ग्राम शुष्क चूर्ण को दिन में 3-4 बार लें।

कुस्कूता आप्रोक्सिमाता
CUSCUTA APPROXIMATA

वर्णन :- विश्व में कुस्कूता आप्रोक्सिमाता की 170 प्रजातियाँ हैं जिनमें मध्य एशिया के देशों में 35 से ज्यादा

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

तथा तुर्कमेनिस्तान में 13 प्रजातियाँ हैं। कुस्कूता आप्रोक्सिमाता की सभी प्रजातियाँ वार्षिकी तथा परजीवी है, जो तुर्कमेनिस्तान में उगती है।

कुस्कूता आप्रोक्सिमाता उसी कुल का सदस्य है जिसको वार्षिकी परजीवी पौधा कहते हैं। कांड एक धागे जितना पतला होता है तथा शुरूआती बसंत तथा पतझड़ में यह लाल हो जाता है। पुष्प छोटे, वृन्तीय, पुष्प गुच्छ में रहते हैं। पुष्प का रूप एक घण्टे जैसा होता है जो 2.5-3 मि०मी० लम्बा होता है। वर्ण श्वेत होता है। क्वचित् गुलाबी भी होता है। इसका बीज भूरा, 1 मि०मी० लम्बा तथा रोमाच्छादित होता है। पौधे में मई तथा सितम्बर में पुष्प लगते हैं तथा जून एवं अक्तूबर में फल लगते हैं।

जैविक लक्षण :- पौधा शोषातिजीव के बीच में उगता है। कभी-कभी फोर्ब्स के खेतों में भी देखने को मिलता है। इसका प्रजनन बीज द्वारा होता है। यह पौधा 30,000 तक बीज दे सकता है। 95 प्रतिशत तक बीज अंकुरित होते हैं तथा अपनी यह लाक्षणिकता 5-10 साल तक बनाये रखते हैं।

विस्तार :- पौधा दशोगुझ, आर्चमान, बाहालर्य, केलेते, मागत्यंगुलय, सुंबार तथा चेंदीर जैसी नदियों के किनारों पर, नोकदेरे में गोकदेपे, काका जिला तथा मुर्गाब, तेजेन एवं साकार जिलों में विस्तृत फैला हुआ है।

प्राकृतिक उपलब्धि :- पौधा दुर्लभ पौधों में से नहीं है। औषधीय उद्देश्यार्थ भण्डार पर्याप्त हैं। हमें प्रतिवर्ष 1-3 टन पौधा इक्ट्ठा करने का अवसर प्राप्त है। विशेषत: ये खेतों में उगते हैं।

औषधीय कच्चा माल :- औषध उत्पाद कुस्कूता आप्रोक्सिमाता को जब पुष्प आते हैं तब इकट्ठा किया जाता है। मई तथा अगस्त के महीनों में दिन के उत्तरार्ध में उत्पाद को इकट्ठा किया जाता है। इसका 10 से०मी० कद का भाग छाँव में अथवा हवादार शुद्ध कमरों में सुखाया जाता है। तैयार औषधि को प्रकाश से दूर कांच अथवा कागज़ के पेटियों में रखा जाता है। समाप्ति समय अवधि 1-2 साल की है।

रासायनिक संघटन :- कांड में कार्बोहाइड्रेट्स, सुक्रोस, फ्रुकटोस तथा ग्लुकोज एवं पौधे के बीज में कार्बोहाइड्रेट्स, स्टार्च, सेल्युलोज तथा पैकटीन होते हैं। टैनिनें तथा ग्लायकोसाइडल कुस्कुटीन भी लगभग 6 प्रतिशत रहते हैं।

प्रयोग :- अबु अली इब्न सीना की पुस्तक ''कैनन आफ मेडिकल सायंस'' में कुस्कुता के कुछ चिकित्सकीय गुणों का वर्णन मिलता है। एक सुविख्यात वैज्ञानिक ने काम शक्ति अस्थिरता तथा बंध्यव के लिये इसका प्रयोग करने की सलाह दी है।

राष्ट्रीय चिकित्सा में इसका प्रयोग अपस्मार अर्श तथा कामला में होता है। कुस्कुता के बीज से निर्मित औषध आमाशय पर प्रभाव डालती है, तापमान तथा प्रतिश्याय को कम करता है।

इसलिये कुस्कूता आप्रोक्सिमाता से बना चमकीला हरा फांट मूत्रप्रवृत्ति, शूल, काम दुर्बलता तथा इन सभी कार्यों के अभाव में प्रयुक्त होता है।

तिब्बती चिकित्सा में कुस्कूता आप्रोक्सिमाता का प्रयोग व्रण रोपण के लिये तथा जर्मनी में आमाशय एवं आंत्र की विकृति के लिये होता है। चर्म व्याधियों में अवगाह के रूप में यह उपयोगी है।

औषध कल्पना तथा प्रयोग :- दो चम्मच (10 ग्राम) पौधे के बीज को एक तामचीनी पात्र में एक गिलास (200 मि०ली०) पानी के साथ मिलाकर आधे घण्टे तक धीमी आंच पर उबालें। कपड़े से छान लें। यह औषधीय फांट दो बड़े चम्मच (30 ग्राम) दिन में तीन बार पीना चाहिये। फांट का प्रयोग प्रजनन अंगों के कार्य क्षमता की कमी में तथा बंध्यत्व (पुरुषों के लिये) में होता है।

काम दौर्बल्य में बीज के छोटे टुकड़े 0.2-0.3 ग्राम (चाकू के अग्रीय छोर पर आये उतना) दिन में दो बार ले सकते हैं।

एक बड़ा चम्मच (15 ग्राम) औषध के चूर्ण को बकरी के तेल अथवा उसके पूंछ के तेल में तलना चाहिये। तैयार औषध आमवात में जोड़ों में प्रयुक्त होता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

कुस्कूता कीनेन्सिस
CUSCUTA CHINENSIS

वर्णन :– यह कुस्कूता कीनेन्सिस कुल का प्रतिनिधि है। यह एकवर्षिय, बिना पत्रवाला परजीवी पौधा है। इसमें सूत्र अथवा गांठ के रूप में एक पादवृन्त होता है। परान्तजीवी पौधे के पादवृन्तों से यह परजीवीमूल द्वारा भोजन ग्रहण करता है।

जैविक लक्षण :– यह परजीवी तिपतिया/ चौपतिया तथा इसके अपतृण पौधों में मिलता है।

विस्तार :– पौधा मुर्गाब, लेबाप के निवासीय क्षेत्रों में, आकबुगदाय, आबादान, नोटूर, मागत्यंगुलय तथा दाशोगुझ में उगता है।

प्राकृतिक उपलब्धि :– यह दुर्लभ पौधों के समूह का है। औषधीय उद्देश्यार्थ यह पर्याप्त है।

औषधीय कच्चा माल :– कुस्कूता कीनेन्सिस कच्चा माल इसका तृण है जिसको पुष्प आने के समय इकट्ठा किया जाता है। कच्चे माल को दोपहर के बाद इकट्ठा किया जाता है। कच्चे माल को ढ़लुवा छत पर अथवा हवादार कमरे में सुखाया जाता है। तैयार कच्चे औषध को कांच पात्र अथवा कागज़ के पेटी में अंधेरे स्थान पर रखा जाता है। इसकी समाप्ति समय अवधि 1–2 साल की है।

रासायनिक संघटन :– तृण में कार्बोहाइड्रेट तथा पदार्थ A (Substance A) हैं।

प्रयोग :– ''मेडिकल हर्बस'' नामक पुस्तक में पौधे के कुछ चिकित्सकीय गुणों के बारे में लिखा है। इसका प्रयोग चाइनीज तथा तिब्बती चिकित्सा में किया जाता है। चाइनीज चिकित्सा में फांट, औषध तथा सीरप का प्रयोग ज्वर विरोधी, तालुमूल शोथ तथा अलर्क विष (rabies) में होता है। पौधे के बीज कुष्ठ तथा राजयक्ष्मा की चिकित्सा में प्रयुक्त होते हैं। औषधीय स्वेदन नुस्खा स्त्री दुर्बलता तथा शय्यामूत्र में प्रयुक्त होता है।

औषध कल्पना एवं प्रयोग :– एक बड़ा चम्मच (15 ग्राम) कच्चे माल में एक गिलास (200 मि०ली०) पानी मिलाकर तामचीनी पात्र में 5–10 मिनट धीमी आंच पर उबालें। छान लें। तैयार फांट एक बड़ा चम्मच (15 ग्राम) दिन में तीन बार लें।

एक गिलास उबले हुए पानी में एक बड़ा चम्मच कूटे हुए पौधे के तृण को तामचीनी पात्र में मिलाकर धीमी आंच पर 30 मिनट के लिये उबालें। थोड़ी देर के बाद छान लें। नपुंसकता को दूर करने के लिये 1 बड़ा चम्मच दिन में तीन बार लें।

कुस्कूता कीनेन्सिस 25 ग्राम, लोजिका, बुरनट फ्यूडल तृण तथा फल 30 ग्राम मिलाकर चाय बनाने के लिये तैयार करें। धातु के चाय पात्र में चाय बनाने के लिए 1 बड़ा चम्मच मिश्रण को 1.5 गिलास (300 मि०ली) पानी में मिलाकर धीमी आंच पर 15–20 मिनट तक उबालें। छानकर भोजन पूर्व तीन बार सेवन करें। इसका प्रयोग नपुंसकता के लिये होता है।

इसको पीने का एक और तरीका भी है। यह औषध संभोग के आधा घण्टा अथवा एक घण्टा पहले लें। यह चिकित्सा 2–3 सप्ताह तक चलती है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

कुस्कूता लेमान्निआना
CUSCUTA LEHMANNIANA

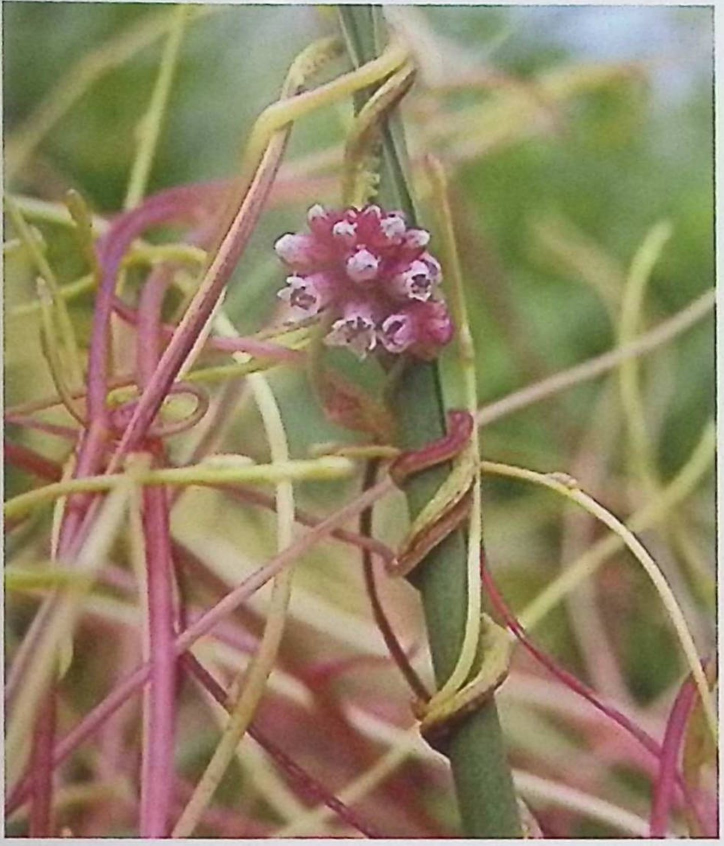

वर्णन :- यह अमरवल्ली कुल का प्रतिनिधि है। यह एकवर्षिय परजीवी है। इसके गांठ के रूप में पादवृन्त होता है। इसकी मोटाई 2-3 मि०मी० होती है। यह शाखायुक्त तथा रक्ताभ-भूरे वर्ण का है। क्वचित् ये अवर्ण भी होता है। पादवृन्त पर गहरे धब्बे होते हैं तथा यह अनाच्छादित, नरम होता है। पुष्प गुलाबी तथा फीके बैंगनी होते हैं। कापार्स फल जैसे फल अण्डे अथवा शंकु जैसा दिखता है। बीज क्वचित् हृदय जैसा होता है, वर्ण पीत, भूरा तथा यह रोमश होता है। मार्च के आखिर में तथा मई के शुरूआत में कली निकलती है। पौधे को जुलाई एवं अगस्त में पुष्प तथा वसन्त अगस्त-अक्तूबर में झड़ जाती है।

जैविक लक्षण :- यह पेडों में तथा झाड़ियों के बीच में जैसे कि बब्बूल (acacia) मलबेरी, सेब के पेड़, अंगूर की बेलें, खजूर, अनार, बुर्र तथा यष्टीमधु तथा कभी-कभी रामपर्ण (त्रिपज उद्भिद) में भी पाया जाता है।

विस्तार :- यह पौधा मागत्युंगुली, सायवान, देश्त, नोहूर, गारावुल, आर्वाझ, काका, तेजन, मुर्गाब, फाराप, सायात्, ग्यझयलायक एवं दशोगुझ जैसे क्षेत्रों में उगता है। यह नदी, झील तथा गीले स्थानों के किनारों पर भी पाया जाता है।

प्राकृतिक उपलब्धि :- यह दुर्लभ पौधे के समूह का नहीं है। औषधीय उपयोग के लिए पर्याप्त है।

प्रयोज्य कच्चा माल :- कुस्कूता लेमान्निआना का कच्चा माल उसका तृण है। इसके पुष्प लगते समय काटा जाता है। कच्चे माल के जुलाई-अगस्त सायं 3-4 बजे के बीच में इकट्ठा किया जाता है। पादवृन्त को पौधे से काटना चाहिए। कच्चे माल को छांव में कमरे में सुखाना चाहिये। तैयार औषधि को कांच पात्र में अथवा कागज़ के बक्सों में अंधेरे स्थान पर रखा जाता है। इसको रखने की समयावधि 1-2 साल की है।

रासायनिक संघटन :- इसके पादवृन्त में कार्बोहाइड्रेट्स, सुक्रोस, फ्रुकटोस तथा ग्लुकोज होते हैं। इसके बीज में कार्बोहाइड्रेट्स, एमायलम, सेल्युलोज, पेकटीन तथा कोमरीन होते हैं।

प्रयोग :- लोक तथा वैज्ञानिक चिकित्सा में कुस्कूता लेमान्निआना के चूर्ण का प्रयोग विरेचक के नुस्खें के रूप में होता है। इसका सिगरेट के रूप में धूमपान, ग्रीवाशूल (neckache), सिफिलिस, नाड़ी तंत्र की व्याधियां तथा मानसिक व्याधियां जैसे रोगों में उपयोग किया जाता है।

कल्पना तथा प्रयोग :- अच्छी तरह सूखे हुए तथा कुटे हुए तृण एक बड़ा चम्मच (15 ग्राम) को एक गिलास पानी में मिलाकर तामचीनी पात्र में धीमी आँच पर 10 मिनट के लिये उबालें। आधा घण्टा रखकर छान लें। एक बड़ा चम्मच दिन में तीन बार भोजन के पूर्व लें।

अमरवल्ली के सूखे तृण से सिगरेट बनाकर दिन में तीन बार धूम्रपान करें। यह औषधि नाडी तंत्र के तथा मानसिक व्याधियों में सहायक होता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

कुस्कूता मोनोजीना
CUSCUTA MONOGYNA

वर्णन :- यह पौधा कुस्कूता मोनोजीना कुल का है। तना मोटा, फीते जैसा तथा एन्टेसिन वर्ण का तथा एकवर्षीय अपतृण पौधा है। पुष्प बैंगनी अथवा गुलाबी 3.5-5 मि०मी० लम्बे होते हैं। बीज बड़े अनियमित हृदयाकार के, भूरे तथा लम्बे, खुले रोमों से आच्छादित होते हैं।

मार्च के आखिर में अंकुर निकलते हैं। पौधे में पुष्प जुलाई तथा अक्तूबर में आते हैं तथा जुलाई-नवम्बर में फल लगते हैं।

जैविक लक्षण :- कुस्कूता मोनोजीना एक अपतृण है तथा पेड, क्षुप, लता तथा गुल्म के बीच में उगता है।

विस्तार :- यह पौधा तराई में तथा रेगिस्तान में पाया जाता है। यह आर्चमान, बाहार्ली, गारागान, यारादजा, नोटूर, कोनेगुम्मेय, होजागाला, आर्चबील, करका, गोकदेपे, आबादान तथा ग्यझयलायाक में सेलदोन में उगता है।

प्राकृतिक उपलब्धि :- औषधीय उद्देश्यार्थ इस पौधे के भण्डार पर्याप्त हैं। यह दुर्लभ पौधा नहीं है। प्रतिवर्ष इस पौधे को 1-2 टन इकट्ठा करना शक्य है।

औषधीय कच्चा माल :- पुष्प लगते समय पौधे को इकट्ठा किया जाता है। औषधीय पौधे को जून, अक्तूबर में इकट्ठा किया जाता है। कागज़ अथवा कपड़ों के टुकड़ों पर छांव में प्रयोज्य कच्चे माल को सुखाया जाता है। तैयार सूखे हुए कच्चे माल को कांच पात्र अथवा कागज़ के बक्सों में संचित किया जाता है।

सूर्यप्रकाश से बचाये रखें। संचयन समय अवधि 1-2 साल की है।

रासायनिक संघटन :- पौधे में फीनोल- कार्बोनिक एसीड़, कोमेरिन्स, टेनीन्स तथा फ्लैवोनोड्स होते हैं।

प्रयोग :- मध्य एशिया तथा तुर्कमेनिस्तान में पौधे से निर्मित सार का विस्तृत प्रयोग पचन संस्थान की व्याधियों, मसूरिका की चिकित्सा के लिये तथा ज्वरनाशक के रूप में होता है। इरान में इसका प्रयोग ज्वरघ्न तथा पित्त निस्सारक के रूप में होता है।

औषध कल्पना तथा प्रयोग :- एक बड़ा चम्मच (15 ग्राम) बारीक कटा हुआ कुस्कूता मोनोजीना में एक गिलास पानी मिलाकर 10 मिनट के लिये उबालें। छानकर एक बड़ा चम्मच प्रतिदिन दिन में तीन बार लें।

1 चम्मच (5 ग्राम) सूखे पौधे को एक गिलास पानी में मिलाकर 15-20 मिनट तक रखें। तैयार सार को छानकर 1/4 गिलास (50 मि०ली०) भोजन के 20-30 मिनट पूर्व लें।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

चिनोदोन दाक्तिलोन
CYNODON DACTYLON

वर्णन :- विश्व में मध्य एशिया में इस औषधीय पौधे की लगभग 10 प्रजातियां हैं। केवल एक प्रजाति तुर्कमेनिस्तान में उपलब्ध है। सीट्स वंश की है। इसका मध्य (भाग) स्थिर 30-40 से०मी० ऊँचा, बहुवर्षीय है। शाखायें लम्बी समानांतर तथा ऊर्ध्व एवं अधो भागवाली होती हैं।

पत्ते कड़े होते हैं। फूल छोटे पेड के आकार के होते हैं। चिनोदोन दाक्तिलोन का कांड सीधा तथा एन्टेना (antenna) जैसा दिखता है। इस एन्टेना में कुछ छोटे पुष्प होते हैं। पौधे को मई-अक्तूबर में पुष्प आते हैं।

जैविक लक्षण :- पौधा पर्वतीय झरनों तथा नमी वाले स्थानों पर उगता है। चिनोदोन दाक्तिलोन का प्रजनन बीज द्वारा होता है। ऐसे पुष्पवाले समुह में 150-250 छोटे पौधे होते हैं जो फल पैदा करते हैं। एक हजार बीजों का वजन 0.18 किलोग्राम होता है। बीज, पानी, पक्षी तथा तेज हवा द्वारा फैलते हैं।

विस्तार :- यह मैदानों में तथा हमारे देश की उत्तरी सरहद पर उगते हैं।

प्राकृतिक उपलब्धि :- चिनोदोन दाक्तिलोन दुर्लभ पौधों में शामिल नहीं है।

औषधीय कच्चा माल :- तना तथा मूल का प्रयोग कच्चे माल के रूप में होता है। इसको वसंत की शुरूआत से लेकर पतझड़ तक इकट्ठा किया जाना चाहिये। पहले तो इसको साफ करके, धोकर, 15 से०मी० लम्बे टुकड़ों में काटकर सुखाना चाहिये। कच्चे माल को कपड़े के थैलों में संग्रहित किया जाता है।

रासायनिक संघटन :- पौधे में कार्बोहाइड्रेट, सेपोनीन, शर्करा, स्टार्च तथा ट्रीस्टीन पोलीसेकेराइड होते हैं।

प्रयोग :- लोक चिकित्सा में इसका प्रयोग वृक्क व्याधियों (दमचीतवहंजीपं) की चिकित्सा के लिये किया जाता है। एक बड़ा चम्मच चिनोदोन दाक्तिलोन को २०० मि0ली0 पानी में १५-२० मिनट तक उबालें। एक कोफी कप जितना दिन में २-३ बार लें।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

चिनोग्लोस्सुम क्रेतिकुम
CYNOGLOSSUM CRETICUM

वर्णन :-इस अपतृण पौधे की विश्व में 50-60 प्रजातियां हैं तथा तुर्कमेनिस्तान में केवल एक जाति है। पौधे के पत्र कुत्ते की जीभ जैसे दिखते हैं। इसलिये इसको ''डाग टन्ग'' कहा जाता है। चिनोग्लोस्सुम क्रेतिकुम बोराजस कुल का 30-75 से०मी० लम्बा पौधा है। यह द्विवर्षीय पौधों का प्रतिनिधि है। पौधे की डंठल सामान्यत: एकल, सीधी, रोमश, धूम वर्ण की तथा विविध वर्ण के पुष्पों से आच्छादित होती है। पत्र क्रमबद्ध स्थित होते हैं। नीचे के पत्र 2-3 (6) से०मी० लम्बे तथा नियति रूप से खण्डों में बदल जाते हैं उनकी लम्बाई 6-8 से०मी०, चौड़ाई 8-12 से०मी० होती है। धीरे-धीरे धागे में वर्गांकित हो जाते हैं। मध्य के पत्र इतने लम्बे नहीं होते, ज्यादा चौड़े तथा बिना धागे के होते हैं। ऊर्ध्व पत्र डंठल को आच्छादित करते हैं।

पत्र डंठल के शिखर पर एकत्रित होते हैं तथा बहुत बड़ा पुष्पों का ढ़ेर न बनाते हैं।

जैविक लक्षण :- पौधा समुद्र तल से 400-1200 मीटर की ऊँचाई पर उगता है। उसको टीले, ऊंची जगह पर, खुले स्थानों पर, खेती लायक जमीन में तथा नदी के किनारों पर उगना पसंद है। यह अप्रैल-मई में उगता है, जून-जुलाई में फल लगते हैं। यह बीज द्वारा प्रजनन करता है।

विस्तार :- हमारे देश में यह पौधा कोपेतदग पर्वतों के दक्षिण-पश्चिम में सोनुदाग में, सुंबार, चुबानगाला, गोचदेमीर, तामील, मागत्यंगुलय, चर्त्यगाला, मध्य कोपेतदग में, सेकीझयाप, आर्चबील, गोकदेरे, वानोवस्कीय, पूर्वीय कोपेतदग, रोबेरस्कीय में, केलतेच्चनार, मान्यप में पाया जाता है।

प्राकृतिक उपलब्धि :- यह हमारे देश के दुर्लभ पौधों में से नहीं है। औषधीय उद्देश्यार्थ पर्याप्त भण्डार है।

प्रयोज्य कच्चा माल :- पौधे के पत्र, मूल तथा मॉसल फल प्रयोज्य कच्चे माल के रूप में प्रयुक्त होते हैं। पत्र को पुष्प आने के समय इकट्ठा करना चाहिये तथा इनको तैयार करना एवं सुखाना छप्पर के नीचे चाहिये। इसको कपड़े के थैलों में रखना चाहिये। संचयन समय अवधि 1-2 साल है।

रासायनिक संघटन :- Itdili (चिनोग्लोस्सुम क्रेतिकुम) के मूल तथा बीज में साइनोग्लोसीन एल्कलोइड (0.12 प्रतिशत नये पौधे में) होता है। ये साबित किया गया है कि पौधे के तृण में सायनोग्लेसाइन, कोन्सोलीडीन गेलीओसुजीन ग्लायकोआलकलोइड्स होते हैं। साथ ही पौधे में तिक्त तथा रंजक पदार्थ होते हैं। इसमें इथर तेल, होंलिंग गोंद तथा गमिन होते हैं।

प्रयोग :- लोक चिकित्सा में इसका प्रयोग रक्तस्राव, संज्ञाहरण तथा पेशीसंकोच में नुस्खे के रूप में होता है। विषैले सर्पदंश पर इसकी पेशी संकोचनाशक प्रतिक्रिया होती है। इस पौधे का प्रयोग फुफ्फुस की व्याधियों में, कफ, सामान्य अतिसार तथा रक्तातिसार में एवं कोथ में प्रयोग होता है। इसका प्रयोग शोथ, विस्फोट तथा पागल जानवरों के दंश पर प्रलेप के लिये प्रयोग किया जाता है। पौधे के मूल तथा तेल से मिश्रित मलहम का प्रयोग अस्थि शूल तथा खिंचाव में प्रयुक्त होता है।

चिकित्सकीय प्रयोग :- एक चम्मच (5 ग्राम) पौधे के पीसे तृण को एक गिलास (200 मि०ली) उबले हुए पानी में मिलाकर ठंडा होने तक रखें। तत्पश्चात् छानकर 1 चम्मच दिन में तीन बार लें। ताजे पौधे के सिरप के 5बूँद 1 बड़ा चम्मच (15 ग्राम) पानी में मिलाकर दिन में तीन बार लें। पौधे के मूल 4 बड़े चम्मच (60 ग्राम) को पानी में मिलाकर 15 मिनट तक उबालें। पात्र पर ढक्कन लगाकर 12 घटे रखें। छान लें। तैयार प्रवाही से स्नान करके मलहम लगायें। पौधे के मूल एक बड़ा चम्मच (15 ग्राम) को आधा गिलास वानस्पतिक तेल अथवा प्राणिज वसा में मिलाकर 7 दिन तक रखें। छानकर शूलयुक्त स्थान पर लेप करें।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

चिपेरुस रोतुंदुस
CYPERUS ROTUNDUS

वर्णन :-विश्व में 300 प्रजातियां,मध्य एशिया में 14 प्रजातियाँ तथा तुर्कमेनिस्तान में 5 प्रजातियाँ मिलती हैं। पौधे को तृण के रूप में जाना जाता है। इस पौधे को एक उपयोगी तथा विशिष्ट लक्षण है। चिपेरुस रोतुंदुस का कुल दोनुजतोपालाक है। इस पौधे का मूल कंद के रूप में होता है। ऊँचाई 20-40 से०मी० होती है। यह बहुवर्षीय पौधा है। इसका सर्वप्रसिद्ध नाम ''सालामालेवकुम है।

जैविक लक्षण :- इस पौधे का नाम इसके जैविक लक्षणों से जुड़ा हुआ है। जब कांड तोड़ा जाता है तो उसी स्थान पर 2-3 दिन के बाद नया कांड उगता है। यह तृण लोगों को तीन बार नमस्कार करता है। चिपेरुस रोतुंदुस को त्वचा प्रकंद होता है, मूल अधिक संख्या में कंद बनाते हैं। इस पौधे के कांड को तीन शाखायें होती है। पत्र भूरे वर्ण के तथा 5 मि०मी० चौड़ाई वाले होते है। गुच्छे में 3-5 पत्र होते हैं। ये 1-2.5 से०मी० लम्बे तथा 1.5-2 से०मी० चौड़े होते हैं। फल त्रिकोणाकार, लम्बे तथा गहरे भूरे वर्ण के होते हैं। फल 1.5-1.8 मि०मी० लम्बे होते हैं। यह मार्च के अंत में 10 दिन के लिये पुष्प देता है। बसंत में पौधे का कंद बनता है। प्रकंद कंद में से बनता है। मई के मध्य में पौधा गुच्छा बनाता है। मई के अंत में पुष्प खिलते हैं। जून में फल लगते हैं। पतझड़ के अंत तक फल लगते रहते हैं।

चिपेरुस रोतुंदुस का प्रजनन बीज द्वारा होता है। पौधा लगभग 1000 बीज तथा 100 कंद बनाता है। कंद जमीन में 20-30 से०मी० की गहराई में बनते हैं।

विस्तार :- पौधा गीले स्थानों में उगता है। दाशोगुझ वेलायत (आंड्रेयेवस्क दाशोगुझ) में यह पौधा दुर्लभ है। देमीरगाझयक, इझार्याका, दाशराबातगाला, एट्रेक में, तेजेन, साराहस में, मुर्गाब में मारय में, तुर्कमेनशाला में, बायरामाल्य, सेरहेताबाद (गीले स्थानों में), आमुदार्या, सेर्दाबाद, बीराताद में आतामाचरात में, पेलवेर्दे, साकार्द, फाराब में, कोयतेनदग (गीले स्थानो) में, कोपेतदग मागत्यंगुलय में, एयदेरे में, योलदेरे, गुयेन्दे में, वसाकदा में, केलतेमेचदे, बोकदेरे में, आर्चबील, आर्चमान में, बाह्यालर्य में, दुरुन में, आश्खाबाद में, गोवशुत में उगता है।

यह नदी की खाईयों में, गीले स्थानों तथा इसी तरह की मिट्टी वाले स्थानों पर उगता है।

प्राकृतिक उपलब्धि :- यह पौधा दुर्लभ नहीं है। औषधीय उद्देश्यार्थ यह पर्याप्त है। पौधे के कंद तथा प्रकंद को पतझड़ में इकट्ठा करना अच्छा रहता है। औषधीय कच्चे माल को केतिन पदार्थ पर सुखाना जरूरी है। कभी कभी पौधे को पलटाना भी जरूरी है। तैयार कच्चे माल को कागज़ के थैलों में भरा जाता है। संचयन समय अवधि 2-3 साल है।

जापानी वैज्ञानिक इस पौधे से सेकवीटर्पीन, कीटोस्पीरीटीन, रूटीन अथवा कुबझोन तथा आइसोकोबीझोन नोरसेकलीनटोंनोइड निकालते हैं। इस पौधे के प्रकंद में तिक्त पदार्थ तथा इथर तेल होता है।

प्रयोग :- पूरी दुनिया में प्रसिद्ध अबु अली इब्न सीना ने अपनी पुस्तक कैनन आफ मेडिकल सायंस में इस पौधे के बारे में सलाह दी है। यह पौधा कुछ व्याधियों में मूत्रल के रूप में मदद करता है। लोक चिकित्सा में इस पौधे का प्रयोग मूत्रल औषध के रूप में होता है। चिपेरुस रोतुंदुस के प्रकंद का प्रयोग भी औषधीय उद्देश्यार्थ होता है। यह पौधा मूत्रल के रूप में तथा आमाशय शोथ में उपयोगी है। इसका प्रयोग स्त्रिओं में रजोनिवृत्ति काल में, सकष्ट आर्तव प्रवृत्ति में, यकृत् की व्याधियों में, आमाशय के शोथ, आंत्रों के शोथ में तथा राजयक्ष्मा में होता है।

कल्पना तथा प्रयोग :- कच्चे माल को अच्छी तरह सुखाया जाता है। पौधे का कंद 1 बड़ा चम्मच लेकर उसमें 1 लीटर उबलता हुआ पानी मिलाकर ढककर रखें। आधा गिलास (100 मि०ली) दिन में दो बार प्रतिदिन पीयें। यह फांट मूत्रल के रूप में तथा शूल में सहायक है। बच्चों के लिये 1 चम्मच (5 ग्राम) का प्रयोग करें।

पौधे का कुटा हआ कंद 1 बड़ा चम्मच (15 ग्राम) में एक गिलास (200 मि०ली) उबलता हुआ पानी डालकर 30 मिनट के लिये रखें। छानकर बाह्य प्रयोग करें।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

चिस्तोप्तेरिस फ्राजिलिस
CYSTOPTERIS FRAGILS

वर्णन :- उच्च गुणवत्ता तथा बीजाणुओंकी लाक्षणिकता वाले इस पौधे की विश्व में 10 प्रजातियाँ तथा तुर्कमेनिस्तान में अपनी तरह की एक प्रजाति मिलती है।

चिस्तोप्तेरिस फ्राजिलिस ग्रीसफीट (गजयक्लर)कुल का बहुवर्षीय, तृणीय 10–30 से०मी० ऊँचा, शुष्क जमीन पर उगने वाला पौधा है। पौधा पतले कांड वाला, जो मिट्टी पर उगता है, गहरे पत्रवृन्त से आच्छादित सख्त भूमि पर रहता है तथा कई सारे पत्रों के गुच्छों वाला होता है। कम समय में नग्न पत्र 10–15 से०मी० लम्बे द्वि–अथवा त्रिपक्षवत् विभाजित होते हैं। पत्र के शिखर बहुत पतले होते है तथा टूट सकते हैंबीजाणु कोश गोलाकार थैलें के आकार के तथा हलके कड़े आवरण से आवृत होते हैं।

जैविक लक्षण :- हमारे देश में यह पौधा समुद्रतल से 1200–1800 मीटर की ऊँचाई पर पहाड़ों के मध्य तथा शिखर पर उगता है। यह हमेशा छाँव में, उत्तरीय ढलानों पर, cliffs पर तथा गीली खाईयों के तल में उगता है। यह बीजाणु द्वारा प्रजनन करता है। मई–अगस्त में यह पकते हैं।

विस्तार :- चिस्तोप्तेरिस फ्राजिलिस हमारे देश में बालखन पर, नाझारेकेरेम, बाशमोंगुर, दक्षिण–पश्चिमी कोपेतदग, सुंत, हाझारदाग, मागत्यंगुलय, मध्य कोपेतदग, चोपानदाग, युल्य–गारांकय, गुर्तलयसुव, दोग्रयदेरे, होवदान, सुलुकली, मुसुन्यु, मुझेमेंदाग, बाबाझाव, गींदीवार, गोकदेरे, अमाशत, सीबीर, आर्चबील, सेमानसुर, सारयहाझाव, सांड्यकलयझाव, गारायालच्च, पूर्वीय कोपेतदग, गुर्यहोवदान, कोयतेनदग, होजायपील में मिलता है।

प्राकृतिक उपलब्धि :- यह हमारे देश के दुर्लभ अपतृण पौधों में से है। इसके भण्डार सामान्य है। उगाने की सलाह दी जाती है। चिस्तोप्तेरिस फ्राजिलिस सुंत–हाझारदाग, कुगीतांदाग तथा कोपेतदग में सुरक्षित है।

औषधीय कच्चा माल :- औषधीय उद्देश्यार्थ इसके पत्र तथा कांड का प्रयोग होता है। इसके कांड को वसंत की शुरूआत अथवा पतझड़ में इकट्ठा किया जाता है। पत्र को मई–जून में चुने जाते हैं तथा छज्जे के नीचे सामान्य रूप से सुखाये जाते हैं। तैयार कांड का प्रयोग 2–3 साल के अंदर, पत्र का प्रयोग 1–2 साल के अंदर किया जाता है। उत्पाद को सुखे स्थानों में रखा जाता है।

पौधे के रासायनिक संघटन का अध्ययन अभी तक पूरी तरह नहीं किया गया है। ये तब किया गया है कि इसके पत्र तथा बीजाणुओं में ग्लायकोसाइड्स होते है जिसमें से सायेनहाइड्रीक तथा बेन्झालडीहाइड एसीड्स बनाये जाते हैं।

प्रयोग :- पौधे के कांड के औषधीयय यूष बनाया जाता है। राष्ट्रीय चिकित्सा में आंत्र कृमि के निर्हरणार्थ इसका प्रयोग किया जाता है। तुर्कमेन राष्ट्रीय चिकित्सा (बाहालर्य तथा गोकदेपे क्षेत्रों में) पौधे के सूखे पत्र का तमक श्वास में धूमपान किया जाता है।

प्रयोग :- एक तामचीनी पात्र में अच्छी तरह कटे हुए पौधे के कांड, एक बड़ा चम्मच (15 ग्राम) में एक गिलास (200 मि०ली०) पानी मिलाकर धीमी आंच पर उबालें। पश्चात् कपड़े से छानकर आधा गिलास दिन में तीन बार भोजन पूर्व सेवन करें।

दो बड़े चम्मच सूखे पत्र का सिगरेट के रूप में दिन में तीन बार धूमपान करें। यह सिगरेट तमक श्वास में उपयोगी है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

दाक्तिलोरिजा उंब्रोसा
DACTYLORHIZA UMBROSA

वर्णन :- पौधा क्वचित् ही मिलता है तथा क्षुपीय पौधों को घेरता है विश्व में 31 तथा तुर्कमेनिस्तान में 2 प्रजातियाँ मिलती हैं। इस पौधे का एक अन्य नाम "सालाप" है।

दाक्तिलोरिजा उंब्रोसा आर्किड वंश का है। यह 25-50 से०मी० ऊँचा बहुवर्षीय पौधा है।

कंद लम्बी अंगुलियों जैसे 1-6 आकार के होते है। पत्रों का आधार स्तिफुल होता है। पत्रों का छोर रेखाओं से आच्छादित, लम्बित, 2-16 से०मी० लम्बा तथा 1-2.5 से०मी०, मृदु, अण्डाकार होता है। फल बहुसंख्यक बीज के गेंद होते हैं। बीज बहुत छोटे होते हैं।

जैविक लक्षण :- पौधा समुद्रतल से 1200-2800 मीटर की ऊँचाई पर उगता है। यह पहाड़ों में, झाड़ियों के बीच में, नम स्थानों में तथा पहाड़ी तालाबों के किनारों पर फैला हुआ है। यह पर्वतीय भूमि पर समोद्भिद् पौधे के रूप में उगना पसंद करता है।

मूल संस्थान में दो कंद तथा कुछ अन्य मूल रहते हैं। दोनों में से एक कंद बड़ा, पुराना तथा मृदु रहता है परंतु तरुण मूल बहुत समृद्ध होते हैं। कंद उद्भिदीय पद्यति द्वारा प्रजनन करता है। तरुण कंद पोषण को इकट्ठा करता है, सर्दी बीतती है तथा बसंत में पत्र, पुष्प तथा तरुण कंद देता है।

उसी समय में नीचे के पत्रों के अधोभाग में कई सारी कलियाँ होती हैं। यह तरुण कंद बनाता है, पुराना कंद तने के साथ सूख जाता है। पौधे में मई-जून में पुष्प आते हैं तथा गर्भ(फल) जून-जुलाई में आते है।

विस्तार :- मध्य कोपेतदग सारयमसाकलय, कोयतेनदध, दारायदेरे तथा उबारदेरे में डेकटाइलोराइझा अम्ब्रीस में सामान्य है।

प्राकृतिक उपलब्धि :- यह पौधा हमारे देश में दुर्लभ है। औषधीय भण्डार वन्य भण्डार है। ये बहुत ज्यादा उगते नहीं हैं। स्वतंत्र रूप से कंद को उगाना गैरकानूनी है। इसलिये इसकी खेती करने की सलाह दी जाती है।

प्रयोज्य कच्चा माल :- पौधों का प्रयोज्य कच्चा माल कंद अथवा सलाप है। कंद को पुष्प निकलने के बाद (जून-जूलाई) में इकट्ठा किया जाता है। अगर बाद में इकट्ठा किया जाता है तो कंद पुराना (वृद्ध) हो जाता है। केवल तरुण कंद को ही इकट्ठा करना चाहिये। कंद को साफ कर छिलके निकालकर उबलते हुए पानी में 2-3 मिनट तक रखे जाते हैं। पश्चात् कंद को खुली हवा में सुखाया जाता है। इस कंद के तिक्त रस तथा दुर्गन्ध दूर हो जाते हैं। तैयार प्रयोज्य कच्चे माल को चिकित्सा शास्त्र मे सलाप कन्द कहते हैं। तैयार प्रयोज्य कच्चा माल-कंद हलके पीत वर्ण के गंधरहित होते हैं। संचयन समय की अवधि 6 साल है।

रासायनिक संघटन :- दाक्तिलोरिजा उंब्रोसा में 68.5 प्रतिशत पोलीसेकेराइड्स है। पौधे के कंद में श्लेष्मा 35-68.5 प्रतिशत, स्टार्च 25-31 प्रतिशत, प्रोटीन 15 प्रतिशत, डेकसट्रीन 13 प्रतिशत, शर्करा 1 प्रतिशत, पेन्टोसान तथा मीथाइलनपेन्टोसान होते हैं। पौधे के क्षुप में ग्लायकोसीडीन लोरोग्लोसीन तथा पत्र में लैक्टोन के मिश्रण होते है।

प्रयोग :- इस पौधे के उपयोगी एवं प्रयोज्य लक्षणों का ज्ञान प्राचीन समय से है। प्रथम जानकारी, प्रथम शताब्दी में प्राप्त हुई थी तथा वैज्ञानिक एवं चिकित्सक डायोस्कोराइड ने अपनी पुस्तक आन ऑफसिल प्लॉट्स में दी है। डायोस्कोराइड ने अपनी पुस्तक में लिखा है, "..............कंद दो अण्डे जैसे ....अगर पुरुष बहुत ज्यादा खाता है तो पुत्र उत्पन्न करता है, अगर स्त्री थोडा ज्यादा खाती है तो वह स्त्री संतान को जन्म देती है।"

अबु अली इब्न सीना ने अपनी पुस्तक कैनन आफ मेडिकल सायंस में पौधे के कंद का प्रयोग संधिशूल, पक्षाघात तथा अपस्मार में करने की सलाह दी है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

रूस की लोक चिकित्सा में यह पौधा स्त्री रोगों तथा ज्वर में एवं मूत्रल औषध के रूप में करते हैं। पौधे के कंद के कल्क को वाराहवसा के साथ मिलाकर उसका प्रयोग अस्थिसंधि च्युति में करें। तरुण कंद का प्रयोग दंतशूल में तथा केशवृद्धि के लिये करें। पूर्वीय चिकित्सा (तुर्कमेन, ऊझबेक, ताजीक) में कंद के कलक प्रयोग आक्षेप, आमाशयशोथ तथा बदलने वाली वृक्काश्मरी में किया जाता है।

तुर्कमेन लोक चिकित्सा (गोर्माप, कोयतेने) में उबले हुए कंद का राजयक्ष्मा में प्रयोग किया जाता है। कंद को भूनकर छोटे टुकड़े बनाकर चाय बनायें। कास, श्वसनवह संस्थान के शोथ तथा नाडी तंत्र के शमन के लिये प्रयोग करें। दूध में उबले हुए कंद का प्रयोग कास, श्वसन संस्थान की व्याधियाँ तथा पचन संस्थान के विकार के लिये किया जाता है। कंद के चूर्ण को मधु के साथ मिलाकर बल्य के रूप में प्रयोग किया जाता है।

वैज्ञानिक चिकित्सा व्यवहार में कंद का प्रयोग आमाशय शोथ, आंत्रशोथ तथ अन्य आमाशय व्याधियों में एवं बालातिसार में किया जाता है। पौधे की असर व्यवहार में शोफ की चिकित्सा में साबित हो चुकी है।

कल्पना तथा प्रयोग :- सूखे कंद 2 ग्राम को 1 गिलास पानी में मिलाकर 10 मिनट के लिये उबालें। क्वाथ 1 बड़ा चम्मच (15 ग्राम) दिन में तीन बार भोजन पूर्व पीयें।

कंद के चूर्ण 2 ग्राम को 1 गिलास पानी में मिलायें। 10-15 मिनट तक हिलायें। तैयार लेह को 2-3 दिन ठंडे स्थान पर रखें। एक बड़ा चम्मच भोजन के पूर्व तथा रात में लें।

कंद 1 चम्मच (5 ग्राम) को 1 गिलास (200 मि०ली) पानी में मिलाकर उबालें। 50 ग्राम दिन में तीन बार सेवन करें।

दतूरे स्त्रामोनीउम
DATURE STRAMONIUM

वर्णन :- यह एकवर्षीय, कमनीय दुर्गंधित, 0.5-1.5 मीटर ऊँचा पौधा सीधा खड़ा होता है। ऊर्ध्व भाग चिकना तथा कांड शाखायुक्त होता है।

पत्र बड़े, अण्डाकार, 7-20 से०मी० लम्बे, 5-15 से०मी० चौड़े होते हैं। पुष्प बड़े, श्वेत, दुर्गन्धित, 4-10 से०मी० लम्बे होते हैं। पौधे में एकाकी, बड़े पुष्प आते हैं। फल अण्डे जैसे, सीधे खड़े तथा कड़े कंटक से आच्छादित होते हैं। बीज गोल वृक्काकार, कृष्ण, बड़े तथा द्युतिहीन होते हैं।

भूम्योपरि भागहाझार के दक्षिणी किनारे तथा कृष्ण समुद्र में फैला हुआ है। युरोप में इसको शोभा के लिये उगाया गया था इसलिये यह पौधा बहुत जल्दी फैल गया। अरबिक एवं पर्शियन भाषाओं से अनुवाद में कण्टक्फिक का अर्थ दुर्गंध है।

विस्तार :- यह पौधा कोपेतदग की दक्षिण-पश्चिमी तराई में, होजागाल में, मागत्यंगुलय में सीवान में, देश्त में, कुन्यागुमाडे में, मध्य कोपेतदग में, अश्खाबाद में, आर्चबील, गोकपेदे में, आर्चमान, एट्रेक, तेजेन, एलायक में, मुर्गाब में, मार्च में, आमुदार्या नदी के किनारों पर, फाराब में, तुर्कमेनाबात में तथा आतामयशत में उगता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

प्रारम्भिकी अभी प्रयोग में नहीं हो रहे पौधों की संख्या को नहीं सूचित करती है। हमारे देश में जहां क्षेत्रीय कार्य किये जाते हैं वहां से प्रतिवर्ष 10-16 टन कच्चे माल को प्राप्त करने की शक्यता है।

प्रयोज्य कच्चा माल :- पत्र, मूल तथा बीज कच्चे माल के रूप में प्रयुक्त होते हैं। इसको सावधानी पूर्वक इकट्ठा करना बहुत जरूरी है। हाथ में दस्ताने पहनने चाहिये क्योंकि इसके संघटन में अल्कलोइड्स होते हैं। किसी भी कारण से आंख, मुख तथा नाक को हाथ नहीं लगाना चाहिये। उपज को इकट्ठा करने के बाद हाथ को साबुन से साफ करना चाहिये।

सुखाना :- यह कार्य बहुत सावधानी पूर्वक करना चाहिये। उपज को कागज़ के बक्सों में इकट्ठा करना चाहिये। संचयन समय अवधि 2 साल है।

रासायनिक संघटन :- इसमें स्कोपॉलेमाइन, जीओसेनीन, जीओसीन ट्रोपीन्स, एसीटाइन ट्रोपीन, कुसत्गेगेराइन, एट्रोपीन, एपोएट्रोपीन, नोरएट्रोपीन, डायक्लोइडीन, अल्कलोइड रहते हैं। कांड में डेकसट्रीन, पेकटीन, स्टार्च, हेमीसेलयुलोसीस तथा कार्बोहाइड्रेट होते हैं।

प्रयोग :- दत्तूरे स्त्रामोनीउम का प्रयोग प्राचीन काल में औषध के रूप में होता था। थीओफ्रेस्ट एवं डायोस्कोराइड के कार्यों में मिलता है। इस कार्य का नाम है मेडिसिनल प्लान्ट्स लोक चिकित्सा में बीज का प्रयोग तमक श्वास तथा नाड़ी तंत्र के विकारों में होता था।

मध्य एशिया तथा पश्चिमी युरोप के देशों में पौधे के पत्र को विषैला माना जाता है। तमक श्वास के लिये ली जाने वाली औषधियाँ जैसे कि अस्थमेटाइन, अस्थीओल में दत्तूरे स्त्रामेनिउम है।

बीज का तेल न्युरोसीन, शोफ के लिए प्रयुक्त होता है तथा पत्र का रस खुले व्रण के लिये प्रयुक्त होता है।

कल्पना तथा प्रयोग :- एक बड़ा चम्मच (15 ग्राम) पत्र को सीगार की तरह लपेटकर इस सीगार का दिन में तीन बार धूमपान करें।

तैल निकालने के लिये तथा व्याधिग्रस्त स्थान पर लगाने के लिये बीज को कुचलना जरूरी है। इसको सुखोष्ण स्थान में रखें।

एक लोहे के पात्र में पुष्प एक बड़ा चम्मच लेकर उसमें 200 मि०ली० पानी डालकर उबालें। तैयार क्वाथ को छानकर एक बड़ा चम्मच पीयें।

बीज 1 बड़ा चम्मच को 200 मि०ली० स्पीरीट में मिलाकर 7-10 दिन तक अंधेरे स्थान पर रखें। एक चम्मच दिन में तीन बार लें।

दाउकुस करोता
DAUCUS CAROTA

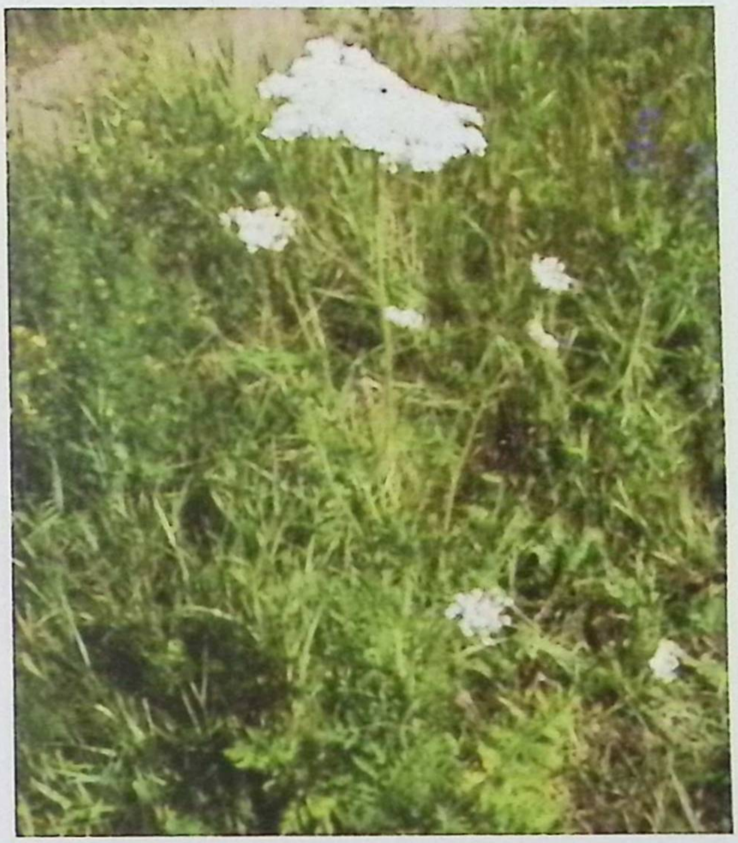

वर्णन : दाउकुस करोता एक सुपरिचित औषधीय पौधा है। विश्व में लगभग 60 प्रजातियां तथा तुर्कमेनिस्तान में एक प्रजाती है। लोक नाम वन्य गाजर तथा गाजर है। दाउकुस करोता की मातृभूमि दक्षिण-पूर्वीय एशिया तथा भूमध्य है। गाजर की अधिकतम प्रजातियाँ वन्य प्रजातियों में चयन का परिणाम है। उत्पादन ई०पू० दूसरी शताब्दी में शुरू हुआ।

दाउकुस करोतादाउकुस करोता उमबेल्ली फेरी कुल का द्विवर्षीय 50-80 से०मी० ऊँचा क्षुपीय पौधा है। कांड एकाकी गोल, मध्य भाग में शाखायुक्त तथा लम्बे, फैलने वाले, झुके हुए रोम से आच्छादित होता है। मूल के साथ जुड़े हुए पत्र लम्बी डंठल वाले, 10-35 से०मी० लम्बे होते हैं। पत्र फलक लंबाकार, फलक का शिखर अनावृत्त अधोभाग लोमश द्विपक्षवत् विभाजित लम्बाकार भालाकार, तीक्ष्ण, विभाजित भाग 10 मि0मि0 लम्बे हैं। काण्ड पत्र बिना वृंत के होते हैं।छत्रक बहुअरी(व्यास लगभग 10 से०मी०) होता है। पुष्प विन्यास 15-20शीर्ष छत्रक हैं। दल पीत होते हैं। बीज धूंसर भूरे तथा भूरे हरिताभ होते हैं।

जैविक लक्षण :- दाउकुस करोता मैदान से लेकर पर्वत के मध्य क्षेत्र तक उगता है। यह 4000 बीज उत्पन्न करता है। एक हजार बीज का वजन 1-1.5 ग्राम होता है। दाउकुस करोता को अप्रैल-मई में पुष्प आते है तथा जून-जूलाई में फल लगते हैं।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

विस्तार :- दाउकुस करोता दक्षिण-पश्चिमी कोपेतदग में, सायवान में, मागत्यंगुलय, सुंबार, चेन्दीर, एयदेरे, मध्य कोपेतदग में, वानोवस्कीय, गोर्माप, मेर्गेनुलया, सुलुकली, प्राहलादनोटो, आर्चबील, पूर्वीय कोपेतदग में उकेलतेच्यनार में, कोपेतदग पर्वत के पास मरूभूमि में, बाध्यझ में, कुगीतांग में उगता है।

यह अधिकतर नदी किनारों पर तथा घाटियों में पेड़ों तथा झाडियों में उगता है।

प्राकृतिक उपलब्धि :- हमारे देश में दाउकुस करोता एक दुर्लभ क्षुपीय पौधा है। औषधीय उद्देश्यार्थ इसके भण्डार पर्याप्त है।

औषधीय कच्चा माल :- चिकित्सा में गाजर के बीज का प्रयोग औषधीय उद्देश्यार्थ होता है। कच्चे माल को पकने के समय इकट्ठा किया जाता है। सुखाकर कागज़ के बकसों अथवा कांच पात्र में संचय किया जाता है। संचयन समय की अवधि 1-2 साल है।

रासायनिक संघटन :- फल में 0.15-2.78 प्रतिशत तक इथरीयल तेल होते हैं। इनके निर्माण में गेरेनीलोल (0.5 प्रतिशत),बीतापिनीन लाइमोनीन् तथा अन्य तत्व रहते हैं। पौधे के पुष्प में 0.06-0.13 प्रतिशत तक इथरीअल तेल रहते हैं। मूल में भी इथरीअल तेल मिलते हैं। पुष्प में फ्लेवोनोइड्स तथा एल्कलोइड्स होते हैं।

प्रयोग :- डायोस्कोराइड (ई०पू० पहली शताब्दी) से ही वन्य गाजर के फल के गुणों के बारे में पता है।

पौधे के औषधीय गुणधर्मों का सर्वप्रथम सूचना अबु रयहान बीरूनी की पुस्तक''फार्माकोंग्नोसी इन मेडिसिन में तथा अबु अली इब्न सीना की पुस्तक कैनन आफ मेडिकल सायॅस में मिलते हैं। सीना ने लिखा है कि वन्य गाजर के बीज आमाशय शूल में तथा मूत्रल एवं आर्तवजनन रूप में असरदायक हैं। पौधे के मूल तथा फल गर्भावस्था के लिये भी उपयोगी है। पत्र का प्रयोग मूत्रल के रूप में होता है।

लोक चिकित्सा में गाजर के पौधे का क्वाथ यकृत् की व्याधियाँ, कामला तथा मूर्च्छा में प्रभावी माना गया है। आमाशय की व्याधियों तथा आमाशय शोथ में मूल का प्रयोग आहार में किया जाता है।

फल कामला, विबंध में एवं मूत्रल तथा कृमिहर के रूप में उपयोगी है। गाजर का ताजा रस कामला की रोकथाम तथा चिकित्सा में, यकृत् एवं मूत्राशय की व्याधियों में तथा मेदाधिक्य में प्रभावी है। प्रतिश्यायजनक व्याधियों में गाजर के रस तथा मधु का मिश्रण प्रयुक्त होता है।

पारंपरिक चिकित्सा में "डाकारिन" नामक औषध वन्य तथा कृषिजन्य गाजर से निर्मित है। हरा-भूरा चूर्ण तिक्त रस तथा विशिष्ट गंधयुक्त होता है।

हृदयधमनी विकारों में "डाकारिन" भोजन के 30 मिनिट पूर्व दिन में 3-5 बार लिया जाता है। औषध प्रयोग का समय 2-4 सप्ताह है।

औषध "यूरोलेसन" में वन्य गाजर के फल का सार होता है। चिकित्सा व्यवहार में इसका प्रयोग यकृत् तथा वृक्क की व्याधियों में, तीव्र तथा पुराने पित्ताशयशोथ, वृक्काश्मरी तथा पित्ताश्मरी में होता है।

कल्पना तथा प्रयोग :- गाजर के सूखे फल 1 चम्मच (5 ग्राम) में एक गिलास पानी मिलाकर (200 मि०ली) एक तामचीनी पात्र में धीमी आंच पर 5-10 मिनिट तक उबालें। छानकर आधा गिलास (100 मि०ली०) दिन में तीन बार भोजन पूर्व लें।

गाजर के सूखे पौधे का चूर्ण एक बड़ा चम्मच में एक गिलास (200 मि०ली०) पानी मिलाकर 10 मिनिट तक उबालें। छानकर 1 बड़ा चम्मच दिन में तीन बार भोजन पूर्व लें।

डेल्फिनिउम सेमीबार्बातुम
DELPHINIUM SEMIBARBATUM

वर्णन :- विश्व में 200 प्रजातियाँ हैं उसमें से 100 प्रजातियाँ मध्य एशिया देशों में तथा 7 तुर्कमेनिस्तान में पाई जाती हैं।

देल्फिनिउम सेमीबार्बातुम चेरी कुल का 30-50 से०मी० ऊँचा एक बहुवर्षीय क्षुपीय पौधा है। पौधे का एक छोटा,

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

मोटा सरकंडा मूल जमीन में फैलता है। इसको रोम आच्छादित सादी अथवा विभाजित कांड तथा लम्बे पत्र होते हैं।

पौधा एक बहुत बड़े बहुपुष्पीय पौधों के समुह का है। पुष्प पीले होते हैं। फल एक त्रि-स्तरीय पत्र (0.7-1.2 से०मी०) लम्बा है। बीज छोटा, भूरा, त्रिकोणाकार तथा 1.5 मी०मी० लम्बा होता है।

जैविक लक्षण :- यह पौधा पर्वतों में, समुद्र तल से 2800 मीटर की ऊँचाई पर उगता है इसको पथरीली तथा खड़ी चट्टान जैसी जमीन पर उगना पसंद है।

देल्फिनिउम सेमीबार्बातुम को मई-जून में पुष्प आते हैं। यह बीज द्वारा फैलता (प्रजनन करता) है। देल्फिनिउम सेमीबार्बातुम के 1000 बीज का वजन 0.5 ग्राम होता है।

विस्तार :- तुर्कमेनिस्तान में यह दक्षिण-पश्चिमी कोपेतदग में, मध्य कोपेतदग, तागारोप में, आर्वाझ, सरयमसाकलय, देगीरमेन्ली, मुझेंदाग, ग्यलग्यलाव, आर्चाबील, चोपानदाग, गोकदेरे, चायेक, दुशाकेरेकदाग, अस्यलमा, बाबाझाव, दाग्याज, दाश्तोय, होवदान, कोपेतदग पर्वत के पूर्वीय भाग में, बाध्यझ क्षेत्र में, केपेले में, आकारचेश्मे, प्यनहान, ग्यझयलजार में तथा कोयतेनदध क्षेत्र में भी पाया जाता है।

प्राकृतिक उपलब्धि :- हमारे देश में औषधीय उद्देश्यार्थ पौधे के पर्याप्त भण्डार है।

औषधीय कच्चा माल :- देल्फिनिउम सेमीबार्बातुम के कांड तथा पुष्प दोनों, चिकित्सा में प्रयुक्त होते हैं इनको मई-जून में इकट्ठा किया जाता है। तथा सामान्य रूप से इनको सुखाया जाता है पश्चात् इस कच्चे माल को कागज़ के पेटियों में तथा कपड़े के बोरों में 1-2 साल के लिये रखा जाता है।

रासायनिक संघटन :- मीथाइलकेकोनोटीन, डेलपीरीन, डेलसेमीन एल्कलोइड्स, वीटामिन सी, 25 प्रतिशत फ्लेवोनोइड्स, रूटीन, इसके पुष्प में कवेर्सेटीन तथा आइसोरेमनेटीन, फ्लेवोनोइड्स होते हैं।

प्रयोग :- पौधे के पुष्प से बनाई गई चाय में मूत्रल तथा कृमिघ्न गुण हैं। पारंपरिक चिकित्सा में पौधे से निर्मित फांट का प्रयोग ज्वर, प्रतिश्याय, कुक्कुर कास, तालुमूल शोथ तथा अपस्मार जैसी व्याधियों की चिकित्सा में होता है।

पौधे से निर्मित फांट का जवआटा के साथ मिलाकर विविध प्रकार की ग्रंथिओं में प्रयुक्त किया जाता है। इसकी भस्म चर्मदल तथा कंडू के लिये प्रयुक्त होती है।

तुर्कमेन लोक चिकित्सा में देल्फिनिउम सेमीबार्बातुम का प्रयोग चर्मव्याधि तथा ज्वर में होता है। इसके उपरांत, हमारे राष्ट्र में इस पौधे का प्रयोग शूल तथा मद्य में किण्वन लाने के लिये किया जाता है।

वैज्ञानिक चिकित्सा में "मेलकेतिन" तथा "दिस्तेमिन" जो सारीगुल से बनाये गये है, का प्रयोग होता है।

इस पौधे का समावेश कीमती रंजक पौधों में भी किया गया है। यह रंजक पौधा है आहार उद्योग में भी उपयोगी है।

कल्पना तथा प्रयोग :- एक चम्मच सूखे, कुटे हुए पौधे में 1 गिलास पानी मिलाकर धीमी आंच पर उबालें। तैयार प्रवाही को दिन में तीन बार पीयें।

पौधे के पुष्प 1 चम्मच 1 गिलास पानी में मिलाकर धीमी आंच पर पकाये। 1 चम्मच प्रवाही दिन में 3-4 बार पीयें।

एक कांच पात्र में 4 चम्मच सूखे कूटे हुए पौधे में आधा गिलास तेल मिलाकर ढक्कन लगाकर सात दिन तक रखें। समय - समय पर हिलाते रहें। तैयार तेल को पूयदार चर्म व्याधि में प्रयोग करने की सलाह दी जाती है।

दिआन्तुस माक्रोनीक्स
DIANTHUS MACRONYX

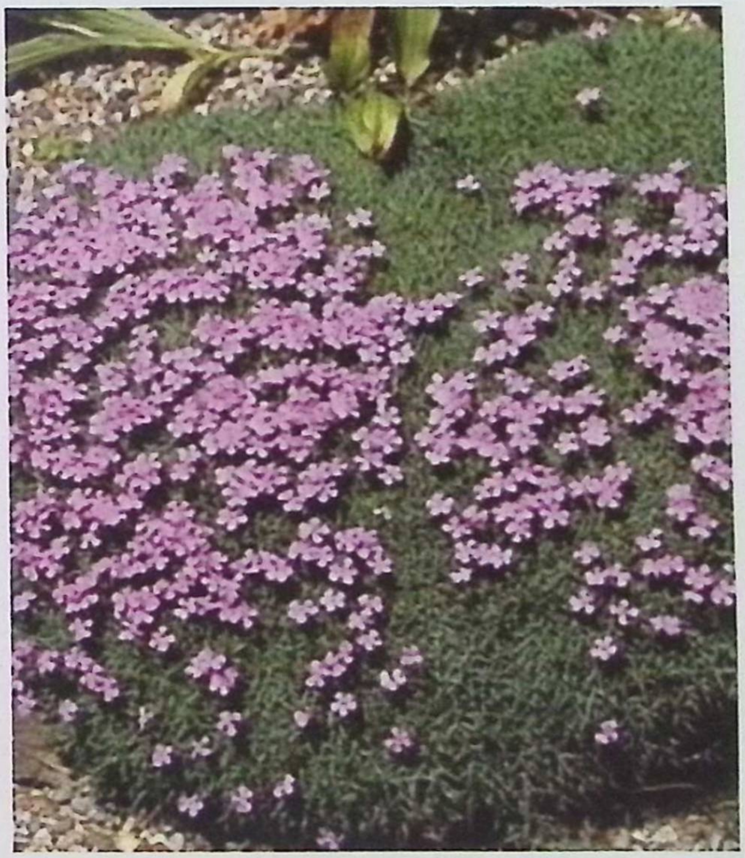

वर्णन :- यह आश्चर्यजनक औषधीय तथा शोभा बढ़ाने वाला पौधा है। विश्व में लगभग 1700 प्रजातियाँ, मध्य देशों में 830 प्रजातियाँ तथा तुर्कमेनिस्तान में 9 प्रजातियाँ मिलती हैं, जिसमें से 6 वन्य है। चाइनीस तथा रेशेदार प्रजातियों की खेती की जाती है। जैवलिक तथा औषधीय लक्षणों के आधार पर वन्य प्रजातियाँ एक दूसरे से ज्यादा नज़दीक हैं। तुर्कमेनिस्तान में पौधे को मिहाक अथवा माहेक कहा जाता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

दिआंतुस माक्रोनीक्स डायेन्थस कुल का पौधा है। यह बहुवर्षीय, क्षुपीय प्रतीनिधि 15-40 से०मी० ऊँचा होता है। पौधे के पुष्प तने के शिखर पर लगते हैं। पुष्प के दल गुलाबी होते है। इसको पुष्प तथा फल जून-जुलाई में आते हैं।

पौधे का नाम अर्थहीन नहीं है। कार्ल लिन्ने, जिनको वनस्पति शास्त्र के एक राजा माना जाता है, पौधे को दिआंथुस के बदले दिआंतुस कहते थे। यह ग्रीक शब्द दिओस तथा आंतोससे आया है जिसका अर्थ है ''भगवान से आर्शिवाद प्राप्त पुष्प''। इसका नाम का कारण यह है कि ग्रीक वैज्ञानिक थीओफ्रास्ट की पुस्तक "आबसर्विंग द् प्लान्टस्" में यह (नाम) वर्णित है इस कार्य में दिआन्थुस को जेउस फ्लावर कहा गया है।

लोग इस पौधे को "द टियर आफ द फील्ड ", "महखेज'' स्पार्कलेस तथा गर्लस् फ्लावर कहते है।

प्राचीन ग्रीक लोगों के पास इस पौधे की उत्पत्ति के लिये एक मोहक कथा है। एक बार देवी डायना असफल शिकार से निराश होकर लौट रही थी। उसने एक तरुण चरवाहे को अपनी बंसरी पर मनोरंजक सुर बजाते हुए देखा। इसने लड़के पर बुरी तरह क्रोध किया ''तुमने मेरे सब जन्तु तथा पंछिओं को तुम्हारे संगीत से डरा दिया''।

इसके अचानक वचनों से आहत अविपाल ने देवी के सामने अपने बचाव की कोशिश की, लेकिन बेचारे लड़के के वचन निरर्थक गये। शक्तिशाली शासिका ने बेचारे लड़के की दोनों आंखे निकाल दी। बाद में उसको मालूम हुआ कि उसने उस बेचारे लड़के के साथ गुस्से के कारण बहुत बुरा बर्ताव किया है। लेकिन अब बहुत देरी हो चुकी थी क्योंकि बेचारे अविपाल की दोनों आंखे तृण पर आ चुकी थी। और वे पुष्प में बदल चुकी थी जो उसके निरर्थक बहे खून से दिऑतुस की याद दिला रही थी।

पौधे के वैज्ञानिक नाम का देवी के नाम के साथ संलग्न होने का प्रमाण दूसरी पौराणिक कथा भी देती है जिसमें वन्य दिआंतुस माक्रोनीक्स अंध लोगों को दृष्टि वापस करता है।

जैविक लक्षण :- पौधा समुद्र तल से 800-1700 मीटर की ऊँचाई पर उगता है। यह कंकर-पत्थरवाली भूमि पर अच्छी तरह उगता है। यह दुष्काल-विरोधी तथा पाला-विरोधी है। पौधे का प्रजनन बीज द्वारा होता है।

विस्तार :- पौधा देश के दक्षिण-पश्चिम में, मध्य कोपेतदग तथा बालखान में विस्तृत रूप से फैला हुआ है। यह गारांकय घाटी, गोकदेरे, सुलुकली, चोपांदाग तथा अस्यलमा की दक्षिण प्रतल ढलानों पर फैला हुआ है। इरान के पर्वतों पर भी यह विस्तृत रूप से फैला हुआ है।

प्राकृतिक उपलब्धि :- यह दुर्लभ पौधा नहीं है। औषधीय उद्देश्यार्थ पर्याप्त भण्डार है। प्रतिवर्ष इसके 3-5 टन इकट्ठा करने की शक्यता है। यह औषधीय पौधा मुख्यतः मध्य कोपेतदग में मिलता है।

प्रयोज्य कच्चा माल :- चिकित्सा शास्त्र में पौधे के मूल का प्रयोग नुस्खे के रूप में होता है। कच्चे माल को जून-जुलाई में इकट्ठा किया जाना चाहिये। इनको सामान्य तरीके से छांव में सुखाना चाहिये। कच्चे माल को कागज़ के थैलों में संचय करना चाहिये। संचयन समय की अवधि 2 साल है।

रासायनिक संघटन :- पौधे की संरचना (संघटन) का पूरी तरह अध्ययन नहीं हुआ है। पौधे में विटामिन सी तथा केरोटीन होते हैं।

प्रयोग :- ई०पू० तीसरी शताब्दी में दिआंतुस माक्रोनीक्स का प्रयोग सुगंधित द्रव्य के रूप में होता था। चीन में जब लोग महाराजा को मिलते थे तो यह पौधा चबाते थे जिससे उनके मुंह से दुर्गन्ध न निकले।

प्राचीन काल में पूर्व तथा तुर्कमेन लोक चिकित्सा में पौधा सुप्रसिद्ध था। विविध प्रकार की व्याधियों में इसका प्रयोग होता था। प्रसिद्ध वैज्ञानिक तथा चिकित्सक सेयीत इस्माइल गुर्गेनली (जुर्जानी) ने अपनी सुविख्यात पुस्तक ''टेरेज्म आफ खोरेज्म शाह"में लिखा है कि यह अर्दित के लिये बहुत उपयोगी है, मुंह को दुर्गन्ध से बचाने के लिये वे लोग कल्क बनाकर दांत साफ करते थे तथा छर्दि, वमन, वांति तथा अतिसार जैसे व्याधियों में लेप करते थे।

18वीं शताब्दी की पुस्तक "मेडिसिनल प्लॉन्ट्स" में यह वर्णन है कि पौधा रोपण के लिये, मस्तिष्क तथा आमाशय को बलवान बनाने के लिये, पाचन के लिये, मद्य में किण्वन के लिये, दृष्टि सुधारने के लिये तथा भ्रम के लिये उपयोगी है।

दिआंतुस माक्रोनीक्स का प्रयोग लोक चिकित्सा में रक्तस्राव (विशेषतः प्रसव दरम्यान) को रोकने के लिये होता है। इसका विषजन्य प्रभाव रोकने के लिये एक विशेष मात्रा में ही इसका प्रयोग होता है।

दिआंतुस माक्रोनीक्स पाचन के लिये उपयोगी है। पौधे से बनाये हुए सिरप का प्रयोग करना चाहिये तथा पौधे के राल का प्रयोग पट्टी के रूप में करना चाहिये।

यह दंतवेष्टक को सुदृढ़ करता है, मुख को दुर्गन्ध से रोकता है तथ शोथ से उत्पन्न शूल को दूर करता है। इसका प्रयोग दृष्टि सुधारने के लिये तथा नेत्र व्याधियों के लिये होता है। कास, पुराने श्वसननलिका शोथ तथा हृद्द्रव में इसका प्रयोग होता है। यह सबसे अच्छा प्रत्युत्तेजक है।

अवसाद भय, तथा शंका में यह प्रत्युत्तेजक है। यह आमाशय शोधक है, जिससे पाचन शक्ति सुधरती है। इसका प्रयोग यकृत् तथा वृक्क की व्याधियों में होता है। इसका प्रयोग प्लीहा तथा गर्भाशय की व्याधियों में भी होता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

यह शरीर को उष्णता देता है तथा साथ साथ शोथ को भी कम करता है।

कल्पना तथा प्रयोग :- पौधे के सूखे फल तथा पुष्प 2 बड़े चम्मच (30 ग्राम) को 1 गिलास उबले हुए पानी में मिलाकर 20 मिनिट तक रखें। कपड़े से छान 2 चम्मच दिन में तीन बार भोजन से पूर्व लें।

पौधे के पुष्प को जैतुन तेल में 1:10 अनुपात में मिलायें। 10 दिन के बाद कपड़े से छान लें। 5-10 बूँद दिन में तीन बार लें। इसी तरह से सिरप बना सकते हैं। तेल के स्थान पर औषधीय स्पिरिट का प्रयोग 1:10 अनुपात में कर सकते हैं।

दिप्साकुस लचिनिआतुस
DIPSACUS LACINIATUS

वर्णन :- इस अपतृण पौधे की लगभग 15 जातियाँ विश्व में, 7 जातियाँ मध्य एशिया देशों में तथा 2 जातियाँ तुर्कमेनिस्तान में मिलती हैं। इनमें से अधिकतम के औषधीय गुण हैं।

दिप्साकुस लचिनिआतुस द्विवर्षीय, क्षुपीय, 50-150 से०मी० ऊँचा, दिप्साकुस लचिनिआतुस कुल का पौधा है। इसका कांड सीधा, पर्शुका आकार का शाखायुक्त होता है। जमीन में सभी मूल 50 से०मी० गहरे, आडे फैलते हैं। मूल के नज़दीक के पत्र छोटे वृंतयुक्त, अण्डाकार, दंतीला अथवा पक्षवत् विभाजित तथा दोनों ओर उगते है। कांड पर पत्र विषमस्थ युग्म तथा मुख्य भाग कटोरे जैसा होता है। इसका आकार अण्डाकार, खींचा हुआ तथा पक्षवत् विभाजित होता है। इसके पुष्प का गुच्छा अण्डाकार, अण्डे आकार के शिखरवाला, 5-8 से०मी० लम्बा तथा पत्र आशवत् होते हैं। इसके पुष्प पीताभ श्वेत, 15 मि०मी० होते हैं।

जैविक लक्षण :- पौधा समुद्रतल से 400-1200 मीटर की ऊँचाई पर उगता है। इसको नदी की घाटियों में, गीले स्थानों पर, रेतीली तथा क्षुपीय स्थानों पर उगना पसंद है। इसमें पुष्प तथा फल जून-जुलाई में आते हैं। यह बीज द्वारा प्रजनन करता है।

विस्तार :- दिप्साकुस लचिनिआतुस दक्षिण-पश्चिमी कोपेतदग में, एयदेरे, दावना, मध्य कोपेतदग में, सुलुकली दाशत्पेय तथा होवदान में मिलता है।

प्रयोज्य कच्चा माल :- दिप्साकुस लचिनिआतुस के पत्र, पुष्प के गुच्छे तथा मूल कच्चे माल के रूप में प्रयुक्त होते हैं। इनको सामान्य तरीके से इकट्ठा किया जाता है। तैयार माल को कपड़े के थैलों में रखा जाता हैं संचयन समय अवधि 1-2 साल की है।

रासायनिक संघटन :- मूल में 10.05 प्रतिशत ट्राइटरपेनोइड्स, इरीडोइड्स तथा 0.24 प्रतिशत एल्कलोइड्स, हरे भाग में 8.5 प्रतिशत ट्राइटरपेनोइड्स, 0.4 प्रतिशत एल्कलोइड्स तथा फ्लैवोनोइड्स, फल में इरीडोइड्स एवं पौधे के बीज में 19.45 प्रतिशत तेल होते हैं।

प्रयोग :- लोक चिकित्सा में पौधे के मूल का प्रयोग फुफ्फुसगत यक्ष्मा तथा फिरंग में होता है। तुर्कमेन लोक चिकित्सा (यह मागत्यंगुलय, गोकदेपे, उहाबात, में उगता है) में पौधे के पत्र तथा पुष्प गुच्छ से फांट, कल्क तथा मलहम बनाते हैं। यह अर्श में तथा सर्पदंश में संज्ञाहरण का काम करता है। पौधे के हरे हिस्सों से बना फांट शोफ, वृक्क व्याधियों में तथा श्वसन अवयवों के एवं रक्त संचारण के कार्य को निर्यंत्रित करने के लिये होता है।

औषधीय फांट लोक चिकित्सा में ज्वरयुक्त, आमाशय तथा अन्य व्याधियों में प्रयुक्त होता है। यह अर्बुद के लिये उपयुक्त होता है। इसका प्रयोग अर्बुद में पट्टी के रूप में होता है। क्षण में ही यह रक्त का तापमान बढ़ाता है। पुष्प गुच्छों से बना फांट गठिया में प्रयुक्त होता है।

कल्पना एवं प्रयोग :- अच्छी तरह कुटा हुआ चूर्ण एक बड़ा चम्मच (15 ग्राम) को एक गिलास (200 मि०ली) पानी में उबालकर 10 मिनट के लिये तामचीनी पात्र में उबालें। छानकर 1 चम्मच दिन में तीन बार लें।

दिप्साकुस लचिनिआतुस के पत्र 1 चाय का चम्मच (5 ग्राम) को एक कप (200 मि०ली०) पानी में डालकर 5-10 मिनट तक धीमी आंच पर उबालें। कपड़े से छान लें। एक बड़ा चम्मच फांट को दिन में तीन बार लें तथा शाम को पानी में डालकर गुनगुना स्नान करें।

कूटे हुए पुष्प के गुच्छे दो बड़े चम्मच (30 ग्राम) को आधा कप जैतुन के तेल में मिलाकर कांचपात्र में ढककर 10 दिन तक रखें। कपड़े से तैयार औषध को छानकर 1 चम्मच दिन में तीन बार पियें। यह औषध अर्श तथा व्रण के लिये उपयोगी है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

दोरेमा अइत्कीसोनिइ
DOREMA AITCHISONII

वर्णन :- यह पौधा हमारे देश में पाये जाने वाले वनस्पति जगत के सबसे लम्बे तथा मोटे कांड वाले पौधों में से एक है। शाखायें 8-10 से०मी० मोटी तथा 160-200 (300) से०मी० लम्बी होती हैं। दोरेमा अइत्कीसोनिइ अम्बेलीफेरी कुल का है। यह एक बार बीज देता है। यह पौधा बहुवर्षीय है। यह पौधा क्षुपीय है। इसका कांड लम्बा, जोड़ मोटे तथा व्यास में 10 से०मी० होते हैं। शाखाओं के पत्र 160 से०मी० लम्बे होते हैं। पत्र के सूत्र 1-2 से०मी० के होते हैं। पत्र का अधोभाग मृदु होता है तथा गहरा, रेसायुक्त स्तर से आच्छादित होता है। दोरेमा अइलीसोनिइ के मूल की आंतरिक तथा बाह्य संरचना का अध्ययन आई० रूस्तामोप, ओ० सुखानोवा तथा ए० आकमुरादोव ने 1990-1998 में किया। अध्ययन किये गये दोरेमा अइत्कीसोनिइ के मूल की ग्रीवा 9 से०मी० तक लम्बी तथा व्यास में 7 से०मी० तक पहुंच सकती है। गत वर्ष के पत्र के अवशेष देखे जा सकते हैं। कंद भूरा-धूंसर होता है। मूल धीरे-धीरे पतला होता जाता है 40-50 से०मी०। आधार चौड़ा होता है तथा मूल से गहराई 30 से०मी० होती है। बगल वाला मूल प्रशाखित होता है। प्रतिछेदन में दोरेमा अइलीसोनिइ का मूल गोल होता है। बाहर से यह बहुस्तरीय कला से आच्छादित होती है। त्वक् के पारेंकैमल कोष स्टार्च कणों से बने हुए होते हैं। त्वक् के कोषों में तैलीय पदार्थ भरा हुआ होता है। त्वक् कोषों में चमकीले धूंसर पदार्थ होते हैं।

दोरेमा अइत्कीसोनिइ का चौड़ा मूल कच्चे माल के रूप में प्रयुक्त होता है। अधोपत्र चौड़े, त्रिकोणाकार, कुछ भागों में विभाजित होते हैं। बाकी के पत्र 14 से०मी० तक के होते हैं। पुष्प द्विलिंगीय होते हैं। थैली की धारायें साबुत अथवा छोटे दांतोवाली होती है। पुष्प के दल पीत, ऊपर की ओर तथा संकड़े होते हैं। फल चौड़ा तथा संकड़ी धारावाला होता है। पुष्प सादे तथा छत्र संकुल बनाते हैं। उसमें 10-12 पुष्प होते हैं। हमारे देश के वनस्पति जगत में दोरेमा अइत्कीसोनिइ की कुल 6 जातियाँ हैं। दूसरे दोरेमा अइत्कीसोनिइ में भी दोरेमा अइत्कीसोनिइ की तरह औषधीय गुणधर्म होते हैं। मई के उत्तरार्ध में पौधे को पुष्प लगते हैं तथा जून के पूर्वार्ध में फल लगते हैं।

जैविक लक्षण :- दोरेमा अइत्कीसोनिइ समुद्र तल से 400-1600 की ऊँचाई पर उगता है। अलग-अलग प्राकृतिक परिस्थितियों में यह लगभग 100-250 बीज देता है। 1000 बीज का वजन 12.5 ग्राम होता है। जीवनकाल 8-10 साल का होता है। प्रत्येक वर्ष पौधे को पर्ण निकलते हैं। क्योंकि दोरेमा *phemeroid* पौधा है वह अपना जीवन बहुत अल्प समय में समाप्त करता है। उसके जीवन के लिये जरूरी पोषक पदार्थों को वह कांड में मूल के मोटे भाग के रूप में संग्रहित करता है। दोरेमा का यह लक्षण उसका जैविक लक्षण है। मूल एक छोर में दिशा में बदलाव दोरेमा का विशिष्ट लक्षण है।

विस्तार :- बाध्यझ में, हैम्मोक, आकशबात में, येरोयलान्डुझ, शोरीनाक, गाराबेत, गाराबील, रेपेतेक, कसझयलडीश, मध्य कोपेतदग, आर्चमान, आर्बाझ, नोखुर, आर्चाबील, गारागाख तथ रेतीली पहाड़ियों में यह फैला हुआ है।

प्राकृतिक उपलब्धि :- औषधीय उद्देश्यार्थ भण्डार पर्याप्त है। यह दुर्लभ पौधा नहीं है। केवल वाध्यझ में (लगभग 1 हैक्टर) 4900-7000 पौधे प्रति हैक्टर क्षेत्रफल में मिलते हैं। इसमें 81 प्रतिशत जो एक बार बढ़ते हैं तथा 19 प्रतिशत जो एक बार पुष्प देते हैं, शामिल है।

प्रयोज्य कच्चा माल :- हमारे देश में प्रति वर्ष 5-10 टन्स कच्चे माल को इकट्ठा करना शक्य है। केवल 6 महीने से बड़े पौधे के मूल निकाले जाते हैं। इससे बने माल को 3-5 साल तक सूखे तथा सूर्य प्रकाश ना पहुंचे ऐसे स्थान में संचय किया जाता है।

रासायनिक संघटन :- दोरेमा के मूल में आवश्यक तेल, क्षीरिय द्रव तथा गोंद होते है। पत्र में लगभग 30 प्रतिशत प्रोटीन तथा 10 प्रतिशत वसा होते हैं। इस पौधे में उत्पत् तेल, स्टार्च तथा अन्य संयोजक मिलते हैं।

प्रयोग :- तुर्कमेनिस्तान की लोक चिकित्सा तथा पूर्वीय चिकित्सा में दोरेमा का प्रयोग कासहर औषध के रूप में होता है। इसका प्रयोग शिरःशूल, स्मृतिमांद्य तथा हृद् दौर्बल्य में भी होता है। पूर्वीय सितारा अबु अली इब्न सीना की प्रख्यात पुस्तक कैनन आफ मेडिकल सायंस में 40 से ज्यादा संयुक्त प्रकार के औषध का प्रयोग काम दौर्बल्य में किया जाता है ऐसा वर्णन मिलता है। दोरेमा का उसमें उल्लेख है। प्राचीन पूर्वीय चिकित्सा में दोरेमा का प्रयोग बंध्यत्व, दौर्बल्य, यकृत् दौर्बल्य तथा विष में करते थे। तुर्कमेनिस्तान में इसके कांड का प्रयोग आमाशय दुर्बलता में होता है।

इस पौधे की तरुण कांड 5-10 से०मी० लम्बी होती है। इस पौधे के कांड का प्रयोग व्रण पर पट्टी के रूप में होता है।

तरुण कांड के एल्कलोइड्स को मक्खन में मिलाकर राजयक्ष्मा में प्रयुक्त करते हैं। पौधे के मूल से मुरब्बा बनाया जाता है। मुरब्बा में बहुत उपयोगी औषधीय पदार्थ होते हैं हमारे देश में इस पौधे का मुरब्बा बहुत लोकप्रिय है। पौधे का औषध तथा उद्योग उद्देश्यार्थ प्रयोग होता है। इस पौधे का आवश्यक तेल तकनीकी कच्चे माल के रूप में प्रयुक्त होता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

कल्पना तथा प्रयोग :- एक बड़ा चम्मच (15 ग्राम) पीसे हुए मूल का ठंडे पानी (80 मि०ली०) में मिलाकर थोडी देर के लिये रखें। पौरुष ग्रन्थि के शोथ के लिये प्रयोग करें।

संचय समय अवधि 1-2 महीने की है। 0.1 प्रतिशत औषधीय सुरासार की 3 बूंद कर्णशोथ में प्रयुक्त करें।

द्रिओप्तेरिस बार्बिजेरा
DRYOPTERIS BARBIGERA

वर्णन :- इस शोभाजनक तथा औषधीय पौधे की विश्व में 150 प्रजातियाँ, मध्य एशिया में 60 तथा तुर्कमेनिस्तान में 4 प्रजातियाँ मिलती हैं। इस पौधे के अन्य नाम सोगुलिआनात, शेइतन, सकगल, सर्हास, गुर्चुकदारि, गल्कनलाइजा, गुरेहुकदेर्नन, (कृमि के लिये औषध) हैं।

द्रिओप्तेरिस बार्बिजेरा बहुवर्षीय, एस्पीडीआ कुल का 40-50 से०मी० ऊँचा पौधा है। इस पौधे का reed mace मूल बहुत मोटा तथा सीधा होता है। पत्र भालाकार, लम्बाकार, कुण्ठिताग्र, चमकीले हरे तथा दो हिस्सों में विभाजित होते है, प्रथम हिस्से 18 जोड़ियों के आमने सामने अथवा एक के बाद एक लगे हुए होते हैं। ये भालाकार अथवा रेखांकित होते हैं। दूसरे हिस्से में 2-3 फलक होते हैं। पौधे के बीजाणु कोष गोल तथा आच्छादन पतला होता है। इसके धूंसर बीजाणु पत्र के अधो भाग में मोती की तरह स्थित होते हैं।

जैविक लक्षण :- हमारे देश में द्रिओप्तेरिस बार्बिजेरा, समुद्र तल से 1600-2800 मीटर की ऊँचाई पर उगता है। यह सामान्यत: खट्टी चट्टान तथा चट्टानों वाले स्थान पर गीली घाटिओं में एवं जंगल में अच्छी तरह उगता है। द्रिओप्तेरिस बार्बिजेरा अधिकतर उत्तरी तथा दक्षिणी दिशाओं में उगता है। पौधे का प्रजनन उसके बीजाणु के द्वारा होता है। यह जून-अगस्त तक पकते हैं। पौधे के मूल की आयु 30 साल से ऊपर तक हो सकती है।

इस क्षुपीय पौधे के तृणीय पत्र मार्च के अंत से लेकर अप्रैल के मध्य तक निकलते हैं। इनका क्रमिक विकास अप्रैल के अंत से लेकर अगस्त तक होता रहता है। इनके बीजाणु मई के अंत से लेकर जून के मध्य तक लगते हैं। यह अपनी सुंदरता अप्रैल के अंत से लेकर अगस्त के अंत तक बनाये रखता है। पत्र अगस्त में पीले हो जाते हैं।

विस्तार :- द्रिओप्तेरिस बार्बिजेरा हमारे देश में केवल मध्य कोपेतदग में, चोपानदाग, झुपीड़, शुशांगा, बाबाझाण में तथा नये स्थान जैसे बुडयोनोवस्कीय (36 प्रजातियां) सांजिक्लिझाव (7 प्रजातियां) सार्यहाझावद (6 प्रजातियाँ) तथा सेमांसुर (12 प्रजातियाँ) में पाया जाता है। (ए० आकमयरादोव, 2007)।

प्राकृतिक उपलब्धि :- द्रिओप्तेरिस बार्बिजेरा हमारे देश में दुर्लभ तथा समाप्तप्राय प्रजाति है।रीड मेस मूल, जो कच्चे माल के रूप में प्रयुक्त होता है, को पतझड़ (सितम्बर) अथवा शुरुआती वसंत (मार्च-अप्रैल) में निकालना चाहिये। कच्चे माल को 20 साल में एक बार उसी स्थान से निकालने की सलाह दी जाती है। कच्चे माल को सामान्य रूप में (1-5 से०मी० लम्बे तथा चौड़े) सुखाना तथा तैयार करना चाहिये। इनको कागज़ के थैलों में रखना चाहिये। संचयन समय अवधि 1 साल की है।

रासायनिक संघटन :- पौधे का पूरे रासायनिक संघटन का अध्ययन नहीं हुआ है।रीड मेस मूल में 7-8 प्रतिशत पदार्थ, 1-3.5 प्रतिशत फ्लोरोग्लाइसीन्स (फीलोकसोव तथा फ्लेवोसीड एसीडीटी) तेल, स्टार्च, सेकेरोझ, फ्लेवोनोइड्स, कोलोफोनी, कोमेरीन, कड़वे पदार्थ तथा उत्पत् तेल होते हैं।

प्रयोग :- द्रिओप्तेरिस बार्बिजेरा एक क्षुपीय पौधा है। इसके औषधीय गुण मध्ययुग के चिकित्सा शास्त्र में लिखा था। डायोस्कोराइड तथा प्लाइनी वरिष्ठ ने इसके बारे में अपने कार्य में लिखा है। इन वैज्ञानिकों ने लिखा है कि ये रुग्ण तथा प्राणी के शरीर से कृमि को निकाल सकते हैं। ग्रीक वैज्ञानिक थीओफ्रास्ट ने इस पौधे का कृमि में प्रयोग करने की सलाह दी है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

पूर्व के प्रख्यात वैज्ञानिक अबु अली इब्न सीना ने अपनी पुस्तक कैनन आफ मेडिकल सायंस में अबु रयहान बीरूनी ने अपनी पुस्तक फार्मकोग्बोसी इन मेडिसिन में तथा सेयीत इस्माइल गुर्गेन्ली ने अपनी पुस्तक ट्रेजरी आफ खोरेज्म शाह में द्रिओप्तेरिस बार्बिजेरा के औषधीय गुण के बारे में लिखा है। इसका प्रयोग करके इब्न सीना जिनका रोपण मुश्किल था ऐसे व्रण की चिकित्सा की तथा उसी समय उन्होंने पौधे की कृमिहर शक्ति दिखाई। जब प्रथमबार कृमि दिखते हैं तब द्रिओप्तेरिस बार्बिजेरा को ताजे दूध के साथ लेने की सलाह सेयीत इस्माइल गुर्गेन्ली ने दी है।

लोक चिकित्सा में द्रिओप्तेरिस बार्बिजेरा के फांट का प्रयोग रक्तस्राव बंद करने के लिये, रक्तशोधन के लिये, कृमि को मारने के लिये तथा गठिया में प्रयुक्त होता है। इस पौधे के रीड मेस मूल का अन्य वनस्पतियों के साथ बनाया हुआ पानक आमाशय शूल तथा गर्भाशय के गति के लिये प्रयुक्त होता है।

तुर्कमेन लोक चिकित्सा में द्रिओप्तेरिस बार्बिजेरा के Reed mace मूल से बने टींकचर का प्रयोग कृमि नाश के लिये तथा त्वचा की व्याधियाँ जो कीट से उत्पन्न होते हैं, में होता है। इस परिस्थिति में रोगी इसका प्रयोग कर स्नान कर सकता है।

कल्पना तथा प्रयोग :– एक बड़ा चम्मच (15 ग्राम) छोटे कद के रीड मेस मूल को एक गिलास में शुद्ध मेडीकल स्पीरीट (200 मि०ली) में मिलाकर 10 दिन तक अंधेरे स्थान पर रखें। समय समय पर हिलाते रहे। तैयार प्रवाही को कपड़े से छानकर 10–15 बूंद दिन में तीन बार भोजन पूर्व लें।

रीड मेस मूल 1 चम्मच (5 ग्राम) में एक गिलास (200 मि०ली) उबला हुआ पानी मिलाकर एक घण्टे के लिये रखें। छानकर प्रतिदिन रात को सोने से पूर्व 100 मि०ली० पियें।

एक तामचीनी पात्र में 0.5 किलोग्राम द्रिओप्तेरिस बार्बिजेरा लेकर पानी मिलाकर उबालें। कपड़े से छानकर इससे स्नान करें।

एलेआग्नुस ओरिएन्तालिस
ELAEAGNUS ORIENTALIS

वर्णन :– इस पौधे की विश्व में 45 प्रजातियाँ हैं लेकिन मध्य एशिया के देशों में तुर्कमेनिस्तान में हमें केवल तीन प्रजातियाँ मिलती हैं।

यह एलेआग्नुस ओरिएन्तालिस कुल का 5–12 मीटर ऊँचा पौधा है। यह कम मिलता है तथा इसका अनियमित आकार है। पेड़ के त्वक् चमकीली, रक्ताभ-भूरी, 1.5–2 से०मी० लम्बी होती है। यह नोकीला होता है। तरुण शाखायें तथा पत्रों का वर्ण चांदी समान श्वेत होता है। ये आकार में गोल सितारे जैसे तथा मोटे छिलका से आच्छादित होते हैं।

इस पेड़ का छोटा पत्र अण्डे जैसा, 4–7 से०मी० लम्बा तथा लगभग 1–2 से०मी० चौड़ा होता है। पुष्प छोटा तथा हलका पीला होता है। इस पौधे के मधु में बहुत अच्छी सुगंध है। पुष्प पत्र के नीचे स्थित होते हैं। गुच्छे में 1–3 पुष्प होते हैं। इनके पुष्प के तंतु 2–2.5 मि०मी० लम्बा होते हैं।

फल गोलाकार, 0.8 से०मी० ऊँचा, 1.5 से०मी० लम्बा तथा 1 से०मी० चौड़ा होता है। कच्चा फल चांदी जैसे छिलके से आच्छादित होता है। पका फल धूसर वर्ण का लगभग अनाच्छादित लेकिन कभी-कभी हलके धूंसर छिलके से आच्छादित होता है। इसका भीतरी भाग लम्बा, दोनों पार्श्व कुंठित अथवा नुकीले होते हैं।

जैविक लक्षण :– हमारे देश में एलेआग्नुस ओरिएन्तालिस समुद्र तल से 600–1200 मीटर की ऊँचाई

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

पर उगता है। यह उगने के लिये भूमि की पसंदगी नहीं करता। मूल पर कंद में नाइट्रोजन तथा एकटीनोमोइसेट होते हैं। ये सूर्यप्रकाश पसंद करते हैं तथा खारापन एवं शुष्कता को बिना कष्ट के जीत लेते हैं। यह राल का साथ 5-12 साल की उम्र में शुरू करता है।

इसको मई में पुष्प आते हैं। फल सितम्बर में पकते हैं। यह नम भूमि में बीज द्वारा तथा मूल की कली एवं प्रशाख द्वारा सूखी भूमि में प्रजनन करता है।

विस्तार :- यह पूर्व-पश्चिमी कोपेतदग, सुंबार नदी, तुतलयगाला, एयदेरे, चेन्दीर में, मध्य कोपेतदग: दुशाकेरेकदाग, केलेते की तंगघाटी, बृहत् तथा लघु बाकजा, गेर्माप, मेर्गेनोलेन, सुलुकली, आर्वाझ, यपयगाला, आर्चाबील, गयलेगयलाव, मुर्गाब तथा तेजेन नदियों की तंगघाटी तथा कोयतेनदग में उगता है।

प्राकृतिक उपलब्धि :- एलेआग्नुस ओरिएन्तालिस हमारे देश में उगने वाले एक छोटे समूह का पौधा है। औषधीय उद्देश्यार्थ पर्याप्त भण्डार है। पंजीकरण परिणाम दिनांक 2006-2007 के अनुसार हमारे पास आर्चाबील में 57, गयलगयलाव में 215, मेर्गेनोलेन में 87, युलय तथा कीची बाकजा में 38 हैं। (ए० अकमयरादोव, जी० गुर्बानमामेदोवा)। इनकी खेती की गई है। अमयदेर्या, मुर्गाब तथा तेजेन नदियों में अनेक तंगघाटियाँ हैं।

प्रयोज्य कच्चा माल :- औषधीय उद्देश्यार्थ पेड़ के फल, पुष्प, पत्र तथा राल का प्रयोग कच्चे माल के रूप में प्रयुक्त होता है। कच्चे माल जब पके हुए होते हैं तब इकट्ठा करके तैयार किया जाता है। फल सितम्बर-अक्तूबर में, पुष्प मई में, पत्र अप्रैल-मई में तथा राल जुलाई-अगस्त में इकट्ठा किया जाता है।

ये सभी कच्चे माल (पुष्प तथा पत्र) को पेन्ट हाउस अथवा अच्छी तरह हवादार कमरे में सुखाना चाहिये। राल, पेड़ पर जहां घर्षण या आघात हुआ होता है वहां दिखता है। इसको तेज चाकू से खरोचा जाता है।

तैयार कच्चे माल को नीचे बताये अनुसार रखा जाता है। पुष्प तथा पत्र को कपड़ों के थैलों में, फल को बंद कांच पात्र में, राल को कागज़ के बक्से में। संचयन समय अवधि पत्र तथा पुष्प के लिये 1-2 साल की है, तथा फल एवं राल के लिये 2-5 साल की है।

रासायनिक संघटन :- 0.2-1 प्रतिशत एल्कलोइड्स, ट्रेटाहाइड्रोहरमान, हरमान, डायकाइड्रोहरमान, क्वेबाचित, साइकलोटोल, तथा पदार्थ पादवृन्त, शाखा तथा मूल की त्वक् में होता है। पत्र में एल्कलोइड्स, फेरुला मूल, सीरप की अम्लता, फीनोलकार्बन, पदार्थ ए, बिटामिन सी, फलेवोनोइड्स, लेकटोन्स तथा कोमेरीन्स होते हैं। एलेआग्नुस ओरिगन्तालिस के पुष्प में 0.3 प्रतिशत इथेरीअल तेल एवं ग्लायकोसाइड फ्लेवोनोइड्स होते हैं। पेड़ के फल में कार्बोहाइड्रेट, ग्लुकोज, फ्रुकटोस, सेकेरोस, पेकटीन, विटामिन सी, 33-36 प्रतिशत पदार्थ ए, स्टीरोइड्स, आलब्युमीन, पोटेशियम तथा फोस्फर लवण तथा टेनीन होते हैं। बीज में तेल भी होता है।

प्रयोग :- एलेआग्नुस ओरिएन्तालिस औषधविज्ञान में एक प्राचीन लोक नुस्खा है। प्राचीन काल से यह अमूल्य फल का प्रयोग उन लोगों द्वारा किया जाता है जो एक स्थान से दूसरे स्थान पर लम्बे समय तक घूमते रहते हैं। रक्तचाप को कम करने वाले सारयुक्त मूल से बना पानक हृत्पीडा को कम करता है और हृदय में काम करने की शक्ति को बढ़ाता है। तने का राल गोलियां तथा औषध बनाने के लिये प्रयुक्त होता है।

पौधे के नये पत्र प्रतिश्याय तथा व्रण रोपणार्थ प्रयुक्त होता है। पत्र के फांट का प्रयोग शोफ युक्त व्याधियाँ तथा ज्वर में, तथा मुखगुहा की व्याधियों में गंडूषार्थ किया जाता हैं ताजीकिस्तान में इसका प्रयोग आमाशय की व्याधि तथा आंत्रशोथ में भी होता है।

पुष्प से टिंकचर, सीरप तथा मलहम बनाये जाते हैं, जिनका प्रयोग शोफ में, हृद्य (cardiotonic) के रूप में तथा शारीरिक कमजोरी में होता है। ताजीकिस्तान में इसका प्रयोग तापमान को गिराने के लिये होता है। विश्लेषणों से पता चला है कि ग्लायकोसाइड नाडी तंत्र को बल देता है, रक्तचाप कम करने का प्रभाव करता है तथा हृदयगति को सामान्य करता है। इत्र तथा श्रृंगार सामग्री में इथेरीअल तेल का प्रयोग लाभप्रद है।

पाचन संस्थान के शोथ की चिकित्सा के लिये इसका प्रयोग किया जाता है। लोहतान फल की कटी हुई छिलके का टुकडा हैं। लोईपेकतान पूरा कटा फल, पातिव काटे हुए तथा सूखे हुए चिकित्सकीय नुस्खे। मुखशोथ तथा दंतवेष्टक शोथ में गंडूषार्थ इसका प्रयोग करते हैं। लोक चिकित्सा में इसका प्रयोग शोथ तथा प्रतिश्याय एवं ज्वर को मिटाने के लिये करते हैं। इसका तेल वृक्ष के पत्र के साथ मिलाकर अर्श की चिकित्सा के लिये प्रयुक्त होता है। फल के फांट का प्रयोग कफनि:सारक नुस्खे के रूप में श्वसन संस्थान की व्याधियों में तथा अन्य व्याधियों जैसे अतिसार, अजीर्ण, आंत्रशोथ, लघु-बृहत्-आंत्र शोथ, जलोदर, काला चेचक तथा दंतशूल में होता है।

ताजीकिस्तान में इसका प्रयोग खसरा में होता है, लेकिन ईरान में इसको व्रणरोपण माना गया है। फल से बना हुआ मलहम व्रण का रोपण जल्दी करता है। फल आटा, ब्रेड, मिठाईयाँ, आटा के उत्पाद, मुरब्बा, सीरप तथा कांजी बनाने के लिये उपयोगी है। 100 ग्राम फल से 20 लीटर स्पिरिट तैयार किया जाता है। मूल से निर्मित सीरप का प्रयोग ज्वर तथ चर्मविस्फोट में किया जाता है। तेल का प्रयोग लिंगनाश तथा श्वसननलिका शोथ में किया जाता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

तुर्कमेन लोक चिकित्सा (मागत्यंगुल्य, बाखार्ली, गोकदेपे, कोयतेनदग) में प्राचीन काल से फांट तथा सीरप का प्रयोग आंत्रशोथ तथा अतिसार में लोकप्रिय नुस्खे के रूप में होता रहा है। एलेआग्नुस ओरिएन्तालिस के अधो पत्र पूय को साफ करने के लिये तथा व्रण के रोपण के लिये किया जाता है। पत्र भाप में पकाकर मलहम तैयार करके इसका प्रयोग गठिया कटि तथा ग्रीवा शूल में होता है। मध्य एशिया के सभी प्रांतों में एलेआग्नुस ओरिगन्तालिस का प्रयोग चाय के साथ केन्डी के रूप में होता है।

कल्पना तथा प्रयोग :- पके फल 2 बड़े चम्मच (30 ग्राम) को 1 गिलास पानी में मिलाकर धीमी आंच पर 5-10 मिनट तब एक तामचीनी पात्र में उबालें। छानकर दो चम्मच दिन में तीन बार भोजन पश्चात् लें। यह औषधीय फांट अतिसार के लिये एक अच्छा नुस्खा है।

पेड़ के पुष्प एक बड़ा चम्मच (15 ग्राम) को एक गिलास (200 मि०ली०) उबले पानी में मिलाकर कुछ देर तक रखें। तैयार मिश्रण को छानकर एक बड़ा चम्मच दिन में तीन बार लें।

एक तामचीनी पात्र में पूरी तरह शुष्क पुष्प, एक बड़ा चम्मच (15 ग्राम) को एक गिलास (200 मि०ली०) पानी में मिलाकर धीमी आंच पर उबालें। ठंडा करके छान लें। इस फांट, (एक बड़ा चम्मच) को दिन में तीन बार लें।

एक कांच पात्र में दो बड़े चम्मच (30 ग्राम) सूखे क्षुप को औषधीय स्पिरिट में अथवा वाईन में मिलाकर ढक्कन लगाकर 10 दिन तक रखें। समय-समय पर हिलाते रहें। तैयार सीरप को छानकर एक बड़ा चम्मच भोजन पूर्व दिन में तीन बार लें। यह औषध ऊर्ध्व श्वसन संस्थान के शोथ में तथा हृदय की कार्यक्षमता बनाये रखने के लिये उपयोगी है।

100 ग्राम पत्र को साफ कपड़े से लपेटकर सिझावें। जब नरम हो जाये तो एक स्थान पर 2-3 घण्टे के लिये बिना हिलाये रखें। इस मुखौटे को शाम को धारण किया जाता है। यह मुखौटा, गठिया, पृष्ठ शूल तथा ग्रीवा शूल में उपयोगी है।

पके फल तीन बड़े चम्मच (45 ग्राम) को एक गिलास (200 मि०ली०) उबले पानी में मिलाकर 30 मिनट के लिये रखें। तत्पश्चात् छानकर दो बड़े चम्मच प्रतिदिन लें।

एक कांच पात्र में चार बड़े चम्मच (60 ग्राम) अच्छी तरह कटे हुए पुष्प को आधा गिलास (100 मि०ली०) पानी तथा जैतुन अथवा सूर्यमुखी का तेल मिलाकर ढक्कन लगाकर अंधेरे स्थान पर एक सप्ताह के लिये रखें। समय-समय पर हिलाते रहें। तत्पश्चात् छानकर एक चम्मच (5 ग्राम) दिन में तीन बार लें। यह औषध शोथ, दौर्बल्य तथा हृदयरोग में एवं उच्च रक्तचाप वाली व्याधियों में उपयोगी है।

एलित्रिजिआ रेपेन्स
ELYTRIGIA REPENS

वर्णन :- इस पौधे की विश्व में 30 प्रजातियाँ, मध्य एशिया देशों में 20 प्रजातियां तथा तुर्कमेनिस्तान में 8 प्रजातियाँ होती हैं। इसको कुत्ते का दान्त भी कहते हैं। यह क्षुपीय, बीज बनाने वाले पौधों में से है। यह 30-120 से०मी० ऊँचा होता है। यह बहुवर्षीय है। इस पौधे के जमीन पर अनेक मूल होते हैं तथा ये विविध दिशा में फैलते हैं। सूत्र-समान मूल अभिमुख होते हुए जाले की तरह जुड़ते जाते हैं लम्बे मूल 26,000 से ज्यादा छोटे लंगरो से आच्छादित होते हैं। इसका कांड सीधा बढ़ता है, अंतर्भाग अवकाशयुक्त (खोखला) होता है। कांड के ऊर्ध्व भाग में अनेक वाहिनीयाँ होती हैं। इसके पुष्प विन्यास में पुष्पों का गुच्छा होता है। यह छोटे गुच्छों वाला होता है। प्रत्येक पुष्प विन्यास के गुच्छे में दो आच्छादिक पत्र होते हैं तथा 4-7 पुष्प आच्छादक पत्रों के बीच में उगते हैं।

जैविक लक्षण :- इस पौधे के मूल जमीन के अंदर विविध दिशा में फैलते हैं, इस कारण प्रतिवर्ष ये तृण नये क्षेत्र को घेरता रहता है।

इस पौधे में जून-जुलाई में पुष्प लगते हैं। अगस्त-सितम्बर में फल पकते हैं। इसके फल में छोटे बीज होते हैं।

विस्तार :- हमारे देश के प्रायः प्रत्येक क्षेत्र में यह तृण फैला हुआ है। यह मुख्यतः मैदानों में फैलता है। यह बगीचे में, नदी तथा नहरों के किनारों पर फैलता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

प्राकृतिक उपलब्धि :- यह दुर्लभ पौधों के समूह का नही हैं। तुर्कमेनिस्तान में इसके पर्याप्त भण्डार हैं।

प्रयोज्य कच्चा माल :- वसंत तथा पतझड़ में जब हम खेत जोतते हैं तब इसके मूल तथा मूल-कांड को कच्चे माल के रूप में इकट्ठा किया जाता है। मूल को छाया में सुखाया जाता है। कच्चे माल को कपड़े अथवा कागज़ के थैलों में संचय किया जाता है।

रासायनिक संघटन :- इस तृण के पत्र में 156 मि०ग्रा० प्रतिशत विटामिन सी, 50 मि०ग्रा० केरोटीन, 40 प्रतिशत स्टार्च, मेलीक एसीड, ग्लायकोवीनीलीन, इथेरीअल तेल, एग्रोपीरेन तथा कुछ खनिज होते है। इथेरीअल तेल में 5 प्रतिशत कार्बन तथा 95 प्रतिशत तथा कुछ खनिज होते हैं।

प्रयोग :- प्राचीन काल से ही इसके औषधीय गुणधर्मों के बारे में ज्ञात है। कुछ कुत्ते भी जब उन्हें पचन संस्थान के विकार होते हैं तब उन्हें खाते हैं। ये 3-4 खा जाते हैं तथा शीघ्र निगल जाते हैं।

चिकित्सा शास्त्र में इसका प्रयोग रक्त संस्थान की शुद्धि के लिये होता है। इसका प्रयोग फुफ्फुस की व्याधियों तथा पचन संस्थान की व्याधियों की चिकित्सा के लिये होता है।

1918 में पीटर्सबर्ग में एम. डबल्यु रूतोव ने अपनी पुस्तक रुसी मेडिसिनल हेर्ब्स में यह रेखांकित किया कि यह पौधा अपने औषधीय गुणधर्म खो रहे हैं, लेकिन 50 वर्षों के बाद औषधविदों ने माना कि यह पौधा, औषधीय पौधों की सूची में होना चाहिये क्योंकि इन्होंने पाया कि इसके मूल में एक बहुत महत्वपूर्ण पदार्थ ट्राइटीसीन, पोलीसेकेराइड्स, सेपोनीन्स, इथरीअल तेल, विटामिन सी, केरोटीन आदि रहते हैं।

पौधे के मूल से निर्मित मिश्रण का प्रयोग विस्तृत रूप से फुफ्फुस, प्लीहा, उदररोग तथा पचन संस्थान की चिकित्सा में होता है।

लोक चिकित्सा में इसका प्रयोग वृक्काश्मरी, फुफ्फुस, पित्ताश्मरी के पत्थरों को निकालने त्वक् रोग, रक्तस्राव रोकने के लिये तथा कई अन्य व्याधियों में होता है।

कल्पना तथा प्रयोग :- पौधे के कुटे हुए मूल 4 चम्मच (20 ग्राम) को 200 मि०ली० ठंडे पानी में डालकर 12 घण्टे के लिये ठण्डे स्थान में रखें। उस पात्र में 200 मि०ली० उबला हुआ पानी मिलाकर हिलायें। 10 मिनट के बाद अच्छी तरह मिलाकर छान लें। दिन में तीन बार सेवन करें, प्रत्येक बार 100 मि०ली० प्रवाही लें।

एफ़ेद्रा एक्वीसेतिना
EPHEDRA EQUISETINA

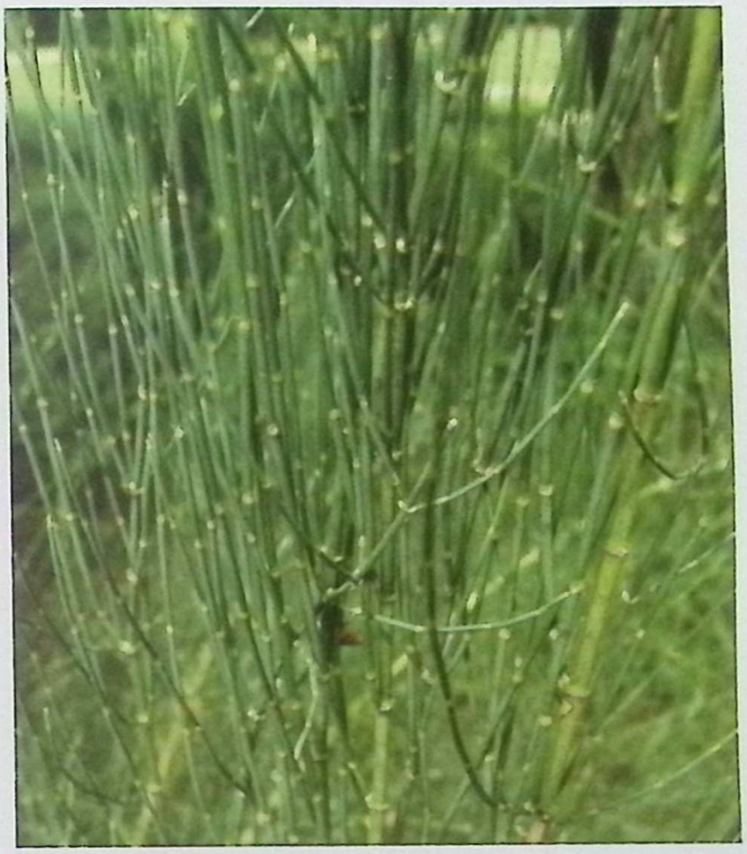

वर्णन :- इस प्राचीन औषधीय पौधे की विश्व में 40 प्रजातियाँ, मध्य एशिया के देशों में 19 प्रजातियाँ तथ तुर्कमेनिस्तान में 10 प्रजातियाँ मिलती हैं।

एफ़ेद्रा एक्वीसेतिना एफीड्रा कुल की है। यह 1-1.5 मीटर ऊँचा, अलग-अलग काण्ड वाला गुल्म है। तने का व्यास 4 से०मी० तथा वर्ण धूसर होता है। इस पौधे का आधार प्रणाली और छोटे मूल पानी तथा खनिज प्राप्त करवाते हैं। बड़े पौधे की शाखायें अलग अलग उम्र की होती है। तने के ऊर्ध्व भाग से प्रथम स्तर की शाखायें निकलती हैं तथा इसमें से द्वितीय स्तर की शाखायें निकलती हैं। 1-1.5 साल के शाखाग्र हरे होते हैं। इसके बाद ये कड़े हो जाते हैं तथा भूरे अन्तस्त्वचा से आच्छादित हो जाते हैं। गुल्म की शाखायें संयुक्त 1.5-3 से०मी० के अंतराल वाली होती हैं। ये 1.5-2 मि०मी० लम्बे, निर्वर्ण छिलके वाली छोटी होती है। ये कांड के साथ जुड़ी हुई होती है।

जैविक लक्षण :- जैविक लक्षणों के आधार पर यह मध्य एशिया का पौधा है। पौधा द्विलिंगी होता है। पुरुष शाखायें एकाकी अथवा 2-3 विभागों वाली, अंकुर 1-2 मि०मी० लम्बे 1-4 पुष्प वाले, ये गोलाकार होते हैं। स्त्री शाखायें सीधी, एक पुष्पवाली होती हैं। शाखायें 1-12 मि०मी० लम्बी होती है। फल शंकु आकार का होता है। यह गूदायुक्त, 6-7 मि०मी० लम्बा, लाल अथवा गुलाबी, एक

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

बीज वाले बेर होते हैं। एफ़ेड्रा एक्वीसेतिना के 1000 बीज का वजन 6.5-9 ग्राम होता है। पौधे को मई में पुष्प तथा जुलाई में फल लगते हैं। एफ़ेड्रा एक्वीसेतिना समुद्र तल से 800-1600 मीटर की ऊँचाई पर उगता है। पौधे का विस्तृत रूप से विकसित मूल संस्थान होता है। यह रेतीली भूमि तथा चट्टानों वाले स्थान पर उगता है। इसको सूर्यप्रकाश की जरूरत होती है। यह भंग द्वारा प्रजनन करता है। एफ़ेड्रा एक्वीसेतिना प्रतिवर्ष बीज उत्पन्न करता है। प्रजननशील काल तीन वर्ष का होता है।

विस्तार :- पौधा कोपेतदग में, दानीएता, मेरेजीस में, बृहत् बालखन में, नझारेकेरेम में, दक्षिण-पूर्वीय कोपेतदग में, मागत्यंगुलय, एयदेरे, पारदेरे, डायना देश्त, सायवान, नोहूर में, कोनेगुम्मेय में, मध्य कोपेतदग में, गारायालच्च, आर्वाझ, सर्यमसाकलय, देगीरमेन्ली, सुलुकली, आलुसुकेव, मुर्झेदाग, गयलगयलाव, गोर्पप, चायेक, दुशाकेरेकदाग, गोकदेरे, मार्काव, बागीर, गींडीवार, नीओतोनोवस्कीय, आर्चाबील, दाश्तोय, नागयश, बाबाझाव, असयलमा, पश्चिमी कोपेतदग में, गुर्यहोवदान में, च्यर्लाक तथा शामलय में मिलता है।

प्राकृतिक उपलब्धि :- एफ़ेड्रा एक्वीसेतिना हमारे देश में दुर्लभ पौधा नहीं है। औषधीय उद्देश्यार्थ इसके प्राकृतिक भण्डार पर्याप्त है। मुख्य भण्डार कोपेतदग तथा बालशोई एवं मालय बालखान में है। कोपेतदग में प्रतिवर्ष 25-30 टन कच्चा माल इकट्ठा किया जाता है। हमारे देश में प्रतिवर्ष लगभग 50-100 टन एफ़ेड्रा एक्वीसेतिना का प्रयोज्य कच्चा माल इकट्ठा किया जाता है। एफ़ेड्रा एक्वीसेतिना औद्योगिक उद्देश्यार्थ प्रयुक्त होता है। प्रयोज्य कच्चे माल में 1.6 प्रतिशत एल्कलोइड्स होते हैं। सबसे निकट के स्थानों (10-15 किलोमीटर) से प्रयोज्य कच्चा माल इकट्ठा करना चाहिये। उपज 950-1550 किलोग्राम प्रति हेक्टर है। प्रतिवर्ष संग्रहित किया जाने वाला पौधा देश की आधी आवश्यकता की पूर्ति करता है। हमारे देश में 100-200 टन का है। अगर एफ़ेड्रा एक्वीसेतिना का सही रूप से प्रयोग किया जायेगा तो प्राकृतिक भण्डार फिर से बन जायेगा। इसलिये एफ़ेड्रा एक्वीसेतिना जहां उगती है वहां से बारी-बारी से इकट्ठा करना चाहिये।

प्रयोज्य कच्चा माल :- एफ़ेड्रा एक्वीसेतिना के पौधे की शाखायें प्रयोज्य कच्चा माल है। एफ़ेड्रा एक्वीसेतिना के प्रयोज्य कच्चे माल को वसंत में, अप्रैल में इकट्ठा किया जाता है। एफ़ेड्रा एक्वीसेतिना के कटे हुए हिस्सों को सूखे स्थान में रखा जाता है। इनको 5-6 दिन में सुखाया जाता है। एफ़ेड्रा एक्वीसेतिना की शाखायें मई में बहुत त्वरित बढ़ती हैं। सुखाए हुए कच्चे माल को थैलों में संचय किया जाता है। संचयन समय अवधि 2-3 साल की है।

रासायनिक संग्रठन :- एफीड्रीन एल्कलोइड्स पाने के लिये एफ़ेड्रा एक्वीसेतिना का प्रयोज्य कच्चा माल प्रयुक्त होता है। इसके औषधीय गुणधर्म एफीड्रीन के समान है लेकिन इसकी क्रियाशीलता 2 गुने कम है। दूसरी जाति में मुख्य एल्कलोइड्स स्युडोएफीड्रीन है। साथ ही पौधे के युग में 11 प्रतिशत टेनीन तथा फल में 160 मि०ग्रा० तक विटामिन सी होता है।

प्रयोग :- एफ़ेड्रा एक्वीसेतिना प्राचीन प्रयोज्य पौधों में से एक है। डायोस्कोराइड ने ई०पू० प्रथम शताब्दी में इस पौधे के औषधीय असर के बारे में लिखा है। एफीड्रीन रक्तवाहिनीओं के संकोच पर असर दिखाता है। श्वसन नलिकाओं को तथा नेत्र को विस्फारित करता है तथा रक्तवाहिनीओं का रक्तचाप बढ़ाता है। यह आंत्र के कार्य पर भी प्रभाव डालता है तथा रक्त में शर्करा की मात्रा बढ़ाता है। एड्रीनलीन की तुलना में एफीड्रीन का असर कम है लेकिन लम्बा है। एफीड्रीन नाडी तंत्र को उत्तेजित करता है तथा श्वसन संस्थान के कार्य को सुधारता है।

चिकित्सा व्यवहार में एफीड्रीन क्लेरोहाइड्रीन का प्रयोग तमक श्वास, श्वासावरोध, प्रतिश्याय, संक्रामक व्याधियों से उत्पन्न दबाव को कम करने के लिये श्वासशमन तथा तन्द्राकर औषधियों की विषाक्तता में तथा पृष्टवंशीय संज्ञाहीनता में भी प्रयुक्त होता है। यह थीओफेन्ड्रीअम जिसका प्रयोग तमक श्वास में होता है, का भी एक घटक द्रव्य है।

एफ़ेड्रा के फल का आहार के रूप में प्रयोग होता है। एकवैशिक स्थलों में स्थानीय लोग विविध प्रकार के चर्म व्रणों में इसका प्रयोग करते हैं। पके फलों का व्रण पर लेप किया जाता है तथा सुखाया जाता है। पर्वतीय गांवों (नोहूर-दयाने, सायवान, मागत्यंगुली) में पके फलों का प्रयोग मुरब्बा, पेय तथा सीरप बनाने के लिये किया जाता है।

कल्पना तथा प्रयोग :- सूखे पौधे दो बड़े चम्मच को एक गिलास उबले हुए पानी में मिलाकर 30-40 मिनट तक रखें। छानकर एक बड़ा चम्मच दिन में तीन बार लें। एफ़ेड्रा एक्वीसेतिना का पौधा एक बड़े चम्मच को 2 गिलास (400 मि०ली०) पानी में मिलाकर उबालें। फांट को छानकर 1 बड़ा चम्मच दिन में तीन बार लें।

औषधीय पानक बनाने के लिये 100 ग्राम फल 50 ग्राम शर्करा तथा 3 गिलास (600 मि०ली०) पानी को मिलाकर उबालें। जब तक गाढ़ा न हो जाये तब तक धीरे से चलायें। तैयार हुए प्रयोज्य शक्तिप्रद पानक को छानकर एक बड़ा चम्मच (15 ग्राम) दिन में तीन बार लें।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

एफ़ेद्रा इंतेरमेदिआ
EPHEDRA INTERMEDIA

वर्णन :- एफ़ेद्रा इंतेरमेदिआ एक पत्रहीन, सदाबहार (evergreen) शंकु (conifer) है जिसके कई नाम हैं। यह एफ़ेद्रा इंतेरमेदिआ कुल का तथा नेतोफाइबा फायलम का है। एफ़ेद्रा इंतेरमेदिआ 20-60 (100) से०मी० तक ऊँचा हो सकता है। इस पौधे की शाखायें सीधी तथा गांठवाली होती हैं। एफ़ेद्रा इंतेरमेदिआ सामान्यतः भूरा लेकिन क्वचित् हरा होता है। एफ़ेद्रा इंतेरमेदिआ के मूसल को दोनों तरह के बीज होते हैं। बीज नलिका 4-5 मि०मी० लम्बी होती हैं। इसको पुष्प अलग-अलग लिंग के होते है। एफ़ेद्रा इंतेरमेदिआ का फल लाल तथा बहुत मांसल रसीला तथा स्वादिष्ट होता है।

जैविक लक्षण :- पौधा समुद्रतल से 400-2800 मीटर की ऊँचाई पर उगता है। यह शुष्क कंकड तथा झाड़ीदार पथरीली चट्टानों पर उगता है। झाड़ीदार पौधा अप्रैल-जून में खिलता है तथा फल देता है। दो-तीन वर्षों में एक बार यह फल देता है।

विस्तार :- एफ़ेद्रा इंतेरमेदिआ बोलशोई में, बालखन, बादगोमुर, बालगुची, साका, कुरेनदाग, दानीएता, ओबोय, इसगेन्दर, पारोव, सोनुदाग, दक्षिण-पश्चिम कोपेतदग, सार्यमसाकलय, आर्वाझ, गाशयालचय, देगीरमेनली, सुलुकली, मुसुनेव, मुर्झेदाग, गयलगयलाव, गोर्माप, चायेक, दुशाकेरेक, गोकदेरे, मार्काव, गीन्डीवार, बागीर, आर्चाबील, धागाझाव, असयलामा, दागयश, दाशतोय, होपदा, पूर्वीय कोपेतदग, गुर्यहोवदान, बाध्यझ, चयर्लाक, येरोलान्दुझ, नारदयवान्ली, पयनहान, गयझयलजार, पयनहान, कोयतेनदाग, हाझारयाकारण में उगता है।

प्राकृतिक उपलब्धि :- हमारे देश के दुर्लभ पौधों में से यह नहीं है। औषधीय उद्देश्यार्थ इसके भण्डार पर्याप्त है।

प्रयोज्य कच्चा माल :- पौधे अथवा शाखायें प्रयोज्य उत्पाद के रूप में प्रयुक्त होते हैं। उत्पाद को सूर्य प्रकाश में 5-6 दिन तक सुखाया जाता है। अगर इसे और अधिक सुखाया जाता है तो इसके एल्कलोइड्स की मात्रा कम हो जाती है। तैयार माल को कपड़े के थैलों में रखा जाता है। संचयन समय अवधि 1-2 साल की है।

रासायनिक संघटन :- पौधे की शाखाओं में 0.5 से 3.1 प्रतिशत एल्कलोइड्स होते हैं। इसमें 70-95 प्रतिशत स्युडोएपीनेफ्रीन तथा एपीनेफ्रीन होते हैं। साथ ही इसके संघटन में 8 प्रतिशत टेनींग द्रव्य, फ्लैवोनीक तथा रंजक द्रव्य होते हैं। संघटन में रंजक द्रव्य मुख्यतः (लयुकोएन्थोसायेनीन) प्राकृतिक है। इसके पोलीफीनोल संघटन में फलेवोन, कोमेरीन, एरोमेटीक एसीड्स तथा उत्पत् तेल होते हैं।

प्रयोग :- एफ़ेद्रा इंतेरमेदिआ के औषधीय गुण का वर्णन प्रथम बार पवित्र पुस्तक अवेस्ता में किया गया है। हमारे पूर्वज विविध व्याधियों तथा विष के लिये इसका प्रयोग करते थे। नूतन द्रव स्वास्थ्य के लिये उपयोगी है तथा उसका पेय रोग तथा मृत्युनाशक माना गया है। मध्य एशिया राष्ट्रीय चिकित्सा में पौधे की तरुण शाखा से निर्मित फांट कंडू तथा तीव्र शैत्य में प्रयुक्त होता है।

तुर्कमेन राष्ट्रीय चिकित्सा में पौधे के तरुण पत्र से निर्मित फांट तथा रस तमकश्वास तथा कास के लिये प्रयुक्त होता है। फलों से निर्मित रस तथा मद्य का प्रयोग बलवर्धक औषध के रूप में किया जाता है।

चिकित्सा शास्त्र में पौधे के प्रयोग में एफ़ेद्रा इंतेरमेदिआ का प्रयोग लिखा है। औषध विज्ञान संबंधित संशोधन के बाद ल्यूकोएन्थोसायेनीन, विटामिन सी, वीटामिन के तथा एन्टीओकसीडेन्ट्स की व्याख्या की गई।

कल्पना तथा प्रयोग :- एक बड़ा चम्मच (15 ग्राम) अच्छी तरह सूखी तरुण शाखाओं को एक गिलास (200 मि०ली) पानी में मिलाकर 10 मिनट के लिये धीमी आंच पर उबालें। तैयार फांट को छानकर दिन में तीन बार एक चम्मच लें।

एक बोतल में दो चम्मच तरुण शाखाओं को 0.5 गिलास एल्कोहोल में मिलाकर ढक्कन लगाकर 10 दिन तक रखें। बीच-बीच में हिलाते रहें। तैयार वाईन को छानकर एक चम्मच तीन बार लें।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

पौधे के फल 100 ग्राम को 2 गिलास पानी में मिलाकर एक तामचीनी पात्र में उबालें। हिलाते रहें। गाढा बनने के बाद छान लीजीये तथा इस मधुर प्रवाही को धीमी आंच पर उबालते रहिये। यह ज्यादा गाढ़ा बनेगा। एक चम्मच दिन में तीन बार भोजन पूर्व लें।

एक्वीसेतुम आर्वेन्से
EQUISETUM ARVENSE

वर्णन :- एक्वीसेतुम आर्वेन्से एक प्राचीन पौधा है। मध्य एशिया में इसकी 23 प्रजातियां, लेकिन तुर्कमेनिस्तान में 2 प्रजातियां हैं।

एक्वीसेतुम आर्वेन्से, एक्वीसेतेसी कुल का एक बहुवर्षिय, बीजरहित क्षुपीय पौधा है। शरुआती वसंत में जब बर्फ समाप्त हो जाता है तब छोटे डंठल निकलते हैं। ये भूरे-धूसर तथा अग्र भाग पर अण्डाकार बीजाणु कोषयुक्त अवृन्त पुष्पगुच्छ वाले होते हैं।

जैविक लक्षण :- प्रकंद में छोटे गोलाकार कंद होते हैं। बीजाणु मार्च मई तक पकते हैं। बीजाणु गिरने के बाद छोटी कांड बहुत जल्द शोषित हो जाती है, लेकिन जल्द ही गर्मी में नये अंकुर उसी प्रकंद से निकलते हैं। ये सामान्यतः अधिक ऊँचे, अधिक पतले, हरे, अनेक शाखायुक्त तथा आवर्त वाले होते हैं।

बीजाणु कोषयुक्त अवृन्त पुष्पगुच्छ तथा नये अंकुर उसी प्रकंद से प्रतिवर्ष निकलते हैं लेकिन नये अंकुर बहुत धीरे से बढ़ते हैं। सूक्ष्म उपजनन कोशिका बीजाणुओ में से निकलते है। कुछ बीजाणों में शुक्राण्ड तथा अन्य में पुंजनिका होते हैं।

एक्वीसेतुम आर्वेन्से सबसे ज्यादा आश्चर्यजनक गुणों में से एक है। उसके उगने का वह स्थान है, जिसके आसपास साफ पानी के जलस्तोत होते हैं। वैज्ञानिक समझाते हैं कि एक्वीसेतुम आर्वेन्से स्वर्ण से समृद्ध भूमि में उगता है।

विस्तार :- एक्वीसेतुम आर्वेन्से दक्षिण-पश्चिमी कोपेतदग में, केसेदाग, एयदेरे, गारावुल, सायवान, देश्त, मध्य कोपेतदग, यपयगाला, गारायालचय, एयझ, आर्चाबील, गोकदेपे, युलय तथा कीवी बाकजा एवं सारयंसाकलय में फैला हुआ है।

प्राकृतिक उपलब्धि :- एक्वीसेतुम आर्वेन्से तुर्कमेनिस्तान के दुर्लभ क्षुपीय पौधों में से नहीं है। औषधीय उद्देश्यार्थ प्रयोग करने के लिये भण्डार पर्याप्त है। यह नम भूमि में उगता है।

रासायनिक संघटन :- एक्वीसेतुम आर्वेन्से के क्षुप में सेपोनीन्स, एल्कलोइड, फ्लेवोनोइड्स, सीलीकोन, मेलिक तथा ओक्जेलिक एसीड्स, वीटामिन सी, केरोटीन, प्रोटीन्स, वसा तथा टेनीन होते हैं।

प्रयोज्य कच्चा माल :- गर्मी में अंकुर को चाकू अथवा कैंची से काटे जाते हैं। अगर पौधे का विकास अधिक मोटा है तो उसको कटाई किया जाता है। पौधे के मूल के समीप वाले हिस्से का प्रयोग औषध में नहीं हो सकता है। सुखाने से पहले कच्चे माल को साफ करना चाहिये। इनको बाहर छांव में कागज़ पर अथवा केतेनी (हस्तशालित तुर्कमेन कपड़ा) पर सुखाना चाहिये। कच्चे माल का स्तर 5-7 से०मी० मोटा होता है। सूखने के बाद पौधे का भार कुल द्रव्य राशि का 20-25 प्रतिशत कम हो जाता है। तृण भूरा-हरा हलकी सुगंधवाला तथा तिक्त रसवाला होता है। जब कच्चा माल तैयार हो जाता है तब इसको कागज़ के बक्सों अथवा छोटे बोरे में पैक किया जाता है। संचयन समय अवधि 1-2 साल की है।

प्रयोग :- प्लाइनी वरिष्ठ (23-79 ई०पू०) तथा एपुलीयस (इ०पू० 2 शताब्दी) के कार्यों में एक्वीसेतुम आर्वेन्से के औषधीय गुणधर्मों के बारे में शुरूआती डाटा मिलते हैं।

पौधे से बनी औषधियाँ का प्रयोग अर्श, गर्भाशय में से होने वाले रक्तस्राव, यकृत् की व्याधियाँ तथा एथेरोस्क्लेरोसिस में होता है। एक्वीसेतुम आर्वेन्से का स्वरस व्रणरोपण के लिये लगाया जाता है। क्वाथ यकृत् तथा आमाशय की गांठे तथा आंतरिक रक्तस्राव से होने वाले शूल में बहुत असरदायी है।

लोक चिकित्सा में एक्वीसेतुम आर्वेन्से का प्रयोग वृक्क व्याधियां, प्रतिश्याय, गठिया, रक्तस्राव तथा उच्च रक्तचाप में होता है।

औषध का स्नान चर्म व्याधियों में, हृद्शूल के लिये, और व्रण में कवलार्थ प्रयुक्त होता है। प्रख्यात वैज्ञानिक तथा चिकित्सक अबु अली इब्न सीना ने एक्वीसेतुम आर्वेन्से के

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

ताजे निकाले हुए स्वरस का प्रयोग व्रणरोपक नुस्खे के रूप में तथा फांट का प्रयोग वृक्क ग्रंथि एवं रक्तातिसार में किया।

कल्पना तथा प्रयोग :- एक्वीसेतुम आर्वेन्से का क्षुप चार चम्मच (20 ग्राम) को एक तामचीनी पात्र में 1 गिलास (200 मि०ली०) पानी में मिलाकर 30 मिनट तक उबालें। छानकर व्रणरोपक तथा जीवाणु नाशक औषध के रूप में प्रयोग करें।

एरेमुरुस सुबाल्बिफ्लोरुस
EREMURUS SUBALBIFLORUS

वर्णन :- विश्व में इस पौधे की लगभग 60 प्रजातियाँ, जिनमें मध्य एशिया में 50 प्रजातियां, मध्य एशिया में लगभग 45 प्रजातियां तथा तुर्कमेनिस्तान में 15 प्रजातियां मिलती हैं। यह शोभादायक तथा औषधीय पौधा है। यह एक असाधारण पौधा है। ताजीकिस्तान में इस पौधे का नाम शीशीयाश है, लेकिन इस शब्द के दो अर्थ हैं। पहले का भाषांतर गोंद तथा दूसरे अर्थ का संबंध दूध से है। इस पौधे के मूल दूध का स्रवण करते हैं। फारसी भाषा में इसका अर्थ है क्षीरीय रस। एरेमुरुस सुबाल्बिफ्लोरुस एक बहुवर्षिय पौधा है। इसकी ऊँचाई 100-120 से०मी० तक होती है। पुष्प खिलने के समय पौधे में बहुत सुंदर, मनोहर, सुगंधवाले पुष्प निकलते हैं। पत्र पट्टी समान, 30-60 से०मी० लम्बे तथा लगभग 100-120 से०मी० ऊँचे होते है। श्वेत अथवा पीत, कुछ वर्णयुक्त रेखावाले 150-200 पुष्प कांड को आच्छादित करते है। पौधे का प्रकंद एक छोटे पीपे जैसा दिखता है। पौधे के मूल नलिकाकार, क्वचित् भालाकार स्वरूप होता है। मूल बहुत असाधारण होते हैं। केवल वनस्पति शास्त्री ही नहि अपितु पुरातत्व विद् तथा जीव रसायन शास्त्री भी इस पौधे के प्रति बहुत ध्यान देते हैं।

पौधे में अप्रैल-जून में पुष्प आते हैं। फल काष्ठफल जैसे दिखते हैं तथा पौधे में मई-जुलाई में फल लगते हैं।

जैविक लक्षण :- यह औषधीय पौधा समुद्रतल से 1000-2200 मीटर की ऊँचाई पर उगता है। यह पौधा पर्वतों के मध्य तथा ऊपर के भागों में उगता है। यह पौधा सामूहिक रूप से पथरीली ढलानों पर तथा चट्टानों पर उगता है। यह पौधा इस क्षेत्र में स्थानिक है। पौधे में वसंत के मध्य से गर्मी की समाप्ति तक पुष्प लगते हैं। पौधे क्रम में पुष्प देते हैं प्रथम अधो पुष्प खिलते हैं तथा उसके बाद ऊर्ध्व पुष्प खिलते है। मक्खी तथा मधुमक्खी द्वारा इसमें परागीकरण होता है। कीट पराग तथा मधु इकट्ठा करते हैं। अगर बीज बोकर यह पौधा उगाया जाता है तो नया पौधा 5-8 साल में उगता है।

विस्तार :- यह क्षुपीय पौधा दक्षिण-पश्चिमी कोपेतदग में, नोखूर, सायवान, देश्त में, गारावुल में, योलदेरे में, सुंटे में, मध्य कोपेतदग में रहोवदान, अस्यहनाद, खानीआल, चायेक, हैराबाद, गोन्दरे, चोपान्दाग (अधिक) दक्षिणी कोपेतदग में यह दुर्लभ है, केवल खार्णीनाद में उगता है।

प्राकृतिक उपलब्धि :- हमारे देश में प्रयोज्य कच्चा भण्डार पर्याप्त मात्रा में है। यह पौधा दुर्लभ पौधा नहीं है। मध्य कोपेतदग में इसके कच्चे माल का 5-10 टन तथा दक्षिण-पश्चिमी कोपेतदग में 5-8 टन्स इक्ट्ठा किया जाता है। वर्ष 2003 असाधारण था क्योंकि यह पौधा सायवान, देश्त तथा नोखूर में अधिक उगा था।

प्रयोज्य कच्चा माल :- साधारण रूप में मूल कच्चा माल है लेकिन पत्र को भी प्रयोज्य कच्चे माल के रूप में इकट्ठा किया जाता है। इस पौधे के मूल को (पोलीसेकेराइड्स के अत्यधिक मात्रा के कारण) अप्रैल-जून में इकट्ठा किया जाता है। मूल को औषधीय उद्देश्यार्थ इकट्ठा करने का उत्कृष्ट समय दोपहर 2.00 से 5.00 तक का है।

प्रयोज्य कच्चे माल को कुशलता से खोदकर निकाला जाता है। सुखाने से पहले मूल तथा प्रकंद को काटा जाता है। उसके बाद पौधे को अच्छी तरह सुखाया जाता है। इससे निर्मित औषधीय कच्चे माल को 1-3 साल तक संचय किया जाता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

इस पौधे के औषधीय लक्षण का भविष्य विचारने योग्य है।

रासायनिक संघटन :- इस पौधे के रासायनिक संघटन का अध्ययन अभी तक नहीं किया गया है।

इस पौधे के मूल तथा पत्र में पोलीसेकेराइड्स तथा आधार में म्युरान पोलीसकेराइड्स होते हैं। इस पौधे के मूल में डेक्सट्रीन, पत्र में शर्करा, प्रोटीन, 880 मि०ग्रा० प्रतिशत, विटामिन सी होते हैं।

प्रयोग :- पूर्वीय सितारे अबु अली इब्न सीना की सुप्रसिद्ध पुस्तक कैनन आफ मेडिकल सायंस में इस पौधे का स्त्री रोगों में प्रयोग का वर्णन है। इस पौधे के मूल में स्थित पोलीसेकेराइड्स, ग्लायकोमोनी शोथ में मदद करता है। तरुण मूल तैयार करने के बाद बहुत स्वादिष्ट होते हैं।

कल्पना तथा प्रयोग :- एक बड़ा चम्मच (15 ग्राम) पौधे के मूल को 200 मि०ली० उबलते हुए पानी में मिलायें। छानकर दिन में तीन बार भोजन पूर्व 20-30 मिनट पहले पियें। इस पौधे के 1.0-2.0 ग्राम कंद को पीसा जाता है। दो बड़े चम्मच को 200 मि०ली० उबलते हुए पानी में मिलाकर, 1 चम्मच दिन में तीन बार भोजन पूर्व लें। तैयार क्वाथ में कफनिःसारक तथा मूत्रल गुण हैं। व्रण में पट्टी के रूप में भी इसका प्रयोग होता है।

पौधे के तरुण पत्र से घास-कचौड़ी, तुर्कमेन में ओतलाई गुताप्र बनाई जाती है तथा इसका प्रयोग उदर के संकोच (मांसपेशी) में पट्टी के रूप में प्रयुक्त होता है।

कंद दो बड़े चम्मच को एक कप में लेकर उसमें 200 मि०ली० पानी डालकर 10 मिनट तक हिलायें। तैयार क्वाथ को 3 घण्टे तक रखें। दो बड़े चम्मच भोजन पूर्व पियें। सेवन समय 1-2 महीना है।

एरोदिउम चिचोनिउम
ERODIUM CICONIUM

वर्णन :- विश्व में इस पौधे की 90 प्रजातियां, मध्य एशिया में 20 प्रजातियां तथा तुर्कमेनिस्तान में 7 प्रजातियां हैं।

एरोदिउम चिचोनिउम एक क्षुपीय 20-26 से०मी० ऊँचा, जेरेनियम कुल का पौधा है। कांड शाखायुक्त तथा ऊपर की ओर बढ़ने वाला होता है। पत्र गोंद की तरह चिपचिपे होते हैं। पत्र पक्षवत् विभाजित समस्थित, धार छोटे दन्तयुक्त होती है।

पुष्प छोटे, गुलाबी अथवा लाल है। पुष्प का गुच्छा छाते के आकार का होता है। इस पौधे के पुष्प कम तथा दल संख्या में 5 होते हैं। पुष्प में 10 पुंकेसर होते हैं। फल सूखा तथा बीज स्वयं खुलने वाला होता है।

जैविक लक्षण :- पौधा पर्वतों की तराई में, पर्वत के समीप मैदानी क्षेत्रों में तथा निवासीय क्षेत्रों में उगता है। यह पौधा अल्पजीवी है। एरोदिउम चिचोनिउम अप्रैल-मई में पुष्प देता है तथा अप्रैल-मई में फल लगता है।

विस्तार :- हम इसके पौधे को दक्षिण-पश्चिमी कोपेतदग में, होजागाला, मागत्यंगुलय, मध्य कोपेतदग में, गोकदेरे, बागीर, अश्खाबाद, बाहारलय, पूर्व कोपेतदग में, देयचे, काका, बाध्यझय, सेरहेताबाद, गेलचेश्मे, चाराबील, कोयतेनदाध, हाझझरयाका रज में, तुर्कमेनबाशी, एसेनगुलय,

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

बालकानाबात, दक्षिण-पूर्वीय काराकुम, गाराकेलदे, सारयजयदा, जोरादा, तेजेन एवं मुर्गाब तथा सांस्कृतिक उपनिवेषों में ढूंढ सकते हैं।

प्राकृतिक उपलब्धि :- हमारे देश में यह एक दुर्लभ पौधा है। औषधीय उद्देश्यार्थ इसके भण्डार पर्याप्त है। प्रतिवर्ष हमें इसके 5-10 टन प्राप्त करने का अवसर प्राप्त है।

औषधीय कच्चा माल :- खिले हुए पुष्प के तृण कच्चे माल के रूप में प्रयुक्त होते हैं। अन्य पौधों की तरह इसे सुखाकर ठंडे अंधेरे स्थानों में रखा जाता है, कपड़ों के थैलों में संरक्षित किया जाता है। संरक्षण समय अवधि 1-2 साल की है।

रासायनिक संघटन :- इसमें कोलोफोनी (2.1 प्रतिशत) एसीटाइलकोलीन, केरोटीन (55 मि०ग्रा० प्रतिशत) विटामिन सी (37.5-91.9 मि०ग्रा प्रतिशत) विटामिन के (0.64 मि०ग्रा० प्रतिशत) भस्म (12-14 प्रतिशत) तथा पोटेशियम (44 प्रतिशत) जैसे तत्व होते हैं।

प्रयोग :- इस तरह के पौधों से अनेक व्याधियों की चिकित्सा कर सकते हैं। प्लाइनी (23-29 ई०पू०) के कार्य में हमें इसके चिकित्सकीय लक्षण मिलते हैं। इसका प्रयोग अर्श में निद्राजनक तथा जीवाणुनाशक औषध के रूप में होता है। लोक चिकित्सा में इसका प्रयोग पेशी संकोच, नेत्रशूल, वृक्क, विविध प्रकार के व्रण, सर्पदंश, बाधिर्य तथा यौवनपिडिका में होता है। यह रक्त का संवहन सामान्य करता है। चयापचय के लिये तथा नाडी तंत्र को शांत करता है।

कल्पना तथा प्रयोग :- पौधे का तृण एक चम्मच (5 ग्राम) को एक गिलास (200 मि०ली०) उबले हुए पानी में मिलाकर कुछ देर तक रखें। 15-20 मिनट के पश्चात् छान लें। दो बड़े चम्मच (30 ग्राम) पौधे के तृण को एक गिलास (200 मि०ली०) पानी में मिलाकर 7-8 घण्टे तक रखें। छानकर इस फांट के 3-4 बड़े चम्मच (45-60 ग्राम) दिन में 3-4 बार लें।

पौधे के तृण को बकरी अथवा भेंड की वसा के साथ अच्छी तरह मिलाकर 4 घण्टे रखें। तत्पश्चात् छान लें। तैयार फांट को आधा गिलास प्रतिदिन धीरे धीरे पियें।

एरिजेरोन कनादेन्सिस
ERYGERON CANADENSIS

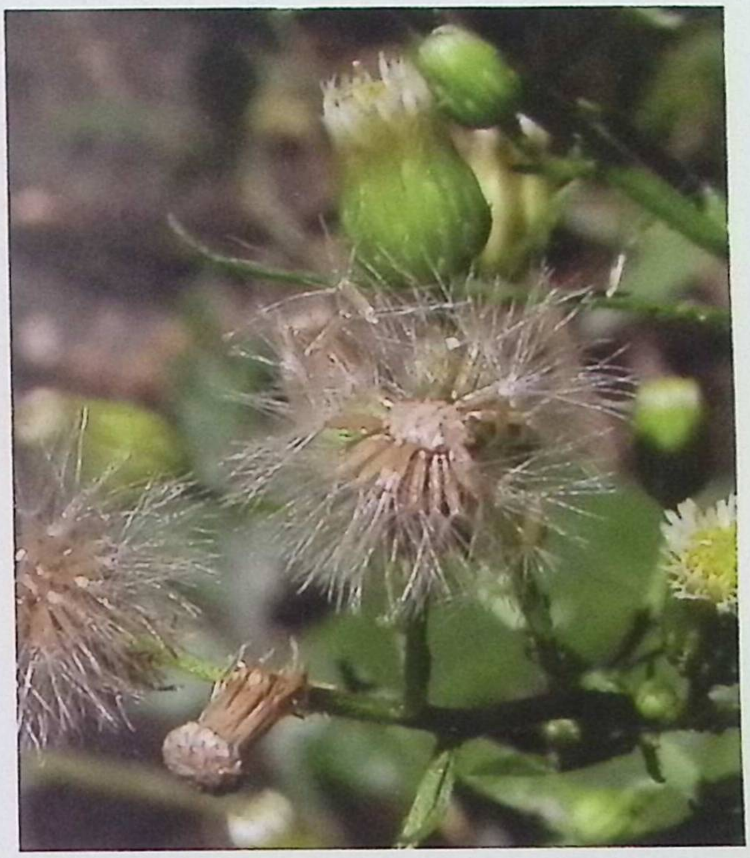

वर्णन :- यह संयुक्त पुष्प से संबंधित कुल का है। कांड सीधा, कठिन, रेशायुक्त होता है। पौधे की ऊँचाई 1 मीटर तक होती है। पत्र दायीं तरफ एक रेखा में स्थित होते हैं। पत्र की धारा छेदयुक्त होती है। पुष्प एक टोकरी में होते हैं। पुष्प के दल श्वेत, छोटी जिह्वा की तरह पतले, लेकिन मध्य में पीत होते हैं। पौधे में जून-नवम्बर में पुष्प आते हैं। पौधा अपने आप सरलता से प्रजनन करता है। एक पुष्प में 1000 तक बीज हो सकते हैं। बीज हवा, पक्षी तथा कीट द्वारा फैलते हैं। ये सिंचित क्षेत्रों में अच्छी तरह उगता है। पौधा सादा रहता है। हमारे देश में यह काराकुम रेगिस्तान के सिवाय हर स्थान में उगता है।

जैविक लक्षण :- यह अपतृण है। एक वर्ष में 5 से 10 (20) टन कच्चे माल को इकट्ठा कर सकते हैं।

औषधीय कच्चा माल :- पुष्प कच्चा माल है। इसको जुलाई से नवम्बर तक इकट्ठा किया जाता है। इसको काटकर सुखाया जाता है। तैयार कच्चे माल को कागज़ तथा कपड़े के थैलों में संचय किया जाता है। संचयन समय अवधि 1-2 साल की है।

रासायनिक संघटन :- पौधे में डी-लीमुनेन डायपेन्टेन, डी-ए-टर्पनीओल तथा उत्पत् तेल होते हैं। साथ ही इसमें टेमिन, कोलीन तथा फ्लेवोनोइड्स भी होते हैं।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

प्रयोग :- यह स्त्रिओं में रजोनिवृत्ति के दरम्यान, सकष्ट आर्तव प्रवृति में तथा यकृत्, आंत्र, नासा, दंत, गर्भाशय से होने वाले रक्तस्राव में तथा वृक्काश्मरी में प्रयुक्त होता है। संक्रामक व्याधियों में इसका प्रयोग होता है। पत्र से निर्मित क्वाथ केश के लिये मलहम के रूप में प्रयुक्त होता है, केशमूल मजबूत बनते हैं तथा केश की वृद्धि होती है।

कल्पना तथा प्रयोग :- 200 मि०ली० पानी तथा एक चम्मच पौधे को 15 मिनट तक रखें। दो चम्मच दिन में 5-6 बार लें।

पौधे का चूर्ण 150 ग्राम को 2 लीटर गर्म पानी में मिलाकर 2 घण्टे तक रखें। इस फांट से शिरः स्नान करें। तीन महीने तक प्रति सप्ताह इस फांट का शिरःस्नान करें।

एरिंजिउम काउकसिकुम
ERYNGIUM CAUCASICUM

वर्णन :- यह पौधा एरिंजिउम काउकसिकुम कुल का है। कांड अनावृत, गोल तथा गुलाबी होता है। मूल सीधा तथा गहरा उगता है। यह 0.5-1.0 से०मी० ऊँचा, 40-60 से०मी० ऊँचा, कांड सीधा उगता है। मुख्य भाग मज़बूत तथा वृंत वाला कुंठित तथा तीन में विभाजित होते हैं। कांड पर पत्र अवृंत, कंघी की तरह दन्तुर तथा कुंठिताग्र होते हैं। इसके पुष्प शिखर के ऊपर इकट्ठे होते हैं तथा पुष्पों का समूह एक जटिल छत्रक बनाता है। पुष्प के पत्र श्वेत, अवनत होते हैं। फल अण्डाकार होता है। पौधे में मार्च-जून तक पुष्प आते हैं तथा जुलाई-सितम्बर में फल आते हैं।

जैविक लक्षण :- पौधा अपने जीवन में एक बार बीज देता है। यह समुद्र तल से 400-1200 मीटर की ऊँचाई पर उगता है। यह तराई में तथा दूर के स्थानों में उग सकता है। अपतृण के रूप में खेतों में, मैदानों में उगाने के लिये, शुष्क-कृषि में तथा मार्ग के अगल-बगल में प्रयोग करते हैं।

विस्तार :- पौधा मध्य कोपेतदग में, गोकदेरे, रोबेरगोव, बागीर, होवदान, गोर्माप, आर्चाबील, दक्षिण-पश्चिम कोपेतदग में, होजागाला, एयदेरे, योलदेरे की घाटीयां, कोनेगुम्मेच, गारावुल, कोयतेनदाग में, कोइतेन गांव तथा होजापीलाता, बाध्यझ में, मुरगाब घाटीयां, बोलशोइ बालखान तथ कुरेनदाग में उगता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

प्राकृतिक उपलब्धि :- यह पौधा दुर्लभ पौधा है। औषधीय उद्देश्यार्थ इसके भण्डार पर्याप्त है। प्रतिवर्ष 10-15 टन पौधे को इकट्ठा करना शक्य है।

प्रयोज्य कच्चा माल :- एरिंजिउम काउकसिकुम के इकट्ठे किये हुए तथा सुखाये हुए मूल साधारण रूप से औषधीय कच्चे माल के रूप में प्रयुक्त होते हैं। पौधे के मूल जून-जुलाई में खोदकर निकाले जाते हैं। हर मीटर वर्गक्षेत्र में 3-4 मूल रहने चाहिये। मूल को साफ करके टुकड़े करिए। इनको विशिष्ट शोषक में (तापमान 45-50 डिग्री से० से ज्यादा नहीं होना चाहिये) अथवा छप्पर के नीचे, हवादार कमरे में सुखाना चाहिये। इसके नीचे कागज़ रखें। बीच-बीच में मूल को पलटते रहिये। तैयार उत्पाद को कागज़ अथवा कपड़े के थैलों में रखना चाहिये। इसको 3-4 साल तक रख सकते हैं।

कभी-कभी एरिंजिउम काउकसिकुम के हरे हिस्से औषध के रूप में प्रयुक्त होते हैं। इस परिस्थिति में परीक्षण आवश्यक है।

रासायनिक संघटन :- पौधे के रासायनिक संघटन का अभी तक पूरी तरह अध्ययन नहीं हुआ है। सेपोनीन्स कुछ उत्पत् तेल, टेनीन, ओर्गेनिक एसीड्स तथा अन्य तत्व पौधे के मूल में पाये जाते हैं।

प्रयोग :- राष्ट्रीय चिकित्सा तथा आहार में एरीन्गीझम कोकेसीकम का प्रयोग जब पौरुष ग्रन्थि की वृद्धि से सकष्ट मूत्रप्रवृत्ति होती है तब मूत्रल के रूप में होता है। इसको कुक्कुर कास में भी प्रयुक्त किया जाता है। सर्वप्रथम तो इस औषध का मुख्य प्रयोग काम दौर्बल्य में काम ग्रंथिओं को कार्यशील बनाने के लिये किया जाता है।

तुर्कमेन राष्ट्रीय चिकित्सा में पौधे के मूल तथा आहार रुप में प्रयोग स्त्री तथा पुरुष बंध्यत्व में तथा कामदौर्बल्य में किया जाता है। औषधीय क्वाथ, सार तथा औषधि का अस्वस्थता में प्रयोग किया जाता है।

कल्पना तथा प्रयोग :- एरिंजिउम काउकसिकुम के पीसे हुए मूल एक बड़ा चम्मच में 2.5 कप (500 मि०ली०) उबला हुआ पानी डालकर एक तामचीनी पात्र में 10 मिनट के लिये धीमी आंच पर उबालें। ठंडा होने के बाद कपड़े से छान लें। प्रतिदिन 1 कप (200 ग्राम) भोजन से पूर्व लें। एक महिने के लिये इसका नियमित सेवन करें। तत्पश्चात् 10 दिन के लिये बंद करें, बाद में फिर से शुरू करें।

पौधे के पत्र दो बड़े चम्मच (30 ग्राम) को 2 गिलास (400 मि०ली) उबलते हुए पानी में डालकर 10-15 मिनट तक धीमी आंच पर उबालें। तत्पश्चात् कपड़े से छान लें। इस औषध को गुनगुना 1 कप दिन में तीन बार भोजन से पूर्व लें।

पौधे के नये मूल को कुचलकर कपड़े से छान लें। प्रतिदिन इसका एक चम्मच (5 ग्राम) भोजन से पूर्व सेवन करें।

एरीनीअम कोकेसीकम के साफ किये हुए मूल के छोटे टुकड़े 2 बड़े चम्मच को 1 लीटर दूध में मिलाकर धीमी आंच पर गाढ़ा होने तक उबालें। लगातार हिलाते रहे। प्रतिदिन इस औषध को भोजन पूर्व 1 छोटा चम्मच लें। इस औषध का प्रयोग मुख्यत: वंध्यत्व तथा काम दौर्बल्यता में होता है। एक महिने तक प्रयोग करना चाहिये। अगर इसको पुनरावर्तन करने की आवश्यकता हो तो 15 दिन के बाद फिर से शुरू कर सकते हैं।

एरिंजिउम काउकसिकुम

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

एउफ्रासिआ पेक्तिनाता
EUPHRASIA PECTINATA

वर्णन :- यह वार्षिकी पौधा है। यह 10-20 से०मी० ऊँचा होता है। कांड पतला, शाखायुक्त, कांड की सतह रोमाच्छादित होती है। अधोपत्र अव्यवस्थित रूप में उगते हैं, लेकिन ऊर्ध्व पत्र एक रेखा में उगते हैं। पत्र कांड से उगते हैं (ये अवृन्त होते हैं)। पत्र अण्डाकार, 7-12 से०मी० लम्बे, 4-10 से०मी० चौड़े तथा धार पर तीक्ष्ण कंटक होते हैं। पत्र पर 4-7 कंटक होते हैं। पुष्प छोटे तथा एक के ऊपर एक स्थित होते हैं। वर्ण श्वेत अथवा दूधिया होता है। फल में बहुत बीज होते हैं। इसको मई-अगस्त में पुष्प आते हैं।

जैविक लक्षण :- यह मध्य कोपेतग में समुद्र तल से 1800-2000 मीटर की ऊँचाई पर उगता है। यह पथरीली जमीन पर मिलता है तथा बीज द्वारा प्रजनन करता है।

विस्तार :- मध्य कोपेतदग हेयराबात, चाएकता, चोपानदाग तथा गारानाक।

प्राकृतिक उपलब्धि :- यह दुर्लभ पौधा नहीं है। यह अपतृण के रूप में उगता है तथा चिकित्सा में प्रयुक्त होता है। जब पुष्प लगते हैं (मई-जून) तब पौधे को इकट्ठा किया जाता है। इसको सूखे अंधेरे स्थान पर सुखाया जाता है।

प्रयोज्य कच्चा माल :- कच्चे माल को कागज़ अथवा कपड़ों के थैलों में अंधेरे स्थान में संचय किया जाता है। संचयन समय अवधि 2 साल की होती है।

रासायनिक संघटन :- रासायनिक संघटन का अभी तक अध्ययन नहीं हुआ है, लेकिन विविध साहित्य में इसको उस पौधों के संघटन के समान बताया है जिसमें irephoidine ethereal oil gallotatine, ऐल्कलोइड्स स्टीकमोस्टेरोइड्, केफीन बी-सीस्टोस्टेरोल तथा एसीड्स होते हैं।

प्रयोग :- लोकप्रिय चिकित्सा में इसका प्रयोग नेत्राभिष्यन्द, श्वसनलिका शोथ, आमाशय का शोथ, लघु आंत्र का शोथ में होता है। यह पौधा विषैला है। यह आवश्यक है कि इस कल्पना का प्रयोग सावधानी पूर्वक करना चाहिये।

कल्पना तथा प्रयोग :- इस पौधे के 3 बड़े चम्मच को 400 मि०ली० पानी में उबालें। छानकर अभिष्यन्द में नेत्रप्रक्षालन के लिये कोष्ण (गुनगुना) रुप में एक सप्ताह तक प्रयोग करें।

पौधे के पीसे हुए भाग 3 बड़े चम्मच को 100 ग्राम बकरे अथवा सूअर की वसा में मिलायें। इस कल्क को नेत्रपक्ष्म पर लगायें। थोड़ी देर तक इन्तज़ार करें फिर थोड़े पानी से धोयें।

चाकू के अग्र भाग में आये उतना पौधा लेकर 200 मि०ली० पानी में मिलाकर धीमी आंच पर 20-30 मिनट तक उबालें। भोजन से पूर्व दिन में तीन बार इस क्वाथ का सेवन करें।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

फ़ेरूला बाद्राकेमा
FERULA BADRAKEMA

वर्णन :- फ़ेरुला बाद्राकेमा उम्बेलीफेरी कुल का बड़ा 120-150 से॰मी॰ ऊँचा पौधा है।

यह औषधीय, रालीय, देईकेरस, मसाला युक्त, मधु एवं स्टार्च उत्पन्न करने वाला, चारा तथा तृणीय पौधा है। इसके तुर्कमेन नाम चोमुच, पोर्सीकामाक है। जेंशिद भाषा (अफगानिस्तान) में शब्द बाद्रोकोमा का अर्थ रिक्त अथवा हलका होता है। 1990 से 1998 तक फ़ेरुला बाद्राकेमा के जीव आकृति विज्ञान तथा मूल की आंतरिक रचना का अध्ययन किया गया।

मूल दण्ड या कंद-जैसा, 5-8 से॰मी॰ व्यास वाला 20-40 से॰मी॰ लम्बा तथा जमीन में 5-30 से॰मी॰ गहरा होता है। मुख्य मूल से आठ से नौ पार्श्व मूल 0.2-0.5 से॰मी॰ होते हैं। पौधे की भूमिगत हिस्सों की राशि, भूमि से ऊपरी हिस्सों की राशि से 2-3 गुना ज्यादा है।

दण्ड-जैसा मूल बहुस्तरीय मृदूतक से आच्छादित होता है। सूक्ष्म मूलायम एवं लचीला कोष मूल की कुल राशि का 3.7 प्रतिशत होता है। मृदुतक कोष के नीचे एक बड़ा आवरण होता है। मृदुतक कोष दृढ़तापूर्वक स्टार्च से भरे हुए होते हैं। पुष्पोत्पादक अंकुर 130-160 से॰मी॰ ऊँचे होते हैं। कांड शक्तिशाली, मोटा, सुषिर तथा श्वेताभ होता है। पुष्पान्वित होने के समय नींबू जैसा पीला पौधा जंगल जैसा दिखता है। फ़ेरुला बाद्राकेमा अप्रैल के उत्तरार्ध में पुष्प देता है तथा अप्रैल के आखिर से जुलाई के पूर्वार्ध तक फल देता है।

जैविक लक्षण :- फ़ेरुला बाद्राकेमा समुद्र तल से 800-1200 मीटर की ऊँचाई पर उगता है। प्राणधारक चक्र 4 साल का है। इस समय के मध्य पौधा केवल एक बार पत्र देता है। (बाध्यझ में इस काल को चकिरस्कचित्र कहते हैं)। मुख्यत: इसकी पुष्पोत्पादक शाखायें 8 साल में एक बार खिलती हैं। एक नमूने में एक गुच्छे पर इनकी संख्या कभी-कभी 5-8 होती है।

पूर्ण प्रजनन 5-170 पर होता है। एक पौधा प्रतिवर्ष 4.285 ग्राम बीज देता है।

रासायनिक संघटन :- फ़ेरुला बाद्राकेमा के पत्र में प्रोटीन (30 प्रतिशत), वसा (7 प्रतिशत), भस्म के कुछ अंश (14.5 प्रतिशत), अनत्रल सार तत्व (30 प्रतिशत), कुछ सेल्युलोझ (लगभग 20 प्रतिशत) होते हैं। पौधे के कांड में राल, क्षीरिका रस तथा इथर होते हैं।

पौधे के मूल राल से समृद्ध होने के लिये जाने जाते हैं। इसमें गालबानुम एसीड़ भी होता है। राल तथा स्टार्च के अलावा मूल में अन्य सेपोनीन्स भी पाये जाते हैं। ये पानी में पूरी तरह घुल जाते हैं तथा हिलाने पर इसमें फेन उत्पन्न होता है।

फल अपने रासायनिक संघटन के लिये कीमती हैं। उनमें वसा 23 प्रतिशत तक तथा प्रोटीन 20 प्रतिशत होते हैं।

विस्तार :- फ़ेरुला बाद्राकेमा बाध्यड में, सेरहेताबाद, बेरदीगयलय, चेमेनाबात, कुलेलीदुझ, पुलीहानुम, गारादेपे, इस्लीमचेश्मे, ताझेगुइ, जुमाजयक, कयारीझ, बाध्यझ राज्य अभयारण्य के अंदर, गयझयलजार, एलीबीर, येरोयलांडुस, केपेले, गुनरेली, बृहन् तथा लघु स्पेर, आउदाना, गाराबील, तागताबाझार एवं गालायमापे ये बहुत विस्तृत रूप में फैला हुआ है।

प्राकृतिक उपलब्धि :- औषधीय उद्देश्यार्थ प्रयोग के लिये फ़ेरुला बाद्राकेमा के भण्डार पर्याप्त है। यह पौधा तुर्कमेनिस्तान के दुर्लभ क्षुपीय पौधों में से नहीं है। सुविख्यात शोधकर्ता जे. लीन्चेवस्कीय, जिनको बाध्यझ के मरु प्रदेशीय पौधे के बारे में अधिक ज्ञान है के आधार के फ़ेरुला बाद्राकेमा जहां उगता है वहां वह 180 हजार हेक्टर घेरता है। एन. नेचायेवा के आधार के अनुसार एक हेक्टर में 4000 पौधे तक उगते हैं, जिसमें 80 प्रतिशत वृद्धिशील तथा 20 प्रतिशत जननशील अवस्था में होते हैं।

1990 से 1998 तक अप्रैल-मई में बाध्यड में फ़ेरुला बाद्राकेमा के फैलाव पर संशोधन किया गया और प्रति हेक्टर

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

11900 नमूने पंजीकृत किये गये (5 प्रतिशत जननशील तथा 95 प्रतिशत वृद्धिशील अवस्था में)। यह पौधे के समृद्ध भण्डार होना साबित करता है।

वार्षिक उत्पाद 3-5 टन हैं एक पौधे के मूल से मई में 5 दिन के लिये 700 ग्राम राल प्राप्त की जाती है कांड से 30-40 ग्राम क्षीर प्राप्त किया जाता है।

जून में क्षीर की मात्रा 70 ग्राम तक होती है। इस डाटा को ध्यान में रखते हुए पौधे को तुर्कमेनिस्तान का औद्योगिकी धन माना जाता है।

औषधीय कच्चा माल :- फ़ेरुला बाद्राकेमा के मूल तथा कभी-कभी वसंत (मार्च-अप्रैल) में पौधे से निकाले गये राल तथा क्षीर औषध बनाने के लिये कच्चे माल के रूप में प्राप्त करवाते हैं।

कई औषधीय तत्व पौधे के मूल में इकट्ठा होते हैं, लेकिन तरुण पेड़ों में नहीं।

वसंत में मूल को कुदाल से खोदा जाता है, पश्चात् उसको साफ करके पानी से धोया जाता है। उसके बाद मूल पर तेज चाकू अथवा सूई से छेद किये जाते हैं। बाद में उसको 1-2 दिन तक सूर्यप्रकाश में रखे जाते हैं। मूल में से कुछ द्रव सार निकलता है। द्रव को सुखाने से पहले इकट्ठा किया जाता है तथा कांच पात्र में रखा जाता है।

उत्पाद को 0.1 प्रतिशत जलीय द्रव के लिये प्रयुक्त किया जाता है। पुष्पयुक्त (गुच्छावाली) शाखा में से लेक्टीफेरस क्षीर जैसा रस निकलता है। उसी पौधों का प्रयोग किया जाता है जो पुष्प तथा फल लगने के समय अधिक क्षीर उत्पन्न करते हैं। राल में सभी उपयोगी तत्व होते हैं। कांड के रस को दिन के उत्तरार्ध में चाकू अथवा सूई से काटकर निकाला जाता है। दूसरे दिन वहां राल दिखता है। तैयार राल को कसकर ढ़क्कन लगाये हुए कांच पात्र में रखा जाता है। समाप्ति अवधि 3-5 साल की है।

इसके अलावा क्षत शाखा तथा पत्र भी क्षीरीय पदार्थ उत्पन्न करते हैं। इनका प्रयोग भी औषध बनाने के लिये किया जाता है।

प्रयोग :- प्राचीन काल से ही फ़ेरुला बाद्राकेमा का प्रयोग तुर्कमेन चिकित्सा में होता रहा है। स्थानीय लोग कांड से राल तथा क्षीर निकालते है तथा पौधे के मूल का प्रयोग अन्नवह संस्थान तथा नाड़ीतंत्र की व्याधियों के लिये करते हैं। गालबानुम अम्ल जो पौधे का संयोजन पदार्थ है, एक जीवाणुनाशक औषध है।

सेरहेताबाद, तागताबाझार तथा सरास एलाप्स में तुर्कमेन लोक चिकित्सा में औषधीय राल तथा क्षीर का प्रयोग काम दौर्बल्य के तीव्र अवस्था में, वृक्क व्याधियाँ, अतिसार तथा विषमयता में होता है।

एम. आई, शेलयद, एक सुप्रसिद्ध वैज्ञानिक (1951) ने अपनी पुस्तक वाइल्ड यूज़फ़ुल प्लांट्स ऑफ तुर्कमेन एस.एस.आर. में तुर्कमेनिस्तान के उपयोगी पौधों का वर्णन किया है। उनका मानना था कि फ़ेरुला बाद्राकेमा औषधीय इथरिअल तेलजनक, राल जनक तथा गोंदजनक पौधा है।

बृहत् ग्रेट सिल्क रोड भूमध्य से बाध्यझ से गुजरता हुआ चीन, इरान तथा मध्य एशिया तक शुरू हुआ। इस कारण प्रवासी तथा व्यापारियों ने इस पौधे को पूरे विश्व में फैलाया।

पड़ोसी राष्ट्र ईरान तथा अफ्गानिस्तान में फ़ेरुला बाद्राकेमा का प्रयोग सुगंधित मसाले के रूप में भूना हुआ मांस बनाने के लिये होता है। भारत तथा इण्डोनेशिया में सब्जी तथा चावल के व्यंजन में मसाले के रूप में प्रयुक्त होता है।

फ़ेरुला बाद्राकेमा एक अच्छा मधुजनक पौधा है। पत्र का प्रयोग हरा चारा के रूप में होता है। इसका उत्पाद 1-5 सी प्रति हैक्टर तक होता है।

पुष्प गुच्छों का राल तथा मूल मुख गुहा के व्रणों पर लगाने के लिये, ऊर्ध्व श्वसन संस्थान की गले के साथ जुड़ी हुई व्याधियों यथा स्वरपेटी, कर्णव्याधियाँ (तीव्र, पुराण, पूयजनक तथा अपूयजनक कर्ण शोथ) में प्रयुक्त होते हैं।

राल तथा क्षीरीय द्रव औषधीय कच्चे माल हैं। फ़ेरुला बाद्राकेमा देश में उद्योग में प्रयुक्त होने वाले पौधों में से है।

वर्तमान समय में चिकित्सा शास्त्र ने राल को व्याधि क्षमत्व वर्धक, प्रतिश्याय तथा विष के लिये उपयुक्त सिद्ध किया है।

कल्पना तथा प्रयोग :- प्राकृतिक राल मुखगुहा, गले, अन्ननलिका तथा आमाशय की व्याधियों में प्रयुक्त होता है। राल का प्रयोग दिन में तीन बार भोजन से पूर्व किया जाता है। इसकी मात्रा गेहूं के एक दाने से ज्यादा नहीं होनी चाहिये (वयस्को के लिये 100 मि०ली०)

एक बड़ा चम्मच (15 ग्राम) राल के ऊपर आधा गिलास (100 मि०ली०) उबला हुआ पानी डालें। ठंडा होने दें। अच्छी तरह मिलायें। प्रशामक औषध तत्काल प्रयोग के लिये तैयार है। एक चम्मच (5 ग्राम) दिन में 3-4 बार लें। यह काम दौर्बल्य के लिये असरकारक है। औषध सेवन समय अवधि 1-2 महीने की है।

0.5-1.0 ग्राम चूर्ण को दिन में 2-3 बार भोजन से पूर्व लिया जाता है। इसका प्रयोग तन्त्रिका विकृति जन्य व्याधियों में होता है।

राल को जीभ के नीचे रखा जाता है।

लाला स्राव राल के साथ मिलकर पूरी आस्यगुहा को आच्छादित करती है। तत्पश्चात् राल को निगल लिया जाता है। छोटे बच्चों के लिये रालका 0.1 प्रतिशत द्रव (10-20ml) प्रयुक्त होता है।

कर्णशूल के लिये राल का 0.01 प्रतिशत द्रव की तीन बूंद प्रयुक्त होती है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

फेरुला गुम्मोसा
FERULA GUMMOSA

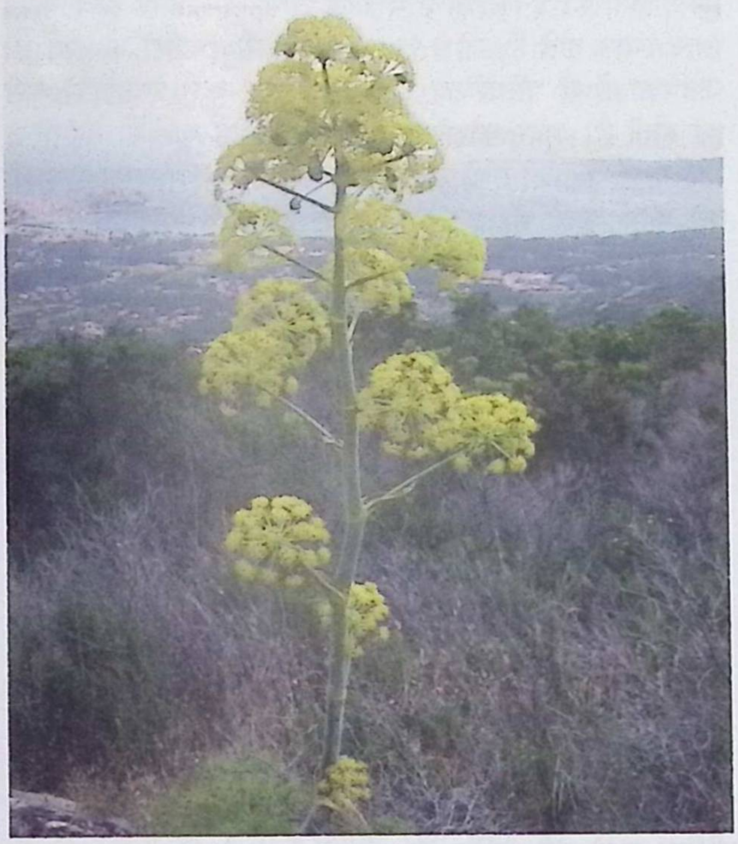

वर्णन :-फेरुला गुम्मोसा एक सुप्रसिद्ध औषधीय पौधा है। यह उम्बेलीफेरी कुल का बहुवर्षीय, क्षुपीय, 100-200 से०मी० ऊँचा पौधा है। कांड हलका हरा, नलिकाकार तथा शिखर में पतले, लम्बे-अण्डाकार गुच्छ में विभाजीत होता है। पत्र भूरे-रोमश, मृदु शीघ्र शिथिल होने वाले मूल से जुड़े हुए बहुविध पक्षवत् अनेक सूक्ष्म स्थलों में रहते हैं। छत्रक अलग होते हैं। मध्य छत्रक अवृंत होते हैं जबकि दो पार्श्व छत्रक अभिमूख होते हैं। छत्रक 10-20 की संख्या में होते हैं। फेरुला गुम्मोसा को मई-जून में पुष्प तथा फल आते हैं।

जैविक लक्षण :- फेरुला गुम्मोसा समुद्र तल से 800-1600 मीटर की ऊँचाई पर उगता है। एक पेड़ 80-100 ग्राम तक बीज उत्पन्न करता है। एक हजार बीजों का वजन 8-10 ग्राम होता है। पौधा 7-8 साल तक जीता है। इस समय के दरम्यान केवल पत्र निकलते हैं। जीवंतचक्र लम्बा नहीं है। जीवन के लिये आवश्यक सभी पदार्थ कंदवत् साधन प्रकंद में संचित होते हैं।

विस्तार :- फेरुला गुम्मोसा , कुरेनदाग में, दोयोन, दक्षिण-पश्चिमी कोपेतदग में, देश्त, सायवान, आमारात, एयदेरे, गोचनेनीर, हातयन्गाला आत्यनदागदान, सुंत, मध्य कोपेतदग में, आर्वाझ, यपयगाला, गारायलचय, गोकगादीक, गोशार्चा, बरकाव, आकगाया, यावलाक, नीयाझम, केसेकुमे, चाज, आकसुव, नोटूर, गारावुल, बहारदेन एत्राप, मुसुनेव, सुलुकल, दुशाक, आसयलमा, चायेक, होवदान, पूर्वीय कोपेतदग में, देगरयजाय में विस्तृत रूप में फैला हुआ है। फेरुला गुम्मोसा के उगने का क्षेत्र 20 हैक्टर है।

प्राकृतिक उपलब्धि :- फेरुला गुम्मोसा तुर्कमेनिस्तान का दुर्लभ पौधा नहीं है। औषधीय उद्देश्यार्थ प्रयोग करने के लिये भण्डार पर्याप्त है। वार्षिक उपज 50-70 टन की है।

प्रयोज्य कच्चा माल :- राल प्राप्त करने के लिये फेरुला गुम्मोसा के मूल तथा कांड प्रयुक्त होते हैं।

वसंत में बहुत सावधानी पूर्वक कुदाल से खोदकर मूल को इकट्ठे किये जाते हैं। मूल को साफकर पानी से धोये जाते हैं। साफ किये मूल को 1-2 से०मी० लम्बे टुकड़ों में काटकर "केतेनी" (तुर्कमेन हस्तशालित उनी रग) पर रखे जाते हैं। मूल अंदर सुखाये जा सकते हैं लेकिन इसके पहले इनको रस्सी में पिरोया जाता है। तैयार कच्चे माल को कांच पात्र में अथवा कागज़ के थैलों में पैक किया जाता है। समाप्ति अवधि 3-5 साल की है।

रासायनिक संघटन :- फेरुला गुम्मोसा के हरे पत्रों में बहुत प्रोटीन, कम वसा, भस्म के कुछ अंश, सोपोनीन्स, सेल्युलोझ होते हैं। मूल तथा कांड में भी राल तथा इथरिअल तेल होते हैं।

पौधे के मूल राल की समृद्धि के लिये जाने जाते हैं। गेलबेनम एसीड़ मूल में एक संयोजन है।

प्रयोग :- तुर्कमेन लोक चिकित्सा (बाहार्ली तथा गोकदेपे एत्रापुस) में फेरुला गुम्मोसा के मूल ऊर्ध्व श्वसनवह संस्थान ने श्लेष्मज व्याधियाँ तथा न्युमोनिया (श्वसनक ज्वर) में प्रयुक्त होते है।

भारतीय चिकित्सा में पौधे का राल, जिसको "गालबानुम" कहते हैं का प्रयोग पथ्यकर के रूप में श्वासनलिका शोथ में कफनि:सारक के रूप में, हिस्टेरिआ, पक्षाघात, आमाशय शोथ, अनार्तव, चर्म व्याधि तथा गठिया में होता है।

कल्पना तथा प्रयोग :- फेरुला गुम्मोसा के पीसे हुए मूल 1 बड़ा चम्मच (15 ग्राम) 1-2 लहसुन की कली, दो बड़े चम्मच (30 ग्राम) अजा तथा भेड़ की वसा मिलायें। मिश्रण को तलें। बच्चे के शरीर पर इसका मिश्रण का लेप करें तथा दोपहर तथा शाम को इससे अभ्यंग करें। माचीस की तिल्ली के शीर्ष भाग के बराबर मूल तथा कांड का राल दिन में तीन बार भोजन से पूर्व लें। यह तमकश्वास, हिस्टेरिआ, पक्षाघात तथा आरोग्यावस्था को सुधारने के लिये असरकारक है।

एक चम्मच (5 ग्राम) फेरुला गुम्मोसा राल को 50 मि०ली० पानी में घुलायें। इस फांट का प्रयोग चर्म व्याधि में होता है। यह गठिया के लिये भी प्रभावी है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

ओपोदा GOPODA

फेरुला गुम्मोसा
FERULA GUMMOSA

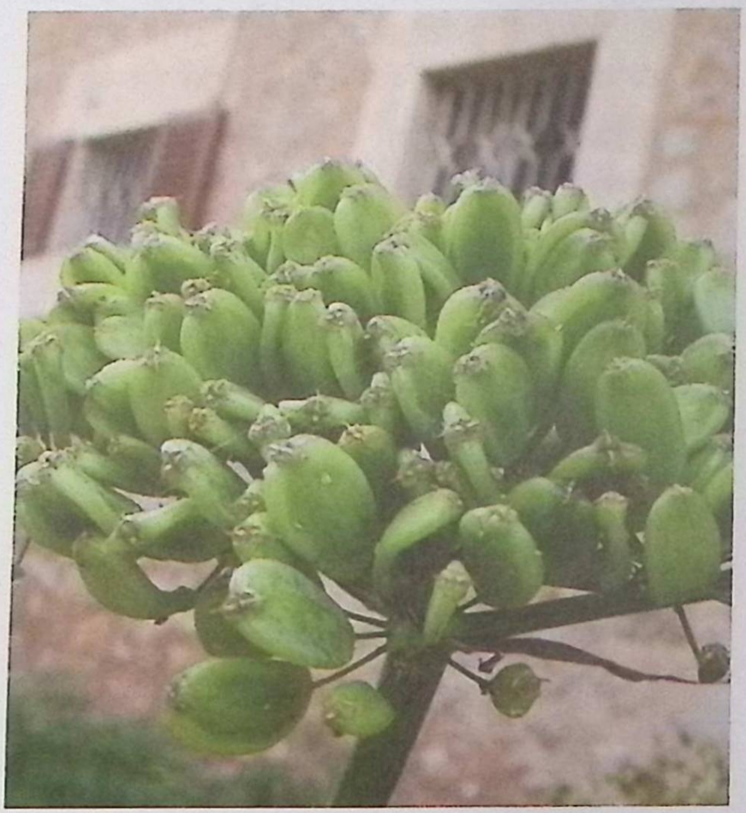

वर्णन :- यह एक असाधारण पौधा है। पौधे के कप हिरन को पानी पीने के लिये बनते है। ये कहा जाता है कि हिरन इस कप से बारिश का पानी पीते है और इसलिये इसे केईकोकारा (हिरन के लिये कप) कहते हैं। यह औषधीय तथा आहारीय पौधा है जिसमें डामर तथा उड़नशील तेल होते हैं तथा इसकी मनोहर सुगंध होती है।

फ़ेरुला ओपोदा सायवान कुल का है। यह 130-150 (200) से०मी० लम्बा, बहुवार्षिकी पौधों का प्रतिनिधि है। पौधे के ऊर्ध्व हिस्से का कद लगभग 95-100 से०मी० होता है। पतली डंठल 2-3 से०मी० की गोलाकार, एक मूल से कई डंठल निकलती है। पौधे का प्रथम हिस्सा (डंठल) 6-10 से०मी० लगभग 3-4 से०मी० मोटा होता है। गत वर्ष के पत्र अभी भी बने रहते हैं। यह चिह्न साबित करता है कि यह बहुवर्षिय पौधा है।

इसका मुख्य मूल मोटा, हलके भूरे वर्ण का कंद के रूप में 7 से०मी० चौड़ा होता है। मूल की लम्बाई 50-60 से०मी० होती है। मुख्य मूल अपनी पार्श्व शाखाओं के साथ 60 से०मी० गहरा तथा 3 से०मी० व्यास का होता है। ये 145-180 से०मी० गहरे जाते हैं।

मूल के मुख्य हिस्से में पार्श्व शाखायें होती हैं। पौधे की सामान्य ऊँचाई 350 से०मी० होती है। एक ताजा मूल 4-5 किलोग्राम वजन का होता है।

रूस्तामोव, सुहोवा तथा अकमयरादोव ने प्रथम फ़ेरुला ओपोदा के मूल की आंतरिक संरचना का अध्ययन किया। पौधे के मूल का मोटा हिस्सा पौधे की कुल राशि का 7 प्रतिशत है तथा वह अनेक मोटे स्तर (लगभग 20 स्तर) से आच्छादित होता है। स्तर सेल्युलोझ का बना हुआ है, जो पतली parenchyma मृदूतक दीवार वाले स्टार्च बूंदों से भरा हुआ होता है। इनके बीच में गोल तथा लम्बाकार स्राव करने वाले स्थान होते हैं, जो 165-220 मी०मी० व्यास के होते हैं। कोषिकाओं से परिवेष्टिव बूंदे धूंसर, तेल जैसे पदार्थ से भरी हुई होती है। अंदर कोलोफोनी होता है। मोटे मूल के आंतरिक हिस्सों में वल्कल तथा रसवाहिनी होते हैं जो मध्यस्थ प्रणाली का काम करते हैं। इनके द्वितीयक अवयव ज्यादा नहीं होते (केवल 62 प्रतिशत)। इसमें अनेक मोटी तथा पतली वाहिनियाँ तथा मृदूतक होते हैं जो लकड़ी तथा चौड़े दंड में बदल जाते हैं। किरणीय प्रकाश क्षेत्र के कुछ हिस्सों में बहुत विस्तृत रूप से फैला हुआ होता है। मूल की तरह स्रावक बूंद होता है। सेल्युलोझ का पतला हिस्सा उसी तरह के स्टार्च बूंदों से भरा हुआ होता है जब वे परतों में होते हैं। इसलिये स्टार्च का महत्वपूर्ण शोषण स्रावक बूंदों का स्थान स्पष्ट करते हैं। मुख्य मूल में अधिकतम अतिरिक्त पदार्थ होता है।

उसके डंठल के शिखर पर पौधे के हलके पीत पुष्प होते हैं, ये इकट्ठे होकर छाते जैसे दिखते है। इसको अप्रैल के उत्तरार्ध में पुष्प तथा मई-जून में फल आते हैं।

जैविक लक्षण :- फ़ेरुला ओपोदा हमारे देश में समुद्र तल से 300-1600 मीटर की ऊँचाई पर उगता है। इसकी जीवित रहने की शक्ति अच्छी है। इसको विशेष देखभाल की जरूरत नहीं है। यह विशेषत: मरुभूमि में अच्छी तरह उगता है। इसका प्रजनन बीज द्वारा होता है। इसका जीवनकाल 7-8 प्रतिशत ज्यादा है। मूल का वजन सामान्यत: 150-17 ग्राम होता है।

ऋतु की परिस्थिति के अनुसार एक बड़ा पौधा 50-60 अथवा 40-41 बीज तथा छोटा पौधा 28-30 बीज देता है। सामान्यत: फ़ेरुला ओपोदा के 100 बीजों का वजन 16.4 ग्राम होता है। इसके बीज केवल 30-40 प्रतिशत अंकुरित होते हैं। बीज जब पूरी तरह पक जाते हैं तभी उन्हें इकट्ठा किया जाना चाहिये।

विस्तार :- यह बहुत बार मलय बालखन में, कोपेतदग के दक्षिण-पश्चिमी भाग में, एयदेरे, मध्य कोपेतदग, सुलुकली गोकदेरे, आर्चाबील, देशीत, नोहूद नेवतोनोवसक, देगीरमेनली, पूर्व कोपेतदग, हारचुन, काका, बाध्यझ, चायहुरय, गयझयलजार, एलीबीर, येरोयलान्डुस, आक्राबात, वोरोवेच, केपेल, पुलहातयन, आरकायचेश्मे, होपदान, पचनहानचेयमे, नार्उयवानली, पश्चिम काराकुम, हाझारयाका की मरुभूमि में मिलता है।

प्राकृतिक उपलब्धि :- फ़ेरुला ओपोदा हमारे देश में दुर्लभ पौधा नहीं है। औषधीय उद्देश्यार्थ इसके प्राकृतिक भण्डार पर्याप्त है। हम 25-30 टन्स प्रयोज्य कच्चा माल इकट्ठा कर सकते हैं। केवल एक पौधे में लगभग 450-700 ग्राम नया प्रयोज्य रस होता है। एक हेक्टर क्षेत्र से 1400 किलोग्राम डामर इकट्ठा कर सकते हैं। औद्योगिक दृष्टिकोण से पौधे को उपयोगी माना जा सकता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

प्रयोज्य कच्चा माल :- पौधे का मूल आधारभूत प्रयोज्य कच्चा माल है। छ साल अथवा उससे बड़े मूल चिकित्सा में उपयोगी है। तरुण मूल में कम प्रयोज्य डामर होता है। अगर यह विभाजित होता है अथवा पत्र अनजाने कारणों से फटते हैं तो उसमें क्षीरीय प्रवाही स्रावित होता है। यह बहुत जल्दी सूखकर जम जाता है। यह स्राव राल अथवा कांच जैसा दिखता है। इसको इकट्ठा करके औषध के रूप में प्रयुक्त किया जाता है। वसंत के प्रयोज्य मूल से राल का अंजन पाने के लिये नीचे दी हुई पद्धति अपनायी जाती है- क.) इकट्ठा करने के बाद मिट्टी को धोकर सावधानी पूर्वक साफ करना जरूरी है। उसके बाद तीक्ष्ण वस्तु अथवा कांटे से छेद करके सूर्यप्रकाश में 1-2 दिन रखना जरूरी है। दूध जैसा द्रव राल बनता है और छोटे बूंद हवा में सूख जाते हैं। तदुपरांत ये बूंदे सुविख्यात प्रयोज्य द्रव्य है। इनको इकट्ठा करके कसकर ढक्कन लगाई हुई कांच की बोतल में रखे जाते हैं। इस प्रयोज्य द्रव्य से 0.01 प्रतिशत जलीय प्रवाही तैयार किया जाता है। ख.) मूल को 1.2 से०मी० मोटे टुकड़ों में काटकर एक तामचीनी पात्र में 2-3 लीटर पानी के साथ तब तक उबालें जब तक वह प्रवाही में बदल न जाये। बाद में मूल को निकाल लिया जाता है तथा प्रवाही को गाढ़ा गोंद जैसा बन जाये तब तक उबालते रहते हैं। बाद में उसको कांच बोतल (100-200 मि०ली०) में भरकर सख्त होने तक कमरा सामान्य तापमान पर रखते हैं। इस औषध को अंधेरे, शुष्क स्थान पर 3-5 वर्ष तक रखा जाता है।

रासायनिक संघटन :- रासायनिक लक्षणों के आधार पर प्रयोज्य डामर भिन्न बहुशर्करा (हेकसोझ, पेन्टोझान तथा पोलीयुरोनाइड) से सम्बन्धित है।

प्रयोज्य डामर जैसा क्षीर, गोंद 5.-7.5 प्रतिशत उत्पत् तैल 1.3-1.5 प्रतिशत फ्लेवोनोइड्स 0.8-1.2 प्रतिशत तथा डामर 50-70 प्रतिशत से बना हुआ है।

यह कोमेरीन, अम्बेलीफेरोन (2.3-2.5 प्रतिशत) स्क्यूटर्पेन लेक्टोन्स, तेल, विटामिन्स तथा स्थूल एवं सूक्ष्म तत्व का भी बना होता है।

प्रयोग :- प्राचीन समय से ही पूर्वीय तथा तुर्कमेन लोक चिकित्सा में यह पता है कि डामर में प्रयोज्य तथा पोषक गुण है।

पूर्व के सुप्रसिद्ध वैज्ञानिक अबु अली इब्न सीना ने अपनी पुस्तक कैनन आफ मेडिकल सायंस में डामर के बारे में लिखा है। इन्होंने लिखा है कि यह संधिशूल, सामान्य दुर्बलता तथा मूत्रल रूप में प्रयुक्त होता है।

सेयीत इस्माइल गुर्गेन्ली जिनको दूसरे बुकरात चिकित्सक हिपोक्रटीस का खिताब मिला था, ने अपने कार्य ट्रेज़री आफ खोरेज़्म शाह में लिखा है कि डामर का प्रयोग अपस्मार में होता है।

मध्य युग में हुए पूर्व के संत अबु रायहान बीरूनी ने अपनी पुस्तक फार्माकोग्नोसी इन मेडिसिन में हमारे देश के पौधों के बारे में लिखा है। उसमें फ़ेरुला ओपोदा के मूल तथा इसके प्रयोज्य लक्षण एवं प्रयोग भी शामिल हैं। प्राचीन काल में पूर्व में तथा राष्ट्रीय चिकित्सकों के कार्य के शुरूआती काल में ज़ीजिफोरा औषध के डामर का प्रयोग वैवाहिक दौर्बल्य बंध्यत्व, पांडु, आमाशय के व्रण, कृशता, यकृत् शूल तथा विषघ्न के रूप में होता था।

फेरूला के डामर का प्रयोग चिकित्सा शास्त्र में आन्त्र कृमि के नाश के लिये होता था। ताजेपत्र को कफिर के मिलाकर सिफिलिस (उपदंश) तथा तीव्र अर्बुद की चिकित्सा के लिये प्रयुक्त होता है। वैज्ञानिक तथा लोक चिकित्सा में तुर्कमेन लोग 50 से ज्यादा व्याधियों में इसका प्रयोग करते हैं। व्याधि की चिकित्सा करने की महान शक्ति रखने वाले औषधीय पौधों में यह पौधा प्रथम पांच पौधों में आता है।

औषधीय उद्देश्यार्थ सुम्बुल (Sumbul) तथा मूल के डामर का प्रयोग विविध प्रकार के व्रण, श्लैष्मिक कला दग्ध, आंतरिक अंग, ग्रीवा और स्वरपेटी विकार, गलशुण्डी शोथ इसके उपद्रव, ग्रसनी कला और दग्ध, आमाशय तथा आंत्र शूल (तीव्र उपद्रव, व्रण, दग्धव्रण, परिणामशूल, आक्रामण, गिड़गिड़ाना, अजीर्ण, आमाशयिक विसूचिका रक्ततिसार) आमाशयिक ग्रन्थि उपद्रव, पित्र की शीतलता के लिए कामला, पूतिदोष, विविध चर्म व्याधियों में होता है। स्थानीय लोग (तागताबाझार, सेरहेताबाद, साराहस के) जिजिफोरा कापितातें के डामर का प्रयोग यकृत् शूल, विषघ्न के रूप में, गलशोथ, कंजक्टीवाइटिस, अक्षिपक्ष्म तथा भ्रू के व्रण, नेत्राभिष्यन्द पलकशोथ, वसापायसीय जलोदर कर्णशूल (तीव्र उपद्रव, क्षय तथा सादा कर्णशोथ) leishmaiasis एवं ट्रोफीझम में करते हैं।

वैज्ञानिक चिकित्सा में यह साबित हुआ है कि डामर का प्रयोग वृक्क, ग्रंथियों के कर्म को नियंत्रित करने के लिये, अंत:स्राव (hormones) के नाश में, व्याधि प्रतिरोध शक्ति बढ़ाने के लिये, प्रतिश्याय, विष के प्रतिरोध के रूप में तथा शोथ में होता है।

कल्पना तथा प्रयोग :- कूटे हुए डामर को 80 मि०ली० उबले हुए कोष्ण पानी में डालकर अच्छी तरह मिलायें। तैयार औषध का एक चम्मच दिन में 3-4 बार सेवन करें। यह औषध काम दुर्बलता तथा बंध्यत्व में प्रयोग होता है। इसका प्रयोग 1-2 महीने के लिये होता है। औषध का चूर्ण 0.5-1.0 ग्राम दिन में 2-3 बार भोजन के पश्चात् लें।

मुखगुहा, गला, ग्रसनिका तथा आमाशय की व्याधियों में प्राकृतिक डामर का प्रयोग दिन में तीन बार किया जाता है। इसको बीज के रूप में (वयस्क के लिये 100 मि०ली०) भोजन से पूर्व लिया जाता है।

डामर को जीभ के नीचे रखा जाता है। लाला (saliva) के कारण यह पिघलता है तथा पूरी मुखगुहा में फैल जाता है। बाद में उसे पानी से साफ किया जाता है। जलीय औषध 0.01 प्रतिशत (10-30 मि०ली०) बच्चों के लिये प्रयुक्त होता है।

0.01 प्रतिशत जलीय डामर की बुंद कर्णशूल तथा नेत्रशूल में प्रयुक्त होता है। लीशमेनीआसीस में पूरा स्वस्थ होने तक यादगार के रूप में प्रयोग होता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

फ़ीकुस अफ्गानिस्तानिका
FICUS AFGHANISTANICA

वर्णन :- औषध तथा आहार के लिये फ़ीकुस अफ्गानिस्तानिका सबसे प्राचीनतम पौधों में से एक है। अब यह बहुत कीमती तथा दुर्लभ पौधा है।

फ़ीकुस अफ्गानिस्तानिका मलबेरी कुल का है। यह झाड़ीदार, 2-2.5 (3) मीटर ऊँचा पौधा है। इस पौधे के दो मूल (स्त्री एवं पुरुष) होते हैं। शाखा के स्कन्ध अनावृत्त, चिकना तथा धूंसर होते हैं। शाखायें पीली तथा कम रोम से आच्छादित होती हैं। इसके पत्र गोलाकार तथा हृदय जैसे दिखते हैं, त्रि-अथवा पंच-विभाजित होते हैं। इसका ऊर्ध्व भाग कठिन होता है।

इसके फलक आकार हिस्से तेजधार वाले दो हिस्सों में जुड़े हुए होते हैं। पत्र के कुछ हिस्से कठिन, खुरदार कुंठित तथा मोटे होते हैं। इनकी सूईयाँ ज्यादा लम्बी नहीं होती। इसका मुख्य खण्ड बड़ा तथा अनेक होते हैं। इसके पुष्प बहुल प्ररोही देते हैं। इस पौधे की डंठलें बड़ी होती हैं। पुष्प के समीप दो अथवा तीन खण्ड होते हैं, जो अलग-अलग लम्बाई के होते हैं। खण्ड में धारियां तथा अंत होते हैं।

इसके प्ररोह छोटे (1.0-2.0 से०मी० लम्बे होते है) सुईयाँ मध्य में तथा लम्बी (1.0-2.0 से०मी०) तथा पत्रों के प्ररोह नीचे स्थित होता है। वह गोल-चपटा तथा पतले नाशपाती जैसा होता है। इसको पीला, जैतून-गुलाबी बैंगनी-गुलाबी, लाल एवं धूसर, नीला तथा कृष्णाभ नीला वर्ण होता है। प्ररोह श्वेत-गुलाबी लाल तथा अंदर में चमकीला गुलाबी होते हैं। स्वाद अम्ल मधुर होता है। पौधे को अप्रैल-मई में पुष्प आते हैं तथा अगस्त-सितम्बर में फल लगते हैं।

जैविक लक्षण :- हमारे देश में यह समुद्र तल से 400-1200 मीटर की ऊँचाई पर शुष्क कंकर ढलानों पर उगता है। इस पौधे के प्ररोह उच्च कोटि के होते हैं। पेड़ सीधा, अनेक शाखायुक्त तथा बहुल बीज देता है। यह पौधा गर्मी तथा शीत प्रतिरोधी है। यह बहुत असामान्य परिस्थितियों में उग सकता है, बाध्यज में भी जहाँ गर्मी, सख्त भूमि तथा पानी का अभाव है। मूल अनेक अंकुर देता है।

विस्तार :- फ़ीकुस अफ्गानिस्तानिका पूर्वीय कोपेतदग, दागबुलागच, केलाता, बाध्यझ, पेलेनगोवय, लघु पेलेनगोवय, इंजीर, तोराभसाच, गाबानचेशेम तथा दानेगेर्माप में मिलना चाहिये।

प्राकृतिक उपलब्धि :- यह झाड़ीदार वृक्ष हमारे देश में दुर्लभ पौधों में से एक है। औषध निर्माण आवश्यकताओं के लिये इसके भण्डार पर्याप्त नहीं है। हम इस पौधे की खेती की सलाह देते हैं। 1991 से इस पौधे को तुर्कमेनिस्तान की लाल पुस्तक में समाविष्ट किया गया है। यह बाध्यझ तथा कोपेतदग के अभयारण्य में उगता है।

प्रयोज्य कच्चा माल :- पत्र तथा प्ररोह का प्रयोग औषध के रूप में किया जाता है। इनको किसी भी समय इकट्ठा करके सुखाया जाता है। एक पेड़ से 5-30 किलोग्राम प्ररोह इकट्ठा किया जा सकता है। सूखे पत्रों को कपड़े के थैलों में तथा सूखे प्ररोह को कागज़ के पैकेट अथवा मिट्टी के पात्र में संचय किया जाता है। पत्र को 1 साल के लिये तथा प्ररोह को 3 साल के लिये संचय किया जाता है।

रासायनिक संघटन :- प्ररोह में 19.3 प्रतिशत शर्करा (फ्रुक्टोझ, ग्लुकोझ, सेकेरोझ) ओर्गेनिक एसीड (साइट्रीक मेलिक फ्युमरिक), विटामिन्स सी तथा पीपी, पेकटीन एवं स्टार्च होते हैं। पत्रों में ओर्गेनिक एसीड (वेलेरीक, आइसोवेलेरीक), उत्पत् उड़नशील तेल, पदार्थ ए, कोमेरीन (सोरालेन), बर्गाप्टेन तथा ममी होते हैं।

प्रयोग :- पौधा एवं प्ररोह का प्रयोग औषध तथा आहार के रूप में किया जाता है। ग्रीक वैज्ञानिक थीओफ्रास्ट ने अपने कार्य द केयर आफ प्लांट्स में कहा है कि फ़ीकुस अफ्गानिस्तानिका छोटी शाखाओं में उग सकता है। गालेक के अनुसार सूखे पौधे का प्रयोग आमाशय की चिकित्सा के लिये हो सकता है। महान पूर्वीय चिकित्सक तथा विचारक अबु अली इब्न सीना ने अपनी पुस्तक द आर्ट आफ मेडिकल ट्रीटमेंट में लिखा है कि इस पौधे का प्रयोग त्वक् विकारों, आघात, संधि, अपस्मार, नेत्र व्याधियाँ, श्वसन संस्थान की व्याधियाँ, पचनतंत्र के विकार, वृक्क शोधनार्थ, मूत्राशय, कीटदंश के लिये तथा पौरुष ग्रंथि की चिकित्सा के लिये किया जाता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

तुर्कमेन राष्ट्रीय चिकित्सा (सेर्हेंताबात, तागताबाझार, साराह, काका क्षेत्रों) में इसका प्रयोग कास, कुक्कुर कास, प्रसव पश्चात् रक्तस्राव में होता है।

सूखे पत्र तथा मूल पचन की चिकित्सा के लिये तथा उबले हुए प्ररोह का प्रयोग मूत्राशय तथा वृक्क के शूल में किया जाता है। ताजे प्ररोह का प्रयोग पाण्डु की चिकित्सा के लिये किया जाता है। प्ररोह को दूध में उबालकर कास, आमशय शोथ, श्वासनलिका शोथ, विबंध, पांडु तथा कफःनिसारण के लिये प्रयुक्त किया जाता है। दूध में बनाया हुआ फांट स्वरनाश के लिये तथा गंडूष का प्रयोग शुष्क कास में होता है। प्ररोह पर दिखाई देने वाले क्षीर का प्रयोग पपड़ी तथा फफोला के रोपण के लिये होता है।

वैज्ञानिक चिकित्सा में पत्र का प्रयोग कच्चे माल के रूप में सोबेरान के लिये किया जाता है। इस औषध में सोरालेन, बेर्गातेन तथा फ्यूरोकोमरिन्स हैं। सेबेशन, श्वित्र जैसे चर्म व्याधियों के लिये असरकारक है। इसका प्रयोग प्रकाशसंज्ञाशीलन नुस्खे के रूप में होता है। पौधे के पत्र से फ्यूरोलेन बनाया जाता है तथा चर्म व्याधियों में इसका प्रयोग होता है। पौधे के पके प्ररोह के सार मूत्राशय के लिए बनाये जाते हैं।

प्रयोग :- दो बड़े चम्मच पौधे के कुटे चूर्ण में एक गिलास (200 मि०ली०) दूध मिलाकर, एक तामचीनी पात्र में 5 मिनट उबालें। फिर छानकर दिन में 3 बार कवल करें। दिन में 3 बार आधा गिलास पीयें।

सूखे पौधे के 4 बड़े चम्मच तक धीमी आंच पर उबालें। छानकर 1-2 गिलास प्रतिदिन सेवन करें।

1-2 गिलास ऐल्कहोल को 6 बड़े चम्मच सूखे पत्र के साथ एक कांच पात्र में मिलाकर ढक्कन लगाकर अंधेरे स्थान पर 10 दिन तक रखें। बीच-बीच में हिलाते रहें। छानकर सूर्यदग्ध स्थान पर सुबह, शाम लगायें।

दो बड़े चम्मच शुष्क पत्र को 1 लीटर पानी में मिलाकर उबालें। 30 मिनिट्स तक रखें। दिन में तीन बार पियें।

फ़ीकुस करीका
FICUS CARICA

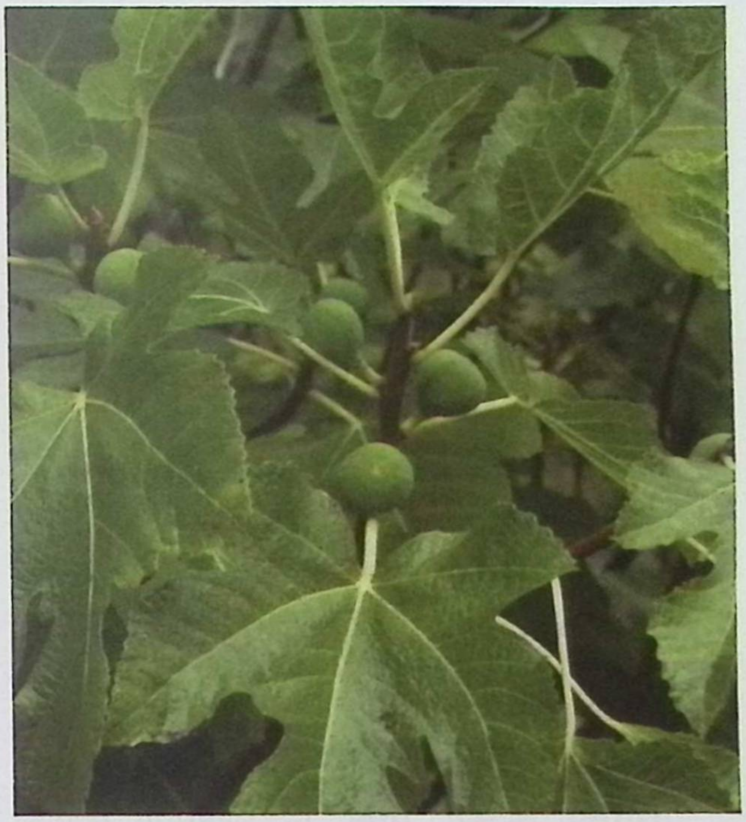

वर्णन :- यह सबसे प्राचीन तथा पवित्र पौधों में से एक है। तुर्कमेनिस्तान में इसकी दो प्रजातियाँ हैं।

मलबेरी कुल का यह 3-5 cm लम्बा है। फ़ीकुस करीका को कई शाखायें तथा एक मोटा तना होता है। पत्र गोलाकार, बड़े, 15 से०मी० लम्बे तथा 12 से०मी० चौड़े होते हैं। अगर कोई पेड़ की तरफ देखें तो पेड़ कृष्ण-हरा तथा मोटे रोम से आच्छादित दिखाई देता है। पेड़ का अधोभाग भूरा-हरा, रोमश तथा मोटे सूत्रवाला होता है।

ये अंदर से रिक्त, पुष्प के समूह में, शिखर पर छिद्रवाले नाशपाती जैसे रूप में इकट्ठा होते हैं। पुरुष मूल पर शाल जैसे पुष्प होते हैं। इसमें पाँच पुष्प तथा तीन पुंसेकर होते हैं। स्त्री मूल पर इससे उलटा होता है। उसमें पांच पुष्प तथा बेर होते हैं।

इसके फल काष्ठफल जैसे होते हैं। पके बेर 5 से०मी० लम्बे तथा कद में 5 से०मी० के होते हैं। वर्ण पीला अथवा गहरा भूरा होता है।

जैविक लक्षण :- पेड़ समुद्र तल से 600-1900 मीटर की ऊँचाई पर उगता है। इसको अप्रैल में पुष्प आते हैं तथा बेर जुलाई-सितम्बर तक पकते हैं यह 2-3 साल में बेर देने लगता है। इसका जीवनकाल 100-200 साल का है तथा यह 50-80 साल का होने तक बेर देता है। एक पेड़ 30-40 किलोग्राम तक फल देता है। पहली उपज के

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

बेर जून-जुलाई तक फलते हैं तथा दूसरी उपज के अगस्त की शुरूआत तक पकते हैं।

फ़ीकुस करीका का प्रजनन ताजे अंकुर निकली हुई शाखा से होता है। यह सर्दी विरोधी नहीं है। पेड़ शून्य से 10-12 डिग्री से० नीचे तापमान पर ही जीता है। हमारे देश के गर्म प्रदेशों (दक्षिण-पश्चिमी तुर्कमेनिस्तान, उपोष्णदेशीय क्षेत्रों, मागत्यंगुलय तथा एट्रेक) में उगता है।

विस्तार :- फ़ीकुस करीका उत्तर-पश्चिमी कोपेतदग पर्वत में, मागत्यमगुलय, एयदेरे, गारावुल, आर्चाबील, गोकदेरे, युलय तथा कीची बाकजा, बाबासाथ, कोपेतदग पर्वतों के उत्तर में, गुर्यहोवदान, चयरलाक, शामलय, गावेर्स, बाध्यझ में, इन्जीरली, नारडयवान्ली तथा कोयतेनदग में विस्तृत रूप से फैला हुआ है। यह पर्वतों की तराई में रेतीली जमीं पर तथा जलस्रोत (springs) के पास भी पाया जा सकता है।

प्राकृतिक उपलब्धि :- यह हमारे देश के दुर्लभ पौधों में से है। औषधीय उद्देश्यार्थ पर्याप्त भण्डार है। मध्य कोपतदग में 2006-2007 में किये गये अनुसंधान के परिणाम के आधार पर आर्चाबील में 720 फिचुस पेड, बुडयुनोवस्कीय में 597, सेमांसुर में 804, मुर्झेदाग (गेचीलीदेरे) में 275 पेड़ पाये गये थे। इसकी खेती करने की सलाह दी जाती है।

प्रयोज्य कच्चा माल :- औषधीय उद्देश्यार्थ इसके पत्र तथा बेर कच्चे माल के रूप में उपयुक्त होते हैं। औषध के लिये पत्र को जून से सितम्बर अक्तुबर तक इकट्ठे किये जाते हैं। इस अन्तराल में पत्र में 0.4-0.9 प्रतिशत फुरोकोमेरीन्स होते हैं। पत्र को चाकू से काटा जाता है। इनको एक के ऊपर एक नहीं रखना चाहिये क्योंकि ये काले हो सकते हैं। नये बेर को नर्पोलीन अथवा एस्फालटेड जमीन पर फैलाये जाते हैं। इनको जल्दी सुखाने के लिये इनको पलटाना चाहिये। तैयार कच्चे माल को कपड़े अथवा कागज़ के थैलों में संचय करना चाहिये। संचयन की समय अवधि 2 साल है।

रासायनिक संघटन :- पत्र में ओर्गेनिक एसिड (वेलेरिक, आइसोवेलेरिक), फुरोकोमेरिन्स मोबेरान, बेगाप्तेना, इथरिअल तेल, एल्कलोइड्स होते हैं। बेर ओर्गेनिक एसिड़ (साइट्रिक, मेलिक, विनेगर, बोरोन) विटामिन्स स, बी, बी$_2$, ए, ई पीपी तथा सूक्ष्म तत्वों में समृद्ध होते हैं।

प्रयोग :- प्राचीन काल से ही फ़ीकुस करीका के रूप में प्रसिद्ध है। महान पैगम्बर मोहम्मद अपनी पवित्र कादिस में फ़ीकुस करीका के औषधीय गुणों के बारे में लिखा है तथा उसका सेवन करने की सलाह दी है। उन्होंने विशेषतः यह पाया कि फ़ीकुस करीका हृदय के कार्य को मदद करता है। प्रख्यात वैज्ञानिक इब्न सीना कैनन आफ मेडिकल सायंस, बीरूनी फार्मकोग्नोसी इन मेडिसिन, सेयीत इस्माइल गुर्गेन्ली ट्रेजरी आफ खोरेज़्म शाह तथा मुहम्मद हुसेन द मेडिसिन ट्रेज़री ने अपने कार्य में फ़ीकुस करीका के बारे में लिखा है। इब्न सीना ने इसका प्रयोग दुष्ट अर्बुद की चिकित्सा के लिये, पत्र का शैवाल के लिये, नये बेर का वृक्क तथा मूत्राशय की व्याधियों के लिये तथा क्षीर एवं सीरप का प्रयोग वृश्चिक विष में किया। मुहम्मद हुसेन ने इसका प्रयोग हृदद्रवत्व तमकश्वास, कास तथा उरःशूल में प्रयुक्त किया।

लोक चिकित्सा में फ़ीकुस करीका के पत्र तथा मूल से फांट का प्रयोग आमाशय के व्रण, पाण्डु तथा वृक्क व्याधि में होता है। ये तिक्त का शोषण करते हैं, तापमान कम करते है, तृषा के तथा दुर्बल व्याधि प्रतिरोधक शक्ति को पुनः स्थापित करते हैं।

वैज्ञानिक चिकित्सा में फ़ीकुस करीका के पत्र से बनाया सोराबेन (फुरोकोमेरीन्स, सोरालेन तथा बेर्गाप्टेन का मिश्रण) रंजकता (pigmentation) को दूर करने के लिये प्रयुक्त होता है। जिनको हृदशूल तथा पाण्डु हुआ हो उनको फ़ीकुस करीका के बेर खाने चाहिये क्योंकि उसमें पोटेशियम है। शर्करा तथा सेल्युलोझ की उपस्थिति के कारण मधुमेह के रोगी में इसका प्रयोग नहीं करना चाहिये।

कल्पना तथा प्रयोग :- अच्छी तरह सूखे हुए पीसे हुए पत्र 1 बड़ा चम्मच (15 ग्राम) को 1 गिलास (200 मि०ली) पानी में मिलाकर एक तामचीनी पात्र में धीमी आंच पर 15-20 मिनट उबालें। 20-30 मिनट तक रखें। तत्पश्चात् छान लें। प्रतिदिन आधा गिलास (100 मि०ली) फांट दिन में तीन बार लें।

एक छोटा चम्मच (5 ग्राम) मूल को एक गिलास (200 मि०ली) पानी में मिलाकर 15-20 मिनट तक धीमी आंच पर उबालें। बाद में छान लें। प्रतिदिन 1 चम्मच (5 ग्राम) फांट दिन में तीन बार भोजन से पूर्व लें।

पीसे हुए पत्र 2 बड़े चम्मच (30 ग्राम) को आधा गिलास (100 मि०ली) शुद्ध स्पिरिट में मिलाकर एक कांच पात्र में कसकर ढक्कन लगाकर 10-15 दिन के लिये रखें। बीच-बीच में हिलाते रहें। सीरप को छान लें। 10-15 बूंद दिन में तीन बार लें।

पीसे हुए पत्र 1 चम्मच (5 ग्राम) को एक गिलास (200 मि०ली०) उबले हुए पानी में मिलाकर 20-30 मिनट तक रखें। तत्पश्चात् छान लें। प्रतिदिन 50-100 मि०ली० फांट दिन में तीन बार लें।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

फ्राक्सिनुस सीरिआका
FRAXINUS SYRIACA

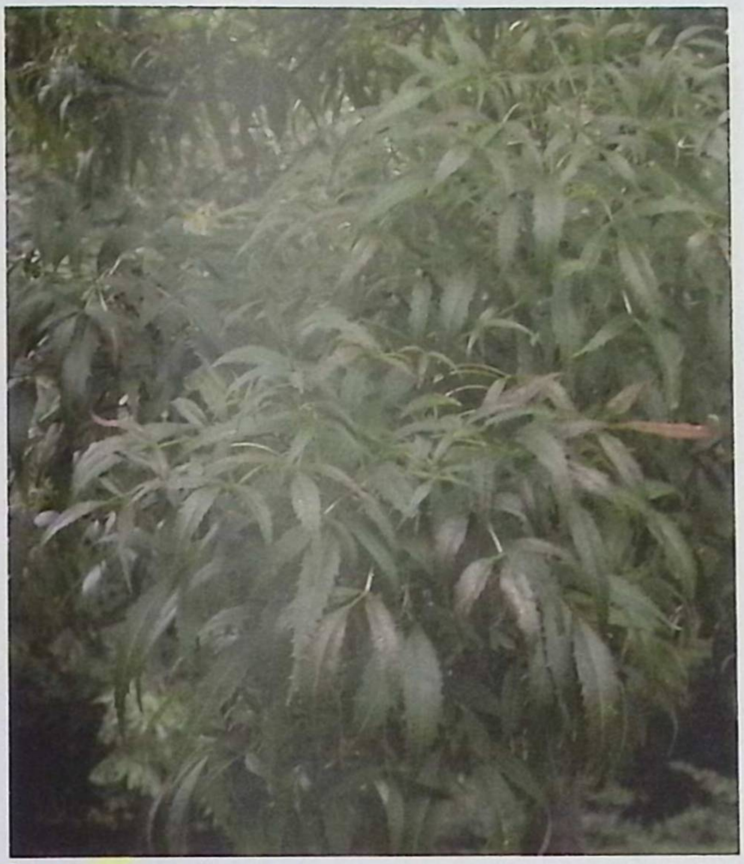

वर्णन :- फ्राक्सिनुस सीरिआका एक औषधीय पौधा है। मध्य एशिया देशों में इसकी 10 प्रजातियाँ तथा तुर्कमेनिस्तान में 3 प्रजातियां हैं।

फ्राक्सिनुस सीरिआका जेइतुन कुल का है। फ्राक्सिनुस सीरिआका लगभग 20 मीटर लम्बा तथा पेड़ के रूप में बढ़ता है। यह पेड़ औदार्य का प्रतीक है। पौधे की त्वक् श्वेत होती है। नया प्रकंद धूसर होता हैं। प्रकंद गाढ़ा हरा होता है तथा उसमें 1 साल पुराने पुष्प होते हैं। उनकी शाखायें छोटी होती हैं। अधिकांश पौधे कलिकाओं में इकट्ठे होते हैं। ये छोटी, अण्डाकार तथा धूसर होती हैं। पत्र प्रकंद में होते हैं। पत्र लगभग 4-8 से०मी० लम्बे तथा लगभग 1.5-2 से०मी० चौड़े होते हैं। पत्र बहुत तीक्ष्ण होते हैं। पुष्पक में एक गुच्छा होता है। पुष्प बिना पराग तथा दल का होता है। पुष्पमंजरी अण्डाकार रूप का तथा लम्बाई का होता है। स्त्रीकेसर दो भागों में विभाजित होता है। पौधे का फल पंखयुक्त काष्ठफल (नट) जैसा दिखता है। फ्राक्सिनुस सीरिआका पेड़ के काष्ठफल के पंख लगभग 2-4 से०मी० लम्बे तथा लगभग 0.7-1.4 से०मी० चौड़े होते हैं। फ्राक्सिनुस सीरिआका को अप्रैल में पुष्प आते हैं तथा सितंबर में फल आते हैं।

जैविक लक्षण :- पेड़ समुद्रतल से 800-1600 मीटर की ऊँचाई पर उगता है। पेड़ 400 साल तक जीता है।

विस्तार :- हमारे देश में पश्चिम-पूर्वीय कोपेतदग में, तुतलयद में, गुयेन्दे में, सुंबार, एयदेरे, पारदेरे, कोनीकसेरदे, मध्य कोपेतदग, गोकदेरे, पूर्वीय कोपेतदग, गुरयहोवदान, शामलयदा, बाहचादा, चयरलाक में फैला हुआ है। यह नदियों के समीप नम स्थानों पर उगता है।

प्राकृतिक उपलब्धि :- यह हमारे देश के दुर्लभ पौधे में एक है ।

प्रयोज्य कच्चा माल :- औषधीय पौधे के रूप में शाखा की त्वक् तथा मूल प्रयुक्त होते हैं। इसको काटकर सुखाया जाता है। औषधीय पौधे को कपड़ों के थैलों में संचय किया जाता है। संचयन की समय अवधि 2-3 साल है। पौधे की शाखायें शुरुआती वसंत में इकट्ठी की जाती हैं। इनको सावधानी पूर्वक सुखाना बहुत जरूरी है। कच्चे माल को कागज़ के थैलों में संचय किया जाता है। संचयन समय की अवधि 3 साल है।

रासायनिक संघटन :- पौधे की त्वक् तथा पत्र में कोमेरीन, पदार्थ ए होते हैं। बीज में 20 प्रतिशत फ्राक्सिनुस सीरिआका का तेल है।

प्रयोग :- इस पौधे के बारे में जानकारी होरेस (65 ई०पू०) वीरगील (70 ई०पू०) वीत्र्युवीय (ई०पू०) कोलुमेलान (ई०पू०), पाललादीय (3-4 ई०पू०) के कार्य में मिलता है। लोकप्रिय औषधी के त्वक् का प्रयोग बधिर-मूक, राजयक्ष्मा तथा चर्मकील की चिकित्सा में होता है। पौधे के पत्र कास की चिकित्सा में प्रयुक्त होता हैं त्वक् के रस में जीवाणु प्रतिरोधी गुण है। प्रख्यात चिकित्सक अबु अली इब्न सीना ने काम दौर्बल्य, तथा रक्तप्रदर की चिकित्सा में इसका प्रयोग करने की सलाह दी है। इस पौधे को बुजुर्गों के लिए प्रयोग की सलाह भी दी गई है। फ्राक्सिनुस सीरिआका का प्रयोग पकाने के लिये होता है। फ्राक्सिनुस सीरिआका क्वाथ, मुरब्बा, मेरीनेटेड बेरी के लिए होता है। पुष्प आने के समय फ्राक्सिनुस सीरिआका के समीप चलना बहुत उपयोगी है।

कल्पना तथा प्रयोग :- 1 बड़ा चम्मच तथा 200 मि०ली० गर्म पानी को 15 मिनट तक उबालें तथा दुष्ट स्थान पर पट्टी लगायें।

तृण के पीसे हुए टुकड़े एक बड़ा चम्मच को 200 मि०ली० 70 प्रतिशत सिरका में मिलाकर 10 दिन तक अंधेरे स्थान पर रखें। बीच-बीच में हिलायें। छानकर 5-6 बूंद दिन में तीन बार लें।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

फ़ूमारिआ वाल्लान्तिई
FUMARIA VAILLANTII

वर्णन :- इसकी विश्व में लगभग इसकी 55 प्रजातियाँ, पूर्व उत्तरीय एशियन देशों में 17 प्रजातियाँ तथा तुर्कमेनिस्तान में 4 प्रजातियाँ मिलती हैं।

फ़ूमारिआ वाल्लान्तिई, वाल्लान्तिई कुल का प्रतिनिधि है। यह 10-30 (40) से०मी० ऊँचा, एकवर्षीय पौधा है। इस पौधे की डंठल भूरी, बहुत मजबूत शाखाओं में विभाजित होती है। इसके पत्र त्रि-पक्षवत् विभाजित होते हैं।

इसके पुष्प छोटे तथा गुच्छों में इकट्ठे होते हैं। ये भूरे-गुलाबी तथा लोमश होते हैं। फल एक बीज वाला छोटा शंकु (इसका कद 2 मि०मी०) होता है। बीज काला होता है।

जैविक लक्षण :- यह पौधा हमारे देश में समुद्रतल से 400-1200 मीटर की ऊँचाई पर उगता है। इसके अंकुर पतझड़, सर्दी अथवा वसंत की शुरूआत में निकलते हैं। इसको अप्रैल-मई में पुष्प मिलते हैं तथा मई-जून में फल पकते हैं। जून में यह बीज देता है। इसका प्रजनन बीज द्वारा होता है।

विस्तार :- फ़ूमारिआ वाल्लान्तिई बोलशोइ बालखान में, नाझ्झरेकेरेम, तोरान्मालय, कुरेनदाग, मध्य कोपेतदग में मुसुनेव, गयलगयलाव, आर्चाबील, गोकदेरे, मार्काब, चायेक, दुशाकेरेकदाग, वानोवस्कीय, रोबेरगोवस्कीय, अस्यलमा, बाबाझाव, दाग्यस, दाशतोय, याब्लोनोवका, गुर्तलयसुव, होवदान, पूर्वीय कोपेतदग में गुर्यहोवदान, च्यर्लाक, शामलय, बाध्यझ में, सेर्हेताबाद, चायहुर्य, गयझ्द्यलदार, थेरोयलान्डुझ, केपेले, आकारचेश्मे, पयनहान, नाऽर्यवान्ली, कोयतेनदाग में, एट्रेक, कोपेतदग, तेजेन, मुर्गाब तथा अमुदार्या में मिलता है।

प्राकृतिक उपलब्धि :- यह दुर्लभ पौधों में से नहीं है। औषधीय भण्डार के लिये इसकी पर्याप्त मात्रा है।

प्रयोज्य कच्चा माल :- इनको पुष्पान्वित होने के समय (अप्रैल-मई) में इकट्ठा किया जाता है। तथा छज्जें के नीचे सुखाया जाता है। इनको कपड़े के थैलों में संचय किया जाता है। संचयन समय की अवधि 1-2 साल है।

रासायनिक संघटन :- पौधे के सभी हिस्सों में लगभग 5 प्रतिशत एल्कलोइड्स (पापावरीन, प्रोटोपाईन, फ्युमेरी डीन तथा सेंग्वीनेराईन) विटामिन्स सी, के एवं इ, केरोटीन, पदार्थ ए, तिक्त पदार्थ (मद्दा), गोंद तथा प्रवाही होते हैं।

प्रयोग :- प्रख्यात वैज्ञानिक अबु अली इब्न सीना ने कैनन आफ मेडिकल सायंस में अबु रहयहान बीरूनी ने फार्मकोग्नोसी इन मेडिसिन में सेयीत इस्माइल गुर्गेन्ली ट्रेजर आफ खोरेज्म शाह में इस पौधे के औषधीय गुणों के बारे में लिखा है। इस पौधे का औषध के रूप में प्रयोग ज्वर शांत करने के लिये, यकृत् में पिछितों को मृदु करने के लिये, आमाशय को बलवान बनाने के लिये होता है। फूमारिआ वाल्लान्तिई का प्रयोग बल्य नुस्खे के रूप में नाटिनी विस्फारक तथा गर्भाशय की परतंत्र पेशियों के लिये होता है। प्रोटोपाइन का गतिवैषम्य के लिये संकोचकनाशक तथा वाहिनी विस्फारक औषध के रूप में प्रयोग होता है। इसका रक्तवह संस्थान की व्याधियाँ, कामला, प्रसवोत्तर रक्तस्राव तथा चर्म विस्फोट में होता है।

तुर्कमेन लोक चिकित्सा में पौधे के फांट का प्रयोग हृद्रोगों में तथा पपड़ें में मुख गुहा के गंडूषार्थ होता है। इसका प्रयोग राजयक्ष्मा, कामला तथा ज्वर की चिकित्सा के लिये भी होता है। अर्श के रक्तस्राव में पौधे के फांट का प्रयोग होता है। निचोड़कर निकाला हुआ स्वरस सभी तरह के रक्तस्राव में प्रयुक्त होता है, साथ ही यह नाडी तथा यकृत् की व्याधियाँ, आमाशय के व्रण, चर्म विस्फोट तथा आमाशय शूल की चिकित्सा में मदद करता है।

कल्पना तथा प्रयोग :- निचौड़े हुए रस की 30-50 बूंदे भोजनपूर्व दिन में तीन बार प्रयुक्त करें। पीसे हुए पौधे के 2 चम्मच को 2 गिलास (400 मि०ली०) पानी मिलाकर छान लें। आधा गिलास (100 मि०ली०) दिन में 3-4 बार लें।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

गालिउम पामिरो-अलाइकुम
GALIUM PAMIRO-ALAICUM

वर्णन :- विश्व में इस चिकने औषधीय पौधे की 400 प्रजातियाँ है जिनमें मध्य एशिया देशों में 129 प्रजातियाँ तथा तुर्कमेनिस्तान में 13 प्रजातियाँ मिलती हैं। शेनोटी, चोलाशीक तथा पीशीक इस पीशक पौधे के अन्य नाम हैं।

गद्दे घास का एक बहुवर्षिय, 30-80 से०मी० ऊँचा पौधा होता है। पौधे का पतला, रस्सी सदृश मूल भूमि में स्थित होता है। अनेक प्रशाखा युक्त शाखायें उसमें से निकलती हैं। पत्र पतले, श्रृंखलाओं में, तीक्ष्णाग्र तथा 8-12 के गुच्छों में उगते है। पुष्प के कलिया दृश्यमान नहीं होते क्योंकि ये फली (Pod) से आच्छादित होते हैं। पुष्प को चार दल होते है जो पीले होते हैं। कलियां काईदार सतह वाले गेंद के रूप में वृद्धि करते हैं।

जैविक लक्षण :- पौधे समुद्रतल से 800-2800 मीटर की ऊँचाई पर उगते हैं। इसको कुकरीय, पथरीली चट्टानों पर पाइन तथा शंकुवत् पैडों के वन में उगना पसंद है। इसको पुष्प तथा फल मई अथवा अगस्त में लगते हैं। इसका प्रजनन बीज द्वारा होता है।

विस्तार :- हमारे राज्य में गद्दे घास मुख्यत: बोलशोई बालखान पर्वत में मुख्य चोटी कुरेनदाग, सोनुदाग, होजा महल, कोपेतदध के दक्षिण-पश्चिम में, मध्य कोपेतदग, सर्धमसाकर्ल्य, मुसुनेव, मुर्झेदाग, मेर्गेनोलेन, दुशाकेरेकदाग, हेयराबात, चायेक, रोबेरगोवर्स्कीय, आर्चाबील, दाश्तोय, असयलमा, पूर्वीय कोपेतदग तथा गुर्यहोवदान में मिलता है।

प्राकृतिक उपलब्धि :- हमारी मातृभूमि में यह दुर्लभ पौधा है। औषधीय उद्देश्यार्थ इसका भण्डार पर्याप्त है।

प्रयोज्य कच्चा माल :- पूरे पौधे का औषधीय कच्चे माल के रूप में प्रयोग होता है। इसको जब पुष्प लगते हैं (मई-जून) में तब इकट्ठा करके छांव में अथवा हवादार कमरे में सुखाना चाहिये। संचयन समय की अवधि 1-2 साल है।

रासायनिक संघटन :- गद्दे घास में एस्पेरूलोसिड्स, ग्लायकोसाइड, गेलीओसिन्स तथा रेबीआडीन्स, एन्ट्राग्लायकोसाइड, फ्लेवोनोइड्स, सेपोनीन्स, विटामिन सी तथा सीट्रिक एसिड होते हैं। पौधे के पुष्प तथा मूल में दूध को गाढ़ा बनाने के लिये तथा खमीर एवं उफान उत्पन्न करनं वाले द्रव्य मिलते हैं।

प्रयोग :- लोक चिकित्सा में पौधों का प्रयोग रक्त संचरण को पुन: स्थापित करने के लिये, वेदनानाशक के रूप में तथा मूत्रल द्रव्य के रूप में होता है। पौधे के पानक से स्नान करना गठिया तथा विविध चर्म व्याधियों के लिये एक नुस्खा है। पुष्प तथा डंठल को वनस्पति तेल में मिलाकर बनाया नुस्खा शीतपित्त को रोकने के लिये उपयोगी है। पौधे से निर्मित सीरप अथवा सांद्र क्वाथ को नासागत रक्तस्राव में नाक में प्रयुक्त किया जाता है। यह दुष्ट व्रण के रोपण के लिये बहुल प्रभावपूर्ण रूप से कार्य करना है।

तुर्कमेन लोक चिकित्सा (मांगत्यंगुलय, गोकदेपे, बाहार्लीय क्षेत्रों) में गद्दे घास के सीरप तथा क्वाथ का प्रयोग हृदय तथा यकृत् व्याधियों में होता है। शुष्क पौधे से बने चूर्ण का व्रण पर अवचूर्णन करने से वह उसका रोपण जल्दी होता है।

कल्पना तथा प्रयोग :- पीसे हुए पौधे के एक बड़ा चम्मच (15 ग्राम) को 1 गिलास (200 मि०ली०) पानी में एक तामचीनी पात्र में मिलाकर 15 मिनट तक धीमी आंच पर उबालें। कपड़े से क्वाथ को छानकर 1/4 गिलास (50 मि०ली०) प्रतिदिन 3-4 बार लें। यह नुस्खा हृदय तथा यकृत् व्याधियों के लिये उपयोगी है।

गद्दे घास पौधे के 1 बड़ा चम्मच को 1 गिलास उबले हुए पानी में मिलाकर 3-4 घण्टे तक रखें। इस क्वाथ को कपड़े से छानकर आधा गिलास (100 मि०ली) दिन के दरम्यान पियें।

पौधे का ताजा सीरप 1 चम्मच दिन में 3-4 बार लें।

गद्दे घास के पीसे हुए पुष्प 2 बड़े चम्मच को आधा गिलास सूर्यमुखी अथवा जैतून तेल में कांच पात्र में मिलाकर कसकर ढक्कन बंद करके एक सप्ताह तक रखें। इसको कपड़े से छानकर शीतपित्त पर दिन में दो बार लगायें।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

जेन्तिआना ओलीवेरी
GENTIANA OLIVERI

194

वर्णन :- असामान्य संरचना वाले इस औषधीय पौधे की 400 से अधिक प्रजातियाँ विश्व में हैं, मध्य एशिया देशों में 50 से अधिक प्रजातियां हैं लेकिन तुर्कमेनिस्तान में हमें केवल एक ही प्रजाति मिल सकती है। यह पौधा 15-25 से०मी० लम्बा होता है। यह बहुवर्षीय, क्षुपीय पौधों के वंश का प्रतिनिधि है।

इसके पत्र एक जैसे नहीं होते तथा अण्डाकार कुदाल जैसे दिखते हैं। ये 4-10 से०मी० लम्बे तथा 5-10 से०मी० चौड़े होते हैं। इसके ऊर्ध्व पत्र कुंठित दंश स्वरूप के होते हैं। ये क्वचित् ही तीक्ष्णाग्र होते हैं। पुष्प एक दूसरे से दूर नहीं होते ये छोटे डंठल पर 2-3 (4) से०मी० की मध्यांतर पर स्थित होते हैं। इसके पुष्प नीले घण्टे जैसे होते है। इसके फल में बहुत बीज होते हैं।

जैविक लक्षण :- जेन्तिआना ओलीवेरी समुद्र तल से 400-2800 मीटर की ऊँचाई पर उगता है। यह खुले मैदानों में करारों पर तथा तृण एवं झाड़ीयों के बीच में उगता है। यह बीज तथा मूल की मदद से फैलता है। यह कई बार रास्ते के किनारों पर तथा पथरीली जमीन पर उगता है। यह अप्रैल-मई, जून तक पुष्प देता है तथा जून-जुलाई में फल देता है।

विस्तार :- हम इसे बोलशोई तथा मलयलय बालखान में, कुरेन पर्वतों में, दक्षिण-पश्चिमी पूर्वीय तथा मध्य कोपेतदग में, बाध्यझ, कोइतेन पर्वत में खोज सकते हैं। यह पर्वत की तराई में तथा पर्वत के शिखर पर फैलता है।

प्राकृतिक उपलब्धि:- जेन्तिआना ओलीवेरी हमारे देश में दुर्लभ पौधा है। औषध विज्ञान संसाधन के लिये इसके भण्डार पर्याप्त है। प्रतिवर्ष 15-20 टन पौधा इकट्ठा कर सकते हैं।

प्रयोज्य कच्चा माल :- हमारे देश में पत्र तथा मूल का प्रयोग औषध में होता है। इनको जब पौधे में पुष्प आते हैं तब इकट्ठा किया जाता है, लेकिन अतिरिक्त छिद्र युक्त मूल को शुरूआती वसंत (मार्च-अप्रैल) में अथवा पतझड़ (सितम्बर- अकतूबर) में इकट्ठे किये जाते हैं।

कच्चे माल को छप्पर के नीचे सामान्य रूप से सुखाया तथा तैयार किया जाता है तथा कागज़ के थैलों में रखा जाता है।

पत्र को 1-2 साल तक रखा जाता है, मूल तथा छिद्र युक्त मूल को 3-5 साल तक रखा जाता है।

रासायनिक संघटन :- जब यह पुष्पान्वित होता है तब पुष्प में 0.67 प्रतिशत से ज्यादा एल्कलोइड्स, ग्लायकोसाइड्स तथा पदार्थ ए होते हैं।

मूल तथा छिद्रयुक्त मूल में ट्राइटर्पेनोइड तत्व सहित ओलीएनिक तथा युरिओल एसिड़ होते हैं।

प्रयोग :- प्राचीन समय से ही पौधे के मलहम के गुण ज्ञात हैं। पौधे को इब्न सीना द्वारा जेन्तिआना ओलीवेरी कहा गया है। इलीरीय के राजा जिनका नाम जेन्टय था, पूर्व में हुए जिन्होंने उस पौधे को 167 ई०पू० नाम दिया जब वह प्लेग रोग से ग्रस्त हो गये। उन्होंने उस पौधे के मूल का स्वयं प्रयोग किया और शीघ्र ही स्वस्थ हो गये। पूर्वीय चिकित्सा के प्रख्यात सितारे अबु अली इब्न सीना ने अपनी पुस्तक ओलिवेरी में नीचौड़ा हुआ रस उरस्तोय, यकृत्, आर्तवप्रवृत्ति तथा मूत्रप्रवृत्ति के विकार तथा वृश्चिक दंश के प्रतिरोधी के रूप में प्रयुक्त होना लिखा है।

वैज्ञानिक तथा लोक चिकित्सा में इसका प्रयोग अग्नि प्रदीपन, पित्तसारक, स्वेदक के औषध के रूप में तथा शरीर को मजबूत बनाने के लिये होता है।

इसमें तिक्त तथा पदार्थ ए होता है जो श्लेष्मधरा कला को उत्तेजित नहीं करते।

इसके तिक्त तत्व आमाशय से ज्यादा पाचक पित्त स्रवित करवाने में मदद करते हैं। जब सामान्य से ज्यादा प्रयुक्त

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

होता है तब शरीर में श्वेतकण तथा रक्तकण उत्पन्न होते हैं, ये शरीर की व्याधि प्रतिरोधक शक्ति बढ़ाते है। जेन्तिआना ओलीवेरी प्रतिश्याय से ग्रस्त नहीं होने में मदद करते हैं।

भारतीय चिकित्सा में पौधे का प्रयोग स्वेद जनन के लिये नुस्खे के रूप में होता है। पौधे के क्वाथ तथा फांट दंतवेष्टक में रक्तस्राव रोकने में मदद करते है, तथा इनके गंडूष से दंतवेष्टक की चिकित्सा होती है।

इसका प्रयोग ज्वर, शोथ, गठिया, अस्थिविज्ञान, कास तथा कोथ में भी होता है। रंध्रयुक्त मूल तथा त्वचा के मूल नाडीतंत्र, अस्थिविज्ञान, हृत्संकोचन में प्रयुक्त होता है। इरान तथा भारत में पौधे का प्रयोग तीव्र स्वाद वाले मसाले के रूप में रसोई में होता है। इसका तृण शोफ में प्रयुक्त होता है तथा एड्रिनल ग्रन्थि को उत्तेजित करता है।

इसके तृण और पुष्प का प्रयोग चाय अथवा फांट बनाने के लिये तथा हृद्रोग की चिकित्सा के लिये होता है। इसके अधोभाग, जो भूमिगत होते है, का प्रयोग जठराग्नि उद्दीपनार्थ, विबंध, पाण्डु, जानु संधिशूल, गठिया तथा श्वसनवह संस्थान के लिये विशेष औषध नुस्खे के रूप में होता है।

इसके मूल से चाय बनाई जाती है जो जठराग्नि प्रदीपनार्थ तथा पाचन के लिये उपयोगी है। इसके फांट का प्रयोग स्वेद प्रवर्तन के लिये होता है।

तिक्त रस तथा अग्नि दीपनार्थ पौधों में से यह एक है।

कल्पना तथा प्रयोग :- आधा चम्मच (2.5 ग्राम) पीसे हुए मूल को 2 गिलास (400 ग्राम) ठंडे पानी में मिलाकर 4 घण्टे तक रखें। तत्पश्चात् छान लें। तैयार क्वाथ का एक कप भोजन के पूर्व आधा घण्टा पहले प्रयोग करें।

एक तामचीनी पात्र में समान भाग पौधा तथा इसके मूल का 1 चम्मच लेकर धीमी आंच पर 5-10 मिनट तक उबालें। बाद में 500 ग्राम शर्करा मिलायें तथा ठंडा करें। एक बड़ा चम्मच दिन में तीन बार भोजन के पूर्व आधा घण्टा पहले लें।

इसके पुष्प तथा तृण का प्रयोग चाय बनाने के लिये किया जाता है। इसमें से 1 कप 3 बार प्रयुक्त होता है। पौधे को 1 चम्मच (5 ग्राम) आधा गिलास (100 मि०ली) ऐसोप्रिल एल्कलोइड में मिलाकर एक ढक्कन बंद कांच पात्र में अंधेरे स्थान में 10-15 दिन रखें। बीच बीच में हिलाते रहे। तत्पश्चात् छान लें। इस मिश्रण के 10-20 बूंद दिन में तीन बार भोजन के पूर्व लें।

जेउम उर्बानुम
GEUM URBANUM

वर्णन :- विश्व में इस अपतृण पौधे की 40 प्रजातियाँ है जिनमें मध्य एशिया देशों में 12 प्रजातियाँ तथा तुर्कमेनिस्तान में केवल 1 प्रजाति मिलती है। इस आश्चर्यजनक पौधे को चिपचिपा कहने के लिये एक विशिष्ट कारण है। इस पौधे से निर्मित चाय इतनी शक्तिशाली होती है कि ये विविध व्याधियों की चिकित्सा कर सकती है। इस पौधे से बनी हुई चाय विविध व्याधियों की चिकित्सा के लिये उसके औषधीय गुण की वजह से प्रयुक्त होती है।

जेउम उर्बानुम रोझेसी कुल का 30-70 (100) से०मी० ऊँचा, बहुवर्षीय, क्षुपीय पौधा है। पौधे का छोटा लेकिन मोटा, रंध्रयुक्त मूल जमीन के अंदर होता है। यह नीचे की ओर तथा अलग-अलग दिशा में वृद्धि करता है। इसका रक्ताभ धूंसर वर्ण होता है। पौधे की डंठल ऊपर की ओर बढ़ती है तथा मृदु रोम से आच्छादित होती है। ये रोमश होती हैं। डंठल का ऊर्ध्व भाग ज्यादा शाखायुक्त नहीं होता। इसके पत्र क्रमशः तथा रोमश होते हैं। पत्र जो पौधे के मूल की ओर से उगते हैं उनकी लम्बी कांड होती है। कांड नीले, पतले 1-5 की संख्या में युगल सूत्रों में विभाजित होती है। पत्रों के दोनों पार्श्व समान नहीं होते। जो पत्र डंठल से उगते है उनकी छोटी कांड होती है। प्रायः ये तीन भाग में विभाजित होते हैं तथा अण्डाकार होते है। पुष्प का कद लगभग 1.5 से०मी० होता है। प्रत्येक डंठल पर एक ही पुष्प होता है। पांच चमकीले पीले पुष्प होते हैं।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

जैविक लक्षण :- जेउम उर्बानुम समुद्रतल से 1500 मीटर की ऊँचाई पर उगता है। यह पर्वतीय क्षेत्रों में अच्छी तरह उगता है। यह नदियों तथा जलस्रोतों के समीप एवं घाटी के नम स्थानों में उगता है। जेउम उर्बानुम मई-जून में पुष्प तथा जुलाई में फल देता है।

विस्तार :- आप इस पौधे को दक्षिण- पश्चिमी कोपेतदग में, सुंत, योलदेरे, सुंबार, सायवान, गाराबुल, मध्य कोपेतदग में, यपाय, नोहुर तथा आर्चाबील में मिल सकते हैं।

प्राकृतिक उपलब्धि :- जेउम उर्बानुम को दुर्लभ पौधा नहीं माना गया है। इस औषधीय क्षुपीय पौधे की पर्याप्त मात्रा है।

प्रयोज्य कच्चा माल :- औषधीय उद्देश्यार्थ इसके रंध्रयुक्त कांड तथा पत्रों का प्रयोग होता है। इसको वसंत (मार्च-मई) में इकट्ठा करना चाहिये। प्रयोज्य अंग को शुष्क छांव युक्त स्थान पर सामान्य रूप से सुखाना चाहिये। पौधे के रंध्रयुक्त कांड तथा मूल की सुगंध कुछ अंश तक मयहागयंका की सुगंध जैसी होती है। औषधीय माल को थैलों में संचय किया जाता है। इसका प्रयोग 2 साल तक कर सकते हैं।

रासायनिक संघटन :- इस पौधे के सभी हिस्सों में पदार्थ ए होता है। रंध्रयुक्त कांड तथा मूल में (0.15 प्रतिशत इथरीअल तेल (युजेनोल, ग्लायकोसाइड, 30 प्रतिशत टेनीन, तिक्त पदार्थ, गेलीक एसीड, फ्लेवोनोइड्स) होते हैं। पौधे के पत्र में इथरीअल तेल, टेनीन, तिक्त पदार्थ एवं ग्लायकोसाइड होते हैं।

प्रयोग :- सुविख्यात चिकित्सक अबु अली इब्न सीना की पुस्तक कैनन आफ मेडिकल सायंस में पौधे के औषधीय गुणधर्म वर्णित है।

पारंपरिक तथा वैज्ञानिक चिकित्सा में पौधे के मूल तथा पत्र से निर्मित रंध्रयुक्त औषधीय पदार्थ क्वाथ तथा पेय का प्रयोग बाह्य तथा आभ्यंतर रक्तस्राव, दंतवेष्टगत रक्तस्राव, तमक श्वास, नाडीशूल, अर्श तथा अन्य रक्तस्राव में होता है।

इसका प्रयोग प्रतिश्याय जीवाणुमयता, कास, व्रण तथा स्वेदाधिक्य में भी हो सकता है।

जेउम उर्बानुम से निर्मित पेय तथा क्वाथ गर्भाशय के शैत्य तथा प्रजनन अंगो की व्याधियों की रोकथाम के लिये सहायक है। साथ ही इसके क्वाथ तथा प्रयोज्य पदार्थ पचन में, आंत्र शोथ, सामान्य रक्तातिसार तथा आध्मान में मदद करते हैं।

तुर्कमेन पारंपरिक चिकित्सा में नोहुर, गाराबुल, कोनेगुम्मेच, सायवान, देश्त (बाहारर्लीय प्रांत) एयदेरे, तुतलयगाला, दायना (मागत्यंगुलय प्रांत) के गांवों में ऊर्ध्व हिस्सों से निर्मित पेय नाडी तंत्र की व्याधियों के लिये प्रयुक्त होता है।

कल्पना तथा प्रयोग :- पीसे हुए तृण 1 बड़ा चम्मच को 1 गिलास (200 मि०ली०) उबलते हुए पानी में मिलाकर 1 घण्टे के लिये रखें। तत्पश्चात् मलमल के कपड़े से छान लें। तैयार फांट 1 बड़ा चम्मच दिन में 3-4 बार भोजन पूर्व लें।

पौधे के पीसे हुए मूल 2 बड़े चम्मच को 1 गिलास (200 मि०ली) उबले हुए पानी में मिलाकर निस्यंदन होने तक रखें। छानकर विभाजित मात्रा में दिन में लेना चाहिए।

एक तामचीनी पात्र में पौधे के पीसे हुए मूल 1 बड़ा चम्मच (15 ग्राम) को 300 मि०ली० पानी में मिलाकर धीमी आंच पर 5-10 मिनट के लिये उबालें। छानकर एक बड़ा चम्मच दिन में 3-4 बार भोजन से पूर्व लें।

पौधे के मूल को छानकर इसमे से 1 ग्राम को मधु के साथ दिन में 3-4 बार लें।

मूल का चूर्ण 5 बड़े चम्मच (75 ग्राम) को 500 मि०ली० वाईन में मिलाकर कसकर ढक्कन बंद करें।

ग्लाउचिउम एलेगांस
GLAUCIUM ELEGANS

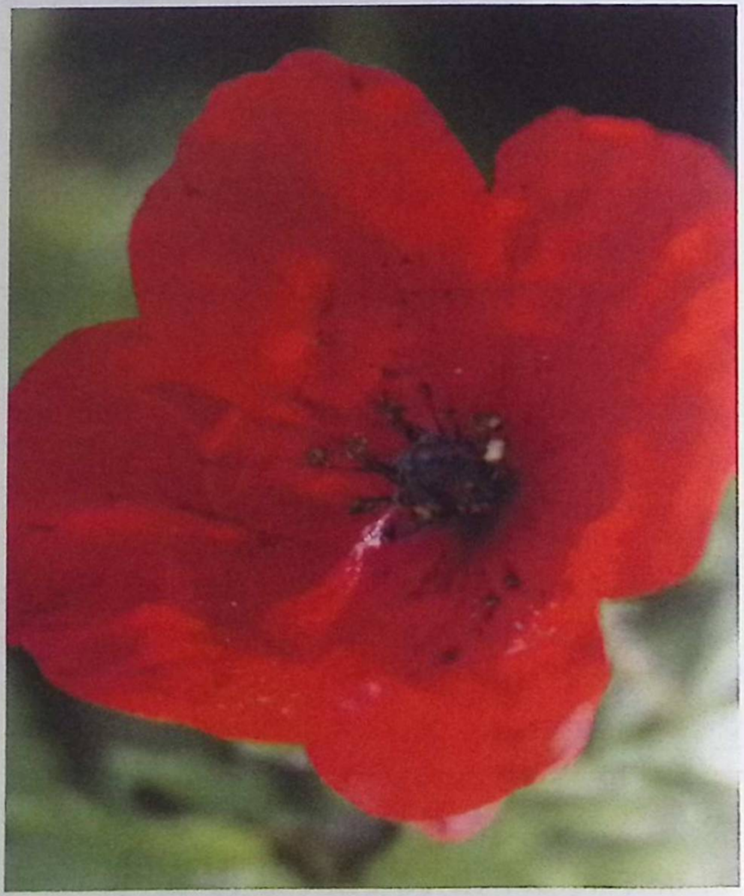

वर्णन :- विश्व में इस पौधे की 20 प्रजातियाँ है जिनमें मध्य एशिया देशों में 10 तथा तुर्कमेनिस्तान में 6 प्रजातियां मिलती हैं। यह ग्लाउचिउम एलेगांस कुल का है। यह 5 से 20 से०मी० ऊँचा होता है। इसकी झाड़ियां

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

संकुचित होती हैं। ऊपर के पत्र, पौधे के मूल के समीपस्थ पत्रों से छोटे होते है। पूरे रूप में पौधा एक गोल पेड़ है। पुष्प चमकीले पीत, मध्य में रक्त तथा आधार के पास कृष्ण वर्ण के होते हैं। फल संकुचित, 5-15 से०मी० लम्बे होते हैं। पेड़ में नीचे से ऊपर पुष्प आते हैं।

जैविक लक्षण :- हमारे देश में यह पौधा समुद्रतल से 400-1200 मीटर की ऊँचाई तक उगता है। पौधा पर्वतों पर उगता है। इसको अप्रैल-मई में फल आते है, तथा बीज द्वारा प्रजनन करते हैं।

विस्तार :- हमारे देश में यह बोलशोई एवं मलय बालखान में, झेतेल में, मोवलयाम, उझनाकार, नाझारेकेरेम, चालसुव, तोराभालय, चोपानदेप, आर्चाबील, होवदान, पूर्वीय कोपेतदग में, गुर्यखोवदान में, चयर्लाक, शामलय, बाध्यझ में, सेरेहेताबाद में, पुलहातयन तथा कोयतेनदग में उगता है।

प्राकृतिक उपलब्धि :- हमारे देश में यह दुर्लभ पौधों में से है। औषधीय उद्देश्यार्थ इसके कई भण्डार हैं।

प्रयोज्य कच्चा माल :- कंद तथा तृण का प्रयोग औषधीय उद्देश्यार्थ किया जाता है। तृण को अप्रैल में इकट्ठा करके सामान्य रूप से सुखाना चाहिये। बीज को मई में इकट्ठा किया जाता है। कच्चे माल को कपड़े के थैलों में 1-2 साल के लिये रखा जाता है। बीजों का संचय कागज़ के बक्सों में 2-3 साल के लिये किया जाता है।

रासायनिक संघटन :- ग्लाउचिउम एलेगांस में एल्कलोइड्स (0.2-0.7 प्रतिशत (ग्लौवीन, ग्लौसाइन, आइझोबोलझाइन, कोरीडाइन, केलीडोनीन, केलेरीट्राइन आदि) होते हैं।

प्रयोग :- ग्लाउचिउम एलेगांस द्रव्य के रूप में लोक चिकित्सा में बहुत प्रख्यात है। डायोस्कोराइड तथा गालेन ने इस पौधे के प्रवाही से नेत्र व्याधियों की चिकित्सा की। अबु अली इब्न सीना जो पूरे विश्व में सुप्रसिद्ध थे, ने अपनी पुस्तक में नेत्र व्याधियों की चिकित्सा कैसे की जाये उसके बारे में सलाह दी है। यह शिरःशूल तथा हृद्शूल में भी सहायक है। लोकप्रिय चिकित्सा में इस पौधे के प्रवाही का प्रयोग श्वसनवह संस्थान के शोथ में कफनिःसारक के रूप में होता है।

तले हुए बीजों को प्रसव पश्चात् बल्य द्रव्य के रूप में स्त्रियों को दिया जाता है। उझबेकिस्तान में पौधे के ऊर्ध्व हिस्से से बनाया हुआ यह औषध तन्द्राकर, मधुमेह शामक तथा कास के लिये दिया जाता है। यह संज्ञानाशक औषध है। जो पहले तथा दूसरे डिग्री उच्च रक्तचाप के लिये तथा धमनी अन्तस्तर शोथ के लिये होता है। बल्गेरिया में 0.01-0.04 ग्राम ग्लौकियम वाली, ग्लाउनेक्त का प्रयोग होता है।

कल्पना तथा प्रयोग :- बारीक कटे हुए सूखे हुए पौधे के एक चम्मच को 10 मिनट के लिये उबालें। कपड़े से छानकर 1 चम्मच दिन में तीन बार पीयें।

पौधे के 2 बड़े चम्मच (30 ग्राम) को एक लीटर उबलते हुए पानी में डालें। ठंडा करें। तत्पश्चात् कपड़े से छानकर दिन में तीन बार (क्वाथ के 1/4 हिस्से को) पीयें। बीज से तेल बनाकर एक चम्मच दिन में दो बाद पीयें। यह औषधीय टिंक्चर अच्छा निद्राजनक औषध है।

सूखे चूर्णित किये हुए 1 बड़ा चम्मच (15 ग्राम) ओरच में एक गिलास (200 मि०ली०) पानी मिलाकर थोडी देर रखें। छान लें। एक बड़ा चम्मच (15 ग्राम) दिन में तीन बार भोजनपूर्व 20-30 मिनट पहले लें।

ओरच के शुष्क बीज एक बड़ा चम्मच (15 ग्राम) को 1 गिलास (200 मि०ली) पानी में एक तामचीनी पात्र में मिलाकर धीमी आंच पर 10-15 मिनट के लिये उबालें। ठंडा करके छान लें। 1/4 गिलास (50 मि०ली०) दिन में तीन बार भोजन से पूर्व लें।

ग्लाउचिउम फ़िब्रिल्लिजेरुम
GLAUCIUM FIBRILLIGERUM

वर्णन :- इस पौधे की विश्व में 20 प्रजातियाँ है जिनमें मध्य एशिया देशों में 10 तथा तुर्कमेनिस्तान में 6 प्रजातियाँ मिलती है। पौधे के औषधीय तथा सजावट दोनों रूप में प्रयोग होते हैं।

ग्लाउचिउम फ़िब्रिल्लिजेरुम पापावरेसी कुल का एकवर्षीय अथवा द्विवार्षिक, क्षुपीय 30-60 से०मी० ऊँचा

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

सदस्य है। पौधे का कांड शाखायुक्त होता है। मूल के समीपवर्ती पत्र पक्षवत् विभाजित (5-30 से०मी० लम्बे) कांड के पत्र बड़े नहीं होते तथा अण्डाकार होते हैं।

इसके पुष्प चमकीले नारंगी तथा पीले होते हैं। पुष्प के पत्र punctuated, बड़े अण्डाकार अथवा गोलाकार होते हैं। इसका फल लम्बाई में बढ़ता है। ये सीधे तीर के समान मुड़े हुए, मोटे (0.5 से०मी० चौड़े, 25 से०मी० लम्बे) होते हैं।

जैविक लक्षण :- पौधा मई से जून तक पुष्प देता है। फल जून से अगस्त तक लगते हैं। इसका प्रजनन बीज द्वारा होता है।

विस्तार :- ग्लाउचिउम फ़िब्रिल्लिजेरुम मध्य कोपेतदग में, रोबेरगोवरकीय, पूर्वीय कोपेतदग में, गुर्यहोवदान तथा चयर्लाक रेतीली जगहों पर उगता है।

प्राकृतिक उपलब्धि :- यह हमारे देश में दुर्लभ पौधा है। औषधीय उद्देश्यार्थ इसके संसाधन पर्याप्त हैं। इसकी खेती करने की सलाह दी जाती है।

प्रयोज्य कच्चा माल :- पौधा खुद में एक औषध उत्पाद है। इसको इकट्ठा करके हवादार कमरों में सुखाया जाना चाहिये। इस उत्पाद को कपड़ों के थैलों मे संचय करना चाहिये। संचयन समय की अवधि 1-2 साल है।

रासायनिक संघटन :- ग्लाउचिउम फ़िब्रिल्लिजेरुम में 0.62-0.77 प्रतिशत एल्कलोइड्स होते हैं। प्रोटोपाइन, कोरीडिन, सेन्वीनेराइन, कोरीट्युबरीन, ग्लौफाइन, ग्लौनीन, नोरकोरीडिन, आइसोबोलीडिन तथा अन्य पदार्थ उसमें से प्राप्त किये जाते हैं। ग्लाउचिउम फ़िबिल्लिजेरुम में सेपोनीन्स तथा फ्लेवोनोइड्स भी होते हैं।

प्रयोग :- यह पौधा प्राचीन काल से ही औषध के रूप में प्रयुक्त होता है। राष्ट्रीय चिकित्सा में पौधे के पत्र तथा पुष्प से निर्मित फांट का प्रयोग उत्तेजक तथा बल्य के रूप में होता है। लोक चिकित्सक, प्रसव बाद स्त्रिओं को रक्तस्राव रोकने के लिये ग्लाउचिउम फ़िब्रिल्लिजेरुम के तले हुए बीज लेने की सलाह देते हैं। इसके तेल में भी यही गुण हैं। पौधे के बीज विरेचक माने गये हैं।

वैज्ञानिक चिकित्सा शास्त्र में पौधे के पुष्प तथा हरित हिस्सों से निर्मित फांट का परीक्षण करके नाडी तंत्र तथा रक्तवह संस्थान के लिये उपयुक्त पाया गया है।

कल्पना तथा प्रयोग :- पौधे के शुष्क तथा चूर्णित हुए पत्र 1 बड़ा चम्मच को एक गिलास (200 मि०ली०) पानी में मिलाकर उसको गर्म स्थान में रखें। तैयार फांट को कपड़े से छान लें तथा एक चम्मच प्रतिदिन तीन बार पीयें।

ग्लाउचिउम फ़िब्रिल्लिजेरुम के पुष्प एक चम्मच (10 ग्राम) एक कप (200 मि०ली०) पानी में मिलाकर 30 मिनट तक रखें। कपड़े से छान लें। इस फांट को एक बड़ा चम्मच की मात्रा में दिन में तीन बार पीयें।

ग्लीचीरीज़ा ग्लाब्रा
GLYCYRRHIZA GLABRA

वर्णन :- यह पौधा अपनी आश्चर्यजनक औषधीय गुणधर्मों के कारण आकर्षण केन्द्रित करता है। विश्व में उसकी 15 प्रजातियाँ है जिनमें मध्य एशिया देशों में 7 तथा तुर्कमेनिस्तान में 4 प्रजातियाँ मिलती हैं। पारंपरिक चिकित्सा में पौधे का नाम मीठा ग्लाईसिराइझा है।

ग्लीचीरीज़ा ग्लाब्रा, ग्लीचीरीज़ा ग्लाब्रा कुल का है। यह 60-80 से०मी० ऊँचा, बहुवार्षीय पौधा है। तना ऊँचा बढ़ता है तथा शाखायुक्त एवं लाल होता है। पत्र पक्षवत् विभाजित 5-20 से०मी० लम्बे होते हैं। ये 3-10 के युग्म में, चमकीले तथा अण्डाकार होते है। इस की सतह गोंद से आच्छादित हो वैसी दिखती है।

जैविक लक्षण :- बीज को संग्रह करने की समय की अवधि 10 साल है। ग्लीचीरीज़ा ग्लाब्रा बीज द्वारा प्रजनन करता है तथा इसको तीसरे साल में पुष्प लगते हैं। पौधे को जुलाई में पुष्प आते हैं तथा अगस्त-सितम्बर में फल लगते हैं। पौधे अकाल विरोधी है। पौधे को खडिया जैसे भूमि में उगना पसंद है। पौधा दुर्बल भूमि पर भी उग सकता है। पौधे में मूल क्रियाशील जीवाणु होते हैं जो हवा से नाइट्रोजन लेकर जमीन को प्राप्त करवाते हैं पौधा इस तरह के स्थानों पर 10 साल से ज्यादा समय तक बढ़ते हैं।

विस्तार :- हमारे देश में काराकुम के सिवाय सभी राज्यों में यह पौधा मिलता है। ये बहुत बार नदी के किनारों पर तथा पर्वतीय जलस्रोतों के पास हरित भूमि में उगता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

प्राकृतिक उपलब्धि :- हमारे देश में ग्लीचीरीज़ा ग्लाब्रा दुर्लभ पौधा नहीं है। औषधीय उद्देश्यार्थ प्राकृतिक भण्डार पर्याप्त है। प्रतिवर्ष लगभग 8-10 टन कच्चा माल इकट्ठा किया जाता है।

प्रयोज्य कच्चा माल :- पौधे के प्रकंद तथा तना प्रयोज्य कच्चे माल हैं। इनका प्रयोग अन्तः त्वचा के सिवाय किया जाता है। ग्लीचीरीज़ा ग्लाब्रा के प्रकंद मार्च से नवम्बर तक इकट्ठे किये जाते हैं। पौधे के भूमिगत हिस्सों को कुदाल से खोदकर निकाला जाता है तथा बाद में मूल इकट्ठे किया जाता है। अगर मूल पर काले धब्बे अथवा फफूँद हो तो उनका प्रयोग प्रयोज्य कच्चे माल के रूप में नहीं करना चाहिये। पसंद किये हुए मूल को छाँव में अथवा विशिष्ट सूखे कमरों में 50 डिग्री से० तापमान पर सुखाना चाहिये। समय-समय पर फफूँद ना लगे इसलिये इन्हें पलटाना चाहिये। उसी स्थान से 6-8 साल बाद मूल को इकट्ठा किया जाना चाहिये। इसी समय नये आये मूल पकते हैं। ग्लीचीरीज़ा ग्लाब्रा की कोई सुगंध नहीं होती। स्वाद मधुर तथा क्षोभकर होता है। सीधे, कठिन मूल चुने जाते हैं। इन्हें कुछ दिन तक छांव में रखने के बाद बाह्य भाग चाकू की मदद से साफ किया जाता है। औषधीय प्रयोगार्थ चुने हुए मूल का प्रयोग किया जाता है।

रासायनिक संघटन :- ग्लीचीरीज़ा ग्लाब्रा के मूल में ग्लीसराईझीन, फ्लेवोनोइड्स, स्टीरोइड्स, उत्पत् तेल, विटामिन सी, टेनीन तथा श्लेष्म पदार्थ, मज्जा तथा स्टार्च रहते हैं इसमें 6 प्रतिशत तक ग्लीसराईझीन होता है। यह शर्करा से 40 गुना ज्यादा मीठा है।

प्रयोग :- प्राचीन काल से ग्लीचीरीज़ा ग्लाब्रा का प्रकंद वैज्ञानिक तथा पारंपरिक चिकित्सा में कोष्ठांग के शोथ, कास, वृक्कशोथ, श्वसनवह संस्थान का शोथ, ऊर्ध्व लघु आंत्र शोथ तथा रेचक के रूप में प्रयुक्त होता आ रहा है। विविध चाय मसालों में घटक के रूप में पौधे के प्रकंद का प्रयोग होता है। औषधीय पौधे के प्रकंद से निर्मित कफघ्न अमृत का प्रयोग कफनिःसारक के रूप में होता है। ग्लीचीरीज़ा ग्लाब्रा का प्रयोग तमक श्वास, अनूर्जता प्रतिक्रिया तथा सोरीआसीस में होता है।

ग्लीचीरीज़ा ग्लाब्रा चाईना में प्राचीन काल से ज्ञात है। इसका प्रयोग रसायन नुस्खे के रूप में होता है। मध्य युग के सभी साहित्य में ग्लीचीरीज़ा ग्लाब्रा के बारे में अधिक जानकारी मिलती है। डेनमार्क किंग पेय का एक घटक ग्लीचीरीज़ा ग्लाब्रा के प्रकंद का सिरप है।

यह बहुत आश्चर्यजनक कफनिःसारक के रूप में प्रयुक्त होता है। ग्लीचीरीज़ा ग्लाब्रा का प्रयोग विविध तरह के पेय, आहार, मीठाई तथा रंजक उद्योग में होता है।

ग्नाफालिउम लूतेओ-आल्बुम
GNAPHALIUM LUTEO-ALBUM

वर्णन :-सामान्यतः विश्व में इस पौधे की लगभग 200 प्रजातियाँ तथा तुर्कमेनिस्तान में एक प्रजाति मिलती है।

ग्नाफालिउम लूतेओ-आल्बुम एक वार्षिकी 10-35 से०मी० लम्बा पौधा है। यह कोम्पोसिते कुल का है। पौधे की डंठल सीधी तथा श्वेत रोम से आच्छादित होती है। कांड के पास पतले, नीले स्थान अनियमित अण्डाकार अथवा लंबगोल कांटे होते हैं। पत्र भी धारीदार होते हैं।

कांड के शिखर पर पौधे के पुष्प होते हैं। ये आन्थोजियम के रूप में बनते हैं। इनको एक छोटा, 4-6 मि०मी० ऊँचा 3-4 मि०मी० चौड़ा, पतला, चमकीला, पीला, सूत्र (रेसा) होता है। सबसे आखरी पौधा श्वेत, साफ, अण्डाकार, 3 मि०मी० लम्बा तथा 1 मि०मी० चौड़ा होता है। पुष्प उपजाऊ होते हैं। बीज खींचे हुए, गहरे धूंसर, बाहर चमकीले धब्बो वाले, 0.5 मि०मी० लम्बे तथा 0.15-0.2 मि०मी० चौड़े होते हैं। रोम आसानी से गिर जाते हैं।

जैविक लक्षण :- ग्नाफालिउम लूतेओ-आल्बुम ज्यादातर समुद्रतल से 700-1500 मीटर की ऊँचाई पर उगता है। यह पहाड़ों पर तराई में, जलस्रोतों के किनारों पर, शुष्क, रेतीले स्थानों में, तथा शुष्क गढ्ढों में उगता है। यह मई-जून में पुष्प देता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

विस्तार :- पौधा मध्य कोपेतदग में, आर्चाबील, तंगघाटी में, बाध्यझ तथा सेरहेताबाद में मिल सकता है।

प्राकृतिक उपलब्धि :- हमारे देश में ग्नाफालिउम लूतेओ-आल्बुम एक दुर्लभ पौधा है। औषधीय उद्देश्यार्थ इसके भण्डार पर्याप्त है क्योंकि इसकी खेती की जा सकती है। यह कोपेतदग तथा बाध्यझ राज्य अभयारण में संरक्षित है।

औषधीय कच्चा माल :- औषधीय उद्देश्यार्थ इसके तृण उपयुक्त होते हैं। पौधे के तृण को मई तथा अक्तूबर में इकट्ठा किया जाता है। उस समय 2-4 मूल प्रति चोखण्डे स्थान पर बीज की तरह रखना चाहिये। जो पौधे को औषधीय उद्देश्यार्थ इकट्ठा किया जाता है उन्हें 40 डिग्री से० से ज्यादा तापमान पर नहीं सुखाना चाहिये। इसको शामियाना के नीचे अथवा छप्पर के नीचे खुली हवा में सुखाना चाहिए। शुष्क तैयार पदार्थ की वास्तविक उपज 25-30 प्रतिशत होती है।

इस औषधी की एक विशिष्ट गंध तथा खारा स्वाद तथा नमी 13 प्रतिशत होती है। यह औषधि अंतराष्ट्रीय मानक के अनुसार बनाई गई हैं। कच्चे माल को थैलों में 3 साल के लिये रखा जाता है।

रासायनिक संघटन :- ग्नाफालिउम लूतेओ-आल्बुम का रासायनिक संघटन पर्याप्त रूप से पता नहीं चला है। पदार्थ ए (4 प्रतिशत तक), उड़नशील तैल (औसत 0.05 प्रतिशत), डामर (औसत 16 प्रतिशत), केरोटीन (12-55 मि०ग्रा० प्रतिशत), थायेमीन, फीटोस्टरीन्स, एल्कलोइड्स तथा एस्कोर्बिक एसीड़ पौधे में होते हैं। यह स्पष्ट है कि सूक्ष्म तत्व जैसे कि विटामिन्स सी, बी1, के, लोह, ताम्र, एल्ब्यूमिनियम, मैंगेनीज तृण की संरचना में उच्च तापमान पर रहते हैं।

प्रयोग :- पौधे के औषधीय नुस्खे का प्रयोग व्रण शोथ स्तब्धता में तथा जीवाणु नाशक के रूप में होता है। ये चर्मव्याधि की शीघ्रता से चिकित्सा करते हैं, आंत्र से शोषण बढता है, रक्त में स्कन्दन बढ़ाता है तथा शूल को दूर करता है। ग्नाफालिउम लूतेओ-आल्बुम का नुस्खा आमाशय शूल, लघु आंत्र के ऊर्ध्व भाग का शूल, चर्मव्रण तथा दग्धव्रण से त्वरित मुक्ति दिलाने में मदद करता है।

हृदयशूल की शुरूआत की अवस्था में इस पौधे का प्रयोग रक्तचाप बढ़ाने के लिये किया जाता है। इसके क्वाथ तथा फांट का लम्बे समय तक प्रयोग करने पर ये रोगी पर विपरीत असर नहीं दिखाते। तृण से बनाया क्वाथ का प्रयोग मलहम के रूप में लोक चिकित्सा में होता है। इसका प्रयोग प्रक्षालनार्थ अथवा गंडूषार्थ भी होता है। इसका राज्यक्ष्मा में प्रयोग कर सकते हैं।

कल्पना तथा प्रयोग :- ग्नाफालिउम लूतेओ-आल्बुम एक बड़ा चम्मच अच्छी तरह कूटे हुए चूर्ण को एक गिलास (200 मि०ली) उबलते हुए पानी में मिलाकर आधे घण्टे तक प्रतीक्षा करें। छानकर प्रतिदिन 1-2 बड़े चम्मच दिन में तीन बार पियें।

ग्नाफालिउम लूतेओ-आल्बुम के सूखे पौधे 4 बड़े चम्मच दो गिलास (400 मि०ली) उबलते हुए पानी में मिलाकर दो घण्टे तक ढक्कन लगाकर अंधेरे स्थान में रखें। छान लें।

तेल के साथ अच्छी तरह पीसे हुए पौधे को व्रण तथा सर पर लगायें।

हांतीउम स्त्रुमारिउम
HANTHIUM STRUMARIUM

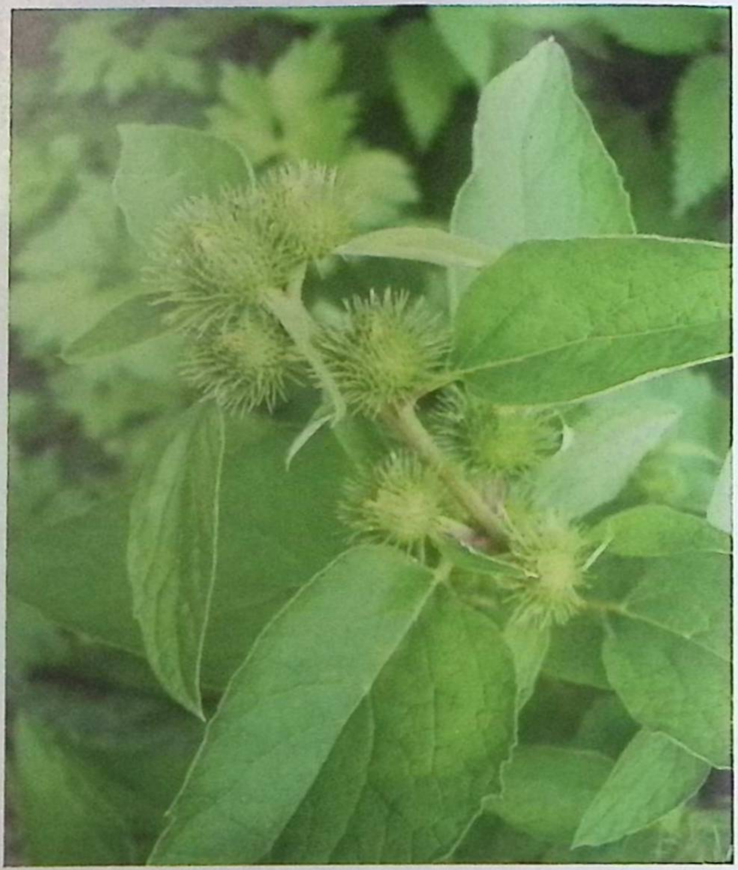

वर्णन :- हांतीउम स्त्रुमारिउम की विश्व में 70 प्रजातियाँ मध्य एशिया के देशों में 12 प्रजातियाँ तथा तुर्कमेनिस्तान में 2 प्रजातियाँ मिलती हैं। ये दोनों प्रजातियाँ औषधीय पौधे हैं। इसका एक अन्य पारंपरिक नाम शागाल बुरुन है।

हांतीउम स्त्रुमारिउम कोम्पोसिते कुल का एकवर्षिय क्षुपीय पौधा है। पौधे का तना शाखायुक्त, सीधा तथा 40-150 से०मी० लम्बा होता है। इसका वर्ण भूरा-हरित है। तना छोटे, सख्त रोम से आच्छादित होता है। पौधे के पत्र बड़े, दंतीले धारवाले 3-7 हिस्सों में विभाजित तथा तने पर एक के बाद एक स्थित होते हैं। पुष्प एकलिंगी तथा पुष्पों के एक छत्रक में स्थित होते हैं। पुष्प तने के शिखर पर अथवा तने पर लगे पत्रों के बीच स्थित होते हैं। फल अण्डाकार, 10-17 मि०मी० लम्बे होते हैं।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

जैविक लक्षण :- हांतीउम स्त्रुमारिउम मार्च-अप्रैल में उगता है, पुष्प तथा फल जून से नवम्बर तक लगते हैं। जब पेड़ के फल पक जाते हैं तब पत्र तथा तने पर कृष्ण धब्बे दिखते हैं। पौधे का स्वाद अच्छा होता है।

विस्तार :- हमारे देश में यह पौधा दाशोगुझ तथा एट्रेक में, सुम्बार तथ चेंदीर नदी के किनारे पर, पश्चिमी-दक्षिणी कोपेतदग में, नोहूर तथा गारावुल में, मध्य कोपेतदग में गेर्माप, गोकदेरे, जुलगे, मान्यष, हेयराबात, बाहारलय, आर्चमान, यारादजा में, पूर्वीय कोपेतदग में सेरहेताबात, मोर्गुनोव, साराहस, मार्य, तुर्कमेनाबात, साकार, सायात, गाराबेकेवुल, आतामयरात, एवं कोइतेन में पाया जाता है।

प्राकृतिक उपलब्धि :- हांतीउम स्त्रुमारिउम दुर्लभ पौधा नहीं है। औषधीय उद्देश्यार्थ भण्डार पर्याप्त है। हमारे देश में इस पौधे के लगभग 100 टन इकट्ठे किये जाते हैं।

औषधीय कच्चा माल :- पौधे के क्षुप, फल तथा बीज कच्चे माल है। पुष्प लगने के समय औषधीय कच्चे माल को इकट्ठा किया जाता है। इकट्ठे किये हुए कच्चे माल को सामान्य रूप से सुखाया जाता है। तैयार कच्चे माल को कागज़ के थैलों में रखा जाता है। संचयन समय 2-3 साल की है।

रासायनिक संघटन :- हांतीउम स्त्रुमारिउम के फल में वसा (41 प्रतिशत), पिच (3.3%), एग्जैन्टोस्टुमेरिन (39 प्रतिशत) फ्लेवोनोइड्स होते है। पौधे के सभी हिस्सों में आयोडीन तथा पत्र में वीटामिन सी (31.9 प्रतिशत), केरोटीन, कोमेरीन, सेपोनीन्स, टेनीन तथा एल्कलोइड्स रहते हैं।

प्रयोग:- चीन में इस पादप का प्रयोग गलगण्ड, ज्वर, अस्थमा एवं स्वेदक के रूप में किया जाता है। इसके सूखे तथा छोटे फल एवं बीज का प्रयोग विविध चर्म व्याधियों की चिकित्सा के लिये होता है।

हांतीउम स्त्रुमारिउम के फल तथा बीज का प्रयोग पूययुक्त व्रण, चर्मशोथ, कीट के दंश तथा कंडू में होता है। चीन में इस पौधे का चाइनीज फार्माकोपिया में समावेश किया गया है। फल तथा पत्र का प्रयोग पक्षाघात की चिकित्सा में होता है। पौधे के पत्र से निर्मित कल्क का प्रयोग विविध चर्म व्याधियों की चिकित्सा के लिये होता है।

तुर्कमेन पारंपरिक चिकित्सा में बीज तथा मूल के सार का प्रयोग बच्चों में प्रवाहिका तथा व्रण शोथ, मूत्राशय शोथ में तथा मद्य में रखे हुए पौधे के बीज अथवा पौधे के सुरा युक्त पेय का प्रयोग साथ ही में होता है। इसके शुष्क बीज तथा पूरे पौधे की चाय थायरोइड ग्रंथि की व्याधियाँ तथा कैन्सर के लिये प्रयुक्त होती है। पौधे के बीज का राजयक्ष्मा में धूमपान के रूप में प्रयोग होता है। जलीय सार का प्रयोग शीतला तथा कनकरूजा (कवकवृद्धि) के लिये एवं धोने के लिये होता है। लेकिन इस सार का सावधानी पूर्वक प्रयोग करना चाहिये क्योंकि यह दहन कर सकता है।

हांतीउम स्त्रुमारिउम के ताजे पौधे का प्रयोग सार बनाने के लिये किया जाता है जो मुखपाक, गण्डमाला (scrofula) तथा कैन्सर की चिकित्सा के लिये प्रयुक्त होता है। मध्य एशिया की पारंपरिक चिकित्सा में तमक श्वास, अर्श तथा गलशोथ की चिकित्सा में फांट बनाने के लिये पौधे के पत्र का प्रयोग होता है।

कल्पना तथा प्रयोग :- पौधे अथवा फल के सार का 2 चम्मच (10 ग्राम) दिन में दो बार चर्म व्याधियों में प्रक्षालन करें। प्रतिदिन एक चम्मच (5 ग्राम) पीया जा सकता है।

हांतीउम स्त्रुमारिउम के पौधे 1-2 बड़े चम्मच (15-30 ग्राम) को एक गिलास उबले हुए पानी में मिलाकर 10-15 मिनट तक उबालें। तैयार फांट को छानकर 100-150 ग्राम दिन में 3 बार लें।

सूखे फल का चूर्ण 1 बड़ा चम्मच (15 ग्राम) को 50 ग्राम वसा के साथ एक पात्र में मिलाकर कसकर ढक्कन लगाकर 7-10 दिन तक रखें। तैयार मलहम का प्रयोग विविध चर्म व्याधियों तथा कंडू के लिये करते हैं। दिन में दो बार लगायें।

बीज का चूर्ण एक चम्मच को 1 गिलास (200 मि०ली०) पानी में मिलाकर 10 मिनट के लिये उबालें। तैयार मिश्रण का आधा गिलास दिन में तीन बार भोजन पूर्व पियें। यह औषधीय मिश्रण अर्श तथा मूत्राशय शोथ में प्रयुक्त होता है।

पौधे के मूल से भी इस तरह का मिश्रण तैयार किया जाता है। बीज के चूर्ण (15 ग्राम) को 70 प्रतिशत मद्य अथवा मद्य युक्त पेय के साथ एक कांच पात्र में मिलाकर, कसकर ढक्कन लगाकर अंधेरे स्थान में 10 दिन तक रखें। तैयार फांट को छानकर 30-30 बूंद दिन में तीन बार लें। यह फांट पाषाणगर्दभ के लिये प्रयुक्त होता है।

सूखे बीज 1 बड़ा चम्मच (15 ग्राम) को 1 लीटर पानी में कुछ देर के लिये रखें। छानकर आधा गिलास (100 मि०ली) 15-20 मिनट भोजन पूर्व लें। यह औषधीय सार थायरोईड ग्रंथि चिकित्सा के लिये प्रयुक्त होता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

हेलीक्रीसुम ओओचेफालुम
HELICHRYSUM OOCEPHALUM

हांतीउम स्त्रुमारिउम
HANTHIUM STRUMARIUM

वर्णन :- इस सुनहरे पुष्प वाले पौधे की विश्व में 500 से ज्यादा प्रजातियाँ हैं मध्य एशिया के देशों में 15 प्रजातियाँ तथा तुर्कमेनिस्तान में दो प्रजातियाँ उगती है। हेलीक्रीसुम ओओचेफालुम कोम्पोसिते कुल का 30-50 से०मी० ऊँचा बहुवर्षीय पौधा है। पौधे का गाढ़ा भूरा मूल जमीन में स्थित होता है। कुछ सीधी अथवा उठी हुई शाखायें इस मूल से निकलती हैं। पत्र एक के बाद एक स्थित होते हैं, धार दाँतदार तथा सूक्ष्म रोम से आच्छादित होती है। पुष्प छोटे, पीत, क्वचित् नारंगी तथा गोलाकार आन्थोडियम में इकट्ठे होते हैं। कांड का ऊर्ध्व भाग बहुत मोटा होता है। आन्थोडियम 4-6 मि०मी० ऊँचा होता है। पुष्प नलिकाकार होते हैं। इसका फल एक लम्बीकृत, रोमाच्छादित बीज है।

जैविक लक्षण :- हमारे देश में यह पौधा समुद्र तल से 800-1600 मीटर की ऊँचाई पर उगता है। इसको रेतीली अथवा कंकर युक्त भूमि पर उगना पसंद है। इसमें जून-अगस्त तक पुष्प आते हैं।

विस्तार :- हेलीक्रीसुम ओओचेफालुम दक्षिण-पश्चिमी कोपेतदग में, मध्य कोपेतदग, आर्वाझ, गारायालचय, मुसुनेव, मेर्गेनोलेन, गयलगयलाव, मुर्झेदाग, हेयराबात, आर्चाबील, सेमांसुर, बुदयोनोवोस्कीय पहाड़ियां, सारयहाझाव, दुशाकेरेक, युलय, गारांकी, गीन्दीवार, असयलमा, बाबाझाव, दाग्यश, दाशतोच, दोगरथदेरे, होवदानानीएरा, गेर्माप, गोकदेरे, जुलगे, आर्चाबील, गीन्दीवार, बामच तथा पूर्वीय कोपेतदग में गुर्यहोवदान में उगता है।

प्राकृतिक उपलब्धि :- यह पौधा हमारे देश के दुर्लभ पौधों में नहीं है। औषधीय उपयोगार्थ इसके भण्डार पर्याप्त है। मुख्यतः ये मध्य कोपेतदग में मिलता है। 2007 पंजीकरण अनुसार 15-25 हेक्टर मे पौधे को उगाया जाता है।

औषधीय कच्चा माल :- इसके पुष्पों का एन्थोडीयम औषधीय उत्पाद के रूप में उपयोग होता है। कच्चे माल छत के नीचे ताजी हवा में सुखाये जाते हैं तथा तैयार किये जाते हैं। तैयार माल को सूखे कमरों में कागज़ के थैलों में रखा जाता है। संचयन समय की अवधि 1-2 साल है।

रासायनिक संघटन :- पौधे के पुष्प-फल में तिक्त पदार्थ ए, रंजक द्रव्य, केरोटीन, वीटामिन सी, उत्पत् तेल, फ्लेवोनिक ग्लायकोसाईड, स्टीरोलस, गोंद, सेपोनिन्स, शर्करा, सोडियम, पोटेशियम, लोह तथा मेंगेनीझ के लवण होते हैं। इसके पौधे में टेनीन, विटामिन के तथा उत्पत् तेल पाये गये हैं।

प्रयोग :- हेलीक्रीसुम ओओचेफालुम यकृत्, आमाशय तथा आंत्र की व्याधियों के लिये एक पुरानी राष्ट्रीय औषधि है। साथ ही ये भी पाया गया है कि औषध उत्पाद पित्त स्रावक, पित्त सारक, पित्ताम्ल की सांद्रता कम करने वाला, पित्ताशय के तथा आमाशय की शक्ति को बढ़ाने वाला तथा वृक्क के लिये उपयोगी है। औषध का प्रयोग फांट के रूप में होता है। क्षीर तथा प्रवाही का प्रयोग पित्तसारक के रूप में तथा जीर्ण यकृत्-एवं पित्ताशय-व्याधियों के लिये होता है। राष्ट्रीय चिकित्सा में हेलीक्रीसुम ओओचेफालुम का प्रयोग पित्ताशय तथा यकृत की व्याधियों के लिये श्रेष्ठ नुस्खे के रूप में होता है।

कल्पना तथा प्रयोग :-पौधे पुष्प के बारीक कटे हुए टुकडे 3 चम्मच को 2 गिलास ठंडे पानी में मिलाकर 8 घण्टे तक रखें। छानकर प्रतिदिन 1 गिलास दिन में तीन बार लें।

एक तामचीनी पात्र में एक बड़ा चम्मच (15 ग्राम) पुष्प के एन्थोडियम को 2 गिलास पानी में मिलाकर धीमी आंच पर 10 मिनट के लिये उबालें। तैयार फांट 1 गिलास (200 मि०ली०) भोजन पूर्व पियें।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

हेर्निआरिआ ग्लाब्रा HERNIARIA GLABRA

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

हेलीक्रीसुम ओओचेफालुम
HELICHRYSUM OOCEPHALUM

वर्णन :- इस औषधीय अपतृण की विश्व में 35 प्रजातियाँ हैं। मध्य एशिया के देशों में 9 प्रजातियां तथा तुर्कमेनिस्तान में 3 प्रजातियाँ मिलती हैं। इसका दूसरा नाम डाँग्स सोप है।

हेर्निआरिआ ग्लाब्रा औषधीय पौधों का प्रतिनिधि है। यह 5-15 से॰मी॰ लम्बा एकवर्षीय पौधा है। मुख्य डंठल शाखाओं से बढ़ता है तथा अनावृत अथवा कुछ रोमों से आच्छादित होता है। पत्र लम्बे होते हैं, आकार में अण्डाकार नहीं होते, 0.2-1 से॰मी॰ लम्बे, 0.1-0.3 से॰मी॰ चौड़े होते हैं। ये दबा हुआ तथा तंतु के साथ जुड़ता है, जो तीक्ष्ण अथवा कुंठिताग्र एवं अनावृत होता है। पत्र की धार आवृत तथा इसके ऊपर लम्बे रोम होते हैं।

पुष्प छोटा, सादा, पीताभ हरा तथा तंतु रहित होता है। दल कप के जैसे दिखते हैं। यह (दल) एक में पांच होते हैं। पत्र विपरीत लट्वाकार कुंठिताग्र तथा अनावृत होते हैं। पत्र का स्वरूप पुष्प के स्वरूप जैसा होता है तथा उसके 5 तंतु होते हैं। फल में एक बीज होता है, खुलता नही हैं, अण्डाकार तथा सख्त काष्ठफल होता है। बीज कृष्ण-धूंसर, चमकीला तथा चिकना होता है।

जैविक लक्षण :- हमारे देश में यह पौधा 800-1200 मीटर की ऊँचाई पर उगता है। इसको छोटी घाटी में उगना पसंद है। हेर्निआरिआ ग्लाब्रा में जून-जुलाई में पुष्प तथा फल लगते हैं। यह बीज द्वारा प्रजनन करता है। एक हजार बीज का वजन लगभग 0.07 ग्राम होता है।

विस्तार :- पूर्व-पश्चिमी कोपेतदग में, गार्दाग (ऊपरी सुम्बार) तथा कोयतेनदग में।

प्राकृतिक उपलब्धि :- यह दुर्लभ पौधों में से एक है। इसके भण्डार औषधीय उद्देश्यार्थ पर्याप्त नहीं है। इसकी खेती करनी चाहिये। इसका संरक्षण सुंत-हाझारदाग तथा कायतेनदग राष्ट्रीय उद्यानों में किया गया है।

औषधीय कच्चा माल :- इसका कच्चा माल उसका पौधा है। इसमें जब पुष्प लगते हैं तब उसको इकट्ठा किया जाता है। कच्चा माल केवल पौधे में है, मूल तथा शाखा (10 से॰मी॰) के बिना इसको सामान्य रूप से पेन्टहाऊस में सुखाया जाता है उसका वर्ण हरा-पीत, 0.2-1 से॰मी॰ लम्बा होता है। इसकी गंध कोमेरीन जैसी होती है। स्वाद कटु तथा नम होता है। कच्चे माल को कपड़े के थैलों में रखा जाता है। संचयन समय की अवधि 2 साल है।

रासायनिक संघटन :- क्षुप के पौधे में 0.70-0.85 प्रतिशत कोमेरीन्स होते हैं। इसमें कोमेरीन, अम्बेलीफेरोन तथा 0.12 प्रतिशत-2.43 प्रतिशत फ्लेवोनोइड्स, क्वेरसेटीन, ट्रायग्लायकोसाइड, एरेबीनोसाइड, क्वेरसेटीन गेलेकटोसीड, हर्नीओग्लायकोसाइड, 1.77- 11.62 प्रतिशत ट्रायटर्पीन सेपोनीन्स, बी तथा सी ग्लेब्रोसीड्स, 6.63 प्रतिशत एन्टोसायान्स एवं एन्थ्राग्लायकोसाइड्स, 0.63 प्रतिशत ओर्गेनिक एसीड, 2-3.5 प्रतिशत पदार्थ ए, 1.72 प्रतिशत डामर, 5.55 प्रतिशत नमी, कार्बोहाइड्रेट (हाइड्रोलायसीस), 96 मि॰ग्रा॰ प्रतिशत विटामिन सी, 0.27 प्रतिशत केरोटीन, 0.6 प्रतिशत इथरीअल तेल तथा कुछ पेरोनीहीन एल्कलोहड होते हैं। पशुओं को इस पौधे के प्रवाही से नहला सकते है, इसलिये इस पौधे को डाँग्स सोप कहते हैं।

प्रयोग :- प्राचीन समय से ही इस पौधे के औषधीय गुण पता हैं। इसका प्रमाण इसके कुल नाम से मिलता है। (हर्निया) आन्त्रवृद्धि की चिकित्सा के लिये प्रयुक्त होता है)। अबु रेयहान बीरूनी ने अपनी पुस्तक फार्मकोग्नोसी इन मेडिसिन में लिखा है कि यह फुफ्फुस तथा प्लीहा के शूल को दूर करने में मदद करता है। लोक चिकित्सा में पौधे के तृण का प्रयोग तीव्र प्रतिश्याय तथा वस्ति विकारों जैसे कि मूत्रल नुस्खा, मृदुता, वृक्क तथा फुफ्फुस व्याधियाँ, गठिया, श्लेष्मज श्वसननलिका शोथ, संधिशोथ, संधि तथा पूयमेह में

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

होता है। इसका व्रण रोपण के लिये लेपनार्थ तथा आंत्रवृद्धि में प्रयोग होता है।

मध्य एशिया की लोक चिकित्सा में इसका प्रयोग वृक्क शोथ, मूत्राशय के विकारों में मूत्रल नुस्खे के रूप में तथा कामला में होता है। तुर्कमेन लोक चिकित्सा (कोयतेनदग एवं मागत्यंगुलय आदि) में लोग पौधे के सूखे क्षुप से चाय बनाते हैं। बाद में इसको फुफ्फुसीय राजयक्ष्मा, आमाशय एवं आन्त्रशोथ वृक्क तथा फुफ्फुस की दौर्बल्यता, गुप्त व्याधियों के लिये पीते हैं। इसका प्रयोग मूत्रप्रवृत्ति तथा स्वेदन नुस्खे के रूप में भी किया जाता है। प्रति सुबह इस चाय का 1/2 से 1 कप भोजन से पूर्व पीयें। चर्म वर्ण विकृति, श्वित्र तथा लाईकेन जैसी व्याधियों में इस तृण की प्रवाही से स्नान करना चाहिए।

चिकित्सकीय संशोधनों के कारण इस पौधे में कोमेरीन संयोजन का पता चला है। इसमें फ्लेवोनोइड्स है जो मूत्रप्रवृत्ति में मदद करते हैं। जर्मन भैषज्यकोष में पौधे के तृण का प्रयोग गुप्तरोग तथा उपदंश में बताया है।

कल्पना तथा प्रयोग :- एक गिलास उबले पानी में दो चम्मच (10 ग्राम) शुष्क पीसे हुए पौधे को मिलायें। ठण्डा करें। चाय को छानकर एक बड़ा चम्मच (15 ग्राम) दिन में 3-5 बार लें। इस फांट में मूत्रल गुण हैं।

दो गिलास (400 मि०ली) उबले हुए पानी में 3 चम्मच (15 ग्राम) पौधे के तृण को मिलाकर 15 मिनट के लिये रखें। छानकर इस फांट को दिन में तीन बार लें। इसका प्रयोग वृक्क एवं सिरा रोगों में तथा मूत्रल के रूप में किया जाता है। यह अश्मरी तथा शर्करा को वृक्क तथा मूत्राशय से बाहर निकालने में मदद करता है।

एक तामचीनी पात्र में एक बड़ा चम्मच पौधे के तृण में एक गिलास (200 मि०ली०) पानी मिलाकर 5 मिनिट्स के लिये धीमी आंच पर उबालें। छानकर 1 बड़ा चम्मच दिन में 5-6 बार लें।

पौधे के ताजे निचोड़े हुए रस 2 बड़े चम्मच (30 ग्राम) दिन में 3-4 बार लें। इसका प्रयोग गुप्तरोग तथा उपदंश की चिकित्सा के लिये किया जाता है।

हीओशिआमुस नीजेर
HYOSCYAMUS NIGER

वर्णन :- इस विषैले एवं औषधीय पौधे की लगभग 20 वन्य प्रजातियाँ विश्व में पाई जाती हैं जिनमें से मध्य एशिया के देशों में 10 तथा तुर्कमेनिस्तान में 4 प्रजातियाँ पाई जाती हैं। यह लेपेसीयम कुल से है। यह 30-50 (100) से०मी० ऊँचा द्विवर्षीय पौधा है। अपने पहले वर्ष में पौधे को गुच्छे के रूप में पत्र लगते हैं। द्वितीय वर्ष में पुष्प लगते हैं तथा तीसरे वर्ष में फल लगते हैं। पत्र बड़े तथा लम्बे होते हैं। पुष्प बड़े तथा गहरे पीत होते हैं। इसमें अप्रैल में पुष्प तथा मई में फल लगते हैं।

जैविक लक्षण :- पौधा समुद्रतल से 400-600 मीटर की ऊँचाई पर उगता है। इसका विकास विशिष्ट है। यह घने रोमों से आच्छादित होता है। पुष्प में दुर्गन्ध तथा तेज तिक्त स्वाद होता है। पौधा औषधीय होने के साथ विषैला भी है।

हीओशिआमुस नीजेर एक वन्य पौधा है, जो अपने निजी कारणों से सर्वत्र फैला हुआ है। पहला कारण यह है कि उसमें अनेक बीज होते हैं। एक पौधा 10,000 बीज उत्पन्न करता है। कुछ पुस्तकों में लिखा है कि अगर यह उर्वरा भूमि में उगे तो एक पौधे में से 950,000 बीज उत्पन्न हो सकते हैं। दूसरा कारण यह है कि इसके बीज खराब परिस्थितियों में भी लम्बे समय तक खराब नहीं होते।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

विस्तार :- हीओशिआमुस नीजेर बालखान, मावलेम, उझनाकार, दक्षिण-पश्चिमी कोपेतदग, मुस्ताफादेरे, एयदेरे, पोरदेरे, मागत्ययगुलय, मध्य कोपेतदग, आर्चाबील, गोकदेरे, नोहूर, गारासुवदेरे, आर्चमान, केलवेचाय, उलय बाकजा, पूर्व कोपेतदग, गुर्यहोवदान, चयरलाक तथा कुगीतांग पर्वतों में विस्तृत रूप से फैला हुआ है।

प्राकृतिक उपलब्धि :- यह दुर्लभ पौधा नहीं है। बाह्य प्रयोगार्थ इसके प्राकृतिक भण्डार पर्याप्त है। सुलुल्ली मध्य कोपेतदग के देगीरमेनली में यह लगभग 8 हेक्टर क्षेत्र में फैला हुआ है। यहां इसका कच्चा माल लगभग 346 सेंटनर के बराबर है। गेरमाप-हेयराबात में यह 12 हेक्टर क्षेत्र में फैला हुआ है तथा इसकी उपज 457 सेंटनर के बराबर है। पूर्वीय कोपेतदग में गुर्यहोवदान (गुर्यहोवदान-चारलाक प्रांत) के 20 हेकटर क्षेत्र में फैला हुआ है। कच्चे माल की उपज 458 सेंटनर तक पहुंचती है। इसकी खेती भी की जा सकती है।

औषधीय कच्चा माल :- बाह्य प्रयोगार्थ इसके ऊर्ध्व भाग अर्थात् पुष्प, तरुण फल तथा ताजे पत्रों का प्रयोग होता है। कच्चे माल को सामान्य रूप से ही इकट्ठा किया जाता है तथा सुखाया जाता है। इसके बाद इसकी दुर्गन्ध बिलकुल चली जाती है। तैयार कच्चे माल को कागज़ अथवा कपड़े के थैलों में सूर्यप्रकाश से दूर संचित किया जाता है। इसकी संचयन समय की अवधि 2 साल है।

रासायनिक संघटन :- पौधे में जीओसीएमीन, एट्रोपीन, स्कोपोलेमाईन, एल्कलोइड्स, ग्लायकोसाइड, एमोर्फीक तत्व जैसे जीओसीपीक्रीन्ट, जीओसेरीन तथा जीओसिएमिन होते है। इसके बीज में तेल होता है। इसका प्रयोग ओलिनिक लिनोलिक औक्साइड्स में योज्य के रूप में होता है।

प्रयोग :- बहुत समय पहले ही पता था कि हीओशिआमुस नीजेर एक औषधीय पौधा है। बेबीलोन, मिस्र, इरान तथा अरब देशों में इसका अधिक प्रयोग होता था। औरेलिया (ई०पू० 5वीं सदी), कोर्नेलीओ सेलसी (ई०पू० प्रथम सदी), प्लाइनी वरिष्ठ (ई०पू० 23-79), अपूली (ई०पू० दूसरी सदी) तथा इब्न अली सीना एवं अबु रयहान बीरूनि ने अपने पुस्तकों में इस पौधे के औषधीय गुणों के बारे में लिखा है।

इनके औषधीय गुणों के बारे में विस्तृत जानकारी प्राप्त है। मोंगोलियन चिकित्सा में इसका प्रयोग साइबेरीयन व्रण, रोहिणी तथा शीतला के लिये होता था। पौधे की नई फसल से निर्मित सार का प्रयोग होमियोपेथी में अवसाद मनोरोग बच्चों में मीनमीनत्व कास, दृष्टि विकार तथा मिम्पोमानिया में होता है।

लोक चिकित्सा में इस पौधे का प्रयोग शूलहर के रूप में, नाड़ी शूल, शिरःशूल, तमक श्वास, जीर्ण श्वसननलिका शोथ उरस्तोय, मूत्रवहसंस्थान के रोग मूत्रल कर्म, रजःकृच्छ रजोनिवृत्ति की पूर्वावस्था, पित्ताश्मरी तथा गठिया में होता है। पौधे का टिंकचर ग्रंथि की शुरूआत की अवस्था में उपयोगी है।

पौधे का दूध के साथ उबाला हुआ टिकचर व्रण में प्रयुक्त होता है। मध्य एशिया के देशों में तथा पश्चिमी युरोप में पौधे के पत्रों को आधिकारिक रूप से औषधीय संसाधन घोषित किया गया है।

पाचन संस्थान की विकृतियों में पत्रों का टिकचर तथा ऐंठन को दूर करने एवं शूलहर के रूप में प्रयुक्त होता है। यह अस्टामेटिन का एक घटक द्रव्य है।

प्रसूति-स्त्री रोग में इस पौधे के औषधीय सुरा सार तथा तेल का प्रयोग सकष्ट आर्तव प्रवृत्ति, योनिरोग, गर्भाशय ग्रीवा की मांस पेशियों का संकोच, गुद संकोच तथा मूत्र सम्बन्धी विकारों में होता है।

मोंगोलियन चिकित्सा में पत्रों से बना औषध चर्म व्याधि, त्वक् रोग, रतिरोग, स्केबीस, त्वक् रोग, उपदंश तथा कृमि में होता है।

निचोड़कर प्राप्त किया हुआ ताजा स्वरस व्रण, विद्रधि, पूययुक्त व्रण, ग्रन्थि, मुख नाडीशूल तथा पक्षाघात में प्रयुक्त होता है। पौधे से बनाये हुए प्रवाही का प्रयोग ऐंठन, संधिशूल, मांसपेशी शूल व्रण तथा श्वसन संस्थान के संक्रमण उरस्तोय तथा कर्ण शोथ में होता है।

मलहम (पत्र के तेल से निर्मित औषध) का प्रयोग गुदा के मांस के संकोच, गर्भाशय ग्रीवा एवं मूत्र विकारों में प्रयोग होता है। इस पौधे से बना हुआ औषधीय सुरा सार तथा मुरब्बा जीवाणु के विरुद्ध रक्षा करते है।

मोंगोलियन चिकित्सा में इस पौधे के पुष्प तथा फल का प्रयोग कृमि के लिये होता है। यह नुकसान देय कीड़े (मक्खी, मच्छर तथा जूएं) को मारती है। फ्रांस तथा पोलुंगल में इस पौधे के बीज को औषधी घोषित किया गया है।

हिंदु-तिब्बती चिकित्सा में इस पौधे का प्रयोग संक्रमण जन्य व्याधियों में किया जाता है। इसके फल का प्रयोग श्वसनक ज्वर, आमाशय शोथ, आंत्र शोथ, लघु आंत्र शोथ, वृक्क शोथ, मूत्राशय-मूत्रनलिका शोथ, शिरःशूल तथा अनिद्रा में होता है। इस पौधे से निर्मित धूमवर्ती (cigarette) दंतशूल में प्रयुक्त हो सकता है। अस्थि की व्याधियों में इसके ताजे क्षीर से बने मलहम का प्रयोग होता है।

हीओशिआमुस नीजेर से निर्मित औषधीय सुरासार, मुरब्बा, मलहम तथा पेय का प्रयोग बहुत सावधानी पूर्वक करना चाहिये क्योंकि यह विषैला है।

कल्पना तथा प्रयोग :- एक तामचीनी पात्र में एक बड़ा चम्मच (15 ग्राम) पौधे को एक गिलास (200

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

मि०ली) पानी में मिलाकर धीमी आंच पर 5-10 मिनट के लिये उबालें। कपड़े से छानकर एक चाय का चम्मच दिन में तीन बार पीयें।

एक कांच पात्र में हीओशिआमुस नीजेर के पुष्प तथा पत्र (15 ग्राम) को एक गिलास औषधीय मद्य में मिलाकर कसकर ढक्कन लगायें। बीच-बीच में मिश्रण को हिलाते रहिये। 8-10 दिन के पश्चात् इसको कपडे से छान लें। शरीर के शूल युक्त स्थानों पर इस बाम को लगाया जाता है।

एक गिलास (200 मि०ली) वनस्पति तेल में पौधे के पत्र, पुष्प तथा बीज, एक बड़ा चम्मच को मिलाकर 10 दिन तक रखें। कपड़े से छानकर इसको शरीर के शूलयुक्त स्थान पर लगायें।

दंतशूल अथवा तमक श्वास में पौधे के पत्र का धूमपान करना चाहिये।

206

हीपेरिकुम पेर्फोरातुम
HYPERICUM PERFORATUM

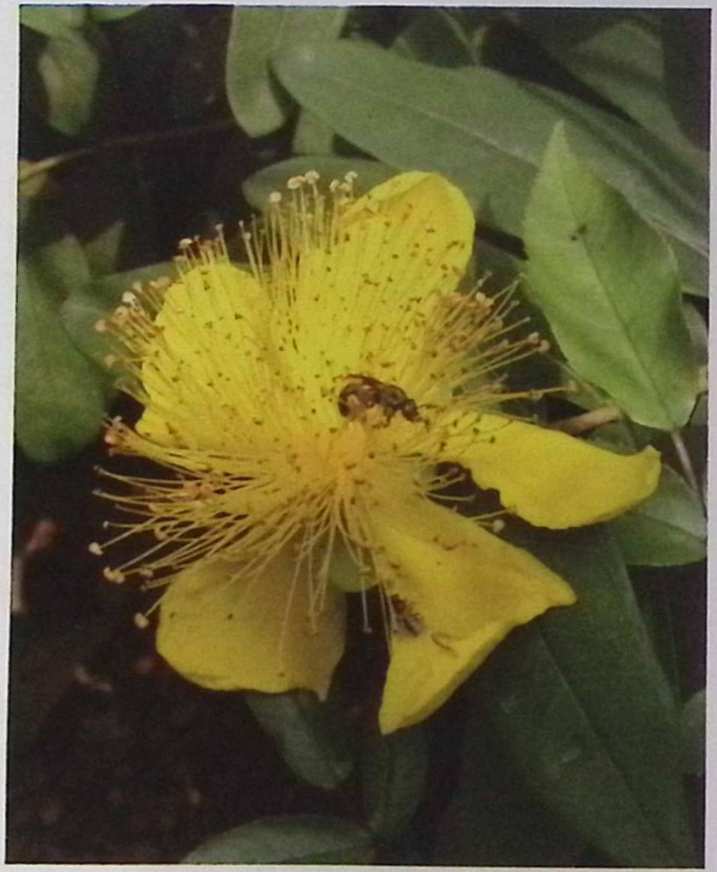

हीपेरिकुम पेर्फोरातुम 100 से०मी० ऊँचा, बहुशाखित क्रमशः सिकुडते हुए मूलवाला एक बहुवर्षिय क्षुपीय पौधा है। तना सीधे खड़े, अनावृत, चीकने (उभार रहित), द्वितल, हरे अथवा मेंहदी-रक्त वर्ण के, तथा अग्र भाग पर शाखित होते हैं। पत्र विपरीत अथवा विस्तृत अण्डाकार (0.7-3.5 से०मी० लम्बे तथा 0.2-1.5 से०मी० चौड़े) पारदर्शी बिंदुयुक्त उत्पत् तेल के ग्रंथिका वाले अनावृत तथा चिकने धार वाले होते हैं। पुष्प विन्यास पृष्टभाग में जुड़े नाल युक्त गुच्छे, बहुपुष्पित होता है। पुष्प स्वर्णिम पीत, पांच दलवाला विस्तृत अथवा विस्तृत दीर्घवृतीय (1-2 से०मी० लम्बे, 0.4-0.5 से०मी० चौड़े) कृष्ण बिंदुयुक्त ग्रंथिका वाले होते हैं। फल त्रिकोणीय द्रक्षागुच्छ आकार, दीर्घाक्ष अण्डाकार फलावरण में (0.5-1 से०मी० लम्बा) होता है, जो तीन हिस्सों में टूटता है। बीज सूक्ष्म, दीर्घान्त अथवा नलाकार, गहरे-भूरे, 1 मि०मि० लम्बे होते हैं। एक हजार बीज का वजन 0.10-0.15 ग्राम होता हैं। इसको मई-जुलाई में पुष्प लगते हैं तथा जुलाई-अगस्त में फल लगते हैं। बीज सितम्बर-अक्तूबर में पकते है।

जैविक लक्षण :- ये पहाड़ियों की ढलानों पर नदी किनारों पर, सिंचाई नहरों के साथ-साथ, बगीचों में, सिंचाईकृत जमीन पर, समीप के मार्गों पर उगता है। यह सिवलजाक के क्षेत्रों में, पतझड़ वाले जंगल तथा बड़े पौधे वाले स्थानों में, यव गोधूम के तृणों में सतृण अफसन्तीन, बादाम तथा पिस्ता के जंगल में, सूरकी घास वाले क्षेत्र में तथा मेपल के जंगलों में मिलता है।

विस्तार :- कुरेगदाग, बोलशोइ बालखान, दक्षिण-पश्चिमी, मध्य तथा पूर्वीय कोपेतदग, कुगीतांग।

प्राकृतिक उपलब्धि :- हीपेरिकुम पेर्फोरातुम के पुष्पीय तथा पत्रीय अग्रभाग औषधीय उद्देश्यार्थ प्रयुक्त होते हैं। पुष्प खिलने के समय 15-20 से०मी० के क्षुप के टुकड़े इकट्ठे किये जाते हैं। इकट्ठे किये हुए कच्चे माल को सुखाने के यन्त्र में 60 डिग्री से० से ज्यादा ना हो ऐसे तापमान पर सुखाया जाता है। तैयार माल में कांड के सपुष्प, सपत्र अग्र भाग अथवा कांड से अलग किये गये पुष्प तथा पत्र का मिश्रण होता है। गंध बालसम जैसा तथा स्वाद तिक्त रालीय तथा किञ्चित् कषाय होता है। संचय की समय अवधि 3 साल है। सुखाया हुआ हीपेरिकुम पेर्फोरातुम अपने औषधीय गुण 10 साल तक गंवाता नहीं है।

रासायनिक संघटन :- पौधे के भूमिगत हिस्सों में 3.8-12 प्रतिशत पायरोकेटेच्चीन समूह का टेनीन, 2 प्रतिशत फलेवोनोइड्स रुटिन हायपरोक्बेरसेटिन, क्वेरसेस्नि, आईसोक्वेर सेटिन उत्पत् तेल एल पिनेन सेस्क्टिरपेन 10-15% तक राल 10-17 प्रतिशत केरोटीन, 0.15-0.25 प्रतिशत विटामिन सी, 3-6 प्रतिशत एन्थोस्यानिन, 4-6.5 प्रतिशत श्लेज्मक, 5-8 प्रतिशत शर्करा आदि पाये गये थे। हायपेरिसिम स्यूडोपैरिसिन, फ्रेन्युलीमोडिनन्ट्रोल, (0.1-0.9) आदि को रंजक द्रव्यों में से अलग किये गये हैं।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

प्रयोग :- हीपेरिकुम पेर्फोरातुम सबसे पुराने प्रयोज्य पौधों में से एक है। प्राचीन तथा मध्ययुगीय महान वैज्ञानिक तथा चिकित्सक डायोस्कोराइड, गालेन, झाखारीआ रोझी, अबु रयहान बिरूनी, अबु अली इब्न सीना आदि ने हीपेरिकुम पेर्फोरातुम के रोपक गुणों के उपयोग की सलाह दी है। अबु अली इब्न सीना के अनुसार हीपेरिकुम पेर्फोरातुम एक विरलीय स्रोतो शोधक, कृशजन्य, शामक नुस्खा है तथा वह मूत्रल एवं आर्तवजनक है। मद्य में उबाला हुआ हीपेरिकुम पेर्फोरातुम ऊरुशूल तथा गृध्रसी नाडी के शोथ को दूर करने वाला है। मुख से लिया हुआ बीज चातुर्थक ज्वर को शांत करता है। तथा स्तम्भक के रूप में कार्य करता है। इसके पत्र से बनाई हुई औषधीय पट्टी दग्धव्रण, महान व्रण तथा कैन्सर युक्त व्रण में लाभप्रद है।

विविध रोगों में हीपेरिकुम पेर्फोरातुम लिया जाता है। हृद्रोग तथा रक्तवाहिनी के रोगों में टोनिक के रूप में एवं रक्तप्रदर में रक्तस्तंभक के रूप में हायपरीकम पर्फोरेटम के सुखाये हुए पौधों को चाय के जैसे उबालकर प्रयुक्त किया जाता है। क्षुप के क्वाथ को पाचन संस्थान तथा यकृत् की व्याधियों में, मूत्राशय की व्याधियों में, पित्ताश्मरी, स्त्री रोग, वृक्क शोथ, उच्च रक्तचाप संधिगत गठिया, गण्डमाला, रक्तष्ठीवन, कास आदि में लिया जाता है। हीपेरिकुम पेर्फोरातुम के मूल के प्रयोग की सलाह राजयक्ष्मा प्रवाहिका तथा फीताकृमि के लिये दी जाती है।

हीपेरिकुम पेर्फोरातुम जठराग्नि दीपन करता है, आंत्र के कार्य को सुधारता है, मूत्रोत्सर्ग कर तथा रक्तस्तंभक और सामान्य स्वास्थ्य-वृद्धिकर असर दिखाता है। हीपेरिकुम पेर्फोरातुम का फांट जीर्ण आमाशय शोथ के ऊपर सकारात्मक प्रभाव डालता है। चिकित्सा शास्त्र में पौधे का कषाय, शोफशामक तथा कीटाणु नाशक के रूप में प्रयुक्त किया जाता है। इसका प्रयोग नूतन तथा जीर्ण आंत्रशोथ में भी होता है।

पाचन संस्थान की श्लेष्मग्राही व्याधियों (नूतन तथा जीर्ण आंत्रशोथ, अतिसार, रक्तातिसार सहित) में पौधे के फांट तथा औषधीय सुरासार को कषाय तथा जीवाणु नाशक औषध के रूप में लिया जाता है। इसका स्थानिक प्रयोग तेल सार तथा इसके योग इमानिन एवं नोरोइमानिन के रूप में व्रण रोपणार्थ, नूतन तथा संक्रमित व्रणों में कीटाणु नाशक के रूप में, दग्ध की दूसरी से तीसरी अवस्था में तथा व्रण में होता है। मुख गुहा की व्याधियाँ दंतवेष्टक शोथ तथा मुखपाक में दंतवेष्टन पर लेपनार्थ पौधों के 5-10 प्रतिशत फांट तथा 20 प्रतिशत टिंकचर का प्रयोग किया जाता है। पौधे का टिंकचर (10 प्रतिशत) के प्रयोग की सलाह विभिन्न प्रकार के कृमियों की चिकित्सा में दी जाती है।

यह साबित हो चुका है कि हीपेरिकुम पेर्फोरातुम के भूमि से ऊर्ध्व हिस्से का 20 प्रतिशत कषाय सूर्यमुखी के तेल के साथ दुष्ट व्रण तथा पोषणजन्य घाव को शांत करता है। बलगेरिया में हीपेरिकुम पेर्फोरातुम के मोनोमरीक केटेचीन के घनीकरण से प्राप्त उत्पाद पे फ्लाविट का प्रयोग सूतिका आमवात (Purpura rheumatic) जीर्ण यकृत्शोथ तथा ऐसे अन्य व्याधियों की चिकित्सा के लिये करने की सलाह दी जाती है।

कल्पना तथा प्रयोग :- 100 ग्राम ताजे पौधे पर 1 गिलास (200 मि०ली०) तेल (सूर्यमुखी, बादाम अथवा जैतून का) डालकर आधा गिलास (100 मि०ली०) सफेद मद्य मिलायें। तीन दिन तक रखें। ''हीपेरिकुम पेर्फोरातुम तेल'' प्राप्त करने के लिये धीमी आंच पर उबालें। छान लें। व्रण तथा दग्धव्रण के लिये प्रयोग करें। आमाशय तथा ग्रहणी के व्रण के लिये एक चाय का चम्मच (5 ग्राम) दिन में तीन बार भोजन पूर्व लें।

इनुला ब्रितानिका
INULA BRITANICA

वर्णन :- इनुला ब्रितानिका एक क्षुपीय पौधा है, यह क्वचित् ही गुल्मीय होता है। विश्व में 150 प्रजातियां, मध्य एशिया के देशों में 30 तथा तुर्कमेनिस्तान में 8 प्रजातियाँ उगती हैं। लोक नाम कुयाशगुलकार,आन्दयज, कालबोच्च तथा सरयसोलमाझ हैं।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

इनुला ब्रितानिका कोम्पोसिते कुल का 40-60 से०मी० ऊँचा बहुवर्षिय क्षुपीय पौधा है। कांड सीधा अथवा आरोही, आधा दबा हुआ पिच्छाकार रोम से आच्छादित होता है। कंद नलाकार, 6-7 से०मी० तक गांठदार तथा गांठे सतत होती है। पत्र भालाकार होते हैं। पत्र विन्यास सुन्दर होती है। अधोपत्र सवृंत तथा मध्य एवं ऊर्ध्व पत्र अवृंत होते हैं।

जैविक लक्षण :- इनुला ब्रितानिका समुद्र तल से 1200-1800 मीटर की ऊँचाई पर उगता है। जीवन के प्रथम वर्ष में पौधे में पत्र उगते हैं। दूसरे वर्ष में (अगस्त-सितम्बर में) पुष्प तथा फल लगते हैं। इनुला ब्रितानिका बीज तथा प्रकन्द से प्रजनन करता है। अंकुरण समय 3-4 साल का है।

विस्तार :- यह प्रजाति मध्य काराकुम में, आर्चाबील, गोकपेदे, सुलुकली, प्रोहलादनोये, गेर्मांप, कुरकुलाब, दक्षिण-पश्चिमी कोपेतदग में तथा कोनेकेसीर में विस्तृत रूप से मिलता है।

प्राकृतिक उपलब्धि :- औषधीय उद्देश्यार्थ इनुला ब्रितानिका के प्राकृतिक भण्डार पर्याप्त है। यह दुर्लभ क्षुपीय पौधा है। इसकी खेती करने की सलाह दी जाती है। उर्वरा भूमि में पौधा अच्छी फसल देता है। एक हेक्टर के लिये 5 किलोग्राम बीज की जरूरत होती है।

औषधीय कच्चा माल :- औषधीय प्रयोग के लिये प्रकंद तथा मूल इकट्ठे किये जाते हैं। फसल इकट्ठा करने का समय शुरूआती वसंत अथवा पतझड़ होता है। इस समय पौधा जैविक रूप से क्रियाशील तत्व इकट्ठा करता है। प्रकंद को मूल के साथ खोदा जाता है तथा मिट्टी हटाकर ठंडे पानी से धोया जाता है। सुखाने से पहले बड़े प्रकंद तथा मूल को मध्य-कंद के टुकड़ों में काटा जाता है। तैयार कच्चे माल को कागज़ के थैलों में पैक किया जाता है। इनको सूखे तथा अच्छी तरह हवादार कमरों में संचित किया जाता है। संचयन समय की अवधि 2-3 साल है।

रासायनिक संघटन :- तैयार कच्चे माल में तेज लेकिन मनोहर स्वाद होता है। भूमिगत हिस्सों में 1-3 प्रतिशत तक इथरीअल तेल होते हैं। इसमें सेपोनीन्स होते हैं। पौधे में 40-45 प्रतिशत इन्युलीन है। फल में एल्कलोइड्स सूक्ष्म मात्रा में मौजूद होते हैं। कांड से ब्रिटानीन प्राप्त किया जाता है।

पोलीसेकेराइड् इन्युलीन की खोज 1804 में की गई तथा इसका नाम पौधे के पीछे रखा गया। ''इन्युअस प्राचीन ग्रीक लोगों के देवता थे। प्राचीन ग्रीक लोगों का मानना है कि इनुला ब्रितानिका के पुष्प ऐलेना के अश्रु से उत्पन्न हुए थे। बाद में ये पता चला कि कोम्पोसिते कुल की कई प्रजातियों में पोलीसेकेराइड् एक संयोजक है।

प्रयोग :- लोक चिकित्सा में इनुला ब्रितानिका का प्रयोग विस्तृत रूप में प्रायः सभी व्याधियों में औषधीय पौधे के रूप में होता है। हीपोक्रटीस, लुक्रेटीअस कारीआ (ई०पू० 98-55), होरेस (ई०पू० 65), वीर्गील (ई०पू० 70-19), प्लाइनी वरिष्ठ (ई०पू० 23-79) ने अपने कार्यों में इसके औषधीय गुणों का वर्णन किया है।

प्राचीन ग्रीस तथा प्राचीन रोम में इसके प्रकंद का प्रयोग केवल शामक नुस्खे के रूप में नहीं, अपितु आहार में भी होता था। मध्य युग में पौधे की खेती होती थी।

तिब्बती चिकित्सा में पौधे की एक प्रजाति से इस विख्यात मूल को प्राप्त किया जाता है। इसके औषधीय गुणों के डाटा प्रख्यात वैज्ञानिक तथा चिकित्सक अबु अली इब्न सीना के शास्त्रीय कार्य कैनन आफ मेडिकल सायंस तथा प्रख्यात चिकित्सक सेयीत इस्माइल गुर्गेन्ली के कार्य ट्रेजरी आफ खोरेज्म शाह में दिये गये हैं। इसके उपयोगी गुण निद्रा विकार, सातिसार वमन में प्रभावशाली है।

अपने समय के प्रख्यात चिकित्सक मुहम्मद हुसैन ने अपने कार्य ट्रेजरी आफ मेडिसिन्स में लिखा है ''पौधे से निर्मित औषधियां मनोभाव को अच्छा बनाती है, कुछ विष विरोधी असर दिखाती है, हृदय को सुदृढ़ करती है, पचन कार्य तथा कार्मुकता को उत्कृष्ट करती है तथा मूत्राशय पर प्रभाव दिखाती है। यकृत् शूल तथा शीतजन्य संधिशूल, कटिशूल आदि को दूर करने के लिए भी इसका प्रयोग होता है।

तिब्बती चिकित्सा में पौधे के भूमि से ऊपर के हिस्से का प्रयोग हृद्शूल, रोहिणी, पाचन संस्थान के विकार में होता है। पुष्पविन्यास श्वसनक ज्वर (न्युमोनिआ), कास, संधिवात, एथेरोस्क्लेरोसीस, संधिशूल तथा व्रण रोपक औषध के रूप में प्रभावशाली है।

भारत में इनुला ब्रितानिका का प्रयोग श्वसन नलिका का शोथ तथा आमवात में होता है। चीन में पौधे के पुष्पविन्यास को कफनिःसारक तथा पूययुक्त व्रण में जीवाणुनाशक माना गया है। मोंगोलिया में इसका प्रयोग बहुसंधिशोथ में तथा कृमिहर औषध के रूप में किया जाता है। यह पौधा शिरःशूल तथा मस्तिष्क के रक्तवह संचरण के विकारों में प्रयुक्त औषधियों का एक घटक है। पत्र तथा पुष्प विन्यास को उदरकला शोथ प्लीहज्वर तथा व्रण रोपक औषध के रूप में प्रयुक्त किया जाता है।

तुर्कमेनिस्तान लोक चिकित्सा में इनुला ब्रितानिका के मूल के मद्य में निर्मित फांट तथा टिंकचर का प्रयोग हृद्द्रव, मधुमेह, शिरःशूल, अपस्मार में तथा प्रकंद के मद्य में निर्मित फांट तथा टिंकचर का प्रयोग आमाशय तथा ग्रहणी के व्रण में, चर्मदल, न्युरोडर्मेटाइटीस, पासा, शीतजन्य चर्मव्याधि, संधिशूल तथा कटिशूल में प्रभावशाली है। तृण का फांट कृमिनाशक, अतिसारक शामक, रक्तस्तंभक, स्वेदजनक, मूत्रल, कीटाणुनाशक तथा व्रण रोपण के लिये असरदायी है।

प्रकंद से निर्मित क्वाथ का प्रयोग मूत्रकष्टता तथा शय्यामूत्र के लिये होता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

इक्सिओलिरिओन तातारिकुम
IXIOLIRION TATARICUM

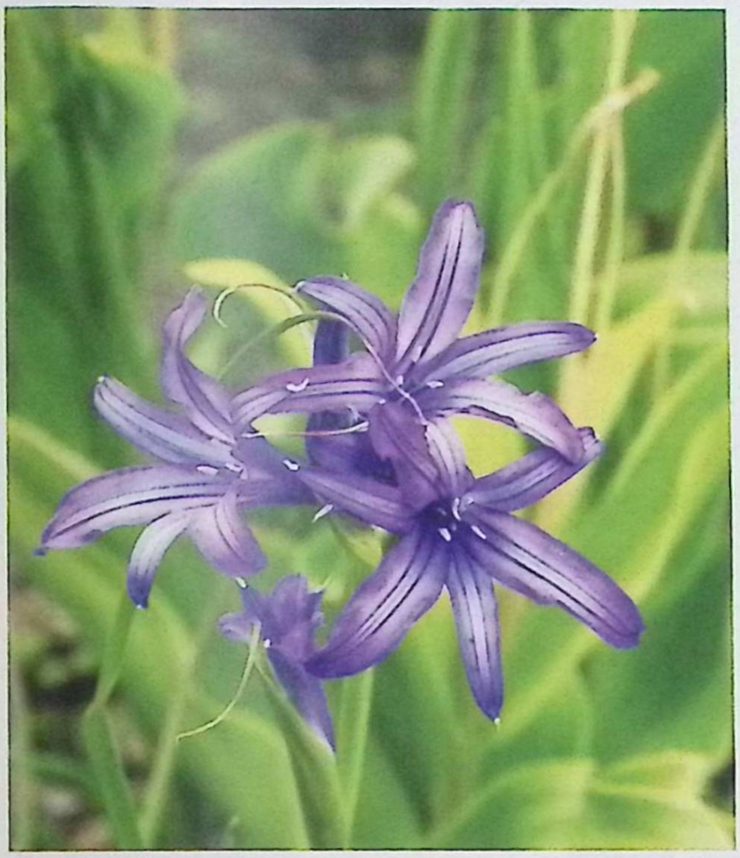

वर्णन :- इस कुतृण पौधे की विश्व में 3 तथा मध्य एशिया एवं तुर्कमेनिस्तान में एक प्रजाति मिलती है। यह बहुवर्षिय 15-60 से०मी० ऊँचा पौधा है। पुष्पित पौधे का वल्कल कंद 30-40 से०मी० तक का होता है। वल्कल कंद जमीन में गहराई तक जाता है। यह अण्डे जैसा दिखता है। पौधा 0.5-1.0 से०मी० चौड़ा तथा 1-2 से०मी० लम्बा होता है। विशिष्ट त्वक् के साथ बाह्य हिस्सा गहरा भूरा होता है। कंद में श्वेत रेसे जैसा कुछ होता है। पतले, छोटे, श्वेत कंद के वल्कल प्राय: 0.2-0.5 से०मी० तथा 1.0 से०मी० लम्बे होते हैं। मूल 40-50 मी०मि० गहरे होते हैं। इतनी गहराई तक वह 4-5 साल में पहुंचता है। पत्र 2.5 मी०मि० चौड़े होते हैं। यह प्राय: तरंगित होता है।

जैविक लक्षण :- कम समय में ही पौधे का विकास रुक जाता है। कंद में आवश्यक तथा उपयोगी तत्व होते हैं। पौधे का बीज -6 डिग्री से० पर विकास करता है। पश्चात् 90-95 प्रतिशत पौधे बढ़ते हैं तथा हरे अथवा विकसित हो जाते हैं।

पत्र, पुष्प की डंठल में रहते हैं। यह नार्जिजगुलर कुल का प्राकृतिक लक्षण है। पौधा पर्वतों की तराई, मैदानों, घाटी अथवा खाई एवं खेतों में उगता है।

मधुमक्खी, तितलियां, कीट तथा पक्षी पौधे के पुष्प में परागीकरण करते हैं। पुष्प की सुगंध सुबह तथा रात्रि में बहुत तेज होती है।

विस्तार :- हमारे देश के क्षेत्र जैसे बोलशोइ बालखान में, कुरेनदाग, सेरदार, बेरेकेट, दक्षिण-पूर्वीय कोपेतदग, होजागाला, नारलय, गयझयलयमास, सुंत, पायायद, नोहूर, सायवान, देश्त, मध्य कोपेतदग में, आचील, गोकदेरे, गुरतलयसुव, होवदान, जुलगे, केलेचेयाचन, बाहारलय, आर्चमान, बाध्यझ, सेरहेताबाद, चेमेनाबात, केपेले, चायनुर, कयारीझ, कोयतेनदाग, काराकुम तथा झझारयाका में यह पौधा पाया जाता है।

प्राकृतिक उपलब्धि :- हमारे देश में यह दुर्लभ पौधा नहीं है। प्रति वर्ष 3-5 टन कच्चे माल को इकट्ठा कर सकते हैं।

औषधीय कच्चा माल :- औषधीय उद्देश्यार्थ कंद तथा पुष्प कच्चे माल के रूप में प्रयुक्त होते हैं। ताजा पौधा स्वादिष्ट, तैलीय तथा चिकना होता है। सूखे कंद को कागज़ के थैले अथवा काँचपात्र में अंधेरे स्थान पर संचित करना चाहिये। संचयन समय की अवधि 2-3 साल है।

रासायनिक संघटन :- पौधे के रासायनिक संघटन में पोलीसेकेराइड तथा विटामिन सी होते हैं। लोक चिकित्सा में पौधे का प्रयोग अतिसार तथा दुर्बलता में किया जाता है। वसंत में इसको ताजा प्रयुक्त किया जाता है। यह पौधा हृदय के कार्य को नियंत्रित करता है। दृष्टि सुधारता है तथा दया बढ़ाता है।

तिब्बती चिकित्सा में इसका प्रयोग शिर:शूल में किया जाता है। पौधे का कंद शिर के अस्थि के जैसा दिखता है।

कल्पना तथा प्रयोग :- एक गिलास (200 मि०ली०) पानी में 2 चम्मच सूखे कंद को मिलाकर एक तामचीनी पात्र में धीमी आंच पर 10-15 मिनट के लिये उबालें। स्वांग शीत होने के बाद छान लें। तैयार क्वाथ आधा गिलास (100 मि०ली) भोजन पूर्व दिन में तीन बार पीयें।

एक गिलास उबलते पानी में एक बड़ा चम्मच (15 ग्राम) पुष्प को मिलाकर धीमी आंच पर 30 मिनट के लिये उबाले, बाद में छान लें। प्रतिदिन 1-2 बड़े चम्मच तीन बार भोजन पूर्व पीयें। चिकित्सा अवधि 2-3 सप्ताह है। यह क्वाथ काम दौर्बल्य के लिये है।

एक कांच पात्र में पौधे के शुष्क पुष्प एक बड़ा चम्मच (15 ग्राम) को आधा गिलास (100 मि०ली) मद्य में मिलाकर ढक्कन लगाकर 10-15 दिन तक रखें। बीच बीच में छान लें। यह कषाय नाड़ियों को शांत करता है तथा शिर:शूल के लिये उपयुक्त होता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

यूग्लांस रेजिआ
JUGLANS REGIA

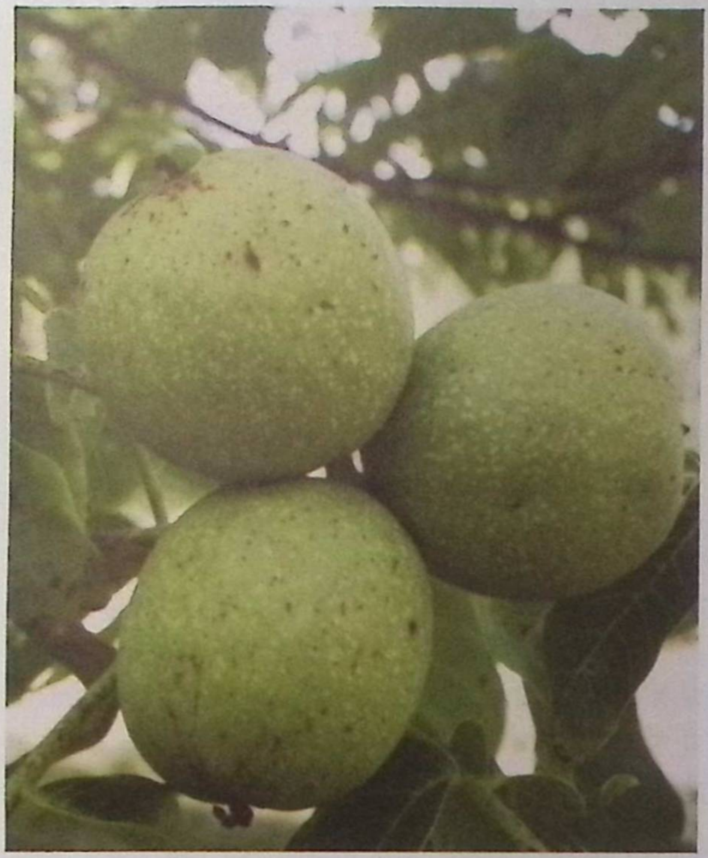

वर्णन :- अखरोट का पेड़ बहुवर्षीय पेड़ों के कुल से है तथा इसमें अनेक औषधीय गुण होते हैं। कीमती आहार उत्पाद के रूप में भी इसका प्रयोग कर सकते हैं। विश्व में 20 प्रजातियां मध्य एशिया के देशों में 3 प्रजातियां तथा तुर्कमेनिस्तान में एक प्रजाति मिलती है। यह वन्य पेड़ है, इसको ग्रीस नट अथवा सामान्य नटवृक्ष भी कहा जाता है। पेड़ 20-25 मीटर ऊँचे हो सकते हैं। यह एक अथवा अनेक शाखायें बनाता है, इसलिये इसके ऊर्ध्व हिस्से का व्यास 20 मीटर तक पहुंचता है। कुछ पुराने पेड़ के तने का व्यास 150-250 से०मी० तक हो सकता है। पुराने पेड़ के तने कृष्ण भूरे होते हैं। पत्र बड़े (20-40 से०मी० लम्बे) विकसित शाखाओं (75 से०मी० लम्बी, 15-40 से०मी० चौड़ी) पर पत्र युग्म, लम्बीकृत तथा अण्डाकार होते हैं। ऊपर के पत्र युग्म नहीं होते, ये एक के बाद एक निकलते हैं तथा युग्म पत्रों से ज्यादा बड़े होते हैं। ये दीर्घ वृत्ताभ भी होते हैं।

पुष्प छोटे, हरिताभ होते हैं, आगे के पुष्प 5-10 से०मी० लम्बे, संयुक्त तथा प्रत्येक पुष्प में 6 छोटे आभ्यंतर पुष्प-पत्र तथा 12-18 छिद्र होती है। मातृ पुष्प (mother flowers) 1 साल पुरानी शाखाओं पर 2 अथवा 3 की संख्या में स्थित होते हैं, इनको आभ्यंतर पुष्प-पत्र की दो जोड़ियां होती हैं। फल पूंछ की तरह निकलते हैं। फल गहरे हरे, मोटी त्वक् वाले होते है। इनके अंदर एक सख्त मज्जा काष्ठफल होती है। फल स्थान छिछला रोम से आच्छादित होता है। फल दो भाग से बना हुआ होता है जो पतले त्वक् से विभाजित होते हैं। फल का प्रत्येक भाग अण्डे अथवा गेंद के आकार का होता है। जब फल पकने लगता है तब फल कला द्वारा चार भागों में विभाजीत होते है तथा प्रत्येक भाग में ''बीज-काष्ठफल प्रकट होते हैं, हम इसे अखरोट अथवा हरा काष्ठफल कहते हैं। जब फल पूरी तरह पक जाते हैं तब उसकी बाहरी त्वक् सूखने तथा टूटने लगती है।

नदकुल मूल होते हैं वे जमीन पर फैलते हैं। तने को क्वचित् शाखायें होती है। पत्र धागादार लगभग 2-6 से०मी० लम्बे तथा 1-3 से०मी० चौड़े होते हैं। पत्र अण्डाकार अथवा लंबगोल तथा ज्यादातर फनाकार होते हैं। इसके छोटे पुष्प, पत्र के नीचे होते हैं। पुष्प-पत्र नीले अथवा चमकीले नीले होते हैं। अण्डाकार बीज का दृढ, चमकीला काष्ठफल (दाना) लगभग 20 मि०मी० लम्बा तथा 1 मी०मि० चौड़ा होता है।

जैविक लक्षण :- हमारे देश में यह औषधीय पौधा पर्वतों के शिखर तथा मध्य भाग में मिलते हैं। यह विशेष रूप से खाईयों में तथा नम परिस्थितियों में उगता है। यह पौधा जून-अगस्त में पुष्पित होता है तथा जुलाई एवं सितम्बर में फल देता है। यह बीज अथवा नरकुल मूल द्वारा प्रजनन करता है।

विस्तार :- यूग्लांस रेजिआ कोपेतदग पर्वतों के दक्षिण-पश्चिमी हिस्सें में सुम्बार तथा डायना के ऊपरी भागों में कोपेतदग पर्वत मध्य भाग में तथा आमामेटोलन तंगघाटी (बारारलय जिला) में मिलता है।

प्राकृतिक उपलब्धि :- हमारे देश में दुर्लभ पौधों में से एक माना गया है। औषधीय उद्देश्यार्थ इसके भण्डार पर्याप्त नहीं है। खेती की सलाह दी जाती है। सुंतन्हाझारदाग तथा कोपेतदग राष्ट्रीय उद्यानों में इसे सुरक्षित रखा गया है।

औषधीय कच्चा माल :- औषध के लिये यूग्लांस रेजिआ के पुष्प, तृण तथा नरकुल मूल को कच्चे माल के रूप में प्रयुक्त किया जाता है। इस पौधे के पुष्प तथा तृण को पुष्प आने के समय कैंची से काटना चाहिए। पौधे के नरकुल मूल, जो औषध के रूप में प्रयुक्त होने वाला है, को शुरूआती वसंत अथवा पतझड़ में खोदकर निकालना चाहिये तथा सामान्य रूप से सुखाना एवं तैयार करना चाहिये। तैयार कच्चे माल को कागज़ अथवा कपड़े के थैलों में संग्रहित करना चाहिए। पौधे को 1-2 साल तक तथा रीडमेस मूल को 3-4 साल तक संरक्षित किया जाता है।

रासायनिक संघटन :- यूग्लांस रेजिआ के रासायनिक संघटन का अच्छी तरह अध्ययन किया गया है। इसमें कार्बोहाइड्रेटस जैसे सेकेरोझ, गेलेक्टोझ, फ्रुक्टोझ, रेफीनोझ तथा उत्पत् तैल (0.5 प्रतिशत), सेपोनीन्स (लगभग 7 प्रतिशत) कोमेरीन्स (0.26-0.4 प्रतिशत), फ्लेवोनोइड्स

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

(0.14-2.4 प्रतिशत), विटामिन सी, रोटीन तथा केरोटीन होते हैं। बीज में 3-15 प्रतिशत तेल होते हैं।

प्रयोग :- इस से जीवाणु के विरुद्ध विविध औषधियाँ बनाई गई है। पत्र, कांड तथा रीडमेस मूल से निर्मित टिंकचर, फांट तथा नुस्खों का प्रयोग चीनी लोक चिकित्सा में होता है। तुर्कमेन लोग इनका प्रयोग कफ शमन, शूलनाशक, व्रणरोपक के रूप में तापमान तथा रक्तचाप कम करने के लिये, दीनता दूर करने के लिये, रक्तस्तंभक के रूप में, जठराग्नि दीपनार्थ, प्रतिश्याय एवं संक्रमण, श्वासनलिका, शोथ, तीव्र श्वसनवह संस्थान के संक्रमण, गठिया, गले तथा फुफ्फुस का राजयक्ष्मा, स्त्री रोगों, अतिसार, भ्रम, अपस्मार, स्मृतिमांध, मधुमेह तथा त्वक् वृक्क तथा हृदय के लिये खतरनाक ना हो वैसी अर्बुदों में करते हैं।

कल्पना तथा प्रयोग :- एक गिलास (200 मि०ली) उबला हुआ पानी एक चम्मच (5 ग्राम) सूखे तृण में मिलाकर दो घण्टे के लिये रखें। तैयार प्रवाही को कपड़े से छान लें। एक चम्मच (15 ग्राम) दिन में 3-4 बार भोजन से पूर्व लें।

एक तामचीनी पात्र में 3 चम्मच (45 ग्राम) शुष्क पौधे में 1-1.5 गिलास (200-350 मि०ली०) पानी मिलाकर धीमी आंच पर 4 घण्टे तक उबालें। तैयार फांट को कपड़े से छानकर चर्म व्याधि के लिये प्रयुक्त करें। अगर केश का इस फांट से प्रक्षालन करें तो केश बढने में तथा सुदृढ़ बनाने में मदद करता है।

एक चम्मच (15 ग्राम) रीड मेस मूल में एक गिलास (200-350 मि०ली०) पानी मिलाकर धीमी आंच पर 10-15 मिनट के लिये उबालें। तैयार फांट को कपड़े से छानकर दिन में तीन बार एक चम्मच (15 ग्राम) मात्रा में लें। इस नुस्खे का प्रयोग एक मास के लिये किया जाता है। एक महिने के बाद एक सप्ताह अथवा 10 दिन प्रयोग बंद करें तथा फिर से 3 महिने के लिये प्रयोग चालू रख सकते हैं।

यूनिपेरुस जेराव्स्कानिका
JUNIPERUS ZERAVSCHANICA

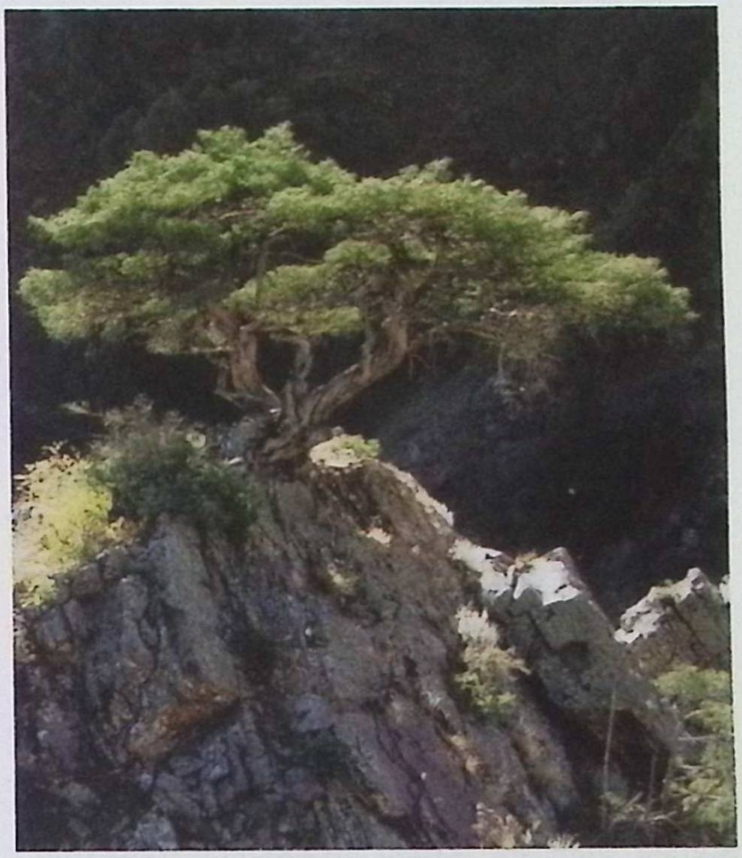

वर्णन :- यूनिपेरुस जेराव्स्कानिका अथवा ब्लैक फर ट्री (Black fir-tree) हमारे देश में सबसे ज्यादा प्राचीनतम पौधों में से एक है तथा हर समय पुष्पित रहता है।

यूनिपेरुस जेराव्स्कानिका 2-10 से०मी० ऊँचा होता है। यह फर वृक्ष वंश का तथा सर्बीअन कुल का सदस्य है। पौधे की फैली हुई शाखायें एक झुका हुआ मोटा किरीट बनाता है। पेड़ के तने की त्वक् रक्त अथवा रक्त भूरी होती है। पेड़ के टहनियों को मजबूत फड़फडाने वाली छोटी, मोटी (त्वक् 1.01.5 मी०मी) गहरे हरित, कभी-कभी चमकीली हरित अथवा भूरी शाखायें होती है। इसके पत्र भाले जैसे उभरे हुए होते हैं तथा गांठ ज्यादातर गोंद की बूंदे बनाता है। ये सूई की तरह पतले (5-7 मि०मी० लम्बे) होते हैं।

पुष्प में दो कभी-कभी एक कोष होते हैं। यह पेड़ अप्रैल-जून में पुष्प देता है।

इसके ताजे छोटे फल हरे अथवा पकने के बाद हरे धूंसर होते हैं। यह काली स्याही अथवा काले भूरे होते है तथा इसमें गाढ़ा गोंद होता है (यह दूसरी गर्मी तक पकते हैं)। इसका फल मधुर नहीं होता, लेकिन अच्छी सुगंध वाला तथा फल के अंदर 2-3 क्वचित् 4, कृष्ण- धूंसर, गोलाकार-त्रिकोणाकार बीज होते हैं, जो 6-7.5 मि०मी० लम्बे होते हैं। बहुत बड़ी मात्रा में रुई फल अक्तूबर अथवा नवम्बर में पकने लगते हैं।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

जैविक लक्षण :- यूनिपेरुस जेरावस्कानिका दुष्कालरोधी तथा सूर्यप्रकाश की आवश्यकता रखने वाला है। यह लम्बा (700-1000 साल) जीता है। प्राकृतिक परिस्थितियों में यह 25-30 साल फसल देता है, स्थायी वातावरण में 50-70 साल के लिये। यह प्रतिवर्ष फसल देता है। पेड़ समुद्र तल से 1200-2700 मी० की ऊँचाई पर उगता है तथा एक विशिष्ट जंगल बनाता है। यह पर्वत में नीचे की तलहत से शिखर तक उगता है। यह घाटियों में तथा छोटे पत्थर एवं कंकड़ वाली ढलानों पर उगता है। यूनिपेरुस जेरावस्कानिका का एक समूह केवल कोयतेनदघ में पाया जाता है।

प्राकृतिक उपलब्धि :- हमारे देश में काला फर पेड़ को दुर्लभ पौधा नहीं माना गया है। औषधीय उद्देश्यार्थ इनका उपयोग किया जाता है। इनको पतझड़ में इकट्ठा किया जाता है। अगर आप पके फलवाली शाखा को झटकायेंगे अथवा हिलायेंगे तो ये आसानी से जमीन पर गिर जायेंगे। फलों को खुली हवा में अथवा छत पर सुखाना चाहिये।

पके सूखे फल चमकाये हुए गोले जैसे चमकते दिखते हैं। ये काली-स्याही जैसे वर्ण के होते हैं। इनको एक विशिष्ट सुगंध होती है। इसके फल को 3 साल तक संचय कर सकते हैं।

रासायनिक संघटन :- उड़नशील तेल यूनिपेरुस जेरावस्कानिका की नई शाखाओं में 0.45-0.75 प्रतिशत शिखर में 0.15-0.27 प्रतिशत, त्वक् में 0.2-0.6 प्रतिशत, फल में, 0.23-2.3 प्रतिशत होता है। इसमें पाइनीन, टर्पीन, केडीनीन, टर्पीनोलीन, केम्फीन, सेस्कवीटर्पीन, सेड्रोल स्पिरिट होते हैं। इसके फल में 10-30 प्रतिशत शर्करा, ग्लायकोसाइड, जुनिपेरीन, पीत पदार्थ, 9 प्रतिशत पिच तत्व तथा पेन्टोसान होते हैं। इसमें ओर्गेनिक एसीड़ होते हैं। इसकी त्वक् तथा शाखाओं में 6.5-8.3 प्रतिशत मौलिक पदार्थ तथा उसके शिखर में 120-140 मि०ग्रा० विटामिन्स सी होता है। ये खोज की गई है कि इनके पत्र, त्वक्, तथा फल में कोई पके वर्ण युक्त पदार्थ नहीं होते। ये ऊन तथा रेशम के रंजन के लिये मदद करता है तथा भूरा एवं पीत वर्ण देता है। अबु अली इब्न सीना ने अपनी प्रख्यात पुस्तक कैनन आफ मेडिकल सायंस में लिखा है। फर ट्री के फल का मधु के साथ मिला मिश्रण पूययुक्त व्रण में उपयोगी है। तिल तेल के साथ उबाले हुए फल बाधिर्य से मुक्ति दिलाने में मदद रूप है। फर ट्री उर:शूल तथा कास में उपयोगी है। आमाशय एवं यकृत् के अवरोध को दूर करता है तथा आर्तव प्रवृत्ति कराने में मदद करता है। यह गर्भाशय शूल में उपयोगी है, तथा फर ट्री के किसी भी हिस्से का धूमपान करने से आपदायें आपको छोड़ देती है।

प्राचीन काल से ही पेड़ के फल का विस्तृत प्रयोग राष्ट्रीय चिकित्सा में औषधीय उद्देश्यार्थ किया जाता है। पेड़ से बना फांट मूत्र रोग तथा काम रोगों की चिकित्सा में मदद करता है। फल मलेरिया, गठिया तथा नाडी तंत्र की व्याधियों में अच्छा है। तुर्कमेन राष्ट्रीय चिकित्सा में कोयतेनदग के पर्वतों में रहने वाले लोग गठिया, शिर:शूल तथा हाथ पैरों की दुर्बलता से मुक्ति के लिये यूनिपेरुस जेरावस्कानिका के शिखर तथा फल का प्रयोग करते थे। फल से निर्मित फांट का प्रयोग वृक्क व्याधि में, मूत्राशय, वृक्काश्मरी, यकृत्रोग तथा संधिवात में होता है। कच्चे फल आमाशय के व्रण में मदद रूप है तथा जठराग्नि दीपन करता है। फल तथा हरी शाखाओं से निर्मित फांट संधिवात में स्नानार्थ प्रयुक्त होते हैं। पेड़ के फल का पाचन के लिये विस्तृत रूप से प्रयोग होता है। इसका शिखर जठराग्नि प्रदीपनार्थ तथा पाचन के लिये उपयोगी है। भोजन को भूनते, तलते, उबालते समय उसको डाला जाता है। यह भोजन को स्वादिष्ट बनाता है तथा अच्छी सुगंध प्रदान करता है।

प्रयोग:- एक गिलास पानी में दो चम्मच सूखे तथा मसले हुए फर ट्री के फल को डालकर 3 घण्टे के लिये रखें। छानकर तीन हिस्सों में बांटकर दिन भर पीते रहें। चिकन में 100 ग्राम फल मिलाने से वह बहुत स्वादिष्ट तथा सुगंधित बन जाता है। सामिष भोजन को यह अच्छी सुगंध तथा तेज स्वाद देता है। चीन में इसके मूल से मुरब्बा (jam) बनाया जाता है। यूरोप तथा एशिया में अधिकतम लोग यूनिपेरुस जेरावस्कानिका से विविध प्रकार के पेय बनाते हैं। वे नाशपाती तथा कद्दू के रस में इसको मिलाते हैं, शहद से बने पेय में तथा चाय में भी इसको मिलाते हैं। मीठे पकवानों में 0.2-0.5 ग्राम मिलाया जाता है। मांस तथा मत्स्य पदार्थों में खाना तैयार होने के 20 मिनट पूर्व इसे मिलाया जाता है। स्वादिष्ट आहार तैयार होने के 5 मिनट पूर्व इसे मिलाया जाता है।

बल्गेरीअन तथा तिब्बिती चिकित्सा में यह पौधा रक्तचाप, आमाशय के व्रण तथा जुकाम को ठीक करता है। दंतवेष्टक शोथ में इस पौधे से निर्मित फांट का गंडूष किया जाता है।

कल्पना तथा प्रयोग :- एक तामचीनी पात्र में एक चम्मच (5 ग्राम) यूनिपेरुस जेरावस्कानिका के मसले हुए मूल के चूर्ण को 2 गिलास (400 मि०ली) पानी में मिलाकर 5 मिनट के लिये उबालें। छानकर इस मिश्रण का एक गिलास दिन में तीन बार भोजन से पूर्व पीयें।

पौधे के मूल एक चम्मच (5 ग्राम) को एक गिलास (200 मि०ली) गर्म पानी में मिलाकर धीमी आंच पर 30 मिनट के लिये उबालें। छानकर एक बड़ा चम्मच (15 ग्राम) दिन में तीन बार भोजन पूर्व लें। यह उत्तेजक है तथा तनाव को दूर करने में मदद करता है। चिकित्सा समय की अवधि 3-4 सप्ताह है।

एक कांच पात्र में यूनिपेरुस जेरावस्कानिका के मूल का चूर्ण एक चम्मच लेकर उसमें 1 गिलास औषधीय मद्य मिलाकर ढक्कन लगाकर 10 दिन तक रखें। छानकर व्रण पर लगायें।

यूनिपेरुस जेरावस्कानिका के फल 200 ग्राम को एक लीटर पानी में उबालें। तैयार कल्क का स्नान करते समय प्रयोग करें। यह संधिवात के लिये लाभप्रद है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

एक गिलास (200 ग्राम) उबले हुए पानी में दो चम्मच फल के चूर्ण को मिलाकर आधा घण्टा तक रखें। कपड़े से छानकर एक बड़ा चम्मच (15 ग्राम) दिन में 3-4 बार लें। यह औषधीय सुरा सार पाचन में मदद करता है।

एक कांच पात्र में एक बड़ा चम्मच (15 ग्राम) त्वक् को 100 मि०ली० सुरा में मिलाकर ढक्कन लगाकर 10 दिन तक रखें। बीच-बीच में हिलाते रहें। तैयार औषधीय सुरा सार को कपड़े से छानकर एक चम्मच (5 ग्राम) दिन में दो बार लें। यह औषधीय सुरा सार संधिशोथ के लिये उपयोगी है।

यूनिपेरुस तुर्कोमानिका
JUNIPERUS TURCOMANICA

वर्णन :- यूनिपेरुस तुर्कोमानिका एक बहुवर्षीय पौधा है। विश्व मे 70 प्रजातियाँ है जिनमें मध्य एशिया में 20 तथा तुर्कमेनिस्तान की 2 प्रजातियाँ शामिल हैं।

यूनिपेरुस तुर्कोमानिका एक सदाबहार 2-10 (15) मीटर ऊँचा, क्युप्रेसेसी कुल का एक या दो लिंगी पौधा है। कारायालयच में 25-30 मीटर ऊँचे पेड भी हैं (अकमयरादेव ए०, कुरबानमाम्मेदोव जी०, 2007 के डाटा अनुसार)। वयस्क पेड़ की त्वक् उखड़ जाती है तथा रक्ताभ भूरी होती है। शाखा पर सूची (परिवर्तित पत्र) तीक्ष्ण तथा सम होते हैं। सूची के मूल भाग में सूक्ष्म गोलाकार ग्रंथियां होती हैं। प्रजनन अवयव गत वर्ष के तरुण अंकुर से बनते हैं। सायप्रस शंकु सख्त, गोलाकार, काले तथा भूरे नीले, लगभग 10 मि०मी० व्यास वाले तथा 3-5 बीज युक्त होते हैं। फल बहुत छोटे छोटे पत्राकृति वृन्त सहित होते हैं। बीज गहरे-धूंसर, चमकीले, 6 मि०मी० तक लम्बे तथा 2.5 मि०मी० मोटे होते हैं। यूनिपेरुस तुर्कोमानिका को अप्रैल-मई में पुष्प लगते हैं।

जैविक लक्षण :- यूनिपेरुस तुर्कोमानिका तुर्कमेनिस्तान का सदाबहार तथा सुगंधित पौधों में से है। यह समुद्रतल से 1100-2800 मीटर की ऊँचाई पर सूखी पथरीली ढलानों पर उगता है।

यूनिपेरुस तुर्कोमानिका ऊष्मा तथा सूखा विरोधी, प्रकाश तथा ऊष्मा प्रिय पौधा है। विकास की शुरूआत की अवस्था में यह संपूर्णतः समोद्भिद है। पौधा केवल बीज से ही प्रजनन करता है। यह धीरे-धीरे बढ़ता है। कोपेतदग में यूनिपेरुस तुर्कोमानिका बारिश के वर्षों में 2-3 से०मी० बढ़ता है लेकिन सूखे के सालों में एक से०मी० बढ़ता है। ये अंक 4-5 से०मी० प्रतिवर्ष भी हो सकता है। पचास साल का यूनिपेरुस तुर्कोमानिका 12 मीटर ऊँचा, 32-37 से०मी० घेराव में होता है।

पुष्प खिलने के दूसरे साल बीज पकते हैं। पौधा 600 साल तक जीता है।

विस्तार :- यूनिपेरुस तुर्कोमानिका (तुर्कमेन में "आर्चा") विस्तृत रूप में मध्य कोपेतदग, दुशाकेरेकदाग, मुर्झेदाग, तागारेव, आर्वाझ, गाययालचय, हयझ, काराकुरा, असयलमा, दागयश, दाशतोय, बृहत् कार्शंकि, आर्चाबील, चोपानदाग, मुसुनेव, सुलुकली, प्रोहलादनोये, नोहूर, गारावुल, कुरेनदाग में, तायतयोवलाक, गारागेस, दानाता, जीयीरदेक, उझयनसुव, इसकान्देर, तारेगाय, तेरसाकांद सोनुदाग, बोलशोई में तथा मालच में फैला हुआ है। पौधा कोपेतदग खोरासान में स्थानिक है।

प्राकृतिक उपलब्धि :- यूनिपेरुस तुर्कोमानिका को 1999 दुर्लभ प्रजाति के रूप में तुर्कमेनिस्तान की लाल किताब में तीसरी श्रेणी में शामिल किया गया है। कोपेतदग तथा सेतु हाझारदाग अभयारण्य में पौधे के प्राकृतिक निवास के एक हिस्से को संरक्षित किया गया है।

यूनिपेरुस तुर्कोमानिका संकडी सीमा रेखा (15 km. x 400 km.) के साथ चंचलता से उगता है तथा प्रति हेक्टर 6-10 से 1000 पेड तक होते हैं।

औषधीय कच्चा माल :- यूनिपेरुस तुर्कोमानिका के फल (सायप्रस शंकु) तथा सूची (पत्र) औषधीय उद्देश्यार्थ प्रयुक्त होते हैं वार्षिक फसल 350 टन से ज्यादा है। पौधे के सायप्रस शंकु को नवम्बर-दिसम्बर में इकट्ठा किया जाता है। सुखाना तथा पैक करना सामान्य परिस्थितियों में किया जाता है। सूखे फल तथा सूची में नमी 12 प्रतिशत ज्यादा नहीं होनी चाहिए। तैयार कच्चे माल को कागज़ के थैलों अथवा बक्सों में संचय किया जाता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

रासायनिक संघटन :- यूनिपेरुस तुर्कोमानिका के सूची तथा फल में 59-60 प्रतिशत इथरीअल तेल होते हैं। तरुण अंकुर में इथरीअल तेल 0.87 प्रतिशत तक (77 प्रतिशत पेनाइन्स, 12 प्रतिशत पेन्ड्रोल आदि सहित) होते हैं। पके बेर में 20 प्रतिशत तक शर्करा, 2-5 प्रतिशत पोलीसेकेराइड्स, 0.18 प्रतिशत कोमेरीन, विटामिन सी (8.8 प्रतिशत) ग्लायकोसाइड्स 0.10 प्रतिशत राल तथा 4.80 प्रतिशत रंजक द्रव्य होते हैं।

प्रयोग:- प्राचीन काल से ही आर्चा यूनिपेरुस तुर्कोमानिका के औषधीय गुणों के साथ उपयोगी गुणधर्मों ने लोगों का ध्यान आकर्षित किया है।

तुर्कमेन शोधकर्ता पौधे की जीवाणु विरोधी तथा व्रण एवं दग्धव्रण रोपण गुण धर्मों का अध्ययन चिकित्सकीय प्रयोगार्थ कर रहे हैं। सायप्रस शंकु का फांट प्रभावशाली मूत्रल नुस्खा है।

इथरीअल तेल का प्रयोग आंत्रिक विकारों के लिये पाचन संस्थान की दीवार को उत्तेजित करने के लिये किया जाता है। यह कफनि:सारक औषध के रूप में तथा श्वसननलिका ग्रंथियों द्वारा कफ उत्सर्जन बढ़ाने के लिये प्रभावशाली है।

तुर्कमेन लोक चिकित्सा (गोकपेदे, बाहारलय, मागत्यंगुलय इट्रैप्स में आर्चा (जुनिपेरस) के सायप्रस शंकु का धूमपान विकृतिकारक कीटाणु को दूर करने के लिये किया जाता है

एक चम्मच (15 ग्राम) सूखे फलों को प्रति 18-20 मिनट के लिये जलाना पर्याप्त है यूनिपेरुस तुर्कोमानिका के सायप्रस शंकु (फल) दृष्टि का तेज सुधारने के लिये प्रभावशाली है।

सगर्भावस्था दरम्यान पेड़ के स्वास्थ्यप्रद गुणों के प्रयोग की सलाह दी जाती है।

कल्पना तथा प्रयोग :- यूनिपेरुस तुर्कोमानिका सूची (पत्र) एक बड़ा चम्मच (15 ग्राम) में दो गिलास (400 मि०ली०) पानी मिलाकर एक तामचीनी पात्र में धीमी आंच पर 20 मिनट तक उबालें। छानकर एक बड़ा चम्मच (15 ग्राम) दिन में तीन बार लें।

यूनिपेरुस तुर्कोमानिका सायप्रस शंकु (फल) एक बड़ा चम्मच (15 ग्राम) में एक लीटर पानी मिलाकर धीमी आंच पर 5-10 मिनट के लिये उबालें। ठंडा करें। छानकर पट्टी के रूप में दिन में दो बार लगायें।

यूनिपेरुस तुर्कोमानिका के शुष्क सायप्रस शंकु 1-1.5 बड़े चम्मच में एक गिलास (200 मि०ली०) पानी मिलाकर एक तामचीनी पात्र में धीमी आंच पर 5-10 मिनट के लिये उबालें। ठंडा करें। छानकर एक बड़ा चम्मच (15 ग्राम) दिन में 3 बार लें। कास के लिये यह नुस्खा प्रयुक्त होता है।

लल्लेमांतिआ रोइलेआना
LALLEMANTIA ROYLEANA

वर्णन :- मध्य एशिया में इस औषधीय कुतृण की 6 प्रजातियाँ तथा तुर्कमेनिस्तान में 4 प्रजातियाँ उगती हैं। इनमें से अधिकतम प्रजातियों के प्रयोज्य गुणधर्म हैं।

लल्लेमांतिआ रोइलेआना लामिआसे कुल का 10-30 से०मी० लम्बा, एकवर्षीय, क्षुपीय पौधा है। इसके कौलिस को कुछ छोटे रोम होते हैं। यह सादा, शाखायुक्त होता है। इसके पत्र अण्डाकार होते हैं। इसके पुष्प पांच प्रकार की बनी हुई पुष्प मंजरी की रचना करते हैं, ये नीले अथवा गहरे नीले होते हैं। फल का एक लम्बगोलाकार छोटे काष्ठफल का आकार होता है।

जैविक लक्षण :- यह पर्वतीय क्षेत्रों में, पर्वतों की तराई में तथा समुद्रतल से 2800 मीटर की ऊँचाई पर उगता है। यह रेतीली भूमि पर उगता है। यह पौधा बीज द्वारा फैलता है। लल्लेमांतिआ रोइलेआना को अप्रैल-जून में पुष्प आते हैं। इसको मई-जून में फल लगते हैं।

विस्तार :- तुर्कमेनिस्तान के प्रायः सभी क्षेत्रों में अत्यधिक मात्रा में यह पौधा पाया जाता है।

प्राकृतिक उपलब्धि :- लल्लेमांतिआ रोइलेआना हमारे देश के दुर्लभ पौधों में से नहीं है। औषधीय प्रयोगार्थ इसके भण्डार पर्याप्त है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

औषधीय कच्चा माल :- इसका पौधा औषधीय उद्देश्यार्थ कच्चे माल के रूप में प्रयुक्त होता है। पुष्प खिलने के समय (अप्रैल-मई) में पौधे को इकट्ठा करना चाहिये। इसको सामान्य रूप से सुखाना चाहिये। पौधे के छज्जे के नीचे अथवा सूखे कमरे में सुखाना चाहिये। तैयार कच्चे माल को कपड़े से बने थैलों में संचय करना चाहिये। संचयन समय की अवधि 1-2 साल है।

रासायनिक संघटन :- यह तय किया गया है कि लल्लेमांतिआ रोइलेआना में 0.03 प्रतिशत उत्पत् तेल, एल्कलोइड, कोमेरीन्स तथा फ्लेवोनोइड्स होते हैं। यह तय किया गया है कि इस पौधे के बीज में कार्बोहाइड्रेट्स, 0.28 प्रतिशत सीस्टोस्टेरीन, स्टीरोइड तथा 10.8 प्रतिशत तेल होता है (इस तेल में लीनोलीक, ओलीक, पामीटीक तथा स्टीअरीक एसीड्स शामिल हैं)।

प्रयोग :- मध्य एशिया की लोक चिकित्सा में इस पौधे के फल से निर्मित नुस्खा कफनिःसारक, मूत्रल तथा अन्नवह संस्थान के विकारों के लिये प्रयुक्त होता है। पौधे का बीज कफनिःसारक, मूत्रल तथा शूल शमन के लिये प्रयुक्त होता है। लल्लेमांतिआ रोइलेआना के बीज के फांट का प्रयोग आमाशय शूल तथा कास के लिये किया जाता है।

तुर्कमेन लोक चिकित्सा (मागत्यंगुलय, बहारलय, गोकदेपे, कोयतेनदग इट्रैप्स में पौधे के क्षुप से बनाया नुस्खा चाय के रूप में पिया जाता है तथा इसका प्रयोग शोफ प्रक्रिया आमाशय विकार तथा आमाशयगत रक्तस्राव में चिकित्सा के लिये किया जाता है। साथ ही बीज से निर्मित गाढ़े टिंकचर का प्रयोग प्रशामक तथा शोधन औषध के रूप में अक्षिप्रक्षालन तथा अक्षिगत स्राव में किया जाता है।

चिकित्सा शास्त्र में पौधे के क्षुप में जीवाणु विरोधी तथा मूत्रल गुणों को निश्चित किया गया है।

कल्पना तथा प्रयोग :- एक तामचीनी पात्र में पौधे के फल एक चम्मच (15 ग्राम) को एक गिलास (200 मि०ली०) पानी में मिलाकर धीमी आंच पर 5-10 मिनट के लिये उबालें। कपड़े से छानकर एक चम्मच दिन में तीन बार भोजन पूर्व लें। यह फांट अन्नवह संस्थान के विकारों के लिये प्रयुक्त होता है।

एक गिलास पानी में 2 चम्मच (10 ग्राम) लल्लेमांतिआ रोइलेआना के बीज को मिलाकर धीमी आंच पर 10 मिनट के लिये उबालें। ठंडा करके कपड़े से छान लें। इस फांट से दिन में दो बार अक्षिप्रक्षालन करें।

एक गिलास (200 मि०ली०) पानी में पौधे के बीज एक बड़ा चम्मच (15 ग्राम) को मिलाकर कसकर ढक्कन लगा दें। कपड़े से इस फांट को छान लें। आधा गिलास (100 मि०ली०) दिन में तीन बार भोजन पूर्व पीयें। लल्लेमांतिआ रोइलेआना के कूटे हुए पौधे एक चम्मच (5 ग्राम) को दो गिलास (400 मि०ली०) पानी में मिलाकर थोड़ी देर रखें। कपड़े से छानकर चाय की तरह दिन में तीन बार पीयें। इस औषधीय चाय का प्रयोग शोफ प्रक्रिया, आमाशय विकार तथा आमाशयगत रक्तस्राव की चिकित्सा के लिये होता है।

लामिउम आल्बुम
LAMIUM ALBUM

वर्णन :- विश्व में लामिउम आल्बुम की लगभग 20 प्रजातियाँ, मध्य एशिया में 13 प्रजातियाँ तथा तुर्कमेनिस्तान में केवल 2 प्रजातियाँ मिलती हैं।

लामिउम आल्बुम 150 से०मी० ऊँचा, बहुवार्षिक पौधा है। पौधे का कांड सीधा, रेसेदार, आच्छादन वाला होता है। पौधे के पत्र अण्डाकार, लम्बे रेसेवाले होते हैं। पत्र 2-8 से०मी० लम्बे तथा 1.5-3 से०मी० चौड़े होते हैं। पत्र के अंतिम भाग चुभने वाले होते हैं। ऊपर के पत्र छोटे होते हैं तथा उसके रेसे भी छोटे होते हैं।

पुष्प में अच्छी सुगंध होती है तथा ये पौधे के शिखर पर खिलते हैं, लेकिन कभी-कभी ये आडेवर बनाते हैं। पुष्प के दल धारीवाले होते हैं तथा ब्लू बेल जैसे दिखते हैं तथा रेसेदार आच्छादन वाले होते हैं। केवल 4 पुरुष पौधे हैं। सूत्र अधिक रेसेमय होते हैं। फल लम्बगोलाकार होता है, काष्ठफल जैसा दिखता है। एक गुच्छ में 4 काष्ठफल होते हैं।

लामिउम आल्बुम को मई-जून में पुष्प आते हैं तथा जून-जुलाई में फल लगते हैं।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

जैविक लक्षण :- यह पौधा समुद्रतल से 1500-2500 मीटर की ऊँचाई पर उगता है।

विस्तार :- लामिउम आल्बुम कुरेनदाग में, पश्चिम पूर्वीय कोपेतदग में सूंत, हाझारदाग तथा एयदेरे में, मध्य कोपेतदग में मुसुनेव में उगता है इस स्थान पर लामिउम आल्बुम अधिक मिलता है।

औषधीय कच्चा माल :- लामिउम आल्बुम दुर्लभ पौधा नहीं हैं औषधीय उद्देश्यार्थ इस पौधे के भण्डार पर्याप्त है। हमारे देश में प्रतिवर्ष 3-5 टन औषधीय कच्चा माल इक्ट्ठा करना शक्य है। इसको इकट्ठा करना बहुत मुश्किल है। पौधे को तब ही इकट्ठा किया जाता है जब पुष्प खिलते हैं।

इकट्ठे किये हुए पुष्प को थाली में रखकर सुखाया जाता है। तैयार कच्चे माल को अच्छी तरह सूखे हुए थैलों में संचय किया जाता है। पुष्प श्वेत-पीत होने चाहिए। नमी की मात्रा 14 प्रतिशत से ज्यादा नहीं होनी चाहिए।

रासायनिक संघटन :- पौधे में सेपोनीन्स, इथरीअल तेल, एस्कोर्बीक एसीड, एल्कलोइड्स, फ्लेवोनोइड्स (आइसोक्वेरसेटीन, क्वेरसेटीन, केम्फेरोल, एस्ट्रागेलीन, क्वेर्सीमेरीट्रीन), क्लोरोजीन तथा एसीडीक गेलेटम, 0.14-10 प्रतिशत सेपोनीन पदार्थ, कोलीन, हीस्टेमीन तथा टायरेमीन होते हैं। पौधे के पत्र में सेपोनीन, इथरीअल तेल, विटामिन सी, केरोटीन, कोफी पी-कोमेरीन तथा अन्य एसीड़ होते हैं।

प्रयोग :- लामिउम आल्बुम एक लोकप्रिय औषधीय पौधा है। चिकित्सा शास्त्र में इसका प्रयोग फुफ्फुस के लिये, रक्तस्राव, कुछ चर्मरोग, शूल तथा न्युरोसिस में किया जाता है। पौधे के पुष्प तथा पत्र का प्रयोग चर्मशोथ, व्रण, राजयक्ष्मा, आंत्रावरोध, श्वसननलिका शोथ जैसी व्याधियों में किया जाता है। लोकप्रिय चिकित्सा में पौधे का औषधीय घटक बहुत उपयुक्त है यह रक्तस्राव शिर:शूल तथा हृदय, प्लीहा, वृक्क, स्त्री एवं यकृत् की व्याधियों में तथा मूत्रल के रूप में मदद करता है।

कल्पना तथा प्रयोग :- एक लीटर पानी में 4 बड़े चम्मच (60 ग्राम) मिलाकर धीमी आंच पर 10 मिनट के लिये उबालें। तैयार औषध को 1 दिन तक रखें। तत्पश्चात् छानकर 100-150 ग्राम दिन में तीन बार लें।

दो बड़े चम्मच (30 ग्राम) को दो गिलास (400 मि०ली०) उबले हुए पानी में मिलायें। एक घण्टे के बाद छानें। इस फांट को 200 मि०ली० दिन में तीन बार भोजन पूर्व सेवन करें।

दो बड़े चम्मच (30 ग्राम) को एक लीटर उबलते हुए पानी में डालकर 15 मिनट के लिये उबालें। कपड़े से छानकर शरीर पर बाह्य प्रयोग करें।

लेओंतीचे एवेर्स्मान्निइ
LEONTICE EWERSMANNII

वर्णन :-यह बर्वेरिस वंश का 20-35 से०मी० ऊँचा बहुवर्षीय पौधा है। इसकी कांड जमीन पर फैलती है। कंद जमीन में होता है तथा कभी-कभी फल देता है। पत्र लम्बे तथा फैलने वाले होते हैं। कंद नाशपाती आकार का, भूरा, अण्डे आकार का होता है। कंद 30-40 से०मी० गहरे, 4.5-5 से०मी० चौड़े तथा 6-8 से०मी० लम्बे होते हैं। कंद से 0.5-1 मीटर व्यास वाले तंतु उगते हैं। ये 50-60 से०मी० लम्बे तथा 110-120 से०मी० गहरे होते हैं। लेओंतीचे एवेर्स्मान्निइ मार्च-अप्रैल में पुष्प देता है तथा उसी समय फल देता है। पुष्प पीत होते हैं। एक पुष्प गुच्छों में लगभग 100-110 पुष्प होते हैं। फल गोल होता है। एक फल में 3-4 बीज होते हैं।

जैविक लक्षण :- इस पौधे के नाशपाती आकार का कंद ज़मीन में उगता है। इस पौधे के 5-7 साल में एक बार पुष्प आते हैं। कभी-कभी शिशु के शिर जैसे कंद मिलते हैं। कंद में उपयोगी पदार्थ होते हैं।

विस्तार :- लेओंतीचे एवेर्स्मान्निइ बोलशोइ तथा मालय बालखान में, साचाद, चात्सुव, पश्चिम पूर्वीय कोपेतदग में, मध्य कोपेतदग में, देगीरमेनमेद, सुलुकली, मुर्झेदाग, गोकदेपे, असयलमा, कनोवसान, गेर्हाद, पश्चिम कोपेतदग

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

में, गुर्चकहोवदान, चयर्लाक, नोवराक चेस्मे, गारातेकेश, इस्मेनी, बाध्यझ, कयझयल जाप, केपेल, पोपखानचेश्मे तथा आकारचेश्मे में उगता है। सामान्यत: यह रेत में तथा कोपेतदग की तराई में उगता है।

प्राकृतिक उपलब्धि :- यह दुर्लभ पौधा नहीं है। आम तौर पर एक कंद का वजन 300 ग्राम होता है। प्रति वर्ष बाध्यझ तथा मध्य कोपेतदग में 10-20 टन कंद प्राप्त किये जा सकते हैं।

कंद औषधीय कच्चा माल है। इनको वसंत में मार्च के आखिर में तथा अप्रैल की शुरूआत में इकट्ठा किया जाता है। बाद में ये मौजूद नहीं होते क्योंकि जमीन से ऊपरी पौधा मर जाता है।

कंद को 2-3 टुकड़ों में काटकर अंधेरे कमरे में रस्सी पर सुखाया जाता है। तैयार कच्चे माल को कागज़ के थैलों में संचय किया जाता है। संचयन समय की अवधि 2-3 साल है।

रासायनिक संघटन :- कंद में 60-65 प्रतिशत पानी तथा तिक्त स्वाद होता है। यह अस्वाद है। कंद में 44-70 प्रतिशत कार्बोहाइड्रेट, लीओन्टोमाइन, ट्रायटर्पीन, सेपोनीन, लीओन्टीडीन, लीओन्टीन तथा लीटोन्टीसाइन एल्कलोइड्स होते हैं। पत्र में केरोटीन, ल्युटीन तथा अन्य केरोटीनोइड्स होते हैं। कंद के रासायनिक संघटन में एल्कलोइड्स अधिक मात्रा में होने से सुरा बनाने के लिये इसका कच्चे माल के रूप में प्रयोग होता है।

प्रयोग :- 200 मि०ली० उबले हुए पानी में थोड़े कंद के टुकड़े डालकर थोडी देर तक रखें। छानकर 1-2 बड़े चम्मच प्रतिदिन पीयें। यह आवश्यक है कि पौधे को बहुत सावधानी पूर्वक उपयुक्त किया जाय, क्योंकि इसके संघटन में विषैले पदार्थ होते हैं।

लेओनुरुस तुर्केस्तानिकुस
LEONURUS TURKESTANICUS

वर्णन :- विश्व में इस पौधे की लगभग 14 प्रजातियाँ मिलती है। जिनमें से 12 मध्य एशिया के देशो में तथा तुर्कमेनिस्तान में 1 मिलती है।

यह लाबिआते कुल का एक बहुवर्षीय तृणीय, 70-120 से०मी० ऊँचा पौधा है। पौधे का चतुष्कोणीय, सीधा पादवृन्त बहुशाखायुक्त तथा सूक्ष्म-रेसों से आच्छादित होता है। पत्र समरूप उगते हैं तथा रेसों से आच्छादित होते हैं। पत्र का नीचे का हिस्सा गोल, मध्य हिस्सा फैला हुआ (चौड़ा) तथा अग्रभाग तीक्ष्ण होता है।

इसके पुष्प नांरगी गुलाबी होते हैं। ये गोलाकार गुच्छे बनाते हैं। पुष्प के शिखर में दो ओष्ठ होते हैं। इसका फल एक छोटा काष्ठफल होता है।

जैविक लक्षण :- हमारे देश मे यह पौधा समुद्रतल से 1200-1800 मीटर की ऊँचाई पर उगता है। यह घाटी, पठार, ढलान के गंदे, कुतृण युक्त स्थानों में अच्छी तरह उगता है। इसमें पुष्प तथा फल जून तथा अगस्त में आते हैं।

विस्तार :- यह मध्य कोपेतदग में, हेयराबात, दुशाकेरेकदाग, सीबीर, उलय, गारांकय, लुजे, आर्चाबील, चोपानदाग, रीझाराश, तथा होवदान में पाया जा सकता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

प्राकृतिक उपलब्धि :- हमारे देश में यह दुर्लभ पौधों में से एक है। औषधीय प्रयोग के लिये इसकी मात्रा पर्याप्त है। ऊर्ध्व हिस्से की उपज 15 c प्रति हैक्टर, पत्र की 17c/ प्रति हैक्टर है। इस पौधे की खेती करने की सलाह दी जाती है।

औषधीय कच्चा माल :-इस का प्रयोग औषधि के मूल आधार के रूप में किया जाता है। इसमें जब पुष्प खिलते हैं (जुन-जुलाई) तब इसको इकट्‌ठा करना चाहिये। इसको सामान्य रूप से सुखाना चाहिये तथा खुली हवा में अथवा छांव में तैयार करना चाहिये। तैयार औषधीय मूल को कपड़े के थैलों में संचित करना चाहिये। इसको 1-2 साल के लिये संचित कर सकते हैं।

रासायनिक संघटन :- इस पौधे में 0.15 प्रतिशत उत्पत् तेल, सेपोनीन्स, स्टेकीड्रीन एल्कलोइड, क्लोरोजीन, कौफीन, एइड्रोकी, ब्राऊन, फेनोलकार्वन अम्ल तथा 0.8 प्रतिशत फलेवोनाइड्स होते हैं। ये भी निर्धारित किया गया है कि इसके क्षुप में ओर्गेनिक एसीड्स 0.15 प्रतिशत उत्पत् तेल, ट्रायटर्पेनोइलस (युर्सोलीक एसीड़) साइटोस्टेरोल, 0.192 प्रतिशत एल्कलोइड्स, 3.5 प्रतिशत फ्लेवोनोइड्स, रूटीन, हायपरोझी तथा ए पदार्थ एवं उसके बीज में 34.4 प्रतिशत तेल होता है।

प्रयोग :- लेओनुरुस तुर्केस्तानिकुस, जो लम्बे समय तक भुला दिया गया था, ने फिर से वैज्ञानिक चिकित्सा शास्त्र में लोगों का ध्यान आकर्षित किया है। इसके भैषज्य गुणों को नाडी विकार, अनिद्रा, अधिक नाडी उत्तेजना, अपस्मार, हृदध मनी विकार, नाड़ी तन्त्र तथा हृदय के रोगों उच्च रक्तचाप की शुरूआत की अवस्था, हृत्संकोच, हृद्रोग तथा मनोभिघात में स्तम्भक के रूप में प्रयुक्त किया जाता है। इसके जैव शास्त्रीय प्रभाव के अनुसार लेओनुरुस तुर्केस्तानिकुस, वेलेरीअन सदृश है, लेकिन लेओनुरुस तुर्केस्तानिकुस की तीव्रता वेलेरीअन की तीव्रता से ज्यादा है।

व्यावहारिक चिकित्सा शास्त्र में लेओनुरुस तुर्केस्तानिकुस का प्रयोग कार्डीयोस्कलेरोसीस, हृत्मांसपेशी शोथ, मायोकार्डियोस्ट्रोफी, साइकोस्थिनिया, हृद्रोग तथा गलगण्ड व्याधि जैसे रोगों में किया जाता है। स्त्री रोग विज्ञान में इस पौधे का प्रयोग हायपोमेन्स्ट्रुअल सीन्ड्रोम तथा रजोनिवृत्ति काल की पूर्वावस्था में किया जाता है। लेओनुरुस तुर्केस्तानिकुस को चित्त शामक (sedative) चाय में एक घटक के रूप में डाला जाता है।

लोक चिकित्सा में लेओनुरुस तुर्केस्तानिकुस के क्षुप से बने पेय, फांट तथा मुरब्बा का प्रयोग हृद् दौर्बल्य, श्वसनक ज्वर, आमाशय शूल, अपस्मार, मूत्राशय की व्याधियाँ, गलगण्ड आक्षेपक स्थिति, शिर:शूल, कास, नाडीशूल, पचन संस्थान के विकार, घेघा, पाण्डु तथा क्लैव्य में होता है।

इसके मूल से निर्मित पेय का प्रयोग रक्तातिसार तथा अत्यधिक रक्तस्राव में होता है। इसके क्षुप को निचोड़कर प्राप्त किया हुआ स्वरस शूल शमन के लिये प्रयुक्त होता है।

कल्पना तथा प्रयोग :- एक गिलास (200 मि०ली०) उबले हुए पानी में एक बड़ा चम्मच (5 ग्राम) पौधे के क्षुप के बारीक कटे हुए टुकड़े मिलाकर थोड़ी देर रखें। तैयार फांट को कपड़े से छान लें। प्रतिदिन इस पेय का प्रयोग भोजन पूर्व 40-60 मिनट पूर्व करें। इसको एक बड़ा चम्मच से 1/4 गिलास तक मात्रा में रोज 3-5 बार पीना चाहिये।

लिपेदिउम सतीवुम (पेप्पर ग्रास)
LIPEDIUM SATIVUM (PEPPER-GRASS)

वर्णन :- लिपेदिउम सतीवुम (पेप्पर ग्रास) एक औषधीय कुतृण पौधा है। इसका दुनिया में 150 जातियां हैं जिनमें 35 मध्य एशिया देशों में और 10 जातियां तुर्कमेनिस्तान में पैदा होती हैं। ईरान, लिपेदिउम सतीवुम (पेप्पर ग्रास) डोजिटेरे की मातृभूमि है। यह पूरे दुनिया में जंगली पौधा के रूप में विस्तार से फैला हुआ है। अधिकांश जातियां औषधीय हैं। लोक में इसका नाम शाहतंर है।

क्रूसिफेरे कुल के 40-80 से०मी० ऊँचे लिपेदिउम सतीवुम (पेप्पर ग्रास) एक एकवार्षिक कोमल पौधा है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

काण्ड एकीय, सीधा छोटे गुच्छों में होता है। मूलपत्र वृन्तसहित पक्षवत्-द्विपक्षवत् खण्डित पिण्डिका युक्त रहता है। ऊपर के पत्र वृन्तसहित हैं, लम्बे, अखण्डित, नीलहरित वर्ण के होते हैं पुष्प छोटे सफेद गुच्छों में रहते हैं। फल गोल, अण्डाकार है। बीज अण्डाकार हलका या चपटे पीताभ धूसर चिकने होते हैं।

जैविक लक्षण :- 1000 बीज वजन में 2 से 3 ग्राम के बराबर होते हैं। लिपेदिउम सतीवुम (पेप्पर ग्रास) मई-जुलाई में फलते-फूलते हैं। बीज का अंकुरण अवधि 3-4 साल है। यह पौधा शीत प्रतिरोधी एवं अकालपुष्पी है। लिपेदिउम सतीवुम (पेप्पर ग्रास) को एक किस्म की भूमि नहीं चाहिए, नमी प्रेमी है। यह पौधा बीजों से प्रजनित होता है।

बुवाई के बाद बीज चौथे-दिन में अंकुरित होते हैं। लम्बे समय में ताजा हरियाली पाने के लिए बीजों को हर 15-20 दिन में अनेक बार बोना होता है। एक हेक्टैर में से 8 किलो बीज आना मानक मात्रा है। जब फल पीतवर्ण और बीज धूसर के होते हैं तब पौधे के बीजों को इकट्ठा किया जाता है। बीजों का उत्पादक सामर्थ्य प्रति हेंक्टर एक टन है।

विस्तार :- लिपेदिउम सतीवुम (पेप्पर ग्रास) हमारे देश के सभी प्रान्तों में हरित भूमि में लगाई जाती है।

प्राकृतिक उपलब्धि :- लिपेदिउम सतीवुम (पेप्पर ग्रास) तुर्कमेनिस्तान में एक दुर्लभ कोमल पौधा नहीं है। प्राकृतिक उपलब्धि औषधीय कार्य के लिए पर्याप्त मात्रा में है। यह पौधा विस्तृत रूप में उत्पन्न किया जाता है।

औषधीय कच्चा माल :- लिपेदिउम सतीवुम (पेप्पर ग्रास) के पौधे और बीजों का औषध निर्माण में प्रयोग होता है। कच्चा माल सामान्य रूप से सुखाकर इकट्ठा किया जाता है। बीज 3 साल के बाद वीर्यहीन होते हैं। कच्चा माल कांच के डिब्बों में या कागज की बोरियों में रखा जाता है (संचित किया जाता है)।

रासायनिक संघटन :- लिपेदिउम सतीवुम (पेप्पर ग्रास) डोजिटेरे के हरियाली कार्बोहाईड्रेट, प्रोटीन तत्व, सरसों के और वाष्पशील तैलों से (0.4-0.6 प्रतिशत), टैनिन, पोटाशियम लवण, कैल्शियम लवण, फास्फैट लवणों से भरपूर है। 100 ग्राम के शुष्क उत्पाद में आयोडिन, लौह, रुटिन 80 मि०ग्रा० तक, विटामिन ई 115 मि० ग्रा०, कैरोटिन 4 मि०ग्रा० और बी समूह के विटामिन रहते हैं।

उपयोगिता :- लिपेदिउम सतीवुम (पेप्पर ग्रास) डोजिटेरे के औषधीय गुणों के बारे में पहली सूचना डायोस्काटैड कोलुमेल्ला (ई०पू० प्रथम शती) तथा वरिष्ठ प्लैनी (23-79 ई० पू०) के कार्यों में दिया गया है।

प्राचीन काल में यह पौधा एक लोकप्रिय औषधीय प्रतिनिधि है और मसालेदार सुगन्धित गुण युक्त है। एक प्रतिष्ठित कार्य अबू अली इब्न सिना द्वारा हुआ कैनन ऑफ मेडिकल साईन्स में कुछ प्रजातियों की कार्मुकता (के० द्राबा, लि० लातिफोलिउम) क्लैव्य के लिए वर्णन किया गया है।

सेईट इस्मैल गुर्थेलि के कार्य 'ट्रेज़री ऑफ खेरेज़्म शाह' में कामला उपचार में लिपेदिउम सतीवुम (पेप्पर ग्रास) डोजिटेरे के उपयोगी गुण दिखाये गये हैं। अपने समय में प्रसिद्ध चिकित्सक मोहम्मद् हुसैन ने पुष्टि की है कि यह पौधा वृक्कीय एवं प्लीहीय अवरोधों को खोलता है, क्षय का नाश करता, मूत्रशोधक, मूत्रप्रवर्तक, मूत्राश्मरी और पित्तश्मरी नाशक तथा पाचक है। खास, क्लैव्य में, भूख और पाचन बढ़ाने में, नाड़ी तन्त्र को सुदृढ़ बनाने में, निद्रा को सामान्य करने, रक्तचाप को कम करने, मूत्रल के रूप में लिपेदिउम सतीवुम का प्रयोग होता है। इसका ताजा स्वरस जीवाणुनाशक द्रव्य के रूप में एवं पाण्डु में कार्य करता है। सर्षप पट्टी के स्थान पर बीज चूर्ण का लेप लगाते हैं।

तुर्कमेन लोक चिकित्सा में (बहर्ली, मगतिमगुली, कुजितंग पर्वतों में स्थित गांवों में) लिपेदिउम सतीवुम के क्षुप तथा बीजों एवं बकरी दूध के वसा या मक्खन 1:5 अनुपात में बने इसका लेप बच्चों में फुन्सियों पूययुक्त विद्रधि, अर्बुदों, पामा, बदबूदार व्रणों में लगाया जाता है।

लोक चिकित्सा में पेप्पर ग्रास के अनियोजित प्रजातियों (लि० एरास्फोलुप, लि० पेर्फोलिआनुम) का काम-दौर्बल्य, क्लैव्य में प्रयोग किया जाता है। भविष्य में इस जाति के विस्तार पर अनुसंधान करना स्वास्थ्य के अत्यन्तावश्यक विषयों में से एक है।

कल्पना एवं प्रयोग :- 20-30 ग्राम ताजा लिपेदिउम सतीवुम (पेप्पर ग्रास) डोजिटेरे दिन में 2-3 बार भोजन के 30 मिनट पहले खायें या लिपेदिउम सतीवुम (पेप्पर ग्रास) डोजिटेरे, एक काली मूली, अम्लीय दूध या क्रीम के सलाद बनाएं, यह क्लैव्य में काम करता है।

इस पौधे के छोटे छोटे टुकड़े करें। इसका एक बड़ा चम्मच (15 ग्राम) में एक ग्लास (200 मि०ली०) गरम पानी डालकर 30 मिनट कमरे के तापमान पर रखें। पश्चात् आधा गिलास (100 मि०ली) दिन में 2-3 बार सेवन करें। क्लैव्य में काम आता है।

15 ग्राम बीज लेकर एक गिलास पानी में 30 मिनट रखें और छान लें। 1-2 बड़ी चम्मच दिन में 3 बार भोजन के 40 मिनट पहले क्लैव्य के लिए प्रयोग करें। आमाशयिक व्रण एवं शूल में इसका प्रयोग वर्ज्य है।

पेप्पर ग्रास के बीज चूर्ण एक छोटी चम्मच (15 ग्राम) के बराबर और बकरी के पूंछ की वसा या मक्खन कांच के बर्तन में मिलाकर, एक अंधेरे, ठंडे कमरे में 7 दिन रखें और बीच-बीच में हिलाते रहें। बाद में इस पदार्थ को गरम करके दो बार छान लें। दिन में दो बार लेप जैसा लगा लें। यह फुन्सियों, पूययुक्त विद्रधियों, अर्बुदों, पामा, पूययुक्त व्रणों में उपयुक्त है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

लीचिउम देप्रेस्सेउम
LYCIUM DEPRESSEUM

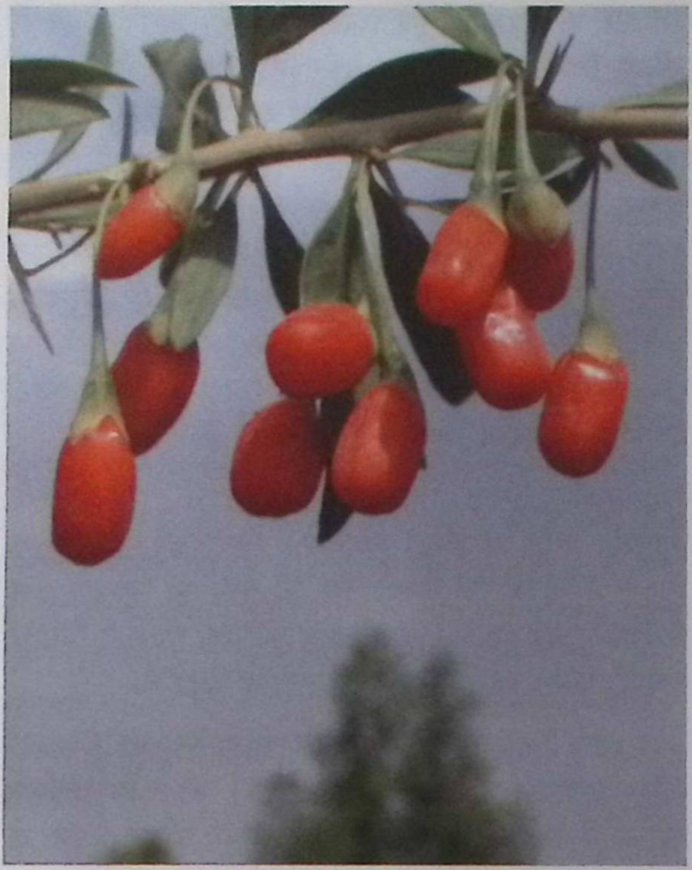

वर्णन :- तुर्कमेनिस्तान में इसकी तीन जातियां हैं। यह पौधा लगभग 1-2.5 मीटर ऊँचा है। यह एक फलदायी कुल का है। काण्डों पर अनेक भूरे या हलके धूसर वर्ण के कांटे होते हैं। इसका काण्ड सीधा, कठोर, 0.5 से 6 से०मी० लम्बा होता है। कांटों के नीचे छोटे पत्ते और कभी-कभी छोटे फल आते हैं। मुख्य काण्ड अनेक शाखा, उपशाखा युक्त होते हैं। उपशाखाओं के पार्श्व में से हलके भूरे, सफेद रंग के पत्ते बाहर आते हैं, जो 2.5 से०मी० लम्बे और 0.2-0.8 से०मी० चौड़ा होते हैं। वे लम्बे, भालाकार, पत्राग्र कुण्ठित, हलका सा आगे होते हैं। पुष्प उपशाखाओं पर दो या कभी-कभी 5-6 साथ में गुच्छों में रहते हैं। सफेद फूल 4-12 से०मी० चौड़ाई में होते हैं। पुष्पों का ऊपरी भाग हलका बैंगनी रंग में, फल लाल या गुलाबी वर्ण के, कभी लम्बे या गोलाकार 4-8 मि०मी० होते हैं। बीज धूसर घण्टाकार में 2-3 मि०मी० लम्बे, 1.5-2.0 मि०मी० चौड़े रहते हैं।

विस्तार :- माली बालसन, कुरेंडाग, दक्षिण-पश्चिमी कोपेतदग, अर्चमन, तोदुर, देष्त, गरबुरन, होजगल बहर्ली, सोल्लगर, उज़्बोय, सरहतबत, दशकोडगु तोपायतन, तग्तबज़र, गज़नजिक, सेरदार, अष्कबाद, तेजन, अतमीरात्, कोंतन में यह पाया जाता है।

प्राकृतिक उपलब्धि :- औषध प्रयोग के लिए पर्याप्त भण्डार उपलब्ध है। इसके फलों को औषधीय प्रयोग में लाया जाता है। फलों को जून में संग्रह कर और शुष्क परिसर में सुखाया जाता है। कच्चा माल कांच या कागज़ के डिब्बों में संरक्षण किया जाता है। भण्डारण 2 साल तक कर सकते हैं।

रासायनिक संघटन :- इसके फलों में तैल है, बीजों में भी विटामिन सी, पामिटिन, ओलीन आदि तत्व होते हैं।

प्रयोग :- प्राचीन समय से इस पौधे का औषधीय गुण सर्वविदित है। अबू अली इब्न सिना अपनी किताब कैनन ऑफ मेडिकल सायंस में बताया कि इन पौधे का पित्ताशय एवं यकृत् के रोगों के उपचार में प्रयोग होता है।

वैज्ञानिक चिकित्सा में कामला, पित्ताशय के उपचार में, कास में प्रयोग किया जाता है, क्षौद्र उत्पाद में भी इसका प्रयोग होता है।

कल्पना और प्रयोग :- एक तामचीनी पात्र में एक बड़ी चम्मच (15 ग्राम) बीज और 200 मि०ली० उबला हुआ पानी डालें और 5 मिनट उबालें। उसको छानकर ठंडा करें। इस द्रव्य को 200 मि०ली० दिन में 3 बार भोजन के 20-30 मिनट पहले 10-15 दिन तक लें।

2 बड़ी चम्मच (30 ग्राम) बीज एक लीटर पानी में डालकर 1-2 घण्टे रखें, उसके बाद छानकर 100 मि०ली० दिन में 3 बार भोजन के पहले 10 दिन सेवन करें।

5 ग्राम बीजों को कूटकर 100 मि०ली० सुरा में डालकर 10 दिन छोडें, बीच में हिलाते रहें, 5-10 बूंद भोजन के पहले 12 दिन सेवन करें।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

मालुस दोमेस्तिका
MALUS DOMESTICA

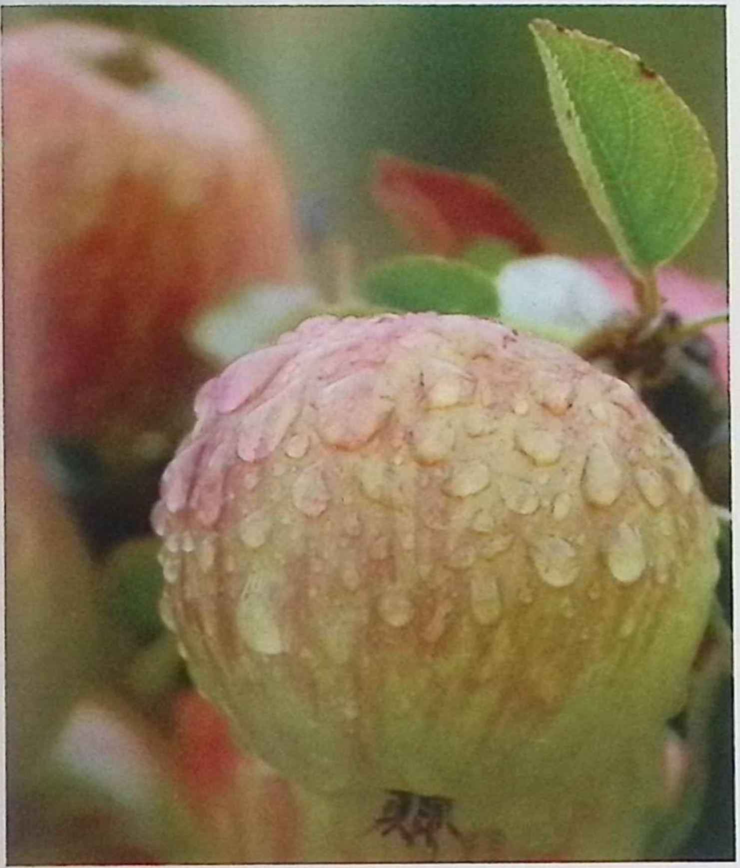

वर्णन :– मालुस दोमेस्तिका रोज़ेसी कुल का एक खेती किया जाने वाला पौधा है। यह एक 6-10 मीटर तक ऊँचा रहने वाला विशाल मुकुट और लंबगोल पत्र एवं सुगन्ध युक्त वृक्ष है। पत्र एकान्तर, अण्डाकार, उनके ऊपर के तल चिकना, नीचे की ओर रोमश है। फूल सफेद, गुलाबी, लाल बहुपुष्परहित विशाल छत्र जैसे सवृंत काण्डज पुष्पविन्यास में रहते हैं।फल एक सेव है। मालुस दोमेस्तिका अप्रैल-मई में फूलता हैं। जून-सितम्बर में फलता है।

फल गोलाकार अलग-अलग प्रमाण और रंग में और एक सुखद गन्ध और स्वाद सहित होते हैं।

हमारे देश में मालुस तुर्कमेनिका उपलब्ध है। यह एक वन्य पौधा है। यह तुर्कमेनिस्तान के एक अलभ्य स्थानीय पौधा है। कुछ जातियां पर्वत एवं खड्डों में निचले तथा मध्यम मण्डलों में उगता है। मालुस तुर्कमेनिका 2-3 मीटर ऊँचे एक वृक्ष व गुल्म है। कोपेदग के मध्य एवं दक्षिण-पश्चिमी प्रान्तों में फैला होता है।

जैविक लक्षण :– मालुस दोमेस्तिका के मीठे प्रकार पहले स्तर पर गरम, दूसरे स्तर पर आर्द्र हैं।

विस्तार :– मालुस दोमेस्तिका खड्डों में, पर्वतों के तराई और निचले मण्डलों में फैलता है। तुर्कमेनिस्तान के मरुभूमि में इसका कृषीकरण होता है।

प्राकृतिक उपलब्धि :– मालुस दोमेस्तिका के संसाधन औषध प्रयोग के लिए पर्याप्त है। तुर्कमेनिस्तान के मरुभूमि में इन जातियों का कृषीकरण होता है।

औषधीय कच्चा माल :– औषधीय कार्य के लिए मालुस दोमेस्तिका के फल, पत्र तथा त्वक् का प्रयोग होता है। फल आने के बाद त्वचा का संग्रह होता है। पेड़ के शाखाओं को काटकर, त्वचा निकालते हैं, फिर उसको छाया में सुखाते हैं। संस्कृत/तैयार कच्चा माल को कॉच के डिब्बों में या कागज़ की बोरियों में भर कर बान्धकर रखा जाता है। 2-3 साल तक वीर्य सहित रहते हैं।

पकने के बाद फल आहार एवं औषध प्रयोग के लिए इकट्ठे किये जाते हैं। खराब हो रहे और हो गये सेव को इकट्ठा नहीं करना चाहिए। विशेष भवनों में 70 डिग्री से ऊपर उष्णता पर वे सुखाये जाते हैं।

रासायनिक संघटन :– मालुस दोमेस्तिका में मैलिक अम्ल, जम्बीरम्ल सहित प्रांगारिक (आर्गानिक) अम्ल, मधुशर्करा, फल शर्करा, टैनिन, उड़नशील तैल, विटामिन सी, बी, पी, ए, कोशोज (सेल्यूलोस), पेक्टिन, खनिज लवण (लौह, मौंगनीस, पोटाशियम, सोडियम, कैल्शियम), फैटानसाईडस और अन्य पदार्थ रहते हैं।

प्रयोग :– मालुस दोमेस्तिका के औषधीय गुण सर्वविदित है। मध्यकाल के सुप्रसिद्ध चिकित्सक एवं वैज्ञानिक अबू अली इब्न सिना ने हृदय, आमाशय के लिए ताजा सेवों की उपयोगिता, पिष्ठान्न में सेब, प्रवाहिका में, विद्रधि में ताजा फलों के कल्क के बारे में अपनी पुस्तक "कैनन ऑफ मेडिकल सायंस" में लिखा है। अहमद हुसैन ने पके हुए, मीठे और खट्टे सेवों की उपयोगिता के विषय में लिखा है, लेकिन रस विहीन और अपक्व सेव को अप्रयोज्य कहा है। सेव हृदय, आमाशय, यकृत्, आंत्रों को बल देते हैं और उत्साहित करते हैं। वे विशेषकर धड़कन में उपयोगी हैं। खाने, सांस और गन्ध नाड़ी विकारों और मनोग्रस्तता में कारगर है। सेव मस्तिष्क को ताजा करता है और उसकी क्षमता को बढ़ाता है। स्थौल्य में त्वक् की चाय (फाण्ट) का प्रयोग होता है। लोक स्वास्थ्य में अग्निदग्ध, शीतदग्ध, दुष्टव्रण, ओष्टदारि के लिए सेवों के कल्क का प्रयोग होता है। शुष्क पत्रों का फाण्ट प्रतिश्याय और स्वरभेद में उपयोगी है।

फल पाण्डु रोग में प्रयोग होता है। सेव के ताजा स्वरस से प्राप्त फेरिकहाईड्रोसक्सिनेट सार जो लौह और स्वरस 2:100 अनुपात में है, पाण्डु में प्रयोग होता है। कई अर्बुदों में, मूत्रल के रूप में सेब को ताजा हवन में गरम करके या हलके आंच पर सीधा गरम करके प्रयोग में ला सकते हैं। पोटाशियम लवण एवं टैनिक पदार्थों से यूरिक अम्ल बनता है। सेब के तरल पदार्थ एवं चाय (फान्ट) जोड़ों के दर्द में, मूत्राश्मरी को पिघलाने में उपयोगी है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

शुष्क कास में हवन में गरम किया हुआ सेव कार्यकारी है। हवन में गरम किया हुआ सेब से फुफ्फुस और नाड़ी तन्त्र को हानि पहुंचती है। मधु सेवन द्वारा इससे हानि नहीं होती है।

कल्पना एवं प्रयोग :- तापपात्र (थर्मस) में उबलते हुए पानी और 1 बड़ा चम्मच (15 ग्राम) कूटा हुआ सेव वृक्ष के छाल डालकर रहने दें। इस फाण्ट को छानकर आधा गिलास (100 मि०ली०) भोजन के पहले दिन में 3 बार पियें।

2 गिलास (400 मि०ली०) पानी में 2 बड़ी चम्मच (30 ग्राम) सेव वृक्ष की छाल कूट कर डालें और हलके आंच पर 10-15 मिनट पकायें। ठंडा करके, छानकर, एक बड़ा चम्मच (15 ग्राम) दिन में 3 बार भोजन से पहले लें।

एक गिलास (200 मि०ली) उबले पानी में एक बड़ी चम्मच (15 ग्राम) सेव के पत्ते डालकर रखें। 2 घण्टे के बाद छानकर, 3 बड़ी चम्मच (45 ग्राम) दिन में 3 बार लें।

3 मध्यमाकार सेवों को 2 खण्डों में काटकर एक लीटर पानी में 10 मिनट उबालें। छानकर चीनी के साथ या चीनी के बिना पियें।

माल्वा निग्लेक्ता
MALVA NEGLECTA

वर्णन :- दुनिया में इस अपतृण कोमल पौधे की 40 प्रजातियाँ उपलब्ध है, 20 प्रजातियाँ मध्य एशिया में और 9 प्रजातियाँ तुर्कमेनिस्तान में हैं, यह माना जाता है कि लगभग सभी में चिकित्सोपयोगी लक्षण हैं। इसको ड्वार्फ मैलो भी कहते हैं।

माल्वा निग्लेक्ता 20-30 से०मी० ऊँचा पौधा है, जो माल्वेसी कुल का है। इस पौधे के अनेक ऊपर नीचे जाने वाली शाखाएं धूसर वर्ण के नक्षत्र आकार के केशों से ढके रहते हैं। पत्तो में एक लम्बा धागा होता है और पत्ते गोलाकार वृक्काकार, दोनों तल घने नक्षत्र आकार के केशों से ढ़के रहते हैं। पौधे के फूल पत्रकोण में रहते हैं। उनके फूलों में असमान लम्बे धागे होते हैं। पुंकेसर का वर्ण गुलाबी होता है। इसका वृन्तभाग गोलाकार कुकी जैसी है। बीज वृक्काकार चपटा, गहरा धूसर लगभग 1.9 मि०मी० लंबा होता है। पौधा मई-अगस्त में पुष्प, जून-अक्टूबर में फल देता है।

जैविक लक्षण :- 100 बीज 2 ग्राम वजन के होते हैं। यह खेतों में, वृक्षों में, आवास रहित तथा दुर्गन्ध स्थानों में पैदा होता है। इनकी संख्या बीजों से बढ़ती है।

विस्तार :- हमारे देश में एत्रेक में दक्षिणी-पश्चिम कोपेदग में मग्तिमगुली, डोदेर, गरवुल, देश्त, प्रास्तो, मध्य

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

कोपेदग में अर्चाबिल, होवदन गुर्तलीसुव, सुलुक्लि, बगिर, बहर्ली, गरमालिच, हिज़्देरे, एष्कबाद, मग्तिमगल प्रान्तों, पूर्वी कोपेदघ में दैचि, हरचिन्यान, काका, सेरदार, मोलोटेन, वैरामाली, वेकी बाजार, तेजेन, साराह आटाआयरत, कायतंदघ, होजयपिल प्रान्तों तथा सभी सांस्कृतिक बस्तियों में और पहाड़ों के तराई क्षेत्रों में आप इस पौधे को देख सकते हैं।

प्राकृतिक उपलब्धि :- यह दुर्लभ पौधों के समूह में नहीं आता है। औषधीय प्रयोग के लिए भरपूर है। लोग इसकी खेती भी करते हैं।

औषधीय कच्चा माल:- पौधा, फूल और जड औषधीय कच्चा माल के रूप में प्रयुक्त होते हैं। पुष्पण काल में फूल और पत्ते संग्रह किये जाते हैं। संग्रह के समय फूलों एवं पत्तों का धागा नहीं तोड़ना चाहिए। कच्चे माल को छाया में छोटे कमरों में हमेशा की तरह सुखाना और तैयार करना चाहिए। तैयार की गई औषधि को कांच पात्रों और कागज़ के डिब्बों में रखना चाहिए। इसे 1-2 साल तक रख सकते हैं।

रासायनिक संघटन :- इस पौधे में तत्काल जलवायु अनुकूल करने वाले प्रोटीन्स, शर्करा, नमी, आस्कार्बिक अम्ल, कारोटिन रहते हैं।

प्रयोग :- प्राचीन समय से पेल्लाओं के औषधि गुण सर्वविदित हैं। गेझिओद, गव हरिस के कार्यों में आदमी के लिए इसकी औषधीय उपयोगिता विषयक सूचना मिलती है। इसके ताजा पत्रों को भोजन के रूप में प्राचीन ग्रीक एवं रोमन प्रयोग करते थे। इसमें काफी चीनी है और पानक रुच्य है। आजकल ईजिप्ट, मंगोलिया एवं चाईना में भोजन के रूप में खाने के लिए उगाया जाता है। प्राचीन हस्तलिखित पत्रों में निम्नलिखित सूचना इस पौधे के बारे में मिलती है। ''इस पौधे में हलकी गन्ध है और यह एक विरेचक है। पानक के रूप में उरःशूल तथा मूत्रविसर्जन में प्रयोग करते हैं। इस द्रव्य के सेवन करने से फुफ्फुस और आन्त्र की हल्की वृद्धि होती है। शुष्क और तेज कास में यह उपयोगी है। डा० अबू अली इब्न सिना विश्व विख्यात अपनी केनन आफ मेडिकल सायंस नामक पुस्तक में इस के औषधीय चमत्कार के बारे में लिखा है कि जब इसे बतख की वसा में मिलाते हैं यह जोड़ों के दर्द को मिटाता है। इसको पट्टी के रूप में प्रयोग करें तो उपजिह्विका शोथ का नाश होता है। कास में कफनिःसारक के रूप में इसके बीज काम करते हैं और रक्त ष्ठीवन को रोकता है।

इस तृण से बनी औषध गले के खराबी में ही नहीं, पट्टी के रूप में व्रण, शोथ, और अर्श में भी काम आता है। पत्तों का ताजा कल्क अस्थि संयोजको का नाश करता है। तिब्बत चिकित्सा में इसे वृक्क और यकृत् के रोगों में प्रयोग करते हैं। इसके बीज मूत्रविसर्जन के लिए अच्छा माना जाता है। यकृत् शोथ एवं आमाशय शोथ में भी बीजों का प्रयोग होता है। यह पौधा दौर्बल्य को रोकता है और भूख बढ़ाता है।

तुर्कमेन राष्ट्रीय एवं लोक चिकित्सा (मगतिमगुली और बइर्ली जैसे पर्वतीय क्षेत्रों में) पेल्ला के मूल से बने फाण्ट अतिस्थौल्य को रोकने के लिए प्रयोग होता है।

कल्पना एवं प्रयोग :- एक बड़ा चम्मच (15 ग्राम) अच्छी तरह सूखा हुआ पेल्ला के मूल तथा 200 मि०ली० पानी एक कलई के पात्र में डालकर 10 मिनट मंदाग्नि पर उबालें और छान लें। 1/2 गिलास (100 मि०ली०) दिन में 3 बार भोजन से पहले लें।

इस पौधे के बीज एक चम्मच एक गिलास पानी में डालकर 10 मिनट उबालें, छान लें। इसका एक कप दिन में 3 बार लें। यह औषध मूत्र विसर्जन में कार्य करता है।

एक बड़ा चम्मच बीजों को 1 लिटर पानी में कुछ देर रख कर, छान कर, दिन में 3 बार लें। यह यकृत् शोथ और आमाशय शोथ में उपयोगी है। एक बड़ा चम्मच सम्यक् शुष्क तृण की 100 मि०ली० बतख बसा में एक सप्ताह रखें। तैयार औषध को जोड़ों के खराब जगहों पर लगाएं। यह औषध उपजिह्विका शोथ को भी दूर करता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

मार्रुबिउम अनिसोदोन
MARRUBIUM ANISODON

वर्णन :- इस औषधीय पौधे के काण्ड सीधा, शाखा युक्त स्वल्प हरितवर्ण और तन्तुओं से ढ़के होते हैं। यह स्पांजिऔस का प्रतिनिधि है, यह बहुवर्षीय पौधा है। यह पौधा 50-120 से०मी० ऊँचा है। इसके नीचे के पत्ते गिर जाते हैं और फूल 5 से०मी० दूर में रहते हैं।

पत्र दन्तुर हैं, नीचे के पत्ते पतले, रेशेयुक्त होते हैं। नीचे पत्तों से ऊपर के पत्ते प्रकाशमान हैं और वे छोटे और काण्ड के नज़दीक में रहते हैं। पत्ते के नीचे छोटे चमकदार 15-20 फूल गुच्छों में रहते हैं फल 2 मि०मी० लम्बे, अण्डाकार, त्वचा चिकनी और गहरे रंग की है।

जैविक लक्षण :- यह समुद्र से 800-2000 मीटर ऊँचे प्रान्तों में पैदा होता है। यह तराई, नदी तट और नमी सतह पर उत्पन्न होता है। यह पौधा मई-अगस्त में पुष्पित होता है। जून-सितम्बर में फल देता है।

विस्तार :- मार्रुबिउम अनिसोदोन बोलबोई और माली बालखन, सेंबुलमेग, कुरेंदग, गरजस, गैरज़बुग, सेरदर, सोमुदग, उलदेप, अल्देप, दक्षिणी पश्चिम कोपेदघ सुंत, खोजकलाद, जेलैल, उल्देप, अलदेप, कोपेदग, मध्य प्रान्त में नोखुर, चोपनदग, अर्चाबिल, होवदन, दागिष, दश्तोय, असिल्सा, अकरचेष्मे, नार्दिवन्दे में पैदा होता है।

औषधीय कच्चा माल :- औषधीय कार्य के लिए इस पौधे का पंचांग ही कच्चा माल है। पुष्पकाल में इसे इकट्ठा करते हैं। अंधेरे स्थान में सुखाया जाता है और कपड़े की बोरियों में संचय किया जाता है। इसका संचय समय 1-2 वर्ष है।

रासायनिक संघटन :- इसमें 0.16 प्रतिशत कोलीन, स्टैहिनोरोन जैसे 0.4 प्रतिशत इथैल तैल, विटामिन सी, कोफापैन, कार्बोनिक अम्ल, फ्लैवोनोईड़े अन्थोसियनिन होते हैं।

प्रयोग :- यह लोकप्रसिद्ध औषधीय पौधा गल रोगों में प्रयोग होता है। इस तृण का स्वरस कृशताजनक और वेदनानाशक है। तुर्कमेन लोक चिकित्सा में (बेरकेत, बहर्ली, गिर्कदेप, सेर्हतबत में) इस पौधे से आन्त्र रोग मिटाया जाता है। यह यकृत् रोग और कास में प्रयोग किया जाता है।

निर्माण एवं प्रयोग :- 200 मि०ली० पानी में 1 चम्मच तृण डालकर 30 मिनट रखें, छानकर एक बड़ी चम्मच दिन में तीन बार भोजन से पूर्व लें।

100 मि०ली० सुरा में 2 बडे चम्मच महीन काटा हुआ पौधा एक कांच पात्र में डालकर अंधेरे जगह में एक सप्ताह रखें।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

मार्रुबिउम वुल्गारे
MARRUBIUM VULGARE

वर्णन :- दुनिया में इस पौधे की 40 प्रजातियां हैं। मध्य एशिया में 15 तथा तुर्कमेनिस्तान में 3 प्रजातियां पाई जाती हैं। यह लाबिएते कुल का प्रतिनिधि है। यह 40-100 से०मी० के एक बहुवार्षिक पौधा है। पूरा पौधा श्वेताभ ऊन से ढका हुआ। कभी कभी मृदुलोमशी होता है। काण्ड चतुष्कोणीय और बहुशाखीय है। नींचे के पत्ते अण्डाकार, गोल और पत्रधारा दन्तुर, आकार, नीचे के ओर नोकीले, दीर्घ पत्रवृन्त सहित, ऊपरी भाग दर्शनीय हरे रंग में, निम्न तल सफेद, ऊन से ढ़का हुआ रहता है।

इसमें अनेक पुष्प युक्त गुच्छे, एक अयथार्थ गुच्छे के रूप में रहते हैं। पुष्प के बाह्यदल असमान अनाच्छादित आरावत् दन्तुर युक्त है। पुंकेसर सफल है। फल अण्डाकार के एक छोटी दृढ़फल है। यह 2 मि०मी० लम्बी नीचे की ओर, ऊपरी भाग वक्र, नीचे के भाग दो बाजूवाला हरिताभ, काले धब्बे के साथ थोड़ा चिकना होता है।

जैविक लक्षण :- यह पौधा समुद्र तल से 600-1200 मीटर की ऊँचाई में हमारे देश के सीमा में पैदा होता है। वन्य प्रजाति के रूप में यह गलीदार भूमि में, घाटी, ढ़लान पर रहता है। यह जून-अक्तूबर में पुष्पित और फलित होता है।

विस्तार:- हमारे देश में यह बोलपोई और मली बालखान क्षेत्र में गरजचेष्मे, तुस्मेर्जेन, जेबेल, कोपेदग की दक्षिणी-पश्चिम प्रान्त गरोलम नोहुद में कोपेतदग के मध्य प्रान्त चोपदंग, गुर्तलीसुव, और हौदन में पाया जाता है।

प्राकृतिक उपलब्धि :- हमारे देश के दुर्लभ पौधों में यह एक है। समुचित मात्रा में उपलब्ध है। कृषीकरण के लिए संस्तुति की गयी है।

औषधीय कच्चा माल :- इसके पंचांग, पत्ते और कोमल शाखाएं प्रयोज्यांग हैं। पुष्प आने के बाद इन्हें संग्रह करते हैं (जून-अगस्त) ओर शायबान के नीचे छाया में या शुष्क स्थान में सुखाया जाता है। इसको कपड़े की बोरियों में रख कर 1-2 साल तक प्रयोग कर सकते हैं।

रासायनिक संघटन :- इसके संघटन में 0.18 प्रतिशत वाष्पशील तैल (इसमें पायनीन, कॉफीन, लैमोनीन सब्रीवेन, फेनशेन, टर्पिनोलेन हैं)। डाईटर्पिनोईडें, सेपोनिन, क्लोरोजन, काफीनहायिड्रोक्लोरोजेन, फिनोल कार्बन अम्ल, कोमरिवें, फ्लेवर्बाईडें और विटामिन सी हैं। यह सिद्ध किया गया कि इनके पत्रों और पुष्प गुच्छों में 0.67-1.68 प्रतिशत गैरिकेन, 0.13-0.57 प्रतिशत मरूबिओल, 0.05-0.13 प्रतिशत पेटेग्रिबोल डाईटेर्पिनोईड़ें होते हैं।

प्रयोग :- लोक एवं वैज्ञानिक चिकित्सा में कषाय और फाण्ट अल्प रक्तचाप, यकृत् शोथ, मूत्राश्मरी, पाचनक्रिया, आमाशय शोथ, तीव्र श्वास रोग, ज्वर, ऋतुस्वल्पता के लिए एवं निद्राजनक, पित्तस्रावजनक के रूप में प्रयोग होता है। इस पौधे की कोमल शाखाओं के कषाय आमवात, हृदय विकारों में उपयोगी है। तुर्कमेन लोक चिकित्सा में (बेरकेत, मगतिमगुली, बहर्ली, गोकदेप, डात्राप्स में) पत्ते से बने कषाय और फाण्ट कास, आमाशय शोथ और चर्म रोगों में उपयोगी है। कटे हुए पत्र सर्प विष में लेप के रूप में काम आते हैं।

निर्माण एवं प्रयोग :- 2 बडे चम्मच कुटा हुआ तृण एक गिलास (200 मि०ली) पानी में रखकर 4 घण्टे छोड दें। फिर कपड़े में छानकर दिन में एक बार लें। एक बडे चम्मच (15 ग्राम) तृण एक गिलास (200 मि०ली) पानी में एक कलई पात्र में रखकर हलके आंच पर 5-8 मिनट उबालें। बाद में छानकर एक बड़ी चम्मच (15 ग्राम) भोजन के पहले दिन में 3 बार सेवन करें।

2 बडे चम्मच सूखे पत्ते एक गिलास (200 मि०ली) उबले पानी में डालकर थोडी देर छोड़ दें। फाण्ट को छानकर, दिन में 3 बार एक बड़ी चम्मच (15 मि०ली०) सेवन करें।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

मेदिआसिआ माक्रोफ़ील्ला
MEDIASIA MACROPHYLLA

वर्णन :- यह बहुवार्षिक क्षुपीय पौधा है जो उंबेल्लिफेरे कुल का है और 100-200 से०मी० ऊँचा है। काण्ड नज़दीकी गुच्छों में गोलाकार, विरले ही रेशेयुक्त है। पत्ते मोटे, पत्र फलक 4-5 से०मी० लम्बा होता है। पत्रवृन्त मृदु लोमश है। पुष्प मिले हुए छत्राकार पुष्पविन्यास में रहते हैं। इसे 20 नमूनों में से अलग कर सकते हैं। पुष्प असमलैंगिक हैं। पुष्प बाह्यदल दन्तुर नहीं है। पत्ते हल्के धूसर या गुलाबी वर्ण के हैं। फल अंडाकार या हल्के चपटे और 6 मि०मी० लंबे होते हैं।

1000 बीज वजन में 7.5 ग्राम होते हैं। मेदिआसिआ माक्रोफ़ील्ला जून-जुलाई में पुष्पित, और जुलाई-सितम्बर में फलित होते हैं।

जैविक लक्षण :- यह समुद्र तल से 1300-2800 मीटर ऊंचाई पर पैदा होता है। पौधा पथरीले ढ़लानों को पसंद करता है। इसमें मनोहर गंध और स्वाद होते हैं। यह मिट्टियों के लिए अनाडम्बरी है। यह अकाल विरोधी और छाया-विरोधी है। जीवन की तीसरी और चौथी साल में पुनरुत्पत्ति के प्रजननांग (पुष्प, बीज) प्रकट होते हैं। एक प्रौढ़ पौधे से 15-20 काण्ड पैदा होते हैं और एक-एक काण्ड से 30-40 छत्राकार पुष्प विन्यास होते हैं। एक नमूने में 117-483 हजार फूल रह सकते हैं। यह सूखे पथरीले प्राकृतिक मलबायुक्त ढ़लानों में पैदा होता है।

बीजों के अंकुरण की उष्णता मध्याह्न में 25-28 डिग्री से० और रात में 12-14 डिग्री से० से नीचे होता है। काण्ड विकास का अत्यधिक उष्णता +26 डिग्री सैल्शियस माना जाता है। इस पौधे का विकास 5-6 मास तक रहता है।

विस्तार :- यह केवल कुगितांग, गरदश, बुलकदेप के तीखे ढ़लाव वाली गहरी घाटी में, मर्गुश, होजापिल, कुगितांग गांव, होजाकराकुल और गरलिक में पैदा होता है।

प्राकृतिक उपलब्धि :- यह एक पौधा है जो अधिकांश तुर्कमेनिस्तान सहित पूरब में प्रयोग होता है, इसके कारण इसकी उपलब्धि कम होती जा रही है। संसाधनों को अत्यन्त कुशलता पूर्वक प्रयोग करना चाहिए। प्रति हैक्टर में 160 से 200 गुल्मों का घनत्व है। औषधीय उपयोग के लिए संसाधन सीमित है। इसका कृषिकरण हो सकता है।

औषधीय कच्चा माल :- इसके पत्र और मूल औषध कार्य के लिए प्रयोज्यांग हैं। हमेशा की तरह सुखाया जाता है। तैयार किए गए कच्चा माल कागज के या कपड़े के बोरियों में रखा जाता है। 1 से 5 साल तक रख सकते हैं।

रासायनिक संघटन :- मूल, पंचांग और पुष्प विन्यास में अत्यन्त हलके तैल रहता है। फलों में क्वेर्सेटिन और गैलक्टोपैरबोस फलैवोनोईड़े वसीय अम्ल जैसे मिरिस्टिक, पामिटिक, ओलीक और लैनोलीक। कोमरिन मूलों का एक घटक है। पौधों में विटामिन ए, सी, ई, बी, बी2, बी6, पीपी के रहते हैं।

प्रयोग :- इस के ताजा और शुष्क भाग औषध में प्रयोग करते हैं। इसके पत्ते विटामिनों से भरपूर हैं, ज्वलित दूध के दुर्गन्ध को नाश करता है और इस दूध का प्रयोग करते हैं।

इस के औषधीय गुण अबू अली इब्न सिना और अबू रेहान बिरूनी के कालों में सर्व विदित प्रतिष्ठित थे। दोनों ने अपनी किताबों क्रमशः कैनन ऑफ मेडिकल सायंस और फार्मकोग्नोसी ऑफ मेडिसीन में पौधे के कषाय और फाण्ट के कार्य क्षमता के विषय में इनके व्रणरोपक कर्म और नाड़ी विकारों में उनके निद्राजनक कार्य को भी लिखा है। मुहम्मद हुसैन द्वारा ट्रेज़री ऑफ मेड़िसिन में इनके बलवर्धक कर्म के साथ उपयोगी गुणों का उद्धरण किया गया।

तुर्कमेन राष्ट्रीय चिकित्सा एवं लोक चिकित्सा सहित पूर्वी प्रान्तों में इसे दूर-दूर तक प्रयोग में लाया जाता है। राष्ट्रीय चिकित्सा में संधिवात, मूत्राशय शोथ, गर्भाशय शोथ, स्त्री रोग, यकृत् रोग, विस्फोट, कुछ चर्मरोग, दुष्टव्रण, अतिस्वेद में और रक्तरोधक के रूप में भी पौधे के मूल और पत्रों से बने कषाय, फाण्ट, चाय, औषधीय सुरा प्रयोग में लाये जाते हैं।

प्राचीन काल से कुगितांग पर्वत के गावों के लोग इसके पत्तों एवं पुष्प गुच्छों को स्याह जीरा के स्थान में प्रयोग कर रहे हैं। इस पौधे की छोटी शाखाओं को डालने पर दूध को 10-12 दिन रख सकते हैं। एक लीटर दूध में 2-3 पत्ते या पुष्प गुच्छ डालना पर्याप्त है।

निर्माण एवं प्रयोग :- एक बड़ी चम्मच (15 ग्राम) इसके शुष्क मूल एक गिलास (200 मि०ली०) उबलते पानी में डालकर 2-3 घण्टे छोड़ दें। छानकर दिन में 3 बार 100 मि०ली० का सेवन करें। 2 चम्मच एक लीटर (200 मि०ली०) पानी में डालकर एक कलई पात्र में 10-15 मिनट तक मंदाग्नि पर उबालें। ठंडाकर, छान लें। एक बडा चम्मच (15 ग्राम) दिन में 3 से 4 बार लें।

2 बडे चम्मच जड़ी बूटी (30 ग्राम) उबलते पानी में डालकर तापीय पात्र में रहने दें। उसे दूसरे दिन में पियें।

एक बडा चम्मच (15 ग्राम) शुष्कमूल 500 मि०ली० पानी में डालकर 20-30 मिनट मंदाग्नि पर उबालें। ठंडाकर छान लें। एक चम्मच दिन में 3-4 बार पियें।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

आधा गिलास 100 मि०ली० औषधीय सुरा में 2 बडे चम्मच (30 ग्राम) (100 मि०ली०) पत्ते कॉच पात्र में डालकर ढ़क्कन कसकर बन्द कर दें और अन्धेरे स्थान पर 10 दिन रखें। बीच-बीच में हिलाते रहें, छानकर, 15 से 20 बूंद दिन में 3 बार लें।

एक बड़ा चम्मच (15 ग्राम) जड़ी बूटी का जवकूट और 100 ग्राम वैसलीन या मक्खन के मिश्रण 2-3 दिन रखें और दुष्ट व्रणों पर लगाएं।

मेन्ता आसिआतिका
MENTHA ASIATICA

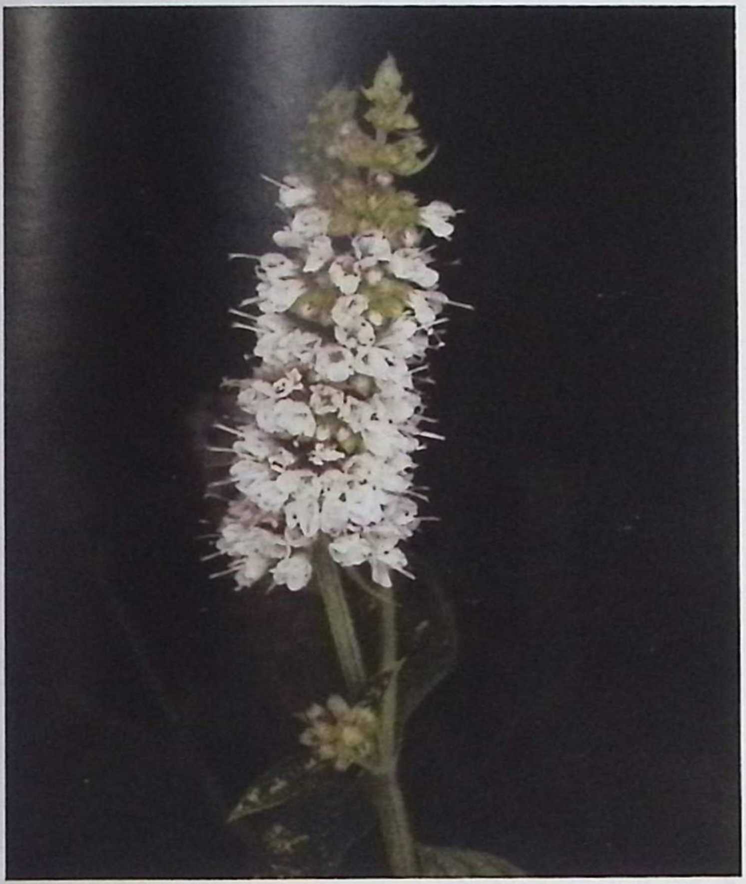

वर्णन :- यह एक औषधीय सुगंध पौधा है, दुनिया में इस पौधे की 25 प्रजातियाँ हैं, और 14 प्रजातियाँ मध्य एशिया में, 5 तुर्कमेनिस्तान में पाये जाते हैं। इनमें से ज्यादातर चिकित्सा में प्रयोग होते हैं। मेन्ता आसिआतिका कुल से संबन्धित है। यह बहुवार्षिक, केशयुक्त, 60-160 से०मी० ऊँचा होता है। अधिकांश वृक्षस्कन्ध पतले, कुण्ठिताग्र एवं चतुष्कोणीय हैं। पुदीना के पत्ते और काण्ड के दोनों तरफ मखमल जैसे हैं। इसके फूल सफेद एवं सुन्दर हैं।

जैविक लक्षण :- यह पौधा समुद्र तल से 400-1200 मीटर ऊँचाई में पैदा होता है। यह जून-जूलाई में पुष्पित और जुलाई-सितंबर में फलित होता है। यह उद्‌भिदीय रूप से प्रजनित होता है।

विस्तार :- यह बालखन, कुरेदंग, पूर्वी-पश्चिम कोपेतदग, कोपेतदाग के मध्य प्रान्त जैसे सरिमसाकली, सुलिक्लिक, पुसुनेव, गिलगिलाव, अर्चबिल, गोकदेर, दुषकरेकदग, पूर्नी कोपेदग जैसे गुरिहोवदन, वाचदा, मैनिष, कसमलिकानिओन, बधिच, कोईतेनदग, कोपेतदग के तराई क्षेत्र, मुर्गब के सांस्कृतिक स्थानों में पाया जाता है।

प्राकृतिक उपलब्धि :- यह एक दुर्लभ पौधा नहीं समझा जाता है। औषध कार्यों के लिए पर्याप्त भण्डार है। यह खासकर शाक बगीचों और कृषि क्षेत्रों में उगाया जाता है। पुदीना की सुरा और पत्ते कच्चा माल के रूप में औषध कार्य के लिए प्रयोग होते हैं। पुष्पकाल में पत्तों को संग्रह कर हमेशा के लिए छाया में सुखाना चाहिए। तैयार कच्चा माल को कपड़े के बोरियों में रखते हैं। रखने का समय 1-2 साल हैं।

रासायनिक संघटन :- इसमें प्रांगोदीय उड़नशील तैल (मीथोन, अईसो-मीथोन, कॉँफीन, मिर्सच, लैमोनीन, पुलिगोन, कार्वोन, पाईपेरिटोन, सिदूल, नेरोल, लाईनलूल, कार्वक्रोल, थाईमोल, फिनोल सहित) विटामिन सी, के, पीपी, ई, केरोटीन, कोमरिन आँगिक अम्ल पदार्थ रहते हैं।

प्रयोग :- पुदीना एक प्रसिद्ध पौधा है जो प्राचीन काल से चला आ रहा है। अबू अली इब्न सिना द्वारा लिखी गयी सुप्रसिद्ध पुस्तक 'कैनन ऑफ मेडिकल सायंस' द्वारा चिकित्सा में इसकी उपयोगिता लिखी गयी है। वे कहते हैं कि आमाशय शूल, कामला और हल्लास जैसे रोगों में चिकित्सा के रूप में प्रयोग होता है।

इसके पत्तों से बने पानक छेदन के लिए, आमाशय शूल, यकृत् शोथ, अवरोध एवं संपीडन करने वाले स्तनशोथ के लिए एवं लोक चिकित्सा में कण्डू के लिए प्रयोग होता है। अपस्मार, आमाशय शूल, छर्दि, अतीसार, फुफ्फुस शोथ, आमवात, व्यावसायिक आमाशयिक शोथ, दन्तशूल, आनाह में इसका क्वाथ उपयोगी है। मूत्रलद्रव्य, प्रतिदोषरोधी, उत्तेजकरोधी, स्रंसनकारी के रूप में, राजयक्ष्मा, आमाशय शोथ, त्वगीयकवकार्ति में इसका फाण्ट प्रयोग होता है। मध्यकाल में अर्मीनियन चिकित्सा में पुदीना का प्रयोग रक्तचाप और मानसिक रोगों के लिए हुआ था।

दन्तशूल में, दान्तों को खँगालने, आमवात, हृदयपीड़ा, छेदन कराने, यकृत् रोग, आमाशयिक व्रण के लिए तुर्कमेन लोक चिकित्सा में इस पौधे के कषाय और फाण्ट का प्रयोग होता है। भूख बढ़ाने, अग्निबल को उत्तेजित करने में, चाय के बदले विटामिन पेय के रूप में पुदीना के पत्रों का प्रयोग होता है।

वैज्ञानिक चिकित्सा में पुदीना के काढ़े से बने औषधों का प्रयोग उत्तेजनानिरोधक, रक्तसंकुलता को कम करने, प्रतिदोषरोधी, पित्तजन्य, संज्ञारोधक के रूप में होता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

पुदीना के तैल और पत्तों से ढ़ेर सारे औषध बनाए जाते हैं और वे जटिल उपचार में प्रयोग किए जाते हैं।

निर्माण और प्रयोग :- २ बडे चम्मच पौधे के पत्ते लेकर २ गिलास (४०० मि०ली०) उबले पानी में डालकर २० मिनट रखें और छानकर १०० मि०ली० प्रतिदिन भोजन से १५-२० मिनट पहले लें। पुदीना के काढ़ा (१५ ग्राम) एक गिलास (२०० मि०ली०) उबले पानी में डालकर २ घण्टे रखें। तैयार फाण्ट को छानकर एक बड़ी चम्मच दिन में ३ बार भोजन से ३० मिनट पहले पियें।

मेन्ता लोंजीफ़ोलिआ
MENTHA LONGIFOLIA

वर्णन :- वन्य मेन्ता लोंजीफ़ोलिआ पर्वतों में, नदियों के किनारे पर्वतीय स्रोतों में उगता है। इस में आस्कोर्बिक अम्ल 25 मि०ग्रा० प्रतिशत तक, कैरोटिन 7.3 मि०ग्रा० प्रतिशत, रुटिन 13.8 मि०ग्रा० प्रतिशत रहते हैं। मेन्ता लोंजीफ़ोलिआ के वाष्पशील तैल मेन्थोल को 65 प्रतिशत तक बनाता है।

लोक चिकित्सा में मेन्ता लोंजीफ़ोलिआ एक बलवर्धक उपचार के रूप में प्रयोग होता है। श्वसननलिका और पाचनांगों के रोगों की चिकित्सा में भी यह कार्यकारी है। इसका क्वाथ पाचनांगों के संकोच, निद्राल्पता के उपचार में सहायक होता है। कास और गले के रोगों के उपचार में सूंघने के द्रव के रूप में प्रयोग होता है। यह एक मूत्रल चाय का योग है।

मेन्ता लोंजीफ़ोलिआ एक बहुवार्षिक, शीत- प्रतिरोधी लाबिआते कुल का पौधा है। काण्ड चतुष्कोणीय, 60 से 80 सें०मी० ऊंचा है। बीज से अनेक अंकुर समतल भूमि के ऊपर पैदा होकर जल्द ही मूल देते हैं। पत्ते लंब गोल और अवृन्त हैं। मेन्ता लोंजीफ़ोलिआ के प्रकन्द समतल, शाखीय भूमिगत काण्ड, उभरे हुए पर्वों के साथ जिन पर कलियां और अस्थानिक मूल रहते हैं और वे मेन्ता लोंजीफ़ोलिआ के पौधों को प्रजनित करने में प्रयोग किये जाते हैं।

यह जुलाई-अगस्त में फूल देता है, जो गुलाबी-बैंगनी रंग के होते हैं। मेंथा पिपरेता लोंजीफ़ोलिआ में बीज नहीं तैयार होते हैं। मेन्ता लोंजीफ़ोलिआ खूब बीज देता है। यह गंध में निर्मल, कहरुवा रंग, पुदीना गंध और ताजा स्वाद रहते हैं।

मेन्ता लोंजीफ़ोलिआ पर्याप्त मात्रा में नमी युक्त वनस्पति तलयुक्त भूमि पर और दलदली जमीन पर उगता है। मेन्ता लोंजीफ़ोलिआ के लिए उत्तम जमीन है, जिसमें अम्लता 5-7 पी. एच. रहता है। पानी से भरी जमीन इसके लायक नहीं है। मेन्ता लोंजीफ़ोलिआ हरे भरे पदार्थ को उत्पन्न करने वाले उर्वर से अच्छा उगता है। मेन्ता लोंजीफ़ोलिआ को जोताई के दूसरे साल में गोबर के उर्वर पर रखते हैं।

पौधे विविध क्षेत्रों में अच्छा पैदा होते हैं। प्रजनित करने के लिए कटे टुकड़े (उन्हें काट के रेत में गाढ़ते हैं), भूमि के उपर फैलने वाले अंकुर (उन्हें पूरे या टुकड़ों में काटकर लगाये जाते हैं), पुराने उत्पादनों से लिए हुए प्रकन्दों के टुकडों को (वसन्त में विभाजित) प्रयोग करते हैं।

मेन्ता लोंजीफ़ोलिआ को बड़े-बड़े खण्डों में 20-30 से०मी० दूरी पर पंक्तियों में जिनके बीज में 50-60 सें०मी० दूरी है, प्रतिरोपित करते हैं। परन्तु एक मीटर खण्डों में 33 सें०मी० के 3 पंक्तियों में प्रतिरोपण किया जाता है।

कटाई के बाद क्षेत्रों को ढ़ीला किया जाता है। अगले साल जमीन के देखभाल के लिए पंक्तियों के बीच जगह को भी ढ़ीला करते हैं और उर्वर लगाते हैं, एक यन्त्र से पौधों को हल्के करते हैं।

2-3 साल बाद में मेन्ता लोंजीफ़ोलिआ का उत्पादन कम हो जाता है। पौधे समूहों में उगते हैं, केवल उर्वरी भूमि में ही पौधे 4-5 साल तक फैलते हैं। पंक्तियों को बदलकर पुराने पौधे को काटकर नए पौधों को लगाकर पुरानी पंक्तियों के बीच में प्रकन्द के टुकड़ों (तरुण) को बदल कर मेन्ता लोंजीफ़ोलिआ के खण्डों को नवीकरण और जीवन युक्त कर सकते है। उष्ण घरों में मेन्ता लोंजीफ़ोलिआ अंकुरित हो सकता है। पतझड़ में अक्तूबर में प्रकन्दों को पेटियों या गमलों में रखकर गरम घरों में अंकुरित होने के लिए प्रतिरोपित करते हैं।

फूल आने के प्रथम काल में जब पत्रों में अत्यधिक वाष्प शील तैल रहता है तब मेन्ता लोंजीफ़ोलिआ की कटाई की जाती है। दक्षिण में हरे पदार्थ को 2 या कभी-कभी 3 बार इकट्ठा करते है। पौधे को नीचे से काटते है। कटाई के बाद उसे छाया में सुखाते हैं।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

एक वर्ग मीटर से 150-200 ग्राम का शुष्क पत्रों की कटाई होती है। पत्र, पुष्प और नए काण्डों को मसाले के रूप में सलाद और शाकाहार व्यंजनों में मिलाते हैं। पत्रों से वाष्पशील तैल निकाला जाता है। पेय, चाय मिश्रण, मिठाइयों को सुगंधित करने के लिए बहुत प्रयोग करते हैं। चिकित्सा में यह वैलोकोर्डिन, वैलिडोल, ज़ेलेनिन बिन्दु के योगों में प्रयोग किया जाता है।

मेन्ता पिपेरिता (पेप्परमिंट) MENTHA PIPERITA (PEPPERMINT)

वर्णन :- मेन्ता पिपेरिता (पेप्परमिंट) एक तीक्ष्ण सुगंध वाला पौधा है। दुनिया में इस पौधे की 50 जातियाँ है, मध्य एशिया के देशों में 20 और तुर्कमेनिस्तान में 5 जातियाँ हैं। अधिकतर औषधीय गुण युक्त हैं। इसके गुर्नकैरन, तर्पकेसेन लोक नाम हैं।

इंग्लैंड मेन्ता पिपेरिता (पेप्परमिंट) इसकी मातृभूमि है। इसको इंग्लैंड से खण्डांतर यूरोप में, एशियन और अमेरिका के देशों में लाया गया।

मेन्ता पिपेरिता (पेप्परमिंट) 50 से 80 सें०मी० ऊँचा एक बहुवार्षिक क्षुपीय पौधा है जो लेबिएटी कुल का है। इसके प्रकन्द भूमि में समानांतर रहते हैं। प्रकन्द का मुख्य भाग जमीन से 5-15 से०मी० गहराई में रहता है, पतले दुर्बल मूल तन्तु प्रकन्दों के गांठों से निकलते हैं। शाखाओं एवं पत्रों का विन्यास (बनावट) आडी तिरछी अभिमुख है। पत्र एकल, छोटे वृन्तवाले, लंबाई-अण्डाकार, पत्राग्र नोकीले, लम्बे, तीव्र दन्तुर पत्रधारायुक्त, पत्र के निचले तल उड़नशील तैल ग्रन्थियों से ढ़के रहते हैं। पुष्प छोटे लाल-हलके बैंगनी रंग के, मिथ्या वलयों में वंन्धित क्विकवे दन्तुरबाह्यदल युक्त है, जो शाखाओं के चोटी पर अवृन्त पुष्पविन्यास के रूप में बनते हैं। फल सामूहिक है जिसमें 4 धूसर वर्ण के छोटे अविदरण फल हैं।

मेन्ता पिपेरिता (पेप्परमिंट) के फूल और फल जून आखिर से सितम्बर तक आते हैं।

जैविक लक्षण :- मेन्ता पिपेरिता (पेप्परमिंट) आक्वातिका तथा मेन्ता स्पिकेता के प्राकृतिक संयोग से बनता है यह बर्फ प्रतिरोधी है। इनके शाखाएं शून्य से 4 से 6 डिग्री कम पर भी जीवित रहती हैं। इस पौधे को नमी, प्रकाश और उत्पादन सक्षम भूमि की आवश्यकता होती है। प्रकन्द शून्य से नीचे 10-15 डिग्री पर जीवित रहता है। यह पौधा प्रकन्दों से नए पौधों को उत्पन्न करता है। 1000 फलों का वजन 0.065 ग्राम होता है। उत्पादन शक्ति बहुत कम (10-20 प्रतिशत) है। मेन्ता पिपेरिता (पेप्परमिंट) मधुप्रद है। एक हेक्टर से 200 किलो मधु मिलता है।

विस्तार :- मेन्ता पिपेरिता (पेप्परमिंट) देश के सभी मरु प्रान्तों में उगाया जाता है। कोपेतदग पर्वतों के अध:स्थित मरु प्रान्तों में दुर्लभ है।

प्राकृतिक उपलब्धि :- मेन्ता पिपेरिता (पेप्परमिंट) हमारे देश के दुर्लभ क्षुपीय पौधा नहीं है। औषध कार्यों के लिए पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध है। पेप्परमिंट कृषिकरण कृषि की एक अलग शाखा है। उपज शक्ति प्रति हैक्टर 15 से 16 टन है।

औषधीय कच्चा माल : मेन्ता पिपेरिता (पेप्परमिंट) के भूमि पर रहने वाले अंगों को कच्चा माल के रूप में इकट्ठा करते हैं। दिन के दूसरी भाग में कलिका के समय पुष्प होने से पूर्व उपज को काटते हैं, जब पत्रों में उड़नशील तैल अत्यधिक रहता है। कच्चा माल को बाहर या हवादार कमरों में सुखाते हैं। सूखे कच्चे माल को छोटे छोटे टुकड़ों में काटते हैं और काण्डों को निकालते हैं।

रासायनिक संगठन :- इस पौधे में मैन्थोल (60-70 प्रतिशत), मेन्थोन (16-18 प्रतिशत) सहित उड़नशील तेलों, पायनीन, लाईमोनीन, सिनिओल, डाईपेंटेन, पुलेगोन, विटामिन सी (25 मि०ग्रा० प्रतिशत तक) कैरोटिन (40 मि०ग्रा० प्रतिशत तक), रूटिन (14 मि०ग्रा० प्रतिशत तक) और अन्य ऑगिकाम्ल, कषाय पदार्थ, विटामिन, हेस्पेरिडीन, मूलतत्व, उड़नशील तैलों की मात्रा शुष्क पुष्पविन्यास में 4-6 प्रतिशत, पत्रों में 2.5-3 प्रतिशत और काण्डों में 0.3 प्रतिशत रहता है।

प्रयोग :- मेन्ता पिपेरिता (पेप्परमिंट) के उड़नशील तेलों का चिकित्सा, इत्र, सौन्दर्य वर्धन के उद्योग, मिष्ठान्न और सुरा-वोड्का उद्योगों में प्रयोग होता है। पत्ते और पिप्परमिंट तैल की विविध कल्पना का प्रतिश्याय, आमाशय रोग, यकृत् रोग में संज्ञानाश के रूप में प्रयोग होता हैं।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

प्राचीन काल से पेप्परमिंट के फाण्ट और कषाय प्रयोग में आ रहे हैं। चिकित्सा कर्माभ्यास में मैंथोल अधिकतम प्रयोग होता है। पेप्परमिंट हृत्शूल, पाचन संस्थान के विकार, बृहत् आन्त्रशोथ, आन्त्रशोथ को मिटाते हैं।

मेन्थोल तैल यकृत् एवं पित्ताशय रोगों में प्रयोग होता है। औषध निर्माण उद्योग में मेन्ता पिपेरिता (पेप्परमिंट) के तैल, मैन्थोल (सुरीय द्रव्य) सुरा, फाण्ट, पुदीना लाल अनेद्बेझील के पिचु, ओलिमीथेन, एनेतेन अन्य द्रव्यों को बनाता है। बालिडील, वालोकॉर्डिन, कार्कलील, जैलेनिन बूंदों में पेप्परमिन्ट एक घटक है।

पौधा भूख को बन्द करता है, पाचन करता है। हृल्लास रोकता है। अन्य औषधियों में मिलाकर अम्लपित्त, फुफ्फुस, हृदयधमनी रोग, प्रदर रोगों में प्रयोग किया जाता है। पेप्परमिंट का स्नान नाड़ी उत्तेजना को रोकता है। बच्चों में कामला, अस्थिवक्रता में पेप्परमिंट का स्नान दिया जाता हैं। मुखगुहा के रोगाणुरोधन के लिए पत्तों का कषाय अच्छा उपचार है।

लोक चिकित्सा में आमाशय शूल और हृत् शूल, कास, उल्टी, हृदय दाह के लिए, मेन्ता पिपेरिता (पेप्परमिंट) का फाण्ट लेते हैं। हर दिन सवेरे पुदीना के चाय पुराने आमाशयिक विकारों में उपयोगी है, अग्निदग्ध और विद्रधि में पौधे के हरे पत्ते लगाये जाते हैं।

यह निद्रानाश में और निद्राजनक के रूप में काम आता है। इत्र-सौन्दर्य उद्योग में उड़नशील तैलों का प्रयोग क्रीम, इत्र सुरभित रस, टूथपेस्ट और दन्त चूर्ण तैयार कर उन्हें ताजा रोगाणुनाशक के लिए प्रयोग होता है। तंबाकू, चूविंग गम, चाय, मिश्री, पानक में सुगंध लाने के लिए पेप्परमिंट का प्रयोग होता है। पकवान में और तैयार व्यंजनों में मिलाया जाता है(0.2-0.5 ग्राम सूखे)

कल्पना एवं प्रयोग :- एक गिलास (200 मि०ली) उबलता पानी 1 चम्मच (5 ग्राम) पेप्परमिंट के सूखे पत्तों को छोटे छोटे टुकड़ों में काटकर उन पर डालें और कुछ समय रखें। छानकर एक बड़ी चम्मच (15 ग्राम) दिन में प्रति 3 घंटे में लें। यह कषाय पित्त विरेचन को बढ़ाता है।

आधा लीटर (500 मि०ली) उबलता पानी, 1 चम्मच (15 ग्राम) छोटे छोटे काटे हुए पत्तों को डालें और 10 दिन रहने दें। एक बन्द ठंडी जगह में एक कांच पात्र में कसकर बन्द करें। बाद में छान दें। 3 भाग करके दिन में लें।

आधा गिलास 90 प्रतिशत सुरा लेकर 1 चम्मच (5 ग्राम) पत्रों को छोटे छोटे टुकड़ों में काटकर डालकर, एक कांच पात्र में अंधेरे ठंडे जगह में कसकर बन्द कर 10 दिन रखें। बीच-बीच में हिलाते रहें। छानकर, उस फाण्ट को 15-20 बूंद लें। इसका हृल्लास, छर्दि, नाडी जन्य वेदना में प्रयोग होता है।

एक बाल्टी (10 लीटर) पानी में 500 ग्राम पत्ते डालकर उबालें। पुदीना काढ़ा एक सुगंध देता है। इस काढ़े का स्नान उत्तेजना एवं बल देता है। ऐसा स्नान स्वास्थ्य के लिए उपयोगी है।

मोरुस आल्बा (मलबेरी)
MORUS ALBA (MULBERRY)

वर्णन :- इसकी मध्य एशिया के देशों में 3 जातियाँ हैं तथा तुर्कमेनिस्तान में 2 जातियां है। मोरुस आल्बा (मलबरी) 15-20 मीटर ऊँचा एक पेड़ है। काण्डों पर पत्र विन्यास अभिमुख है, पत्ते लम्बे (3-5 से०मी) वृन्त से, पत्र फलक 5-10 से०मी० लंबे, 3-5 से०मी० चौड़े, मजबूत, धारा तीक्ष्ण, दंतुर, बाहरी रेखाएं अंडाकार लंबगोल है। इस जाति के फल मीठे होते हैं।

जैविक लक्षण :- मोरुस आल्बा (मलबरी) समुद्र तल से 1000 मीटर की ऊँचाई में पैदा होता है, तराई क्षेत्रों में वृक्षों के बीच वन्य प्रजातियां रहती हैं। यह पौधा बीजों से फैलता है। (प्रजनन करता है)। अप्रैल-मई में फूल और फल आते हैं।

प्राकृतिक उपलब्धि :- तुर्कमेनिस्तान के दुर्लभ वृक्षों में मोरुस आल्बा (मलबरी) नहीं है। औषधीय कार्यों के लिए संसाधन पर्याप्त मात्रा में हैं। यह पौधा कृषि द्वारा उत्पन्न किया जाता है। एक साल में प्रति वृक्ष से 100 से 150 किलो पैदावार उनमें 14 किलो शाखाएं होती हैं और शुष्क त्वक् पैदावार प्रति हैक्टर 2000 किलो है।

विस्तार :- तुर्कमेनिस्तान के सभी भागों में मोरुस आल्बा (मलबरी) की कृषि की जाती है। कुर्तुसी कन्योन

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

22, कन्योन बुडेनोवस्की, अर्चबिल में कभी कभी देखने को मिलता है।

औषधीय कच्चा माल :- मोरुस आल्बा (मलबरी) के त्वक्, मूल, पत्र और फल असंस्कृत द्रव्य (कच्चा माल) के रूप में प्रयुक्त होते हैं और औषधीय कार्य में आते हैं। सुखाना और इकट्ठा करना सामान्य रूप से होता है। इस पेड़ के त्वक् और मूल को बोरियों में बान्ध कर रखा जाता है। फल को कांच या कागज़ के डिब्बो में रखते हैं। त्वक् का रखने का समय 2-3 साल का और फलों का 1 साल का है।

रासायनिक संघटन :- पेड़ के त्वक् में ब्युटिलेनिक अम्ल, साईटोस्टैरिन स्टीरोईड, विटामिन ई., 0.15 प्रतिशत मलबेरीन, फ्लैवोनौइड, 0.02 प्रतिशत साइक्लोमलेबटीन, लिपिडस, बेन्ज़ोफिनोल, मैकजुरैन, अमिरीन, बेटुलिन, ट्राईटेर्पिनोईड्स, साईटोस्वेरीन, टेनिक तत्व, फ्लैवोनोईड्स मल्बेरोक्रोमेन, रहते हैं। पत्रों में आलडीहाईड्स, आगिक अम्ल, जैसे ओक्जेलिक मैलिल, सिट्रिक, उड़नशील तैल, स्टीरोईड्स, विटामिन सी, कैरोटीन, टेनिक द्रव्य, रुटिन (2-6 प्रतिशत) क्वेर्सिट्रोल, क्वेर्सिट्रिन, अईसोक्वेर्सिट्रीन, कैम्फेरोलिक फ्लैवोनोईड्स रहते हैं।

फलों में मैलिक अम्ल (0.62 प्रतिशत) और शिट्रिक अम्ल, उड़नशील तैल, स्टिरोईड्स, विटामिन बी, बी2, पीपी, कैरोटीन, फ्लैवोनोईड, मोरीन, सुपर फैट्टी अम्ल, लिपिड्स रहते हैं। बीजों में लगभग 23-37.6 प्रतिशत वसा रहता है।

प्रयोग :- मोरुस आल्बा (मलबरी) एक प्राचीन औषध और आहार पौधा है। पुराने ग्रीक वैज्ञानिक ओविड एवं प्लाइनी वृद्ध ने अपने कार्यों में इसके औषधीय गुणों के विषय में जानकारी दी हैं।

प्राचीन सुप्रसिद्ध चिकित्सक एवं वैज्ञानिक मुहम्मद हुसैन ने अपनी पुस्तक ''ट्रेजरी ऑफ मेडिसिन्स'' में मोरुस आल्बा (मलबरी) के औषधीय गुणों के बारे में यह लिखा है कि यह रक्त को उत्पन्न करता है, मस्तिष्क को प्रसन्न करता है, यकृत् एवं प्लीहा के विकारों को दूर करता है।

यह वजन बढ़ाने के उपचार, वृक्कों में वसा निक्षेपों को बढ़ाने, शरीर से मूत्र को निकालने और शरीर में मृदुता लाने में कार्यकारी है।

चीनी चिकित्सा में मोरुस आल्बा (मलबरी) के मूल कषाय अधिक रक्तचाप, कास, आमाशय रोग, अर्बुद में, छेदन और मूत्रल के रूप में प्रयोग होता है। पत्ते छेदन, मूत्रल, ज्वरघ्न है। अधिक रक्तचाप, वृक्कशोथ प्रतिश्याय, रक्तवह स्रोतस तथा आमाशयिक रोगों में उपयोगी है।

फल का कषाय मूत्रल, छेदन है। जापान में ग्लानि में वोड्का एवं फलों का मिश्रण प्रयोग होता है।

यूरोपियन देशों में व्रणरोपण के लिए फलों को लगाते हैं। फल फुफ्फुस रोग, ज्वर, अतीसार में उपयोगी है।

अपक्व फल या स्वरस कैंसर, गले के शूल, आमाशय रोग, अवसाद में कार्यकारी है।

तुर्कमेन लोक चिकित्सा में मोरुस आल्बा (मलबरी) के कलिका क्वाथ अति स्थौल्य, रक्तवह स्रोतस् रोगों में प्रयोग होता है।

इस वृक्ष का चूर्ण और तैल (सूर्यमुखी तैल या ओलिन तैल) का मिश्रण 1:30 अनुपात में घर्षण, कटे और अभिघातज व्रणों में लगाया जाता है। पत्रों से चाय बनाते हैं।

शुष्क फल और पानक शर्बत बनाने और विरेचक स्वेदजनक औषध के रूप में प्रयोग होता है। यह पकाने, मुरब्बा, पानक, अवलेह, आसव, वोड्का, सुरासार, सिरका, चीनी और सिट्रिक अम्ल बनाने में उपयोगी है।

कल्पना और प्रयोग :- एक बड़ी चम्मच (15 ग्राम) मलबरी मूल चूर्ण एक गिलास (200 मि०ली०) पानी में डालकर एक तामचीनी के बर्तन में मंद आंच पर 5 मिनट उबालें। बाद में छानकर 2 बड़े चम्मच (30 ग्राम) दिन में 3 बार भोजन के पहले सेवन करें।

मलबरी के त्वक् चूर्ण 2 बड़े चम्मच पानी में डालकर एक तामचीनी के बर्तन में मंद आंच पर 5 मिनट उबालें, छान कर 1/2 गिलास (50 मि०ली०) दिन में 3 बार लें।

एक बड़ा चम्मच (15 ग्राम) मल्बरी के शुष्क कलिका का चूर्ण एक गिलास (200 मि०ली०) पानी में एक तामचीनी के पात्र में मंद आंच पर 5-7 मिनट उबालें। छानकर 2 बड़े चम्मच (30 ग्राम) दिन में 3 बार भोजन से पहले लें, यह मधुमेह, उच्च रक्तचाप, रक्तवह स्रोतस के रोगों में उपयोगी है।

एक गिलास (200 मि०ली) पानी 2 बडी चम्मच (30 ग्राम) मलबरी के शुष्क फलों में मिलाकर मंद आंच पर 5-10 मिनट उबालें। 4 घंटे रख लें। छानकर 1/4 गिलास (50 मि०ली) दिन में चार बार भोजन से पहले लें। यह दवा मुखगुहा और गले को लिप्त करने में उपयोगी है।

2 बड़े चम्मच (30 ग्राम) मलबरी के शुष्क पत्रों को एक तापीय पात्र (Thermos flask) में उबले पानी में डालकर कुछ समय रख लें। छानकर आधा गिलास (100 मि०ली०) दिन में 3 बार लें।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

मोरुस नीग्रा
MORUS NIGRA

वनस्पति वर्णन :- यह औषधीय और सजावटी पौधा है। यह पेड़ लगभग 15 मीटर ऊँचा है। पत्ते दृढ़ और हृदयाकार, धारा दन्तुर है। पत्तों में लम्बे तन्तु हैं। इसका फल काला, मीठा, सुगन्ध युक्त है अप्रैल-मई में फूल और अगस्त में फल आते हैं।

विस्तार :- यह हमारे देश में सभी स्थानों में पैदा होता है। इस वृक्ष के वन्य प्रजाति पर्वतों पर होता है।

प्राकृतिक उपलब्धि :- यह पौधा दुर्लभ नहीं है। इस में अधिक औषधीय कच्चा माल है :- जड़, पत्ते, फल और त्वचा है। इन सभी को सुखाकर कागज़ या कपड़े की बोरियों में बान्धकर रखते हैं। त्वचा और पत्तों को भण्डार करने का समय 2-3 साल है। फल एक साल रखा जाता है।

रासायनिक संघटन :- पौधे के काण्ड में मल्बेरीन, फ्लैवनोईड्स हैं, पत्रों में विटामिन सी, जीनोकार्बोनिक अम्ल, रुटिनफ्लैवोवोईड्, केमफेरोल, क्वेर्सेटिन, फ्रिडेलिन, हाईड्रोजीनैन, ट्राईटेपिनोईड्स, वाइटोस्टैरिन अंबेलिफेरान स्कोपोलिटिन और कोमरिन हैं। फलों में 5-10 प्रतिशत आंगोदीय (ग्यूकोस, फ्रक्टोस, सेकरोज) 1.8 प्रतिशत आंगिक अम्ल (सेब, निम्बू), विटामिन बी, बी2, सी, पी पी, केरोटिन हैं। बीजों में उड़नशील तैल है।

प्रयोग :- लोक चिकित्सा में मलबरी फलों का प्रयोग होता है। ग्रहणी जैसे रोगों में प्रयोग होता है। सुप्रसिद्ध वैज्ञानिक, चिकित्सक मुहम्मद हुसैन ने मलबरी को औषध द्रव्य कहकर वर्णन किया कि यह अल्प रक्तचाप, गलगण्ड, भूख को तेज करने बच्चों में आमाशय शोथ में उपयोगी है।

चीनी चिकित्सा में मलबरी कैंसर जैसे रोगों में प्रयोग होता है। रक्तवह स्रोतस के रोगों में पत्तों का पानक उपयोगी है।

निर्माण और प्रयोग :- 50 ग्राम मलबरी और 200 मि०ली० पानी मिलाकर 5-7 मिनट उबालें। छानकर मुख गुहा को लिप्त करने में प्रयोग करें दिन में 3 बार।

10 ग्राम शुष्क मलबरी 100 ग्राम मधु में अन्धेरे ठंडे स्थान पर 7 सप्ताह रखें। क्षति ग्रस्त स्थानों पर दिन में 3 बार लगाएं। पत्रों के फाण्ट को पियें और दिन में 3 बार मुख में कवल करें।

60 ग्राम मलबरी को 100 मि०ली० सुरा सार में कसकर बंधे हुए पात्र में 10 दिन रखें। 10-15 बूंद पानक दिन में 3 बार सेवन करें।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

मुस्कारि लेउकोस्तोमुम MUSCARI LEUCOSTOMUM

वर्णन :- यह न चाहने वाला पौधा है। दुनिया में लगभग 30 प्रजातियाँ और तुर्कमेनिस्तान में एक होता है।

मुस्कारि लेउकोस्तोमुम लिलिएसी कुल के एक बहुवार्षिक क्षुपीय पौधा है, जो 10-30 से०मी० ऊँचा रहता है, कन्द अंडाकार, 1-2 से०मी० मोटा, धूसर- धूम्र वर्ण कागज़ जैसे परतों से ढ़के रहता है। पत्ते रेखाकार, हलका स्रोतस के साथ 5-10 मि०मी० चौड़े होते हैं, फूल गहरे बैंगनी रंग के हैं। फल एक खुला फलकोश है। मार्च-अप्रैल कभी मई में फूल और फल आते हैं।

जैविक लक्षण :- यह तुर्कमेन वसन्त का पहला दूत है। पहाड़ों के तंगघाटी, ढ़लान और तराई (छोटा पथरीला और पथरीले ढ़लानों पर) में पैदा होता है। यह शाखाओं से एवं बीजों से पुनरुत्पत्ति करता है।

विस्तार :- कुरेंदग, कोपेतदग के दक्षिण- पश्चिम, मध्य, पूर्वी क्षेत्रों, बाधिज एवं कुगितांग में उत्पन्न होता है।

प्राकृतिक उपलब्धि :- हमारे देश के दुर्लभ पौधों में इसको माना गया है। इसके भण्डार औषध कार्य के लिए पर्याप्त है।

औषधीय कच्चा माल :- औषधीय कार्य के लिए वल्कीकन्द संग्रह किया जाता है। कच्चे माल को इकट्ठा करना, सुखाना, संचय करना सामान्य पद्धति से होता है। कपड़े या कागज़ की बोरियों में संग्रह करके सीधे सूर्य कान्ति से बचाके रखना होता है। संग्रह काल 1-2 साल।

रासायनिक संघटन :- रासायनिक संघटन पर हुआ अध्ययन पर्याप्त नहीं है। इसमें अमैनो अम्ल, उड़नशील तैल, आँगिक अम्ल, वसा, विटामिन सी रहते हैं।

प्रयोग :- पूर्व के सुप्रसिद्ध विद्वान् अबू रेहान बिरूनी और अबू अली इब्न सिना के कार्यों में इस पौधे के औषधीय गुणों का वर्णन है।

तुर्कमेन लोक चिकित्सा में पहले के समय से वल्की कन्दों का कल्क और मद्य या अंडों का पीला भाग का मिश्रण विविध प्रकार के व्रणों में रोपण के लिए लगाया जाता है।

मुस्कारि लेउकोस्तोमुम 20 से ज्यादा रोगों के उपचार में उपयोग किया जाता है जैसे चर्मरोग, मुख की झुर्रियाँ, आतपजन्य काला वर्ण, अग्निदग्ध, धब्बे, जीभ और तालु के घाव, चर्मकील, सन्धियों में पुराना वेदना को मिटाने लेप, पनारिटियम्, सन्धिच्युति, रूसी, नेत्र रक्तस्राव, रक्तस्राव। मुस्कारि लेउकोस्तोमुम का कषाय काम दौर्बल्य के लिए प्रयोग होता है।

कल्पना और प्रयोग :- 4-5 कल्की कन्दों का कल्क और मधु मिलाकर दिन में 3 बार मुंह पर लेप करें घाव के उपचार में तब तक यह प्रक्रिया करें जब तक दूर न हो।

आमाशय रोगों के लिए और अजीर्ण में पौधे को मधु के साथ तलें। उबालते समय झाग निकालें। औषधि बनाने के लिए 15 ग्राम का पौधा पर्याप्त है, जो दिन में 3 बार लेना चाहिए।

पौधे के काढ़े को स्त्री और पुरुषों के काम दौर्बल्य में देना चाहिए। 1 गिलास (200 ग्राम) उबले पानी, 1 बड़ा चम्मच (15 ग्राम) पौधा 30 मिनट तक मंद अग्नि पर उबालें। 1-2 बड़ा चम्मच दिन में 3 बार भोजन के पहले लें। प्रयोग 2-3 सप्ताह लेना है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

नानोफितोन एरिनाचेउम
NANOPHYTON ERINACEUM

वर्णन :- पौधे की शाखा संयुक्त है। घास जैसा पैदा होता है। तुर्कमेनिस्तान में इस पौधे की केवल एक ही प्रजाति है। पौधा 5-15 से०मी० लम्बा है। पौधा सघन होता है। शाखाएं वृक्षवत् रहती हैं, त्वचा धूसर वर्ण की है। पत्ते छोटे 2-3 मि०मी०, आवर्तों में पैदा होते हैं। पत्ते खुरदरे, वर्तुलाकार हैं। फूल ऊपर के पत्तों के बीच में रहते हैं। यह एक सामान्य फूल है। ये पांच प्रकार के फूल हैं। उर्वरी करण के समय में 10 मि०मी० तक बड़े हो जाते हैं, फल पूर्ण है, त्वक् 1.5 मि०मी० है छोटे तन्तु के साथ है। अगस्त-सितम्बर में फल आते हैं।

जैविक लक्षण :- नानोफितोन एरिनाचेउम छोटे पथरीय रेगिस्तान, लवण युक्त ढ़लानों पर पैदा होता है। पौधा बीजों से पुनरुत्पत्ति करता है।

विस्तार :- नानोफितोन एरिनाचेउम हजरिआका रेगिस्तान के दक्षिण प्रान्त में गुचगेलदी गिर्दा, दृह्लिदा, गराशोर्द, बायमदग, किर्क्सेकिज़्द, गुमसेतशेन्दे, सरतसदाछगिल और उस्तिउर्त में मिलता है।

औषधीय कच्चा माल :- नानोफितोन एरिनाचेउम एक दुर्लभ पौधा है। औषधीय कार्य के लिए इस पौधे का पंचाग कच्चा माल है। इस पौधे की ताजा हरी शाखाएं कच्चा माल है। उनको सुखाकर कागज़ के बोरियों में रखते हैं। रखने का समय है 2-3 साल।

रासायनिक संघटन :- नानोफितोन एरिनाचेउम की हरी शाखाओं में 13.2 प्रतिशत प्रोटीन, 3 प्रतिशत वसा, 21 प्रतिशत कोशरस, 41.2 प्रतिशत नेट्रोजन सार, सैपोनिन, 20.7 प्रतिशत राख और 0.1-0.3 प्रतिशत एल्कोलोईड्स हैं। लोक चिकित्सा में इस पौधे के कोमल शाखाओं को इन्द्रलुप्त, चर्मरोग जैसे रोगों में प्रयोग किया जाता है, संक्रमण निरोध के लिए भी प्रयोग होता है। पौधे के घटकों पर आधारित वैज्ञानिक चिकित्सा में नैनोफेन दवा की खोज हुई, जो उच्च रक्तचाप के उपचार में सहायक होता है, 0.1 से 0.2 ग्राम इसका सूचीवेध से भी दिन में 2-3 बार प्रयोग होता है। वसावरोध रक्तनलिका रोग के रोगियों में यह दिया जाता है। यकृत और वृक्क रोगों में भी यह दवा प्रयोग होती है। शरद् ऋतु में कुछ जन्तु (ऊँट, बकरी, भेड़) इस पौधे को खाना पसंद करते हैं।

कल्पना और प्रयोग :- इस पौधे के कोमल शाखाओं को छोटे-छोटे टुकड़े करते हैं। एक बड़ा चम्मच (15 ग्राम) पौधा 100 ग्राम सुअर या बछड़े की वसा में एक कांच शीशी में 10 दिन रखें। छान कर लेप के रूप में दिन में 2-3 बार क्षतों पर लगाएं।

नेपेता कतारिआ
NEPETA CATARIA

वर्णन :- दुनिया में इस पौधे की 250 किस्मे हैं। जिनमें 83 मध्य एशिया के देशों में और तुर्कमेनिस्तान में केवल एक भेद उपलब्ध है। लामिआसी कुल के एक बहुवार्षिक क्षुप का साधारण नाम कैटनिप है। यह 40-120 से०मी० ऊँचा है। इसकी मातृभूमि यूरोप है। तुर्कमेनिस्तान में भी एक साधारण कुतृण पौधा बन गया है। इसकी तीक्ष्ण सुगंध बिल्लियों को आकर्षित और उत्तेजित करती है, जिसे खाने में पसंद करती हैं। इसके गुच्छ 3.7 से 8.0 से०मी० लम्बे और 1.2 से 2.6 से०मी० चौड़े होते हैं। फल चिकने दीर्घवृत्तीय काष्ठफल है। एक-एक प्रायः 0.53 ग्राम वजन का होता है। जून-जुलाई में फूल आते हैं और जुलाई-सितम्बर में फल आते हैं।

जैविक लक्षण :- कैटनिप हमारे देश में समुद्र तल से 1600 मीटर ऊँचाई पर पैदा होता है। बोलशोई तराई और पहाड़ों में और मल्दी बालेखन, दक्षिण-पश्चिम एवं मध्य कोपेतदग और कुगितांग में पौधे को पा सकते हैं, ज्यादातर नमी प्रान्त, नदी किनारे, नहर के गडढ़ों और आसपास स्रोतों में, कैटनिप की एक सुगंध और स्वाद है जिसके कारण यह

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

अन्य पौधों से अलग है। इसके स्तम्भ को गन्ध और स्वाद मग्नोलिया लता की याद दिलाता है। ऐसे पौधे सूखने के बाद भी अपनी सुगंध छोड़ते नहीं है। कैटनिप के इन सभी विशेष लक्षणों के कारण लोग इसके प्रति आकर्षित हो रहे हैं।

बीज बोने के बाद 6-7 दिन में पौधे बाहर आते हैं। और 3 महीने तक विकास होता रहता है। अच्छी तरह सिंचित भूमि में अच्छे बड़े होते हैं, बीजों की विकास क्षमता 3 साल है। यह पौधा बर्फरोधी है। इसे बहुत प्रकाश और नमी पसंद है। कैटनिप बीजों से प्रजनित होता है। भूमि में 1-1.5 मीटर गहरे में बीजों को बोना चाहिए। सामान्यत: एक हैक्टेर भूमि के लिए 6-7 किलो बीज चाहिए। बोने के बाद पहले प्रशाखा साधारण रूप से 17-20 दिन में बाहर आते हैं।

विस्तार :- हमारे देश में बोलशोई बालखन प्रान्त, दक्षिण-पश्चिम कोपतदग, सोनुदग, मग्तिमगुली, मोलदेर, चोहागच, मध्य कोपेतदग, सुलुक्लि, अर्चाबिल, गोकदेर, कोमटेनदग, हाजेपिल और अन्य प्रान्त में मिल सकते हैं। तराई, नमी प्रान्त, स्रोतों के नज़दीक और घुमावों में, छोटे वृक्षों के बीच में इसको पाया जा सकता है।

प्राकृतिक उपलब्धि :- कैटनिप दुर्लभ और संकट में रहे पौधों में नहीं गिनाया जाता है। हमारे देश में लोक चिकित्सा और औषधीय निर्माण उद्योग के लिए इस पौधे के भण्डारण पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध है। दक्षिण-पश्चिम कोपेतदग के प्रदेश में कैटनिप के पौधे काफी मात्रा में पैदा होते है।

औषधीय कच्चा माल :- औषधीय कार्यों के लिए कैटनिप के फूलों का प्रयोग नहीं होता है। जून-जुलाई में जड़ी बूटी को इकट्ठा किया जाता है। जड़ी-बूटी को पारंपरिक पद्धति से सुखाया जाता है। सुखाने के बाद जड़ी बूटी को कागज़ या कपड़े की बोरियों में भरकर ठंडे स्थान एवं प्रकाश से दूर रखा जाता है। सुखाने के बाद पहले 1-2 साल तक यह अधिक कार्यकारी है।

रासायनिक संघटन :- पौधे के संघटन में अधिक मात्रा में रहने वाले उड़नशील तैल रोगाणुनाशक और कवकनाशक है। यह इस प्रकार के कवक जैसे म्यूकोरेशियस मोल्ड्स, काला मोलड्स, फंगस और एस्परजिल्लस होता है।

प्रयोग :- लोक चिकित्सा में कैटनिप काफी समय से स्टार्च, जडी-बूटी मात्रा के रूप में प्रयोग किए जाते हैं। कैटनिप के स्टार्च व्याधि क्षमत्व और रक्तवह् स्रोतस और नाड़ी संस्थान के क्रिया को बढ़ाने में समर्थ है। श्वसनक तन्त्र पर भी उसका अच्छा प्रभाव है। भूख को तीक्ष्ण करता है। पाण्डु, विकृत खांसी, गुर्दे के रोग, कामला, शिर:शूल, प्रदर रोग, अपस्मार और आन्त्रकृमि से पीड़ित रोगियों के लिए भी संस्तुति की जाती है। साथ ही यह सीसे के विष को रोक सकता है। सूखी जड़ी बूटी को कभी कभी मछली और अन्य व्यंजनों को सुगंधित करने में प्रयोग करते हैं। इतिहास के अनुसार केवल बिल्लियाँ ही नहीं कैटनिप को पसंद करते हैं। लामिआसी कुल के सदस्य इस पौधे को सलाद के रूप में खा सकते हैं और पकाने में सजावट के रूप में प्रयोग कर सकते हैं। तीक्ष्ण, सूखे पत्तों का धूमपान अतिविभ्रम करता है। दूर-दूर तक अधिक विदेशों में ततरस्तान सहित, में राष्ट्रीय पकवानों में कैटनिप के पत्तों को सलाद में रखे जाते हैं।

निर्माण एवं प्रयोग :- एक बड़ा चम्मच (15 ग्राम) शुष्क जड़ी बूटी एक कांच बोतल में 200 मि०ली० गरम पानी के साथ रखें। बोतल को कसकर बांधे। 2 घंटे के बाद छानकर एक बड़ा चम्मच (15 ग्राम) दिन में 3 बार भोजन से आधा घंटे पहले प्रयोग करें।

एक लीटर गरम पानी में 2 बड़े चम्मच (30 ग्राम) कैटनिप चूर्ण को 20-30 मिनट रखें। बाद में छानकर एक गिलास (100 ग्राम) दिन में 3 बार भोजन से पहले लें।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

ओनोपोदिउम अकान्तिउम
ONOPODIUM ACANTHIUM

वर्णन :– ओनोपोदिउम अकान्तिउम एक घूरे पर उगने वाला औषधीय पौधा है। मध्य एशियाके देशों में 11 और तुर्कमेनिस्तान में 3 के साथ दुनिया में कुल 20 प्रजातियां हैं।

कांटे वाले बड़े पत्तों से युक्त पौधा प्रायः सड़क के बगल में घरों के आसपास रहता है। उनके लोक भाषा में (तुर्कमेन) नाम चातिरतिकेन और गरमन्दालक हैं।

ओनोपोदिउम अकान्तिउम कोम्पोसिते कुल का द्विवार्षिक क्षुपीय पौधा है जो 60-150 से० मीटर ऊँचा होता है। यह पौधा कण्टकयुक्त है। मूल एक और मूलकाकार है। काण्ड सीधा और शाखायुक्त पत्ते घने, कंटकियुक्त, बड़े दन्तुर। नीचे के पत्ते 10-80 से०मी० लम्बे, 4-6 से०मी० चौड़े। ऊपर के पत्ते सूचीवत् और अदन्तुर हैं।

फूल गुलाबी एवं कभी बैंगनी रंग के 2-4 से०मी० चौड़े गोल और नताग्र मंजरी में बन्धे रहते हैं। मंजरियों में बंधे हुए पुष्प नलिकाकार और द्विलिंगी हैं। बाह्यदल का चक्र नहीं है। यह अधिक केशों से ढ़का रहता है। अन्तर्दल चक्र नलिकाकार है। ओनोपोदिउम अकान्तिउम में मई-जून में पुष्प और जून-अगस्त में फल आते हैं।

जैविक लक्षण :– ओनोपोदिउम अकान्तिउम समुद्र तल से 800 से 1200 मीटर ऊँचाई में पैदा होता है, यह प्रजाति सीधा सादा और अकालरोधी है। यह बीजों से प्रजनित होता है।

विस्तार :– ओनोपोदिउम अकान्तिउम दक्षिण-पश्चिमी, कोपेतदग, मग्तिमगुली गहरी घाटी, शिबेडर, सुंवर, चेंडिर, मध्य कोपेतदग में, गोकपेद, सुलक्लि, अर्चबिल, हिर्सदेरी मुसुन्यु, पूर्वी कोपेतदग में, होदान, मुरगम मरुभूमि में विशाल फैला रहता है।

प्राकृतिक उपलब्धि :– ओनोपोदिउम अकान्तिउम तुर्कमेनिस्तान का एक दुर्लभ पौधा है। औषधीय कार्यों के लिए पर्याप्त संसाधन उपलब्ध हैं। वार्षिक उपज लगभग 15-20 (30) टन है।

औषधीय कच्चा माल :– औषधीय कार्यों के लिए 2 प्रकार के कच्चे माल लिये जाते हैं। वे ओनोपोदिउम अकान्तिउम के पुष्पगुच्छ और अंकुर हैं। कच्चा माल सामान्य रूप से तैयार किया जाता है।

प्रयोग :– लोक चिकित्सा में ओनोपोदिउम अकान्तिउम नाड़ी, मानसिक रोगों में, कास, तमक श्वास, कुकुरखांसी, कामला में और व्रणरोपण के लिए प्रयोग होता है। वृक्क, बस्ति रोगों में, आमवात, पेशी संकोच, प्रतिश्याय, ऊर्ध्व श्वासनलिका शोथ में उपयोगी है। ऊपर दिये रोगों में ताजा स्वरस ज्यादा उपयोगी है।

बुलगेरिया में ओनोपोदिउम अकान्तिउम के जड़ी बूटी मिश्रण कास, धड़कन और चर्मरोग के रोगियों में प्रयोग किया जाता है।

लोक चिकित्सा में यह पौधा दुष्ट अर्बुद और दुष्ट व्रण के लिए प्रयोग होता है।

कुछ देशों में इसका पश्चात् शल्यकर्म प्रतिरोधी द्रव्य के रूप में दुष्ट अर्बुद और चर्म कैंसर में प्रयोग होता है।

इसका काढ़ा रोगाणुनाशक और जीवाणुनाशक है।

रासायनिक संघटन :– ओनोपोदिउम अकान्तिउम में विटामिन सी, टेनिक तत्व इन्युलिन, सैपोनिन्स्, कोमरिन्स, फ्लैवोनोईड्स, एल्कोलोईड्स् हैं। बीजों का एक योग है वसीय तैल।

कल्पना और प्रयोग :– 4 गिलास (800 मि०ली०) उबले पानी में 1 बड़ा चम्मच (15 ग्राम) कटा हुआ स्काच तिजल के पत्ते डालकर, 2 घंटे रख लें। छानकर 1 गिलास (200 मि०ली०) दिन में 3-4 बार भोजन से पहले सेवन करें।

एक गिलास (200 मि०ली) उबले पानी कटे शाखाओं पर डालकर, 2 घंटे रख लें। छानकर, आधा गिलास (100 मि०ली) दिन में 3-4 बार पियें।

एक चम्मच (5 ग्राम) स्कोच तिज़ल के पत्तों का चूर्ण दिन में 3 बार लें।

एक चम्मच (5 ग्राम) जड़ी बूटी का ताजा स्वरस दिन में 3 बार भोजन के 30 मिनट पहले लें।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

ओफिओग्लोस्सुम वुल्गातुम OPHIOGLOSSUM VULGATUM

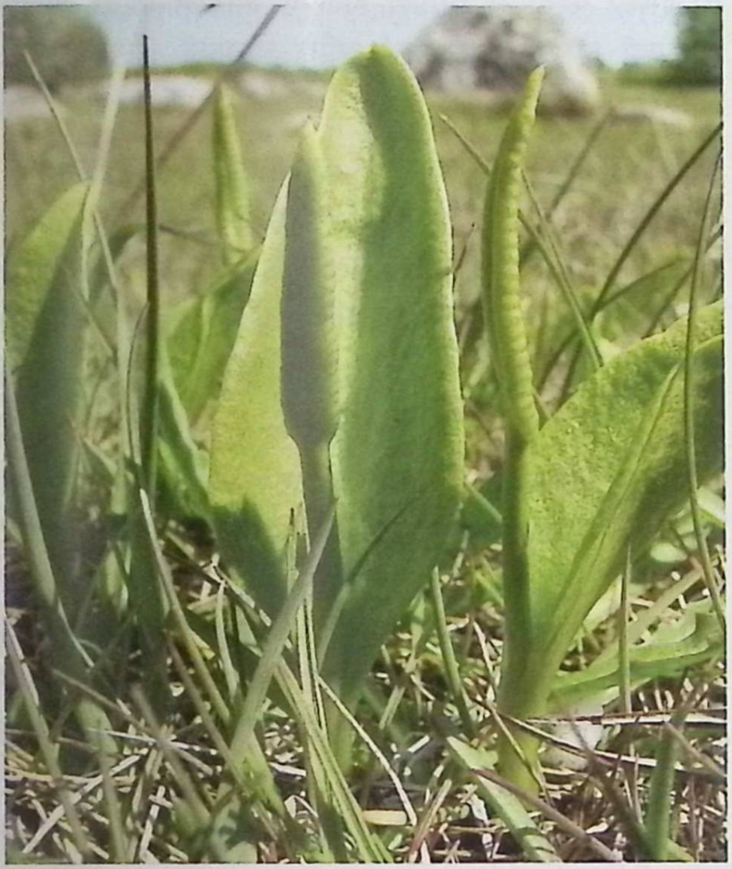

वर्णन :- इसकी दुनिया में 45 प्रजातियाँ सजावटी एवं औषधीय पौधे के रूप में हैं, 4 प्रजातियाँ मध्य एशिया में और तुर्कमेनिस्तान में 2 प्रजातियाँ पाई जाती हैं। यह 'स्नेक टंग' (सांप जीभ) या केवल टंग (जीभ) कहलाता है।

ओफिओग्लोस्सुम वुल्गातुम बहुवार्षिक ओफिओग्लोस्सुम बुल्गातुम कुल के प्रतिनिधि है। यह पौधा लगभग 10 से 20 से०मी० लम्बा है। इसका काण्ड संधियों में बंटा नहीं है, जो पूरा और अन्दर से ठोस है। इसके पत्ते दो प्रकार के हैं। उनमें से एक शाकीय और सीधा है और दूसरे में बीजाणु रहते हैं। पत्ते का भाग जो बीजाणु रखता है वह एक दूसरे से मिले हुए रहता है, शीर्ष जैसे जीवाणु जो रेखांकित है को पैदा करता है। पौधे के शीर्षक मूल पत्र के उद्‌भिदीय भाग से लगता है। इसके उद्‌भिदीय भाग अण्डाकार या काँटा जैसा और इसके किनारे सीधे हैं।

जैविक लक्षण :- यह पौधा समुद्र तल से 800-1200 मीटर ऊँचाई पर पैदा होता है। यह नदी किनारों पर या दलदल स्थानों में अच्छा पैदा होता है। यह बहुत मुश्किल से बीजाणु द्वारा और उद्‌भिदीय पद्धति से (जड़ पर रहे अंकुरों से नए शाखाएं लगते हैं) प्रजनित होते हैं। बीजाणु बड़े हैं (उनका माप 0.5 से 3.00 मि०मी० है)। इनमें काफी (1500 से 15,000) बीजाणु होते हैं। जुलाई-अगस्त में बीजाणु पकते हैं। इसकी विशेषता यह है कि पौधे के पत्ते धीरे-धीरे बढ़ते हैं। पत्ता बड़ा होने के लिए एक साल लेता है।

विस्तार :- यह दक्षिण-पश्चिमी कोपेतदग में योलदेरे गलीदार घाटी में पैदा होता है। तुर्कमेनिस्तान में केवल उसी जगह पर यह मिलता है।

प्राकृतिक उपलब्धि :- यह एक दुर्लभ पौधों का प्रतिनिधि है। इसकी गणना संकट ग्रस्त प्रजाति में की जाती है। इसके कारण यह तुर्कमेनिस्तान के लाल किताब (1999) में जोड़ा गया। यह सुन्त-हज़रदग राष्ट्रीय उद्यान में रक्षित है। इसका औषधीय आधार महत्वपूर्ण नहीं है। कृषिकरण के लिए इसकी संस्तुति की गयी है।

औषधीय कच्चा माल :- इसका घास औषधीय आधार बनाता है। इसको सामान्य रूप से इकट्‌ठा करना और तैयार करना है। इसको कागज़ के थैलों में रखना है। इसको 1-2 साल रख सकते हैं।

रासायनिक संघटन :- इसके रासायनिक संघटन के विषय में कोई सूचना नहीं है।

प्रयोग :- इस पौधे के घास कास, मदमत्त, उल्टी और कुक्कुर कास में प्रयोग होता है। इसके कोमल मूल उदर्द और शोथ में उपयोगी है। इन पौधों के बीजाणु और काढ़ा और फाण्ट मद्यजनित व्यसन में प्रयोग कर सकते हैं। इस पौधे के घास से बने मलहम मृदुता देने हेतु उपचार में प्रयोग करते हैं।

निर्माण और प्रयोग :- एक चम्मच (5 ग्राम) कूटे हुए घास के एक गिलास पानी में डालकर एक तामचीनी पात्र में धीरे आंच पर 5 मिनट उबालें। ठंडा करने के बाद छान लें। आधा गिलास (100 मि०ली) तैयार काढ़ा दिन में 3 बार भोजन से पहले लें।

2-3 ग्राम पौधे के बीजाणु दिन में 3 बार भोजन से पहले लें।

आधा चम्मच (2.5 ग्राम) बीजाणु एक गिलास में उबले पानी (200 मि०ली) मिलाकर, थोड़ी देर रख लें। बाद में छानकर, तैयार औषधीय फाण्ट 50 मि०ग्रा० दिन में 5 बार लें।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

ओर्किस प्सेउदोलाक्सिफ्लोरा ORCHIS PSEUDOLAXIFLORA

वर्णन :– इस सुन्दर पौधे के फूलों का रंग तेज है और अनेक प्रजातियाँ दुनिया के लगभग 100 देशों में हैं। मध्य एशिया के देशों में 60 प्रजातियाँ और तुर्कमेनिस्तान में 4 प्रजातियाँ उपस्थित हैं। इस पौधे के दुर्लभ जुड़वे फूलों को आर्चिस, सेलेप्ये या सेलेप्चेक कहते हैं।

बहुवार्षिक ओर्किस प्सेउदोलाक्सिफ्लोरा आर्चस कुल का है और यह 30–40 से०मी० ऊँचा है। कन्द सुरक्षित और लंबगोल आकार में, कभी कभी गोलाकार 3 से०मी० लंबे और बहुत कम गहरी मूलीय नहीं है। काण्ड के प्रधान भाग कुछ तीक्ष्ण हैं और शिखर पर धारीदार पत्ते होते हैं। पत्ते विशाल और भालाकार हैं। वे 15–20 से०मी० लम्बे और 10–15 मि०मी० चौड़े और अग्रभाग संकीर्ण और तीक्ष्ण रहते हैं।

पौधे के फूल गहरे लाल हैं। फूलों का समूह लम्बे 5–12 से०मी०, कोमल और गुच्छाकार है। फूलों के दल पत्रवत्, रेखित, तीक्ष्णाग्र हलके नीले रंग और लंबे ठुड्डीदार है। फूलों के नज़दीक रहने वाले पत्ते लम्बे गोल, कुंठिताग्र हैं और उनमें से तीन टोपी के आकार में हैं। दल लम्बे अभिमुख, अंडाकार, उनके मुख्यभाग संकीर्ण और बीच में सफेद, गहरे लाल बिंदु, जो फर्से की तरह होकर दीर्घ नहीं है। पुष्प कलिका का अंकुर नलिकाकार, हलका सा टेढा और लगभग बन्दूक की नाल का मुख जितना रहता है।

जैविक लक्षण :– हमारे देश में ओर्किस प्सेउदोलाक्सिफ्लोरा समुद्र तल से 600 से 6000 मीटर ऊँचाई पर पैदा होता है। वे पहाड़ों के तराई पर घाटी में, दल दल स्थानों में और पर्वतों से आने वाली नदियों के किनारे पर पैदा होते हैं। छाया और नमी वाले स्थान को पसंद करती है। इसका कीड़ों से परागण होता है और बीजों से अच्छा पैदा नहीं होता है। यह मार्च–अप्रैल में फूल और मई–जून में फल देता है।

विस्तार :– हमारे देश में यह पौधा कोपेतदग पर्वत के दक्षिण–पश्चिमी प्रान्त में परहाई, पोरदेर, सुम्बार, कोनेकेसिर और गपकली में, कोपेतदग के पर्वत की मध्य भाग मे, गेरमैप, सुलुविल, गपकिल, अर्चबिल में, कोपेतदग पर्वत के पूर्वी भाग में, शम्ली, चिर्लक में, बतखिज़ में, सेरहेतबत् में तथा कोपेतदग पर्वत में पैदा होता है।

प्राकृतिक उपलब्धि :– हमारे देश में ओर्किस प्सेउदोलाक्सिफ्लोरा एक दुर्लभ पौधा है। परन्तु अन्य प्रजातियों के बावजूद यह पौधा अक्सर मिलता है। औषधीय कार्यों के लिए इसका भण्डारण पर्याप्त नहीं है। कृषीकरण के लिए सलाह दी जाती है। यह सुन्त–हजारदग, कोपेतदग, बधिज़ और कोतेंदग राष्ट्रीय उद्यानों में सुरक्षित रखा गया है।

औषधीय कच्चा माल : औषध के लिए कच्चा माल मूल कन्द है। मार्च–अप्रैल में जब फूल आते हैं तब उनको इकट्ठा करना चाहिए। पुराने कन्दों को फेंककर तरुण कन्दों को ही लेना चाहिए। तरुण कन्दों को गरम पानी में धोकर (बढ़ने के क्षमता को रोकने के लिए) और तुरन्त तन्दूर में या कोई अन्य विशेष उपकरण से सुखाना चाहिए। कन्दों को रस्सी में बांधकर घरों में लटका कर सुखाना चाहिए। तैयार कच्चा माल को कागज़ की पेटियों में रखना चाहिए। रखने का समय 2–3 साल है।

रासायनिक संघटन :– सलाप्चा के रासायनिक संघटन का ज्यादा अध्ययन नहीं किया गया। सलाप्चा के कन्द के संघटन में नमी द्रव्य, स्टार्च, चीनी और हाईड्रोकार्बन की उपस्थिति का पता लगाया गया है।

प्रयोग :– प्राचीन और तुर्कमेन चिकित्सा में (सलप) पौधे के कन्द एक प्राचीन उपचार है। मूलकन्दों से बने द्रव और चूर्ण सन्धिशूल, पुल्लिंग सिराएं, अतीसार, घाव, अर्बुद और दन्तशूल चिकित्सा में प्रयोग होते हैं। एक टानिक के रूप में भी प्रयोग होता है। अबू अली इब्न सिना ने शूलयुक्त स्थान के लिए एक उत्तम उपचार माना है। लोक चिकित्सा में यकृत् व्रण, आमाशय व्रण, क्षुद्रान्त्र व्रण, रक्तस्राव की चिकित्सा में मूल कन्दों का प्रयोग होता है। इसको प्रतिश्याय और सुरासार में झाग को निकालने में भी प्रयोग करते हैं,

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

यह माना गया कि जब मूल कन्द प्रभावी काम करते हैं तब लोग अपनी वसा को जल्दी कम करते हैं।

निर्माण एवं प्रयोग :- एक चम्मच (5 ग्राम) छोटे आकार के मूल कन्द तामचीनी पात्र में दो गिलास (400 मि०ली०) पानी डालकर मंदाग्नि पर 10 मिनट उबालें। उबालते समय हिलाते रहें। उबालने के बाद ठंडा करें। एक बड़ा चम्मच (15 ग्राम) तैयार जड़ी बूटी फाण्ट प्रतिदिन में 3 बार लें।

ओर्किस प्सेउदोलाक्सिफ्लोरा के शुष्क कन्दों को चक्की में चूर्ण बनाकर कपड़ छान कर लें। 1.0 से 2.0 ग्राम तैयार चूर्ण दिन में 3 बार लें। यह उपचार क्लैव्य में भी उपयोगी है। चिकित्सा काल है 1-2 मास।

एक बड़ा चम्मच मिश्रण (15 ग्राम) जिसमें मधुयष्टि 60 प्रतिशत और 40 प्रतिशत मिश्रण हो, एक तामचीनी पात्र में डालकर उसमें 1 गिलास (200 मि०ली०) उबलता पानी डालकर 30 मिन्ट उबालें। इस जड़ी बूटी द्रव को कपड़ छान करें। इसको भोजन से पहले क्लैव्य में प्रयोग करते हैं। रखने का समय 3-4 सप्ताह है। अन्तःस्रावों को जल्दी वापस लाने में और कामोद्दीपक संसाधनों को प्रेरित करने में यह उपचार उपयोगी है।

पपावेर पावोनिनुम
(लाल पोप्पी)
PAPAVER PAVONINUM
(RED POPPY)

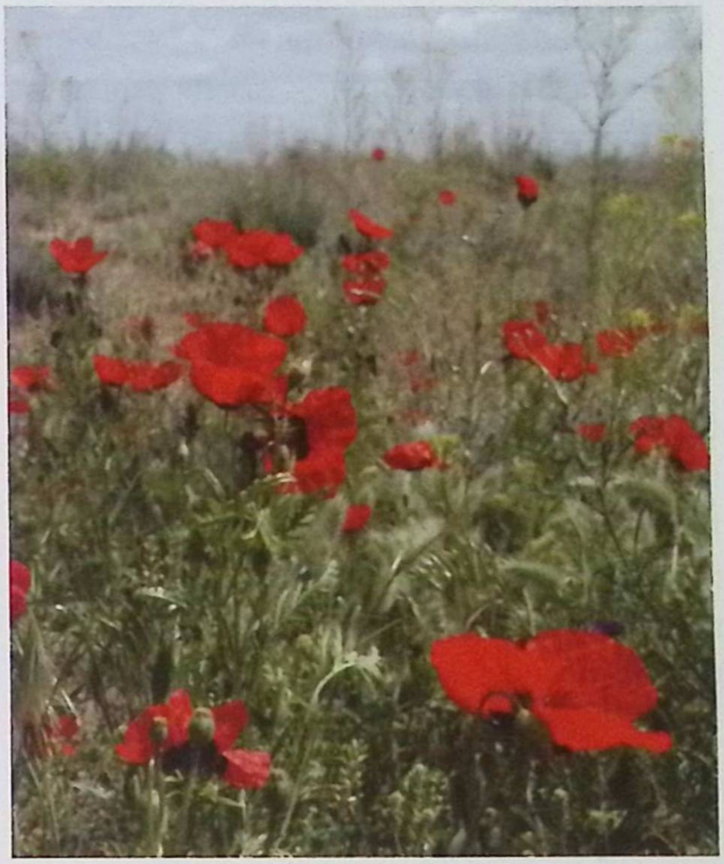

वर्णन :- यह पौधा औषध एवं सजावट के लिए प्रयोग होता है। दुनिया में 100 से अधिक प्रजातियां है, तुर्कमेनिस्तान में लाल पोप्पी की 5 प्रजातियां हैं, लाल पोप्पी पापावरेसी कुल के है। 20 से०मी० से 50 मीटर ऊँचा है और एक वार्षिक कुटुम्ब में आता है। इसका काण्ड सीधे, शाखीय, छिछला कण्टक जैसे रोमों से ढ़के रहते हैं। मूल-काण्ड पत्र लम्बे पक्षवत् शाखित, पत्राग्र तीक्ष्ण है। कुछ स्थानों में पत्राग कुण्ठित हो सकते हैं। काण्ड पत्र लम्बे उदेरकांकित पक्षवत् शाखित है, पौधे की कलिकाएं अण्डाकार कभी गोलाकार होती हैं। कलिका 10-15 मि०मी० लंबी है।

लाल पोप्पी के फूल बड़े 2-5 मि०मी० लम्बे होते हैं। पुष्पदल गहरे लाल और काले धब्बे के साथ होते हैं। फूल के पुंकेसर पतले, सूचीवत् काले रंग के हैं। फल के बीजकोश 5-10 से0मी0 लम्बे और बीज बहुत छोटे और धूम रंग के होते हैं।

जैविक लक्षण :- यह पौधा प्रकाश और उष्णता को पसंद करता है, यह रेतीय, चिकनी मिट्टी रेतीय स्थानों में पैदा होता है, अप्रैल-मई में फूल और फल देते हैं। बीजों से पैदा होता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

विस्तार :– लाल पोप्पी बोलशोई बलखन, तज़रेकेरम्, जेबेल, ओटनॉलि, जोरन्टिलि, मोक्लाप्ट मली, बलखेन, चालसुव, कुरेंदग, उज़िंसुव, इसजेंडर, बिक्दे मारगिज़, अकोबा एज़ेंत्, तोर्गे, हैफिदग्दा, ओइलेगुरलुक, गुलच, उज़्नकर, जिगिरदेक, सोनुदग, गरजस, गरगच, टेर्सकन्द, डेनिमटा, देगिरमेन्देर और प्राकृतिक भण्डारन में फैला रहता है। यह दुर्लभ जड़ी बूटियों में नहीं आते हैं। औषधीय प्रयोग के लिए पर्याप्त भण्डारन हैं।

औषधीय कच्चा माल :– औषधीय प्रयोग के लिए पोप्पी के फूल और जड़ी बूटी कच्चा माल है। फूलों के पुरे विकास में इन्हें संग्रह करने के लिए संस्तुति किया जाता है। यह आंगन में खुली हवा में सुखाया जाता है। कच्चा माल को कागज़ के थैलियों ओर पेटियों में संग्रह करते हैं। रखने का समय है 1 साल।

रासायनिक संघटन :– पौधों में 0.045 से 1.5 प्रतिशत एल्कोलोईड्स (रिआडिन, अल्लोकिटोपैन, सांग्विनरैन), 0.78 से 0.85 प्रतिशत फलैवोनोईड्स, आन्टोमियन, रहते हैं। 10.5 प्रतिशत रंग होता है।

प्रयोग :– लाल पोप्पी आफ्रोडाईट देवता के सुन्दरता का फूल माना गया था। प्राचीन ग्रीक वैज्ञानिक (254-184 ई०पू०), वारन (ई०पू० 116-27) प्लाईनी (ई०पू० 79-23), लूसिमन (ई०पू० 65-39) और पेत्रोनी (1) के कार्यों में काल पोप्पी के औषधीय गुण का वर्णन दिया हुआ है।

सेईत इस्मैल गुर्नेली ने अपनी सुप्रसिद्ध पुस्तक ''ट्रजरी आफ सोरेज़्म शाह'' में लाल पोप्पी के औषधीय गुण बताया था। उन्होंने 40 रोग जो लाल पोप्पी के फूलों से ठीक होते हैं, के विषय में वर्णन किया। उनकी पुस्तक के अनुसार अपस्मार, चक्कर, नेत्रश्लेषमला शोथ, कर्ण-नासा वेदना, जिह्वादारण, प्रतिश्याय, हृल्लास, छर्दि, अतिसार, आमाशय रोग रक्तयुक्त, अतिसार रोग, मधुमेह, मूत्रकृच्छ्र, आमवात, कण्डू, कठिनार्बुद, शीतपित्त दाह, पिडका, सदमा, च्युति इत्यादि में इस जड़ी बूटी का विस्तार से प्रयोग होता है।

लोक चिकित्सा में इसके पत्रों से तैयार स्वरस सूर्यतापघात (विशेषकर बच्चों में) और कुछ नेत्ररोग, उदाहरणार्थ, नेत्रश्लेष्मला के विषम में नेत्रों को उदक्षालन प्रक्षालन करने की चिकित्सा में प्रयोग होता है।

लोक चिकित्सा में ही इसको चर्म रोग और शीतला रोग में प्रयोग करते हैं। विशेषकर यह बधिज, सरह, सेर्हेतबत्, कोपेदग, मग्तिमगुली, बहर्ली, गोकदेप जिलों में प्रयोग होता है। इसके अलावा लाल पोप्पी के फूलों को दूध में उबालकर संधिवात उपचार में प्रयोग करते है।

निर्माण एवं प्रयोग :– 4 चम्मच अच्छे से सुखाया हुआ जड़ी बूटी फूल आधा ग्लास ओलिव (100 मि०मी०) तैल डालकर कसकर बन्द कांच बोतल में रखकर 10 दिन तक छोड़ दें। बीच-बीच में हिलाते रहें। छानकर दिन में तीन बार खराब स्थानों पर लगाते रहें।

2 चम्मच (30 ग्राम) पोप्पी के फूल लेकर 200 मि०ली० दूध में 5-10 मिनट उबालें। ठंडा कर पतले कपड़े में लपेट कर संधिशूल के स्थान पर लगायें और रातभर रखें।

ताजे पोप्पी के फूलों को पानी में डालकर रखें। फिर छान कर 1 चम्मच दिन में 3 बार पीयें। यह नेत्र रोगों के उपचार में सहायता करता है।

हाथ भर पोप्पी ताजा फूलों को 100 मि०ली० मधु में डालकर 10 दिन छोड़े। फिर 1 चम्मच (5 ग्राम) दिन में 3 बार लें। आमाशय रोगों और आमाशय शोथ का उपचार करने में सहायता होगी।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

पेदिकुलारिस पिक्वांता
PEDICULARIS PYCNANTHA

वर्णन :– यह पेदिकुलारिस पिक्वांता कुल डोडकगुल्लर के है। यह एक बहुवार्षिक पोधा है जो 10–20 से०मी० ऊँची है। मुख्य काण्ड सीधे और अनेक प्रशाखा युक्त है। पत्रे खींचे हुए सीधे और 8–10 से०मी० लम्बे और 3.0–3.5 से०मी० चौड़े होते हैं। वे पत्रवत् संयुक्त पत्र है। पत्राग्र नोकीले और दन्तुर है। काण्ड पत्र एकान्तर, हर एक पत्ता 4–5 से०मी० लम्बे और 9–12 मि०मी० चौड़े होते हैं। फूल प्रयोज्यांग है कंपान्युला जैसे काण्ड के शिखर पर रहते हैं। पुष्प बाह्य दलों का ऊपरी भाग पांच दन्तीय कांपान्युक्ता है।

4 पुंकेसर रहते हैं। 2 लम्बे, तीक्ष्ण और दन्तुर फूल लाल–धूसर रंग के हैं। यह पेदिकुलारिस पिक्वांता के फल नग्न है और विशाल दीर्घवृत्र जैसे थोड़ा सा दबे हुए रहता है। ऊपर एक छोटी नाटी घण्टी रहता है। बीज वर्म फल जैसे होते हैं।

जैविक लक्षण :– यह पौधा समुद्र तल से 1500 से 2200 की ऊँचायी पर पैदा होता है। यह पौधा, छोटा, सीधा होता है, क्योंकि यह पर्वतों के ऊँचे ढ़लानों पर पैदा होता है। काण्ड और पत्ते कोमल, घने केशों से ढ़के रहते हैं। यह पेदिकुलारिस पिक्वांता केवल बीजों से प्रजनित होता है। बीजों की उत्पत्ति बहुत ज्यादा है। यह खुले और छायामय स्थानों में उगता है। यह पौधा मई से अगस्त तक फूल और फल देता है।

विस्तार :– यह हमारे देश में मध्य कोपेतदग–मुसुनेव, देगिरमेन्ली, चमक, रिज़रश, चोपनदग, सेमन्सुर, सिबिर, होवदन और असिल्मा में मिलता है। यह दूरवर्ती आलपैन पर्वत के ऊँचे प्रान्तों में पैदा होता है, कभी–कभी बर्फ पर्वत के ऊँचे प्रान्त में और कभी–कभी अर्चा की घनी झाड़ियों में पाया जाता है।

प्राकृतिक उपलब्धि :– औषधीय कार्य के लिए कच्चा माल पर्याप्त है। यह दुर्लभ पौधा नहीं है। औद्योगिकी कार्य के लिए कृषीकरण की संस्तुति किया गया है। यह पेडिक्युलारिस पिक्नानथा हमारे देश में कोयतेनदग में पाया जाता है।

औषधीय कच्चा माल :– औषधीय कार्यों के लिए यह पेदिकुलारिस पिक्वांता के फूल युक्त जड़ी बूटी उपयोगी है। यह पेदिकुलारिस पिक्वांता के फूलयुक्त जड़ी बूटी मई, अगस्त में इक्ट्ठा करते हैं, इकट्ठा करने का उत्तम समय दोपहर 2.00 बजे से सांय 5.00 बजे तक है। उस समय पौधे के औषधीय प्रभाव अत्यधिक और पौधे में नमी अति अल्प रहते हैं।

एक चाकू या दाल से कच्चा माल को इकट्ठा करते हैं। बाद में ठंडे और छाया में सुखाते हैं। सूखे कच्चा माल की नमी 13–14 प्रतिशत होनी चाहिये। इस माप से औषधीय कच्चा माल अपने हरे रंग को और जैविक प्रभाव को सुरक्षित रखता है।

तैयार हुआ कच्चा माल को सूर्य प्रकाश में नहीं रखना चाहिये क्योंकि जैविकीय प्रभावशाली द्रव्य अलग हो जाते हैं। रखने का समय 1–2 साल। कच्चा माल को कागज या कपड़े के थैलियों में दराजों में अंधेरे, ठंडे जगह पर संचय करना चाहिए।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

पेगनुम हार्माला
PEGANUM HARMALA

वर्णन :- दुनिया में पेगनुम हार्माला की 6 प्रजातियां हैं, जिनमें मध्य एशिया के देशों में 6 और तुर्कमेनिस्तान में केवल एक प्रजाति उपलब्ध है। इसके अनेक विविध नाम हैं। यह पेगनुम कुल की वनस्पति है और 30-50 से०मी० इसका मूल बाणाकृति का है। पेगानम हरमल अप्रैल से मई तक पुष्प और जून में फल देता है। शरद् ऋतु में अंकुरित होता है।

जैविक लक्षण :- पेगनुम हार्माला अनावृष्टि रोधी हैं। मूल की लम्बाई 4-5 मीटर तक जा सकती है। पे०ह० आधा रेगिस्तान में पैदा होता है। पर्वतों में भी यह पाया जाता है। यह समुद्र तल से 2800 मीटर ऊँचायी पर उगता है। इसके 1000 बीजों का वजन 2.5 ग्राम होता है।

विस्तार :- पेगनुम हार्माला हमारे देश के दक्षिण-पश्चिमी भाग जैसे चुकुर्गला, होजागला, मग्तिमगुली, बेंडसेन गरवुल, देगिरमेन्ली प्रान्तों में पाया जाता है। यह मध्य कोपेतदग'कोबेरगोवस्की, पेरवोमैस्की, वानोवस्की, गोकदेर, दुषकेरेकदग, चमक, नैरबत्, गेरमप, मुर्रेदग, सुलुकिल, असिलम, दोयदेर, बबजब, दगिश, दरातोई, अर्चबिल, गब्लोनोवस्की और इत्यादि में भी पैदा होता है। पेगनुम हार्माला दक्षिण कोपेतदग में जैसे गुरिहोक्दान, शैर्लक, चचे, केलट में पाया जाता है। साथ ही यह बाधिज में, गरबिल में और कोपेतदग में पैदा होता है।

प्राकृतिक उपलब्धि :- तुर्कमेनिस्तान में पेगनुम हार्माला काफी मात्रा में उपलब्ध है, औषध में उपयोग के लिए इस जड़ी बूटी का पर्याप्त कच्चा माल उपलब्ध है। प्रति हैक्टर में 1400 से 4200 तक इस पौधे के मूल होते हैं। एक साल में इसकी पैदावार मात्रा 80-100 टन तक जा सकती है।

औषधीय कच्चा माल :- औषध के रूप में बीज अक्सर प्रयोग होते हैं। पेगनुम हार्माला को शरद् में इकट्ठा करते हैं जब यह फल देता है। उपयोगिता के लिए यह सुखाया और तैयार किया जाता है। बाद में कागज़ या कपड़े के बोरियों में बांध के रखते हैं। रखने का समय 1-2 साल। पैदावर के बाद भूमि को क्षतिपूर्ति के लिए छोडा जाता है।

रासायनिक संघटन :- पेगनुम हार्माला के बीजों में 3.0 में 3.0 से 6.0 प्रतिशत एल्कोलोईड् इसमें (60 प्रतिशत गार्मोलीन, 30 प्रतिशत गार्मीन और गमलाल, रेगानिस, डिसोक्सी वासिसिनोन) रहते हैं। यह सिद्ध हुआ कि काण्ड में 1.5 से 3 प्रतिशत एल्कोलोईड (इसके लगभग 60 प्रतिशत वासिसिन और वासिनिकोल होता है) रहता है। काण्ड में थोड़े मात्रा में पेगानम, पेगामीन, पेगान्टोल और डिमोक्सीपेगानिन एलकोलाइड्स रहते हैं। पेगनुम हार्माला के मूल में 2.15 से 2.70 प्रतिशत एलकोलोईड् (मुख्यत: गार्मीन, वसिसिनोल, नसिसिन) रहते हैं। यह पाया गया कि बीजों में रंग द्रव्य और 14.25 प्रतिशत वसा रहता है।

प्रयोग :- प्राचीन काल से पेगनुम हार्माला प्रसिद्ध हैं, दरवाजों पर इसके एक गुच्छा लटका रहता है और यह मानते हैं कि पेगनुम हार्माला का धूम रोगों को रोकता है। यह परंपरा अभी तक चलता है, वैज्ञानिकों ने सिद्ध किया कि पेगनुम हार्माला जीवाणुओं को नाश करता है। इस पौधे के एल्कोलोईड्स में विष प्रभाव हैं। हमारे चिकित्सा राष्ट्रीय चिन्ह में पेगनुम हार्माला दिखाया गया हैं क्योंकि यह 50 से ज्यादा रोगों को मिटाता है। कुछ वैज्ञानिक जैसे अबू अली इब्न सिना, सेईत इस्माईल गुर्नेली, मुहम्मद हुसैन अपनी पुस्तकों में इस औषधीय पौधा के विषय में लिखा था। पेगनुम हार्माला नेत्र रोगों को ठीक करता है, विरेचनीय गुण हैं और कृमि में संबन्धित रोगों को नाश करता है, परावर्ती उपचार में यह प्रयोग होता है। पेगनुम हार्माला 2 कार्यो के लिए प्रयोग होता है। यह औषध द्रव्य और रंग-द्रव्य रूप में उपयोगी है। यह शोथ, उदरशोथ, कुटिल सिरा रोग, अर्श को शान्त करता है।

अर्श को शान्त करने के लिए पेगनुम हार्माला के पके बीजों को धूमवर्तिका के रूप में धूमपान करते हैं। इस समय रोगी एक तरह के आहार पर रहता है। एकल आहार सेवन मद्यपान कड़ा निषेध है। इस द्राक्षा और पेगनुम हार्माला के मिश्रण दंतशूल में उपयोगी है। मुहम्मद हुसैन गुंदोगर ने

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

निम्नलिखित तथ्यों को पेगानम हरमल के विषय में लिखा है ''पेगनुम हार्माला एक कोमल पौधा है जो वृक्षीय/अंश शोथ को नाश करता है, इसकी सुगंध का आनाह की चिकित्सा में प्रयोग होता है। पारंपरिक चिकित्सा में पेगनुम हार्माला काण्ड, बीज और फूल ज्वर में प्रयोग होते हैं, पेगनुम हार्माला के ठंडे फाण्ट औषध के रूप में उपयोगी है। इस फाण्ट से रोगी के शरीर धोने से आमवात और चर्मरोगों को रोक सकते हैं।

मध्य एशियन देशों में लोग मसूड़े के रोगों को नाश करने के लिए प्रक्षालन करते हैं। अफगानिस्तान में पेगनुम हार्माला के धूम को पक्षघात के उपचार में प्रयोग करते हैं, चिकित्सा में हाईड्रोक्लोरिक पेडानम (द्रव्य या संपुटक के रूप में) मांसपेशी रोग, पेशी दौर्बल्य में प्रयोग होता है। साथ ही यह मलबंध में प्रयोग होता है क्योंकि यह स्रंसनीय द्रव्य है।

कल्पना एवं प्रयोग :- मूत्रकृच्छ्र के उपचार में 5-10 पेगनुम हार्माला के बीज खायें या पेगनुम हार्माला का द्रव पियें दिन में 3 बार। एक बडी चम्मच अच्छी तरह सूखे पेगनुम हार्माला को जला के धूमपान करें। या छींक और प्रतिष्याय को रोकता है।

एक बड़ी चम्मच कूटा हुआ पेगनुम हार्माला (15 ग्राम) 2 ग्लास (400 मि०ली०) पानी में मिलाकर, चर्म रोगों को शान्त करने त्वचा पर इस द्रव से मर्दन करें। कोई विष युक्त कीट दंश में उस स्थान को 5 ग्राम कूटा हुआ पे०ह० से ढ़कें।

200 ग्राम कूटा पेगनुम हार्माला 10 लीटर पानी में डालकर उबालें। 10-15 मिनट रखें। फिर रोगी इस पानी से अपने शरीर धोने से आमवात, अन्य चर्मरोग रोक सकते हैं।

फ्रग्मितेस आउस्त्रालिस
PHRAGMITES AUSTRALIS

वर्णन :- दुनिया में इस पौधे के 5 प्रजातियाँ हैं जिनमे मध्य एशिया के देशों में 2 और तुर्कमेनिस्तान में 2 प्रजातियां उपलब्ध है। यह पौधा स्पेर्मतोफीता कुल का है, यह 40-80 से०मी० ऊँची है। यह एक बहुवार्षिक पौधा है। काण्ड लम्बी, पत्रे प्रबल, लंबे चौड़े रेखाओं के सहित, पत्राग्र तीक्ष्ण और दन्तुर है।

जैविक लक्षण :- पौधे के बीज हल्के और पानी और हवा की सहायता से प्रजनित होते हैं। एक बड़े पुष्प गुच्छ में लगभग 50,000 से 1,00,000 बीज रहते हैं। पौधा जुलाई-नवम्बर के बीच पुष्प और फल देता है।

विस्तार :- यह पौधा हमारे देश में दूर दूर तक फैला रहता है। यह नदियों के घाटी में मिलता है, यह नमी वाले प्रान्तों में पैदा होता है।

प्राकृतिक उपलब्धि :- यह पौधा दुर्लभ पौधों के समूह में नहीं आता है। औषधीय कच्चे माल के लिए पौधे के जमा माल पर्याप्त है।

औषधीय कच्चा माल :- औषधीय कार्यों के लिए तरुण काण्ड और पत्र उपयोगी हैं। पुष्प काल में तरुण काण्ड और पत्र का संग्रह और शुष्कीकरण होता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

रासायनिक संघटन :– पौधे के पत्र में 222 मि०ग्रा० प्रतिशत विटामिन सी, लगभग 100 मि०ग्रा० प्रतिशत कैरोटिन रहते हैं। काण्ड में 16 प्रतिशत कार्बोहाईड्रेट्स रहते हैं।

प्रयोग :– फ्रग्मितेस आउस्त्रालिस लोक चिकित्सा में पट्टी के रूप में प्रयोग होता है।

निर्माण एवं प्रयोग :– एक बड़ी चम्मच तैयार कच्चा माल एक बोतल में उबले पानी में डालें, कुछ समय इन्तजार करें। छानकर एक बडी चम्मच तैयार फाण्ट दिन में 3 बार सेवन करें।

फ़ीलिलिनिस स्कोलोपेंद्रिउम
PHYLLITIS SCOLOPENDRIUM

वर्णन :– पुराने प्रकार के इस पौधे की दुनिया में चार प्रजातियां और तुर्कमेनिस्तान में एक प्रजाति पैदा होती है।

फ़ीलिलिनिस स्कोलोपेंद्रिउम एक बहुवार्षिक क्षुपीय पौधा 40 से 70 से०मी० ऊँचा है। क्षुप के पत्ते नग्न, अधिन्न, चिकना-चमकीला, हलका हरा, बड़ा जीभ या पट्टे के आकार में रहते हैं। बीजाणु पुंज आपस में रखने पर अभिमुख और घने रहते हैं।

जैविक लक्षण :– यह पौधा 1200-1700 मीटर समुद्र तल से ऊँचाई में पैदा होता है। यह छाया, गीली, अंधेरे जगहों पर पैदा होना पसंद करता है। चिकनी मिट्टी कंकरीली भूमि ओर ढ़लानों में अच्छी तरह पैदा होता है। यह अपने बीजाणुओं से प्रजनित होता है। ये जूलाई-सितम्बर में पकते हैं। पेड और झाड़ियों के बीच में पैदा होता है।

प्राकृतिक उपलब्धि :– यह क्षुप हमारे देश के दुर्लभ पौधों के समूह में गिनाया जाता है। औषधीय कार्यों के लिए इसके भण्डारण मध्यस्थ है। कृषीकरण के लिए संस्तुति किया गया है। यह कोपेतदग राज्य भण्डारण में सुरंक्षित है।

औषधीय कच्चा माल :– पौधे के पत्र और जड़ कच्चा माल जैसे काम आते हैं उन्हें छाया में मामूली रूप में सुखाते और तैयार करते हैं।

रासायनिक संघटन :– इसके कच्चे और समरस पत्रों के उपचारों में मिथेलग्लुटामीन अम्ल, ल्युकोडेफ्फीडीन पहचान लिए गये हैं। साथ ही इसके मूल में 'ए' द्रव्य होता है।

प्रयोग :– प्राचीन ऐन्द्रजालक क्षुप के औषधीय कार्यों से परिचित थे। अनुभवी वैद्य क्लाडिओ गैलेन (2 शती ई०प०) भी इस पौधे को औषधीय कार्यों के लिए प्रयोग किया था। क्षुप के पत्ते फुफ्फुस के अनेक रोग जैसे कफ और स्वेदाधिक के उपचार में मशहूर है। पत्रों का फाण्ट मूत्र प्रवृत्ति, अतिसार, रक्तातिसार और आन्त्र शोथ में भी प्रयोग होता है। बहुत पहले के समय से तुर्कमेन लोक चिकित्सा में यह रक्तस्राव रोकने और अभिघात रोपण के लिए प्रयोग होता रहा। औषधीय द्रव के रूप में इसको आमाशय स्तब्धता आमाशय श्लेष्मा, आमाशय व्रण में प्रयोग करते हैं। पत्रों से तैयार रस गर्भिणी में उपयोगी है।

छाया में सुखाया औषधीय चूर्ण विषदंश के उपचार में प्रयोग होता है। कफ, स्वेदाधिकता, रक्तस्राव रोकने, मूत्रप्रवृत्ति, पित्तसारक, प्रतिशयाय, अशमरी नाशक जैसे पौधे के उपचार क्षमताओं के अध्ययन के लिए अनुसंधान की आवश्यकता है।

निर्माण और प्रयोग :– एक चम्मच पौधे के कटे हुए पत्रों को पानी में डालकर मंदाग्नि पर उबालें। तैयार फाण्ट 1 लीटर तापमान पात्र में डालें। कुछ घण्टे के बाद कपड़ छान कर एक चम्मच दिन में 3 बार पियें।

एक चम्मच मूल से तैयार किये चूर्ण को आधा गिलास ओलिव या सूर्यावर्त तैल में डालकर एक कसकर बन्द बोतल में दस दिन रखें। तैयार फाण्ट कपड़ छान कर और विष में पट्टी के रूप में प्रयोग करें।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

फ़ीसालिस अल्केकेन्जी
PHYSALIS ALKEKENGI

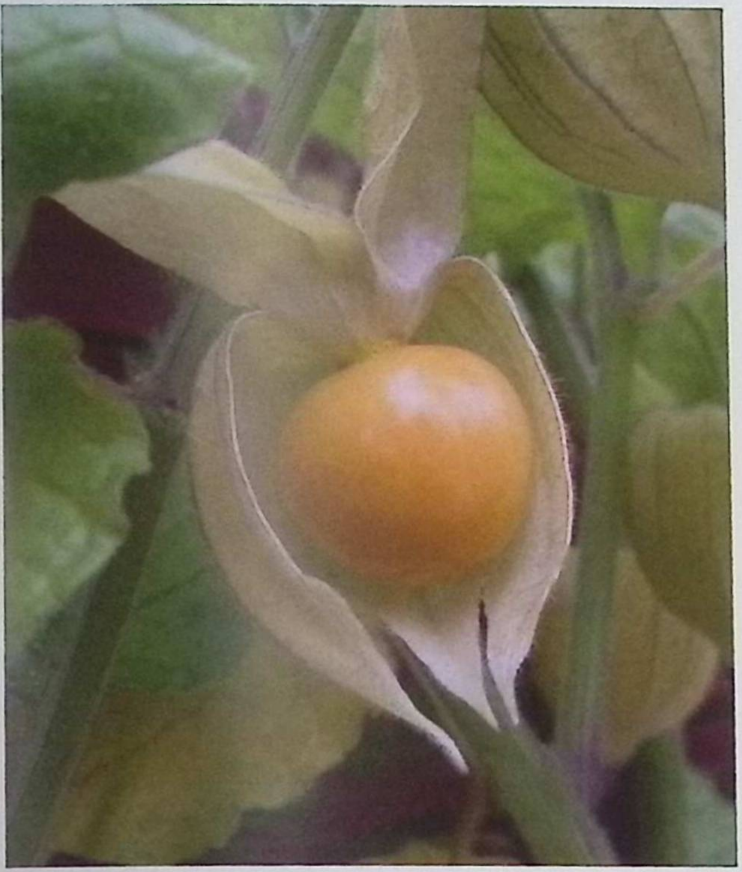

वर्णन :- दुनिया में इस घासपात (खरपतवार)औषधीय पौधा की 100 प्रजातियां हैं जिनमें मध्य एशिया के देशों में 3 प्रजातियाँ उपलब्ध हैं, परन्तु तुर्कमेनिस्तान में इस पौधे के केवल एक प्रजाति उपलब्ध है।

फ़ीसालिस अल्केकेन्जी एक बहुवार्षिक भंगुर पौधा है। यह 30 से 65 से०मी० ऊँचा होता है। पौधे में रोम रहते हैं पत्र अण्डाकार हैं। पत्ते फूल जैसे होते हैं। इसमें पांच पके सफेद हरे रंग होते हैं, फल सफेद-लाल, खट्टे खाने में उपयोगी है। इसका आकार/माप चेरी जैसा है। यह मई-जून में फूल और अप्रैल जून में फल देता है।

जैविक लक्षण :- यह समुद्र तल से 800-1500 मीटर ऊँचायी में पैदा होता है। यह कंकरीली, ठंडी, चिकनी भूमि में पैदा होता है। यह अल्पायु है।

विस्तार :- यह कोपेतदग के दक्षिण-पश्चिमी मग्तिम्गुली प्रान्त में पैदा होता है।

प्राकृतिक उपलब्धि :- औषधीय कार्यों के लिए इसका प्राकृतिक भण्डारण पर्याप्त हैं। मुख्य संसाधन पश्चिम कोपेतदग में इकट्ठा किया जाता है। वार्षिक उपज 1-2 टन हो सकता है।

औषधीय कच्चा माल :- औषध में फल प्रयोग होता है। इसके मूल और केश को जून-जुलाई में संग्रह किया जाता है। विशिष्ट उपकरण द्वारा सुखाया जाता है। केश कागज या कपड़े के बोरियों में रखा जाता है। रखने का समय 2 साल का है।

रासायनिक संघटन :- फल में तिक्त द्रव्य फाइसालिन, कैरोटिनोईड्स (52.24 मि०ग्रा० प्रतिशत तक), विटामिन सी (139.2 मि०ग्रा० प्रतिशत तक), कवेर्सेटिन, 'ए' द्रव्य, कोडीन, पेक्टिन, चीने और तेल रहते हैं। इससे आल्कलोईड, पीताभ रंजक द्रव्य और सिट्रिक अम्ल भी रहते हैं।

प्रयोग :- प्राचीन समयों से यह औषध द्रव्य के रूप प्रयोग होता रहा है, अबू अली इब्न सिना ने अपनी सुप्रसिद्ध पुस्तक "कैनन ऑफ मेडिकल सायंस" में इस पौधे के चिकित्सा चमत्कार का वर्णन किया है। इब्न सिना ने अभिघात, श्वास, श्वासावरोध, शोथ, कामला, मूत्रमार्ग शोथ के उपचार में इसका प्रयोग किया।

लोक चिकित्सा में इसके फल और रस रक्तस्राव और शूल में प्रयोग होता है। बुलगेरियन लोक चिकित्सा में फल याकृतीय दौर्बल्य, जलोदर में प्रयोग होता है। पत्रों से तेयार उपचार दन्तशूल में प्रयोग होता है। यह वृक्क प्रसेक, मूत्राश्मरी, पेशी संकोच में भी उपयोगी है।

कल्पना एवं प्रयोग :- एक बड़ा चम्मच (15 ग्राम) सुखी फल 2.5 गिलास पानी में मिलाकर 5 मिनट उबालें। फिर ठंडा कर, छानकर दिन में 3 बार भोजन से पहले प्रयोग करें। प्रतिदिन 10-15 ताजे बीज खायें और 20 मि०ली० रस भी पियें।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

पिस्ताचा वेरा
PISTACIA VERA

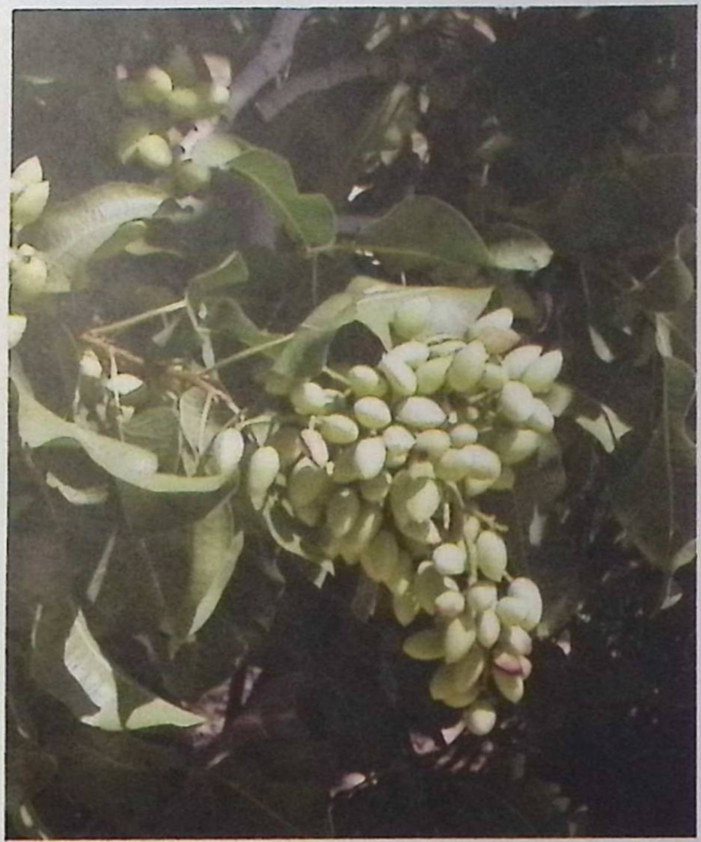

वर्णन :- काजू कुल के इस पौधा जीनस का सामान्य नाम पिस्ताशियो है। जिस में अलग लिंग के फूल अलग-अलग पौधों में रहते हैं, फल बिना अन्तर्दल और सूखे अष्ठीला फल साथ में फलाष्टि अस्थि जैसे रहता है। पिस्ताचो या पिस्ताचा वृक्ष एक छोटा वृक्ष लगभग 6 मीटर ऊँचा होता है। इसका मातृभूमि ईरान और सिरिया है। अभी यह इसका दक्षिण यूरोप, उत्तर अफ्रिका के सभी प्रान्तों में और अनेक अन्य प्रान्तों में कृषीकरण किया जाता है। पिस्ताचो के वर्मफल आहार के रूप में अधिक माना जाता है और तेल देता है जो खाना पकाने में उपयोग होता है।

अर्पेंटाईन वृक्ष टर्पेंटाईन देता है, जो वाणिज्य में साईप्रस टर्पेंटाईन कहा जाता है। इसमें हरिताभ-पीत वर्ण में, एक सुगंधयुक्त और हल्का स्वाद होता है। इसके गुणों के कारण यह शंकु वृक्ष से पाये टर्पेंटाईन से मिलता जुलता है।

आजकल दुनिया में अलग-अलग प्रान्तों में इस पौधे के लगभग 20 प्रकार पैदा होते हैं। अधिक आकार उपोष्ण देशीय और बहुत कम उष्ण कटिबंधीय वातावरण में पैदा होते हैं। तुर्कमेनिस्तान में विशेषकर 2 प्रकार के पिस्ताचों मिलते हैं। यहां वे असली पिस्ताचों और बधिज़ पिस्ताचों कहे जाते हैं। देश के सुखी मध्य भाग में वन्य पिस्ताशयो और अन्य अनावृष्टिरोधी ऐसे प्रान्तों में उगते हैं जिसमें मानव संचार कम है। पर्वतीय ढ़लान जुनिपेर और पिस्ताचों वृक्षों के घने जंगलों से ढ़के रहता है। यह लगता है कि शक्तिशाली काण्ड युक्त इन वृक्ष भूतकाल के अनेक मुख्य प्रसंगों को देखे हैं। पिस्ताचों वृक्षों को प्रकृति के स्मारक भी कहते हैं। बधिज के राष्ट्रीय उद्यान में इन विस्मयकर वृक्षों के जंगल पाये जाते हैं। इस कारण से विद्वान इन जंगलों को बधिज़ बिना पेड़ों का मैदान कहते हैं। शरद् ऋतु में पिस्ताचों के जंगल विशेषकर शानदार दिखते हैं। उस समय इनके पत्ते संतरी लाल रहते है, जिसके कारण यह परिवर्ती स्थल दृश्य विशेष सुन्दर दिखता है।

पिस्ताचों अनाकार्डिआसी कुल के पिस्ताचों जीनस से संबंधित है। पिस्ताचों या पिस्ताचों पिस्ताचा वेरा और टर्पेंटाइन वृक्ष पिस्ताशिया तेरेबिन्तस नाम से वर्गीकरण किया गया। पिस्ताचों की शाखाएं घनी पैदा होती हैं और एक टोपी जैसे बनती हैं। कुछ शाखाएं नीचे के ओर पैदा होते हैं। पत्ते सामान्यत: गहरे हरे, चिकने, मोटे और संमित्र होते हैं। इस प्रान्त के प्राकृतिक पेड़ पौधे में वन्य बादाम, पिस्ताचों वृक्ष और अनेक प्रकार के बसन्त और वन्य पुष्प सम्मिलित है। पिस्ताचों के कड़े शाखा से पैदा होने वाले प्रति छोटे शाखा पर 3, कभी-कभी 5 पत्ते रहते हैं। इसके पत्तों में एक काण्डसान राल के समान उग्र गंध रहता हैं। फूल बहुत छोटे हैं (3 मि०मी० चौड़े)।

पिस्ताचों के फूल एकलिंगी और अलग-अलग पेड़ों पर होता हैं गुच्छों में इकट्ठा होते हैं। पुंपुष्प विन्यास चौड़े, मोटे और स्त्री पुष्प विन्यास कम मोटे, फल के समय लंबे होते हैं। पत्ते सामान्यत: वृन्तसहित, क्रमबद्ध, विषमदल पत्र जिसमें 3, कभी-कभी 5-7 पत्रक एक खण्ड युक्त होते हैं। कीटगृह सिसीडियम भी कहा जाता है, अक्सर पौधे के धतुओं पर पैदा होते हैं जो परान्नजीवी के कार्य से होते हैं। अष्ठीला फल के रंग मलाई से गहरे लाल या कभी गहरा नील लाल पतले बीज नलिका निचले भाग के साथ, जब बह पक्व फलों में पतले और सूखे रहता है। बाद में जब फल पक जाता है वह हरिताभ वर्ण लेता है।

पिस्ताचों अप्रैल से मई में फूल और जुलाई सितम्बर में फल देता है।

जैविक लक्षण :- हमारे देश में पिस्ताचों समुद्र तल से 600-1000 मीटर ऊँचायी पर पैदा होता है। कभी-कभी 1500 मीटर ऊँचायी पर भी यह अनावृष्टि विरोधी भी कहा जाता है। इसके मोटे और घने मूल भूमि में गहराई तक जाते हैं।

यह पौधा क्रम से फूल नहीं देता है। सामान्य रूप से 2-4 साल में एक बार फूल आते हैं, फूल आने के बाद अन्तराल होता है। पिस्ताचों फलों के रंग बदलता रहता है। फलों के रंग पकने के स्तर पर आधारित होता है। पहले नारंगी लाल रंग, फिर सफेद में बदल जाता है। फल पकने के समय कवच फट जाता है।

शरद् ऋतु तक पिस्ताचों के अधिक फल पक जाते है और द्राक्षा गुच्छों जैसे दिखते हैं। पुनरुत्पत्ति के लिए पिस्ताचों कम बीजों को उत्पन्न करता है। इसके कारण पिस्ताचों पौधे बड़े मात्रा में प्रजवित नहीं होते हैं। ऊपर से पिस्ताचों के तरुण अंकुर वन्य जन्तुओं से अक्सर कुचले जाते हैं।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

परन्तु मुश्किल वातावरण और भूमि परिस्थितियों होने पर भी पिस्ताचों पेड सहनशील और क्षमता रखता है। इस पेड़ के मूल चारों तरफ फैलते हैं और 30-40 मीटर लंबे होते हैं। इसके मूलों के कारण पिस्ताचों पेड भूमि से 15-20 टन नमी ग्रीष्मकाल में शोषण कर सकता है।

पिस्ताचों बाकी पेड़ और पौधों से काफी अलग है क्योंकि इसका अनावृष्टि तीव्र सूर्य और अत्यधिक वर्षा में जीवित रहने की क्षमता ज्यादा है। जिस स्थानों में पिस्ताचों पैदा होता है वहां के तापमान शून्य से 40 डिग्री ऊपर जा सकता है और शीतकाल में शून्य से 15-20 डिग्री नीचे भी गिर सकता है। पिस्ताचों के अलावा बाकी ज्यादा से ज्यादा पेड उस का तापमान सहन नहीं कर सकते हैं। पिस्ताचों अधिक सूर्य प्रकाश और चक की पसंद करता है। इसलिए यह ज्यादा देश के दक्षिण प्रान्त में पैदा होता है। जहां थोडी छाया और अधिक सूर्य प्रकाश होता है। सूर्य प्रकाश पेड के विकास को उत्तेजित करता है।

पिस्ताचों बहुवार्षिक पेड़ों में गिना गया है। यह पेड़ 300-500 साल जिंदा रहने की क्षमता रखता है। कहीं-कहीं पिस्ताशिया पेड़ 1000 साल भी जिंदा रहे। ऐसे पेड़ों में एक बधिज़ राष्ट्रीय उद्यान में मौजूद है, जिसको प्रकृति का स्मारक माना गया है। उस पेड़ का उपर 900 साल हो गया है। पिस्ताचों पेड अधिक नाटा, घना और शक्तिशाली होता है। इन लक्षणों के कारण इसकी दूसरे शक्तिशाली कुट्टिमदारु पेड़ से तुलना की जाती है।

विस्तार :- यह मध्य एसियन प्रान्त में बहुत ज्यादा विस्तार में फैला हुआ होता है (300,000 हैक्टेर तक) तुर्कमेनिस्तान में बधिज राष्ट्रीय उद्यान में विशाल क्षेत्रों में बिना पेड़ों के मैदान बनता है। यह कभी छोटे समूह में कोपेतदग, कुगितांग में पाये जाते हैं। हमारे देश के क्षेत्र में पिस्ताचों वेरा के अलावा एक और प्रकार बधिज़ पिस्ताचों, जिसमें गोलाकार फल होते हैं, पाया जाता है।

यह ज्यादा से ज्यादा पर्वतों के तराई में पर्वत भूप्रदेश में पैदा होता है। बधिज राष्ट्रीय उद्यान में पिस्ताचों छोटे पहाड़ों के ऊपर पैदा होता है और इसका विस्तार जंगल बनता है। बधिज़ राष्ट्रीय उद्यान के एक भाग केपेल कहा जाता है, जिसमें दूसरे प्रान्त के तुलना में अधिक संख्या में पिस्ताचों के पेड़ हैं।

प्राकृतिक उपलब्धि :- पिस्ताचों दुर्लभ और संकटग्रस्त पेड़ों में नहीं गिनाया जाता है। हमारे देश में इस पेड़ के संसाधन लोक चिकित्सा एंव औषधीय उद्योग के प्रयोग के लिए पर्याप्त है। बधिज़ में पिस्ताचों पेड विस्तार प्रान्त 76000 हैक्टेर तक, सर्हतबत में 50 हजार है कटर और 2,500 हैक्टेर मध्य पूर्वी कोपेतदग में फैला रहता है। वर्ष 2006 से कोपेतदग राष्ट्रीय उद्यान में पिस्ताचों का कृषीकरण हो रहा है। हमारे देश के अन्य प्रान्तों में भी वाणिज्य कार्यों के लिए पैदा किया जाता है।

औषधीय कच्चा माल :- कीटगृह एक तरह के पौधे धातुओं का शोथ या अधिमांस और परजीवी से बनाए जाते हैं। औषधीय उद्योग में इन की गृह का उपयोग बहुत विस्तार है। कीटगृह अनेक प्रकार के आकार लेते हैं, प्रति आकार उसको बनाने वाले परजीवी के लक्षणों पर आधारित होते है। सामान्य रूप से कीटगृह बनाने वाले परजीवी के प्रजाति अमुक पेड़ों का अमुक भाग को संक्रमित करता है।

कीटगृह का विकास प्रति कोषाणु के शोथ के करण या कोषाणुओं का तेज विभाजन से उस स्थान पर होता है, जहां परजीवि वार करता है। कीटगृह परजीवी को एक रक्षण कवच देता है जब यह उससे आहार लेता है। अत्यन्त मोहम कीटगृह कीटों से बनाये जाते हैं जब वे अण्डे देते हैं उस प्रक्रिया में पौधों के धातुओं पर आक्रमण करते हैं। कीटगृह उनके पूरे विकास होने के बाद ग्रहण करना चाहिए। उनके पैदावार लेने का समय अगस्त माना जाता है। परन्तु आप इनका संग्रहण पहला शरद बर्फ के पहले भी कर सकते हैं।

सामान्यतः पिस्ताचों पेड़ों से इकट्ठा की गर्भ की कीटगृहों को कुल औषध द्रव्य के निर्माण में प्रयोग करते है। कटे हुए कीटगृहों को प्रक्षालन करके सुखाते हैं। वे बहुत हल्के होते हैं, इसलिए पानी में तैरते हैं। उनका आकार सामान्य रूप से 0.5 से 3.0 से॰मी॰ होता है। सामान्यतः अधिकांश कीटगृह एक तरफ नारंगी और दूसरी तरफ धूमीय पीत वर्ण में रहता है।

रासायनिक संघटन :- कीटगृह में 20 से 50 प्रतिशत टैनिन रहता है। परीक्षणशाला के अध्ययनों में पाया है कि बीजों में 60 प्रतिशत न सूखने वाला वसा तैल रहता है। उस वसा तैल में ओर ओलीक लीनीलीक ग्लिसरोईड्स और आपूरित अम्ल रहते हैं। गुणवत्ता के नाम पर पिस्ताचों तैल ओलिव तैल के समान नहीं होता है। उसके संघटन में प्रोटीन और चीनी भी पाया गया है। पिस्ताचों के पत्तों में ज्यादा विटामिन सी रहता है। पिस्ताचों से संगृहीत सुगन्ध राल वाणिज्य रूप से अत्यन्त प्रधान वाले रालों में एक है और यह विविध उद्योगों में विस्तार रूप से प्रयोग होता है।

प्रयोग :- पहला दस्तावेज़ पिस्ताचों के औषधीय गुणों के विषय में प्लाईनी, द एल्डर (79-23 ई॰पू) और पल्लडिअस (III-IV सी.सी.ई.ए) के कार्यों में पाया गया था।

पिस्ताचों के दोषज गुण विविध कार्यों के लिए विस्तार से प्रयोग होता है। साईनिप्स जाति के सदस्यों से बने अधिक कीटगृहों टैनिक अम्ल के प्रधान साधन है। वाणिज्य कीटगृह जो पिस्ताचों पेड़ों को ग्रस्त करता है, में 65 प्रतिशत टैनिक अम्ल रहता है। कीटगृहों को पैदावर करके उन्हें चर्म शोधन और स्याही उद्योगों में बेचते हैं। बासित तुर्कमेनिस्तान सहित एशिया और पूर्वी देशों में पैदा होने वाले पिस्ताचों के काण्ड से प्राप्त सुगन्ध राल अच्छे सुगंध सिगरेट और चूयिंगम निर्माण में प्रयोग होता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

यह कच्चा माल साबुन तैयारी उद्योग में भी प्रयोग होता है। साथ ही पुराने समय से पूर्वी देशों के लोक चिकित्सा में यह अनेक प्रकार के अभिघातों के उपचार में विस्तार रूप से प्रयोग होता है। आमवात में कार्यकारी लोशनों में पिस्ताचों के रोपण राल एक है। पिस्ताचों सुगंध राल, सुगंध द्रव्य के पुराशव और मक्खन के मिश्रण से बने मलहम पुराने घावों को रोपण के लिए उपयोगी है। यह माना गया है कि प्राची मध्यकाल के सुप्रसिद्ध विद्वान और चिकित्सकों में एक अबू अली इब्न सिना विविध प्रकार के अपने औषध और रोपण कारी मलहम बनाने के लिए पिस्ताचों के सुगंध राल का प्रयोग कर रहे थे। अन्य प्रतिष्ठित और सम्मानित अपने समय के विद्वान् और चिकित्सक मुहम्मद हुसैन और सेईत हस्मैल गुर्नेली अपने कार्यों ट्रेज़र आफ हीलिंग सार्यस' और ''ट्रेज़री ऑफ खोरेज़्म शाह' में पिस्ताचों फलों के रोपक एवं पोषक गुणों का वर्णन किये थे।

पिस्ताचों के सुगंध राल से प्राप्त टैनिन में परिवर्तनशील संघटन है। तुर्कमेन लोक चिकित्सा में बंध्यत्व, पाण्डु, क्लैव्य,

ग्लानि, कुछ रोगों के उपद्रव, यकृत् रोग, आमाशय शूल, अनेक अन्य रोग और अभिघात से पीड़ित लोगों में प्रयोग के लिए संस्तुति किया जाता है। साथ ही टैनिन भारी द्रव्य को नाश करेन में क्षमता रखता है और यह माना गया है कि यह मय के बुरे कर्म को कम करता है।

पिस्ताचों के फल हृदय और मस्तिष्क में उपयोगी खनिज और विटामिन देता है। साथ ही, यह अच्छे भौतिक स्थिति देता है और कामला को रोकता है। पिस्ताचों द्वारा यह सिद्ध हुआ कि यह धड़कन, ज्वर, वृक्क रोग से पीड़ितों को सहायता करता है।

औषधीय उद्योग में काम आने वाले एक अमूल्य कच्चा माल, टैनिन पिस्ताचों सहित अनेक वृक्षों में रहता है। टैनिन के प्रोटीन को सड़न रोधी अघुलनशील उत्पाद में बदलने के क्षमत्व के कारण उन्हें चर्म शोधक के रूप में प्रयाग करते हैं। बाह्य औषधी के टैनिक अम्ल अमूल्य है क्योंकि यह स्तंभक और रक्तस्राव रोधक है। टैनिन के अनेक अन्य गुणों के साथ इसके एल्कोलोईड्स और अन्य भारी द्रव्यों के विष के प्रभाव को कम करने के क्षमता को भी कह सकते हैं।

कल्पना एवं प्रयोग :- 0.5 से 1.0 ग्राम पिस्ताचों सुगंध राल चूर्ण एक गोली के रूप में दिन में 2-3 बार भोजन से पहले लें।

एक बड़ा चम्मच (15 ग्राम) अच्छे से कूटे सुगंध राल 10 मि०ली० उबले और ठंडे किये पानी में डालें। एक चम्मच (5 ग्राम) द्रव दिन में 3-4 बार भोजन से पहले लें। यह तैयार होने के बाद 1 मास तक अधिक कार्य करता है।

अच्छे से पके पिस्ताचों के फल दिन में 3 बार खाली पेट में आप खा सकते हैं। परन्तु यह ध्यान रखें कि ज्यादा पिस्ताचों खाली पेट में हानिकारक है तथापि पिस्ताचों के दुष्प्रभाव को 2-3 अप्रिकॉट से आसानी से दूर कर सकते हैं।

प्लांतागो मायोर
PLANTAGO MAJOR

वर्णन :- प्लांतागो मायोर एक घूरे पर उगने वाला औषधीय पौधा है। दुनिया में इसकी 270 प्रजातियां, हैं जिनमें मध्य एशिया देशों में 30 और तुर्कमेनिस्तान में 10 सहित उपलब्ध है। प्लांतागो मायोर प्लांता जिनासी कुल के 30-50 से०मी० ऊँचे एक बहुवार्षिक क्षुपीय पौधा है। यह एक पौधा मूल स्थित शकल के पत्ते, उसके बीच में से एक अपत्र पुष्प सहित काण्ड जिसके शीर्ष पर अवृन्त पुष्प विन्यास रहता है।

प्रकन्द नाटा, मोटा, सीधा, तथा पतले और तन्तु जैसे मूलों के साथ होता है। पत्ते वृन्तसहित 3-9 लंबे टेढ़े सिराओं के साथ, विशाल अंडाकार, चिकनी धारा, चिकनी या हल्का रोमश, 12-15 से०मी० लम्बे होते हैं। विन्यास में फल अवृन्त, सूक्ष्म, धूम-धूसर रंग अन्तर्दल आकर्षक नहीं होते हैं। झिल्लीनुमा सहपत्र के कोने में एक पुष्प रहता है।

फल अनेक बीजों वाला सूक्ष्मबीज़ युक्त, बीज धूम-धूसर वर्ण 1.2-1.7 मि०मी० लम्बे, 0.3-0.8 मि०मी० चौड़े तक होते है। प्लैंटगो मेजर मई-अगस्त में पूल और जून सितबर में फल देता है।

जैविक लक्षण :- प्लांतागो मायोर यूरासिग प्रजाति का एक पौधा है। यह समुद्र से 2000 से 2500 मीटर ऊँचाई में पर्वत प्रान्तों में पैदा होता है। यह बीजों से प्रजनित होता है। अंकुरण के लिए अधिक से अधिक 25-30 डिग्री सेल्सियम तापमान चाहिए। प्लांतागो मायोर अंगावय उत्पत्ति

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

के शुरूआत के अवस्थाओं में नमी, ताजा भूमि को पसंद करता है। उसके सूक्ष्म आकार और अंकुरों के लम्बे विकास के कारण होता है। 8 से 6 हजार बीजों से एक वृक्ष बनता है। 1000 बीजों का वजन 0.2-0.4 ग्राम होता है।

विस्तार :- प्लांतागो मायोर तुर्कमेस्तिान में लगभग सभी प्रान्तों में विस्तार से फैला हुआ है। यह पौधा मैदान, नमी पर्वतीय क्षेत्र, स्रोतों के आसपास, नहर और गड्ढ़ों में पैदा होता है।

प्राकृतिक उपलब्धि :- यह पौधा तुर्कमेनिस्तान में एक दुर्लभ क्षुपीय पौधा नहीं है, औषधीय कार्यों के लिए इसके पर्याप्त भण्डार उपलब्ध है। भरे हुए प्रान्त नहीं हैं। देश में प्लांतागो मायोर के लिए विशेष कृषि क्षेत्र में कृषीकरण किया जाता है।

औषधीय कच्चा माल :- पत्र और ताजा पौधा औषध निर्माण में प्रयोग होता है। एक उत्पाद ''प्लैंटाग्लूसाईड'' पौधे के रस से बनता है और पत्तों को बेचने से पहले बान्धा जाता है।

पौधे और पत्ते इकट्ठा किये जाते हैं जब पत्ते पीले-लाल पड़ जाते हैं और पौधा फूल मई-अगस्त में देता है। जब ग्रीष्म काल नमी और गरम होता है तब चाकू और हंसिया से छोट वृन्त सहित पत्तों को काटते हैं और संग्रह करते हैं। जब पौधे घने होते हैं तब उन्हें निकालते हैं। और घास के ढ़ेर से पत्तों को निकालते हैं। कच्चा माल सामान्य रूप से सुखाया जाता है। रखने का समय 2-3 साल है।

रासायनिक संघटन :- प्लांतागो मायोर में इरिडोईड्स, आँकुबैन, आँकुबोसाईड, पेलिट्टोसाईड, ईडिकैन एल्कलोईड, और फ्लैकेनोइड्स, अपिजेनिन, लूटियोलाईन, स्कूटैल्लेरियन रहते हैं।

मूल में स्टेरोईड्स, साईटोस्टिरोल, स्टिग्मास्टेरोल कोलेस्टेरोल, कैंपेस्टेरोल और अधिक मात्रा में सुपर लिनोलीक अम्ल रहते हैं। पत्तों में कार्बोहाईड्रेट और पोलीसाकराईड्स, पेक्टिक अम्ल, म्यूसिर्लज, मैनेट 1.5 प्रतिशत सोर्बिटोल, इरिजोईड्स, आकुनैन और कटकपोल, विटामिन के, फिनोल ट्रामीसोल, सिरेन, वैनिल्लिन, हाईड्रोक्सी बेन्जोइ, राल, कोमरिन, जेंटिसिन, सैलिसिन, बेंजोइक फेनोलकैरुओनिक अम्ल, 1.28 प्रतिशत हाईड्रोक्सी सक्सीनिक अम्ल, कार्बोहाईड्रेट, 19. 52 प्रतिशत म्यूसिलेज, 0.37 प्रतिशत आकुनैन, सपोनिनें, एल्कोलोईड, टैनिक पदार्थ, फ्लैवोनोईड्स, अईर्साक्वेर्सिटिन, 9.43 प्रतिशत तैल रहते हैं।

प्रयोग :- प्लांतागो मायोर सालों से प्रयोग में है। यह रोगों के उपचार में कार्यकारी है। ज्येष्ट प्लाईनी (79-23 ई०पू०) के 'नेचुरल हिस्टरी' अबू अली इब्न सिना के 'कैनन ऑफ मेडिकल सायंस' और अबू रेहान बिरूनी के 'फार्मकोग्नोसी इन मेडिसिन' में प्लांतागो मायोर के औषधीय गुणों के विषय में पहली सूचना पायी गयी। अबू अली इब्न सिना ने इस पौधे के पत्तों को रक्तस्रावी उदर्द में प्रयोग किया था। मुहम्मद हुसैन नं अपनी पुस्तक 'ट्रैजरी ऑफ मेडिसिन्स' में इस पौधे के पत्ते, जड़ और बीजों के औषधीय गुणों का यकृत्, वृक्क और बस्ति के स्रोतोवरोध में उपयोगिता लिखी है।

चीनी चिकित्सा में यह वृक्क रोगों में, ज्वरघन के रूप में संक्रमणों, मूत्ररोग और अभिष्यन्द में भी प्रयोग किया जाता है। तजिकिस्तान में प्लांतागो मायोर पूयमेह में उपयोगी है। साईबीरिया में प्लांतागो मायोर और दुग्ध के कषाय वृक्करोग और फुफ्फुस रोगों को मिटाता है। चूर्ण व्रण रोपण वें उपयोगी है।

कॉंकेसस में प्लांतागो मायोर के ताजा पौधा और औषधीय मदिरा दन्तशूल के लिए प्रयोग होता है। आमाशय शोथ, आन्त्रशोथ, लघुआन्त्र शोथ में जड़ और पत्ते के औषधीय कषाय और रस उपयोगी है।

होम्योपैथी में इस क्षुप के रस और सार को उच्च हृद्‌गति, बहुमूत्र, क्लैव्य, शिर:शूल और कण्ठशूल में प्रयोग करते हैं। यह शोथहर और रक्तस्तंभन के रूप में भी उपयोगी है।

तिब्बत्, चीनी, मंगोलियन और कोरियन चिकित्साओं में यह पौधा, इसके रस और फांट व्रण रोपण, अन्नवहस्रोतस रोग, अतिसार, लघु अन्त्र शोथ, फुफ्फुसशोथ, फुफ्फुसीय राजयक्ष्मा, कास, फुफ्फुसावरण शोथ, वृक्कशोथ कामदौर्बल्य, नासागत रक्तस्राव में प्रयोग होता है। बच्चों के मूत्रकृच्छ्र में मधु और रस के मिश्रण मूत्रल के रूप में उपयोगी है।

लोक चिकित्सा में प्लांतागो मायोर के रस और कषाय बहुत विस्तार रूप से तीव्र श्वास रोग, मूत्रनली शोथ, कास, फुफ्फुस शोथ, फुफ्फुसीय राजयक्ष्मा में, व्रण रोपक, रक्तरोधक, वृक्कशोथ, असंगत मूत्रता, अतिसार, मधुमेह जन्य पिडिका, अपस्मार पूयमेह में उपयोगी है।

कर्माभ्यास चिकिसा में गैलन एजेंट (रस सहित) आमाशयिक, लघु आन्तिक व्रण, आस्य एवं गलशोथ, अंगमर्द, व्रणरोपक, दुष्टव्रण, अग्निदग्ध, कफ, फुंसी, पूययुक्त व्रण, इत्र में, टॉनिक के रूप में, प्रसूति, स्त्री रोग, गर्भाशय कला शोथ, गर्भाशय मांस पेशी शोथ, परिगर्भाशयिक शोथ, उपांग शोथ, बंध्यत्व को दूर करता है। प्लैंटाग्लूसाईड एक संकोचहर और शोथहर उपचार है, यकृत् शोथ, आमाशयिक शोथ, आमाशयायिक व्रणों में उपयोगी है।

कर्माभ्यासी स्त्रीरोग विज्ञान में बीजों का कषाय स्त्री संबंधी अन्त:स्रावी रोगों की चिकित्सा में प्रयोग होता है।

तुर्कमेन लोक चिकित्सा में प्लांतागो मायोर के ताजा क्षुप पनसिकोत्कर्ष, स्फोट, कास में बहुत प्रयोग होता है। दन्तशूल और आस्य उदर्द में आस्य प्रक्षालन में पत्र और मूल के

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

कषाय उपयोगी है। प्लांतागो मायोर नमक से साथ अभिघात, व्रण, गहरी घाव और अग्निदग्ध को दूर करता है। प्लांतागो मायोर के तरुण पत्र आहार में उपयोग होता है। काँकेसस पूर्वी प्रान्तों में प्लैंटगो मेजर आहार द्रव्यों में प्रयोग होता है।

कल्पना एवं प्रयोग :– एक बड़ा चम्मच (15 ग्राम) प्लांतागो मायोर के सूखे पत्ते एवं 1 गिलास (200 मि०ली०) उबलते पानी में डालकर 15 मिनट छोड दें। छानकर, ठंडा कर, एक बड़ा चम्मच (15 ग्राम) भोजन से 15–20 मिनट पहले दिन में 2–3 बार सेवन करें।

प्लांतागो मायोर के रस मदिरा और मेटाबाईसल्फैट नैट्रियम में मिलाएं, यह उपचार आमाशय शोथ और पुराने आंत्र शोथ में अम्लहर के रूप में प्रयोग होता है। एक बड़ा चम्मच (15 ग्राम) भोजन से 20 मिनट पहले दिन में 3 बार लें। सेवन काल 1 मास है।

प्लांतागो स्कुआलिदा
PLANTAGO SQUALIDA

वर्णन :– यह पौधा केला जैसा नहीं है, यह एक एकवार्षिक पौधा है। प्लांतागो स्कुआलिदा केला के कुल का है। यह पौधा 10–40 से०मी० ऊँचा है और पीताभ हरित वर्ण का है। मूल बाणाकार और शाखीय नहीं है। प्रधान काण्ड सीधा, सामान्य या शास्त्रीय, ऊपरी भाग और पुष्प लंबे, खुली हुई केशों से ढ़के होते है।

पत्र अभिमख, बाणाकार सिराओं के साथ 2–3 से०मी० लंबे, और 1–4 से०मि० चौड़े होते है।

जैविक लक्षण :– प्लांतागो स्कुआलिदा अप्रैल–मई में पुष्प और मई–जून में फल देता है। यह तराई पथरीली और मुलायम पथरीली भूमि में पैदा होता है समतल मैदानों में सम उगता है।

विस्तार :– यह पौध कोपेदग, अर्चाबिल कुरेदंग में पाया जाता है।

प्राकृतिक उपलब्धि :– प्लांतागो स्कुआलिदा एक दुर्लभ पौधा है। इसका पैदावर प्रति हैक्टर 35–40 सी० हैं। बीजों का पैदावार प्रति हैक्टर 6–7 सी है।

औषधीय कच्चा माल :– औषधीय कार्यों के लिए पौधें के जड़ी बूटी, बीज प्रयोग होता है। पुष्पकाल में यह जडी बूटी इकट्ठी की जाती है। पुष्प, पत्र युक्त काण्ड इस पौधे का कच्चा माल है। पौधे के पत्ते, काण्ड हरे रंग के और फूल गुलाबी रंग के है। औषधीय कार्यों के लिए औषधीय कच्चा माल 24 घंटे प्रयोग करना चाहिए। पौधे के औषधीय बीजों को कपडे की थैलियों में संग्रह करना चाहिए।

रासायनिक संगठन :– इस पौधे के बीजों में ग्लाईकोसाईड आकुबाईन, वसा, प्रोटीन, खनिज लवण और स्टार्च रहते हैं। जड़ी–बूटियों में पियंटोगोनाईन इंडिकनिन और अन्य एल्कोलाईड्स, विटामिन सी और के और केरोटीन रहते हैं।

प्रयोग :– बीजों से तैयार मिश्रण मलबंध में उपयोगी है। आमाशय शोथ एवं अन्य आमाशयिक रोगों (बृहदान्त्रशोथ, क्षुद्रान्तशोथ) में इस पौधे का प्रयोग होता है, यह चर्मरोग, गुप्त रोगों में भी उपयोगी है। पारंपरिक एवं वैज्ञानिक चिकित्सा में बीज रक्तरोधक के रूप में प्रयोग होते हैं।

दो बड़ी चम्मच बीज गिलास (200 मि०ली) उबले पानी में दस मिनट रखें, इस मिश्रण को खाली पेट में भोजन से 15–20 मिनट पहले लें।

दो बड़ी चम्मच बीज एक गिलास पानी में 10 मिनट रखें। एक बड़ी चम्मच (15 ग्राम) तैयार औषध सेवन करें।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

प्लतानुस ओरिएन्तालिस
PLATANUS ORIENTALIS

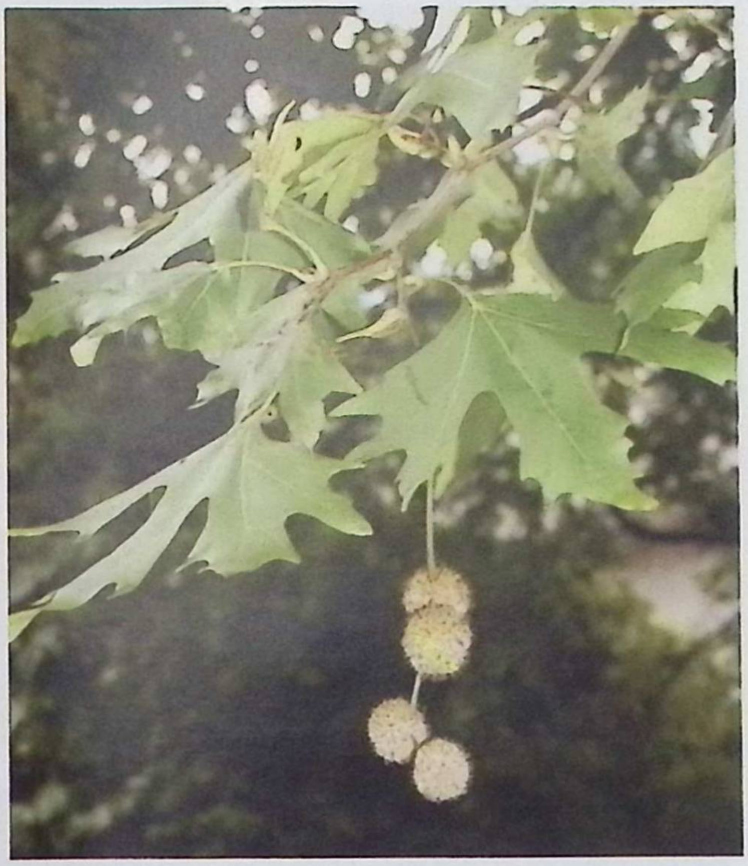

वर्णन :– इस प्राचीन औषधीय पौधे की 10 प्रजातियां दुनिया में है, एक प्रजाति मध्य एशिया के देशों में एक तुर्कमेनिस्तान में है।

प्लतानुस ओरिएन्तालिस प्लतानुस कुल का है, पौधा 25-30 मीटर ऊँचा होता है। यह बहुत बड़ा पौधा है, जिसमें पत्ते प्रतिवर्ष झड़ जाते हैं। पत्ते अंगुलि आकार, बड़े और सुन्दर होते हैं। प्लतानुस ओरिएन्तालिस मार्च-अप्रैल में फूल और अक्टूबर-नवम्बर में फल देता है।

यह पौधा प्राचीन पौधों की गणना में आता है। प्लैटन ने सीसोजोईक काल, क्रटेशियस समय में दिखायी दिया।

जैविक लक्षण :– पर्वतों में पैदा होने और वयस्थापन के लिए रस की क्षमता इसकी जैविक विशिष्ठता से विवरण दिया हुआ है। प्लतान नज़दीकी नदियों और पथरीले स्थानों में पैदा होता है। यह अकसर प्रधान काण्ड के छाल को बाहर फेंकता है। पौधा 700-1200 साल तक जीवित रहता है। पैदा होता है।

विस्तार :– यह पौधा हमारे देश में मध्य और दक्षिण-पश्चिमी कोपेदग में पाया जाता है। प्लतान मग्तिमगुली श्यूलान, सुन्त, होज़्ली, तंग घाटी, अल्टिबे, सुम्बर, ऐदेर, सयवन एंखाबाद, अबदान काईतेनदग में पैदा होता हैं

प्राकृतिक उपलब्धि :– यह दुर्लभ पौधा है। मध्य एशिया देशों में यह लाल किताब में जोड़ा गया है। रक्षित वनों में यह पौधा पैदा होता है। मेरूथान बड़े और छोटे नियाज़्म (बहर्ली जिला) में स्थित है। इस स्थान में 300 से 320 प्लतानें पैदा होते हैं। केवल प्राकृतिक भण्डारण में से ही नहीं कृषीकरण भी होता है। आजकल हमारे देश में काफी काम हुआ है। हमारे शहर उपयुक्त को निरूपित करेगा।

औषधीय कच्चा माल :– फल, पत्र, बाल और प्रकन्द औषधीय कार्यों के लिए प्रयोग होता है। औषधीय कार्य के लिए पत्र अप्रैल-मई, प्रकन्द जून, मुख्य काण्ड के छाल जून, अगस्त, फल अक्टूबर में ग्रहण किये जाते हैं। प्रकन्द 0.5 से1.0 से०मी० टुकड़ों में काटकर विशेष सुखाने वाले कमरों में या छाया में सुखाया जाता है। पत्तों को हवादार स्थानों में कागज पर सुखाया जाता है। नमी 15-20 प्रतिशत होनी चाहिये, फल पत्रों जैसे-सुखाया जाता है। औषधीय पत्र और प्रकन्द को कागज़ में लपेटकर कपडे की थैलियों में और फलों को बंद कांच की बोतल में संग्रह करते हैं। रखने का समय 2-3 साल का है।

रासायनिक संघटन :– पेड़ की छाल में ट्राईटेर्पिनोईड्स, वेटुलिन अम्ल 0.7-1.5 प्रतिशत, बेटुलिनआलडीहैडीन बेटुलीन आलडीहाईडीन एसिटैंट, कॉफी, यूसिटोस्टरैन अम्ल रहते हैं। पत्तों में फिनोलकार्बन अम्ल, हाईपेरिनीन 0.54 प्रतिशत, हिलिरोसाईड फ्लैवोनोइड्स, कंफेरोल हाईड्रोलोथेट्, क्वेर्सेटीन और मिरिसेटीन, फल में साईटोस्टैरिन और आलिफैटिक हाईड्रोकार्बनस रहते हैं।

प्रयोग :– वैज्ञानिक स्रोत (1वीं पू०) के कार्यों में पूर्वी प्लतान के विषय में पहली सूचना मिलती है। उन्होंने प्राचीन काल में कोलयिस में प्लतानें के एक चमत्कारी बगीचा के बारे में जिक्र किया था। फ्रियोफ्रास्त, उद्भिजविज्ञान के पिता, अपने पुस्तक 'द एनालिसिस ऑफ प्लान्ट्स' में प्लतान के विषय में बताया है। प्राचीन रोमन चिकित्सकों ने इस पौधे की सुन्दरता बताई, साथ ही औषधीय गुण भी। सुप्रसिद्ध रोमन वैद्य क्विन्त सेरेन समोनिक (1 क्री०पू) पत्रों को मुंह पर हुई झुर्रियों, फल को रक्तस्तंभक और छर्दि, अग्निदग्ध एवं बर्फ दग्ध व्रणों में प्रयोग के लिए सलाह दी है।

काश्मीर में प्लतन का अच्छा आदर किया जाता है। मंगोल साम्राज्य के नेता अक्बर जेलालुद्दीन ने आज्ञन दी कि झेलम नदी के किनारों पर अधिक प्लतानों को उगाएं। आजकल प्लतान पैदा होते हैं। बहुत जल्द ही प्लतान कश्मीर की पहिचान बनी।

सुप्रसिद्ध प्राचीन वैज्ञानिक अबू अली इब्न सीना नें"कैनन ऑफ मेडिकल सायंस" में प्लतानुस ओरिएन्तालिस के औषधीय गुणों के विषय में लिखा है, प्लतानुस ओरिएन्तालिस छाल के चूर्ण संक्रमित व्रणों में, पत्ते संधिशूल एवं संधिशोथ के उपचार में प्रयोग होते हैं।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

पारंपरिक एवं वैज्ञानिक चिकित्सा में प्लतानुस ओरिएन्तालिस से बने फाण्ट, सार, पानक, रस अतीसार और आन्त्र के संक्रमण के उपचार में, रक्तरोधक के रूप में सर्प और लूता देशों में विषघ्न के रूप में, पुराने अर्बुदों, आन्त्रवृद्धि, दन्तशूल, रक्तस्राव, उपदंश, नेत्र पलकों के शोथ, नपुंसकता के उपचार में प्रयोग होता है।

पारंपरिक तुर्कमेन चिकित्सा में (मगतिमगुली, बहर्ली, कोयतेनदग) में प्लतान के फल गुप्तरोग और नपुंसकता के उपचार में बहुत समय से प्रयोग हो रही है।

निर्माण एवं प्रयोग :- 2 बड़ी चम्मच (30 ग्राम) छोटे पत्ते लेकर एक लीटर पानी में डालकर आधा घंटे रख लें। फिर छानकर 100-150 मि०ली० दिन में 3 बार भोजन से पहले प्रतिदिन सेवन करें। एक सप्ताह तक एक भोजन पर रहें, यह रक्तस्राव और अन्य संक्रमणों के उपचार में उपयोगी है।

दो बड़े चम्मच (30 ग्राम) प्रकन्द चूर्ण एक गिलास उबले पानी में डालकर, 20 से 30 मिनट उबालें। छानकर आधा गिलास (100 मि०ली०) दिन में 3 बार लें। यह औषधि रक्तरोधक एवं सर्प और लूता के देश में विषघ्न के रूप में कार्य करता है।

सार को विषयुक्त प्रजातियों के दंश स्थान पर लेप करने का प्रयोग करते हैं।

एक बड़ा चम्मच (15 ग्राम) एक गिलास (200 मि०ली०) पानी में 10-15 मिनट उबालें। छानकर 150-200 मि०ली० दिन में 23 बार लें। यह सार नेत्र पलकों के शोथ में और पुराने अर्बुद में उपयोगी है।

एक बड़ा चम्मच त्वचा चूर्ण एक गिलास (200 मि०ली०) पानी में डालकर 25-30 मिनट रख लें। इसका पुराने अर्बुदों के उपचार में प्रयोग होता है। 200 मि०ली० औषधि दिन में 3 बार भोजन से पहले लें। यह दन्तशूल, आन्त्रवृद्धि और अतीसार संक्रमण में उपयोगी है।

2 बड़ी चम्मच (30 ग्राम) छोटे कटे फलों को एक लीटर दूध में धीरे-धीरे हिलाते उबालें। एक छोटी चम्मच (5 ग्राम) तैयार औषधि प्रतिदिन दिन में 3 बार लें। यह औषधि गुप्त रोग एवं नपुसंकता में उपयोगी है।

प्लुंबागो एउरोपेआ
PLUMBAGO EUROPAEA

वर्णन :- दुनिया में इसकी 24 प्रजातियां है, जिनमें जर्मनी में 2 और तुर्कमेनिस्तान में एक प्रजाति उपलब्ध है। प्लुंबागो एउरोपेआ, प्लंबगोकुल की एक प्रजाति है। यह बहुवार्षिक पौधा 30 से 100 से०मी० ऊँचा होता है।

काण्ड भूमि से समतल, ऊपर के भाग ज्यादातर सीधे पतले, हवा से घूमती शाखाएं होती हैं। इस क्षुप का पत्ता गहरा हरा, समतल, कभी-कभी इसके तल पर छोटे-छोटे बिन्दु रहते हैं और उसके धारा वक्राकार है।

पौधे के निचले भाग में नाटे काण्ड हैं, इनमें से कुछ मुड़े रहते हैं। सबसे नीचे भाग में काण्ड नहीं रहते हैं। नीचे और मध्य भाग के पत्ते अन्य भागों के पत्तों से बड़े और अंडाकार रहते हैं (5.8 से०मी० लंबे, 3-4.5 से०मी० चौड़े)।

क्षुप के उपरी भाग और काण्डों पर रहने वाले पत्ते छोटे होते हैं। फूल काण्ड के शीर्ष भाग पर रहते हैं और वे अंडाकृति में रहते हैं। फूल का ऊपरी भाग गुलाबी रंग का रहता है।

जैविक लक्षण :- प्लुंबागो एउरोपेआ समुद्र तल से 600-1500 मीटर ऊँचाई पर पैदा होता है। यह घाटी और चट्टान के खडे दीवार इस क्षुप के उत्पन्न होने के लिए अधिक सानुकूल है। यह अगस्त-सितंबर में फूल और सितंबर अक्टूबर में फल देता है। यह बीजों से प्रजनित होता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

विस्तार :- यह पौधा कुरेंदग, सोनूदग पर्वत, कोपेतदग पर्वत के पश्चिमी-दक्षिणी प्रान्त, ऐदेरे, चेंडिर और सुंबर, कोपदग पर्वत के मध्य भाग, सर्यामसक्लि, चोपनदग, वनोवस्की, अर्चाबिल, गोकदेरे, उली ग्रच्ची, दशतोई, दोग्रीदेरे, असिल्मा, गोर्तलीसुव, कोपतदग पर्वत के पूर्वी भाग में गुरिहोनदन और वाहचा।

प्राकृतिक उपलब्धि :- प्लुंबागो एउरोपेआ एक दुर्लभ क्षुपीय पौधा नहीं है। औषध के लिए इसका पर्याप्त संग्रह उपलब्ध है।

औषधीय कच्चा माल :- मूल, काण्ड, पत्ते चिकित्सा में प्रयोग होते हैं। संग्रहीत माल को मामूली पद्धति से इकट्ठा करते हैं और खुली हवा में माल गोदाम में सुखाते हैं। उसे कपडे की बोरी में रखते हैं। रखने का समय 1-2 साल है।

पोलीगोनातुम सेवेर्जोविइ
POLYGONATUM SEWERZOWII

वर्णन :- दुनिया में इस पौधे की 30 प्रजातियां हैं। जिनमें 18 मध्य एशिया के देशों में और केवल एक प्रजाति तुर्कमेनिस्तान में हैं। यह 40-60 (120) से०मी० ऊँचा होता है। पौधा बहुवार्षिक है। पौधे का मुख्य काण्ड सीधा सिराओं के साथ निचले 1/3 भाग पर पत्र नहीं होते हैं।

इस पौधे के पत्तों पर तन्तुमय आवरण नहीं होता और सादा रहता है, नीचे के भाग घूमते हुए बड़ा होता है। पत्ते लंबगोल, लंबे और तीक्ष्ण होते हैं। इस पौधे के फूल बर्फ जैसे सफेद और वे घूमते हुए बड़े होते हैं। प्रत्येक घुमाव में 2 या 3 फूल रहते हैं, पौधे के फूल टोपी जैसे दिखते हैं। यह फूल टोपी 15 मि०मी० लंबी होती है। इस पौधे के फल लाल और खाद्य है।

इस पौधे का वैज्ञानिक नाम 'पोलीगोनेटम' है, जो अधिक के रूप में अनुवादित है। इसका नाम सोलेमन के मोहर और भेडियों का आहार से जुड़ा हुआ है। इस नाम का अर्थ है कि यह पौधा विष युक्त है। यह पौधा मई-जून में फूल देता है।

विस्तार :- पोलीगोनातुम सेवेर्जोविइ समुद्र तल से 80-1600 मीटर की ऊँचाई पर पैदा होता है। यह नाटा पौधा पेड़ों के नीचे पैदा होता है और छाया युक्त प्रान्त भाग को पसंद करता है। पोलीगोनातुम सेवेर्जोविइ पौधा दक्षिण-पूर्वी कोपेतदग में, योल्देर में, डोदेर में, अलितनदगदाब में, चोखकदा में, कोनगुम्मे में, ओकतन, गरक्लिक्द, सुंत्द में, मध्य कोपेतदग में, अर्चाविल, सेमन्सुर, सरिकाज़लि, सेडिकलज़द, अरबज़, गेरमैप, मुर्जदग, होवदन, बबज़व, हेगेरमेनलिद, मुसुनेबदे, कोयतदग में पाया जाता है। यह पौधा छाया और नमी प्रदेशों में पैदा होता है।

जैविक लक्षण :- यह पौधा दुर्लभ नहीं है। हमारे देश में औषधीय कार्यों के लिए पौधे का कच्चा माल पर्याप्त है। हमारे देश में 4 से 6 (10) टन कच्चा माल प्रतिवर्ष संग्रह किया जा सकता है। यह एक खाद्य पौधा है।

औषधीय कच्चा माल :- इस पौधे के क्षुप और प्रकन्द औषध में प्रयोग होते हैं। क्षुप फूल आते समय और प्रकन्द शरद् ऋतु में संग्रह किये जाते हैं। बहुत ध्यान से इसे सुखाते हैं। कच्चा माल कागज के पेटियों में भण्डार किया जाता है। क्षुप को रखने का समय 1-2 साल और प्रकन्द 2-4 (5) साल। प्राचीन काल से यह प्रयोग में है। पोलीगोनातुम सेवेर्जोविइ कफ छेदन है और कुछ रोगों में शामक के रूप में प्रयोग होता है।

रासायनिक संघटन :- इस पौधे के अंकुर और प्रकन्द में विटामिन सी, चीनी, सपोनिन, स्टार्च और ग्लाईकोसाईड्स हैं।

प्रयोग :- तुर्कमेनिस्तान लोक चिकित्सा में यह पौधा रक्तस्राव और शिर:शूल रोकने हेतु प्रयोग होता है। प्रकन्द में पैथिन्टिन है, जो कास, अपस्मार, हृच्छूल, वाधिर्य में सहायक होता है और यह पौधा बच्चों को नहलाने में प्रयोग होता है। लोक चिकित्सा में (वेलायत्स मग्तिमगुली, बरवर्ली, गोकदेप) प्रतिवर्ष संग्रह किया जाता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

कल्पना और प्रयोग :- एक बड़ा चम्मच प्रकन्द कूटकर 2 गिलास (400 ग्राम) उबलते पानी में डालकर 5-10 मिनट उबालें। फिर छानकर 1/4 गिलास दिन में 2-3 बार पीयें। इस पौधे के प्रकन्द को छोटे टुकड़े करके 50 ग्राम 0.5 लीटर पानी में डालकर 30 मिनट उबालें और ठंडा करें। बाह्य प्रयोग नहाने में प्रयोग करें।

पोलीगोनुम आविकुलारे (नाँट ग्रास)
POLYGONUM AVICULARE (KNOT GRASS)

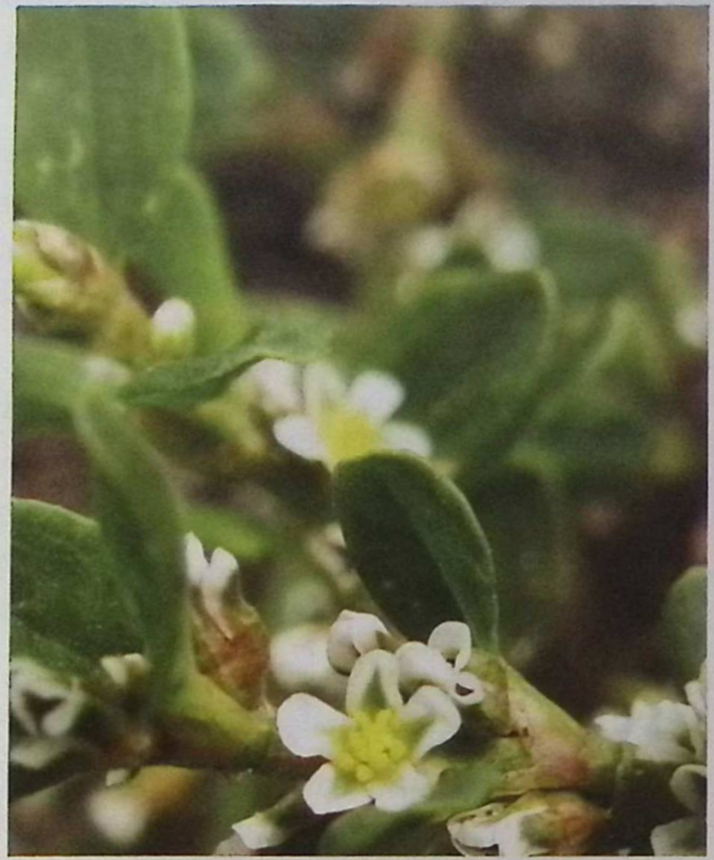

वर्णन :- दुनिया में इस क्षुपीय पौधे की 300 प्रजातियां उपलब्ध हैं। मध्य एशिया देशों में 120 और तुर्कमेनिस्तान में 23 प्रजातियां मिलती हैं।

नाँट ग्रास पोलिगोनेसी कुल का सदस्य है, जो 30-40 से०मी० ऊँचा होता है, इसका काण्ड ऊर्ध्वमुखी या अधःमुखी होता है। पत्ते लंबगोल, रेखाओं के साथ, कुण्ठित या तीक्ष्ण होते हैं, धूम या धूमीय हरे रंग के होते हैं। फूल 1-5 पत्तों के कोणों से रहते हैं। फूल श्वेताभ हरित वर्ण के साथ, हरे पतले और गुलाबी या सफेद रहते हैं। फल त्रिकोणीय, रंग काला, 1-2 मि०मी० लंबे होते हैं।

जैविक लक्षण :- यह गलियों में, आंगनों में पैदा होता है। ऊपर पैर रखने (दबने) से यह नाश नहीं होता है। यह पौधा मई-अक्तूबर में फूल और फल देता है।

विस्तार :- रेगिस्तान छोड़कर हर जगह पर यह पैदा होता है।

प्राकृतिक उपलब्धि :- यह दुर्लभ पौधों के समूह में नहीं आता है। औषधीय प्रयोग के लिए पर्याप्त भण्डार उपलब्ध है। प्रतिवर्ष लगभग 10 टन संग्रह होता है।

औषधीय कच्चा माल :- पौधे के फूल औषधीय कच्चा माल है। इसे संग्रह करके छत के नीचे सुखाना चाहिये। तैयार कच्चे माल को कपडे की बोरियों में बांधते हैं। रखने का समय 1-2 साल है।

रासायनिक संघटन :- नाँट ग्रास में अधिक मात्रा में ऐस्कोर्बिक अम्ल, विटामिन के, कैरोटीन, फलैवोन ग्लाईकोसाईड, टैनिन, मम्मी एवं कोलोफोनी उपलब्ध हैं।

प्रयोग :- लोक चिकित्सा में यह पौधा यकृत्, फुफ्फुस और आमाशय रोगों में प्रयोग किया जाता है और चयापचय से संबंधित रोगों में भी उपयोगी है (फुफ्फुस और) वृक्क से पत्थर, बालू निकालता है। पित्त स्राव, फुफ्फसीय राजयक्ष्मा, ज्वर, आमवात, अतिसार, चर्मरोग, अर्श और शिरःशूल को दूर करता है तथा उच्च रक्तचाप को कम करता है।

इससे तैयार योग का केश वर्धन में भी प्रयोग होता है।

इस पौधे से बने औषध एविक्युलैरियम असृग्दर मिटाता है। इस घास से तैयार फांट रक्त को जमाता है और रक्तचाप को कम करता है और मूत्र त्याग में बल देता है।

कल्पना और प्रयोग :- दो बड़े चम्मच घास कूटकर 60 ग्राम सुरा में डालकर एक कांच पात्र में एक सप्ताह डुबाकर रखें। प्रयोग के पहले उसे हिलाना है। दस बूंद एक गिलास पानी में डालकर दस दिन में 3 बार, सवेरे, शाम और सोने के पहले लें। असृग्दर नहीं मिटे तो, प्रतिदिन 10 बूंद और दे सकते हैं। कभी-कभी 60 बूंद प्रतिदिन दे सकते हैं।

2-3 चम्मच (10-15 ग्राम) कूटा हुआ पौधा 2 गिलास (400 मि०ली०) उबले पानी में डालें, छानकर ठंडा करें। एक गिलास (200 मि०ली०) दवा दिन में चार बार सेवन करें।

एक बड़ा चम्मच नाँट ग्रास एक तामचीनी पात्र में रखकर एक गिलास (200 मि०ली०) गरम पानी डालें। बन्द कर 15 मिनट धीरे-धीरे उबालें। 45 मिनट ठंडा कर छान लें। 1-2 गिलास तैयार फाण्ट भोजन से पहले लें। दो दिन बाद उसे प्रयोग न करें।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

पोलीगोनुम पेर्सिकारिआ
POLYGONUM PERSICARIA

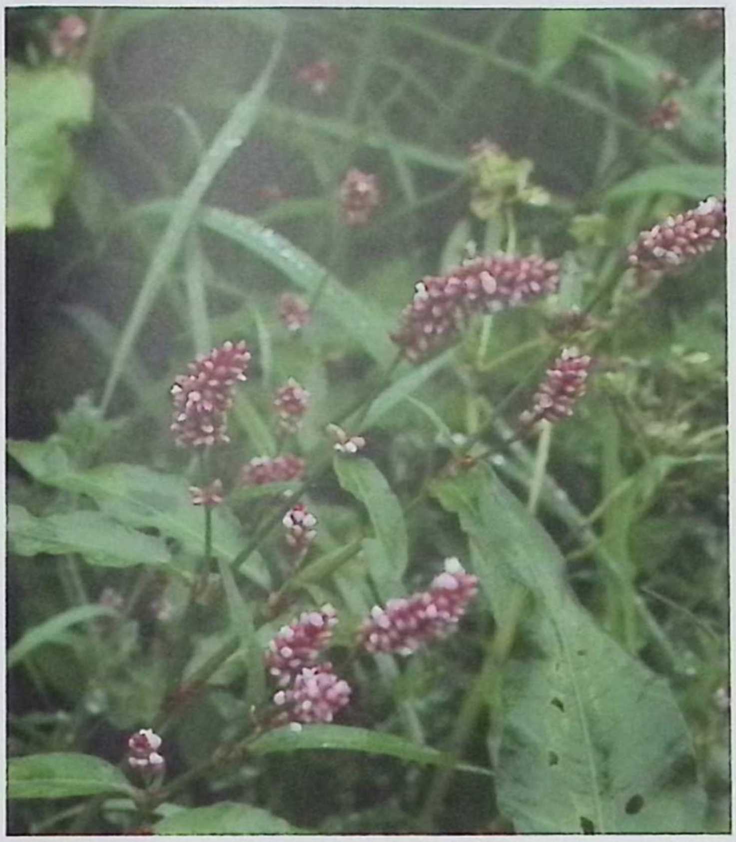

वर्णन :- पोलिगोनुम पेर्सिकारिआ एक पौधा है। इसकी मध्य एशिया देशों में 160 प्रजातियां और तुर्कमेनिस्तान में 23 सहित दुनिया में 300 प्रजातियां उपलब्ध हैं। पोलिगोनुम पेर्सिकारिआ एक एकवर्षिय क्षुपीय पौधा है जो पोलिगोनेसी कुल का है और 20 से 80 से०मी० ऊँची होती है। काण्ड सीधा ऊपर की ओर जाता है, पतले और शीर्ष पर शाखायुक्त होता है। पत्र एकान्तर, भालाकार, छोटी वृन्त सहित, हरा संयुक्त पत्र पुष्पों के नीचे एक छोटे कटोरे के साथ होते हैं। फूल, सूक्ष्म, गुलाबी या सफेद, 3-5 इञ्च लंबे पुष्प विन्यास में नाटे, घने वृन्तयुक्त फूल रहते हैं। पुष्प विन्यास शाखाओं के शीर्ष पर रहते हैं। फल काले, अण्डाकार काष्ठ फल है।

जैविक लक्षण :- पोलिगोनुम पेर्सिकारिआ मई-अगस्त में फूल और फल देता है। यह पौधा नदी, नहर, गड्ढे और नमी प्रान्तों में पैदा होता है। कभी-कभी इस पौधे के घने प्रान्त रहते हैं, कभी-कभी अन्य नमी पसंद करने वाले पौधों के साथ मिले जुले घने प्रान्त देखने में आते हैं। पोलिगोनुम पेर्सिकारिआ बीजों से प्रजनित होता है। पूरे ग्रीष्म काल में फूल देता है। यह समुद्र तल से 300-2500 मीटर ऊँचाई में पैदा होता है।

रासायनिक संघटन :- पोलिगोनुम पेर्सिकारिआ पौधे के मूल उड़नशील तैल, टैनिन, टैनिन पदार्थ, हाईपरोसाईड्स, एविक्युलारिन, क्वेर्सेट्रिनिक फ्लैवोनोईड्स, म्युसिलैजिन्स, फिल्लोक्विनोन, गाल, वसा और ऐसेटिकअम्ल, मम्मी, पेक्टिक पदार्थ, विटामिन सी, के, पी, कैरोटिन, टोकोफैरोल, साईटोस्टैरोल्स, ज़िंक, सैलीन, अंत्राक्विनोन योग पाये जाते हैं।

विस्तार :- पोलिगोनुम पेर्सिकारिआ मध्य कोपेतदग के खाडियां में, गंदन अर्चाबिल, गोकदेप, दउली और किची बाकजा, केलाता, पंतिष, अर्वज़ इपे, नोहर, दक्षिण-पश्चिमीय सुम्बर और कोपेतदग, गरवुल, समवान, देष्ट, ऐदेर, जोडेप में फैला रहता है। तराई में सिंचित खेतों में कृषीकरण किया जाता है।

प्राकृतिक उपलब्धि :- पोलिगोनुम पेर्सिकारिआ तुर्कमेनिस्तान के दुर्लभ पौधों में नहीं हैं। औषधीय कार्यों के लिए पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध है। यह पौधा साल भर में 10-20 (30) टन उत्पाद होता है। मुख्य संसाधन दक्षिण-पश्चिमीय कोपेदग में केंन्द्रित हैं। हाल ही में इस पौधे के संसाधन कुष्का और अमूदर्या के तटों पर पाया गया है।

औषधीय कच्चा माल :- पोलिगोनुम पेर्सिकारिआ के क्षुप औषध के लिए प्रधान कच्चा माल देता है। पौधे के भूगर्भ भाग मूल से 40 से०मी० तक एक चाकू या हँसिया से काटा जाता है। मोटे होने पर निकाल सकते हैं। जून-जुलाई में जब पौधा अधिकतम जैवकीय क्रियाशील तत्वों को इकट्ठा करता है, तब दिन के प्रथम भाग में पौधे को संग्रह करते हैं। कच्चा माल आंगन में हवादार जगह में छज्जों के नीचे या हवादार कमरों में सुखाया जाता है। फफूँदी से बचाने के लिए बार बार पलटना चाहिए। तैयार कच्चा माल कागज के बोरियों या थैलियों में बांधा जाता है। सीधा सूर्यप्रकाश से बचाना चाहिए। रखने का समय 2 साल है।

प्रयोग :- पारंपरिक एवं लोक चिकित्सा में पोलिगोनुम पेर्सिकारिआ के भूमि के ऊपरी भाग के कषाय और फांट गर्भाशय रक्तस्राव, अर्श, स्त्री रोग, हृच्छूल, शिरःशूल में, मृदुविरेचक के रूप में, दुष्ट व्रण, में प्रयोग होता है। पोलिगोनुम पेर्सिकारिआ के फांट और द्रवसार रक्तस्तम्भन (रक्त को जमाता) करता है। आन्त्र क्रमाकुंचन बढ़ाता है। फांट का प्रयोग क्लैब्य, नपुंसकता, प्रतिश्याय, मद, श्वासावरोध, संकोच, टोकोफेरोल एवं सेलेनिक शुक्रोत्पादन को प्रभावित करता है। मूत्र प्रसेक से आसानी से मूत्र निकालता है। यह क्षुप रक्त प्रसारण अच्छा करके काम क्रिया को बढ़ाता है। लंबे समय तक प्रयोग करने पर यह पौधा दीर्घकालिक मलबन्ध में उपयोगी है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

तुर्कमेन लोक चिकित्सा में यह काम क्रिया में उपचार हेतु प्रयोग होता है।

कल्पना एवं प्रयोग :- एक गिलास (200 मि०ली०) उबलते पानी में 2 बड़े चम्मच (30 ग्राम) पौधे डालकर 35-40 मिनट ठंडा करके छानकर एक गिलास (200 मि०ली०) पानी उसमें मिलाकर, 2-3 बड़े चम्मच (30-45 ग्राम) भोजन से पहले दिन में 3 बार सेवन करें। यह अर्श और अन्य रक्तस्राव में उपयोगी है।

क्षुप का ताजा रस या ताजा कल्क दुष्ट व्रण में वाह्य प्रयोग के लिये उपयोगी है।

2 बडे चम्मच क्षुप कूटकर वस्त्र से छानकर 100 ग्राम वनस्पति तैल या वसा में कसकर बन्द किया ढक्कन के साथ एक पात्र में 10-15 दिन अन्धेरे स्थान पर रखें। बीच-बीच में हिलाते रहें। यह दुष्टव्रण में बाह्य प्रयोग के लिये उपयोगी है। शिरःशूल में इसका फाण्ट सिर के पीछे लगाया जाता है। अर्श और अन्य रक्तस्राव में कार्यकारी है।

हृच्छूल में और गले को प्रक्षालन के लिए कषाय का प्रयोग होता है। एक बडे चम्मच द्रव्य में एक गिलास (200 मि०ली०) पानी डालकर एक तामचीनी पात्र में मंदाग्नि पर 10 मिनट उबालें। छानकर कमरे के तापमान पर ठंडा कर दिन में 3 बार मुंह का प्रक्षालन करें।

क्लैव्य और बंध्यत्व में फांट और औषध मदिरा उपयोगी है। एक बड़ा चम्मच क्षुप लेकर एक गिलास (200 मि०ली०) गरम पानी में एक तामचीनी पात्र में रखकर 15 मिनिट तक मंदाग्नि पर उबालें। छानकर ठंडा कर एक बड़ा चम्मच (15 ग्राम) दिन में 3-4 बार सेवन करें। सेवन काल 2-3 सप्ताह है।

एक बड़ा चम्मच कुटा हुआ क्षुप 200 मि०ली० सुरा या वोड़का में डालकर ढक्कन के साथ कस कर बान्ध कर अन्धेरी जगह में 9-10 दिन रखें। बीच बीच में हिलाते रहें। छानकर 20-30 बूंद दिन में 3-4 बार लें।

क्षुप रक्त स्तंभन (जमना) को बढ़ाता है। यह हृच्छूल, हृदय धमनी अवरोध और धमनी अवरोध में प्रयोग किया जाता है।

पोपुलुस आलबा
POPULUS ALBA

वर्णन :- दुनिया में इस वृक्ष की प्रजातियां लगभग 40 हैं जिनमें मध्य एशिया देशों में 20 और तुर्कमेनिस्तान में 3 प्रजातियां हैं।

पोपुलुस आलबा 20-30 मीटर ऊँचा है। काण्ड के रंग धूम्र है। त्वचा और पत्र मोटे तन्तुओं से ढके रहते हैं। पत्ते लम्बे, अंडाकार हैं। लगभग 8-10 पुंकेसर रहते हैं। पीत वर्ण के हैं। फल छोटे डिब्बे के रूप में अप्रैल-मई में आते हैं। दुनिया में कोई अन्य वृक्ष पोपुलुस आलबा जैसे जल्दी से बड़ा नहीं होता। यह पौधा आसानी से गर्म और ठंढ को सह लेता है।

विस्तार :- यह पौधा कोपेतदग में ऊपरी सुम्बार, बखर्ली, दैपित सवन में पैदा होता है। अधिकाधिक पर्वतीय प्रान्तों में पैदा होता है। पोपुलुस आलबा जन निवास प्रान्तों में उगाया जाता है।

प्राकृतिक उपलब्धि :- पोपुलुस आलबा के पर्याप्त भंडार उपलब्ध है। यह दुर्लभ पौधा नहीं है, यह पश्चिम पूर्वी कोपेतदग और दशोगुज़्वेलायम में पैदा होता है।

औषधीय कच्चा माल :- पत्र, फल और अंकुर औषधीय कच्चा माल के रूप में प्रयोग होते हैं। जब पत्ते

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

नहीं होते हैं तब अंकुर संग्रह किये जाते हैं और छाया में सुखाते हैं, तैयार कच्चा माल को कागज़ की बोरियों में या कांच पात्र में रखते हैं। रखने का समय 1-2 साल।

रासायनिक संघटन :- पौधे के अंकुर में उड़नशील तैल, आक्सीडुलैट्स्, मैलिक अम्ल, सालसीन, ग्लाईकोसाईड, क्रैसीन, टेक्टेक्रैसीन उपलब्ध हैं। इस पौधे में सैलिकोर्टीन, ट्रेमुलैसिन और तिक्त पदार्थ उपलब्ध हैं। प्रधान काण्ड के त्वचा में 44 वी और पत्तों में 22 वीं ग्लाइकोसाईड् उपलब्ध हैं।

प्रयोग :- यह पौधा रक्तस्राव में उपयोगी है। विख्यात चिकित्सा में अंकुर अधिक तापमान(ज्वर), वेदना, शोथ में प्रयोग होते हैं। तैलयुक्त फांट अग्निदग्ध व्रण और जोड़ों के दर्द में उपयोगी है।

कल्पना और प्रयोग :- 2 बड़े चम्मच (30 ग्राम) अंकुर तैल में मिलाकर दिन में दो बार बाहर लगा लें। 3 बड़े चम्मच (45 ग्राम) अंकुर 4 गिलास उबले पानी में डालकर 5 मिनट उबालें और बन्द पात्र में 4 घंटे रख कर छान लें।

एक गिलास (200 मि०ली०) उबले पानी में 2 चम्मच (10 ग्राम) अंकुर डालकर 4 घंटे रखें। छानकर एक बड़ा चम्मच (15 ग्राम) प्रतिदिन 3-4 बार प्रयोग करें।

10-20 ग्राम पौधा 100 मि०ली० 40 प्रतिशत सुरा में डालकर 7 दिन रखें। छानकर यह औषधीय सुरा 15-20 बूंद दिन में 3 बार प्रतिदिन सेवन करें।

पोर्तुलाका ओलेराचा
PORTULACA OLERACEA

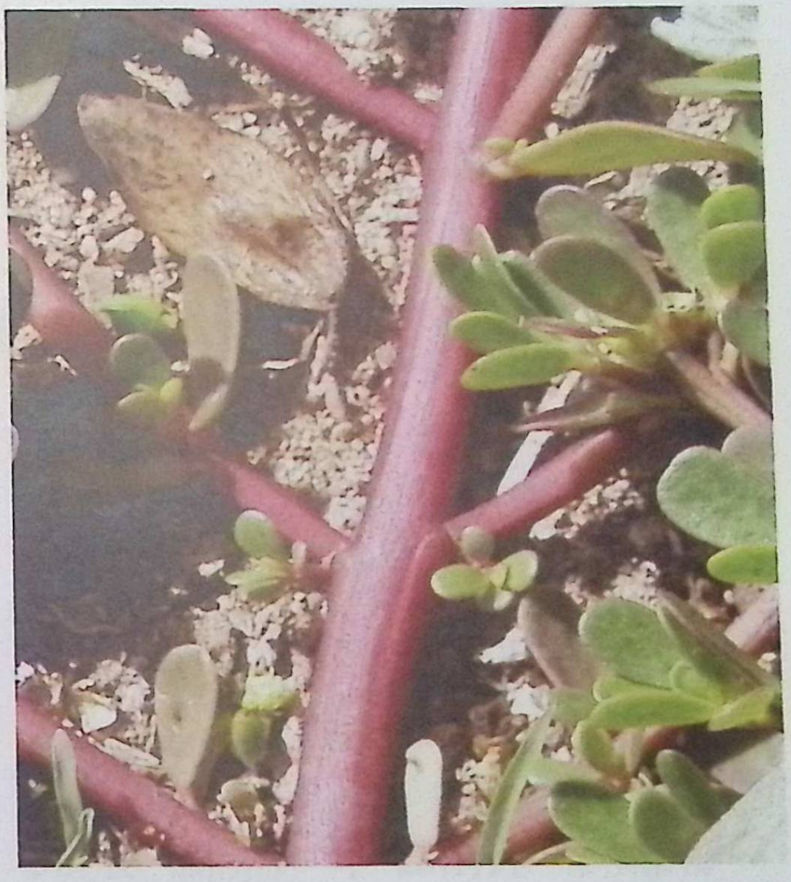

वर्णन :- इसके मोटे पत्ते, औषध और आहार के रूप में उपयोग होते हैं। दुनिया में इसकी 580 प्रजातियां हैं। मध्य एशिया में 12 और तुर्कमेनिस्तान में एक है। यह सेपरेट डिमांड कहलाता है। इसकी मातृभूमि उत्तर भारत है।

पोर्तुलाका ओलेराचा पोर्तुलाकासे कुल का है। यह 10-15 से०मी० लंबी है और एक वर्षीय पौधा है। यह जमीन पर पैदा होता है और काण्ड फैलता है। काण्ड का शीर्ष भाग अनेक शाखायुक्त होता है। पत्ते छोटे हैं और उल्लू के आकार का है। शाखाओं के अन्त में अनेक फूल रहते हैं।

फूल पीले और छोटे और धारा पर काले धब्बे रहते हैं। पुष्प गुच्छ के मिलने के स्थान पर ढाल की आकृति में मिले हुए रहते हैं। फूल का परिमाण 3 से०मी० है। इसमें 5 पत्र रहते हैं। ऊपर से देखने से बीच में छेद दिखता है। फूल के छेद के बीच उड़नशील तैल रहता है जो हलका राल गंध युक्त होता है। पत्ते वृन्त पर क्रम में रहते हैं और वे 3 से०मी० लंबे और 1.5 से०मी० चौड़े होते हैं। पत्ते की सतह पर अनेक ग्रन्थियां रहती हैं।

फल एक अंडाकार कोश है जिसमें अनेक धूसर वर्ण बीज रहते हैं। फल पकने पर बीज नीचे गिरते हैं।

जैविक लक्षण :- यह पौधा समुद्र तल से 600-1200 मीटर की ऊँचाई पर पैदा होता है। पौधे के

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

पहले अंकुर अप्रैल या उसके बाद होते हैं। यह मई अन्त से नवम्बर तक फूल और फल देता है। बीज छोटा है और 1000 बीजों का वजन 0.2 ग्राम होता है। कोई न कोई 10,000 बीज उत्पन्न करता है। यह +22 से 35 सेल्यसस तापमान पर पैदा होता है। ग्रीष्म काल के पौधे 20-30 दिन में फूल देते हैं और बीज 30-40 दिन में पकते हैं। इसमें पौधे की बीजों से पुनरुत्पत्ति होता है। अपने जीवन काल में 3-4 बार बीज देता है। बीज जमीन पर या 1.5 (से०मी०) गहराई में पैदा होते हैं। पानी से फैलते हैं। पोर्तुलाका ओलेराचा गरम मौसम में अच्छा पैदा होता है और ठंडे में अच्छा नहीं, अंकुर और तरुण पौधे बहुत धीरे पैदा होते हैं और पहले सप्ताह में अधिक संख्या में मर भी जाते हैं।

विस्तार :- पोर्तुलाका ओलेराचा तुर्कमेनिस्तान में विस्तार से फैला हुआ क्षुपीय पौधा है। इस तरह का पौधा हमारे देश में कुरंदग, दनिएटा, सोनदग पर्वत के क्षेत्र में, बोलशोयी, बालखन, पटपा में, दक्षिण-पश्चिमी कोपेदग पर्वत कोपेदग पर्वतों के मध्य भाग, दुशकेरेकदग, मेरजेवोलिन, असिलमा, बबजव, अर्चबिल, गिलगिलाव, गुर्बलीसुर, गरमलची, हिज़्, कोपदग पर्वतों के पूर्वी भाग, गुरीहोवदन, चिर्लक में, कोयतेनदग पर्वतों पर उपलब्ध है।

प्राकृतिक उपलब्धि :- पोर्तुलाका ओलेराचा तुर्कमेनिस्तान के दुर्लभ पौधों में नहीं है। औषधीय कार्य के लिए पर्याप्त भंडार है और लोगों से कृषीकरण भी कराया जाता है। उचित अवसर पर हम साल भर में लगभग 10-15 टन संग्रह कर सकते हैं। यह लोगों द्वारा उगाया भी जाता है। कृत्रिम रूप से उगने में यह 2 साल में फूल देता है। इस पौधे का उत्पाद प्रति हैक्टर 0.1 से 1.5 सी. है।

औषधीय कच्चा माल :- औषधीय कार्यों के लिए पत्र एवं बीज उपयोगी है। फूल आने के पहले पत्रों का संग्रह होता है और बीज के पकने के बाद इकट्ठा किये जाते हैं। कच्चा माल सामान्य रूप से छाया में सुखाया जाता है। पत्ते कपड़े की बोरियों में और बीज कागज़ की पेटियों में बान्धे जाते हैं। रखने का समय पत्तों के लिए 1-2 साल और बीजों के लिए 2-3 साल है।

रासायनिक संघटन :- इसमें कार्बन (ग्लुकोस, फ्रक्टोस, सकरोस) आल्बुमेन, कणीय, धातु खनिज लवण, पोटाशियम, कैल्शियम, मैग्नीशियम, नैट्रियम, आर्गानिक अम्ल, ग्लाईकोसाईड एल्कोलाईड्स, विटामिन ए, ई, पीपी और लैविट्रिन फ्लैवोनोईड्स उपलब्ध है। पत्रों में फेनोल कार्बनिक अम्ल है। पौधों में लगभग 0.5 प्रतिशत रंजक द्रव्य, 0.1 प्रतिशत ईथयर तैल, 13 प्रतिशत ठंडा पदार्थ, 55 मि०ग्रा० प्रतिशत कैरोटीन और कुछ निकोटिनिक द्रव्य उपलब्ध हैं।

प्रयोग :- पोर्तुलाका ओलेराचा एक प्राचीन पौधा है जो रोगों के उपचार में प्रयोग होता है। वैद्यों द्वारा अनुमोदित किया गया यह कहते हुए कि आटे के बिना रोटी नहीं पका सकते हैं। इसलिए पोर्तुलाका ओलेराचा के बिना रोगी का उपचार नहीं हो सकता है। वे मानते है कि पोर्तुलाका ओलेराचा 99रोगों के उपचार में प्रयुक्त होता है।

हजारों सालों से यह पौधा आहार और औषध कार्यों के लिए प्रयोग होता रहा है, व्रणोपचार में, बाकी औषधीय पदार्थ आमाशय उपचार के लिए सलाह दी गयी है। मध्य पूर्वी देश इस पौधे को विविध सलाद में जोड़ते हैं। यह विविध पकवानों में प्रयोग होता है (सूप और कैबेज सूप)

अबू अली इब्न सीना, दुनिया के प्रसिद्ध वैज्ञानिक ने पहले इस पौधे की खोज की और औषधीय कार्यों के लिए इस पौधे को प्रयोग किया। उन्होंने इसे दर्द निवारण के लिए, रक्तस्राव रोकने, पित्त का बल बढ़ाने, मूत्र मार्ग प्रक्षालन करने में प्रयोग किया है। पोर्तुलाका ओलेराचा के पत्तों का पानक रक्तस्राव रोकने, व्रण रोपण के लिए उपयोगी है। लोकचिकित्सा में यह यकृत, वृक्क और मूत्राशय के उपचार में अधिक उपयोगी है। हृदयोत्तेजक के लिए, धमनी रक्तचाप बढ़ाने और मधुमेह के लिए यह प्रयोग होता है।

वैज्ञानिक चिकित्सा में पोर्तुलाका ओलेराचा से बने पदार्थ व्रणों के लिए प्रयोग होता है और इमनैन, नोवाइमनैन, अबसबसेसले, श्लेष्मा, कर्कटार्बुद, कर्णशोथ में उपयोगी है। साथ ही यह पदार्थ पित्त, यकृत् और आमाशय के रोगों के उपचार में अधिक प्रयोग होता है।

तुर्कमेन लोक चिकित्सा में पौधे के ऊपरी भाग अर्बुद और कील (मस्सा) को रोकने के लिए प्रयोग होता है। आभ्यन्तर अर्बुद के लिए बान्धा जाता है। बीजों से बने फाण्ट मूत्रल और अतिसार और ज्वर रोकने में प्रयोग होता है। ताजे पत्ते दंश में प्रयोग के लिए और जहां कीड़ा काटा है वहां लगाने की सलाह दी जाती है। यह भोजन में भी प्रयोग होता है।

पोर्तुलाका ओलेराचा से छोटे पकोडे : इसके नये पत्ते प्याज़ बुल्गेरियन मरिच के साथ मिलाकर, बत्ती बनाकर उबालें। तैयार खाने में खटठी, क्रीम या दही मिलाने पर बहुत अच्छा लगता है।

पोर्तुलाका ओलेराचा के केक :- इसकी तैयारी पकोड़े जैसे ही है। परन्तु इस में 1-2 अंडे आटे के साथ मिलाना जरूरी है। तैयार किये गये गूंदी को थोडे समय छोड़ दें और बत्ती बना लें। कढ़ायी में तैल डालकर, मंद आंच पर पकाएं। पकाते समय कढाई पर ढक्कन नहीं रहे तो पकवान नरम और स्वादिष्ट होता है। अब केक तैयार है,

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

वह सुज़्म और चल (राष्ट्रीय पेय) के साथ स्वादिष्ट होता है। यह मनुष्य शरीर के लिए बहुत उपयोगी है।

कल्पना एवं निर्माण :- एक चम्मच (5 ग्राम) बीज 200 मि०ली० पानी में मंदाग्नि पर 5-10 मिनट तक उबालें। तैयार कषाय कपड़ छान कर लें और दिन में 3 बार भोजन से पहले सेवन करें। जिससे तापमान, आमाशय विकार कम होता है और अतिसार रुकता है।

2 बडे चम्मच चूर्ण 200 मि०ली० पानी में 10 मिनट मंदाग्नि पर उबालें। तैयार फांट को छानकर, 3 बडे चम्मच (45 ग्राम) दिन में 3 बार सेवन करें। यह मूत्रल है और इसे अर्बुद रोकने में प्रयोग करते हैं।

ओलिव तैल में 30 ग्राम ताजा फूल एक बन्द थैली में 2-3 सप्ताह रखें। नियमित रूप से हिलाते रहें। तैयार पदार्थ कपड़ा द्वारा छान लें और दिन में 3 बार लगा लें।

कूटा हुआ 45 ग्राम पोर्तुलाका ओलेराचा 200 मि०ली० उबले पानी मिलाकर उबालें और कई घंटे रखें। कपड़े से छानकर दिन में 3 बार सेवन करें।

30 ग्राम पोर्तुलाका ओलेराचा के क्षुप 100 ग्राम सुरा में डालकर, एक कांच पात्र में 7 दिन रखें। बीच-बीच में हिलाते रहें। तैयार मिश्रण को कपड़े से छानकर प्रतिदिन 30-40 बूंद, 100 मि०ली० रस (पानी) में मिलाकर दिन में 3 बार सेवन करें।

100 ग्राम पोर्तुलाका ओलेराचा के ताजा क्षुप 250 मि०ली० मदिरा के साथ मिलाकर 3 दिन रखें। फिर मंद ऑच पर भाप लें। तेल को छानकर अभिघात पर लगा लें।

यह औषध आमाशय व्रणों में और अनेक अन्य रोगों में उपयोगी है। एक चम्मच तेल दिन में 3 बार भोजन से पहले सेवन करें।

15 ग्राम अच्छी तरह सूखे घास 400 मि०ली० उबले पानी में मिलायें। छानकर दिन में 3 बार सेवन करें। यह बच्चों में शय्या मूत्र में उपयोगी है।

प्रिमुला फेत्शेंकोई
PRIMULA FEDTSHENKOI

वर्णन :- इस महत्वपूर्ण एवं मनोहर क्षुप की 500 प्रजातियां पूरे दुनिया में और लगभग 80 प्रजातियाँ मध्य एशिया के देशों में उपलब्ध हैं। परन्तु तुर्कमेनिस्तान में केवल एक प्रजाति मिलती है।

यह तुर्कमेनिस्तान में फूलने वाल पहला पौधा है। यह अद्‌भुत, उपचारात्मक एवं सुन्दर है, यह औषध रूप में प्रयोग होता है और खुशबूदार है। यह पहला पौधा है, जो मार्च में प्रकट होता है। इसका वैज्ञानिक नाम भी इसे अनुमोदित करता है। यह लैटिन में प्राईमस कहलाता है, इसका अर्थ है कि 'पहला'। तुर्कमेनिस्तान में यह उत्साह और भाग्य का सूचक है।

प्रिमुला फेत्शेंकोई प्रिमुलासी कुल का है। यह एक बहुवार्षिक पौधा है। यह 15-30 से०मी० ऊँचा होता है। जड़ के पास अनेक अंडाकार पत्र रहते हैं। जड से शीर्ष तक बढ़ता हुआ एक रस्सी एक फूल को रखता है। शीर्ष पर अनेक हल्के पीत पुष्प रहते हैं। यह मार्च-अप्रैल में फूल और अप्रैल-जून में फल देता है।

दुनिया के लोगों में अनेक प्राचीन कथाएं हैं, जर्मन के कुछ प्रान्तों में यह मानते हैं कि अगर कोई लड़की इसका पहला फूल देखती है, उस लड़की की शादी इसी साल में होगी।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

प्राचीन स्कैंडिनेवियन इसको द स्प्रिंग की कहते थे। वे इसे अनेक रोगों का औषध मानते थे। स्विट्जरलैंड में इसे मातृभूमि के लिये सुख और प्यार का तावीज मानते हैं।

जैविक लक्षण :- यह समुद्र तल से 800-1500 मीटर ऊँचायी पर पैदा होता है, यह पथरीली एवं कंकर वाली भूमि में पैदा होता है।

यह बधिज और कोयतेनदग राष्ट्रीय वनों में पैदा होता है, यह सरकार द्वारा सुरक्षित है।

औषधीय कच्चा माल :- इसके जड़, पत्ते, फूल और पुष्पध्वज सभी औषध रूप में उपयोग होते हैं। फूल और पत्ते पूरा खिलने के बाद इकट्ठा करते हैं। यह विशेष उपकरण द्वारा खुली हवा में 100-120 डिग्री तापमान पर सुखाया जाता है। ऐसा करने से इसमें 80 प्रतिशत विटामिन सुरक्षित रहते हैं।

इसकी जड़ और पुष्पध्वज को वसन्त के पहले भाग में या शरद् ऋतु में ग्रहण करना चाहिए। उन्हें साफ करके, धोके और धूप में या विशेष उपकरण द्वारा सुखाना चाहिए। पुष्प दण्डों को कागज या कपडे के बोरियों में रखना होता है। रखने का समय 2-4 साल है। इसके पत्ते और फूल कांच पात्र या कागज की पेटियों में रखना चाहिए। रखने का समय 1-2 साल है।

रासायनिक संघटन :- इसकी जड़ में सपोनिनें, उत्पत् तैल, प्राईमुलवेरीन, प्राईनवेरीन ग्लाईकोसाईड उपस्थित हैं। इसके पत्रों में विटामिन सी भरपूर है और सूखे पत्रों में 5-9 प्रतिशत कैरोटिन और विटामिन ई उपस्थित हैं।

प्रयोग :- अति प्राचीन काल से यह औषध रूप में प्रयोग किया जा रहा है। प्राचीन ग्रीक लोग इसके जड एवं पत्रों को कफछेदन के रूप में और इसके सूखे फूलों का फांट नाडी बल्य के लिए, इसके पत्ते भूख बढ़ाने के प्रयोग किये थे। इसकी जड़ खुशबू के लिए प्रयोग होता था।

पूर्वी उष्ण देशों में इस पौधे के ताजा फूल वायु पूरित जल तैयार करने के लिए मद्य के साथ मिलाते हैं। इसको ग्रीष्मकाल में प्यास को मिटाने के लिए प्रयोग करते हैं।

इसके पत्ते अच्छे हैं और औषध में उपयोगी हैं। वसन्त में जब आदमी को विटामिनों की आवश्यकता होती है तब वह पहले प्रिमुला फेत्शेंकोई का प्रयोग करता है, क्योंकि इस पौधे की पत्तियां विटामिनों से भरपूर होती है।

लोक चिकित्सा में फूलों से बने औषध का निद्रानाश में प्रयोग होता है। यह औषध मस्तिष्कीय पीडन, मलबंध और शिरःशूल में भी युक्त होती है। जड और पुष्पध्वज से बने औषध का प्रतिश्याय, कास में प्रयोग होता है। पत्र और पुष्पों से बने औषध का आमाशयिक वायुपूरण (आध्मान), मलबंध, वृक्कीय असफलता/कार्यहीनता में प्रयोग होता है। इसका आमवात, पक्षवात में, केश बढ़ाने के लिए भी प्रयोग होता है। यह पुरुष में शक्ति एवं कार्य क्षमता बढ़ाने में भी सहायता करता है।

कल्पना एवं प्रयोग :- एक बड़ा चम्मच (15 ग्राम) कूटा हुआ जड़ और पुष्पध्वज एक गिलास (200 मि०ली०) उबले गरम पानी में मिलाएं और 10 मिनट रख लें। छानकर, थोड़ा चीनी मिलाएं। एक बड़ा चम्मच दिन में 5 बार भोजन से पहले सेवन करें।

उतना ही मात्रा में पत्ते और फूल एक गिलास पानी में मिलाएं, दो घंटे रख लें, छानकर 1-2 बड़े चम्मच दिन में 4-5 बार प्रयोग करें।

एक चम्मच (5 ग्राम) कूटा हुआ जड़ एक गिलास पानी में डालकर एक तामचीनी पात्र में 10 मिनट उबालकर छान लें। एक बड़ा चम्मच दिन में 3-4 बार लें।

एक बड़ा चम्मच अच्छी तरह सूखे फूल 100 मि०ली० औषधीय सुरा में मिलाएं और बन्द कांच पात्र में 10-15 दिन रखें, बीच-बीच में हिलाएं, छानकर प्रातः सांय 10 से 15 बूंद सेवन करें। यह औषध शान्ति प्रदान करता है और उत्साह बढ़ाता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

प्रूनेल्ला वुल्गारिस
PRUNELLA VULGARIS

वर्णन :- यह पौधा पूरे विश्व में 15 प्रकार की विविध प्रजातियों वाला है मध्य एशिया के देशों में 6 प्रजातियों तथा तुर्कमेनिस्तान में केवल 1 प्रजाति का प्रतिनिधित्व करता है।

पुदीना कुल के इस बहुवर्षिय लम्बायमान पौधे का सामान्य नाम सेल्फ हील है। यह लगभग 30 से०मी० (1 फुट) की ऊँचाई तक उगता है। सेल्फ हील, जो हील-ओल अथवा हार्टसीझ के नाम से भी जाना जाता है, युरेशिया का वासी है, लेकिर कृतृण के रूप में पूरे समशीतोष्ण प्रदेश में स्वाभाविक रूप से फैला हुआ है। पौधे को ऐसा नाम इसलिये दिया गया है कि एक पुरानी मान्यता के अनुसार इसमें औषधीय गुण है। छोटे, बैंगनी अथवा नील पुष्प घने बन्ध गुच्छे में उगते हैं। तुर्कमेनिस्तान में यह सामान्य रूप से कृषिभूमि, रास्ते के अगल-बगल में तथा वन्य प्रदेश के किनारों पर उगता है।

जैविक लक्षण :- हमारे देश में यह क्षुपीय पौधा पहाड़ों के मध्य तथा ऊर्ध्व प्रांत में मिलता है। यह विशेषत: घाटी तथा गीले स्थानों में उगता है। इस पौधे में जून-अगस्त में पुष्प आते हैं तथा जुलाई एवं सितम्बर में फल लगते हैं।

विस्तार :- प्रूनेल्ला वुल्गारिस कोपेतदग पर्वत के दक्षिण-पश्चिमी हिस्से में, सुंबार तथा दायना के ऊँचे क्षेत्रों में तथा आगामेयेलन घाटी (बाहारलय जिला) में मिलता है।

प्राकृतिक उपलब्धि :- हमारे देश में इसको दुर्लभ माना गया है। औषधीय उद्देश्यार्थ इसका भण्डार पर्याप्त नहीं है। इसकी खेती करने की सलाह दी जाती है। सुंत-हाझारदग तथा कोपेदग राष्ट्रीय उद्यानों में इसको संरक्षित किया गया है।

औषधीय कच्चा माल :- प्रूनेल्ला वुल्गारिस के पुष्प, तृण तथा सरकंडा मूल को कच्चे रूप में प्रयुक्त किया जाता है। जब पौधे के पुष्प खिलते हैं तब पुष्प तथा तृण को कैंची से काटा जाता है। इनको हवादार स्थानों में सुखाया जाता है। इस पौधे के सरकंडा मूल जिनका प्रयोग औषध बनाने के लिये होने वाला है, को शुरूआती वसंत अथवा पतझड़ में खोदकर निकाला जाता है तथा सामान्य पद्धति से इसको सुखाया तथा तैयार किया जाता है। तैयार औषध को कागज़ अथवा कपड़ों के थैलों में संग्रहित किया जाता है। इसके तृण को 1-2 साल तक तथा सरकंडा मूल को 3-4 साल तक संचय कर सकते हैं।

रासायनिक संघटन :- प्रूनेल्ला वुल्गारिस के रासायनिक संघटन का अच्छी तरह अध्ययन किया गया है। इसमें कार्बोहाइड्रेट्स जैसे सकेरोझ, गेलेक्टोझ, ग्लुकोज, फ्रुक्टोज, एवं रेफ्रीनोज, उत्पत् तेल (0.5 प्रतिशत), सेपोनीन्स (लगभग 7 प्रतिशत), कोमेरीन्स (0.28-0.4 प्रतिशत), फ्लेवोनोइड्स (0.14-2.4 प्रतिशत), विटामिन सी, रुटीन तथा केरोटीन होते हैं। इसके बीज में 3-15 प्रतिशत तेल रहते हैं।

प्रयोग :- किटाणु के लिये इसमें से विविध औषध तैयार किये जाते हैं। औषध सुरा सार, फांट तथा नुस्खे जो पत्र, कांड तथा सरकंडा मूल से तैयार किये जाते हैं, इसका प्रयोग चीन की लोक चिकित्सा में किया जाता है, तथा तुर्कमेन लोग इनका प्रयोग कफनि:सारक, शूलप्रशमन, व्रणरोपण, उच्च तापमान, उच्च रक्तचाप, मदात्यय, रक्तस्तंभन, जठराग्नि प्रदीपन, प्रतिश्याय तथा संक्रमण, संधिवात, गले तथा फुफ्फुस का राजयक्ष्मा, स्त्रीरोग, अतिसार, भ्रम, अपस्मार, स्मृतिमांद्य, मधुमेह तथा चर्म, वृक्क तथा हृदय के लिये नुकसान नहीं करने वाली अर्बुदों में करते हैं।

कल्पना तथा प्रयोग :- शुष्क तृण एक चम्मच (5 ग्राम) पर 1 गिलास (200 मि०ली०) उबला हुआ पानी मिलाकर 2 घण्टे के लिये रखें। तैयार प्रवाही को कपड़े से छान लें। एक बड़ा चम्मच (15 ग्राम) भोजन से पूर्व लें।

एक तामचीनी पात्र में 3 बड़े चम्मच (45 ग्राम) शुष्क पौधे में 1-1.5 गिलास (200-350 मि०ली) पानी मिलाकर धीमी आंच पर 4 घण्टे के लिये उबालें। तैयार फांट को कपड़े से छानकर चर्मव्याधियों के लिये प्रयुक्त करें। अगर इस फांट से केश प्रक्षालन किया जाय तो केश की वृद्धि होती है तथा केश का बल बढ़ता है।

प्रूनेल्ला वुल्गारिस के एक चम्मच सरकंडा मूल और एक गिलास (200-350 मि०ली०) पानी मिलाकर धीमी आंच पर 10-15 मिनट के लिये उबालें। तैयार फांट को कपड़े से छानकर एक बड़ा चम्मच (15 ग्राम) दिन में 3 बार लें। यह नुस्खा एक महिने के लिये प्रयुक्त करना चाहिए। एक महिने के बाद एक सप्ताह अथवा 10 दिन के लिये प्रयोग बंद करके बाद में फिर से चालू करना चाहिये। दूसरी बार चिकित्सा 3 महिने के लिये करनी चाहिये।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

रानुन्कुलुस सेवेर्ज़ोविइ
RANUNCULUS SEWERZOWII

वर्णन :- विश्व में इसकी 400 प्रजातियां हैं, जिनमें मध्य एशिया की 200 तथा तुर्कमेनिस्तान की 16 प्रजातियां शामिल हैं। इस पौधे को असंख्य पीत पुष्प लगते हैं। यह पौधा रानुन्कुलुस सेवेर्ज़ोविइ कुल का है। यह 20-35 से॰मी॰ ऊँचा होता है तथा इस पौधे के मूल 60-130 से॰मी॰ तक फैलते हैं।

यह एकवर्षिय पौधा है। इसके नये मूल वसंत में उगते हैं। मूल 25-40 से॰मी॰ व्यास का होता है। इस पौधे का मूल नलिकाकार होता है तथा मूल के अंत ऊपर की ओर मुड़ते हैं। मूल के समीप गुच्छे जैसे पत्र 5-8 से॰मी॰ लम्बे होते हैं। बड़े पुष्प का वर्ण पीत होता है। पुष्प के तीन बाह्य दल होते हैं। रानुन्कुलुस सेवेर्ज़ोविइ को मार्च के मध्य से लेकर अप्रैल के अंत तक पुष्प लगते हैं, तत्पश्चात् पौधा सूख जाता है। कंद तृण के नीचे होते हैं।

जैविक लक्षण :- पौधा समुद्रतल से 300-1300 मीटर की ऊँचाई पर उगता है। पौधे का प्रजनन सभी हिस्सों के द्वारा होता है। पौधे का प्रजनन बीज द्वारा मुश्किल से होता है।

विस्तार :- हमारे देश में यह पौधा तेजेन, मुरगाब, पश्चिम-पूर्वीय कोपेतदग, मध्य कोपतदग, गोकदेरे, दुशाकेरेकदाग, आर्चाबील, असयलमा, दागयश, दाशतोय, दामला, होवदान, बाध्यज, कोपेलेदे, आकारचेशमे, पयन्नानचेशमे तथा कोयतेनदग में उगता है। यह पौधा पर्वतों की तराई में, नदी के समीप, घाटियों में तथा गीले स्थानों में उगता है।

प्राकृतिक उपलब्धि :- रानुन्कुलुस सेवेर्ज़ोविइ दुर्लभ पौधा नहीं है। औषधीय कच्चे माल के रूप में इसके भण्डार पर्याप्त है। केवल बाध्यझ में प्रतिवर्ष लगभग 200-250 टन प्रति हेक्टर इकटठ्ा करना शक्य है।

औषधीय कच्चा माल :- इसके क्षुप औषधीय कच्चा माल है जिसके पुष्प लगने के समय इकट्ठा किया जाता है। दोपहर 14.00 से 17.00 बजे तक इकट्ठा करना अच्छा है। पौधे में औषधीय गुण केवल इस समय ही होता है। औषधीय कच्चे माल को कपड़े पर अथवा केतेनी (वास) पर सुखाना तथा बीच-बीच में पलटाना चाहिए। छांवयुक्त स्थानों पर सुखाना अच्छा है। सुखाये हुए माल में 15-15 प्रतिशत तैयार कच्चा माल होता है। इसको कागज़ अथवा कपड़े के थैलों में सुरक्षित किया जाता है। संचयन समय की अवधि 1-2 साल है।

रासायनिक संघटन :- अभी तक इस पौधे के रासायनिक संघटन का अध्ययन नहीं किया गया है। लेकिन पौधे के संघटन के अनुसार मूल में स्टार्च होता है। इस पौधे का क्षुप विटामिन सी से समृद्ध है। पौधे में सेपोनीन, कैल्शियम, सोडियम मग्नीशियम, एल्यूमिनियम, आयरन, सिलिकोन तथा अन्य सूक्ष्म तत्व होते हैं।

प्रयोग :- रानुन्कुलुस सेवेर्ज़ोविइ ने इस औषधीय कच्चे माल का प्रयोग दूसरी शताब्दी में किया था। तुर्कमेनिस्तान में यह पौधा मद्य तथा रंजक पदार्थ देने वाले पौधों के समुह का है। तुर्कमेन लोक चिकित्सा में यह पौधा शिर:शूल, फुफ्फुस के लिए अपस्मार तथा शोथ तथा पौरुष ग्रन्थि के शोथ के लिए प्रयुक्त होता है। पौधा राजयक्ष्मा में मदद रूप है तथा औषधीय उद्देश्यार्थ जीवाणुनाशक के रूप में प्रयुक्त होता है।

बाध्यज, सेरहेताबात तथा बाहारलय के वेलायतों में पौधे से औषधीय प्रयोगार्थ औषधीय सुरा सार बनाया जाता है तथा पौधे का कच्चा माल उत्पाद बनाने के लिये बहुत उपयोगी है क्योंकि इस पौधे का प्रयोग ऊनी धागों को पीला रंगने के लिये होता है।

कल्पना तथा प्रयोग :- रानुन्कुलुस सेवेर्ज़ोविइ का पौधा औषधीय उद्देश्यार्थ प्रयुक्त होता है। इस तृण का कषाय खुले व्रण की चिकित्सा के लिये एक जीवाणुनाशक औषध के रूप में प्रयुक्त होता है। दो बड़े चम्मच (30 ग्राम) कुचले हुए मूल को 100 ग्राम तेल में मिलाकर अंधेरे स्थान में 10-15 दिन के लिये रखें तथा बाह्य प्रयोगार्थ प्रयुक्त करें।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

रेउम तुर्केस्तानिकुम
RHEUM TURKESTANICUM

वर्णन :- पूरे विश्व में इसकी 40 प्रजातियां है जिनमें मध्य एशियाई देशों में 22 तथा तुर्कमेनिस्तान में 4 प्रजातियाँ मिलती हैं।

रेउम तुर्केस्तानिकुम को पाडू प्लान्ट अथवा पोलीगोनेसीअस जीनस के रुबार्ब नाम से भी जाना जाता है। हमारे देश में इसका पत्र सबसे बड़ा होता है। पाईप्लान्ट को छोटे श्वेत पुष्प तथा बड़े (2.5) फल होते हैं। इसको पुष्प तथा फल अप्रैल से जून तक आते हैं।

जैविक लक्षण :- रेउम तुर्केस्तानिकुम बीज से अंकुरित होता है तथा इसका मूल बड़ा, मांसल होता है। इस मूल का भार 10-15 किलोग्राम तक हो सकता है। पाईप्लान्ट उष्ण-सहिष्णु पौधा है इसलिये वह शुष्क तथा रेतीली भूमि पर तथा पर्वतों की तराई में भी उगता है।

विस्तार :- रेउम तुर्केस्तानिकुम बोलशोई बालखान में, दक्षिण-पश्चिमी कोपेतदग, मध्य कोपेतदग पूर्वीय कोपेतदग तथा पश्चिमी कोपेतदग में भी मिलता है।

प्राकृतिक उपलब्धि :- हमारे देश में रेउम तुर्केस्तानिकुम प्रचुर मात्रा में मिलता है। औषधीय उद्देश्यार्थ भण्डार पर्याप्त है। प्रतिवर्ष 5-6 टन पाईप्लान्ट इकट्ठा किया जाता है। बाहारलय प्रांत में 10-15 टन इकट्ठा किया जाना पंजीकृत है।

औषधीय कच्चा माल :- रेउम तुर्केस्तानिकुम के मूल, पत्र तथा कांड औषध के रूप में प्रयुक्त होते हैं। मूल को अगस्त-सितम्बर में इकट्ठे करते हैं। रेउम तुर्केस्तानिकुम के मूल को 1-3 से०मी० के लम्बे टुकड़ों में काटकर रस्सी में इक्ट्ठा कर सुखायें। इसका तिक्त रस है। औषध तैयार करते समय मूल की त्वक् निकाली जाती है। यह औषध तीन साल तक लाभप्रद रहती है तथा उसको अंधेरे स्थान पर संचित किया जाना चाहिये।

रासायनिक संघटन :- पाईप्लान्ट में टेनीन, खनिज, स्टार्च, पेकटिन, विटामिन सी तथा एकसीनीक एसीड होते हैं। इसके मूल में एन्थ्राग्लायकोसाइड्स, फ्लैवोन्स, रीओक्रीसीन, टोनोग्लायकोसाइड तथा गोंदवत् रंग द्रव्य होते हैं। पाईप्लान्ट के पुष्प तथा पत्र में रुटीन तथा ओर्गेनीक एसीड्स पाये गये हैं। रेउम तुर्केस्तानिकुम में संचित रंजक कण के 5.73-10.63 प्रतिशत एन्थ्राग्लायकोसाइड्स होते है तथा 1.40-2.80 प्रतिशत फ्लेवोन्स होते हैं। यह तथ्य साबित करता है कि रेउम तुर्केस्तानिकुम चिकित्सा शास्त्र में बहुत उपयोगी है। रेउम तुर्केस्तानिकुम में एस्कोर्बिक एसिड भी होता है इसलिये घरों में भी इसका विस्तृत प्रयोग होता है।

प्रयोग :- बहुत पहले ही पता चला था कि रेउम तुर्केस्तानिकुम लाभप्रद है। प्राचीन ग्रीक वैज्ञानिक हिपोक्रटीस ने कहा है यह चिकित्सकीय पौधा है। ग्रीक वैज्ञानिक थीओफ्रेस्ट (ई०पू० 372-287) यह दर्शाया था कि पाईप्लान्ट व्रण का रोपण करता है। पूर्व के सुप्रसिद्ध चिकित्सक अबु अली इब्न सीना ने अपनी पुस्तक कैनन आफ मेडिकल सायंस में लिखा है कि वीनेगर के साथ मिलाया हुआ पाईप्लान्ट त्वचा के मण्डलाकृति काष्ठ को दूर करता है तथा शूल का शमन करता है एवं श्वास की कष्टता को दूर करता है। यह राजयक्ष्मा को भी रोकता है तथा दृष्टि के विकारों को ठीक करता है। प्रसिद्ध चिकित्सक सेयीत इस्माइल गुर्गेन्ली (जुर्जानी) ने लिखा है कि रेउम तुर्केस्तानिकुम के पीसे हुए बीज का अगर शरीर पर लेप किया जाय तो यह चर्मरोग तथा खर्जु को ठीक करता है।

रेउम तुर्केस्तानिकुम पांच चिकित्सकीय पौधों की सूची में है लेकिन तुर्कमेनिस्तान में यह मधुर यष्टीमधु के बाद है। पाईप्लान्ट से निर्मित फांट चाय में वो पदार्थ है जो दौर्बल्यहर, शिथिलीकारक तथा उत्तेजक है। यह लक्षण इसको अधिकतम व्याधियों की चिकित्सा के लिये बहुत लोकप्रिय बनाता है। पूरे पूर्व में भी यह बहुत विस्तृत रूप में प्रयुक्त होता है क्योंकि यह अपने antasthenic गुण के लिये बहुत प्रसिद्ध है। इस पौधे में सक्सीनीक एसीड भी है, जो प्रधान जीवजनक उत्तेजक है।

वैज्ञानिक चिकित्सा शास्त्र में इस पौधे का प्रयोग रेचक औषध के रूप में होता है। साथ ही, पांडु तथा फुफ्फुस

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

की व्याधियों की चिकित्सा के लिये भी इसका प्रयोग होता है। पाईप्लान्ट के मुख्यतः 3-4 साल पुराने मूल का प्रयोग चिकित्सा शास्त्र में होता है क्योंकि यह निलयों को नुकसान नहीं पहुंचाता। इस पौधे से निर्मित घोल पीने पर वाइन का वर्ण पीला हो जाता है।

रेउम तुर्केस्तानिकुम से निर्मित घोल, चाय, सीरप, शर्बत, गुझियां बहुत लाभप्रद है।

रेउम तुर्केस्तानिकुम से बनी चाय तृषा शामक है। यह आपके शरीर को बल देता है, आपके निलयों एव आंत्र को उत्साहित तथा पुनः बलवान करता है। साथ ही यह वांति रोकता है तथा विषतत्व को बाहर निकालकर जठराग्नि को उद्दीपन करता है। पाईप्लान्ट का प्रयोग मदात्यय, खसरा, ज्वर, अतिसार तथा यकृत्शोथ को ठीक करने के लिये होता है।

पारम्परिक चिकित्सा में इसका विस्तृत प्रयोग मधुमेह की चिकित्सा में भी होता है। ताजे पत्र तथा कांड का प्रयोग भोजन, शर्बत, मुरब्बे तथा रूसी बियर बनाने के लिये होता है।

यह साबित हो चुका है कि रूबार्ब के उत्पाद में औषधीय गुणधर्म होते हैं।

पाईप्लान्ट मुरब्बा बनाने की विधि :- पत्र से कांड को दूर करें। पत्र को छोटे टुकड़ों में (1.5 से०मी० लम्बे) काटें। सिरप में 3-5 मिनट के लिये उबालें। कम्पोट को ज्यादा स्वादिष्ट बनाने के लिये वेनीलीन (vanilin) डालें। कम्पाट को ठंडा करके परोसें। घटक द्रव्य 300 ग्राम पाईप्लान्ट, 125 ग्राम चीनी, 1.5 गिलास पानी, वेनीलीन।

रूबार्ब मुरब्बा (jam) : एक तामचीनी पात्र में 1.5 किलोग्राम चीनी तथा 1 गिलास (200 मि०ली०) पानी मिलायें। कटा हुआ रूबार्ब मिलाकर 30-40 मिनट तक, जब तक चीनी घुल न जायें तब तक उबालें। जब उबलता है तब फेन को हटा दें।

संतरे का मुरब्बा :- रूबार्ब के पत्र को धोकर 1-1.5 से०मी० लम्बे टुकड़ों में काटें। चीनी मिलाकर 35-40 मिनट तक, जब तक चीनी घुल ना जायें तब तक उबालें।

संतरे के छिलके को नरम करने के लिये पानी में रखें। इनको पाईप्लान्ट के तने में मिलायें। प्रति एक किलोग्राम पाईप्लान्ट 1.2-1.3 किलोग्राम चीनी तथा 100 ग्राम सन्तरे आवश्यक हैं।

गुझिया कचौड़ी :- पाई को 0.8-1 से०मी० लम्बे टुकड़ों में काटें। तैयार किये हुए आटे को दो हिस्सों में बांटें। आटे की 3-4 से०मी० चपाती बेलें। एक चपाती पर तेल लगायें तथा दूसरी चपाती पर रूबार्ब के पत्ते रखें। इसके बाद तैल लगाई हुई चपाती दूसरी चपाती पर रखकर किनारे बंद कर दें। उसके बाद उष्ण स्थान पर रखें। पाई के ऊपर अण्डे का लेप लगाकर 25-30 मिनट के लिये गरमी से पकाएं।

स्ट्रोबेरी तथा पाईप्लान्ट पाई :- तने को धो लें। त्वक् को नही निकालें, 1.5-2 से०मी० के छोटे टुकड़े करें। कांच पात्र में रखकर उसमें स्ट्रोबेरी तथा गर्म सिरप डालें। तत्पश्चात् कीटाणु के नाश के लिये 8-10 मिनट के लिये ढक्कन बंद करें। बाद में पात्र को ठंडे स्थान पर रखें। पांच सौ ग्राम पाईप्लान्ट में सौ ग्राम स्ट्रोबेरी डालें। सिरप बनाने के लिये एक लीटर पानी में 300 ग्राम चीनी डालें।

क्वास :- रूबार्ब को 2-3 से०मी० लम्बे टुकड़े काटकर उबलते हुए पानी में डालकर 5-7 मिनट के लिये उबालें। द्रव को छान लें। उसके बाद उसमें शर्करा तथा ममीरा मिलाकर घोल को गर्म स्थान पर रखें। आठ-दस घण्टे में क्वास तैयार हो जायेगा। बोतल में भरकर ठंडा करें।

घटक द्रव्य :- पानी एक लीटर, पाईप्लान्ट 140-160 ग्राम, शर्करा 70-80 ग्राम, यीस्ट 1-1.5 ग्राम।

कल्पना तथा प्रयोग :- रूबार्ब के मूल 1.5-2 ग्राम को 200 मि०ली० पानी में धीमी आंच पर 10-15 मिनट के लिये उबालें। पाई प्लान्ट का छाना हुआ घोल 50 मि०ली० मात्रा में दिन में 3 बार भोजन पूर्व पीयें।

रूबार्ब के पत्र, एक बड़ा चम्मच (15 ग्राम) को 200 मि०ली० पानी में 45 मिनट के लिये उबालें। छानकर दिन में दो बार लें।

धोये हुए मूल (5 ग्राम) को 200 मि०ली० एल्कोहोल में 7-10 मिनट के लिये रखें। पाचनतंत्र की विकृतिओं को ठीक करने के लिये आधा चम्मच छाना हुआ घोल दिन में एक बार लें। अनिद्रा तथा नाडीतंत्र के विकार से ग्रस्त रुग्णों के लिये पाईप्लान्ट पत्र बहुत लाभप्रद है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

रूस कोरारिआ
RHUS CORARIA

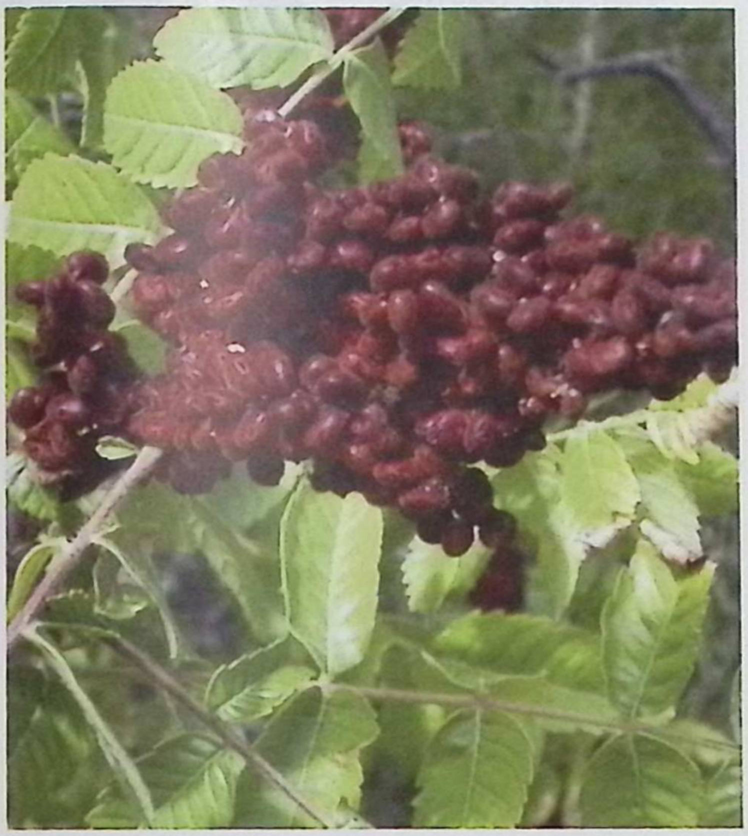

वर्णन :- इस औषधीय तथा शोभाप्रद पौधे की विश्व में तथा मध्य एशिया देशों में 250 प्रजातियाँ तथा तुर्कमेनिस्तान में एक प्रजाति मिलती है।

रूस कोरारिआ, रुस कुल का 1-5 मीटर ऊँचा पेड़ अथवा गुल्म है। पुराने पेड़ की त्वक् धूसर तथा मृदु रोम से आच्छादित होती है। एक साल पुरानी कांड की त्वक् भूरी-धूसर होती है। पत्र 15-18 से०मी० लम्बे, पक्षवत् विभाजित होते हैं। नौ से तेईस पत्र एक रेखा में स्थित होते हैं। ये लोमश, अण्डाकार तथा आरायुक्त किनारी वाले होते हैं। यह 3-5 लम्बे तथा 2-3 से०मी० चौड़े होते हैं। इस पेड़ के पुष्प नीलाभ श्वेत होते हैं। ये अलग होते हैं। पुराने पुष्प 20-25 से०मी० लम्बे तथा अलग पुष्प गुच्छों में स्थित होते हैं। हरे okra पत्र अण्डाकार होते हैं। पुष्प दीर्घवृत्ताभ तथा श्वेत होते हैं। इसका फल गोलाकार तथा वृक्काकार होता है। इसकी लम्बाई 0.5-0.6 से०मी० होती है। यह रक्ताभ-धूसर होता है।

जैविक लक्षण :- हमारे देश में रूस कोरारिआ समुद्र तल से 700-800 मीटर की ऊँचाई पर उगता है। इसको पथरीले कंकड अथवा मिट्टीयुक्त ढलानों पर उगना पसंद है। इसको सूर्यप्रकाश युक्त, शुष्क स्थान पसंद है। प्रतिवर्ष इसकी उपज समृद्ध होती है। प्रत्येक पुष्पशाखी 200-300 (500 तक) फल उत्पन्न करता है। इस पेड़ में लगभग 70-150 मातृ पुष्प शाखायें होती हैं, जिसके परिणाम स्वरूप एक पेड़ से 50,000 बीज की उपज होती है। इसका मूल संकुल सुविकसित होता है तथा मूल lobules उत्पन्न करते हैं। इसमें से एक पेड बनता है। पौधा मई-जून में (कभी-कभी दो बार) पुष्प देता है।

विस्तार :- यह पेड़ हमारे देश में दक्षिण-पश्चिमी कोपेतदग में, मागत्यमगुलय एत्राप, चेंदीर नदी के किनारे तथा गुयेन में, मध्य कोपेनदग में उपय घाटी तथा हयझ पहाड़ियां एवं खोराझचा में उगता है।

प्राकृतिक उपलब्धि :- रूस कोरारिआ दुर्लभ पौधों में से नहीं है। औषधीय उद्देश्यार्थ इसका भण्डार पर्याप्त है। इसकी खेती भी की जाती है।

औषधीय कच्चा माल :- इस पेड़ के पत्र औषधीय उत्पाद के रूप में काम करते हैं। इसको इकट्ठा करते समय इसकी शाखाओं को ना तोड़े। साथ-साथ में खराब पत्रों को इकट्ठा करना चाहिये। इनको छत के नीचे ताजी हवा में अथवा सामान्य रूप से सुखाना चाहिये। पौधे को टेनीन वाले पत्र बढ़ते समय कुछ बदलते हैं। इसलिये इनको वसंत, पतझड़ तथा गर्मी में तैयार किया जाता है। तैयार माल को कपड़े के थैलों में संचित किया जाता है। संचयन समय की अवधि 1-2 साल है।

रासायनिक संघटन :- पौधे के पत्र में 33 प्रतिशत टेनिन होते हैं। साथ ही इसमें पदार्थ ए, टेट्रासेकेराइड्स, गेलीक एसीड, इसके मीथाइल उत्पत् तत्व, मीरासीट्रीन, विटामिन सी, उत्पत् तैल तथा अन्य फ्लेवोन्स होते हैं। इसके फल में पर्याप्त मात्रा में एल्कलोइड् ऐसिड्स पाये गये हैं।

प्रयोग :- यूष के रूप में पेड के पत्र गर्भाशयगत रक्तस्राव तथा जीर्ण विसर्प के लिये उपयोगी है। इसके अतिरिक्त यह दग्धव्रण तथा पूयव्रण के लिये उपयोगी है।

राष्ट्रीय तथा वैज्ञानिक चिकित्सा में रूस कोरारिआपत्र के फांट तथा प्रवाही का प्रयोग अतिसार, मूत्राशय के शीतजन्य विकार, तथा आमाशय एवं आंत्र के अभिघात की चिकित्सा में होता है। रूस का बाम एल्कलोइड्स तथा भारी धातुओं की विषाक्तता में प्रयुक्त होता है। तरुण पत्रों से बनाया रस संधिवात, रक्तवाहिनियों की व्याधियां, पक्षाघात तथा पित्ताशय की असामान्यता में प्रयुक्त होता है।

कल्पना तथा प्रयोग :- रूस कोरारिआ के ताजे काटे हुए टुकड़े एक चम्मच को 1 गिलास (200 मि०ली०) पानी में मिलाकर धीमी आंच पर उबालें। तैयार क्वाथ को कपड़े से छानकर 1-2 चम्मच दिन में 3 बार पीयें।

पेड़ के अच्छी तरह सूखे हुए पत्र एक चम्मच (10 ग्राम) को एक गिलास (200 मि०ली०) एल्कोहोल में मिलाकर एक कांच की बोतल में रखकर, कसकर ढक्कन लगाकर अंधेरे स्थान में 10 दिन के लिये रखें। बीच-बीच में हिलाते रहें। तैयार वाईन को कपड़े से छानकर 10-15 बूंद प्रतिदिन 5 बार पीयें।

पौधे के कटे हुए पत्र दग्धव्रण के लिये उपयोगी है। यह पूय व्रण तथा हर्पीस के लिये भी उपयोगी है। अगर यह चाय के रूप में पीया जाये तो यह उच्च तापमान को ठीक करता है तथा तृषा को शांत करता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

रिचिनुस कोम्मूनिस
RICINUS COMMUNIS

वर्णन :- यह आश्चर्यजनक, औषधीय, बहुवार्षिक पौधा 1-3 से०मी० ऊँचा है। मध्य एशिया देशों में यह पौधा एकवर्षिय है क्योंकि कुदरती परिस्थितियों में पौधा पतझड़ में जम जाता है तथा मर जाता है।

उष्ण अथवा समशीतोष्ण आबोहवा में पौधा 8-10 से०मी० ऊँचा होता है, यह गुल्म अथवा वृक्ष होता है। पौधे की एक चौड़ी तथा मजबूत प्रकंद प्रणाली होती है। प्रधान मूल जमीन में खूब गहराई तक वृद्धि करती है। अनुपूरक मूल प्रधान मूल से अलग होता है। तना खोखला, नीला, बैंगनी तथा लाल होता है, 6-12 भागों में से प्रत्येक का गुच्छक के समूह में पूरा होता है। पत्र अनेक 15-30 से०मी० चौड़े तथा लम्बे विभाजित होते हैं। ये तने पर एकान्तर होते हैं। पुष्प एकलिंगी तथा समूह में होते हैं। गुच्छे के नीचे हिस्से में पुंपुष्प तथा ऊपर के हिस्से में स्त्रीपुष्प होते हैं।

जैविक लक्षण :- मध्य के पुष्प गुच्छे जून-जुलाई में तथा पार्श्व के पुष्प गुच्छे अगस्त में खिलते हैं। इसको सितम्बर-अक्तुबर में फल लगते हैं। पौधे को सूर्यप्रकाश तथा पानी की आवश्यकता होती है।

विस्तार :- इस पौधे का मूल निवास इथीओपीआ है। वर्तमान में, तेल उत्पादन के लिये उत्तरीय कोकेसस, मध्य एशिया तथा पश्चिमी युक्रेन में इस पौधे को पसंद किया जाता है। हमारे देश में यह पौधा सभी जिलों में शोभाप्रद पौधे के रूप में पसंद किया जाता है।

प्राकृतिक उपलब्धि :- हमारे देश में यह पौधा दुर्लभ नहीं है। औषधीय उत्पाद के लिये भण्डार पर्याप्त है। इसको विशिष्ट खेतों में इकट्ठा किया जाता है।

औषधीय कच्चा माल :- एरण्ड तेल के उत्पादन के लिये पौधे के बीज का प्रयोग होता है। पौधे के बीज विविध मलहम तथा औषधों के उत्पादन के लिये भी प्रयुक्त होते हैं।

रिचिनुस कोम्मूनिस को विशिष्ट संयंत्र द्वारा इकट्ठा किया जाता है। पत्रों को इकट्ठा करके सुखाया जाता हैं। पौधे की उपज 10-15 टन प्रति हेक्टर है। गीले स्थानों में उपज 20-25 टन प्रति हैक्टर है।

रासायनिक संघटन :- पौधे के बीज में 50-55 प्रतिशत एरण्ड तेल होता है। तेल में ट्राइग्लीसरीन (84-91 प्रतिशत) तथा रीसीनोलिक एसीड होते हैं। रीसीनस का तेल दूसरे तेलों से अलग होता है। यह जमता नहीं है।

एरण्ड तेल में अत्यल्प मात्रा में ओलीक, लीनोलीक, स्टीअरीक तथा पामीक एसीड्स भी होते हैं। पौधे के बीज के भ्रूणपोष में तेल 64-71 प्रतिशत होता है। सायद पौधे के बीज में रीसीन होने से विषैले हैं।

प्रयोग :- एरण्ड तेल का प्रयोग मृदु विरेचक औषध के रूप में होता है। विशेषत: यह बच्चों में प्रयुक्त होता है। एरण्ड तेल से चिकित्सा का प्रभाव 5-6 घण्टे के बाद दिखता है। तेल क्षोभक नहीं है इसलिये इसका प्रयोग पाचनतंत्र के शोथ तथा आध्मान के लिये ज्वरघ्न के रूप में होता है। प्रसूति तंत्र के व्यवहार में एरण्ड तेल का प्रयोग गर्भाशय के कार्य को उत्कृष्ट बनाने के लिये किया जाता है। पौधे के तेल का प्रयोग दग्धव्रण की चिकित्सा के लिये तथा त्वचा को मृदु करने के लिये होता है।

कल्पना तथा प्रयोग :- वयस्क में रेचक प्रभाव के लिए 15-30 ग्राम तथा बच्चों में 5-15 ग्राम मात्रा में एरण्ड तेल का प्रयोग होता है। प्रसव के दरम्यान शिथिलीकरण के लिये भी एरण्ड तेल का प्रयोग होता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

रोमेरिआ रेफ्राक्ता
ROEMERIA REFRACTA

वर्णन :- रोमेरिआ रेफ्राक्ता पापावरासे कुल का 10-60 से०मी० ऊँचा बहुत बार शाखायुक्त तथा कम झुका हुआ एकवर्षिय पौधा है। पत्र लम्बे तनों पर बड़े (तने के साथ 15 से०मी० लम्बे) होते हैं। पुष्प बड़े, चमकीले लाल तथा आधार के पास एक काले धब्बे वाले होते हैं। बाह्य दल गोलाकार व्यजनाकृति (1.5-5 से०मी० लम्बे) होते हैं। फल एक नलिकाकार कूटपटीकाकार फलकोश (3-10 से०मी० लम्बा) है जिसमें 2-6 एसिदोतुस कपाट और गहरे धूसर, वृक्काकार बीज होते हैं। यह अप्रैल-मई (पर्वतीय क्षेत्रों में जून-जुलाई) में पुष्प देता है तथा मई-जुलाई में फल लगते हैं।

जैविक लक्षण :- रोमेरिआ रेफ्राक्ता तराई वाली पहाड़ियों तथा पहाड़ियों की मिट्टी युक्त ढलानों पर, खेतों में, बगीचों में, जमाओं पर, खुले खड़ी चट्टानों तथा ढलानों पर, फालतू जमीन पर तथा मार्गों के किनारों पर उगता है।

विस्तार :- बोलशोई-बालखान, कुरेनदाग, दक्षिण-पश्चिमी, मध्य तथा पूर्वीय कोपेतदग, बाध्यझ तथा आमुदारया मरुभूमि पर फैलता है।

प्राकृतिक उपलब्धि :- हमारे देश में यह दुर्लभ पौधो में से हैं। औषधीय उद्देश्यार्थ इसके भण्डार पर्याप्त हैं।

औषधीय कच्चा माल :- ऊर्ध्व-भूमिगत तथा अधोभूमिगत हिस्सों को कलियां लगने की तथा पुष्प खिलने की अवस्था में एल्कलोइड्स प्राप्त करने के लिये इकट्ठे किये जाते हैं।

रासायनिक संघटन :- पौधे के सभी हिस्सों में एल्कलोइड्स होते हैं, जिनकी सबसे ज्यादा मात्रा कली तथा पुष्प खिलने की शुरूआत में होती है, हरियाली के खत्म होते समय (end of vegetation) केवल सूक्ष्म मात्रा में ही ये मिलते हैं। एल्कलोइड की मात्रा मूल तथा कांड में 0.16 प्रतिशत, पत्र में 0.23 प्रतिशत तथा कलियों में 0.12 प्रतिशत होती है। कलियां लगन के समय रोमेरिआ रेफ्राक्ता में एल्कलोइड की मात्रा 0.09-0.24 प्रतिशत तक ज्यादा-कम हो सकती है। रोमेराइन को छोड़कर एनोनेइन, लीरीओइडेनाइन, रेमेरेफीडीन, रेमरेफाइन आदि रोमेरिआ रेफ्राक्ता को निकाले गये हैं इसके अतिरिक्त ऊर्ध्व हिस्सों में टेनीन, ओर्गेनीक एसीड्स, विटामिन सी, शर्करा तथा बीज (महत्वपूर्ण मात्रा में वसीय तेल) मिलते हैं।

प्रयोज्य :- लोक चिकित्सा में रोमेरिआ रेफ्राक्ता का प्रयोग नेत्ररोगों में होता है। बाह्यदल का स्वरस आतपघात तथा अजीर्ण में होता है। हृदय तथा पचनतंत्र के शूल में शुष्क पत्र को उद्दीपक विरोधी के रूप में लिया जाता है।

वैज्ञानिक चिकित्सा में रोमेरोइन की सलाह दी जाती है। यह शरविष जैसे प्रभाव दिखाने वाला औषध है।

कल्पना तथा प्रयोग :- एक बड़े चम्मच (15 ग्राम) कटे हुए क्षुप में एक गिलास (200 मि०ली०) पानी डालकर धीमी आंच पर 5-7 मिनट के लिये उबालें। ठंडा करें। छानकर इस क्वाथ से नेत्र प्रक्षालन करें।

एक बड़े चम्मच (15 ग्राम) पुष्प के बाह्यदल को एक गिलास (200 मि०ली०) उबलते हुए पानी में डालकर 30 मिनट के लिये रखें। छानकर 1/4 गिलास (50 मि०ली०) दिन में 3 बार भोजन से पूर्व लें।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

रोज़ा बेग्गेरिआना
ROSA BEGGERIANA

रोशाचा

वर्णन :- विश्व में इस कांटेदार पौधे की 300 प्रजातियां मिलती हैं। मध्य एशिया देशों में 100 से ज्यादा प्रजातियां तथा तुर्कमेनिस्तान में 14 प्रजातियां मिलती हैं। रोज़ा बेग्गेरिआना (बेगर्स स्वीटब्रायर) रोज़ेसी कुल का प्रतिनिधि है। यह पौधा 1-2 मीटर ऊँचा तथा कांटेदार होता है। स्वीट ब्रायर के पत्र अंकुषवाले अथवा कभी-कभी सीधे कण्टक वाले 11 से०मी० लम्बे होते हैं। यह 5-9 खण्डक (0.3-3 से०मी०लम्बा) वाला अण्डाकार, दीर्घवृत्ताभ तथा केवल अधोभाग रेसायुक्त होता है (यह क्वचित् रेसारहित भी होता है)।

पुष्प श्वेत अथवा गुलाबी आभायुक्त, ढ़ाल के आकार में इकट्ठे अथवा गुच्छ के राशि के रूप में होते हैं, क्वचित् ही एकाकी होते हैं। फल चिपचिपे (0.5-1.5 से०मी० लम्बे) मटर आकार के गोलाभ अथवा अण्डाकार होते हैं। खुलने के स्थान से नीचे ये लाल अथवा वाइन जैसे गहरे वर्ण के, रसीले गूदे वाले तथा काष्ठफल-कींटगृह युक्त होते हैं।

जैविक लक्षण:- हमारे देश में यह पौधा समुद्र तल से 400-1200 मीटर की ऊँचाई पर उगता है। इसको पर्वतों की ढलानों पर उगना पसंद है। पौधे को मई-अगस्त में पुष्प तथा जून-अक्तूबर में फल लगते हैं।

विस्तार :- हमारे देश में यह पौधा दक्षिण-पश्चिमी कोपेतदग में मागतयमगुलय जिले में, मध्य कोपेतदग में, केलतेययनार, दुशाकेरेकदाग तथा आर्चाबील में पाया जाता है।

प्राकृतिक उपलब्धि :- यह दुर्लभ पौधा है। औषधीय प्रयोगार्थ इसके भण्डार पर्याप्त हैं। पौधे को कोपेतदग तथा सुंत-हासारदाग राष्ट्रीय उद्यानों में उगाया तथा संरक्षित किया जाता है।

औषधीय कच्चा माल :- औषधीय प्रयोगार्थ फलों का प्रयोग किया जाता है। फल को उनके पूरी तरह पक जाने के बाद (अगस्त-सितम्बर) ही इकट्ठे किये जाते हैं। पाला पड़ने से पूर्व फल के संरक्षण का कार्य करना जरूरी है। पाला पड़ते ही इसके विटामिन्स का बहुत बड़ा हिस्सा नष्ट हो जाता है। अच्छीतरह सूखे हुए कमरों में 80-100 डिग्री के तापमान पर इकट्ठे किये फलों को सुखाया जाता हैं।

तैयार कच्चा माल :- फल धूसराभ रक्त तथा नारंगी, गंध रहित, अम्ल-मधुर तथा किंचित् कषाय रस वाले होते हैं। तैयार माल को कपड़े के थैलों में दो साल संचित किया जा सकता है।

रासायनिक संघटन :- इस पौधे के फल में विटामिन्स सी (5.27-20 प्रतिशत), बी2, जी, इ, के तथा केरोटीन पेन्टाइन्स (3.7 प्रतिशत), ओर्गेनिक एसीड्स (मेलीक तथा साइट्रीक), शर्करा तथा फ्लेवोनोइड्स होते हैं। मूल में फ्लेवोनोइड्स केटेकोल होते हैं। पत्र में टेनीक पदार्थ, फ्लेवोनोइड्स होते हैं। पुष्प में और बीज तैलों में तेल होते हैं।

प्रयोग :- प्राचीन समय के सुविख्यात चिकित्सकों को पौधे के फल के औषधीय गुणधर्मों के बारे में पता था। चिकित्सा शास्त्र के पिता हीपोक्रटी (ई०पू० 5-6 शताब्दी) ने पौधे का प्रयोग पित्ताशय शोथ में किया था। ग्रीक चिकित्सक डायोस्कोराइड ने उदरशूल को कम करने के पौधे के फल के लाभ लिखे हैं। प्राचीन रोमन चिकित्सक तथा लेखक स्क्रीबोनी लार्क (1 शताब्दी) ने पौधे के स्वरस का प्रयोग रक्तस्तंभक तथा बल्य औषध के रूप में किया था। यह पौधा तथा दूसरे फल पूर्वीय चिकित्सा तथा तुर्कमेन लोक चिकित्सा में प्रख्यात हैं। ज़करिआ राझी, अबु रेयहान बीरूनी, अबु अली इब्न सीना ने बताया है कि पौधा दौर्बल्य में, मृदुता लाने के लिये तथा शोधन के लिये एवं नाडी शोथ में मदद करता है। लोक चिकित्सा में इसके तेल को बहुत उपयोगी माना गया है।

कल्पना तथा प्रयोग :- इसके 10-15 पौधों को एक गिलास (200 मि०ली०) उबलते हुए पानी में 7-10 मिनट के लिये उबालें। एक-दो चम्मच (10-15 ग्राम) शर्करा मिलाकर थोड़ी देर रखें। छानकर 100 मि०ली० दिन में 1-2 बार भोजन से पूर्व लें।

दो चम्मच (10 ग्राम) को 2 गिलास (400 मि०ली०) उबलते हुए पानी में मिलाकर ठण्डे स्थान पर थोडी देर रखकर छान लें बिना चीनी के 100 मि०ली० दिन में 3-4 बार पीयें।

पौधे के शुष्क पुष्प (20 ग्राम) पर 200 मि०ली० उबलता हुआ पानी डालकर ढांक दें। दस-बारह घण्टे के बाद छानकर प्रतिदिन 100 मि०ली० पीयें। यह शोथ में मदद करता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

रोज़ा कानीना
ROSA CANINA

वर्णन :- इस पौधे का दूसरा नाम फील्ड रोज़ है। रोज़ा कानीना रोझेसीं कुल का 1.5-2 मीटर लम्बा पौधा है तथा यह वन्य झाड़ीदार वृक्षों का प्रतिनिधि है। पौधे की पुरानी शाखाओं का वर्ण भूरा, लेकिन तरुण शाखाओं का वर्णन हरिताभ-धूसर होता है। यह सूखे घास के वर्ण का, अर्धचंद्र की तरह मुड़ा हुआ, सख्त, अत्यन्त लम्बा तथा कंटक (0.5-0.6 से०मी० लम्बे) युक्त होता है। पत्र युग्म नहीं होते, पक्षवत् विभाजित, 5-11 से०मी० लम्बे तथा 6-7 भागों में एवं छोटे सूत्र वाले होते हैं। भाग अण्डाकार अथवा दीर्घवृत्ताभ (2-5 से०मी० लम्बे) होते हैं। पुष्प श्वेत अथवा गुलाबी होते हैं। पुष्प शाखाओं के अंत में 2-4 की संख्या में होते हैं।

इसका फल अण्डाकार, गोलाकार अथवा प्राय: गेंद जैसा मांसल (1-2 से०मी० लम्बा) होता है। पकने पर यह रक्ताभ अथवा कमलवत् रक्ताभ होता है। एक फल का वजन 1.7-3.2 ग्राम होता है।

जैविक लक्षण :- हमारे देश में रोज़ा कानीना समुद्र तल से 400-1200 मीटर की ऊँचाई पर उगता है। इसको जलस्रोतों के पास, नदी की घाटियों में तथा क्वचित् पर्वतों की दरारों में उगना पसंद है। इसको मई-जून में पुष्प आते हैं तथा जुलाई-सितम्बर में फल लगते हैं। बीज द्वारा इसका प्रजनन होता है। यह 2-3 साल के बाद पुष्प देता है तथा प्रतिवर्ष बहुत फल देता है।

विस्तार :- यह झाड़ीदार पौधा दक्षिण-पश्चिमी कोपेतदग पर्वत में, चेन्दीर, योलदेरे, होझलय, सायवान, देश्त, कोनेगुम्मेय, मध्य कोपेतदग में, नोटूर, गारावुल, गारायालचय, हयझ, गालयनहोझ, आलमाजयक, तागारेव, सारयमसाकलय, देगीरमेन्ली, मुसुनेव, मुर्झेदाग, युलय तथा कीची बाकजा, केलतेचाय, दुशाकेरेकदाग, आर्चाबील, चोपानदाग, युलय गारानकय, गुरतलयसुव, होवदान, दोगरयदेरे, दामचा, दाशतोय, पूर्वीय कोपेतदग में, गुरयहोवदान, चयरलाक, केलनेचयनार, गादामगा तथा हरचीनयान में मिलता है।

प्राकृतिक उपलब्धि :- यह दुर्लभ पौधों में से नहीं है। औषधीय उद्देश्यार्थ पर्याप्त मात्रा मिलती है। फल की उपज 50-300 किलोग्राम प्रति हेक्टर (लगभग 2 टन प्रति हेक्टर)है। एक पेड़ 500-600 किलोग्राम (Pure weight) फल देता है। इसको उगाया तथा विकसित किया जाता है।

औषधीय कच्चा माल :- इसके फल औषधीय प्रयोगार्थ प्रयुक्त होते हैं। फल को तब ही इकट्ठा किये जाते हैं जब वह पूरी तरह पक जाते हैं। इनको छत के नीचे सुखाया तथा तैयार किया जाता है। इनको कपड़े के थैलों में संचित किया जाता है। संचयन समय अवधि 2-3 साल की है।

रासायनिक संघटन :- पौधे के मूल में 5.2 प्रतिशत एगलेन्टोसाइड ट्राइटर्पेनोइड्स तथा पत्र में विटामिन सी, गेलो, जेन्टीसीक, केफीक, वेनीलीन, सेलीसील, इलेगो फीनोलकार्बोन एसीड्स तथा एस्ट्रागेलीन फ्लेवोनोइड्स होते हैं। फल में ग्लुकोज, फ्रुक्टोझ, स्पीरीट ट्राइटर्पीन, वोइलकसेन्टाइन, एन्टेराकसेन्टाइन, झीआकसेन्टाइन, केरोटीनोइड्स, स्टीरोइड्स, विटामिन्स सी, इ, पी, पदार्थ ए, फ्लेवोनोइड्स, एन्टोसीआन्स तथा लीपीड्स होते हैं। इसके बीज में तेल, ओलिक एसीड (50 प्रतिशत) टोकोफेरोल तथा केरोटीनोइड्स होते हैं।

प्रयोग :- रोज़ा कानीना एक प्राचीन राष्ट्रीय नुस्खा है। विश्व विख्यात वैज्ञानिक हीपोक्रेटी, डायोस्कोराइड, झाकारया राझी, अबु रेयहान बीरूनी तथा अबु अली इब्न सीना एवं अन्य ने अपने कार्यों में इसके औषधीय गुणधर्मों के बारे में लिखा है। इब्न सीना ने अपने कार्य कैनन आफ मेडिकल सायंस में लिखा है कि उन्होंने कफनि:सारक के लिये, छर्दि के लिये तथा शमनार्थ रोज़ा कानीना का प्रयोग किया था।

लोक चिकित्सा में पौधे के मूल से निर्मित फांट का प्रयोग पित्ताशय तथा वृक्क की अश्मरीओं के लिये, हृदय तथा यकृत् की व्याधियों एवं रक्तचाप के लिये होता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

इसमें जीवाणुनाशक गुण है। पौधे के मूल की त्वक् से निर्मित पदार्थ का प्रयोग पागल कुत्ते के काटने पर विष विरोध के रूप में किया जाता है। मूल के ऊर्ध्व भाग से निर्मित पदार्थ का प्रयोग अतिसार, अजीर्ण तथा संधिवात में एवं फांट का प्रयोग लघु आंत्र शोथ, बृहदांत्र शोथ तथा शूलशामक के रूप में किया जाता है। पत्र के फांट का प्रयोग जानपदिक कर्णमूलीय ग्रन्थि शोथ, आंगिक ज्वर, अतिसार, वृक्कशोथ, राजयक्ष्मा तथा प्रसव में किया जाता है। पौधे के पत्र से निर्मित नुस्खे का प्रयोग गलगण्ड की चिकित्सा के लिये किया जाता है।

लोक चिकित्सा में पौधे के फल से निर्मित फांट का प्रयोग अतिसार, आमाशय शूल, अल्पाम्लता जन्य आमाशयशोथ, वृक्कशोथ, वृक्क तथा पित्ताशय में अश्मरी, पांडु, खतरनाक अर्बुदों, संक्रमण, न्युमोनिया (श्वसन ज्वर) शिरःशूल, मधुमेह, मूत्रल तथा कृमि में होता है। इसका प्रयोग बाह्यव्रण तथा दग्धव्रण में भी होता है।

वैज्ञानिक चिकित्सा शास्त्र में फल का प्रयोग मूत्रल, बल्य के रूप में एवं संक्रमण व्याधियों में अनुकूलित उपचार के रूप में होता है। औषध उद्योग में रोज़ा कानीना के फल से निकाला गया सार होलोसास एक अच्छा पित्तसारक है। साथ ही स्नैहिक धमनीरोध तथा कुछ संक्रमणजन्य व्याधियां (कुकुर कास, त्वक् ज्वर तथा श्वसन ज्वर) दुष्ट व्रण, भग्न, अग्न्याशय ग्रंथि के कार्य को उत्कृष्ट करने के लिये भी इसका प्रयोग किया जाता है।

कल्पना तथा प्रयोग :- एक तामचीनी पात्र में एक लीटर पानी तथा 10 ग्राम चीनी मिलायें। जब ये उबलने लगें तब इसमें 100 ग्राम पीसे हुए फल मिलायें। पात्र को ढांक दें। दस-पंद्रह मिनट के लिये उबालें। एक दिन के बाद छानकर आधा गिलास (100 मि०ली०) 2 बार पियें।

एक तामचीनी पात्र में दो चम्मच (10 ग्राम) पीसे हुए फल को आधा लीटर (500 मि०ली०) पानी में मिलाकर धीमी आंच पर 15-20 मिनट के लिये उबालें। ठंडा करके छानकर आधा गिलास (100 मि०ली०) दिन में 3 बार भोजन से पूर्व लें। यह वृक्क व्याधियों के लिये बहुत उपयोगी है।

रोज़ा कानीना का फांट बनाने के लिये 400 ग्राम सूखे फल 2 गिलास (400 मि०ली०) पानी तथा एक बड़ा चम्मच (15 ग्राम) चीनी चाहिये। फलों को कूटकर चूर्ण बनायें, तत्पश्चात् उबलता हुआ पानी डालकर 4-5 घण्टों के लिये अंधेरे स्थान में रखें। दोहरी छलनी से छानें। आधा गिलास (100 मि०ली०) भोजन से पूर्व पीयें।

मंद आंच पर पके फल बनाने के लिये 800 ग्राम ताजे फल, 20 ग्राम सेव, 150 ग्राम चीनी, 1 ग्राम सीट्रीक एसीड तथा 1 लीटर पानी चाहिये। फल में से बीज हटायें तथा सावधानी पूर्वक धोयें। ठंडा पीयें।

(मद्य) बनाने के लिये 200 ग्राम फल तथा 300 ग्राम शर्करा चाहिये। इसमें 3 गिलास (600 मि०ली०) वोडका डालें। बोतल में बंद करके सूर्यप्रकाश में 15 दिन के लिये रखें। तत्पश्चात् वोड्का के दो गिलास और मिलायें तथा सूर्यप्रकाश में 5 दिन के लिये रखें। तैयार मद्य को छानकर एक बड़ा चम्मच भोजन पश्चात् पीयें।

एक गिलास उबले हुए पानी में एक चम्मच (15 ग्राम) पौधे के चूर्ण को मिलाकर मंद आंच पर पकाएं। तैयार प्रवाही को छान लें। एक चम्मच अथवा 1/4 गिलास दिन में 3-5 बा भोजन से 40-60 मिनट पूर्व लें।

आप सूखे पौधे के पत्र से बने प्रवाही की 30-40 बूंदे भी भोजन पूर्व ले सकते हैं। इस तरह के फांट का शमन प्रभाव होता है।

सूखे पौधे के चूर्ण 2 चम्मच (30 ग्राम) को एक गिलास (200 मि०ली०) 40 अथवा 70 प्रतिशत सुरा में मिलाकर 10 दिन तक कसकर ढक्कन लगाकर बोतल में रखें। बीच बीच में हिलाना जरूरी है पत्र को छानने के लिये तैयार घोल को छान लें। इस प्रवाही की 15 बूंदे दिन में 3 बार भोजन पूर्व लें।

पौधे के पत्र से निकाले हुए रोझीन को 1 ग्राम मात्रा में दिन में तीन बार लेने की सलाह दी जाती है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

रोज़ा माराकांदिका
ROSA MARACANDICA

वर्णन :- इस पौधे का औषध तथा साज सज्जा के लिये प्रयोग किया जाता है। इसकी शाखायें सीधी नहीं होती। रोज़ा माराकांदिका के कांड पर सीधे, पतले, चौड़े कंटक रहते हैं।

रोज़ा माराकांदिका रोज़ेसी कुल का 1.5-2 मीटर लम्बा, गुल्म प्रजातियों में से एक है। कांड 1.5 से०मी० लम्बा पीला कंटकयुक्त होता है। पत्र अयुग्म (लगभग 3 से०मी० लम्बे) तथा 5-7 विभाग वाले होते हैं। पत्र आर्द्र, गोलाकार तथा अण्डाकार (लगभग 1 से०मी० लम्बे) होते हैं।

पुष्प (3-4 से०मी०) का वर्ण बैंगनी होता है। ये एकाकी अथवा 4-5 की संख्या में साथ में होते हैं। फल दिखने में अण्डे जैसे अथवा नाशपाती आकार के (लगभग 2 से०मी० लम्बे), हल्के बैंगनी वर्ण के तथा सूखे होते हैं। इनका वजन 0.13-0.82 तथा इसमें 75-85 प्रतिशत गूदा होता है।

जैविक लक्षण :- हमारे देश में यह पौधा समुद्र तल से 400-300 मीटर की ऊँचाई पर उगता है। यह शुष्कता को सहन कर सकता है। इनको घाटियों में, पथरीली ढलानों पर युनिपर स्थानों तथा नदी किनारों पर उगना पसंद है।

रोज़ा माराकांदिका मई-जून में पुष्प देता है तथा जुलाई-अगस्त में फल देता है।

विस्तार :- हमारे देश में यह पौधा कोपेतदग पर्वतों में मिल सकता है।

राष्ट्रीय उपलब्धि :- हमारे देश में रोज़ा माराकांदिका दुर्लभ पौधों में से नहीं है। औषधीय उद्देश्यार्थ इसका भण्डार पर्याप्त है। उपज 200-400 ग्राम प्रति वर्ग मीटर है। यह लोगों द्वारा उगाया जाता है।

औषधीय कच्चा माल :- इस पौधे की उपज कच्चे माल के रूप में प्रयुक्त होती है। इसको सामान्य रूप से इकट्ठा किया जाता है तथा सुखाया जाता है। तैयार कच्चे माल को कपड़े के थैलों में संरक्षित किया जाता है। संचयन समय की अवधि दो साल है।

रासायनिक संघटन :- इस पौधे में 4.35-9.97 प्रतिशत विटामिन सी तथा 0.01 प्रतिशत केरोटीन होते हैं।

प्रयोग :- तुर्कमेन लोक चिकित्सा में (कोइतेनदाग क्षेत्र) पौधे से निर्मित फांट तथा नुस्खे को प्रयोग शूल, आमाशयशूल, दंतवेष्टक शोथ, दांतों में रक्तस्राव तथा आंत्रशूल की चिकित्सा में हाता है। इसके पुष्प का प्रयोग चाय के रूप में होता है।

कल्पना तथा प्रयोग :- एक तामचीनी पात्र में पौधे के 10-15 शुष्क पत्र लेकर उसमें एक गिलास (200 मि०ली०) पानी मिलाकर 10 मिनट के लिये उबालें। कपड़े से छानकर 100 मि०ली० फांट दिन में 3 बार भोजन पूर्व लें।

एक तापपात्र में पौधे के 15-20 शुष्क पत्र लेकर उसमें दो गिलास (400 मि०ली०) उबला हुआ पानी डालकर थोडी देर के लिये रखें। प्रवाही को छानकर 200 मि०ली० दिन में 2 बार भोजन से पूर्व लें।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

रूबुस अनातोलिकुस
RUBUS ANATOLICUS

वर्णन :– यह मीठे लाल फल है। विश्व में इस पौधे की 250 प्रजातियां, मध्य एशिया देशों में 60 प्रजातियां तथा तुर्कमेनिस्तान में 3 प्रजातियां मिलती हैं।

रूबुस अनातोलिकुस रोझेसी कुल का 2–5 मीटर ऊँचा कुतृण है। इस पौधे के पत्र त्रिपर्णी तथा कांड के अधोभाग के पत्र पंचपर्णी होते हैं। इसके पुष्प में पांच श्वेत बाह्यदल होते हैं। ये 3 से०मी० तक बड़े ढाल के आकार के होते हैं। फल काले, अण्डाकार होते हैं। पौधे को मई–सितम्बर में पुष्प तथा जुलाई–अक्तूबर में फल लगते हैं।

जैविक लक्षण :– पुष्प लगने के एक महिने के बाद पौधे को फल लगते हैं। प्रतिवर्ष ये ज्यादा, और ज्यादा फल देता है। पौधे के फल अपना वर्ण श्वेत से लाल तथा काले में बदलते हैं।

विस्तार :– हमारे देश में रूबुस अनातोलिकुस कुरेनदग में, दानीएला, गारागेस, जीगीरदेक, युझयनसुव, इसगेन्देर, तायतयोवलाक, सोनुदाग, मध्य–पश्चिम कोपेतदग, तालीम घाटी तथा गुयेन मागतयमगुलय, सुंबार, युवानगाला, योलदेरे, इलोझलय, कोनेकेसीर, सायवान, देश्त, नोहूर में, मध्य कोपेतदग, देगीरमेन्देरे, आर्वाझ, यपयगाला, गेर्माप, गोकदेरे, आर्चाबील, गाराहानदेरे, पूर्वीय कोपेतदग, गुरयहोवदान, चारलाक, गावेरस, केलेतेचाच्चन में मिलता है।

प्राकृतिक उपलब्धि :– यह कुतृण हमारे देश में दुर्लभ नहीं है। औषधीय उद्देश्यार्थ भण्डार पर्याप्त हैं हमारे देश में लगभग 300–500 टन प्रयोज्य कच्चा माल इकट्ठा किया जा सकता है। 2006 के दस्तावेज (ए. आकमयरादोव, जी गुरबानमाम्मेदोवा) के अनुसार 120–150 टन रुबुस अनातोलिकुस को मध्य कोपेतदग, युलय कीसरहदपाला बाहारलय तथा कीची बाकजा में इकट्ठा किया गया था। पूर्वीय कोपेतदग, गुरयहोवदान, चारलाक की घाटियां तथा गावेरस में 45–50 टन इकट्ठा किया गया था।

औषधीय कच्चा माल :– औषधीय उद्देश्यार्थ पौधे के पत्र, फल तथा मूल प्रयुक्त होते हैं। पुष्प लगने के समय पौधे के पत्र को इकट्ठे किये जाते हैं। इनको सामान्य रूप से सुखाया तथा तैयार किया जाता है।

रासायनिक संगठन :– रूबुस अनातोलिकुस के फल में 10 प्रतिशत तक शर्करा (ग्लुकोझ, फ्रुक्टोझ), आर्गेनिक एसिड्स (सिट्रीक, मेलीक, आदि) केरोटीन, विटामिन्स बी, सी, तथा इ का समूह, टेनिंग पदार्थ एवं ताम्र तथा पोटेशियम के लवण होते हैं। पौधे के पत्र में टेनींग पदार्थ (14 प्रतिशत तक), फ्लेवोनोइड्स तथा ओर्गेनिक पदार्थ होते हैं।

प्रयोग :– इस कुतृण के औषधीय तथा आहारीय गुणों की जानकारी सीझर (ई०पू० 100–44), ओवीड (ई०पू० 43–17) तथा अपुलेय (ई०पू० दूसरी शताब्दी) के कार्यों से मिली थी। प्रख्यात पूर्वीय वैज्ञानिक अबु अली इब्न सीना ने अपनी पुस्तक कैनन आफ मेडिकल सायंस में रूबुस अनातोलिकुस के चिकित्सकीय गुणों के बारे में लिखा है। रूबुस अनातोलिकुस के मूल का प्रयोग मनुष्य शरीर के आंतरिक अंगों की विविध अश्मरी व्याधियों की क्षरणीय उपचार के रूप में होता है। उबले हुए पत्र का प्रयोग बाल को गिराने तथा रंजन करने के लिये, शिरःशूल तथा व्रण की चिकित्सा के लिये होता है।

लोक चिकित्सा में इस कुतृण का प्रयोग रक्तस्तंभक के रूप में, ज्वर, गले में खराश, बल्य, मूत्रल, स्वेदल रूप में, आंत्रशोथ, हस्तपाद शोथ, नाडी तंत्र की व्याधियों तथा कई अन्य व्याधियों में होता है।

पौधे के पके फल का प्रयोग रेचक के रूप में, लेकिन कच्चे फल का प्रयोग अहिफेनेय के रूप में किया जाता है। साथ ही पौधे के फल पाचन संस्थान के कार्य को उत्कृष्ट बनाते हैं। इनका प्रयोग पूयमेह तथा वृक्क की व्याधियों में होता है। इसके पत्र का प्रयोग शीतपित्त तथा वृद्धि व्रणों में होता है।

कल्पना तथा प्रयोग :– रूबुस अनातोलिकुस के दो बड़े चम्मच (30 ग्राम) पत्र को 2 गिलास (400 मि०ली०) उबलते हुए पानी में डालकर थोडी देर रखें। छानकर आधे गिलास सुखोष्ण फांट को दिन में 3 बार भोजन से पूर्व लें।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

पौधे के बारीक कटे हुए मूल एक बड़ा चम्मच (15 ग्राम) को एक गिलास (200 मि०ली०) पानी में मिलाकर 5-10 मिनट के लिये रखें। ठंडा करके छान लें। तैयार फांट को एक बड़े चम्मच (15 ग्राम) की मात्रा में प्रति 2 घण्टे पर लें। इस नुस्खे का प्रयोग हस्तपादशोथ में होता है।

एक गिलास (200 मि०ली०) उबले हुए पानी में एक बड़ा चम्मच (15 ग्राम) रूबुस अनातोलिकुस के पत्र को मिलाकर 4 घण्टे तक रखें। तत्पश्चात् छानकर आधा गिलास (100 मि०ली०) प्रतिदिन 3-4 बार लें।

रूबुस केसिउस
RUBUS CAESIUS

वर्णन :- यह एक फलदायी पौधा माना गया है। दुनिया में इसकी 400 से ज्यादा प्रजातियां हैं। मध्य एशिया में पौधे को बोवुर्तलेन, मर्मिजान, मलेस्यि कह सकते हैं।

रूबुस केसिउस रोसार्मी कुल से है, 50-120 से०मी० लंबी है, इसका तना पहले पतला, बाद में अपने ही वजन से झुककर भूमि पर फैलना शुरू करता है। तना जो भूमि पर फैलता है, 3-5 से०मी० लंबी पतली है। यह 0.5-0.8 से०मी० चौड़े, शाखीय, गहरा हरा या धूसर, ऊपर के भाग हरे और मोम से ढ़के रहता है। तने के शाखा कड़ा, सीधा 0.2 से०मी० लंबी, ऊपर के भाग नाटा और नरम कभी-कभी यह मुड़ा हुआ रहता है।

तना दो प्रकार का होता है :- वानस्पतिक एकवार्षिकी है, उत्पादक द्विवार्षिकी होती है तीन पत्र, 15 से 20 से०मी० लंबे, 9-12 से०मी० चौड़े होते हैं। उनके ऊपर के भाग कम होता रहता है, नीचे के भाग सिरा युक्त, यह पतली शैवालीया होता है। पुष्प श्वेत, बड़े, 3 से०मी० चौड़े हैं। पुष्प तरंगित, उसमें 5-10 फूल रहते हैं। पुष्प 5, गोलाकार, 0.3-0.5 से०मी० चौड़े, इसमें 50 से ज्यादा केसर और फल रहते हैं। फल अंडाकार, अष्ठीला, बड़ा, 1.5-2.0 से०मी० लम्बा, 1.5 से०मी० चौड़ा रहता है, वे 5-20 रसीले, स्वादिष्ट, गहरा अष्ठला और यह गहरा नीले रहते हैं।

जैविक लक्षण :- रूबुस केसिउस समुद्र से 600-1200 मीटर ऊँचायी पर उगता है। पेडों के नीचे नदियों के तटों पर, स्रोतों के नज़दीक उगता है। यह चर्म फलों के नज़दीक पैदा होता है। प्राकृतिक परिस्थितियों में 5 महीने पुष्प देता है। आखरी फल अक्तूबर में आता है। पुष्प आने के बाद पहला फल जून-अक्तूबर में पकता है।

विस्तार :- दक्षिण पश्चिम कोपेतदग में, होजकला, चेंदीर, गुमेंदे, गुरातिहा, सुंबर्दा, योल्देरेदे, होज़लिहा, ऐदेरेदे, देशत्दे, मध्य कोपेतदग में, नोहुर, गरवुल, गरयलचा, पेगला, अर्वाज़, अम्पयिक, अर्चबिल, वानोवस्की, तुतली, हन्यामला, केल्तेचिनार, दरेदार में मिलता है।

प्राकृतिक उपलब्धि :- रूबुस केसिउस हमारे देश में एक दुर्लभ पौधा है। औषधीय कार्यों के लिए पर्याप्त भंडार है। 2007 के अभिलेखों अनुसार रूबुस केसिउस गरयालयी खाडी में 8 हैक्टरों में, तंगघाटी में एक हैक्टर, गरगुआ में हैक्टर में फैला हुआ है। उन जगहों पर रूबुस केसिउस टन फल और 10-15 टन पत्र दे सकता है। (अ० अक्मिरदोव, जी. गुर्बनमामेदोवा)।

औषधीय कच्चा माल :- इसके पत्ते और फल औषधीय कार्यों के लिए कच्चा माल के रूप में काम आते हैं। जब पौधे में फूल आते हैं तब पत्तों को संग्रह करके खुले हवा में छाया में सुखाना चाहिये। फलों को सुखाने वाले उपकरण में 50 डिग्री से० तापमान पर सुखाना चाहिये। सूखे हुए पत्तों को कागज़ के थैलों में या पेटियों में सूखे कमरें में रखना चाहिये। सूखे हुए फलों को कांच पात्र में रखकर कसकर बन्द करना चाहिये।

रासायनिक संघटन :- इस पौधे के पत्तों में पदार्थ अ (14 प्रतिशत) फ्लैनोनोईड्स, अंगरकाम्ल, सूक्ष्म तत्व, इनोसिटोल, ऐस्कोर्बिक अम्ल (270 मि०ग्रा० प्रतिशत) रहते हैं। इसमें नींबू से 6 गुने, नारंग से 5 गुने ऐस्कोर्बिक अम्ल रहता है, इसके कारण फल हमेशा खट्टा होता है। इसमें 10 प्रतिशत चीनी (ग्लूकोस 2.83 से 3.64 प्रतिशत, फ्रक्टोस 3.12 से 3.24 प्रतिशत और अंगारकाम्ल (सिट्रिक, मैलिक) रहते हैं।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

प्रयोग :– अति प्राचीन काल से यह प्रसिद्ध रहा है। सुप्रसिद्ध ग्रीक वैद्य इयास्काराईड पहले शती (ई.पू.) जिंदा थे, ने अपने पुस्तक में लिखा कि रूबुस केसिउस के पत्तों से बना सुरासार गण्डूष और दन्तशूल के लिए और चर्मरोग के लिए प्रयोग किया है। सुप्रसिद्ध पूर्वी रोपक (चिकित्सक) अबू अली इब्न सीना अपने पुस्तक ''कैनन ऑफ मेडिकल सायंस'' में सूचना दिया कि रूबुस केसिउस के पत्र, दग्ध और व्रणों में उपयोगी सुरा सार की तैयार में प्रयोग आते हैं।

अपने समय में सुप्रसिद्ध रोपक मुहम्मद हुसैन अपने पुस्तक ''पैनासिया ट्रेजर'' में लिखा कि रूबुस केसिउस अनेक रोगों में शीतल कर्म, रक्तस्तम्भन, अन्तःरक्तस्राव के लिए प्रयोग होता है। इसके पत्तों को शीताद, दांतों के बीच के मांस कील, मुख दुर्गन्ध में चबाते हैं। इसका फल व्याधि क्षमत्व के लिए उपयोगी है।

लोक चिकित्सा में पत्तों को प्रत्यास्थायी, स्तम्भक, मूत्रल शोथ, व्रण रोपण, आमाशयिक शोथ, अन्ननलिका, रक्तस्राव, क्षोभन के लिए और श्वास, उच्च रक्तचाप, वसाजन्य धमनी काठिन्य में भी उपयोगी है।

इसके पत्रों से बने द्रव और सुरासार मुखपाक में गंडूष के लिए, शीताद, कण्डू, विसर्प में उपयोगी है। घनास्रक पर सूखे पत्रों को रख सकते हैं।

तुर्कमेन राष्ट्रीय और लोक चिकित्सा (बहर्ली और मुगतिम गुली जिले) में फल और रूबुस केसिउस में बने चाय रजोनिवृत्ति, प्रत्यास्थापी, निद्राजनक द्रव्यों के रूप में प्रयोग होते हैं। तुर्कमेन लोक चिकित्सा में कूटे हुए मूल और पत्र प्रासिका सुई, चर्म शोथ, मधुमेह, श्वेतकण्वापकर्ष, शोफ, क्षत, चर्मकील के लिए उपयोगी हैं। यह कोथ, मुख गंडूष के लिए भी उपयोगी है। इसके काण्ड, पत्र, पुष्प पीत, रक्त और नील वर्ण देते हैं।

कल्पना और प्रयोग :– एक गिलास पानी एक बड़ा चम्मच सूखे पत्रों पर तामचीनी पात्र में डालकर 5-10 मिनट मंदाग्नि पर उबालें। छानकर गरम दिन में 3 बार प्रयोग करें। यह फाण्ट प्रासिका सुई चर्मकील में उपयोगी है।

एक चम्मच में गरम पानी डालकर कुछ समय रखें। छान कर दो चम्मच दिन में 3 बार पीयें।

रूबुस ईदेउस
RUBUS IDAEUS

वर्णन :– तुर्कमेनिस्तान में केवल एक प्रजाति मिलता है। यह 60-120 मीटर ऊंचा है। यह अर्धगुल्म है, रोसासी कुल का और ब्लैकबेरी से संबंधित है। यह अर्धगुलीय पौधे में 3-5 खींचा हुआ अंडाकार पत्र काण्ड पर एकान्तर रहते हैं। ये नीचे से मोटे रेशे से आच्छादित रहते हैं। इसके प्रकन्द में अनेक मूल जमीन पर रहते और इस पौधे के फूल हरिताभ श्वेत हैं। फूल 1 से०मी० लम्बा रेशेयुक्त है। बाह्य दल युग्म हैं। फल छोटे बीज से स्वादिष्ट और रसीले होते हैं। यह मई-जून में फल देता है और जुलाई-अगस्त में फल पकते हैं।

जैविक लक्षण :– हर एक काण्ड 2 साल जीवित रहता है। पहले इस अर्ध गुल्म का प्रकन्द सीधा, हरा धूम्र तने के साथ रहता है। शीतकाल तक ये तने वृक्षीय हो जाते हैं। इनके जीवन के दूसरे अर्ध में फल आते और वे सूख जाते हैं। इस समय तक वार्षिक तने हरे होते हैं। यह पौधा मूल अंकुरों से प्रजनन करता है। फूल आने के बाद फल 30-40 दिन में पकता है।

विस्तार :– हमारे देश में यह पर्वतीय जिले और कोपेतदग के पर्वतीय घाटी में पैदा होता है।

प्राकृतिक उपलब्धि :– हमारे देश में यह दुर्लभ पौधा है। औषधीय कार्य के लिए पर्याप्त है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

औषधीय कच्चा माल :- औषधीय कार्यों के लिए पत्र और फल इसके कच्चा माल हैं। जब पूरा पकने के बाद इस औषधीय फल को संग्रह करते हैं। फल को सूखे मौसम में संग्रह करना जरूरी हैं इन्हें जल्दी सूर्यताप में या हवन में 80 डिग्री से० तापमान पर सुखाना है। पत्तों को विटामिन चाय के लिए प्रयोग करते हैं।

रासायनिक संगठन :- चीनी 3.6-3.7 प्रतिशत, पेक्ट्रिक पदार्थ 1.36-2.09 प्रतिशत, अंगारिकाम्ल (मैलिक अम्ल), विटामिन सी 12-45 मि०ग्रा० प्रतिशत, विटामिन पी 0.3-0.8 प्रतिशत तथा खनिज पदार्थ रहते हैं। बीजों में 24.6 प्रतिशत वसीय तैल और लगभग 0.7 प्रतिशत साईटोस्टीरोल रहते हैं।

प्रयोग :- चिकित्सा कर्माभ्यास में रूबुस ईदेउस के फलों को शोथयुक्त रोगों में प्रयोग करते हैं। लोक चिकित्सा में स्वेद जनन द्रव्यों में सूखे रुबुस ईदेउस को जोड़ा गया है।

रूबुस ईदेउस के ताजा फलों को हर जगह आहार के रूप में लेह, मिठाई, विविध पेय, सीरप, फाण्ट और मद्य बनाने के लिए प्रयोग करते हैं। यह सर्प एवं वृश्चिक दंश में भी प्रयोग होता है।

कल्पना एवं प्रयोग :- दो बड़े चम्मच (30 ग्राम) कटे हुए पत्तों को एक गिलास (200 मि०ली०) उबले पानी में डालकर दस मिनट मंद आंच पर उबालें। छानकर फांट को गरम पियें।

एक चम्मच अच्छी तरह सूखे पत्तों को 400 मि०ली० पानी में डालकर 10-15 मिनिट उबालें। ठंडाकर छान लें। दिन में 3 बार भोजन से पहले लें।

रूमेक्स क्रिस्पुस
RUMEX CRISPUS

वर्णन :- दुनिया में 200 प्रजातियों से ज्यादा औषधीय और आहार पौधे उपलब्ध है। मध्य एशिया देशों में 95 प्रजातियां और तुर्कमेनिस्तान में 10 प्रजातियां हैं।

कर्ल्ड डोक एक बहुवार्षिक तृणीय थियरी नोड कुल पौधों के प्रतिनिधि हैं। यह 50-120 से०मी० ऊँचा पौधा है। तना लाल-हरा और खड़ा हुआ, छोटे फूलों से एक खींचा हुआ स्थूप बनता है। पत्ते लंबे बड़े होते हैं। फल तीन धारे वाले धूसर गोल है।

जैविक लक्षण :- यह पौधा समुद्र तल से 400-1200 मीटर ऊँचाई पर उगता है। नमी युक्त प्रान्तों में उगना पसंद करता है। यह पौधा मई-जून में पुष्प और जून-जुलाई में फल देता है।

विस्तार :- यह बोलशोई बालखन, पश्चिमी कोपेतदग, मध्य कोपेतदग, अर्चाबिल, पूर्वी कोपेतदग, शामली, कोअतेनदग, कोपेतदग के तराई में, अमूदर्या नदी के सांस्कृतिक उपनिवेशों में अक्सर पाया जाता है। हमारी मातृभूमि पर यह दुर्लभ नहीं है। औषधीय कार्यों के लिए इसकी मात्रा पर्याप्त है।

प्राकृतिक उपलब्धि :- विविध औषधों के लिए इस पौधे के मूल और पत्र कच्चे माल के रूप में प्रयोग होता

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

है। पुष्प काल में इन्हें संग्रह करना चाहिये। छाया प्रदेश में सामान्य पद्धति से सुखाना चाहिये। कच्चा माल को कपड़े के थैलों में रखना चाहिये। रखने का समय एक साल है।

रासायनिक संघटन :- कर्लड डोक में पदार्थ ए, विटामिन ऐन्थ्राक्विनोनज़ाइन, स्टीरोइड्स, अंगारिकाम्ल, फ्लैवोनाईड्स (रूटिन) उपलब्ध हैं।

प्रयोग :- प्राचीन काल से यह पौधा औषध के लिए प्रयोग होता रहा है। सुप्रसिद्ध पूर्वी वैद्य मुहम्मद हुसैन ने अपनी पुस्तक ट्रेज़री आफ मेडिसिन में घोषित किया है कि कर्लड डोक यकृत को रोपण करने, कामला, श्रुत, इसके रस को मुंह में रखकर दन्तशूल की चिकित्सा में, सिरका में मिलाकर प्लीहा की चिकित्सा में उपयोगी बताया है।

लोक चिकित्सा में इसका श्वेतसार, रक्त स्राव रोकने, विषाक्तता, तापमान कम करने में प्रयोग होता है। कुछ प्रान्तों में पूय निकालने के लिए पत्तों का प्रयोग करते हैं।

कल्पना और प्रयोग :- एक बड़ा चम्मच कूटे हुए पत्रों (15 ग्राम) को 2 गिलास (400 ग्राम) उबले पानी मिलाकर तामचीनी पात्र में 15 मिनिट उबालें। कांढे को छानकर एक गिलास (200 मि०ली) प्रतिदिन पियें।

एक बड़ा चम्मच पौधे के कुटे हुए मूल एक गिलास पानी में डालकर 5-10 मिनिट उबालें। छानकर, तैयार कषाय को दिन में 3-4 बार भोजन से पहले 2 बड़े चम्मच लें।

एक बड़ा चम्मच (15 ग्राम) इस पौधे के रस दिन में 3 बार प्रतिदिन पित्त की चिकित्सा के लिए सेवन करें।

सल्सोला रिक्तेरि
SALSOLA RICHTERI

वर्णन :- हमारे देश में यह पौधा एक मूल्यवान औषधीय पौधा है। यह पौधा सेलमेलर कुल का है। यह 2.5 से 3.0 मीटर ऊँचा गुल्म या छोटा पेड़ है। पेड़ की शाखाएं 2-3 मीटर चौड़ी फैलती हैं, तना 15 से०मी० चौड़ा, त्वचा सफेद होता है। वार्षिक शाखाएं पतले, कुंचनशील, सफेद, चमकीले आच्छादन युक्त रहते हैं।

पेड़ के पत्ते एकान्तर, लंबगोलाकार, धागे जैसे, 2-8 से०मी० लंबे, 1-1.5 मि०मी० चौड़े, तना व्यापक, मोटा और शीर्ष कुण्ठित और कड़े रोम से आच्छादित, कभी कभी चिकना। पौधे के फूल एकल, पत्रों के कोणों में, परन्तु कुछ शाखाओं पर वे गुच्छों में इकट्ठे होते हैं। गुच्छे के बाह्यदल पतले नाटा कडे रोम के साथ होता है। यह एक मीटर लंबे तक बढ़ता है (सामान्यत: 50 से०मी० लंबे)। फूलों के बीच में 1-2 से०मी० अन्तर होता है। सभी एक ही साथ नहीं बढ़ते हैं।

ऋतु में फल काण्ड पर पकते है जिस पर फूल रहते हैं। बीच में फूल और पीली कलियां रहती हैं। प्रति फूल में दो बाह्यदल कोश होते हैं। वे छोटे, गोल, 2 मि०मी० चौड़े छोटे सीधे, कठिन, धूसर, दल बाणाकार रहते हैं। वे द्विलिंगी, केसर और अंडाशय होते हैं।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

फल शुष्क, कड़ा फल त्वचा से, एक बीज बाहर और रचना लाल-पीला, धूम्र या धूसर बीज 1.5 से०मी० चौड़े रहते हैं। पौधा बीजों से प्रजनन करता है। फल का अंडाशय अनुवेल्लित होता है।

सल्सोला रिक्तेरि मई से सितंबर तक पुष्प देता है। फल जुलाई में पकते हैं और शरत्काल तक चलता है।

जैविक लक्षण :- यह पौधा नमकीन जमीन पर अच्छा पैदा होता है। इसलिए इसमें लंबे मूल रहते हैं। नमी जमीन पर पैदा होता है।

यह पौधा जल्दी पैदा होने के लिए खास है। एक साल में 2 मीटर तक लंबा होता है। गरम और शुष्क काल में पौधा अपने पत्तों से नमी देता है।

यह पौधा बीजों से प्रजनन करता है। एक 10 से 15 साल का पौधा लगभग 1300 तक बीज देता है। सल्सोला रिक्तेरि 20-30 साल तक जीवित रहता है।

विस्तार :- हमारे देश में यह पौधा काराकुम रेगिस्तान में हज़ारिक और उस्तिउर्त में पैदा होता है।

प्राकृतिक उपलब्धि :- हमारे देश में यह पौधा दुर्लभ नहीं है। औषधीय कार्यों के लिए भंडार पर्याप्त है। तुर्कमेनिस्तान में 200-300 टन सल्सोला रिक्तेरि का प्रयोज्य कच्चा माल इकट्ठा हो सकता है। औसतन एक हैक्टर में 350-500 पौधे पैदा होते हैं।

सल्सोला रिक्तेरि के बड़ा तना 8 किलोग्राम तक प्रयोज्य कच्चा माल पैदा कर सकता है। एक हैक्टर से 175 किलोग्राम सल्सोला रिक्तेरि कच्चा माल इकट्ठा होता है।

औषधीय कच्चा माल :- पौधे के फल प्रयोज्य कच्चा माल है।

सल्सोला रिक्तेरि का कच्चामाल शरदऋतु में (सितंबर-नवंबर में) इकट्ठा किया जाता है। एक दरांती से फल और शाखाएं इकट्ठा किये जाते हैं, सुखाने के लिए 7-8 दिन उन्हें फैलाते हैं। शाखाएं तक सूख जाते हैं। जमीन इस काम के लिए अच्छा है, क्योंकि रेत से कच्चा माल को इकट्ठा करना मुश्किल है। कटी शाखाओं के कच्चामाल को छन्ने से छानते हैं। (छन्ने का आकार 10X12 और 4X4 से०मी०)। यह पद्धति रेत से कच्चा माल साफ करने में सहायक होता है। एक स्थान से शाखाओं का वार्षिक संग्रह उसकी पैदावार को कम कर सकता है। इसलिए कच्चा माल का तैयारी एक स्थान से 2 साल में एक बार होना चाहिए। हमारे देश में प्रयोज्य कच्चा माल अमुदर्या नदी के बाएं तट पर, तुर्कमेनाबाद में ज्यादातर सेरदराबात, सायत और गालकिनिश में इकट्ठा करते हैं।

रासायनिक संघटन :- सल्सोला रिक्तेरि के प्रयोज्य कच्चा माल में 2 प्रकार के एल्कलोईड्स रहते हैं-सालसोलाइन और सालसोलडाईन। कच्चे माल में वे 1.6 प्रतिशत रहते हैं।

प्रयोग :- सालसोलाइन और सालसोडाइन हाईड्राक्लोराइड के टिकियों को उच्च रक्तचाप को कम करने और संज्ञानाशक के रूप में प्रयोग करते हैं। इसलिए वे उच्च रक्तचाप और मस्तिष्क के दूसरी स्तर के धमनी संकोच में प्रयोग होते हैं। सालसोलडाईन का प्रयोग निद्रानाश में निद्राजनक के रूप में होता है और कार्य क्षमता को बढ़ाता है।

सल्सोला रिक्तेरि के तरूण काण्ड और पत्र के चूर्ण 17-24 प्रतिशत विविध अम्लों के उत्पादन में प्रयोग होता है। इसका काण्ड सार अग्नि के लिए अच्छा है और यह 3600 कैलोरी गर्मी देता है। पौधे के तना में अधिक मात्रा में धूसर वर्ण रहता है। इसलिए तुर्कमेन लोग इसे रंजक द्रव्य के रूप में प्रयोग करते हैं।

कल्पना और प्रयोग :- एक बड़ा चम्मच (15 ग्राम) फूल आधा गिलास (100 मि०ली०) 70 प्रतिशत सुरा में डालकर कस कर बान्धें और 7-10 दिन छोड़े। अन्धेरे जगह पर रखकर बीच बीच में हिलाते रहें। तैयार सुरा सार को छानकर, 30-40 बूंद दिन में 3 बार भोजन से पहले लें।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

साल्विआ स्पीनोज़ा
SALVIA SPINOZA

वर्णन :– दुनिया में 700 प्रजातियों से ज्यादा मिलते हैं, मध्य एशिया देशों में 8 प्रजातियां और तुर्कमेनिस्तान में 16 प्रजातियां उपलब्ध हैं। कोपेतदग में उनमें से दस पैदा होते हैं।

साल्विका स्पीनोज़ा फूलों के कुल से संबंधित हैं। यह 30–50 से०मी० लंबी और यह द्विवार्षिक पौधों का प्रतिनिधि है। यह पौधा सीधा पैदा होता है, तना और पत्ते सफेद रोम से आच्छादित होता है। पत्ते चमकते हरे या सफेद, अंडाकार में रहते हैं। फूल के नज़दीकी पत्रों में धागा नहीं रहता है। फूलों का शीर्ष भाग 2–3.5 से०मी० लंबा होता है। फूल का पतला भाग सफेद होता है। फल चर्मफल जैसे तीन बाजू वाला है। बीज वृक्काकार, धूसर वर्ण में रहता है।

पौधा अप्रैल, जून में पुष्प देता है। फल जून–जुलाई में पकता है।

जैविक लक्षण :–साल्विका स्पीनोज़ा हमारे देश में अक्सर 400–1200 मीटर ऊँचायी पर उगता है। यह नमी जमीन तक बढ़ता है। इस पौधे को प्रकाश चाहिए यह जल को पसंद करता है। यह पूर्णतः बीजों से प्रजनन करता हैं।

विस्तार :– यह पौधा हमारे देश में दक्षिण–पश्चिमी कोपेतदग में गमिशली, गरदेपे, सायवान और मगतिमगुली में, मध्य कोपेतदग में, अर्चविल, गोकदेरे, मगतिमगल, नीवतोनोवका, याब्लोनोवका, गुर्तलीसुव, होवदान, मुर्जेदग में, बधिज में, अकरचेश्में, रेगिस्तान में, हज़र की तराई पर, कोपेतदग के तराई क्षेत्रों पर पाया जा सकता है।

प्राकृतिक उपलब्धि :–साल्विका स्पीनोज़ा दुर्लभ पौधों में नहीं है। औषध कार्यों के लिए पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध है। प्रतिवर्ष 5–8 टन कच्चा माल संग्रह करने का मौका है। इसका कृषीकरण भी किया जा सकता है।

औषधीय कच्चा माल :– औषधीय कार्यों के लिए क्षुप और बीज कच्चा माल के रूप में काम करते हैं। क्षुप सामान्य रूप से छज्जे के नीचे सुखाया और तैयार किया जाता है। बीज पूरा पकने के बाद संग्रह करनी चाहिए। तैयार कच्चा माल कागज़ की बोरियों या पेटियों में अंधेरे स्थान पर रखना चाहिये। रखने का समय 2–3 साल है।

रासायनिक संघटन :– यह मालूम हो गया कि साल्विका स्पीनोज़ा क्षुप में 0.19–06 प्रतिशत उड़नशील तैल, ऐल्कलोइड्स, 0.2 प्रतिशत कोमारिन्स, 0.25 प्रतिशत फ्लैवोनोइड्स रहते हैं। मूल में टैनिन रहता है। यह प्रमाणित हुआ कि इसमें 27.4 प्रतिशत तैल और ओलीक, लीनोलीक अम्ल भी इसके तत्व में रहते हैं।

प्रयोग :– सुरा सार और फाण्ट जो क्षुप से बनते हैं, आमाशय शूल, हृद्रोग, नाडीरोग में मध्य एशिया में प्रयोग होते हैं। तजाकिस्तान में पत्र दन्तशूल के लिए उपयोगी है। पुष्प से निकाले उड़नशील तैल इत्र और आहार उद्योग में प्रयोग होते हैं। बीज अतिसार में नेत्रों में से धूल निकालने हेतु प्रयोग करते हैं। बखर्ली, गोकदेपे और मगतिमगुली एत्राप्स के पर्वतीय गांवों के स्थानीय लोग इस पौधे के बीज को नेत्र रोगों में प्रयोग करते हैं। प्राचीन समय से लोक चिकित्सा में यह एक सुप्रसिद्ध उपचार के रूप में जाना जाता है।

कल्पना और प्रयोग :– अच्छी तरह कुटा हुआ क्षुप एक बड़ा चम्मच एक गिलास उबले पानी में डालकर छान लें। एक बड़ा चम्मच गरम तैयार औषध को 20–30 मिनट भोजन से पहले प्रतिदिन सेवन करें।

एक बड़ा चम्मच अच्छी तरह कूटा हुआ पौधे को एक गिलास पानी में डालकर तामचीनी पात्र में दस मिनट उबालें। छानकर एक बड़ा चम्मच तैयार औषध दिन में 3 बार प्रतिदिन पियें।

पौधे के 1–2 बीज रात में सोने से पहले नेत्र में डालें। सवेरे नेत्रों में से पूय बाहर निकलता है। यह लेप एक सप्ताह प्रयोग करना चाहिये। आप स्वस्थ हो जायेंगे इसे आप वैद्य से संपर्क करने के बाद प्रयोग करावें।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

सांबूकुस एबुलुस-ग्रास-एल्डर
SAMBUCUS EBULUS-GRASS-ELDER

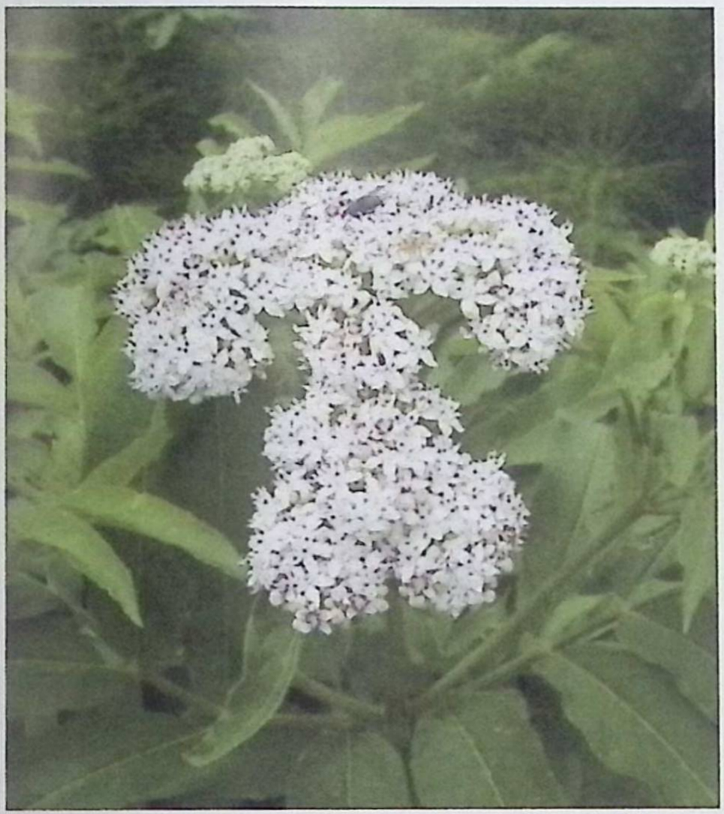

वर्णन :- विश्व में इस वन्य क्षुपीय पौधे की 40 प्रजातियाँ तथा मध्य एशिया के देशों में 11 प्रजातियाँ तथा तुर्कमेनिस्तान में 2 प्रजातियाँ मिलती हैं।

सांबूकुस एबुलुस, सांबूकुस कुल का 80-150 से०मी० ऊँचा सदस्य है। पौधे का तना भस्म जैसा तथा दरारयुक्त होता है। ताजी शाखायें नीली होती हैं। तने पर पत्र सम क्रमवार स्थित होते हैं। ये 20-30 से०मी० लम्बे, पक्षवत् विभाजित तथा 5-13 सूक्ष्म पत्रवाले होते हैं। ये अण्डाकार, छोटे डंठल वाले तथा आरावत् धारी वाले होते हैं। पुष्प बहुत छोटे, पीत तथा मनोहर सुगंध वाले होते हैं। पौधे के पुष्प छत्रक प्रकार के होते हैं। इसके पुष्प में पांच श्वेत, कभी कभी नारंगी, रक्त दल तथा पांच धूसर पुंकेसर होते हैं। इसका फल कृष्ण तथा तीन बीजवाला होता है।

जैविक लक्षण :- इसको अप्रैल-जुलाई तक पुष्प एवं अगस्त-सितम्बर में फल लगते हैं। पत्र की गंध बदबूदार होती है। यह पर्वतों की तराई में, घाटियों में, नदी किनारों पर तथा जलस्रोतों के पास उगता है।

विस्तार :- यह पौधा हमारे देश में दक्षिण- पश्चिमी कोपेतदग में (चेंदीर में) तथा मध्य कोपेतदग में (गोकदेरे में) मिल सकता है।

प्राकृतिक उपलब्धि :- यह दुर्लभ पौधों में से एक है। औषधीय उद्देश्यार्थ इसका भण्डार पर्याप्त नहीं है। इसकी खेती की सलाह दी जाती है। कोपेतदग तथा सुंत-हाझारदग राष्ट्रीय अभयारण्यों में इसका संरक्षण किया गया है।

औषधीय कच्चा माल :- औषधीय प्रयोगार्थ मूल, फल तथा पुष्प मूख्य द्रव्य के रूप में प्रयुक्त होते हैं। पुष्प को जब जुलाई-अगस्त में पूरे बहार में खिले होते हैं तब इकट्ठा किया जाता है। इनको चाकू अथवा विशिष्ट कैंची से काटकर, सावधानी पूर्वक बास्केट में रखकर छप्पर के नीचे सामान्य रूप से सुखाया जाता है। सांबूकुस एबुलुस-ग्रास-एल्देर के फल जब अगस्त-सितम्बर में पकते हैं और जहां इसका वर्ण गहरा लाल तथा स्वाद अम्ल-मधुर बनता है तब इकट्ठे किये जाते हैं। फलों को इसकी डंठल से अलग करके विशिष्ट यंत्र में 60-70 डिग्री से० पर अथवा सूर्यप्रकाश में खुली हवा में सुखाये जाते हैं। तैयार उत्पाद को कागज़ के थैलों में अथवा बक्सों में संचित किया जाता है। संचयन समय की अवधि 2 साल है।

रासायनिक संघटन :- इसके पुष्प में ग्लायकोसाइड, मेलिक तथा एसिटीक एसीड्स, क्लोरीन एसेन्स, विटामिन सी, केरोटीन तथा पदार्थ ए होते हैं। इसके फल में विटामिन सी, केरोटीन, साम्बसाइन, डामर, ग्लुकोझ तथा फ्रकटोज़ होते हैं। इसके पादवृन्त तथा त्वक् में गन्ध द्रव्य, क्लोरोफीन तथा फायटोस्टेरोल होते हैं। इसके मूल में पदार्थ ए तथा सेपोनीन होते हैं।

प्रयोग :- प्राचीन काल से ही लोक चिकित्सा में सांबूकुस एबुलुस का प्रयोग हो रहा है। पौधे के फल का प्रयोग विरेचक, स्वेदल तथा मूत्रल औषध के रूप में होता है। इसके फल से निर्मित मुरब्बे का प्रयोग राजयक्ष्मा तथा अर्श में होता है। पौधे के मूल से निर्मित फांट का प्रयोग वृक्क व्याधियों की चिकित्सा के लिये किया जाता है। इसके पुष्प से निर्मित फांट का प्रयोग स्वेदल तथा मूत्रल औषध टिक्की के रूप में होता है।

साथ ही श्वसन संस्थान के ऊर्ध्व श्लेष्मल स्राव तथा संधिवात में सांबूकुस एबुलुस उपयोगी है। इसके फल से निर्मित गाढा स्राव जठराग्नि प्रदीपक है। सांबूकुस एबुलुस का प्रयोग सर्पदंश तथा कीटदंश में भी होता है।

जिस व्यक्ति को काटा गया है उसके दंश स्थान पर पौधे को, रक्तस्राव होने तक रगड़कर हम उस व्यक्ति की जान बचा सकते हैं।

इसके पुष्प से निर्मित औषध का प्रयोग गले में शूल तथा हर्पीस सिम्पलैक्स की चिकित्सा के लिये किया जाता है। दग्धव्रण की चिकित्सा के लिये भी इसका प्रयोग होता है। पुष्प के फांट के प्रश्वसन से नाडीशूल तथा रक्तवाहिनीओं की व्याधियों की चिकित्सा कर सकते हैं। इस पौधे से बनी चाय ज्वर को शांत करता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

कल्पना तथा प्रयोग :– एक बड़ा चम्मच पुष्प को 200 मि०ली० उबले हुए पानी में मिलाकर 20 मिनट तक रखें। तत्पश्चात् छानकर दिन में तीन बार सुखोष्ण सेवन करें। यह स्वेदल है।

सांबूकुस एबुलुस के 6–8 पत्र के चूर्ण को डेढ़ गिलास (300 मि०ली०) पानी में मिलाकर 10 मिनट के लिये उबालें। छानकर 3 बड़े चम्मच (45 ग्राम) दिन में तीन बार भोजन पूर्व लें। यह आंत्रशोथ के लिये उपयोगी है।

एक किलो फल को एक किलो चीनी तथा दो गिलास (400 मि०ली०) पानी में मिलायें। फल को कुचलकर मिलाना चाहिये। गाढ़ा होने तक पकायें। यह राजयक्ष्मा तथा अर्श में मदद करता है। सांबूकुस एबुलुस के 100 ग्राम चूर्ण में एक गिलास उबला हुआ पानी मिलाकर, ढक्कन लगाकर 20 मिनट तक रखें। छानकर चाय के दो चम्मच मात्रा में दिन में 3–4 बार भोजन पूर्व सेवन करें।

स्कबिओसा कोलुंबारिआ
SCABIOSA COLUMBARIA

वर्णन :– विश्व में इस औषधीय खरपतवार पौधे की 100 प्रजातियाँ हैं जिनमे मध्य एशिया देशों में 34 प्रजातियाँ तथा तुर्कमेनिस्तान में 7 प्रजातियाँ मिलती हैं।

स्कबिओसा कोलुंबारिआ एक 40–60 से०मी० लम्बा, बहुवर्षिय पौधा है। कांड शाखायुक्त, बाहर से मोटा तथा तरंगित, मखमली होता है। फलरहित शाखा के पत्र लम्बीकृत, भालाकार, चौड़े तथा लम्बे रेसेवाले होते हैं। फलयुक्त कांड के पार्श्व, अधो पत्र तीक्ष्ण और किनारे के ओर बहुत छोटे तथा कम होते है। ऊर्ध्व पत्र पक्षवत् विभाजित, पतले भालाकार अथवा रेखायुक्त होते हैं।

पुष्प श्वेत, धूसर, कभी-कभी गुलाबी, 3 से०मी० लम्बे तथा लम्बे सूत्र वाले होते हैं। इसके पत्र मुड़े हुए भाले जैसे तथा मोटे होते हैं। इसको एक मृदु, रोमश आच्छादन होता है। बीज इसका फल है।

जैविक विस्तार :– समुद्रतल से 1200–1600 मीटर की ऊँचाई पर यह पौधा उगता है। इसको मरुभूमि अथवा रेतीली ढलानों पर उगना पसंद है। स्कबिओसा कोलुंबारिआ को पुष्प तथा फल जून एवं जुलाई में आते हैं। यह प्रजनन बीज द्वारा करता है।

विस्तार :– पौधा दक्षिण-पश्चिमी कोपेतदघ, हाझारद में मिल सकता है।

प्राकृतिक उपलब्धि :– हमारे देश का यह दुर्लभ पौधों में से एक पौधा है। औषधीय उद्देश्यार्थ इसका संरक्षण किया गया है। इसकी खेती करने की तथा संचय करने की सलाह दी जाती है।

औषधीय कच्चा माल :– औषधीय पौधे के रूप में मूल, पत्र तथा अपतृण का प्रयोग होता है। जून में जब पौधे को पुष्प लगते हैं तब पत्र एवं अपतृण को इकट्ठा किया जाता है तथा सुखाया जाता है। औषधीय उत्पाद को कपड़े के थैलों में संचय किया जाता है। संचयन समय की अवधि 1–2 साल है।

रासायनिक संघटन :– इसका रासायनिक संघटन पर्याप्त रूप से ज्ञात नहीं है। इसमें आल्कलोइड, कार्बोहाइड्रेट तथा एल्कोहोल होते हैं।

प्रयोग :– लोक चिकित्सा में पौधे का प्रयोग बल्य, मूत्रल, कफनिःसारक तथा दीपन औषध के रूप में होता है।

इसके मूल तथा अपतृण से निर्मित औषधीय सुरा तथा प्रवाही का प्रयोग फ्लु, राजयक्ष्मा, श्वसन नलिका शोथ, श्वसनक ज्वर, श्वासनलिका शोथ, स्त्री रोग, मांसपेशी शोथ, अपस्मार, संक्रमक व्याधियाँ (रोमांतिक-कर्णमूलीय ग्रन्थि शोथ) अतिसार तथा आंत्र व्याधियों में होता है। इसका प्रयोग चर्मशोथ तथा घनास्रसिराशोथ में भी होता है।

तुर्कमेन लोक चिकित्सा में इसके कुचले हुए मूल तथा पत्र का प्रयोग कुन्तिका सुई, चर्मशोथ को आच्छादन करने, क्षत, चर्मकील मधुमेह, पर लेप के लिये होता है। इसको कोथ में तथा गंडूषार्थ भी प्रयुक्त किया जाता है। इसके कांड, पत्र तथा पुष्प पीत, रक्त तथा नीला वर्ण के होते हैं।

कल्पना तथा प्रयोग :– एक तामचीनी पात्र में 2 बड़े चम्मच (30 ग्राम) कुचले हुए मूल को एक गिलास

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

पानी में मिलाकर 5-10 मिनट धीमी आंच पर उबालें। छानकर दिन में तीन बार सुखोष्ण प्रयोग करें। औषधीय सुरा lanelet needle wart में उपयोगी है।

एक चम्मच (5 ग्राम) औषध पर उबला हुआ पानी डालकर थोड़ी देर रखें। छानकर 2 चम्मच दिन में तीन बार लें।

स्कोर्ज़ोनेरा लित्विनोविइ
SCORZONERA LITVINOVII

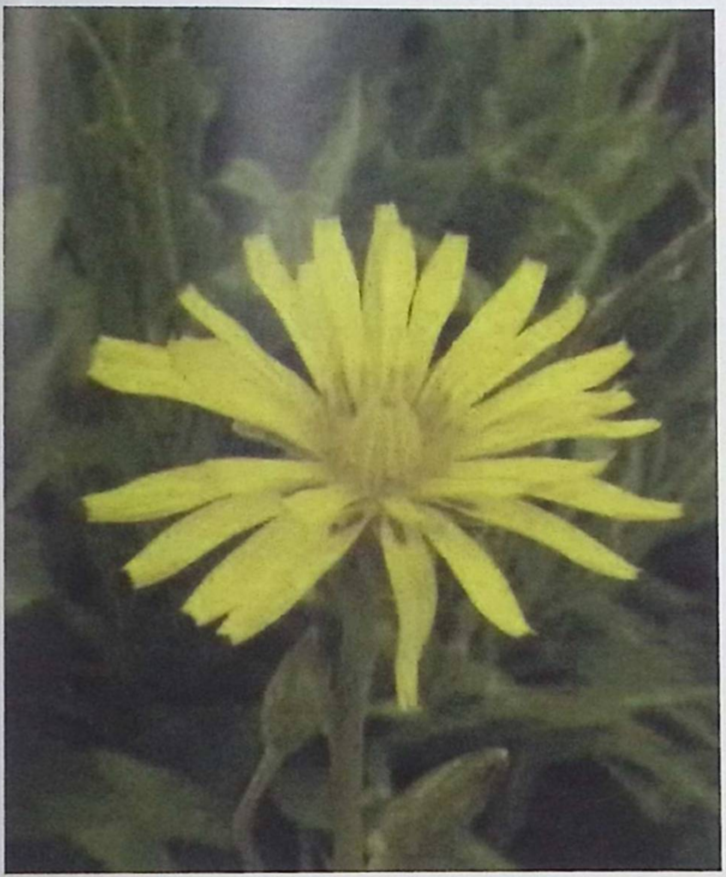

वर्णन :- पीत पुष्पवाला यह पौधा हमारे देश में पहाड़ों की घाटियों में उगता है।

स्कोर्ज़ोनेरा लित्विनोविइ कोम्पोसिते कुल का 12-30 से०मी० ऊँचा, असाधारण पौधा है। पत्र लम्बे, श्वेत, मृदु रोम से अंदर की ओर आच्छादित तथा 0.8-1.5 से०मी० चौड़े होते हैं। सुंदर, पीले पुष्प सुबह खिलते हैं तथा शाम को बंद हो जाते हैं। पुष्प एक गुच्छे में एकत्रित होते हैं। एक गुच्छे में प्राय: 40 पुष्प होते हैं। बीज लम्बा, चिकना, श्वेत-पीत होता है।

तुर्कमेनिस्तान में स्कोर्ज़ोनेरा लित्विनोविइ की 13 प्रजातियाँ पाई जाती हैं। पौधे को अप्रैल-मई में पुष्प तथा मई की आखिर में फल लगते हैं। पुष्प पीत तथा वेनीलीन जैसी मनोहर सुगंधयुक्त होते हैं।

जैविक लक्षण :- पौधा समुद्र तल से 700-2000 मीटर की ऊँचाई पर उगता है। इसको नमी पसंद है तथा सामान्यत: पहाड़ों की घाटियों में उगता है। गर्मी की शुरूआत में पौधा सूख जाता है। इस तरह पौधे की एकवर्षिय जिंदगी समाप्त हो जाती है। पौधे का जमीनगत कंद 2-3 से०मी० लम्बा तथा गोलाकार होता है। कंद में जीवन के लिये आवश्यक तत्व रहते हैं। इसलिये शुरूआती वसंत में फिर से उगता है तथा अपना जीवन चालू रखता है।

विस्तार :- स्कोर्ज़ोनेरा लित्विनोविइ हमारे देश में मध्य कोपेतदग में, हेयराबात, सेरहेताबात, चीलदुहतारे, तथा कोयतेनदग में उगता है।

प्राकृतिक भण्डार :- यह पौधा दुर्लभ पौधों में से नहीं है। औषधीय उद्देश्यार्थ इस पौधे के भण्डार पर्याप्त है। हमारे देश में प्रतिवर्ष 5-10 टन औषधीय कच्चा माल इकट्ठा किया जा सकता है।

औषधीय कच्चा माल :- औषधीय उद्देश्यार्थ कंद का प्रयोग होता है। कंद को कुदाल से खोदकर निकाला जाता है। साफ करके कंद में आरपार छेद करें तथा एक पात्र में पानी में रखकर उबालें। कंद दूध जैसे प्रवाही का उत्सर्जन करता है। इस प्रवाही को मौंटेन कुड कहते हैं। तैयार कच्चे माल को एक कांच पात्र में संचय किया जाता है। संचयन समय की अवधि 2-3 साल है।

रासायनिक संघटन :- औषधीय कंद में ग्लायकोसाइड्स तथा एल्डीहाइड्स होते हैं। इसमें शर्करा, एस्कोर्बिक एसीड तथा पोटेशियम, फास्फोरस एवं आयरन के लवण भी होते हैं।

प्रयोग :- 16वीं शताब्दी में इस पौधे का प्रयोग चिकित्सकीय तथा सांस्कृतिक पौधे के रूप में होता था। प्राचीन काल से ही सर्पदंश के विषविरोधी औषध के रूप में इसका प्रयोग हो रहा है। यह कॉलेरा में मदद करता है। दांतों के लिये यह बहुत उपयोगी है।

मधुमेह के रोगी के लिये पौधे के कंद से निर्मित सूप बहुत उपयोगी है। शीतल पेय बनाने के लिये भी इसका प्रयोग किया जाता है।

कल्पना तथा प्रयोग :- कंद के दो टुकड़ों को एक गिलास पानी में मिलाकर धीमी आंच पर 10-15 मिनट के लिये उबालें। छानने के बाद एक बड़ा चम्मच दिन में तीन बार लें। अगर कच्चा खाया जाये तो वह अच्छा कार्य करता है। यह स्वादिष्ट है। कंद से सलाद भी बनाये जाते हैं।

सलाद कंद को पानी में वीनीगर के साथ उबालें। काटकर निंबू का रस मिलायें। अगर तेल मिलाया जाये तो और भी स्वादिष्ट बनता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

स्कुतेल्लारिआ गलेरिकुल्लाता SCUTELLARIA GALERICULLATA

वर्णन :- विश्व में इस पौधे की लगभग 300 प्रजातियाँ है जिनमें मध्य एशिया देशों में 140 प्रजातियाँ तथा लगभग 8 प्रजातियाँ तुर्कमेनिस्तान में मिलती हैं।

स्कुतेल्लारिआ गलेरिकुल्लाता दोदकगुल्ली कुल का लगभग 15-50 से०मी० लम्बा, secular पौधा है। यह पेड़ जैसा दिखता है। तना सीधा, शाखायुक्त अथवा सादा तथा रोमाच्छादित होता है। पत्र लम्बे, रोमश 2-6 से०मी० लम्बे एवं 0.7-2 से०मी० चौड़े होते हैं। इसको एक छोटा हृदयाकार तना होता है।

पौधे के पुष्प एकाकी तथा पत्रों के गुच्छे में स्थित होते हैं। पुष्पों की डंठल छोटी, एक पार्श्व में झुकी होती है। कप, छोटे, घने पीताभ पिंगल कुल, 13-8 (22) मि०मी० लम्बी किरीट युक्त रोम से आच्छादित होता है।

जैविक लक्षण :-स्कुतेल्लारिआ गलेरिकुल्लाता समुद्र तल से 800-1200 मीटर की ऊँचाई पर उगता है। पौधे को मई-अगस्त में पुष्प खिलते हैं तथ यह बीज द्वारा प्रजनन करता है।

विस्तार :- हमारे देश में केवल कोयतेनदग में यह पौधा मिलता है। यह नदी किनारों पर, नम स्थानों पर, बगीचे एवं मैदान में उगता है।

प्राकृतिक उपलब्धि :- स्कुतेल्लारिआ गलेरिकुल्लाता हमारे देश के दुर्लभ पौधों में से है। इसको लगाये जाने की आवश्यक्ता है।

औषधीय कच्चा माल :- औषधीय उद्देश्यार्थ पौधे के मूल तथा क्षुप को कच्चे माल के रूप में प्रयोग होता है। सामान्यत: पौधे के कच्चे माल को खुले सपाट स्थान पर सुखाने के लिये तथा तैयार करने के लिये रखा जाता है। तैयार कच्चे माल को कपड़े अथवा कागज़ के थैलों में संचित किया जाता है। पौधे के लिये संचित समय की अवधि 1-2 साल तथा मूल के लिये 3-4 साल की होती है।

रासायनिक संघटन :- स्कुतेल्लारिआ गलेरिकुल्लाता के पत्र में पीत रंजक पदार्थ, फ्लेवोन्स, ग्लायकोसाइड्स तथा इथरीअल तेल होते हैं। यह अनुमोदित किया गया है कि पौधे के मूल में एक चर्वित पदार्थ होता है।

प्रयोग :- इस पौधे से निर्मित प्रवाही अथवा रस उच्च रक्तचाप, ज्वर, कास तथा रक्तस्राव में प्रयुक्त होता है। यह पौधा शूल का भी शमन करता है, तथा इसमें मूत्रल गुण है।

स्कुतेल्लारिआ गलेरिकुल्लाता मृदुता भी करता है तथा रक्तसंवहन तथा कफ के लिये यह आवश्यक है।

चाइनीस चिकित्सा में स्कुतेल्लारिआ गलेरिकुल्लाता को हुआन्जिन के नाम से जाना जाता है तथा इसका प्रयोग संज्ञाहरण उद्वेष्टनजनित औषध के रूप में भी होता है। इसका प्रयोग ज्वर शमन के लिये होता है। साथ ही अपस्मार, हृद्रोग (विशेषत: हत्मांसपेशी शोथ) तथा संधिवात में औषध के रूप में भी इसका प्रयोग होता है। कृमिजन्य रोगों को शान्त करता है। स्कुतेल्लारिआ गलेरिकुल्लाता तिब्बती चिकित्सा में भी लोकप्रिय है।

इसके मूल से निर्मित रस का प्रयोग नाडी तंत्र के विकारों में किया जाता है। स्कुतेल्लारिआ गलेरिकुल्लाता रक्त वाहिनियों को विस्फारित करके रक्त संचरण बनाये रखने में मदद करता है। यह रस शिर:शूल तथा नाड़ी विकार की चिकित्सा के लिये भी उपयोगी है।

कल्पना तथा प्रयोग :- इसके छोटे छोटे टुकडे करें। तत्पश्चात् 70 प्रतिशत इथाइल एल्कोहोल में 5 ग्राम कुचला हुआ मूल मिलायें। स्कुतेल्लारिआ गलेरिकुल्लाता के मिश्रण को धीमी आंच पर 10 मिनट के लिये उबालें तथा एक कांच पात्र में कसकर ढक्कन बंद करके रखें। छानकर इस मिश्रण की 20-30 बूंदे औषध के रूप में प्रयुक्त करें।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

सीदेरितिस मोन्ताना
SIDERITIS MONTANA

वर्णन :- सीदेरितिस मोन्ताना, लाबिआते कुल का 10-40 से०मी० ऊँचा पौधा है। यह वार्षिकी पौधा है। इस पौधे का कांड सादा तथा शाखायुक्त होता है। इसके पत्र अधिमुख होते हैं। ऊर्ध्व तथा अधोपत्र नुकीले तेज तथा दंतील होते हैं। पुष्प पत्र के नीचे स्थित होते हैं। ये 7-9 मि०मी० लम्बे होते हैं। पुष्प पीत और जब खिलते हैं तब गहरे धूसर होते है। ऊर्ध्व हिस्सा रेसेदार आवरण से आच्छादित होता है।

फल अण्डाकार तथा लम्बीकृत होते हैं। ये लगभग 1.3-2 मि०मी० लम्बे तथा 1-1.25 चौड़े होते हैं। फल धूसर होते हैं। फल छोटे होते हैं। पौधे को मई-जून में पुष्प खिलते हैं तथा जून-अगस्त में फल लगते हैं।

जैविक लक्षण :- इस पौधे को छोटी पहाड़ियां, चट्टानों, ढलानों तथा पर्वतों पर उगना पसंद है। यह पौधा बीज द्वारा प्रजनन करता है।

विस्तार :- यह पौधा हमारे देश में मध्य कोपेतदग, गेरपनापद, गोकदेरे, आर्चाबील, होवदान, देगरमेरीलीद, आर्चमान, पूर्वीय-पश्चिम कोपेतदग खोजाकालाद, मागत्यमगुलय, योलदेरे, हाझारदाग, सुंत, एयदेरे, नोखूर, कुरेनदाग तथा पूर्वीय कोपेतदग जैसे स्थानों पर विस्तृत रूप से फैला हुआ है।

प्राकृतिक उपलब्धि :- यह पोधा हमार देश में दुर्लभ पौधा नहीं है। औषधीय उद्देश्यार्थ इस पौधे के भण्डार पर्याप्त है। हमारे देश में यह पौधा अक्सर मिल जाता है। इस पौधे का मूल भाग जमीन में 10 मीटर तक गहरा जाता है। प्रतिवर्ष इस पौधे के 3-8 टन इक्ट्ठा किया जा सकता है। कच्चे माल के रूप में यह पौधा पूर्व-पश्चिमी कोपेतदग में उगता है।

औषधीय कच्चा माल :- औषधीय उद्देश्यार्थ इस पौधे के पुष्प तथा पत्र प्रयुक्त होते हैं औषधीय उद्देश्यार्थ इस पौधे को 12.00 बजे इकट्ठा करना अच्छा है। कच्चे को माल इकटठा करने के लिये चाकू अथवा कैंची का प्रयोग करना अच्छा है। पौधे को कागज़ अथवा कपड़े पर सुखाया जाता है। तैयार करने के बाद कच्चे माल को कागज़ अथवा कपड़े के थैलों में सुरक्षित किया जाता है। संचय समय की अवधि 1-2 साल है।

रासायनिक संघटन :- इस पौधे के रासायनिक संघटन का अध्ययन अभी तक नहीं किया गया है। औषधीय कच्चे माल में उत्पत् तेल, तिक्त पदार्थ तथा टेनीन होते हैं। तीन स्टिरोइड पदार्थ ए, बी तथा सी होते हैं। उद्योग में इस पौधे का प्रयोग होता है।

प्रयोग :- लोकप्रिय चिकित्सा में इस पौधे का प्रयोग उच्च तापमान, श्वसन नलिका शोथ, शोफ तथा हृद्रोगों में होता है।

कल्पना तथा प्रयोग :- इस पौधे के बारीक कटे हुए टुकड़े 2 बड़े चम्मच को 2 गिलास (400 मि०ली०) उबलते हुए पानी में मिलाकर 10 मिनट तक रखें। छानकर शोथ में चाय की तरह प्रयोग करें।

इस क्षुप के एक बड़े चम्मच (15 ग्राम) को एक लीटर उबलते हुए पानी में मिलाकर 20-30 मिनट के लिये रखें। छानकर इस तैयार क्वाथ से गले के लिये गंडूष करें। क्वाथ सुखोष्ण होना चाहिये।

पौधे के बारीक कटे हुए टुकड़े एक बड़े चम्मच (15 ग्राम) को 200 मि०ली० औषधीय सुरा में मिलाकर अंधेरे स्थान पर 10-15 दिन तक रखें। छानकर 5-6 (10) बूंद दिन में तीन बार भोजन से पूर्व पीयें। संचय करने की अवधि 1 महिना है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

सिलिबुम मारिआनुम
SILYBUM MARIANUM

वर्णन :- सिलिबुम मारिआनुम एक औषधीय कण्टकयुक्त, घूरे पर उगने वाला पौधा है। मध्य एशिया देशों में 1 प्रजाति तथा तुर्कमेनिस्तान में 1 प्रजाति सहित विश्व में 2 प्रजातियाँ मिलती है।

सिलिबुम मारिआनुम कोम्पोसिते कुल का द्विवर्षीय क्षुपीय पौधा है। कांड अनावृत अथवा कुछ जाली बनाने वाला, लोमश, झर्रीदार तथा शाखायुक्त होता है। पत्र हरे, चमकीले, तीव्र-दन्तुर तथा बड़े श्वेत धब्बों वाले होते हैं। ऊर्ध्व पत्र अवृंत, मूल के पास वाले पत्र बहुत बड़े तथा लम्बी डंठल वाले होते हैं।

कांड के ऊर्ध्व भाग में विरल ही विभाजित होती है तथा नलिकाकार नीले अरूण अथवा बैंगनी पुष्पों वाला बहुत बड़ा शिखर इसके अग्र भाग पर होता है। नीचे के ओर मुड़े कण्टक युक्त फल काष्ठफल है। पौधे को गर्मी में पुष्प आते है।

जैविक लक्षण :- सिलिबुम मारिआनुम मूल के समीप अनेक पत्र उत्पन्न करता है जो प्रथम वर्ष में नीचे फैलने वाला छोटा क्षुप बनाता है। दूसरे साल में छोटे क्षुप से 60-150 से०मी० तक लम्बी पुष्पोत्पादक कांड निकलते हैं। पौधा बीज द्वारा प्रजनन करता है।

विस्तार :- सिलिबुम मारिआनुम दक्षिण-पश्चिमी कोपेतदग में, मागतयगुलय तथा सुंबार घाटी में फैलता है।

प्राकृतिक उपलब्धि :- सिलिबुम मारिआनुम तुर्कमेनिस्तान के दुर्लभ क्षुपीय पौधों में से नहीं है। औषधीय उद्देश्यार्थ प्रयोग करने के लिये संसाधन पर्याप्त है। वार्षिक उपज 10-15 (20) टन की है। पौधे की खेती की जा सकती है।

औषधीय कच्चा माल :- औषधीय उद्देश्यार्थ प्रयोग में लाने के लिये सिलिबुम मारिआनुम के काष्ठफल इकट्ठे किये जाते हैं। पके फल को इकट्ठा करना चाहिये। पुष्प तथ पुष्पविन्यास को तेज चाकू अथवा कैंची से काटना चाहिये। कच्चे माल को 60-70 डिग्री से० पर सुखाना चाहिये। तैयार कच्चे माल को कांच पात्र में अथवा कागज़ के बक्सों में पैक किये जाने चाहिये। इनको शुष्क स्थान में संचित करना चाहिये। पुष्प के लिये संचयन समय की अवधि 3 साल है।

रासायनिक संघटन :- सिलिबुम मारिआनुम का अभी तक पूरी तरह संशोधन नहीं किया गया है। पौधे में निम्नलिखित घटक पाये गये हैं। 0.08 प्रतिशत इथरीअल तेल, विटामिन के, राल, जीवजनक अमीन थायरमीन, हीस्टेमीन), फ्लेवोनोइड्स, श्लेष्मा तथा 16-20 प्रतिशत चिकने तेल।

प्रयोग :- प्राचीन काल से ही लोक चिकित्सा में सिलिबुम मारिआनुम के बीज का प्रयोग यकृत्, पित्तवह संस्थान तथा प्लीहा की व्याधियों में हो रहा है। तुर्कमेन लोक चिकित्सा में (मांगत्यमगुलय क्षेत्र में) पित्ताश्मरी जन्य शूल, कामला, अर्श, विबंध, प्रभावशाली तथा एक तिक्त बल्य नुस्खे के रूप में प्रयोग होता है।

मध्य युग के प्रख्यात वैज्ञानिक तथा चिकित्सक अबु अली इब्न सीना ने इस पौधे का प्रयोग मूत्रल के रूप में किया था।

सगर्भा स्त्री तथा स्तनपान कराने वली स्त्रिओं को इस पौधे का प्रयोग करने से पूर्व चिकित्सक की सलाह लेनी चाहिए।

कल्पना तथा प्रयोग :- सिलिबुम मारिआनुम के शुष्क चूर्ण दो बड़े चम्मच (30 ग्राम) में 0.5 लीटर पानी मिलाकर एक तामचीनी पात्र में दो भाग कम होने तक उबालें। छानकर एक बड़ा चम्मच (15 ग्राम) प्रति घण्टे लें। प्रत्येक बार लेने के बाद बहुत पानी पीने की सलाह दी जाती है।

सिलिबुम मारिआनुम के बीज का शुष्क चूर्ण 1 बड़ा चम्मच (15 ग्राम) दिन में 4-5 बार लें। प्रति औषध सेवन के बाद बहुत पानी पीने की सलाह दी जाती है। चिकित्सा समय अवधि 1 महिने की है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

सोलानुम नीग्रुम
SOLANUM NIGRUM

वर्णन :- विश्व में इस कुतृण पौधे की लगभग 1700 प्रजातियाँ पाई जाती है जिनमें मध्य एशिया देशों में 22 प्रजातियाँ तथा तुर्कमेनिस्तान में 3 प्रजातियाँ मिलती हैं। इसको हौड्सबेरी नाम भी दिया गया है।

सोलानुम नीग्रुम हौंड्सबेरी कुल का, 15-70 से०मी० ऊँचा, एकवर्षिय क्षुपीय पौधा है। यह सीधा बढ़ता है तथा इसकी अनेक शाखायें होती हैं। इसका तना तथा पत्र अनावृत्त होते हैं। इसका अधोभाग रोमश तथा अण्डाकार होता है। यह 4-10 से०मी० लम्बा तथा 2-6 से०मी० चौड़ा होता है। पुष्प सितारे जैसे दिखते हैं, पत्र श्वेत तथा छोटे होते हैं। ये पुष्प समूह में एकत्रित होते हैं तथा डाल जैसे दिखते हैं। बेर (फल) का गुब्बारे जैसा आकार होता है। इसका आकार 7-9 मि०मी० होता है। यह काला अथवा लाल होता है। इसको जून-सितम्बर में पुष्प खिलते हैं तथा अगस्त-अक्तूबर में फल लगते हैं।

जैविक लक्षण :- हमारे देश में समुद्रतल से 400-1200 मीटर की ऊँचाई पर यह पौधा उगता है। इसको नम स्थानों पर उगना पसंद है। इसका प्रजनन बीज द्वारा होता है।

विस्तार :- सोलानुम नीग्रुम हमारे देश में कृषि क्षेत्रों में, मैदानों में, जलस्रोतों के समीप, नदी किनारे तथा पर्वतों की तराई में विस्तृत रूप से फैला हुआ है।

प्राकृतिक उपलब्धि :- हमारे देश में यह दुर्लभ पौधों में से नहीं है। औषधीय उद्देश्यार्थ इसके भण्डार पर्याप्त है।

औषधीय कच्चा माल :- औषधीय उद्देश्यार्थ पत्र, पुष्प तथा फल का प्रयोग कच्चे माल के रूप में होता है। इसको छज्जे के नीचे अथवा शुष्क कमरों में सुखाया जाता है। इसको पुष्प लगने के समय पत्र इकट्ठे करने चाहिये तथा फल पकने पर इकट्ठे करने चाहिये। पत्र तथा फल का कागज़ के बक्सों में संचित करना चाहिये। संचयन समय की अवधि 1-2 साल है।

रासायनिक संघटन :- इसका रासायनिक संघटन बहुत मुश्किल है। मूल तथा तने में उन्त्रोनित बी, ग, उत्रोसाइड ए तथा बी स्टीरोइड्स होते हैं। इसमें कार्बोहाइड्रेट, ओर्गेनक एसीड, इथर तेल, एल्कलोइड, विटामिन सी, राम्नोस, ग्लुकोझ, गेलेटोझ भी होते हैं। साथ ही पत्र में 3 अन्य तत्व पोलीसेकेराइड्, स्टार्च तथा कार्बोहाइड्रेटस होते हैं। ये तीन तत्व बेर (फल) में भी होते हैं। इसमें फीनोलकार्बन, क्लोरोजन तथा केफीक एसीड्स भी होते हैं। इसके 16 प्रतिशत तेल तथा फोस्फोलीपीड्स होते हैं।

प्रयोग :- पौधे के लाभ बहुत विस्तृत है। विख्यात वैज्ञानिक जो औषधीय पौधों में रुचि रखते थे, जैसे हीपोक्रटीस, फीओफ्रेस्ट, इब्न सीना, बीरुनी तथा गुरगेंली ने सोलानुम नीग्रुम के लाभ के बारे में लिखा है। प्राचीन काल से ही भारतीय, तिब्बती, मेंगोलीयन, एरेबीक तथा तुर्कमेन लोक चिकित्सा में इसका प्रयोग हो रहा है।

कोरियन चिकित्सा में इसका प्रयोग प्रतिश्याय तथा एलर्जी में होता है। होमीयोपैथी में इसका सार मस्तिष्क क्षोभ, जलसंत्रास मांसपेशी संकोच (cramp) तथा अपस्मार के लिये प्रयुक्त होता है। लोक चिकित्सा में इसके फाण्ट तथा मलहम का प्रयोग कफ:निसारक के लिये, शूल निवारण के लिये, श्वसननलिका शोथ, श्वसन संस्थान की व्याधियाँ, बस्ति, आमाशय शूल, आमाशय शोथ तथा मांसपेशी संकोच में होता है। पौधे का सीरप सोरियासीस के लिये उपयोगी है। कोरियन चिकित्सा में पौधे का मूल जीवाणुनाशक तथा मूत्रल नुस्खे के रूप में प्रख्यात है। इसका प्रयोग मूत्राशय के विस्फार के लिये मूत्राशय मूत्रनलिका शोथ तथा सरल व्रणों में भी होता है। कई देशों में इसको औषधीय पौधा घोषित किया गया है। लोक चिकित्सा में पोधे का फांट नितम्बशूल अर्श, जीवाणुनाशक तथा विरेचक के रूप में प्रयुक्त होता है। इस पौधे के पत्र से निर्मित फांट तथा मलहम व्रणरोपण शीघ्र कर सकते हैं तथा इनमें संज्ञाहरण गुण है। इसका प्रयोग शिर:शूल, मूत्राशय संकोच, शूल, आमाशय शोथ, कास तथा संधिवात में होता है। सोलानुम नीग्रुम के पत्र से बना फांट प्रतिश्याय, स्वरयंत्र शोथ, मुखपाक तथा नेत्राभिष्यन्द में प्रयुक्त होता है। इस पौधे के तेल को पूययुक्त व्रण पर लेप के लिये प्रयोग में लाया जाता है।

प्राचीन अरमेनियन चिकित्सा में आमाशय शूल में होता था। इसा प्रयोग जिह्वा शोथ, कामला तथा आमाशय शूल में होता था। इस पौधे के पुष्प से निर्मित महलम में मूत्रल गुण है तथा कफनि:सारण में मदद करता है। मांसल फल से निर्मित फांट उच्च तापमान को कम कर सकता है। मांसल फल से निर्मित मुरब्बा शूल की चिकित्सा कर सकता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

ताजिकिस्तान में यह फांट यकृत् रोगों तथा हृद्दाह में प्रयुक्त होता है। मूल से निर्मित सीरप का प्रयोग उपदंश में होता है।

कल्पना तथा प्रयोग :- एक तामचीनी पात्र में पौधे के शुष्क पत्र 1 चाय का चम्मच (15 ग्राम) को एक गिलास (200 मि०ली०) उबले हुए पानी में डालकर 15 मिनट के लिये उबालें। छानकर दिन में तीन बार प्रयोग करें।

एक चम्मच (5 ग्राम) पुष्प को एक गिलास (200 मि०ली०) उबले हुए पानी में मिलायें। छानकर एक चाय का चम्मच (15 ग्राम) दिन में तीन बार प्रयोग करें।

पूरी तरह शुष्क हुए फल एक बड़ा चम्मच (15 ग्राम) को पानी में मिलाकर धीमी आंच पर 5 मिनट के लिये उबालें। छानकर आधा गिलास (100 मि०ली) फांट दिन में 3 बार पीयें।

एक बड़ा चम्मच (15 ग्राम) पौधे के मूल को एक गिलास (200 मि०ली) औषधीय सुरा में मिलायें। 15 मिनट के लिये रखें। छानकर 30 मिनट के लिये रखें। एक से दो बड़े चम्मच (15-30 ग्राम) सोने से 30-40 मिनट पूर्व लें। दिन में तीन बार भोजन पूर्व 2-3 सप्ताह के लिये लें। यह अत्यधिक कामोत्तेजना के लिये उपयोगी है।

सोलानुम पेर्सिकुम
SOLANUM PERSICUM

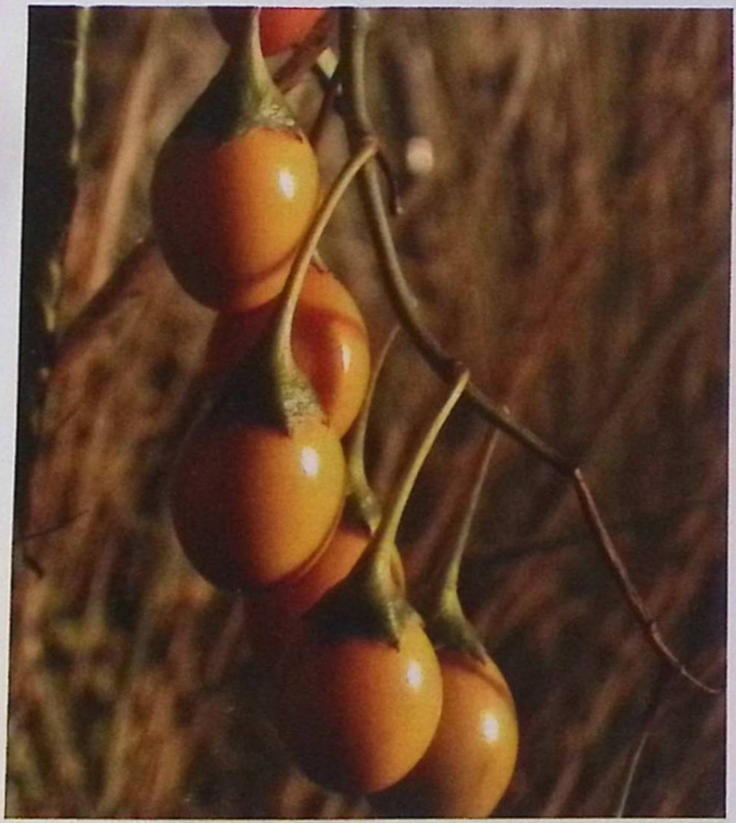

वर्णन :- यह बहुत आश्चर्यजनक औषधीय पौधा है। इस पौधे की विश्व में 1700 प्रजातियां है जिनमें मध्य एशिया में 24 प्रजातियां तथा तुर्कमेनिस्तान में केवल 3 प्रजातियां मिलती हैं।

सोलानुम पेर्सिकुम, तुर्कमेनिस्तान में इतुजुम्लर कुल का 30-50 से०मी० ऊँचा बहुवार्षिक पौधा है। इस पौधे का प्रकंद भूमि के अंदर फैलता है। इस पौधे का कांड शाखायुक्त तथा विस्तार में विकसित होता है। कांड अनावृत अथवा रेसेदार आवरण युक्त, अण्डाकार होता है। ये 3-9 से०मी० लम्बे 5-6 से०मी० चौड़े होते हैं। इस पौधे के पुष्पों को एक लम्बा रेसा होता है। बास्केट चपटा होता है। पुंकेसर रेसेदार आच्छादनवाला तथा धूसर होता है। फल लटकते हुए, अण्डाकार होते हैं। फल गुलाबी होते हैं। फल 9-13 से०मी० लम्बे, 1-1.5 से०मी० चौड़े होते हैं।

जैविक लक्षण :- सोलानुम पेर्सिकुम समुद्र तल से 600-1600 मीटर की ऊँचाई पर उगता है। पौधे को नम तथा अंधेरे स्थानों तथा जंगल में उगना पसंद है। पौधे का प्रजनन बीज तथा प्रकन्द द्वारा होता है। पौधे को जून -जुलाई में पुष्प खिलते हैं तथा अगस्त-सितम्बर में फल लगते हैं।

प्राकृतिक उपलब्धि :- हमारे देश में यह पौधा दुर्लभ है, लेकिन औषधीय उद्देश्यार्थ इसके भण्डार पर्याप्त है। 2007 में आर्चाबील में 6 पौधे मैदान में उगे थे, जो 20 मीटर लम्बा तथा 25 मीटर चौडा था। (डा० अक्सुरादोव, जी. गुर्बनमम्मेदोव)

औषधीय कच्चा माल :- औषधीय उद्देश्यार्थ इस पौधे के कांड तथा मूल का प्रयोग होता है। जब पौधे में पुष्प खिलते हैं तब कांड को इकट्ठा किया जाता है। कच्चे माल को पतझड़ के पहले तैयार किया जाता है। मूल को सुखाने के लिये रस्सी पर लटकाया जाता है। कांड से तैयार कच्चे माल को कागज़ के थैलों में 1-2 साल के लिये संचित किया जाता है। मूल से तैयार कच्चे माल को कागज़ के बक्सों में 3-4 साल के लिये संचयन किया जाता है।

रासायनिक संघटन :- इस पौधे के पत्र तथा कांड में 0.62-0.82 प्रतिशत एल्कलोइड मिलते हैं। फल में 4-4.7 प्रतिशत कार्बोहाइड्रेट्स, ग्लुकोझ, फ्रुक्टोझ, सेकेरोझ तथा 0.2-1.03 प्रतिशत ओर्गेनीक एसीड मिलते हैं। पौधे में केरोटीनोइड्स, विटामिन सी, तथा टोकोफेरोल आदि मिलते हैं।

लोक चिकित्सा में पौधे से निर्मित फांट का प्रयोग होता है। फांट का प्रयोग श्वसन संस्थान, श्वसन नलिका शोथ, तमक श्वास, नितम्ब शूल, कामला तथा गण्डमाला में प्रयुक्त होता है। यह पौधा मधु उत्पन्न करने वाला पौधा है।

कल्पना तथा प्रयोग :- एक कांच पात्र में पौधे के छोटे-छोटे टुकड़े 2 बड़े चम्मच (30 ग्राम) में 200 मि०ली० सुरा मिलाकर ढक्कन लगाकर अंधेरे स्थान पर 10 दिन तक रखें। छानकर एक चम्मच फांट दिन में 3 बार भोजन से पूर्व पीयें।

इस पौधे के सूखे कांड एक चम्मच (5 ग्राम) को 200 मि०ली० पानी में 10 मिनट तक धीमी आंच पर उबालें। छानकर ठंडा करें। एक बड़ा चम्मच (15 ग्राम) दिन में तीन बार पीयें।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

एक बोतल में पौधे के कुचले हुए कांड एक बड़ा चम्मच (15 ग्राम) को एक लीटर पानी में मिलाकर थोड़ी देर रखें। छानकर एक बड़ा चम्मच दिन में तीन बार पीयें।

सोफ़ोरा पकीकार्पा (पगोडा-ट्री)
SOPHORA PACHYCARPA (PAGODA-TREE)

वर्णन :- सोफ़ोरा पकीकार्पा (पगोडा-ट्री) शिम्बी उत्पन्न करने वाला पौधा है। विश्व में इस पौधे की 5 प्रजातियाँ है जिनमें मध्य एशिया के देशों में 2 प्रजातियाँ तथा तुर्कमेनिस्तान में 3 प्रजातियाँ है।

सोफ़ोरा पकीकार्पा (पगोडा-ट्री) लेगुमिनासे कुल का 30-60 से०मी० ऊँचा एक बहुवर्षीय क्षुपीय पौधा है। इसको एक मजबूत, गहरा मूल संस्थान है। इसको बहुत अधिक संख्या में अस्थानिक कलियाँ होती हैं, जिनमें से नये चूषक उत्पन्न होते हैं। पत्र विषम संख्या में, पक्षवत् तथा जिसमें अण्डाकार-दीर्घवृत्ताकार पत्रक वाले युग्मक होते हैं। पौधे का फल एक बंद, गहरी धूसर शिम्बी है। बीज दीर्घवृत्ताकार, 5-6 मि०मी० लम्बे, गहरे-धूसर तथा लगभग कृष्ण वर्ण के होते हैं।

सोफ़ोरा पकीकार्पा (पगोडा-ट्री) को मई-जून में पुष्प आते है। फल जुलाई-अगस्त में पकते हैं।

जैविक लक्षण :- सोफ़ोरा पकीकार्पा (पगोडा-ट्री) कुछ चिकनी तथा जो नम ना हो ऐसी जमीन पर उगता है। यह मरुभूमि की पवनोढमृत्रिका, रेतीली तथा दुमटी ज़मीन पर उगता है। मरु प्रदेश की परिस्थितियां तथा चिकनी मिट्टी वाली ज़मीन पर ये उपद्रवजन्य हो जाता है तथा ज्यादा घना तृण नहीं उत्पन्न करता। उगने के सामान्य स्थान है सेजब्रश, वमवुड और मगवह के मोटले तृण मेजब्रश वमवुड के साथ शाढल घास नील घास सोफ़ोरा पकीकार्पा (पगोडा-ट्री) अपतृण के रूप में सिंचित तथा असिंचित ज़मीन पर उगता है।

कुदरती परिस्थितियों में उत्पादक गणन की तुलना में पौधे का मुख्यतः वानस्पतिक गुणन होता है। सख्त तथा साबुत आवरण के कारण उत्पादक गुणन क्वचित् ही होता है।

विस्तार :- यह प्रजाति दशोगुझ के सभी मरुभूमि प्रांतों में तथा उत्तरीय काराकुम में विस्तृत रूप से फैला हुआ है।

प्राकृतिक उपलब्धि :- सोफ़ोरा पकीकार्पा (पगोडा-ट्री) हमारे देश का दुर्लभ तृणीय पोधा नहीं है। औषधीय उद्देश्यार्थ इसके भण्डार पर्याप्त है। संसाधन प्रतिवर्ष 50-100 टन कच्चा माल इकट्ठा करने देता है।

औषधीय कच्चा माल :- चिकित्सा शास्त्र में पाचकीर्पाइन तत्व प्राप्त करने के लिये सोफ़ोरा पकीकार्पा (पगोडा-ट्री) का भूमि-ऊपरी भाग (क्षुप) प्रयुक्त होता है। कच्चा माल गर्मी में (मई के अंत से सितम्बर के अंत तक) इकट्ठा किया जाता है। पौधे के क्षुप तथा फल को साथ में नहीं मिलाना चाहिये क्योंकि उनमें एल्कलोइड्स का अलग संघटन होता है जिसका अन्य चिकित्सकीय प्रभाव है। पगोड़ा-ट्री को हँसिया से काटा जाता है अथवा हाथ से इकट्ठा किया जाता है।

पतला फैला हुआ होने के कारण क्षुप को कटाई यन्त्र अथवा हंसिया से उठाया जाता है। क्षुप को सूर्यप्रकाश में अथवा सुखाने वाला कमरे में सुखाया जाता है। तैयार कच्चे माल को कागज़ के (10 किलोग्राम तक) अथवा कपड़ों के (20 किलोग्राम तक) थैलों में बन्द किया जाता है। संचयन समय की अवधि 1-2 साल है।

रासायनिक संघटन :- पौधे में एल्कलोइड्स पेकीकार्पीन $C^{15}H^{6}N^{2}$, पेकीकार्पीडीन $C^{15}H^{22}O^{2}N^{2}$, सोफोरेमाइन $C^{15}H^{20}ON^{2}$, सोफोकार्पाइन $C^{15}H^{22}ON^{2}$ होते है तथा बीज में से मेट्रीन का सार निकाला जाता है।

प्रयोग :- पौधे के सभी एल्कलोइड्स में से पेकीकार्पीन अकेले तत्व का चिकित्सा शास्त्र में प्रयोग होता है। यह प्रसव पश्चात् की अवस्था में रक्तक्षय को कम करता है तथा गर्भाशय के चेष्टा कार्य को सुधारता है।

तुर्कमेन लोक चिकिसा में साराहस तथा तागताबाझार क्षेत्रों में पौधे के मूल का क्वाथ प्रवाहिका में प्रयुक्त होता है।

कल्पना तथा प्रयोग :- एक तामचीनी पात्र में पगोड़ा-ट्री के शुष्क मूल एक चम्मच (5 ग्राम) में 2 गिलास

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

(400 मि०ली०) पानी मिलाकर धीमी आंच पर 10-15 मिनट के लिये उबालें। छानकर ठंडा करें। एक बड़ा चम्मच (15 ग्राम) दिन में तीन बार भोजन से पूर्व लें।

क्षुप को छोटे छोटे करके एक चम्मच टुकड़ों में एक गिलास (200 मि०ली०) पानी मिलाकर धीमी आंच पर उबालें। छान लें। आधा गिलास (100 मि०ली) दिन में तीन बार लें।

स्पीनाचा तुर्केस्तानिका
SPINACIA TURKESTANICA

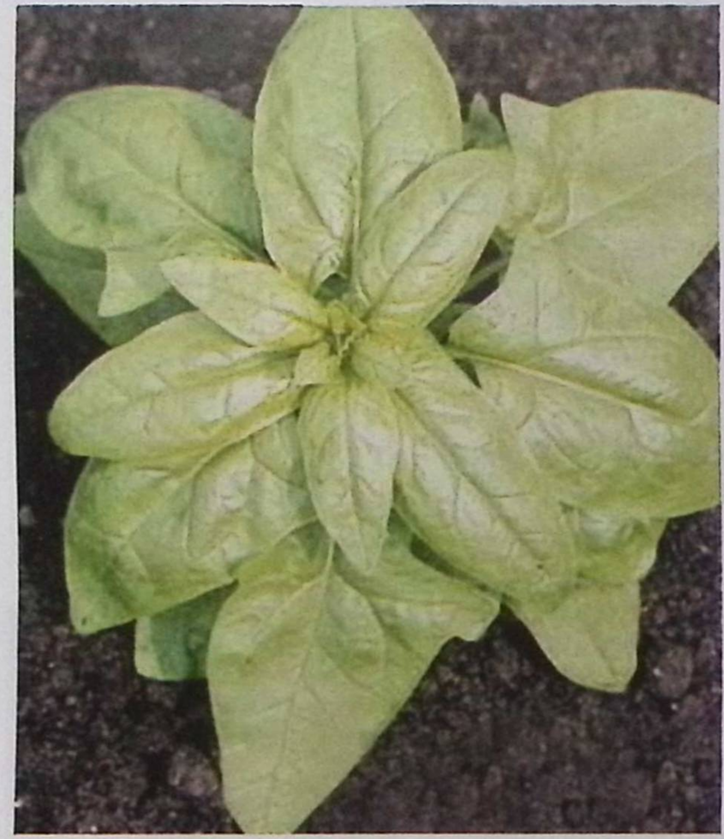

वर्णन :- यह एक अवांच्छनीय पौधा है जिसकी विश्व में 3 प्रजातियाँ तथा तुर्कमेनिस्तान में एक प्रजाति उगती है।

स्पीनाचा तुर्केस्तानिका चेनोपोदिआसी कुल का एकवर्षिय, क्षुपीय, 20-60 से०मी० ऊँचा पौधा है। इसको पुष्प तथा फल अप्रैल-मई में आते हैं।

जैविक लक्षण :- यह समुद्र तल से 400-1200 मीटर की ऊँचाई पर, प्रधानतः तराई में तथा पहाड़ों पर उगता है।

विस्तार :- दक्षिण-पश्चिमी, मध्य, पूर्वीय कोपेतदग, बाध्य, कुगीतांग में होता है।

प्राकृतिक उपलब्धि :- यह हमारे देश के दुर्लभ औषधीय पौधों में से नहीं है। औषधीय उद्देश्यार्थ इसके भण्डार पर्याप्त है। कच्चे माल को इकट्ठा करना, सुखाना तथा तैयार करना सामान्य पद्धति से किया जाता है। इसका संचय कपड़े के थैलों में किया जाता है। संचयन की समय अवधि 1-2 साल है।

रासायनिक संघटन :- पौधे में लगभग 20 तत्व विटामिन्स जैसे विटामिन ए, सी, डी, पीपी, के, ओक्झेलिक, सीट्रिक तथा मेलीक एसीड्स, प्रोटीन्स, वसा, कार्बोहाइड्रेट्स, लोह, ताम्र, यशद (जिंक) आयोडिन, पोटेशियम, कैल्शियम, फोस्फोरस तथा अन्य सूक्ष्म मात्रिक तत्व एवं खनिज लवण भी होते हैं।

प्रयोग :- सबसे पूर्वतम काल से इसका प्रयोग आहार तथा चिकित्सकीय उद्देश्यार्थ किया जाता रहा है। अबु अल इब्न सीना द्वारा कैनन आफ मेडिकल सायंस में इसके उपयोगी गुणधर्मों का वर्णन किया गया है। पौधे के स्वरस का प्रयोग अतिसार, हृस्वदृष्टि पाण्डु तथा विटामिनों की क्षीणता में किया जाता है।

कल्पना तथा प्रयोग :- पौधे का चूर्ण एक बड़ा चम्मच में एक गिलास उबलता हुआ पानी मिलाकर थोड़ी देर के लिये रखें। छानकर आधा गिलास (100 मि०ली) दिन में 3 बार भोजन से पूर्व लें।

एक बड़ा चम्मच (15 ग्राम) क्षुप में एक गिलास (200 मि०ली०) उबलता हुआ पानी मिलाकर एक तामचीनी पात्र में धीमी आंच पर 5 मिनट तक उबालें। छानकर दो बड़े चम्मच (30 ग्राम) दिन में तीन बार लें।

स्पीरेआ हीपेरिचिफोलिआ
SPIRAEA HYPERICIFOLIA

वर्णन :- तुर्कमेनिस्तान में दो प्रजातियाँ मिलती हैं। स्पीरेआ हीपेरिचिफोलिआ के श्वेत पुष्पों के चमीकले गुच्छे प्रशंसनीय है क्योंकि इसके कारण पौधे के बारे में जिज्ञासा जागृत होती है। लोग इसका कई उद्देश्यार्थ प्रयोग करते हैं।

स्पीरेआ हीपेरिचिफोलिआ रोझेसी कुल का एक बहुवर्षिय वृद्धि अवरंधित 50-100 से०मी० ऊँचा पौधा है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

स्पीरेआ हीपेरिचिफोलिआ की तरुण शाखायें अनावृत्त अथवा मृदु, सूक्ष्म रोम से आच्छादित होती हैं। शाखायें पतली, अनेक तथा धूसर होती हैं। श्वेत पुष्प का कद 5-8 (9) मि०मी० का होता है। ये छत्रक अथवा कवच होते हैं।

जैविक लक्षण :- पौधे को मई-जून में पुष्प लगते हैं तथा जून-जुलाई में फल लगते हैं।

विस्तार :- हमारी मातृभूमि में स्पीरेआ हीपेरिचिफोलिआ कोपेतदग के दक्षिण पश्चिम एयदेरे, मध्य कोपेतदग सुलुकली में मिलता है। इन स्थानों पर घाटियों तथा पथरीली चट्टानों पर ये उगता है। हमारे देश में स्पीरेआ हीपेरिचिफोलिआ दुर्लभ है। इसको लगाने की सलाह दी जाती है। सुंत-झझारदाग तथा कोपेतदग राष्ट्रीय उद्यानों में इसको संरक्षित किया गया है।

प्राकृतिक उपलब्धि :- स्पीरेआ हीपेरिचिफोलिआ के मूल, शाखा की त्वक्, पत्र, काष्ठ तथा पुष्पों का प्रयोग औषधीय प्रयोगार्थ कच्चे माल के रूप में होता है। इनको सामान्य रूप से ही इकट्ठा तथा तैयार किया जाता है।

रासायनिक संघटन :- पौधे में प्रोसीआनीडीन, केटेचीन, एपीकेटेचीन, अरबोफुरानोसाइड, झायलोपाइड एपीजेनीव, ल्युटीओलीन, केरोटीनोइड्स, ऐरोमेटिक कार्बन एसीड्स तथा विटामिन सी होते हैं।

प्रयोग :- स्पीरेआ हीपेरिचिफोलिआ के औषधीय गुणों के बारे में एक प्रख्यात चीनी पुस्तक अबाउट प्लांट प्रख्यात रोमन स्थलसेना चिकित्सा भेषज विज्ञान के पिता, ग्रीक डायोस्कोराइड का कार्य एबाउट मेडिसिन तथा अबु अली इब्न सीना का विश्व विख्यात कार्य कैनन आफ मेडिकल सायंस में वर्णित है कि स्पीरेआ हीपेरिचिफोलिआ के पुष्प तथा पत्र का क्वाथ संक्रमण व्याधियों की चिकित्सा के लिये प्रभावशाली है।

तिब्बती चिकित्सा में स्पीरेआ हीपेरिचिफोलिआ आर्तरिक व्याधियाँ, संधिवात, कृमि तथा स्त्रिओं में रजोनिवृत्ति काल की पूर्वावस्था की चिकित्सा के लिये प्रयुक्त होता है। इसके काष्ठ से बना नुस्खा चर्मरोग को रोकता है। इसके पत्र से बने नुस्खे में कीटाणु प्रतिरोधी गुण है। इसके पुष्प से बना नुस्खा अल्पार्तव में उपयोगी है। इसके पत्र तथा पुष्प से बना सीरप चयापचय पित्त के लिये तथा neurosis में लाभप्रद है। दंतवेष्टक शोथ में बीज उपयोगी है। इसके पत्र से बना क्वाथ फुफ्फुस व्याधियों में प्रयुक्त होता है। यह व्रण का भी रोपण करता है। इसके पत्र की चाय पत्ती की तरह प्रयोग कर सकते हैं।

तुर्कमेन लोक चिकित्सा में (मागत्यमगुलय तथा गोकदेरे प्रांतों में ऊँचाई के गांवों में त्वचा रोगों की रोकथाम तथा संधिवात में प्रयुक्त होता है। लकड़ी की छड़ी बनाने के लिये इसका काष्ठ बहुत अच्छा है।

कल्पना तथा प्रयोग :- एक गिलास (200 मि०ली०) उबले हुए पानी में एक बड़ा चम्मच (15 ग्राम) सुखे पत्र का चूर्ण मिलाकर थोड़े समय के लिये रखें। कपड़े से छान लें। प्रतिदिन दो बड़े चम्मच (30 ग्राम) दिन में तीन बार लें।

एक तामचीनी पात्र में स्पाइरी हायपरीसीफोलीआ के पुष्प के दो चम्मच (10 ग्राम) लेकर उसमें एक गिलास (200 मि०ली०) पानी मिलाकर धीमी आंच पर 5-10 मिनट के लिये उबालें। कपड़े से छान लें। आधा गिलास (100 मि०ली०) सुखोष्ण क्वाथ दिन में तीन बार लें।

एक कांच पात्र में एक गिलास सुरा अथवा वोडका लेकर उसमें दो बड़े चम्मच पौधे के पत्र अथवा पुष्प को मिलाकर ढक्कन लगाकर 8-10 दिन के लिये रखें। बीच-बीच में हिलाते रहें। तैयार सार को कपड़े से छानकर 5-15 बूंद दिन में तीन बार एक महिने के लिये लें। यह औषधीय सार पित्ताश्मरी तथा वृक्काश्मरी के लिये लाभप्रद है।

स्पीरेआ हीपेरिचिफोलिआ के बीज के चूर्ण एक चम्मच को उबले हुए पानी में मिलाकर थोडी देर रखें। कपड़े से छानकर एक बड़ा चम्मच (15 ग्राम) सुखोष्ण क्वाथ दिन में 3 बार लें।

एक लीटर चायदानी में डाले हुए शुष्क पत्र का फांट शिर:शूल के लिये तथा हृदय का बल बढ़ाने के लिये उपयोगी है।

स्तकीस लावांदुलिफिल्ला
STACHYS LAVANDULIFILLA

वर्णन :- इस मनोहर सुगंधयुक्त पौधे की विश्व में 300 प्रजातियाँ है जिनमें मध्य एशिया देशों में 37 प्रजातियाँ तथा तुर्कमेनिस्तान में 4 प्रजातियां पाई जाती हैं। इस पौधे को कुर्त चाय भी कहते हैं। पौधे का अक्ष गतिशून्य तथा शिखर तक पहुंचे हुए कई तनों वाला होता है। पौधे का तना चतुष्कोणीय होता है। पत्र तथा डंठल क्रमश: स्थित होते हैं, कण्टक

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

भाग से लेकर पट्टी तक घने रोमों से आच्छादित होते है। पुष्प 4-6 एक साथ तथा असंख्य गुलाबी गुच्छे बनाते हैं। फल त्रिकोणाकार, अण्डाकार तथा अनावृत काष्ठफल वाला होता है।

जैविक लक्षण :- यह पौधा हमारे देश में समुद्र तल से 600-2800 मीटर की ऊँचाई पर उगता है। इसको मैदानों में, पर्वतों के अर्धमैदानी क्षेत्रों में तथा पथरीली पहाड़ियों पर उगना पसंद है। स्तकीय लावांदुलिफिल्ला को अप्रैल-जून में पुष्प तथा जून-जुलाई में फल लगते हैं।

विस्तार :- हमारे देश में स्तकीय लावांदुलिफिल्ला कई बार दक्षिण-पश्चिमी कोपेतदघ, मध्य कोपेतदग में, आर्वाझदा, सुलुकली, एयरसदेरे, मुसुनेव, मुर्झेदाग, मेर्गेनोलेन, गयलगयलाव, हेयराबात, दुशाकेरेकदाग, आर्चाबील, चोपानदाग, युलय गारांकी, दामचा, दाशतोय, दागयश, असयलमा तथा होवदान में मिलता है।

प्राकृतिक उपलब्धि :- यह पौधा दुर्लभ पौधों में से नहीं है। यह जरूरी है कि पौधे को पुष्प आने के दरम्यान (अप्रैल-जून में) इकट्ठा किया जाये तथा नियमानुसार छज्जे के नीचे सुखाया तथा तैयार किया जाये। कच्चे माल को कपड़े के थैले में संचित करना चाहिये। संचयन समय की अवधि 1-2 साल है।

रासायनिक संघटन :- पौधे में एसेन्स 0.04-0. 155 प्रतिशत, फ्लेवोनोइड्स, यूगोसाइड इरिड्राइडस गसेटाइलगार्पगाइड तथा गार्पागाइड होते है।

प्रयोग :- स्तकीय लावांदुलिफिल्ला के पुष्प से निर्मित औषध का प्रयोग प्राचीन इरानियन नुस्खें के रूप में आमाशय के संकोच तथा अतिसार में होता है। पौधे से निर्मित फांट का प्रयोग शीशु जन्म के दरम्यान उत्तेजक के रूप में होता है।

लोक चिकित्सा में स्तकीय लावांदुलिफिल्ला का प्रयोग मधुमेह, यकृत् रोग, राजयक्ष्मा, आमाशय शोथ, आमाशय व्रण, हृद्रोग, व्रण की चिकित्सा, प्रजनन के लिये तथा गर्भाशय संकोच की वृद्धि के लिये होता है। तुर्कमेन लोक चिकित्सा में (मागत्यमगुलय, बाखारलय, गोकपेदे, रूकाबात एत्राप्स में) संधिशोथ, अनिद्रा तथा चर्म व्याधियों के लिये इस पौधे से निर्मित क्वाथ का प्रयोग होता है।

कल्पना तथा प्रयोग :- इस पौधे के पत्र एक बड़ा चम्मच (15 ग्राम) को 2 गिलास (200 मि०ली) पानी में मिलाकर थोड़ी देर रखें। तत्पश्चात् मिश्रण ठंडा होने पर छानकर एक चम्मच क्वाथ दिन में तीन बार भोजन पूर्व लें।

अच्छी तरह पीसे हुए पुष्प दो चम्मच को 2 गिलास उबले हुए पानी में मिलाकर एक घण्टे के लिये रखें। तत्पश्चात् क्वाथ को छानकर प्रतिदिन 3 बड़े चम्मच (45 ग्राम) लें।

एक तामचीनी पात्र में एक बड़ा चम्मच (15 ग्राम) पौधे के पत्र को एक गिलास (200 मि०ली) पानी में मिलाकर धीमी आंच पर 10 मिनट के लिये उबालें। तैयार क्वाथ को छानकर एक बड़ा चम्मच (15 ग्राम) दिन में तीन बार लें।

स्तेल्लारिआ मेदिआ
STELLARIA MEDIA

वर्णन :- इस कुतृण की विश्व में 120 प्रजातियाँ हैं जिसमें मध्य एशिया देशों में उगने वाली 50 प्रजातियां तथा तुर्कमेनिस्तान की 3 प्रजातियाँ मिलती हैं। इसको चिंचिलिम भी कहते हैं। स्तेल्लारिआ मेदिआ अदिबिर बीज कुल का 10-30 से०मी० ऊँचा एकवर्षिय पौधा है। इसके पत्र फलक दुर्बल तथा ऊर्ध्वाधर दिशा में उगने वाले हैं। इसकी शाखायें मोटी होती हैं। जाड़े के बीच में ये रोमाच्छादित होती है। इसको अण्डाकार 1-2 से०मी० लम्बे पत्र होते हैं। इसके श्वेत पुष्पदल एक कोष्ठ में होते हैं जो रोमाच्छादित होता हैं। इसके पत्र कप जैसे 4 मि०मी० लम्बे होते हैं जो रोमाच्छादित होता है। इसके फल पेटी में होते हैं। इसको मार्च-अप्रैल में पुष्प आते है तथा इन्हीं मास में फल भी लगते हैं।

जैविक लक्षण :- यह पौधा 40-50 दिन में उगता है। यह शुरूआती वसंत तथा आखिरी पतझड़ में दिखता है। यह उद्भिदीय हरीकृत करने वाले पादवृन्त से फैलता है। झाड़ियों का एक क्षुप 2-3 हजार छोटे बीज उत्पन्न करता है। इसके बीज में जीवन्तता तथा गुणवत्ता 2-3 साल तक बनी रहती है।

यह नाजुक पौधा तुर्कमेनिस्तान में अग्रगामी फल है। इसके नाम के अनुरूप इसके पुष्प ताराकार होते हैं। जब

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

हम इसके पुष्प को शुरूआती बसंत में देखते हैं तो ये हमें चन्द्रकन्या की याद दिलाते हैं।

विस्तार :- हमारे देश में हम स्तेल्लारिआ मेदिआ को दक्षिण-पश्चिमी तथा मध्य कोपेतदग तथा कोयतेनदाग में ढूँढ सकते हैं।

यह कुतृण यहां के पहाड़ों की मरुभूमि तथा पेड़ों की छांव में घाटी की ढलानों पर नम तथा अंधेरे एवं बगीचों में उगता है।

प्राकृतिक उपलब्धि :- हमारे देश में यह दुर्लभ प्रजातियों में से है। औषधीय उद्देश्यार्थ इसका भण्डार पर्याप्त है।

औषधीय कच्चा माल :- स्तेल्लारिआ मेदिआ का क्षुप औषधीय उद्देश्यार्थ मूल द्रव्य के रूप में प्रयुक्त होता है। तृण को छांव में सुखाया जाता है। इसे फँफूद नहीं लगने के लिये बीच बीच में पलटाया जाता है। तैयार मूल द्रव्य को कागज़ के थैलों अथव बक्सों में अथवा कपड़े के थैलों में संचित किया जाता है। संचयन समय की अवधि 2 साल है।

रासायनिक संघटन :- पौधे में ट्राइटर्पीन, सेपोनीन, वाइटेक्सीन, एल्कलोइड, विटामिन सी तथा ई, एरेटाइन, फ्लेवोनोइड्स, उच्च एलीफेटीक स्पीरीट के मेलीसिला, सेरीलसेरोटेट तथा ममी तेल होते हैं।

प्रयोग :- पौधे का ताजा तृण यकृत्, वृक्क, फुफ्फुस तथा हृदय की व्याधियों की चिकित्सा के लिये प्रयुक्त होता है। पौधे से निर्मित क्वाथ तथा फांट मूत्रोत्सर्जन तथा विबंध के लिये, स्नानार्थ तथा एलर्जी में प्रयुक्त होता है। इसके तृण से बने सीरप की विशिष्टता यह है कि वह रक्तचाप को कम करता है, हालांकि महत्वपूर्ण रूप में नहीं। शुरूआती वसंत में इसका प्रयोग सलाद बनाने के लिये होता है। इसके तरल का प्रयोग ऊन को नीला रंगने के लिये होता है।

तिब्बती चिकित्सा में इसका औषधीय चूर्ण फुफ्फुस की व्याधियों की चिकित्सा के लिये होता है। बल्य नुस्खे के रूप में, संधि के लिये तथा स्नैहिक धमनी जारवय एवं मोंगोलियन चिकित्सा में दौर्बल्य को दूर करने के लिय इसका प्रयोग किया जाता है।

स्तेल्लारिआ मेदिआ का क्वाथ शूल को कम करता है इसके क्षुप से निर्मित पट्टी संधि शौथिल्य के लिये प्रयुक्त होती है। इसका 10 प्रतिशत सीरप रक्तचाप को तुरंत कम करता है। यह अनिद्रा, संधिवात, संधिरोग, रक्तस्राव तथा चर्मजन्यकवकोत्कर्ष के लिये उपयोगी है।

कल्पना तथा प्रयोग :- एक चम्मच (5 ग्राम) क्षुप को एक गिलास (200 मि०ली०) उबलते हुए पानी में मिलाकर 5-6 घण्टे के लिये रखें। कपड़े से छान लें। सुखोष्ण फांट 50 ग्राम को दिन में तीन बार भोजन से पूर्व लें।

पौधे के तृण दो बड़े चम्मच (30 ग्राम) को दो गिलास पानी में मिलाकर एक तामचीनी पात्र में 10-15 मिनट धीमी आंच पर पकायें। छानकर एक बड़ा चम्मच (15 ग्राम) दिन में तीन बार लें।

इसके क्वाथ तथा फांट का प्रयोग विरेचक के रूप में किया जाता है।

पौधे के तृण 100 ग्राम को 10 लीटर पानी में उबालें। छानकर सप्ताह में एक बार स्नानार्थ प्रयोग करें। यह एलर्जी की चिकित्सा के लिये प्रयुक्त होता है।

पौधे के तृण दो बड़े चम्मच (30 ग्राम) को 10 प्रतिशत सुरा में मिलाकर कसकर ढक्कन लगाकर 10-15 दिन के लिये अंधेरे स्थान में रखें। बीच बीच में हिलाते रहें। छानकर एक चम्मच फांट दिन में 3 बार लें। यह के चर्मजन्यकवकोत्कर्ष के लिये उपयोगी है।

तनचेतुम हेतेरोफील्लुम
TANACETUM HETEROPHYLLUM

वर्णन :- तुर्कमेनिस्तान में इस पौधे की तीन प्रजातियाँ हैं। इन सभी में औषधीय गुणधर्म है। तनचेन्द्रम का भाषांतर होता है असाधारण जादुई''। तनचेतुम हेतेरोफील्लुम कम्पोसिते कुल का क्षुपीय, 15-40 से०मी० ऊँचा पौधा है। पौधा सीधा उगता है, लेकिन ऊर्ध्व हिस्सा तरंगित होता है। इस पौधे का तना छोटा तथा मोटा होता है।

तनचेतुम हेतेरोफील्लुम के मूल काण्ड को आच्छादन करते हैं। इस पौधे के पत्र अण्डाकार तथा गहराई तक विभाजित होते हैं। पुष्प हलके पीत होते हैं। ये नलिकाकार एंव अण्डाकार टोकरीनुमा गुच्छे में इकट्ठे होते हैं। पौधे की

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

ऊर्ध्व शाखायें पुष्पक बनाती हैं। फल में लम्बे बीज होते हैं। पौधे को मई-अगस्त में पुष्प तथा फल लगते हैं।

जैविक लक्षण :- यह पौधा जंगल में, समुद्र तल से 1500-2400 मीटर की ऊँचाई पर मिलता है। इसका प्रजनन फल द्वारा होता है।

विस्तार :- यह पौधा हमारे देश में मध्य कोपेतदग में, आलमाजयक, आरवाझोल तथा मुसेनेव में मिलता है। इस तरह का पौधा केवल हमारे देश में ही उगता है।

प्राकृतिक उपलब्धि :- यह पौधा दुर्लभ नहीं है। औषधीय उद्देश्यार्थ भण्डार पर्याप्त है। हमारे देश में प्रतिवर्ष 5-6 टन औषधीय कच्चे माल को इकट्ठा किया जा सकता है।

औषधीय कच्चा माल :- औषधीय उद्देश्यार्थ इस पौधे के पुष्प का प्रयोग होता है। कच्चे माल को गर्मी में इकट्ठा किया जाता है। पुष्प को रेसे के बिना इकट्ठा किया जाता है। इनको सामान्य पद्धति से सुखाया जाता है। तैयार कच्चे माल को कागज़ के थैलों अथवा बक्सों में संचित किया जाता है। संचयन समय की अवधि 2-3 साल है।

रासायनिक संघटन :- इस पौधे के पुष्प में इथरिअल तैल, पेनाइन, विटामिन सी, केरोटीन, फ्लेवोनोइड्स, क्वेरसेटीन तथा ओर्गेनीक एसिड्स होते हैं।

प्रयोग :- प्राचीन काल से ही इस पौधे का प्रयोग लोकप्रिय चिकित्सा में (बाखारलय तथा गीओकतेपे) में हो रहा है। इस पौधे के पुष्प कृमि के लिये होते हैं। इस पौधे से निर्मित फांट का प्रयोग मूत्रल रूप में, उच्च रक्तचाप में होता है, यह हृदय के कार्य में मदद करता है तथा यकृत् शोथ में उपयोगी है।

पौधे के पुष्प तथा पत्र को चाय बनाने के लिये उबाले जाते हैं। यह चाय स्त्रियों में रक्तस्राव में तथा केश साफ करने के लिये प्रयुक्त होती है।

तनचेतुम हेतेरोफील्लुम के पुष्प का सार आमाशय, लघु आन्त्र तथा विभिन्न शोफ में प्रयुक्त होता है। पुष्प का सार प्रक्षालन के लिये, अस्थिकण्डर रोग तथा आमाशय शोथ की चिकित्सा के लिये प्रयुक्त होता है। तनचेतुम हेतेरोफील्लुम का अधिक मात्रा में प्रयोग रेचक असर दिखाता है। यह वामक तथा रेचक है। सगर्भा स्त्रिओं तथा बच्चों में इस पौधे का प्रयोग नहीं करना चाहिये।

कल्पना तथा प्रयोग :- एक चम्मच पौधे के पुष्प को एक गिलास पानी में मिलाकर 3-4 घण्टे तक रखें। छानकर 3 बड़ा चम्मच (45 ग्राम) 4-5 घण्टे में एक बार प्रतिदिन लें।

शुष्क पत्र का चूर्ण कृमि की चिकित्सा के लिये प्रयुक्त किया जाता है। प्रतिदिन 0.5-1 ग्राम दिन में 2-3 बार लें।

पौधे के बीज (1:10) को 60 डिग्री से० पर गरम करें, तत्पश्चात् 4 घण्टे के लिये रखें। इस औषध का आधा गिलास (100 मि०ली) सुबह तथा शाम को लें। यह औषधीय फांट कृमि की चिकित्सा के प्रयुक्त होता है। पौधे के पुष्प एक बड़ा चम्मच 1-2 लहसुन की कलियां तथा 2 गिलास दूध को उबालें। तैयार सार को कृमि के लिये लें।

एक बड़े चम्मच पुष्प को एक गिलास पानी में मिलाकर थोडी देर रखें। छानकर एक बड़ा चम्मच 3-5 बार भोजन पूर्व सेवन करें। इस फांट का प्रयोग यकृत् की चिकित्सा के लिये होता है।

ताराक्साकुम ओफ्फिचिनाले (कंकेरवर्ट)
TARAXACUM OFFICINALE (CANKERWORT)

वर्णन :- इस औषधीय कुतृण की विश्व में 1000 से अधिक प्रजातियाँ हैं मध्य एशियाई देशों में लगभग 340 तथा तुर्कमेनिस्तान में 20 प्रजातियाँ हैं। पौधे का दूसरा नाम सुल्लोन्निच है।

ताराक्साकुम ओफ्फिचिनाले (कंकेरवर्ट) कोम्पोसिते कुल का, 10-30 से०मी० ऊँचा एक बहुवर्षिय, तृणीय पौधा है। पौधे के प्रत्येक भाग में क्षीर जैसा द्रव रहता है। पौधे का मोटा, नुकीला मूल 20-50 से०मी० गहरा जाता है। छोटी शाखायें 10-25 से०मी० लम्बी तथा 1.5-5 से०मी० चौड़ी होती हैं। विभाजित पत्र तने पर मूल के पास इकट्ठे होते हैं। पुष्प गोलाकार, आसपास के बिना पत्र घटक के बिना तथा

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

कुल हिस्सा शैवालीय होता है। पुष्प का कद 3-5 से०मी० का होता है। पुष्प स्वर्ण-पीत होता है। फल हलका धूसर तथा बीज 3-4 मि०मी० चौड़ा होता है।

जैविक लक्षण :- पौधे को अप्रैल से मई के बीच में पुष्प तथा फल लगते हैं। इसको नम, समृद्ध, सड़ी हुई भूमि पर उगना पसंद है। एक पुष्प में 200 बीज होते हैं। इसका प्रजनन बीज द्वारा होता है।

विस्तार :- ताराक्साकुम ओफ्फिचिनाले (कंकेरवर्ट) हमारे किसी भी स्थान पर पाया जाता है। हमारी मातृभूमि में यह दुर्लभ नहीं है। औषधीय प्रयोगार्थ इसका पर्याप्त भण्डार है।

प्राकृतिक उपलब्धि :- पौधे का मूल विविध औषधियों के कच्चे माल के रूप में प्रयुक्त होता है। इसको पत्र जब विवर्ण होने लगते हैं तब इसे इकट्ठा करना चाहिये तथा अगस्त के उत्तरार्ध एवं सितम्बर में इसको तैयार करना चाहिये। शुरूआती वसंत में पुष्प खिलने से पहले तैयार करना भी शक्य है। पौधे को कुदाल shovel से खोदकर निकालना चाहिये तथा छोटे मूल को काटने चाहिये। पौधे को पानी से धोना चाहिये। इसको मध्यम आकार के टुकड़ों में काटकर जब तक उसमें से क्षीर (द्रव) निकलता है तब तक लटकाकर रखना चाहिये। ये अनेक दिन तक चलता रहेगा। तत्पश्चात् मूल को एक स्तर में लगाकर एक अच्छे हवादार गर्म कमरे में सुखाना चाहिए। कच्चे माल को कपड़े के थैले में संचित करना चाहिये। संचयन समय की अवधि 2-3 साल है।

रासायनिक संघटन :- ताराक्साकुम ओफ्फिचिनाले (कंकेरवर्ट) के मूल में लगभग 10 प्रतिशत तिक्त ग्लायकोसाइड्स (टेराक्सेसाइन, टेराक्सेरोल, टेराक्सास्टेरोल आदि) स्टीरोलस (सिस्टोस्टेरीन तथा स्टिगमास्टेरोल), फ्लेवोनोइड्स, 20 प्रतिशत ज्यादा इन्युलीन, शर्करा, कओउतचौउक (लगभग 3 प्रतिशत), ओर्गेनिक एसीड्स (मेलीक एसीड्स तथा अन्य), वसा, एस्परेजीन कोलीन, केल्शियम तथा पोटेशियम के लवण, प्रोटोक्साइड होते हैं। पुष्प तथा पत्र में केरोटीनोइड्स, कोलीन, विटामिन सी, बी2, पी तथा पीपी होते हैं।

प्रयोग :- प्राचीन समय से ही ताराक्साकुम ओफ्फिचिनाले (कंकेरवर्ट)का प्रयोग रोपण औषध के रूप में होता है। पौधे के औषधीय गुणों के बारे में जानकारी पूर्व के सितारों की श्रेष्ठ कृतियाँ जैसे अबु अली इब्न सीना की कैनन आफ मेडिकल सायंस अबु रेयहान बीरूनी की फर्मकोग्नोसी इन मेडिसिन सेयीत इस्माइल गुरगेन्ली की ट्रेजरी आफ खोरेज्म शाह तथा मुहम्मद हुसेन की ट्रेजरी आफ मेडिसिन में मिलती है। इब्न सीना ने अनुमोदन किया है कि यह पाचन क्रिया, उदराध्मान तथा कीटदंश में उपयोगी है। मुहम्मद हुसेन अवगत कराते है कि ताराक्साकुम ओफ्फिचिनाले (कंकेरवर्ट) शरीर तथा आमाशय को बल देता है, रक्तस्राव को रोकता है तथा शिशु वाली माता को अधिक स्तन्यजनक करवाता है।

लोक चिकित्सा में ताराक्साकुम ओफ्फिचिनाले (कंकेरवर्ट) का प्रयोग जठराग्नि वृद्धि के लिये तथा पित्त जन्य एवं कफनिःसारक के रूप में होता है। क्षीरवत् द्रव पूययुक्त विस्फोट त्वचा के मण्डलांकृतिकोष्ठ तथा शीतपित्त के लिये एक औषध है। साथ ही पत्र का द्रव कामला तथा मूत्राशय की व्याधियों के शमन के लिये प्रयुक्त होता है। विज्ञान-आधारित चिकित्सा शास्त्र तथा औषध उत्पादन में ताराक्साकुम ओफ्फिचिनाले (कंकेरवर्ट) के मूल का प्रयोग अधिक मात्रा में गोलियों के निर्माण के लिये किया जाता है। इसके मूल का ताजा द्रव पूयदार विस्फोट तथा चर्मकील का एक घटक है।

कल्पना तथा प्रयोग :- एक तामचीनी पात्र में पौधे के कुचले हुए मूल 3 बड़े चम्मच (45 ग्राम) को दो गिलास (400 मि०ली०) उबलते हुए पानी में डालकर 15 मिनट तक उबालें। क्वाथ को कपड़े से छानकर एक बड़ा चम्मच (15 ग्राम) भोजन से 30 मिनट पूर्व दिन में दो बार पीयें।

एक बड़ा चम्मच ताराक्साकुम ओफ्फिचिनाले (कंकेरवर्ट) के कुचले हुए मूल तीन गिलास (600 मि०ली०) पानी में मिलाकर 10-12 घण्टे तक रखें। बाद में 7-10 मिनट के लिये उबालें। तैयार क्वाथ को कपड़े से छानकर आधा गिलास (100 मि०ली०) दिन में तीन बार पीयें।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

तेउक्रिउम स्कोर्दिओदेस
TEUCRIUM SCORDIODES

वर्णन :- तेउक्रिउम स्कोर्दिओदेस एक सुगंधित औषधीय पौधा है। तुर्कमेनिस्तान में 3 प्रजातियाँ मिलती हैं। इसका लोक नाम तिल्की देर्मन है।

तेउक्रिउम स्कोर्दिओदेस लाबिआते कुल का, बहुवर्षिय, 15-30 से०मी० ऊँचा क्षुपीय पौधा है। मूल के पास कांड सीधे, वृक्षीय तथा शाखायुक्त होते हैं। पूरा पौधा झुका हुआ लोमश, पीला, हरा होता है। पत्र अवृंत लम्बाकृति-अण्डाकार अथवा लंबगोल, मोटे, मुड़े हुए रोम से झुके हुए होते हैं। पुष्प के गलत चक्राकार एक अण्डाकार अथवा गोलाकार कभी-कभी लम्बगोल कांटे के रूप में जुड़े हुए होते हैं। बाह्यदल घण्टाकार 3 मि०मी० लम्बे, रोमश, छोटे, कुंठित तथा चौड़े त्रिकोणाकार दंत युक्त होते हैं। श्वेत अथवा पीताभ अन्तर्दल, बाह्यदल कुछ बड़ा होता हैं। पुंकेसर संयुक्त होते है लेकिन परागकोश अलग होते है।

जैविक लक्षण :- तेउक्रिउम स्कोर्दिओदेस समुद्र तल से 800-1500 मीटर की ऊँचाई पर उगता है। इसको मई-जून में पुष्प लगते है तथा जुलाई-सितम्बर में फल लगते हैं। तेउक्रिउम स्कोर्दिओदेस दुष्काल विरोधी है। इसका प्रजनन बीज के द्वारा होता है, लेकिन कभी-कभी वार्षिकी कंद से होता है। पौधे को ज्यादा सारसम्हाल की जरूरत नहीं होती तथा यह हल्की भूमि पसंद करता है।

विस्तार :- तेउक्रिउम स्कोर्दिओदेस बोलशोइ तथा मलय बालखान में, दक्षिण-पश्चिमी कोपेतदग में, जेलीले, होजामाला, एरेशदाग, एयदेरे, सुंत, चोलदेरे, ऊर्ध्व तथा मध्य सुंबार, देश्त, सायवान, गारावुल, मध्य काराकुम पर, नोहूर, आर्वाझ, प्रोहलादनोये, सुलुकली, मेर्गेनुलया, मुसुनेव, मुर्झेदाग, कुरकुलाब, गेर्माप, हेयराबात, दुशाक, चायेक, गोकपेदे, आर्चाबील, गींडीबार, कुर्तुसय, गौदान तथा असयलमा में विस्तृत रूप से फैला हुआ है।

प्राकृतिक उपलब्धि :- तेउक्रिउम स्कोर्दिओदेस तुर्कमेनिस्तान का दुर्लभ पौधा नहीं है। इसके भण्डार औषधीय उद्देश्यार्थ पर्याप्त है। वार्षिकी उपज 8-10 टन की है। मुख्य भण्डार दक्षिण-पश्चिमी कोपेतदग में स्थित है।

औषधीय कच्चा माल :- तेउक्रिउम स्कोर्दिओदेस का पुष्प युक्त तृण कभी-कभी मूल औषधी उत्पादनार्थ कच्चे माल के रूप में प्रयुक्त होते हैं।

तृण को कैंची अथवा हंसिया से दिन के उत्तरार्ध में इकट्ठा किया जाता है। इसे कागज़ अथवा कपड़े पर पतला फैलाकर बाहर छांव में अथवा अच्छी तरह हवादार कमरे में सुखाया जाता है। तैयार कच्चे माल को कागज़ अथवा कपड़े के थैलों में पैक किया जाता है। संचयन समय की अवधि 1-2 साल है।

रासायनिक संघटन :- तेउक्रिउम स्कोर्दिओदेस में इथरिअल तेल, तिक्त पदार्थ तथा टेनिन होते हैं।

प्रयोग :- तेउक्रिउम स्कोर्दिओदेस के भूमि ऊपरी हिस्से में मनोहर ताजी सुगंध होती है। पत्रवाली तरुण शाखायें मछली की व्यंजनों में मसाले के रूप में प्रयुक्त होती हैं। तेउक्रिउम स्कोर्दिओदेस का इथरिअल तेल पीत-हरा तथा मनोहर सुगंध युक्त होता है। इसका मुख्य घटक बोर्नाईलएसिटेट है। आहार तथा इत्र-प्रसाधन में उद्योग में इथरिअल तेल का प्रयोग सुगंधित द्रव्य के रूप में होता है। साथ ही यह बहुत अच्छा मधु उत्पादक पौधा है। इसकी मधु उत्पादन करने की क्षमता 250 किलोग्राम प्रति हेक्टर की है।

तेउक्रिउम स्कोर्दिओदेस एक उत्कृष्ट अलंकारिक पौधा है।

तेउक्रिउम स्कोर्दिओदेस अपने स्वास्थ्यप्रद संपूर्ण गुणधर्मों के कारण सुप्रसिद्ध है। इसका प्रयोग कई व्याधियों में किया जाता था। अबु अली इब्न सीना ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक कैनन आफ मेडिकल सायंस में इस पौधे के बारे में लिखा है। अबु अली इब्न सीना ने इस पौधे का प्रयोग रक्तस्तंभक तथा फुफ्फुसजन्य रक्तष्ठीवन में किया था।

लोक चिकित्सा में यह पौधा आमाशय के कार्य की वृद्धि के लिये, शूलप्रशमन के लिये, आमाशय की व्याधियों के लिये तथा जठराग्नि मांद्य में प्रभावशाली जाना गया है। क्वाथ का प्रयोग नेत्र व्याधियों में किया जाता है। यह व्रण रोपण के लिये प्रभावशाली होने से व्रणरोपणार्थ प्रयुक्त होता है। यह बल्य, मूत्रल, रक्तस्तंभक औषध है तथा ज्वर, संधि वात, फुफ्फुसगत रक्तष्ठीवन, अर्श एवं क्लेव्य में प्रयुक्त

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

होता है। पुष्प आने के समय इकट्ठे किये हुए ताजे तृण होमीयोपैथी में प्रयुक्त होते हैं।

साथ ही इसमें जीवाणु विरोधी, बल्य, कृमिहर प्रभाव है। इसका प्रयोग चर्म व्याधि तथा फुफ्फुस की व्याधियों में भी किया जाता है।

बलगेरीअन चिकित्सा में स्नान के लिये तथा पौधे से निर्मित क्वाथ रक्तष्ठीवन शीतपित्त तथा अर्श में प्रयुक्त होता है।

कल्पना तथा प्रयोग :- तेउक्रिउम स्कोर्दिओदेस के क्षुप का चूर्ण 4 चम्मच (20 ग्राम) को एक गिलास (200 मि०ली०) उबलते हुए पानी में मिलाकर 15-20 मिनट के लिये रखें। छानकर आधा गिलास (100 मि०ली) दिन में 3 बार भोजनपूर्व लें।

तेउक्रिउम स्कोर्दिओदेस को मूल का चूर्ण (5 ग्राम) को एक गिलास (200 मि०ली) उबलते हुए पानी में मिलाकर 20 मिनट तक रखें। छानकर 1/4 गिलास (50 मि०ली) दिन में 3 बार भोजन पूर्व लें। औषध सेवनकाल 2-3 सप्ताह का है। यह रक्तस्कंदन की प्रक्रिया तेज करता है। यह हृत्संकोच तथा घानास्त्रता में एवं हृत्पेशी अन्तःस्फोन जनन के पश्चात् प्रभावशाली है।

तालिक्त्रुम ईसोपीरोइदेस
THALICTRUM ISOPYROIDES

वर्णन :- यह औषधीय पौधा है। विश्व में इसकी 110 प्रजातियाँ है। मध्य एशिया में 20 तथा तुर्कमेनिस्तान में 3 प्रजातियाँ हैं।

इस प्रजाति के मूल शाखायुक्त होते हैं। कांड सामान्य तथा शाखायुक्त होता है। यह 15-40 से०मी० ऊँचा होता है। पत्र कांड के अधो हिस्से में स्थित होते हैं। पत्र जटिल, अविभाजित अथवा 2-3 अथवा 4 पक्षवत् विभाजित होते हैं। पत्र 3-4 मि०मी० लम्बा होता है। पुष्प छोटे, हरिताभ तथा गुच्छे में इकट्ठे होते हैं। फल 4-6 संयुक्त, मुडे हुए होते हैं। अण्डाकार, 3.5 से 5 मि०मी० लम्बी, नाक जुडे होते हैं। इसको मई-जून में पुष्प तथा फल लगते हैं तथा यह बीज द्वारा प्रजनन करत है।

विस्तार :- यह पौधा समुद्र तल से 400-2900 मीटर की ऊँचाई पर पाईन के वृक्षों के बीच पथरीले स्थान अथवा मरुभूमि में उगता है। यह बोलशोइ बालखान में, मोमलांडा, उझयन, कारदा, कीरेनदागदा, कोपेतदग के दक्षिण-पूर्व में, गापाकलयग, केरकावेद, सुंबार्द, नोखूर, मध्य कोपेदग, बाबाझवदा, कारानकुदा, लुजदे मेर्गेनोलेन, मुसुनेवदे, गारारानद, आर्वाझद, नागदावद, सीबीरद, चाकदे, हैराबाद, गुंदोगार, कोपेतदग, झेराकेन्द, रोबेरगोवद, शामलयदा तथा कोयतेनदाग में मिलता है।

प्राकृतिक उपलब्धि :- यह पौधा तुर्कमेनिस्तान में क्वचित् ही मिलता है, लेकिन कच्चे माल का भण्डार पर्याप्त है। कच्चा माल मुख्यतः मध्य कोपेतदग में मिलता है।

औषधीय कच्चा माल :- क्षुप औषधीय पौधे के रूप में प्रयुक्त होता है। इसमें 0.5 प्रतिशत एल्कलोइड्स होते हैं। इसको पौधे में पुष्प लगते समय इकट्ठा किया जाता है, तथा इसको सुखाकर कच्चे माल को कागज़ के थैलों में अथवा बक्सों में संचित किया जाता है। संचयन समय की अवधि 1-2 साल है।

रासायनिक संघटन :- मूल में 0.47-3.22 प्रतिशत एल्कलोइड्स होते हैं। क्षुप में 0.009 प्रतिशत एल्कलोइड्स जैसे टेलीकमाईन, टेलीकमीडीन, टेलीकोपाइन तथा क्रीप्टोपाइन आलसोबोलडाइन होते हैं।

प्रयोग :- इस औषधीय पौधे का प्रयोग प्राचीन काल से हो रहा है। इस औषधि से निर्मित चाय उच्च तापमान में मदद करती है, बच्चो में पूययुक्त प्रवृत्ति, उरोशोथ, राजयक्ष्मा, कामला, नासागत रक्तस्राव तथा स्त्रियों में शोफ में मदद करती है। पौधे के मूल का स्टार्च अपस्मार, आमाशय के व्रण, वृक्क तथा यकृत् व्याधियाँ तथा उच्च रक्तचाप में प्रयुक्त होता है। पौधे के बीज से निर्मित चाय भ्रम तथा श्वसननलिका शोथ में मदद करता है।

कच्चे माल को अच्छी तरह सुखाकर चूर्ण किया जाता है। एक चम्मच (5 ग्राम) पौधे के चूर्ण में एक लीटर उबलता हुआ पानी मिलाकर थोड़ी देर के लिये रखें। आधा गिलास दिन में दो बार पीयें। तैयार क्वाथ को हृद्शूल तथा स्त्रियों में शोथ के लिये प्रयुक्त किया जाता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

एक चम्मच छोटे मूल को 1/2 गिलास पानी में मिलाकर धीमी आंच पर 5 मिनट के लिये उबालें। बीज एक चम्मच को एक गिलास उबलते हुए पानी में मिलाकर थोड़ी देर रखें। दिन में दो बार पीयें।

तालिक्त्रुम मिनुस
THALICTRUM MINUS

वर्णन :–विश्व में 110 प्रजातियाँ पाई जाती हैं जिनमें मध्य एशिया देशों में 20 प्रजातियाँ तथा तुर्कमेनिस्तान में 3 प्रजातियाँ मिलती हैं।

तालिक्त्रुम मिनुस चेरिकलेर कुल का 30-150 से०मी० ऊँचा secular पौधा है। कांड bold, चिकना तथा सीधा उगने वाला होता है। पत्र त्रिकोणाकार, 3-4 पक्षवाले होते हैं। पौधे के पुष्प छोटे होते हैं। पुष्प हरित तथा धूसर होते हैं। इसके बीज 4 मि०मी० लम्बे अण्डाकार होते हैं। पौधे को मई-जुलाई (अगस्त) में पुष्प तथा फल लगते हैं।

जैविक लक्षण :– तालिक्त्रुम मिनुस समुद्रतल से 300-400 मीटर की ऊँचाई पर उगते हैं। यह गीले स्थान पर, जलस्रोतों तथा नदी के किनारों पर उगता है। तालिक्त्रुम मिनुस बीज द्वारा प्रजनन करता है।

विस्तार :– पौधा बोलशोई बालखन में, नाझझरेकेरेम पर, दक्षिण-पश्चिमी कोपेतदग में, मागत्यममगुलय, सुंबार में, चाकानगाला, चेन्दीर-सुंबार, मध्य कोपेतदग में, शामलय तथा कोयतेनदग में मिलता है।

प्राकृतिक उपलब्धि :– हमारे देश में तालिक्त्रुम मिनुस दुर्लभ समूह का एक पौधा है। इसका एक सामान्य औषध भण्डार है। यह इसको रोप सकते हैं।

औषधीय कच्चा माल :– औषधीय उद्देश्यार्थ पौधे का क्षुप कच्चे माल के रूप में प्रयुक्त होता है। सामान्यतः पौधे का कच्चा माल खुले स्थान में रखकर सुखाया तथा तैयार किया जाता है। तैयार कच्चे माल को कागज़ के थैलों में संचित किया जाता है। संचयन समय की अवधि 2 साल होती है।

रासायनिक संघटन :– इसके पत्र में एस्कोर्बिक एसीड (175-227 मि०ग्रा० प्रतिशत), टालमाइन, टालमीडीन तथा मूल में टालकमाइन, टेमेकमीडीन एल्कलोइड्स होते हैं। साथ ही इसके पत्र में ग्लायकोसाइड भी होता है।

प्रयोग :– लोक चिकित्सा में इस पौधे का प्रयोग नासागत रक्तस्राव, नाडी तनाव जन्य व्याधि, अपस्मार में होता है। पौधे के पत्र से निर्मित प्रवाही रक्तशोधक औषध के रूप में प्रयुक्त होता है। पौधे का स्वरस उच्च रक्तचाप में प्रयुक्त होता है। इस औषध का प्रयोग रक्तवाहिनीयों की विकृति, पित्ताशय तथा यकृत् के लिये होता है।

वैज्ञानिक चिकित्सा शास्त्र में तालिक्त्रुम मिनुस का प्रयोग नाडीतंत्र के कार्यनाश में, पचन संस्थान की व्याधियों में, मेलेरिआ सकशरुजा, ज्वर तथा राजयक्ष्मा में होता है। पौधे का चूर्ण व्रण के लिये प्रयुक्त होता है।

कल्पना तथा प्रयोग :– एक बड़ा चम्मच अच्छी तरह कुटे हुए पौधे के कांड को एक कांच पात्र में एक गिलास (200 मि०ली०) एल्कोहोल में मिलाकर कसकर ढक्कन लगाकर 10-15 दिन के लिये रखें। बीच बीच में हिलाते रहें। छानकर 40 बूंद दिन में 3-4 बार लें।

एक गिलास (200 मि०ली) पानी में 15 ग्राम कांड को मिलाकर 1-2 घण्टे के लिये रखें। तैयार मिश्रण को छान लें। इस प्रवाही का एक बड़ा चम्मच दिन में तीन बार लें।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

तिमुस त्रांस्कास्पिकुस
THYMUS TRANSCASPICUS

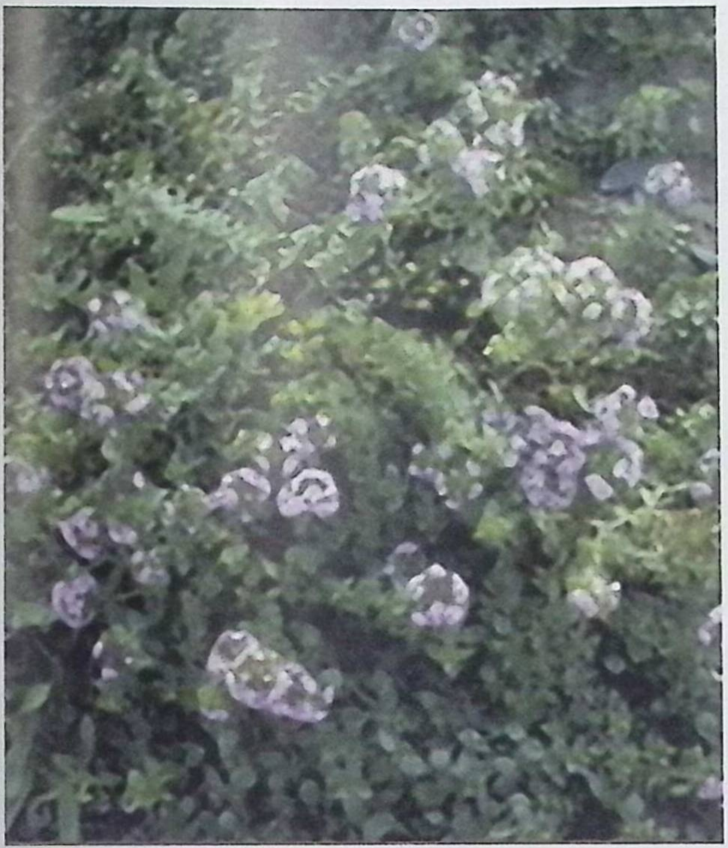

वर्णन :- तिमुस त्रांस्कास्पिकुस दक्षिण-पश्चिमी तथा मध्य कोपेतदग में फैला हुआ है।

घायमोल तथा कार्वाक्रोल जैसे इथरिअल तेल को निकालने तथा उसके तेज जीवाणु विरोधी गुण के लिये उसकी खेती अत्यधिक मात्रा में की जाती है। लोक चिकित्सा में कुक्कुर कास, श्वासनलिका से कफस्राव तथा पाचनतंत्र के विकारों की चिकित्सा के लिये, मुखगुहा का जीवाणु विरोधी प्रक्षालन के लिये एवं अनिद्रा, नाडीयूक्त शोथ एवं नाडीशूल की चिकित्सा के लिये तिमुस त्रांस्कास्पिकुस की चाय का प्रयोग होता है।

सामान्य तिमुस त्रांस्कास्पिकुस के अलावा बहुवर्णी श्वेत पत्र तथा तेज निम्बुवत् सुगंधवाला एक शोभाप्रद पौधा भी मिलता है। इसका प्रजनन कृन्तनों द्वारा होता है।

तिमुस त्रांस्कास्पिकुस लाबिआते कुल का छोटा सदाबहार 20-30 से०मी० ऊँचा गुल्मक पौधा है। पत्र सूक्ष्म, अवृंत्त, लंबाकार, अण्डाकृति भालाकार तथा भूरा धूसर होते हैं। पुष्प हलके लाल अथवा गुलाबी होते हैं। पत्र के कोण में 3-6 पुष्पों का गुच्छा स्थित होता है। बीज सूक्ष्म होते हैं। एक हजार बीज का वजन 0.2 ग्राम होता है। अंकुरीकरण 2-3 साल का होता है।

जैविक लक्षण :- तिमुस त्रांस्कास्पिकुस खुले, सूर्यप्रकाश वाले स्थानों पर अच्छी तरह उगता है। दक्षिण में यह सर्दी को अच्छी तरह पार कर लेता है।

तिमुस त्रांस्कास्पिकुस बीज अथवा अंकुर द्वारा प्रजनन करता है। मार्च-अप्रैल में अंकुर को उष्ण गृहों में अथवा कांच के नीचे बक्सों में रोपे जाते हैं। बीज 20 डिग्री से० तापमान पर लगभग 2 सप्ताह में अंकुरित होते हैं।

तिमुस त्रांस्कास्पिकुस को हल्की फलदायक भूमि पसंद है। एक वर्ष के अंकुर को जमीन में 2-3 किलोग्राम प्रतिवर्ग मीटर ओर्गेनिक खाद तथा 10-15 ग्राम प्रति वर्ग मीटर एमोनियम नाइट्रेट, पोटेशियम लवण तथा सुपरफोस्फेट के साथ जमीन में रोपे जाते हैं।

तिमुस त्रांस्कास्पिकुस को जमीन के टुकड़ों में रोपा जाता है, जिसमें दो पंक्ति के बीच में 35 से०मी० तथा एक पंक्ति में प्रति पौधे के बीच 15-20 से०मी० की दूरी पर रखी जाती है। और अनुपात में बड़े प्लोट्स में किया जाता है।

बीज को शुरूआती वसंत में 0.5 से०मी० की गहराई पर जमीन में बोया जाता हैं। शुरूवात में पौधा धीरे से विकसित होता है। भूमि को ढीला कर तथा कतृण से साफ करना जरूरी है।

खेती के दूसरे तथा तीसरे वर्ष में खनिज युक्त खाद दिया जाता है, लेकिन ओर्गेनिक खाद का प्रयोग सर्दी में कवच के रूप में किया जाता है। थायमस ट्रान्सककेस्पीकस जमीन पर चूना के प्रयोग के प्रति बहुत प्रत्युत्तरदायी है।

रोपने की प्रक्रिया प्रति 3-4 साल में फिर से की जाती है। पौधा वसंत में विभाजित होने वाली झाड़ियों में से फैलता है।

प्रथम वर्ष में उपज ज्यादा नहीं होती, लेकिन द्वितीय तथा तृतीय वर्ष में उपज हरा संइति के 200-300 ग्राम प्रति वर्ग मीटर पर इकट्ठा किया जाता है। तृतीय-चतुर्थ वर्ष में उपज कम हो जाने से फिर से रोपना जरूरी है।

तिमुस त्रांस्कास्पिकुस की फसल जून में ली जाती है। जब पौधे में पुष्प आते हैं तब शाखाओं को काटा जाता है। शाखायें 5 से०मी० लम्बी होनी चाहिये।

तिमुस त्रांस्कास्पिकुस को तीव्र मसालेदार सुगंध तथा थोड़ा अम्ल तथा तेज (कटु) स्वाद होता है। ताजा तथा शुष्क थायमस तली हुई चीजें, ग्रेवी, अचार, सब्जी की व्यंजन, सलाद, सोसेज में प्रयुक्त होता है। इसका प्रयोग माजोरां जैसी सब्जी की व्यंजन में भी होता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

त्रिबुलुस तेर्रेस्तिस
TRIBULUS TERRESTIS

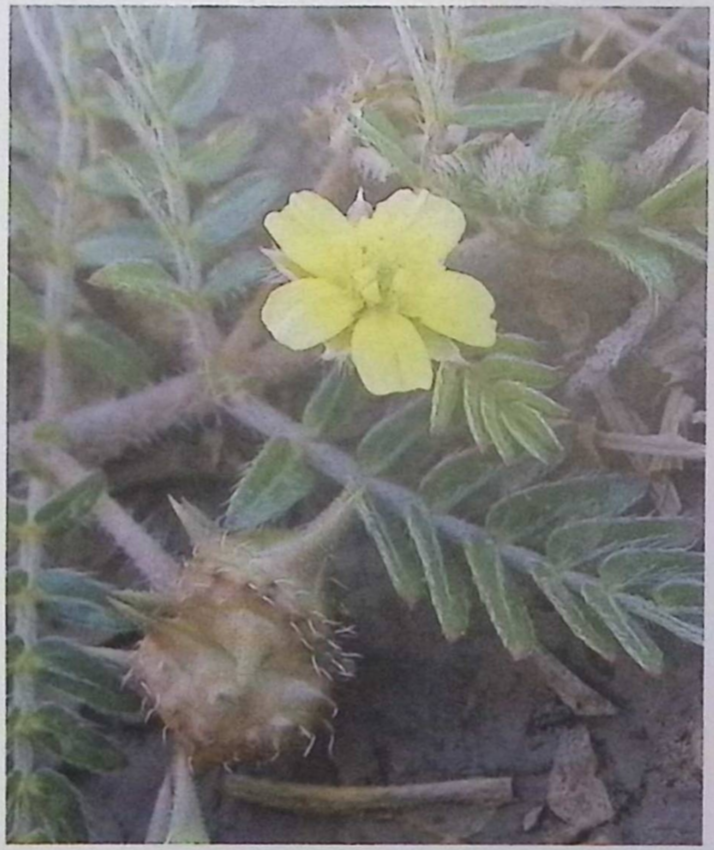

वर्णन :–फल जहाज के लंगर जैसा दिखता है। यह असाधारण वन्य औषधीय पौधा है। मध्य एशिया देशों में इसकी 20 तथा तुर्कमेनिस्तान में 2 प्रजातियाँ मिलती हैं।

त्रिबुलुस तेर्रेस्तिस कैमेल हूफ कुल का है। यह एकवर्षिय पतले मूलवाला पौधा है। इस पौधे की शाखायें लगभग 10-100 से०मी० लम्बी होती है। पत्र एक रेखा में स्थित तथा पक्षवत् विभाजित होते है। पत्र 6-8 के युग्म में, अण्डाकार, श्वेत, मोटे रोम से आच्छादित होते हैं। इसको बहुत सुंदर पुष्प लगते हैं। पुष्प संयुक्तदली होते हैं। इस औषधीय पौधे को हरे, अण्डाकार तथा छोटे कटोराकार पर्णवाले पत्र तथा छोटे, पीत पुष्प होते हैं। प्रत्येक पुष्प में 10 पुंकेसर होते हैं। पुष्प पत्र के नीचे स्थित होते हैं। फल सुखे होते हैं। ये पांच-तारक फल होते हैं तथा प्रत्येक को 2 अथवा 4 तीक्ष्ण कंटक होते हैं।

जैविक लक्षण :– इनकी जीवंत कार्य शक्ति शाखा के ऊर्ध्व हिस्से में होती है। शुष्क स्थानों में शाखायें 30-60 से०मी० लम्बी होती हैं, लेकिन नम स्थानों में इसकी शाखायें, 1.5-2 मीटर तक होती है। ये मई तथा अगस्त में पुष्प देता है। इसको जून तथा सितम्बर में फल लगते हैं।

त्रिबुलुस तेर्रेस्तिस का प्रजनन बीज द्वारा होता है। यह निवास के लिये स्थान का चुनाव नहीं करता। इनके सकण्ट बीज प्राणियों के लिये तथा कार के पहियों के लिये खतरनाक है। त्रिबुलुस तेर्रेस्तिस अपने पूरे जीवनचक्र के दरम्यान फल देता है। यह पौधा प्रचुर मात्रा में फल देता है। प्रत्येक पौधे में लगभग 1300 बीज होते हैं।

विस्तार :– यह औषधीय पौधा हमारे देश में अकसर मिलता है।

प्राकृतिक उपलब्धि :– त्रिबुलुस तेर्रेस्तिस हमारे देश में व्यापक रूप में फैला हुआ है। प्रयोज्य कच्चे माल के रूप में त्रिबुलुस तेर्रेस्तिस हमारे देश में पर्याप्त है। प्रतिवर्ष 10-15 टन पौधे इकट्ठे किये जाते हैं।

औषधीय कच्चा माल :– त्रिबुलुस तेर्रेस्तिस का औषधीय पौधे के रूप में प्रयोग उसके पुष्प तथा फल के लिये किया जाता है। त्रिबुलुस तेर्रेस्तिस को छांव अथवा सूर्य प्रकाश में सुखाया जाता है। पौधे को मूल के साथ निकाला जाता है तथा बाद में मूल को काटा जाता है। त्रिबुलुस तेर्रेस्तिस को सुखाते समय उसको दिन में 1-2 बार पलटना चाहिये। सुखाने के बाद तैयार कच्चे माल को कागज़ के बक्सों में अथवा थैलों में संचित किया जाता है। संचयन समय की अवधि 4-5 साल है।

रासायनिक संघटन :– त्रिबुलुस तेर्रेस्तिस में 0.01 प्रतिशत गर्मानी एल्कलोइड, 0.4 प्रतिशत फ्लेवोनोइड्स (रूटीन, केम्फीन, ट्रीब्युलोटेरास्ट, रोसिडेउियासीन, प्रोटोडायोसीन, किचुबासपोनीन, गिटोजेनिन, स्कोजेनाइन, गेकोल्कोरोजेनाइन, टाइगोजेनाइन अथवा स्टीरोल सेपोनीन एवं 1.7 प्रतिशत मेनिफितोइस्टेरोजीन, फायटोस्टेरोल, 0.11 प्रतिशत कोमेरीन, रंजक द्रव्य होते हैं। पत्र में 160 कि०ग्रा० प्रतिशत विटामिन सी तथा लगभग 5 प्रतिशत शुष्क तैल होता है।

प्राकृतिक उपलब्धि :– हमारे देश में त्रिबुलुस तेर्रेस्तिस का कच्चा माल पर्याप्त है। पौधा दुर्लभ नहीं है। प्रतिवर्ष लगभग 10-15 टन कच्चा माल इकट्ठा किया जाता है।

त्रिबुलुस तेर्रेस्तिस का औषधीय कच्चा माल केवल क्षुप है। यह कच्चे माल को पुष्प तथा फल आने के समय इकट्ठा किया जाता है। पौधे को मूल के साथ निकाला जाता है और तत्पश्चात् मूल को काट लिया जाता है।

प्रयोग :– प्राचीन काल से ही त्रिबुलुस तेर्रेस्तिस का प्रयोग चिकित्सा के लिये होता रहा है। त्रिबुलुस तेर्रेस्तिस का चिकित्सा में प्रयोग प्राचीन ग्रीस, चीन, मध्य एशिया तथा कोकेसस में होता आ रहा है। प्राचीन समय में प्रख्यात चिकित्सक अबु अली इब्न सीना ने त्रिबुलुस तेर्रेस्तिस का प्रयोग वृक्काश्मरी तथा खुले (बाह्य) व्रण की चिकित्सा में करने की सलाह दी थी।

लोक चिकित्सा में पौधे का प्रयोग मृदु गर्भाशय, शिरःशूल, नेत्राभिष्यन्द की चिकित्सा के लिये किया जाता है तथा तृण से धूमवर्ति बनाकर उसका धूमपान किया जाता है। मलेरिया की चिकित्सा के लिये त्रिबुलुस तेर्रेस्तिस के मूल

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

को दूध में उबालकर पीया जाता है। अभी वैज्ञानिक चिकित्सा में इस पौधे का प्रयोग पोटेन्सी तथा पौरुष्य ग्रन्थि के शोथ की चिकित्सा के लिये त्रिबुस्तान (बलगेरिआ में निर्मित) बनाने के लिये किया जाता है। इस औषध में 0.05-0.01 ग्राम स्टीरोइड ग्लायकोसाइड्स है।

कल्पना तथा प्रयोग :- एक बड़ा चम्मच फल को 200 मि॰ली॰ गर्म पानी में मिलाकर 15 मिनट के लिये उबालें। तत्पश्चात् छानकर सुखोष्ण, दिन में तीन बार पीयें। इस नुस्खे का प्रयोग गर्भाशय तथा पौरुष ग्रन्थि की चिकित्सा के लिये किया जाता है। इसको 2 महिने के लिये पीना चाहिये अथवा ट्रिब्युस्टान को दिन में तीन चार बार भोजन से पूर्व लेना चाहिये। चिकित्सा समय अवधि 1.5-2 मास की है। इस पौधे के प्रवाही सार 30-35 बूंद दिन में तीन बार पीयें।

त्रिगोनेल्ला फ़ेनुम-ग्रेकुम
TRIGONELLA FOENUM-GRAECUM

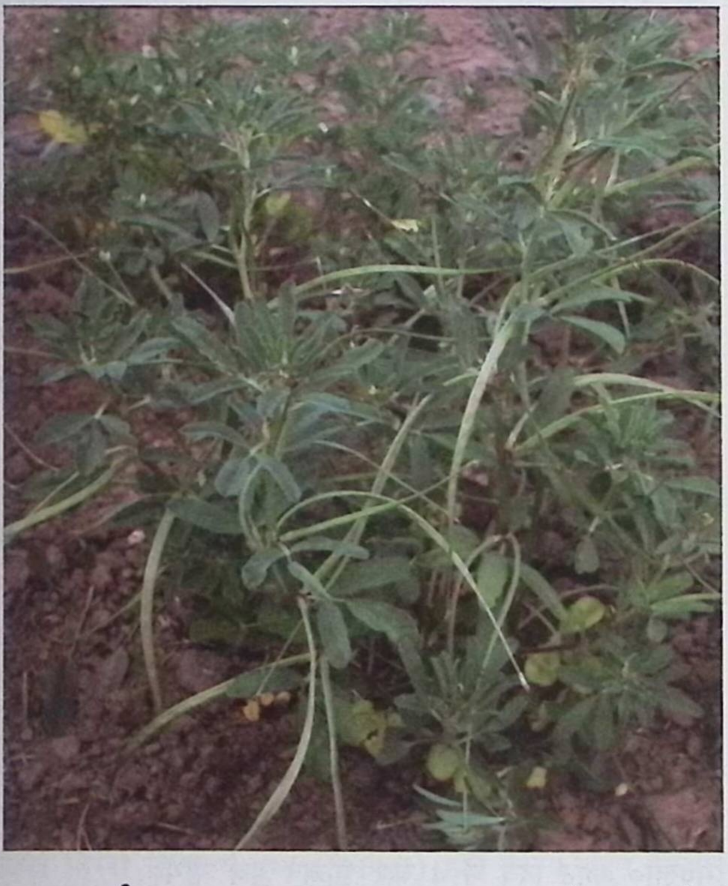

वर्णन :- यह एक आश्चर्यजनक औषधीय पौधा है। यह विश्व भर में फैला हुआ है। विश्व में इसकी 74 प्रजातियाँ हैं जिनमें मध्य एशिया देशों में 26 प्रजातियाँ तथा तुर्कमेनिस्तान 16 प्रजातियाँ मिलती हैं।

यह एकवर्षीय क्षुपीय, कोमेरीन की सुगंधवाला पौधा सोलेनासी कुल का है। यह लगभग 10-50 से॰मी॰ लम्बा होता है। कांड कुछ अंश तक अनावृत्, लम्बाई में बढ़ने वाली होती है। कांड नलिकाकार, अंदर से खोखला तथा कुछ शाखायुक्त होता है। पत्र त्रिकोणाकार, लम्बे तथा अंत भाग नुकीले होते हैं। यह 2-3 से॰मी॰ लम्बा तथा लगभग 1-1.5 से॰मी॰ चौड़ा होता है।

पौधे के पुष्प दो पत्रों के बीच में कुछ बैठे हुए होते हैं। छोटे पुष्पदल हाथकी घण्टी जैसे, 7-8 मि॰मी॰ लम्बे तथा कुछ रोमाच्छादित होते हैं। पुष्प का शिखर पीला अथवा हलके वर्ण का तथा 13-18 मि॰मी॰ लम्बा होता है। फल कुछ रसीले होते हैं। ये 6-11 मि॰मी॰ लम्बे तथा 4-6 मि॰मी॰ चौड़े होते हैं।

जैविक लक्षण :- त्रिगोनेल्ला फ़ेनुम-ग्रेकुम पर्वतों पर तथा तराई में उगता है। पौधे को अप्रैल-मई जून में पुष्प तथा फल लगते हैं। पौधे को लगभग 10-12 बीज होते हैं। ये 3-4 मि॰मी॰ लम्बे होते हैं। बीज हीरकाकार तथा धूसर होते हैं।

विस्तार :- हमारे देश में यह पौधा दक्षिण-पश्चिमी कोपेतदग में, मुस्ताफेइड्स में सुंबार तथा चेंदीर नदियों को बीच में एवं आशखाबाद में उगता है।

प्राकृतिक उपलब्धि :- यह पौधा हमारे देश में दुर्लभ है।विशेष संदर्भों में यह पौधा प्रायोगिक क्षेत्रों में उगाया गया है।

औषधीय कच्चा माल :- पौधे के बीज का कच्चे माल के रूप में प्रयोग होता है। इसके संपूर्ण विकसित होने पर बीज इकट्ठे किये जाते हैं। पीले हो गये फलों को कैंची से काटकर छज्जे के नीचे सुखाया जाता है। इसके बाद इसको बड़े छेदवाली छलनी से छाना जाता है। इससे पत्र बच जाते हैं तथा उपयोगी बीज नीचे गिरते हैं। बीज को कसकर ढक्कन लगाये हुए कांच पात्र में रखा जाता है। संचयन समय की अवधि 2-3 साल है।

रासायनिक संघटन :- बीज में 2.2 प्रतिशत स्टिरोइड्स, 0.2 प्रतिशत, सिस्टोस्टेरीन, रूटिन तथा अन्य महत्वपूर्ण पदार्थ होते हैं।

प्रयोग :- इस पौधे के औषधीय गुणधर्मों के बारे में जानकारी अबु अली इब्न सीना की सुप्रसिद्ध पुस्तक कैनन आफ मेडिकल सायंस में मिल सकती है। लोकप्रिय चिकित्सा में इस औषधीय एवं आहारीय पौधे का प्रयोग लम्बे समय से हो रहा है। इसका प्रयोग अंत:स्रावी ग्रंथियों के नियंत्रण की विकृति से उत्पन्न मैथुन विकृति में तथा तमक श्वास में होता है।

कल्पना तथा प्रयोग :- पौधे के बीज एक बड़ा चम्मच (15 ग्राम) को एक गिलास (200 मि॰ली॰) उबाले हुए पानी में 2-3 घण्टे के लिये उष्ण स्थान में रखें। तत्पश्चात् 20-30 मिनट के लिये उबालें। तैयार मिश्रण 1-2 बड़ा चम्मच (15-30 ग्राम) दिन में 3 बार भोजन पूर्व लें। चिकित्सा समय की अवधि 24-48 दिन है। चिकित्सा

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

14-16 दिन के बाद फिर शुरू की जाती है। इस पौधे के बीज को अन्य पौधे के बीज के साथ मिलाकर आफ्रोडाइट्स लव बनाने के लिये प्रयुक्त होते हैं।

बीज 20 ग्राम त्रिगोनेल्ला फ़ेनुम-ग्रेकुम तथा मिलफोइल 15 ग्राम को अच्छी तरह मिलाना चाहिये। इस तैयार मिश्रण को 0.5-1.0 ग्राम मात्रा में प्रतिदिन तीन बार भोजनपूर्व प्रयुक्त करें। संचयन समय की अवधि 3-4 सप्ताह है।

तुस्सिलागो फ़ार्फ़ारा
TUSSILAGO FARFARA

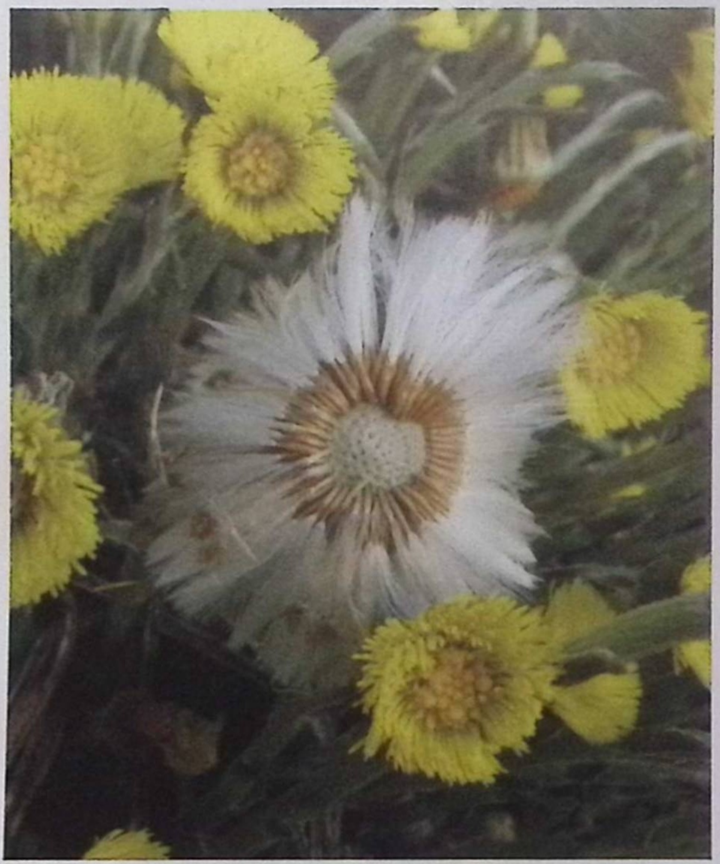

वर्णन :- बहुत सारे लोगों के लिये यह वसंत पुष्प के रूप में जाना जाता है। यह पौधा हमारे देश में मागतयमगुलय क्षेत्र में उगता है तथा उसे अवजा कहते हैं। जब बर्फ गिरती है तो पौधा बढ़ता है तथा जब बफ खत्म हो जाती है तब पीले पुष्प दृश्यमान होते हैं। कांड छोटे, चतुष्कोणीय होते हैं। यह परम सुन्दर पौधा इस प्रकार दिखता है। यह कोम्पोसिते कुल का है। कांड 10-25 से०मी० ऊँचे होते हैं। पुष्प के छोटे गुच्छे कांड के अग्र भाग पर स्थित होते हैं। छोटे पत्र नाशपाति के आकार के होते हैं। पुष्प कुछ कतार बनाते हैं।

जैविक लक्षण :- इस पौधे के पत्र इसके पूरे पुष्प खिल जाने के बाद आते हैं। पौधे को फरवरी-मार्च में पुष्प तथा अप्रैल-मई में फल लगते हैं। ये नदी के किनारों, नालिओं तथा चट्टानों की सभी दरारों एवं गीले रेतीले स्थानों पर निवास करता है।

विस्तार :- यह हमारे देश में पश्चिम-पूर्वीय कोपेतदग मागतयमगुली, इडेर, सापाराबाहार, दीने मध्य कोपेतदग, गारायलचय, खयसोल, नोखूर, सुलुकली, सरयमसाकुच आदि स्थानों में विस्तृत रूप से फैला हुआ है।

प्राकृतिक उपलब्धि :- औषध के रूप में यह हमारे लोगों को संतोष दे सकता है। इसको उगाने की सलाह दी जाती है।

औषधीय कच्चा माल :- औषधीय कच्चे माल के रूप में तुस्सिलागो फ़ार्फ़ारा के पत्र तथा पुष्प गुच्छे प्रयुक्त होते हैं। पत्र को अप्रैल-मई में इकट्ठे किये जाते हैं। पुष्प को फरवरी-मार्च में इकट्ठे किये जाते हैं। जब पुष्प गुच्छे इकट्ठे किये जाते है, तब यह जरूरी है कि 5 से०मी० का धानी लिया जाये इनको अटारी में सुखाया जाता है। कच्चे माल को 2-3 साल तक कागज़ पर रखना जरूरी है।

रासायनिक संघटन :- पत्र में तिक्त ग्लायकोसाइड्स, मेलिक तथा एस्कोर्बिक एसिड्स, इथरिअल तेल, केरोटीन आदि होते हैं।

प्रयोग :- तुस्सिलागो फ़ार्फ़ारा विविध प्रभाव दिखाता है। पौधे का प्रयोग कफनिःसारक तथा शामक औषध के रूप में मूत्रवह संस्थान की व्याधियों में तथा व्रणरोपणार्थ किया जाता है। विविध प्रकार के व्रण के रोपण के लिये यह बहुत उपयोगी है।

कल्पना तथा प्रयोग :- इस पौधे के दो बड़े चम्मच को 1 लीटर उबले हुए पानी में मिलाकर थोड़ी देर के लिये रखें। कपड़े से छानकर एक बड़ा चम्मच दिन में तीन बार पीयें। इसका प्रयोग आमाशय शोथ, मूत्रवह संस्थान के शोथ तथा आंत्र के लिये किया जाता है। इस पौधे के पत्र क्वाथ तथा कदली एवं यष्टीमधु का क्वाथ ऊर्ध्व श्वसनवह संस्थान की व्याधियों के लिये प्रयुक्त होता है।

400 मि०ली० उबले हुए पानी को 1/4 भाग इस पौधे के पत्र तथा 3/4 भाग यष्टीमधु के मिश्रण में डालें, उबालें तथा एक बड़ा चम्मच को 400 मि०ली० उबले हुए पानी में डालें। 30-40 मिनट के बाद कपड़े से छानकर 100 मि०ली० फांट दिन में 4 बार भोजन पूर्व पीयें।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

तीफ़ा लतिफ़ोलिआ
TYPHA LATIFOLIA

वर्णन :- इसके विश्व में लगभग 20 उपवन तथा मध्य एशिया देशों में 12 होते हैं। तुर्कमेनिस्तान में 6 उपवन मिल सकते हैं। पौधे के रूप में तथा उपयोगिता के आध ार पर ये एक दूसरे के समीप है। दूसरे शब्दों में हम उसे बयिरा, बिज़्क, योज़ तथा लू कह सकते हैं।

पौधा उसी नाम अर्थात् तीफ़ा लतिफ़ोलिआ के कुल का है। यह कई सालों तक जिंदा रह सकता है तथा 100-250 से०मी० ऊँचा होता है। तीफ़ा लतिफ़ोलिआ के मूल तथा सरकंडा मूल जमीन के अंदर होते हैं। इसका पुष्प मोटा तथा सीधा होता है। इसके पत्र लम्बी रेखावाले, मुड़े हुए तथा 4 से०मी० चौड़े होते हैं। कभी-कभी ये त्रिकोणाकार भी होते हैं। इसका नलिकाकार पुष्प घटक बहुत वायुरुद्ध, 15-30 से०मी० ऊँचा होता है। इसका वर्ण कुछ गहरा होता है। इसके पुष्प बहुत सौम्य तथा बहुत छोटे होते हैं। पुष्प घटक के ऊर्ध्व हिस्से में पुरुष पुष्प (पुंकेसर) होते हैं। ये बहुत जल्दी सूख जाते हैं। पौधे के नीचे के हिस्से में पुष्प होते हैं। ये उड़ सकते हैं क्योंकि इनका आकार काष्ठफल जैसा होता है।

जैविक लक्षण :- पौधा जून एवं अगस्त में पुष्प तथा फल देता है। इसकी जैविक विविधता यह है कि यह जलीय तथा दलदली भूमि पर उगता है। इसको सूर्यप्रकाश की आवश्यकता रहती है। यह जीने के लिये जैविक तत्वों को इकट्ठा करता है। यह बीज द्वारा प्रजनन करता है। ये बीज बहुत रोमश होते हैं, अत: हवा जब उनको पानी में डालती है तब भी ये सूखे रहते हैं।

विस्तार :- हमारे देश में यह पौधा दक्षिण-पश्चिमी कोपेतदग पर्वत में जैसे दायनासुप में, मध्य कोपेतदग में, गोर्माप में, काराकुम रण में, गारातगेलेक में तथा तोपयाकान तालाब में मिलता है। यह पहाड़ों के बीच में, मैदानों में, घाटियों में तथा तालाब में मैदानी स्थानों पर उगते हैं।

प्राकृतिक उपलब्धि :- तीफ़ा लतिफ़ोलिआ का उल्लेख दुर्लभ प्रजातियों की सूची में है। कच्चे माल में इसका औषधीय हिस्सा संतोषजनक है।

औषधीय कच्चा माल :- इसके पत्र तथा सरकंडा मूल औषधीय कच्चे माल के रूप में प्रयुक्त होते हैं। हमे इसके सरकंडा मूल को पतझड़ के अंत में अथवा वसंत की शुरुआत में खोदकर निकालना चाहिये। तत्पश्चात् हमें कच्चे माल को सुखाना चाहिये। हमें इन्हें कागज़ के थैलों में रखना चाहिये। संचयन समय की अवधि 3-5 साल है।

जब इनको पुष्प लगते हैं तब हमें पत्र को इकट्ठा करना चाहिये। हमें इन्हें कागज़ के थैलों में हवादार कमरों में अथवा छत के नीचे 2-3 साल के लिये सुरक्षित करके रखना चाहिये।

रासायनिक संघटन :- तीफ़ा लतिफ़ोलिआ के सरकंडा मूल में स्टार्च, आल्ब्युमिन तथा शर्करा होते हैं। यह पाया गया है कि पौधे के हरे कांड में कार्बोहाइड्रेट तथा 100 मि०ग्रा० प्रतिशत विटामिन सी होते हैं।

प्रयोग :- इस पौधे से निर्मित औषध में जीवाणुनाशक रक्तस्तंभक, व्रणरोपक तथा रोगाणुरोधक गुण होते हैं।

लोक चिकित्सा में सरकंडा मूल से बना फांट तथा पत्र से बना प्रवाही अतिसार, मुख का शोफ एवं शोथ के लिये प्रयुक्त होता है।

पुष्प अथवा पक्षवत् विभाजित पत्र का चूर्ण व्रण पर लगाने के लिये संपूर्ण है।

होमीयोपैथी में सरकंडा मूल का प्रयोग फिर से शुरू हुआ है। हम सरकंडा मूल को वीनेगर में रखते हैं तथा उसको शाखा के साथ पकाते हैं।

यह उपयोगी पौधा केवल औषध के रूप में ही प्रयुक्त नहीं होता। हम इसके पत्र के रेसों से झोले, टोकरीयाँ तथा पट्टियाँ बना सकते हैं। ये सभी उत्पाद सर्दी में भी सुखे रहते हैं। तीफ़ा लतिफ़ोलिआ का संकोच वस्तु के रूप में प्रयोग प्राचीन काल से ही हो रहा है। इसका कागज़ उत्पादन के लिये विस्तृत रूप में प्रयोग होता है।

कल्पना तथा प्रयोग :- एक गिलास (200 मि०ली) पानी में 15-20 ग्राम मूल तथा सरकंडा मूल को

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

मिलायें। एक तामचीनी पात्र में 20–30 मिनट के लिये उबालें। 15 ग्राम दिन में 4–5 बार सुखोष्ण लगायें।

शुष्क पौधा 15 ग्राम को एक गिलास (200 मि०ली०) उबले हुए पानी में मिलाकर सार निकालें। इस प्रवाही को छानकर एक बड़ा चम्मच (15 ग्राम) दिन में 3 बार लगायें।

उल्मुस कार्पिनिफ़ोलिआ
ULMUS CARPINIFOLIA

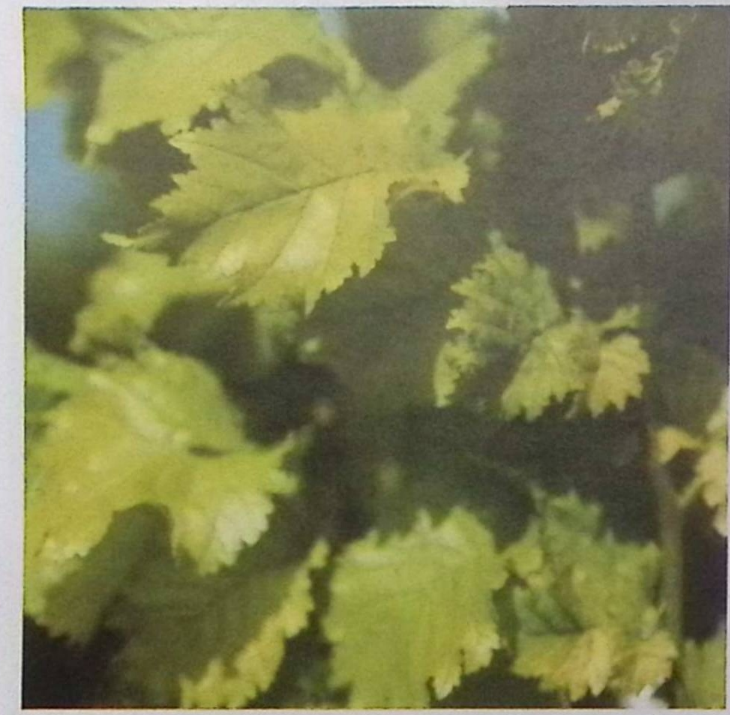

वर्णन :– तुर्कमेनिस्तान में उल्मुस कार्पिनिफ़ोलिआ की 3 प्रजातियाँ मिलती हैं। इनमें से उल्मुस कार्पिनिफ़ोलिआ पुमिला नाम की एक प्रजाति नदी की घाटी में उगती है। इसको गुईजुम भी कहते हैं ये सभी में औषधीय गुण है।

उल्मुस कार्पिनिफ़ोलिआ गरागच (उल्मुस) कुल का 10–20 से०मी० ऊँचा पौधा है। पत्र एक के बाद एक तथा धार दंतुर होती है।

जैविक लक्षण :– यह समुद्र तल से 400–1200 मीटर की ऊँचाई पर पहाड़ी जलस्रोतों के पास उगता है। पौधा फरवरी मार्च में पुष्प देता है तथा अप्रैल–मई में फल खिलता है।

विस्तार :– यह पूर्व–पश्चिमी कोपेतदग में, गुयेन्द योलदेरे, यसाक, सायवांत, सुंबार, सुंत, चोहागाय, बोर्मे में, मध्य कोपेतदग में तलयझ, मुसुनेव, सुलुकली, हयरसदेरे, आर्चाबील, गोकदेरे, गारागाच, वानोवस्कीय में तथा पूर्व कोपेतदग में गुरयहोवदान, कीश्मीरली, वाहचा, बाारलय, शामलय तथा कोयतेनदग में फैला हुआ है।

प्राकृतिक उपलब्धि :– पौधा दुर्लभ पौधों में से नहीं है। यह कुतृण (खरपतवार) के रूप में उगता है।

औषधीय कच्चा माल :– तने की त्वक्, मूल, मूलत्वक्, पत्र तथा फल का प्रयोग कच्चे माल के रूप में होता है। इसको सावधानी पूर्वक इकट्ठा करना तथा सुखाना जरूरी है। पौधे की त्वक् को कपड़े के थैलों में संचित किया जाता है। संचयन समय की अवधि 2–3 साल है। पत्र को भी कपड़े के थैलों में संचित किया जाता है। इसकी संचयन समय की अवधि 1–2 साल है।

रासायनिक संघटन :– तने में सेस्क्वीटर्पेनोइड, त्वक् में ट्राइटर्पेनोइड्स, डीहाइड्रोएर्गोस्टेरिन, स्टीग्मास्टेरिन स्टीरोइड, केटेचीन लीकोसीएनाइड, पत्र में विटामिन सी, क्लोरोजीन फीनोलकार्बन एसीड़, केटेचीन, रूटीन, केम्फेरोल, लीलोपीओनीडिन, लीकोपेलार्गोनीडिन तथा फल में विटामिन ई, केरोटीन एवं 28–29.7 प्रतिशत तैल होते हैं।

प्रयोग :– अजरबैजान में मूल का प्रयोग पूययुक्त व्रण की चिकित्सा में होता है। बैलजियम में मूलत्वक् से औषधीय सुरा सार बनाया जाता है तथा इसका प्रयोग कैन्सर संबंधित व्याधियों में होता है। पौधे में मूत्रल तथा शामक गुणधर्म हैं। आब्खाझीअन्स इसका प्रयोग दग्धव्रण की चिकित्सा में करते हैं।

कल्पना तथा प्रयोग :– त्वक् तथा शाखा के एक बड़े चम्मच में 200 मि०ली० पानी मिलाकर थोड़ी देर रखें। इससे गंडूष करें तथा दग्धव्रण का प्रक्षालन करें।

बारीक कटे हुए पौधे का एक बड़ा चम्मच (15 ग्राम) को 200 मि०ली० पानी में मिलाकर थोड़ी देर रखें, तत्पश्चात् 15–20 मिनट के लिये उबालें। छानकर दिन में 3 बार पीयें।

काटे हुए फल 2 चम्मच को एक गिलास दूध में मिलाकर उबालें। थोड़ी देर रखकर दिन में 3 बार पीयें।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

उंजेर्निआ विक्तोरिस
UNGERNIA VICTORIS

वर्णन :- उंजेर्निआ विक्तोरिस एक बहुवर्षीय तृणीय पौधा है। ए.यु. वेडेन्स्कीय प्रथम थे जिन्होंने इस पौधे को उझबेकिस्तान में प्रस्तुत किया। इस पौधे का उन्गेर्नीआ नाम एक विख्यात ओस्ट्रियन वनस्पतिशास्त्री फ्रान्झ उन्गेर (1800-1870) के सम्मान में दिया गया है। तुर्कमेनिस्तान में इसकी 4 प्रजातियाँ तथा मध्य एशिया देशों में लगभग 30 प्रजातियाँ मिलती हैं। इस पौधे के प्रकंद 7-12 से०मी० चौड़े तथा 17 से०मी० लम्बे होते हैं। कंद कृष्ण धूसर तथा शल्कल परत से आच्छादित होता है। कंद का आधार सुविकसित तथा 2-3 लम्बा एवं चौड़ा होता है। कंद को पीत-रक्त वर्ण के पूरक मूल होते हैं। यह 0.2-0.4 से०मी० चौड़े तथा 10-20 से०मी० लम्बे होते हैं। यह 10-40 से०मी० ऊँचा होता है। इस पौधे के पत्र रसीले, चिकने, रेखाकार, किनारे वाले, 30-40 से०मी० लम्बे तथा 4 से०मी० चौड़े होते हैं। पत्र फरवरी के अंत में उगते हैं। इस पौधे के पुष्प छत्राकार होते हैं। पीत रक्त वर्ण के 2-11 पुष्प होते हैं। फल 3-4 से०मी० लम्बा होता है। इस पौधे के जुलाई के अंत से लेकर अगस्त तक पुष्प आते हैं। बीज अगस्त-सितम्बर में बन जाते हैं।

जैविक लक्षण :- पौधा समुद्रतल से 800-2800 मीटर की ऊँचाई पर उगता है। पौधे को फरवरी के अंत में तथा अप्रैल के मध्य में पुष्प आते हैं, इस पौधे के पत्र का विकास रुक जाता है। जून की गर्मी में ये सूख जाते हैं। एक-दो महिने के बाद पौधे का तना 12-30 से०मी० ऊँचा हो जाता है।

इस पौधे की कली सितम्बर के अंत में उत्पन्न होती है। एक पौधा 20-150 बीज देता है। एक हजार बीज का वजन लगभग 13 ग्राम होता है। वसंत में ये सूचीवत् अंकुर बनाते हैं।

विस्तार :- हमारे देश में यह पौधा केवल कोपेतदग में उगता है। पौधा सामान्यत: पर्वतों पर मिलता है। यह पौधा प्रसरलों के बीच में उगता है।

प्राकृतिक उपलब्धि :- प्रतिवर्ष यह पौधा 20 टन शुष्क पत्र देता है। यह दुर्लभ पौधा है। इस पौधे को तुर्कमेनिस्तान के लाल पुस्तक में समाविष्ट किया गया है। कोपेतदग राष्ट्रीय उद्यान में इसका संरक्षण किया गया है। इस पौधे की खेती की सलाह दी जाती है।

औषधीय कच्चा माल :- इस पौधे के पत्र का औषधीय उद्देश्यार्थ प्रयोग किया जाता है। पत्र 10-35 से०मी० लम्बे होते हैं। अप्रैल के अंत में इस पौधे के पत्र इकट्ठे किये जाते हैं। इस पौधे के पत्र अपना हरा वर्ण बनाये रखते हैं। इस पौधे के कंद को इकट्ठा करके संरक्षित किया गया है। कच्चे माल को 12-15 ग्राम के कपड़े के थैलों में संचित किया जाता है। संचयन समय अवधि 1-2 साल की है।

रासायनिक संघटन :- पौधे में एल्कलोइड तथा गेलन्टेमाईन होते हैं। पत्र में लीनोराइन गोर्डाइन, टेसेटाइन तथा पेन्क्रिएयझन होते हैं। इस पौधे के पत्र को अप्रैल में इकट्ठे करने की सलाह दी जाती है क्योंकि इस समय पत्र में 0.52-0.56 प्रतिशत एल्कलोइड तथा 0.15-0.19 प्रतिशत गेलन्टेमाइन रहते हैं।

प्रयोग :- हीपोक्रटीस ने इस पौधे का प्रयोग केन्सर संबंधित व्याधियों में किया था। एल्कलोइड तथा ग्लायकोरीन कफ, श्वसन संस्थान के शोथ, श्वसन नलिका शोथ, बहुनाडी शोथ तथा संधिवात में मदद करते हैं। एल्कलोइड तथा गेलन्टेमाईन का प्रयोग मूत्राशय तथा आंत्र की शब्द विज्ञान में होता है। लोकप्रिय चिकित्सा में इस पौधे का कंद औषध के रूप में प्रयुक्त होता है।

पौधे के शुष्क पीसे हुए पत्र एक बड़े चम्मच को एक गिलास (200 मि०ली०) उबलते हुए पानी में मिलाकर 7-8 घण्टे के लिये रखें। तत्पश्चात् छानकर इस फांट को दिन में एक बाद भोजन से पूर्व 20-30 मिनट पहले लें।

एक लीटर उबलते हुए पानी में पत्र के दो बड़े चम्मच मिलायें। पात्र एल्युमीनियम का होना चाहिये। मिश्रण को धीमी आंच पर 10-15 मिनट के लिये उबालें। ठंडा करके छानकर इस प्रवाही को दिन में 3 बार पीयें।

फांट के लिये शुष्क, पीसे हुए पत्र का प्रयोग करें। औषधीय एल्कोहोल मिलाकर 10 दिन तक रखें। छानकर प्रतिदिन 5-6 बूंद दिन में तीन बार भोजनपूर्व 20-30 मिनट पहले पीयें।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

उर्तीका दिओइका
URTICA DIOICA

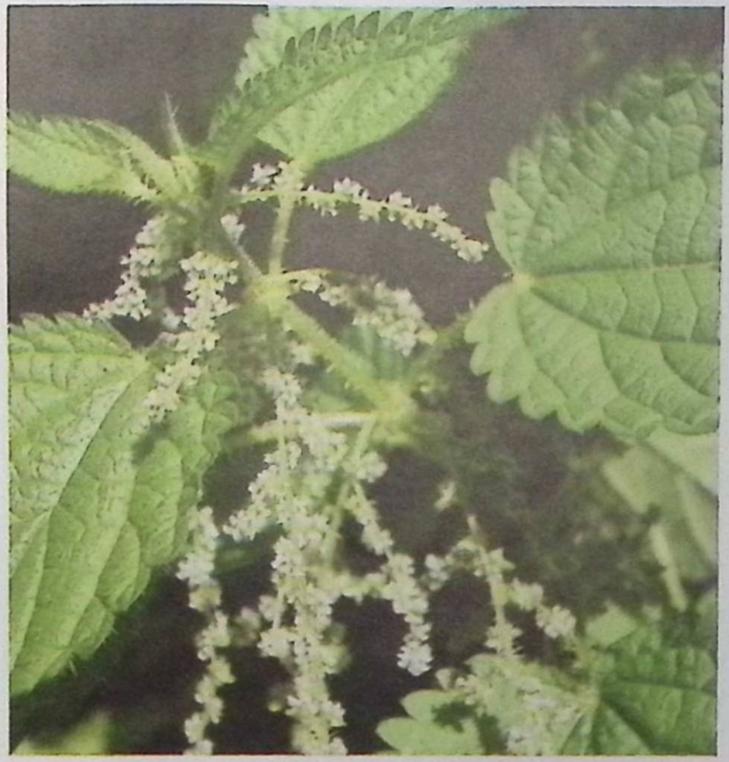

वर्णन :–यह क्षुपीय औषधीय पौधा है। विश्व में इसकी 40 प्रजातियाँ जिनमे मध्य एशिया देशों में 10 प्रजातियाँ तथा तुर्कमेनिस्तान में 1 प्रजाति पाई जाती है। हमारे देश में इस पौधे के अन्य नाम जेरेन गिजिलेवुक हब तथा गुसगनमज है।

उंजेर्निआ विकतोरिस उर्तिके कुल का एक बहुवर्षिय एकलिंगी पौधा है। पौधे का वैज्ञानिक नाम लेटीन उरेरे अर्थात् दाह, दिओइका अर्थात् एकलिंगी है। प्रकंद मोटा, फैला हुआ होता है। तना सख्त, चार धारवाला, सीधा 50–100–150 से०मी० लम्बा होता है। यह शाखायुक्त नहीं होता तथा रोमाच्छादित होता है। पुष्प छोटे, हरित, एकलिंगी तथा गुच्छे में इकट्ठे होते हैं। पुंलिंगी पुष्पगुच्छ सीधे होते हैं, स्त्रीलिंगी पुष्पगुच्छ नीचे की ओर झुके हुए होते हैं। फल अण्डाकार होते हैं। ये मई से लेकर पतझड़ तक पुष्प देते हैं तथा जुलाई में फल देता है।

जैविक लक्षण :– अर्टिका वसंत में उगता है। बर्फ पिघलने के 10–15 दिन के बाद बड़े पत्र निकल आते हैं। इस पत्र में बहुत विटामिन्स होते हैं। यह बहुत जल्दी से वृद्धि करता है तथा मई में इसको पुष्प लगते हैं। जब पौधे का पुष्प लगते हैं तब हरे पत्र बने रहते हैं।

अर्टिका के मूल कमजोर होते हैं। पौधा बीज, प्रकंद तथा अंकुर द्वारा प्रजनन करता है। इस कुतृण को इकट्ठा करना बहुत मुश्किल है।

विस्तार :– हमारे देश में यह पौधा मध्य कोपेतदग में, जुले, आच्रबील, गोकदेरे, होवदान, गेर्माप, देगीरमेनली, सुलुकली, बृहत् एवं लघु बाकजा, केलेते, आर्वाझ, यपाय, नोहूर गारावुल, कोनेगुम्मेय में, दक्षिण–पश्चिम कोपेतदग में, एयदेरे, सुबार, दायना, सायवान तथा देश्त में उगता है। यह अंधेरे, गीले तंगघाटी में नदी किनारों पर तथा गुल्मीय पौधों के बीच में उगता है।

प्राकृतिक उपलब्धि :– यह दुर्लभ पौधा नहीं है। औषधीय औद्योगिक उद्देश्यार्थ प्राकृतिक भण्डार पर्याप्त है। हमारे देश में साल के मध्य में लगभग 15–20से35 टन औषधीय कच्चा माल इकट्ठा किया जाता है। दक्षिण–पश्चिमी कोपेतदग वो स्थान है जहां अर्टिका प्रचुर मात्रा में उगता है। पौधा बीज द्वारा संपूर्णतः प्रजनन करता है। इनको वसंत तथा पतझड़ में बोया जाता है। पौधे को प्रकन्द द्वारा भी बोया जाता है। शुरुआती वसंत में प्रकंद के कई टुकड़े किये जाते हैं। प्रत्येक टुकड़े में कलियों के साथ एक मूल होना चाहिये। इसको कतार में बोया जाता है। एक मीटर की कतार में पांच प्रकंद (टुकड़े) को बोया जाता है। दो कतारों के बीच की दूरी 50 से०मी० की होती है। अर्टिका बहुत शीघ्रता से बढ़ता है।

औषधीय कच्चा माल :– अर्टिका के पत्र प्रयोज्य कच्चा माल है। पौधे को मई–जून में पुष्प आते हैं तथा इसी समय पत्र को इकट्ठे किये जाते हैं। पत्र को दोपहर 13.00–16.00 बजे के बीच में इकट्ठा किया जाता है। इस समय पत्र में उपयोगी पदार्थ होते हैं तथा पौधे में नमी कम होती है। पौधे को दस्ताने पहनकर इकट्ठा किया जाता है। प्रतिदिन 70–100 किलोगाम पत्र इकट्ठे किये जाते हैं। इकट्ठे किये हुए पत्रों से छज्जे में, अच्छे हवादार स्थानों पर सुखाया जाता है। तैयार पत्रों में नमी 4 प्रतिशत होनी चाहिये। सुखाने के समय में सूर्य, प्रयोज्य कच्चे माल के ऊपर नहीं होना चाहिये क्योंकि उससे कच्चे माल में स्थित विटामिन्स नष्ट हो जाते हैं। प्रयोज्य कच्चे माल की संचयन समय की अवधि 2 साल है। तैयार कच्चे माल को शुष्क, हवादार स्थान में बंद थैलों में संचयन करना चाहिये।

रासायनिक संघटन :– अर्टिका के पत्र में विटामिन सी (269 mg%), ए (50mg%) के, बी, ई, टेनीन (2 प्रतिशत), प्रोटीन पदार्थ, एसिड्स, एम्बर फ्युमर, क्षीर, लेमन, फार्मिक तथा ओइल एसिड्स उत्पत् एसीड्स, अर्टिन ग्लायकोसाइड, क्लोरोफीलिन, कोलीन, सूक्ष्ममात्रीय तत्व, क्रोम, फेरम लवण, सायटोस्टेरिन, कवेरसेटिन फलेवोनोइड्स, गोंद, मेग्नेशियम, एल्युमिनियम, वेनेडीयम, निकल तथा अन्य तत्व होते हैं।

पौधे के पत्र में विटामिन सी तथा ए होते हैं। प्रकंद तथा मूल में निकोटिन तथा विटामिन सी होते हैं।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

प्रयोग :- पारंपरिक चिकित्सा में अर्टिका का औषध के रूप में प्रयोग प्राचीन काल से ही हो रहा है। रोमन वैज्ञानिक प्लाइनी वरिष्ठ (ई०पू० प्रथम शताब्दी) ने अपनी पुस्तक द हिस्टरी आफ नेचर में तथा पूर्व में हुए प्रख्यात वैज्ञानिक अबु अली इब्न सीना ने अपनी पुस्तक कैनन आफ मेडिकल सायंस में इसके बारे में लिखा है।

अर्टिका के बीज तथा पत्रों का चूर्ण केन्सर युक्त ग्रंथियाँ, तथादंश श्वान की चिकित्सा में तथा नासागत रक्तस्राव में रक्तस्तंभक के रूप में प्रयुक्त होते हैं। औषधीय पौधों में अर्टिका सबसे ज्यादा कीमती है। इसका प्रयोग 45 व्याधियों की चिकित्सा में होता है तथा इसके रासायनिक संघटन में 36 पदार्थ होते हैं। अर्टिका के तने तथा पत्र में सिलिकोन तथा फोर्मिक एसिड होते हैं।

पारंपरिक चिकित्सा में प्रयोज्य पौधे का प्रयोग नासागत रक्तस्राव, वांति, वृक्कगत रक्तस्राव, गर्भाशयगत रक्तस्राव, फुफ्फुस तथा गुदा-गत रक्तस्राव की चिकित्सा में होता है। अर्टिका का प्रयोग मूत्रल के रूप में तथा व्रण की चिकित्सा में होता है। पौधे का प्रयोग विविध एलर्जिक प्रतिक्रिया, शीतपित्त, मधुमेह, क्लैव्य, बंध्यत्व, तमकश्वास, कृमि, वृक्क शोथ, आंत्रशोथ, कामला, पक्षाघात, वृक्काश्मरी, पित्ताश्मरी तथा मलेरिया में होता है।

यह औषधीय पौधा स्तन्यपान कराने वाली माताओं में दूध का उत्पादन बढ़ाता है। अर्टिका मुर्गिओं में अण्डा देने की क्षमता बढ़ाता है। अर्टिका के ताजे पत्र चर्मव्याधियों की चिकित्सा के लिये तथा केश को सुदृढ़ बनाने के लिये प्रयुक्त होते हैं। पत्र पांडु रोग में प्रयुक्त होते हैं। पारंपरिक चिकित्सा में पौधे के प्रत्येक भाग का प्रयोग होता है। प्रकंद को मधुर स्वाद होता है। प्रकंद का प्रयोग कफनि:सारक के रूप में तथा तरुण पत्र एवं तने का प्रयोग अतिसार में होता है। दुर्बल बच्चों को अर्टिका के ताजे क्षीर तथा गाजर को पीने की सलाह दी जाती है। सूक्ष्मभागीय तत्वों का समूह, फेरम, निकल तथा कुप्रम लाल रक्तकण तथा हीमोग्लोबिन बढ़ाने में मदद करते हैं। शुष्क अर्टिका का प्रयोग अतिसार शूल, आमाशय शूल में होता है। इसको ब्रेड के साथ खाया जा सकता है। इसका प्रयोग सूप में किया जाता है। इसको दूध में मिलाया जाता है। पौधे में टेनिन होते हैं। पौधे में विटामिन के तथा कैल्शियम होते हैं। यह रक्त में स्कंदन की प्रक्रिया बढ़ाता है, हृदय रक्तवह संस्थान को एवं श्वसन केन्द्र को सामान्य बनाता है।

अर्टिका से निर्मित चाय में औषधीय गुण है। इसमें अनेक विटामिन होते हैं। यह आमाशय के लिये बहुत उपयोगी है। इसके मूत्रल तथा रक्तस्तंभक प्रभाव है तथा इसका प्रयोग अर्श तथा आमाशय विकारों में होता है।

अर्टिका द्रव:- इसको बनाने के लिये पत्र तथा शाखाओं का प्रयोग होता है। बाद में इनको बीट (चुकुंदर) के द्रव के साथ मिलाया जाता है।

एक बड़ा चम्मच शुष्क पत्रों को एक गिलास पानी में मिलाकर थोड़ी देर के लिये रखें। इसका प्रयोग केश प्रक्षालन के लिये करें।

अर्टिका के बीज का चूर्ण 2-3 ग्राम का प्रतिदिन तीन बार सेवन करें।

दो गिलास (400 मि०ली०) पानी में 20 ग्राम बीज तथा मूल को मिलाकर धीमी आंच पर उबालें। छानकर तीन बड़े चम्मच (45 ग्राम) दिन में 4-5 बार लें।

पौधे का चूर्ण दो बड़े चम्मच तथा 10 ग्राम चीनी को एक गिलास पानी में मिलायें। 15 मिनट तक उबालें। आधा गिलास (100 मि०ली०) दिन में तीन बार भोजन पूर्व लें।

पौधे का चूर्ण दो बड़े चम्मच (30 ग्राम) को एक गिलास (200 मि०ली०) 70 प्रतिशत एल्कोहोल में मिलाकर कसकर ढक्कन लगायें। अंधेरे स्थान पर 10-15 दिन तक रखें। तैयार सुरा सार को कपड़े से छानकर 25-30 बूंद प्रतिदिन तीन बार भोजन पूर्व आधा घण्टा पहले लें। सुरा सार का प्रयोग आमाशय शोथ तथा आंत्रशोथ में होता है। प्रयोग समय की अवधि 2-3 सप्ताह है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

वेर्बास्कुम सोंगारिकुम
VERBASCUM SONGARICUM

वर्णन :- विश्व में इस औषधीय तथा शोभाप्रद पौधे की 360 प्रजातियां हैं जिनमे मध्य एशिया देशों में 60 प्रजातियाँ तथा तुर्कमेनिस्तान में 10 प्रजातियाँ उगती हैं। इनमें से अधिकतम में औषधीय गुणधर्म होते हैं।

वेर्बास्कुम सोंगारिर्कुम स्क्रोफुला कुल का 60-120 से०मी० ऊँचा, द्विवर्षिय क्षुपीय पौधा है। यह सीधा उगने वाला, सादा अथवा कुछ शाखान्वित कांडवाला पौधा है। इसके मूल पर उगने वाले पत्र धागावत्, दीर्घ वृंताभ होते हैं। ऊर्ध्व पत्र छोटे धागे वाले अथवा कुछ में तो बिलकुल धागे नहीं होते इसके पुष्प का गुच्छा मोटा तथा शिथिल होता है। पुष्प सूक्ष्म, हलके नींबूवर्ण के होते हैं। इसका फल गोलाकार, गंधयुक्त तथा दो बीज वाला होता है।

जैविक लक्षण :- यह पौधा समुद्रतल से 400-1200 मीटर की ऊँचाई पर उगता है। यह पहाड़ियों पर, घाटी के तल में तथा पथरीली ढलानों पर उगता है। वेर्बास्कुम सोंगारिकुम मई-अगस्त में पुष्प तथा फल देता है।

विस्तार :- यह पौधा बोलशोइ-बालखान में, साका, मोवलेम, नाझझयकेरेम, कुरेनदाग में, तेमेन्देरे, मार्गयझ, दानीएता, गेरेगेस, इसगेन्देर, सोनुदाग, दक्षिण-पश्चिम कोपेतदग, मध्य कोपेतदग, तागारेव, आर्वाझ, गारायालचय, सरयमसाकलय, मुर्झेदाग, मेरगेनोलेज, गण्लगयलाव, हेयराबात, चायेक, आर्चाबील, चोपानदाग, बाजोवस्कीय, गोकदेरे, असयलमा, दागयश, दाशतोय, युलय-गारांकी, होवदान, पूर्वीय कोपेतदग, गुर्यहोवदान, बाहया चयरलाक तथा शामलय में उगता है।

प्राकृतिक उपलब्धि :- हमारे देश में यह पौधा दुर्लभ पौधों में से नहीं है। इसका भण्डार औषधीय उद्देश्यार्थ पर्याप्त है। मध्य कोपेतदग में कृषि क्षेत्र 1000 हे० का है। प्रतिवर्ष 300-350 टन इकट्ठा किया जा सकता है।

औषधीय कच्चा माल :- इसके पुष्प, फली, क्षुप तथा मूल का प्रयोग औषधीय उत्पाद के रूप में होता है। संपूर्णतः विकसित पुष्प (जुलाई में) को शुष्क सूर्यप्रकाश वाले दिन पर इकट्ठे करने चाहिये। इनको इनके खिलने के दिन पर ही इकट्ठा करना चाहिये। ये केवल एक दिन के लिये खिलते हैं। उसके बाद ये बंद हो जाते हैं। बंद हुए पुष्पों को उनकी पुष्प-शिम्बी के साथ नहीं इकट्ठा करना चाहिये।

इकट्ठी की गई पुष्प-शिम्बी को उसी समय शोषकों में अथवा उष्ण कमरों में सुखाना चाहिये। तैयार उत्पाद हलके पीत वर्ण का होना चाहिये। इनको कांच की बोतलों में संचित किया जाना चाहिये। संचयन समय की अवधि 1-2 साल है। पौधे को सामान्य रूप से ही सूखाकर तैयार किया जाता है। उत्पाद को कपड़े के थैलों में सुरक्षित करना चाहिये।

रासायनिक संघटन :- पौधे की पुष्प-शिम्बी में शर्करा, सेपोनीन्स, उत्पत् तेल, राल, रंजक द्रव्य, कोमेरिन, केरोटिन तथा विटामिन सी होते हैं। इसके मूल तथा पुष्प में ओर्गेनिक एसिड्स तथा फ्लेवोन्स हैं। इसके पत्र में विटामिन सी होता है। इसका संपूर्णतः विश्लेषण अभी तक हुआ नहीं है।

प्रयोग :- वेर्बास्कुम सोंगारिकुम एक प्राचीन औषधीय पौधा है। यह बुकरात चिकित्सकों के लिये फ़्लोमोक्ष नाम से मशहूर है। पौधे का औषधीय क्षुप एक संज्ञाहरण औषध है तथा कास को रोकता है। इसलिये पुष्प-शिम्बी से निर्मित प्रवाही का प्रयोग श्वसनलिका शोथ तथा श्वसनवह संस्थान में कास में करते हैं।

राष्ट्रीय चिकित्सा में पुष्प-शिम्बी से निर्मित प्रवाही का प्रयोग आमाशय शोथ, यकृत्, प्लीहा की व्याधियाँ तथा अर्श में होता है।

कल्पना तथा प्रयोग :- पौधे के दो बड़े चम्मच (30 ग्राम) में दो गिलास (400 मि०ली०) उबला हुआ पानी मिलाकर अच्छी तरह ढके हुए तामचीनी पात्र में रखें। तैयार प्रवाही को कपड़े में छानकर आधा गिलास दिन में 3 बार भोजन पूर्व लें।

एक कांच बोतल में पौधे के पुष्प के 3 चम्मच को 0.5 लीटर वोडका में मिलाकर 10 दिन के लिये रखें। बीच बीच में हिलाते रहिये। तैयार वाईन को छानकर व्रण पर लगायें।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

वेर्बेना ओफ्फिचिनालिस
VERBENA OFFICINALIS

वर्णन :- यह औषधीय पौधे की विश्व में 3000 प्रजातियाँ है जिनमें मध्य एशिया देशों में 10 तथा तुर्कमेनिस्तान में केवल दो प्रजातियाँ मिलती हैं। यह वेर्बेना कुल का है। यह 40-60 से०मी० ऊँचा होता है। तना कभी-कभी एक मीटर ऊँचा होता है। पोधा लम्बाई में सीधा बढ़ता है। इस पौधे की शाखा लम्बी होती है। अधोपुष्प रेसेदार धागों से आच्छादित, अण्डाकार तथा 3 भाग में विभाजित होते हैं। इस पौधे के पुष्प छोटे, बैंगनी होते हैं। पांच बाह्यदल द्विदंतुर तथा फल 4 काष्ठ फलों से संयुक्त होता है।

जैविक लक्षण :- यह एक औषधीय तृणीय पौधा है। इस पौधे को जून-जुलाई में पुष्प तथा जुलाई-सितम्बर में फल लगते हैं। यह पौधा पहाड़ों की ढलानों पर तथा नदी की घाटियों में उगता है। इस पौधे को हलके तथा गीले स्थान पर उगना पसंद है। बीज की मदद से यह पौधा प्रजनन करता है।

विस्तार :- यह पौधा हमारे देश में दक्षिण-पश्चिमी कोपेतदग, योलदेरे, सुंबार, नोखुर, इपाजदा, दयवानदा, गारासुव में, मध्य कोपेतदग, गेर्माप में गोकदेरे में आर्चाबील, शोवदांदा, बाध्यझ, पचनहानचेरा में, आकारचेरामे, नारदयवानली, कयारीझ, सेरहेताबात, कोयतेनदाग में, कोइतेन के गांवो में, खोजायपीलात में उगता है। यह पौधा एट्रेक तथा बोलशोइ-बालखान में भी उगता है।

राष्ट्रीय उपलब्धि :- यह पौधा हमारे देश में दुर्लभ पौधा नहीं है। औषधीय उद्देश्यार्थ यह पौधा हमारे देश में पर्याप्त है। प्रतिवर्ष कच्चे माल के रूप में इस पौधे के 10-20 टन इकट्ठा किया जाता है।

औषधीय कच्चा माल :- औषधीय उद्देश्यार्थ इस पौधे को पुष्प खिलने के समय में इकट्ठा किया जाता है। औषधीय कच्चे माल को गर्मी में इकट्ठा किया जाता है। कच्चे माल को कैंची से इकट्ठा किया जाता है। कच्चे माल को 11.00 बजे से 16.00 बजे तक इकट्ठा किया जाता है। इस पौधे को कागज़ पर सुखाया जाता है तथा बारबार पलटाया जाता है। तैयार माल को कागज़ के बक्सों अथवा थैलों में सुरक्षित किया जाता है। संचयन समय की अवधि 1-2 साल है।

रासायनिक संघटन :- वेर्बेना ओफ्फिचिनालिस के पौधे में ग्लायकोसाइड्स, टेनिन, एल्कलोइड्स तथा कड़वे पदार्थ के साथ केरोटिन होते हैं। पालतू जानवर इस पौधे के तृण को नहीं खाते।

प्रयोग :- प्राचीन काल से ही इस पौधे का प्रयोग औषधीय उद्देश्यार्थ हो रहा है। इस पौधे का नाम फेर फाएन दो चेल्तिक शब्दों से बना है। फेर का अर्थ है चिकित्सा तथा फाएन का अर्थ है अश्मरी। इस पौधे का प्रयोग वृक्काश्मरी की चिकित्सा के लिये होता है। पौधे में उष्ण एवं मूत्रल गुणधर्म है। लोक चिकित्सा में इस पौधे के फांट से स्नान करने से यह पौधा मदद करता है। यह पौधा दंतशूल की चिकित्सा में मदद करता है। आजकल इस पौधे को खुशी का पौधा कहते हैं।

कल्पना तथा प्रयोग :- इस पौधे के एक बड़े चम्मच को उबलते हुए पानी में डालकर छान लें। यह सुखोष्ण फांट मुखगुहा के गंडूषार्थ मदद करता है। यह फांट व्रण की चिकित्सा में भी मदद करता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

विओला ओक्कुल्ता
VIOLA OCCULTA

वर्णन :– यह एकवर्षिय, क्षुपीय, कुतृण है जिसमें वास्तव में आश्चर्यजनक पुष्प लगते हैं। हमारे देश में विओला ओक्कुल्ता की पांच प्रजातियाँ मिलती हैं जिनमें से 3 बहुवर्षीय अथवा द्विवर्षीय क्षुपीय पौधे हैं। मूल धूसर, पतले तथा विभाजित होते हैं। तना सीधा तथा विभाजित होता है। इसका कांड जमीन पर फैलता है। विओला ओक्कुल्ता का कांड लगभग 5-15 से०मी० लम्बा होता है। पत्र एक के बाद एक स्थित होते हैं। पौधे के पत्र के मूल भाग में अधिक मात्रा में पेरीफायटोन्स होते हैं। अधोपत्र चौड़े, अण्डाकार तथा कटे हुए होते हैं। ऊर्ध्व पत्र बिना कटे, लंबाकार होते हैं। पुष्प एकाकी तथा आकार में अनियमित होते हैं। यह पांच बाह्यदल वाला पुष्प होता है। सभी रेखा अथवा उभरे हुए कंटक से आच्छादित होते हैं। पुष्पदल पांच, सीधे न हो ऐसे आश्चर्यजनक वर्णयुक्त बाह्यदलों से बना हुआ होता है। यह आश्चर्यजनक वर्ण पौधे को बहुत सुन्दर बनाता है।

विओला ओक्कुल्ता अप्रैल अथवा मई में पुष्प देता है। इस पौधे का फल एक लम्बे गेंद जैसा होता है।

जैविक लक्षण :– यह पहाड़ों की तराई में उगता है। यह पथरीली तथा रेतीली भूमि में तथा झाड़ियों के बीच में कुतृण के रूप में उगता है।

विस्तार :– हमारे देश में यह पौधा कुरेनदाग, दानीआता, होमेंनदेरे, सेरदार, बोलशोइ-बालखान, कुलेजे, मध्य तथा पश्चिमी कोपेतनदग में, हाझारदाग एवं सुंत में, मध्य कोपेतदग में, देगीरमेन्ली, होवदान, सांदयकलयझाव, लुजे चोपानदाग, होनूर एवं अश्खाबाद में मिलता है।

राष्ट्रीय उपलब्धि :– विओला ओक्कुल्ता एक दुर्लभ क्षुपीय पौधा नहीं है। औषधीय उद्देश्यार्थ यह पर्याप्त है। इसकी खेती होती है।

औषधीय कच्चा माल :– पौधे के क्षुप का औषधीय उद्देश्यार्थ प्रयोग होता है। इनको पुष्प लगने के समय इकट्ठा किया जाता है। इक्ट्ठे किये क्षुप को कागज़ पर 5-7 से०मी० के स्तर में सुखाये जाते हैं। बीच बीच में पलटाये जाते हैं। इनको हवादार स्थान में अथवा सुखाने वाले कमरों में सुखाया जाता है। अच्छे मौसम में इनको 5-7 दिन के लिये सुखाया जाता है। क्षुप का अच्छी तरह परीक्षण किया जाता है। फफूंद अथवा खराब क्षुप का प्रयोग नहीं किया जाता।

कच्चे माल में मौलिक गंध होती है। तैयार कच्चे माल को कपड़े अथवा कागज़ के थैलों में सुरक्षित किया जाता है। संचयन समय की अवधि 1-1.5 साल है।

रासायनिक संघटन :– विओला ओक्कुल्ता के क्षुप में सेपोनीन्स, श्लेष्मा, पोलीसेकेराइड्स, टैनिन्स, केरोटिनोइड्स, एस्कोर्बिक तथा सेलिसिलिक एसिड्स एवं फ्लेवोनोइड्स होते हैं। पौधे के पुष्प में उत्पत् तेल धातु-ईथर एन्थोसायेनीन्स, ग्लायकोसाइड्स तथा मूल में एल्कलोइड होते हैं।

प्रयोग :– प्राचीन समय से ही विओला ओक्कुल्ता को प्रयोज्य औषध के रूप में जाना जाता है। इसका प्रयोग कास को शांत करने के लिये कफनिःसारक के रूप में तथा मूत्रल के रूप में प्रयुक्त होता है। वर्तमान समय में पौधे के क्षुप के फांट का प्रयोग श्वसनवह संस्थान का संकोच (spasm) कास, तमक श्वास, श्वसननलिका शोथ तथा मूत्राशय शोथ में होता है। लोक चिकित्सा में विओला ओक्कुल्ता का प्रयोग संधिवात, पुनः-पुनः संधिशूल, स्वेदन, चयापचय प्रक्रिया को उत्कृष्ट करने के लिये तथा रक्तशोधक के रूप में भी होता है।

पौधे के फांट की विविध चर्म व्याधियों में सलाह दी जाती है। साथ-साथ पौधे के फांट का स्नानार्थ व्रण तथा शीतपित्त में प्रयोग किया जाता है। विओला ओक्कुल्ता के फांट को बच्चों में कामला में तथा स्नानार्थ प्रयुक्त होता है।

कल्पना तथा प्रयोग :– विओला ओक्कुल्ता के बारीक काटे हुए टुकड़े एक बड़ा चम्मच (15 ग्राम) एक गिलास (200 मि०ली०) पानी में मिलाकर 10-15 मिनट के लिये उबालें। 45 मिनट तक रखें। फांट को छानकर तथा बचे हुए पौधे को निचोड़ लें। एक गिलास (200 मि०ली०) गर्म पानी मिलायें और एक बड़ा चम्मच दिन में तीन बार भोजन से पूर्व लें।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

कामला के लिये चाय की कल्पना :- विओला ओक्कुल्ता का क्षुप 1 चम्मच (5 ग्राम), 5 ग्राम पौधे तथा 5 ग्राम काले सूखे अंगूर लें। इसमें मसालें मिलायें, गर्म पानी डालें। थोड़ी देर तक रखें। छानकर एक बड़ा चम्मच (15 ग्राम) फांट दिन के समय लें।

वीतेक्स आग्नुस कास्तुस
VITEX AGNUS CASTUS

वर्णन :- यह एक सामान्य 2-4 मीटर ऊँचा औषधीय क्षुप है। यह गयतमा कुल का है। पौधे को एक सुविकसित अक्षीय मूल होता है जो असंख्य फैले हुए छोटे मूलवाला होता है। इस पौधे को जून-सितम्बर में पुष्प आते हैं। फल का व्यास 3-4 मि०मी० का होता है तथा यह एक सूखी, गोलाकार गुठली है।

जैविक लक्षण :- यह औषधीय क्षुप हमारे देश में केवल कोपेतदग की तराई में ही मिलता है। वीतेक्स आग्नुस कास्तुस समुद्र तल से 800-1500 मीटर की ऊँचाई पर उगता है। यह प्रकाश की आवश्यकता वाला तथा गर्मी को पसन्द करने वाला पौधा है। यह दुष्काल-प्रतिरोधी पौधा है। यह रेतीले-पथरीले स्थानों पर अच्छी तरह उगता है। इसका बीज तथा अंकुर द्वारा प्रजनन होता है।

विस्तार :- यह पौधा मध्य-पश्चिमी कोपेतदग में, तामील, सायपान, गोचदेमीर में, मध्य कोपेतदग में, गोकदेरे, दुशाक, एरेकदाग, आर्चाबील तथा गेर्माप में मिलता है।

राष्ट्रीय उपलब्धि :- औषधीय उद्देश्यार्थ प्राकृतिक भण्डार पर्याप्त है। मध्य कोपेतदग में गोकदेरे तथा दुशाकेरेकदाग में वीतेक्स आग्नुस कास्तुस 60-65 हेक्टर जमीन में उगता है। इस स्थान में 5000 पौधे हैं। इस स्थानों में प्रतिवर्ष 50-52 सेन्टनर्स प्रयोज्य कच्चा माल इकट्ठा किया जाता है। वर्तमान में इसकी खेती शोभाप्रद पौधे के रूप में, सुगंध के लिये तथा औषधीय पौधे के रूप में होती है।

औषधीय कच्चा माल :- वीनेकस आग्नुस कास्तुस के फल तथा पत्र का प्रयोग प्रयोज्य कच्चे माल के रूप में प्रयुक्त होते हैं। प्रयोज्य कच्चे माल को 3 साल की अवधि में पुष्प खिलने के समय इकट्ठा किया जाता है। प्रयोज्य कच्चा माल की तैयारी सितम्बर में शुरू होती है तथा जब तापमान गिरता है तब खत्म होती है। प्रयोज्य कच्चे माल को सामान्य रूप से सुखाया जाता है। तैयार कच्चे माल को 15-20 किलोग्राम के कागज़ के थैलों में पैक किया जाता है तथा इसे विशिष्ट कमरों में फलक पर संचित किया जाता है। संचयन समय की अवधि 2 साल है।

रासायनिक संघटन :- पौधे के पत्र तथा फल में उत्पत् तेल तथा विटामिन सी होते हैं। पत्र में उत्पत् तेल 0.55 प्रतिशत मात्रा में तथा फल में 0.47 प्रतिशत मात्रा में होता है।

प्रयोग :- पौधे के फल पाचन को सुधारते हैं। इसका प्रयोग यकृत्, प्लीहा की व्याधियों में तथा स्त्री रोगों में होता है। फल का तेल केन्सर में प्रयुक्त होता है। फल का रस होमीयोपैथी में प्रयुक्त होता है।

फल के तिक्त रस का प्रयोग मरिच के रूप में होता है। पौधे का प्रयोग विविध सोसेजीस तथा टिक्की बनाने में होता है।

कल्पना तथा प्रयोग :- वीनेकस आग्नुस कास्तुस के फल एक चम्मच (5 ग्राम) में एक गिलास (200 मि०ली०) पानी मिलाकर उबालें। छानकर 1-2 बड़े चम्मच गूदा प्रतिदिन तीन बार भोजन पूर्व लें। इसके फल से बनाई चाय का प्रयोग औषध के रूप में होता है।

एक कांच पात्र में एक बड़ा चम्मच (15 ग्राम) फल तथा एक गिलास (200 मि०ली०) औषधीय सुरा मिलाकर 8-10 दिन के लिये रखें। तैयार सुरा सार को छानकर 5-10 बूंद दिन में 3 बार लें।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

जिंजिबेर ओफिफ्फचिनाले
ZINGIBER OFFICINALE

वर्णन :- दक्षिण-पूर्वीय एशिया तथा पश्चिमी भारत को इस आश्चर्यजनक झाड़ीदार पौधे की मातृभूमि माना गया है।

आर्द्रक, जिंजर कुल का प्रतिनिधि एक बहुवर्षिय 20-25 से॰मी॰ ऊँचा क्षु1प होता है। कभी-कभी यह 1-1.5 मीटर ऊँचा हो सकता है। इसका मूल संस्थान बहुत सुविकसित होता है। इसका पत्र सादा, नरकट के आकार तथा अधोऊर्ध्व दिशा में बढ़ने वाला होता है। पत्र शाखाओं से जुड़े हुए तथा एकान्तर में स्थित होते हैं।

जैविक लक्षण :- इसको चीन, जापान, वियेतनाम, भारत, फ्लोरिडा (यु.एस.ए.), मैक्सिको, अर्जेन्टीना, ब्राजील, जमैका, नाईजेरिया तथा नोझाम्बीक में उगाया जाता है।

प्राकृतिक उपलब्धि :- यह दुर्लभ पौधों में से नहीं है। भैषज्य संबंधित आवश्यकता के लिये इसका भण्डार पर्याप्त है। इसकी उपज 15-25 टन है।

औषधीय कच्चा माल :- पौधे का मूल तथा रस औषध रूप में प्रयुक्त होता है। नये बोये हुए पौधे के मूल को 6-10 महिने के बाद निकाला जाता है। इसको धोकर सूर्यप्रकाश में सुखाया जाता है। जब ये तैयार हो जाते हैं तब उन्हें कागज़ के थैलों में रखा जाता है। संचयन के समय की अवधि 2-3 साल है।

रासायनिक संघटन :- पौधे के मूल में 0.25-3 प्रतिशत इथेरिअल तेल, जिंजरोल, शेगोल, कीटोन, तेल, स्टार्च, टेनीन, शर्करा तथा फीनोल रहते हैं।

प्रयोग :- प्राचीन समय से ही पता है कि जींजर मलहम उत्पन्न करता है तथा उसको अच्छा स्वाद तथा सुगंध होते हैं। यह तुर्कमेनिस्तान सहित मध्य एशिया में बहुत लोकप्रिय है। सुप्रसिद्ध मध्य युग के वैज्ञानिक तथा चिकित्सक अबु अली इब्न सीना (अविसेन्ना) की चिकित्सा के नियम की पुस्तक में लिखा है कि जिंजर आमाशय तथा यकृत् का कार्य सुधारता है, तथा मैथुन शक्ति बढ़ाने वाले औषधों का यह मुख्य घटक है।

अपने समय के सुप्रसिद्ध चिकित्सक मुहम्मद हुसैन ने अपनी पुस्तक बाम ट्रेज़र्स में लिखा है कि जिंजर तथा यकृत् के कार्य को सुधारता है, मैथुन शक्ति बढ़ाता है तथा स्मृति के विकारों को ठीक करता है।

जिंजर नाडी विकार, मूत्र विकार, अतिसार तथा शिश्नमणि की त्वचा की शोथ की चिकित्सा के लिये प्रयुक्त होता है। उबले हुए मांस पर इसके मूल को छिड़कने से आने वाली सुगंध सर्दी के मौसम में गले को ठीक करने में बहुत सक्षम है।

पीसे हुए जिंजर अथवा एक चम्मच जितने छोटे टुकड़े को चूसकर उसके रस को धीरे से निगलने से यह साँस को ताजा बनाता है। एक बार में 6 ग्राम लेना चाहिये।

जिंजर के पीसे हुए छोटे टुकड़े को स्प्रात् जैसी मछलियों को डिब्बा बंद करते समय सुगंध देने के लिये प्रयुक्त होता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

ज़ीजिफोरा कपिताता
ZIZIPHORA CAPITATA

वर्णन :-इस सुगंधयुक्त औषधीय पौधे की तुर्कमेनिस्तान में पाँच प्रजातियाँ मिलती हैं। उनमें से अधि कतम में औषधीय गुण हैं।

ज़ीजिफोरा कपिताता, लाबिआते कुल का एक 10-20 से०मी० ऊँचा एकवर्षिय क्षुपीय पौधा है। इसका काण्ड सीधा, शाखायुक्त तथा सूक्ष्म रोमों से आच्छादित होता है। पत्र में पक्ष्म जैसे छोटे, नुकीले कंटक होते हैं तथा ये अन्य भागों से अलग होते हैं। पत्र सूक्ष्म, 2-3 से०मी० लम्बे तथा आधे खुले छाते जैसे होते हैं। शिम्बी 8-9 मि०मी० लम्बी तथा लगभग 1.5-2 मि०मी० चौड़ी होती है। फल अण्डाकार तथा काष्ठफल की तरह धूसर भूरा होता है।

जैविक लक्षण :- हमारे देश में यह पौधा समुद्र तल से 800-1600 मीटर की ऊँचाई पर उगता है। यह पथरीले, शुष्क स्थानों पर, मैदानों पर उगता है। यह पथरीले, शुष्क स्थानों पर, मैदानों में तथा तंगघाटी में उगता है। बीज द्व ारा इसका प्रजनन होता है। ज़ीजिफोरा कपिताता अप्रैल तथा जुलाई में पुष्पित होता है और उपज देता है।

विस्तार :- यह दक्षिण-पूर्वीय कोपेतदग में, सोनगयदाग, सुंत, हसासर, योलदेरे, सुंबार, दायना, गारावुल, गापानलय में, मध्य कोपेतदग में, गेरमाप, दुशाकेरेकदाग, मनयश, कोमोरोवस्की, दाशतोय, असयलमा तथा पूर्वीय कोपेतदग में चयरलाक में मिलता है।

प्राकृतिक उपलब्धि :- हमारे देश में ज़ीजिफोरा कपिताता दुर्लभ पौधों में से नहीं है। औषधीय उद्देश्यार्थ भण्डार पर्याप्त है। पौधे से दस टन कच्चा माल इकट्ठा किया जा सकता है।

औषधीय कच्चा माल :- औषधीय उद्देश्यार्थ काण्ड, पत्र तथा पुष्प प्रयुक्त होते हैं। जब पौधे में पुष्प आते हैं (अप्रैल-जून में) तब इनको इकट्ठा किया जाता है तथा शामियाना के नीचे अथवा खुली हवा में तैयार किया जाता है। कच्चे माल को कसकर बंद किये कागज़ के थैलों में संचय किया जाता है। संचयन समय की अवधि 1-2 साल है।

रासायनिक संघटन :- ज़ीजिफोरा कपिताता में 0.50-0.56 प्रतिशत तक एसेन्स एल्कलोइड्स, फ्लेवोनोइड्स, कोमेरीन्स, लेक्टोन्स तथा सेपोनीन्स होते हैं।

प्रयोग :- लोक चिकित्सा में प्राचीन समय से ही पौधे का प्रयोग हो रहा है। सुविख्यात चिकित्सक अबु अली इब्न सीना की पुस्तक कैनन आफ मेडिकल सायंस में ज़ीजिफोरा कपिताता के औषधीय लक्षणों का अच्छा वर्णन मिलता है। इब्न सीना पे पत्रचूर्ण का प्रयोग व्रण में करने की सलाह दी है। लोक चिकित्सा में ज़ीजिफोरा कपिताता के पत्र से निर्मित फांट का प्रयोग बच्चों में गले की खराश, आमाशय शूल तथा अन्य व्याधियों के लिये होता है। इसके स्वरस का प्रयोग आमाशय, प्रतिश्याय तथा आध्मान में होता है।

इसके पौधे से निर्मित औषध का प्रयोग हृत्पेशी, रक्ताल्पता, उच्च रक्तचाप, कृमि, श्वसनवह नलिका शोथ तथा पूययुक्त संक्रमण में होता है।

तुर्कमेन लोक चिकित्सा (विशेषतः मागत्यमगुलय बाहारलय एत्राप्स) में ज़ीजिफोरा कपिताता का प्रयोग हृदयाघात की चिकित्सा के लिये अच्छे औषध के रूप में होता है। वनस्पति औषधों में से किसी भी प्रजाति को इस व्याधि की चिकित्सा के लिये लिया जा सकता है। ज़ीजिफोरा कपिताता के सार का प्रयोग साबुन एवं सौंदर्य प्रसाधन में एवं सजावटी में मनोहर सुगंध देने के लिये किया जाता है। फांट मछली को पुदीना की सुगंध प्रदान करता है। अगर आप इस पौधे से मसाला मिलाने के रूप में प्रयुक्त करते हैं तो व्यंजन बहुत स्वादिष्ट बनेगी।

मध्य एशिया के पर्वतीय क्षेत्रों में, हमारे अपने क्षेत्र जैसे बाहारलय तथा मागत्यमगुलयगांव को मिलाकर, ज़ीजिफोरा कपिताता अपने मनोहर सुगंध तथा स्वाद के लिये प्रख्यात है। इसको भोज्य पदार्थ के अंदर रखकर कोयले पर भूनकर प्रयुक्त किया जा सकता है। मांस के साथ इसकी चटनी व्यंजन को स्वादिष्ट बनाती है। किसी पालतू स्तनधारी के मांस पकाते समय मिलाने से भी अच्छा लाभप्रद है। माम्ती को पकाने के लिये पीसे हुए मांस के साथ ज़ीजिफोरा कपिताता को मिलाने से एक मनोहर सुगंध आती है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

कल्पना तथा प्रयोग :- कुछ पानी में इस पौधे का एक बड़ा चम्मच (15 ग्राम) मिलाकर इसकी सुगंध पाने के लिये कुछ समय तक रख दें। कपड़े से छानकर इसका एक गिलास दिन में 3 बार भोजन से पूर्व ग्रहण करें। इससे शरीर शिथिल होने का अनुभव करता है तथा थकान दूर हो जाती है। यह हृद्रोग के लिये बहुत उपयोगी है। अगर कुछ विपरीत प्रभाव दिखाई दे तो 7-10 दिन तक बंद करना चाहिये। तथा बाद में फिर से चालू करें।

ज़ीजिफोरा कपिताता एक चम्मच को एक तामचीनी पात्र में एक गिलास (200 मि०ली०) पानी में मिलाकर 10-15 मिनट तक उबालें। कपड़े से छानकर आधा गिलास (100 मि०ली०) दिन में तीन बार पीयें।

पौधे के पुष्प एक चम्मच को कुछ मधुर पानी में मिलाकर 5-10 मिनट के लिये उबालें। कपड़े से छानकर आमाशय की व्याधि में एक चम्मच (5 ग्राम) दिन में तीन बार भोजन पूर्व पीयें।

ज़ीजिफ़ेरुस यूयूबा
ZIZIPHERUS JUJUBA

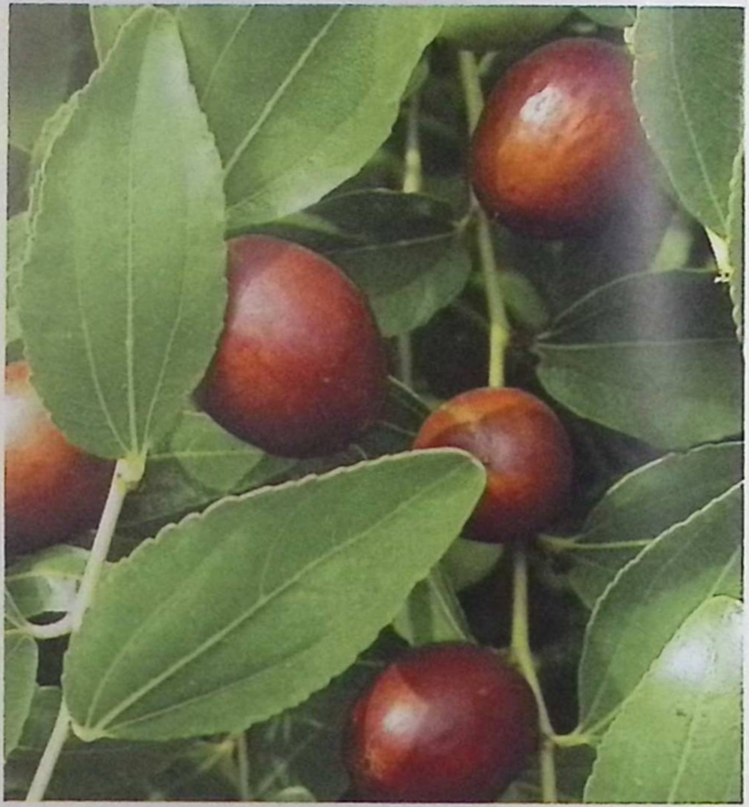

वर्णन :- ज़ीजिफ़ेरुस यूयूबा एक औषधीय तथा आहारीय पौधा है। तुर्कमेनिस्तान की एक प्रजाति को मिलाकर विश्व में 100 प्रजातियां मिलती हैं।

ज़ीजिफ़ेरुस यूयूबा एक पेड़ है। पेड़ की शाखायें जानुनतीय (मुड़ी हुई), कंटकयुक्त तथा 3-4 (8) मीटर ऊँची होती हैं।

यह पर्वतों की तराई में उगता है।

शाखायें रक्त-धूसर, चिकनी तथा संयुक्त पत्र वाले हरे-जैसे अंकुरों वाली होती है। पौधे के तुर्कमेन नाम है एंदाप

तथा एंत्राप है। इसके पत्र का विन्यास चतुष्क होता है। पत्र अण्डाकार से लेकर चौड़े भालाकार होते हैं। पुष्प एक रेखा में, हरिताभ पीत, एकलिंगी, एकाकी अथवा घने गुत्सक जैसे पुष्पविन्यास में 3-5 पुष्प संयुक्त होते हैं। पुष्प अथवा पुष्पविन्यास छोटे डंठल वाले होते हैं। एक गोलाकार putamen होता है। यह मांसल, रक्ताभ अथवा रक्ताभ धूसर तथा मधुर रसवाला एवं खाने लायक होता है।

जैविक लक्षण :- ज़ीजिफ़ेरुस यूयूबा समुद्रतल से 800-1200 मीटर की ऊँचाई पर उगता है। यह बहुत धीरे से बढ़ता है, 4 साल में एक मीटर, 10 साल में 2 मीटर तक तथा 20 साल में 3 मीटर तक। इसके बावजूद यह 100 साल तक फल देता है।

ज़ीजिफ़ेरुस यूयूबा एक दुष्काल-सह्य, उष्ण-सह्य तथा शीत-सह्य पौधा है। इसको हल्की घास वाली मिट्टी पसंद

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

है। पौधा बीज तथा मूल के अंकुर से प्रजनन करता है। परागीकरण कीट द्वारा होता है।

रासायनिक संघटन :- ज़ीजिफ़ेरुस यूयूबा के पत्र में 1.7 प्रतिशत संज्ञाहरक तत्व, टेनिक पदार्थ, केटेकोल, फ्लेवोनोल ग्लायकोसाइड्स, कोमेरीन्स, सेपोनीन्स, शर्करा, युरिक एसीड, ओर्गेनीक एसीड्स, राल, इथरिअल तेल, 292.6 मि०ग्रा० प्रतिशत तक विटामिन सी, केरोटीन तथा वीटामिन बी, होते हैं। फल (मांसल, शुक्तिपीठ में) 30 प्रतिशत शर्करा, लगभग 2.5 प्रतिशत ओर्गेनिक एसीड्स, टेनिक पदार्थ, फ्लेवोनोइड्स 3.7 प्रतिशत तक वसा, केटेकोल, कोमेरिन्स, पेकटीन तत्व, इथरीअल 600 मि०ग्रा० प्रतिशत विटामिन सी तथा बी1 होते हैं।

पौधे की त्वक् में फ्रान्युलेनाइन, कोकलाउरिन, आइसाबोलडाइम, युसीरिन, अर्बेनाइन ए, बी तथा अन्य पेप्टाइड एल्कलोइड्स होते हैं।

विस्तार :- ज़ीजिफ़ेरुस यूयूबा कुगीतांग, दक्षिण-पश्चिम कोपेतदग, पारहाय, नोहूर, चाकानगाला, सुंबार, एमदेरे, होजामाला, दायना, पूर्वीय कोपेतदग में यापोन एवं केलाता में उगता है।

प्राकृतिक उपलब्धि :- ज़ीजिफ़ेरुस यूयूबा तुर्कमेनिस्तान में दुर्लभ पौधा है। भण्डार को औषधीय उद्देश्यार्थ प्रयोग करने के लिये सीमित किया गया है। पूर्वीय कोपेतदग में गुरयहोवदान तक इसकी खेती होती है। कृषि क्षेत्र 3-5 हेकटर है। घनता 450 पेड की है। लगभग आधे पेड़ पुख्त वय के 3-5 मीटर ऊँचे हैं। प्रति हैक्टर पेडों की औसत 100-200 की है।

कोपेतदग राष्ट्रीय उद्यान के गुरयगानदान क्षेत्र में ज़ीजिफ़ेरुस यूयूबा की वाटिका को सुरक्षित किया गया है।

औषधीय कच्चा माल :- ज़ीजिफ़ेरुस यूयूबा के फल, पत्र तथा त्वक् को औषधीय उद्देश्यार्थ प्रयुक्त किया जाता है। कच्चे माल को इकट्ठा करना तथा सुखाना सामान्य रूप से किया जाता है। पुष्पों को कांच के पात्र में तथा पत्र एवं त्वक् को कागज़ के थैलों में संचित किया जाता है। संचयन समय की अवधि 1-2 साल है।

प्रयोग :- ज़ीजिफ़ेरुस यूयूबा अपने फल के कारण सुविख्यात है। फल को मनोहर स्वाद होता है। ताजे पके फल, मुरब्बे तथा मंद आंच पर पके फल का प्रयोग स्वास्थ्य के लिये किया जाता है।

प्राचीन काल से ही पूर्व में ज़ीजिफ़ेरुस यूयूबा सहित इस पौधे की 25 प्रजातियाँ विस्तृत रूप से स्वास्थ्य उत्कर्षक नुस्खे के रूप में प्रयुक्त हो रही हैं। ज़ीजिफ़ेरुस यूयूबा इसे 9वां स्थान प्राप्त करता है। प्राचीन चीनी वैज्ञानिक शेन-नून, चिकित्सक तथा प्रकृतिविद् (naturalist) कलाउडीयस गेलन, प्रख्यात वैज्ञानिक तथा चिकित्सक अबु अली इब्न सीना, सेयीत् इस्माइल जुरजानी तथा मुहम्मद हुसैन ने अपने अपने कार्यों में इस पौधे के औषधीय गुणों के बारे में लिखा है।

अबू अली इब्न सीना ने इस पौधे का प्रयोग वृक्क की व्याधियों, मूत्राशय तथा तमक श्वास में रेचक तथा कफनि:सारक नुस्खे के रूप में किया था।

चीन में ज़ीजिफ़ेरुस यूयूबा का प्रयोग संज्ञाहरण, कफनि:सारक तथा तमक श्वास के लिये मूत्रल औषध के रूप में किया जाता था। पौधे की त्वक् अतिसारघ्न औषध के रूप में प्रभावशाली है। चीनमाचीन (चीन) के चिकित्सक ज़ीजिफ़ेरुस यूयूबा के फलों से लांदुसज़ाओ नामक औषध बनाते हैं जिसका प्रयोग अस्थि, त्वचा तथा नेत्र व्याधियों में किया जाता है।

प्राचीन समय से ही लोक चिकित्सा में प्रतिश्याय, वृक्क, यकृत् तथा आमाशय की व्याधिओं के लिये ज़ीजिफ़ेरुस यूयूबा के फल, पत्र तथा क्षुप से निर्मित क्वाथ, फांट एवं सुरा सार का प्रयोग हो रहा है। फल रक्तचाप को सामान्य बनाने के लिये प्रभावशाली है।

तिब्बती चिकित्सा में हृद्रोग तथा नाडी संस्थान की व्याधियों के लिये उपयुक्त औषध का एक घटक ज़ीजिफ़ेरुस यूयूबा है।

इसका प्रयोग रक्तस्राव, ऊर्ध्व श्वसनवह संस्थान से श्लेष्मस्राव, अतिसार, मलेरिया, विस्फोट, आंत्र तथा आमाशय की व्याधियों में होता है।

ज़ीजिफ़ेरुस यूयूबा शुष्क पदार्थों को पक्व बनाने की प्रक्रिया तेज करता है, आंतरिक अंगों को मृदु बनाता है, अवरुद्ध द्रवो को निकालता है, रक्त शोधन तथा रक्त जनन करता है, व्रणशोफ की प्रक्रिया को रोकता है, तृषाशामक तथा यकृत्, वृक्क एवं मूत्राशय के शूल का शमन करता है।

तुर्कमेन लोक चिकित्सा में ज़ीजिफ़ेरुस यूयूबा व्यक्ति की कार्य दक्षता के लिये, मूत्रल, कफनि:सारक के रूप में, तमक श्वास, वृक्क व्याधियों, उच्च रक्तचाप, यकृत् की व्याधियों तथा अन्य व्याधियों के लिये प्रयुक्त होता है। मध्य एशिया तथा कोकेसस में ज़ीजिफ़ेरुस यूयूबा को श्वसन संस्थान की व्याधियों के लिये तथा रेचक औषध के रूप में जाना जाता है।

अझरबैजान में दूध के साथ इसका मिश्रण विषाकत्तता के लिये तथा कफनि:सारक के रूप में प्रभावी माना गया है।

पौधे के राल का प्रयोग वार्नीश के लिये रंग बनाने के लिये तथा किमती फर्नीचर के लिये सुशोभनार्थ होता है।

कल्पना तथा प्रयोग :- ज़ीजिफ़ेरुस यूयूबा के फल 1 बड़े चम्मच (15 ग्राम) में एक गिलास (200 मि०ली०) पानी मिलाकर धीमी आंच पर 10-15 मिनट के लिये उबालें। छानकर एक गिलास (200 मि०ली) दिन में तीन बार लें।

एक कांच पात्र में ज़ीजिफ़ेरुस यूयूबा के 2 चम्मच (10 ग्राम) फल को 40 प्रतिशत सुरा अथवा वोडका के साथ मिलाकर कसकर ढक्कन लगाकर 10-15 दिन के लिये रखें। बीच-बीच में हिलाते रहें। छानकर एक चम्मच (5 ग्राम) दिन में तीन बार लें।

ज़ीजिफ़ेरुस यूयूबा के 5-10 फल लें, एक बार में 50 से ज्यादा फल ना लें।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

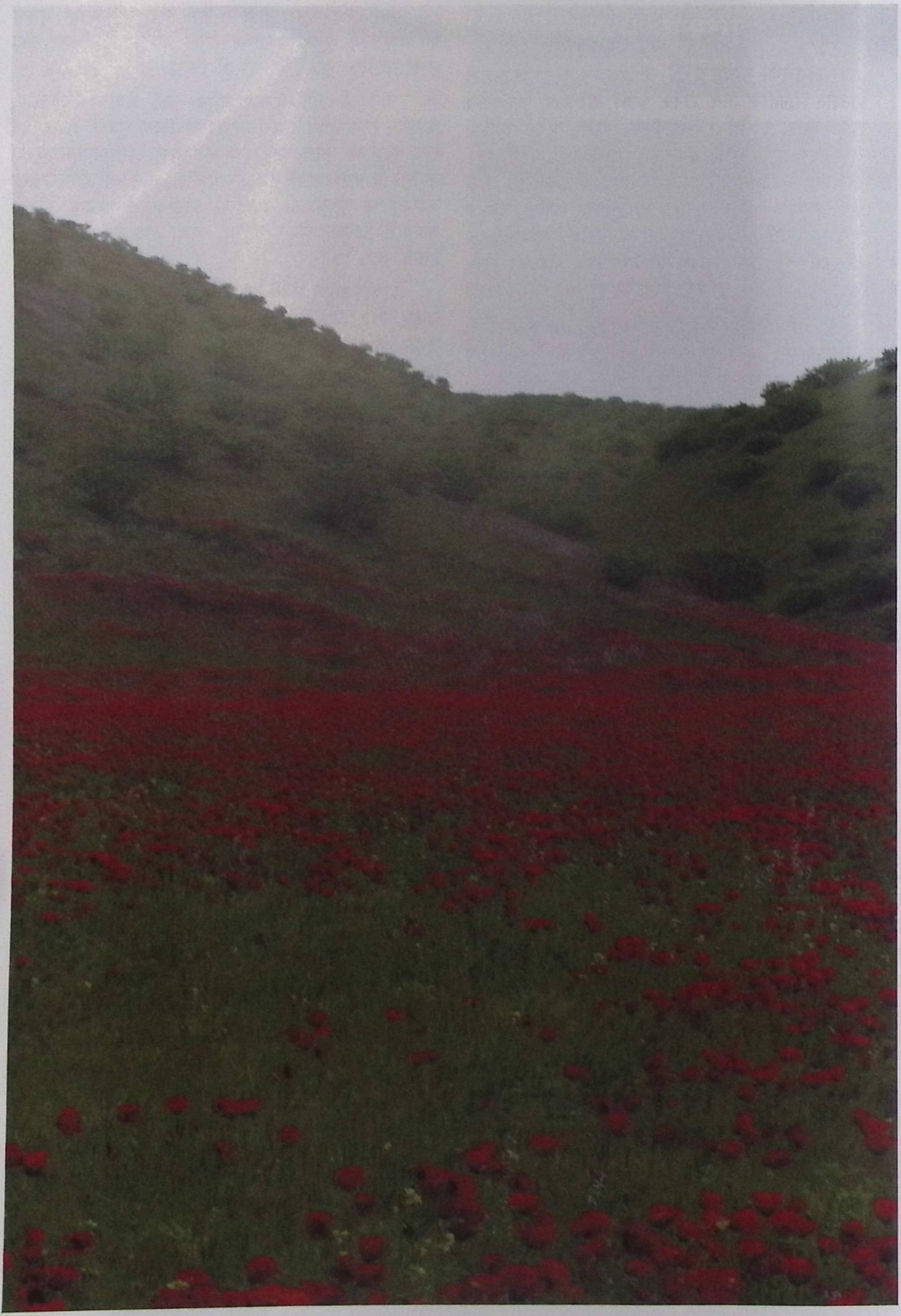

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

भाग ३
निर्देशिका

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

उपचार

कच्चे माल का वजन ग्राम (100, 50, 25 पूर्ण विराम के साथ अंक) अथवा भाग के साथ (2,4,6,... अर्थात् अक्षर 'भा' समीपवर्ती) दिया गया है।

विद्रधि (ABSCESS)

क्र. 1. पोदीना के पत्र, केला तथा कोल्ट्स फुट 1 भा.।

एक गिलास (200 मि०ली०) उबले हुए पानी में इस मिश्रण का एक बडा चम्मच (15 ग्राम) मिलाकर 15-20 मिनट तक रखें। इसको छान लें। आधा गिलास (100 मि०ली०) दिन में 3 बार स्फोट पनसिका तथा व्रण में लें।

क्र. 2. यष्टिमधु मूल बक्थोर्न त्वक् तथा मित्रेया फल के फल 1 भाग। एल्डर के पुष्प और वयोलेट क्षुप 2 भाग।

एक गिलास (200 मि०ली) पानी में एक बड़ा चम्मच (15 ग्राम) इस मिश्रण को डालकर धीमी आंच पर 15 मिनट के लिये उबालें। ठंडा करके छान लें। आधा गिलास दिन में 3 बार लें।

क्र. 3. मैट्रिकरी के पुष्प 100 ग्राम : दो गिलास (400 मि०ली०) उबलता हुआ पानी 2 बड़े चम्मच (30 ग्राम) पुष्प में डालें। 25-30 मिनट के लिये रखें। छानकर स्फोट, पनसिका तथा व्रण पर गर्म पट्टी के रूप में लगायें अथवा इससे स्नान करें।

क्र. 4. सीडवेल के क्षुप, केले, नेटल 10 ग्राम पाँट मेरीगोल्ड, सेंटारी, बुर-मेरीगोल्ड के पुष्प 15 ग्राम और वयोलेट के क्षुप 20 ग्राम तथा चार चम्मच (20 ग्राम) मिश्रण पर एक लीटर ठंडा पानी मिलाकर 10-12 घण्टे तक रखें। तत्पश्चात् 5-7 मिनट के लिये उबालें। छान लें। एक बड़ा चम्मच दिन में 5 बार व्रण, स्फोट तथा विद्रधि में लें।

क्र. 5. वयोलेट का क्षुप, बर-मेरीगोल्ड डेड-नेटल के क्षुप 25 ग्राम एक तामचीनी पात्र में एक गिलास पानी लेकर उसमें एक बडा चम्मच मिश्रण डालकर धीमी आंच पर 20 मिनट तक उबालें। छानकर एक गिलास दिन में 3-4 बार व्रण, स्फोट विद्रधि, शुष्क चर्म तथा प्रवृति में लें।

क्र. 6. वयोलेट के क्षुप, एल्डर के पुष्प, मित्रेया के फल, बक्थोर्न की त्वक् 30 ग्राम यष्टीमधु के मूल तथा गुलाब के फल 15 ग्राम : एक बड़ा चम्मच मिश्रण में एक गिलास पानी मिलाकर एक तामचीनी पात्र में धीमी आंच पर 15 मिनट के लिये उबालें। ठंडा करके छान लें आधा गिलास दिन में 3 बार व्रण, स्फोट तथा विद्रधि के लिये लें।

अनूर्जता (ALLERGY)

क्र. 7. बुरे-मेरीगोल्ड के पौधे 100 ग्राम : एक गिलास (200 मि०ली०) पानी 20.9 ग्राम पौधे में मिलाकर उबालें। छानकर एक गिलास दिन में 3 बार लें।

क्र. 8. पाँट-मेरीगोल्ड के पुष्प 100 ग्राम : दो बड़े चम्मच पुष्प में आधा गिलास उबलता हुआ पानी मिलाकर धीमी आंच पर 1-2 घण्टे के लिये उबालें। छानकर एक बड़ा चम्मच दिन में 2-3 बार लें।

क्र. 9. मैट्रिकैरी के पुष्प 100 ग्राम : एक बड़ा चम्मच पुष्प में एक गिलास उबलता हुआ पानी मिलाकर धीमी आंच पर 20-30 मिनट के लिये उबालें। छानकर एक बड़ा चम्मच दिन में 2-4 बार लें।

क्र. 10. पोप्लर की कलियां तथा पत्र : आधा गिलास उबलता हुआ पानी 3-4 ग्राम सुखी कलियां अथवा 6-8 ग्राम पत्र में डालकर 15-20 मिनट के लिये उबालें। 1-2 घण्टे के लिये रखें। तत्पश्चात् छान लें। आधा गिलास दिन में 3-4 बार लें।

क्र. 11. पुदीने के पौधे 100 ग्राम : 10 ग्राम पौधे में आधा गिलास पानी मिलाकर 20-30 मिनट के लिये उबालें। छानकर एक बड़ा चम्मच दिन में 3-4 बार लें।

क्र. 12. कॉमन वमवुड का क्षुप :- 100 ग्राम : एक बड़े चम्मच औषधि में आधा गिलास उबलता हुआ पानी मिलाकर 20-30 मिनट के लिये उबालें। छानकर एक बड़ा चम्मच दिन में तीन बार लें।

क्र. 13. हॉर्सटेइल के पौधे 100 ग्राम : बीस ग्राम पौधे में एक गिलास उबलता हुआ पानी मिलाकर 20 मिनट के लिये रखें। छानकर 1/2 से 3/4 गिलास दिन में 3 बार लें।

क्र. 14. काली द्राक्षा के पत्र 100 ग्राम : 3-5 ग्राम सूखे या 10-15 ग्राम ताजा पत्र पर एक गिलास पानी डालकर, 2 घण्टे रखें, छानें आधा गिलास दिन में 4 बार भोजन से पहले सेवन करें।

क्र. 15. एफेड्रा के क्षुप 100 ग्राम : दो तीन गिलास उबलता पानी 15-20 ग्राम औषधि में मिलाकर अर्धावशेष उबालें। छानकर एक बड़ा चम्मच दिन में 2-3 बार लें।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

क्र. 16. ड़िल के फल 100 ग्राम : पीसे हुए फल एक छोटा चम्मच में डेढ़ गिलास (300 मि०ली) उबलता हुआ पानी मिलाकर एक घण्टे के लिये रखें। आधा गिलास दिन में तीन बार लें।

क्र. 17. नेटल के पत्र 100 ग्राम : दो गिलास उबलता हुआ पानी 2 बड़े चम्मच पत्र पर डालकर 2 घण्टे के लिये उबालें। छानकर आधा गिलास दिन में 4-5 बार भोजन से पूर्व लें।

हृद्शूल, तुण्डिकेरी (ANGINA, TONSILLITIS)

क्र. 18. पॉट-मेरीगोल्ड के पुष्प 15 ग्राम, सेज के पत्र 15 ग्राम मैट्रिकैरी के पत्र 10 ग्राम, कॉमन इम्मोर्टल के मूल 10 ग्राम, यष्टीमधु के मूल 10 ग्राम : एक गिलास उबलता हुआ पानी एक बड़े चम्मच मिश्रण में 30 मिनट के लिये रखें। छान लें। मुखगुहा तथा गले के लिये स्वरयन्त्र शोथ, श्वासनलिका शोथ, हृद्शूल तथा तुंडीकेरी के लिये गंडूष करें।

क्र. 19. मार्शमैलो के मूल 20 ग्राम, मैट्रिकैरी के पुष्प 20 ग्राम, स्वीटक्लोवर के क्षुप 20 ग्राम, अनसी बीज 30 ग्रामः श्लेष्मधरा कला को मृदु बनाने के लिये मुखगुहा तथा गले को इससे (गंडूष करें)।

क्र. 20. ओक की त्वक् 50 ग्राम, मार्जोरम के क्षुप 40 ग्राम, मार्शमैलो के मूल 10 ग्राम : मुखगुहा तथा गले के लिये गंडूष करें। प्रतिश्याय के लिये लगायें।

क्र. 21. सेज के पत्र, सेइंट-जॉन्स वर्ट के क्षुप एल्डर के पुष्प ओक की त्वक्, प्रत्येक 25 ग्राम : उपरोक्त के अनुसार प्रयोग करें।

क्र. 22. मित्रेया के फल 10 ग्राम, पुदीना के पत्र, 30 ग्राम, मैट्रिकैरी के पुष्प 30 ग्राम, सेज के पत्र 30 ग्राम 1/2-1/3 गिलास फांट से मुखगुहा तथा गले के लिये गंडूष करें।

क्र. 23. गुलाब के फल 100 ग्राम एक थर्मोस फ्लास्क में 5-6 बड़े चम्मच फल लेकर उसमें एक लीटर उबलता हुआ पानी डालें। प्रतिश्याय में व्याधि प्रतिकार शक्ति बढ़ाने के लिये तथा जल्दी रोगमुक्ति के लिये दिन में 4 बार चाय की तरह पीयें।

क्र. 24. मुल्लोइन के पुष्प 1 भाग फाल्स मैलो के पुष्प 1 भाग कोल्ट्सफुट, 1 भाग मार्शमैलो के मूल एक भाग एक गिलास उबलता हुआ पानी एक बड़े चम्मच मिश्रण में डालकर 20 मिनट के लिये रखें। छानकर प्रतिश्याय में दिन में अनेक बार इससे गंडूष करें।

क्र. 25. मिश्रेया के फल 50 ग्राम, सेज के पत्र 15 ग्राम, पुदीना के पत्र 15 ग्राम, मैट्रिकैरी के पुष्प 15 ग्रामः एक चम्मच मिश्रण में एक गिलास उबलता हुआ पानी मिलाकर थोडी देर के लिये उबालें। हत्शूल में मुखगुहा तथा गले को इससे गंडूष करें।

क्र. 26. सेज के पत्र 80 ग्राम, बकथोर्न के पत्र 10 ग्राम, ओक की त्वक् 10 ग्रामः मिश्रण में एक लीटर पानी मिलाकर 30 मिनट के लिये उबालें। छानकर हत्शूल के लिए मुखगुहा तथा गले को गंडूष से साफ करें।

पाण्डु (ANEMIA)

क्र. 27. गुलाब तथा स्ट्रोबेरी के फल प्रत्येक 50 ग्राम इस मिश्रण के 10 ग्राम पर एक गिलास पानी डालें। एक तामचीनी पात्र में 15 मिनट के लिये उबालें। 45 मिनट के लिये ठण्डा करें। 1/4-1/2 गिलास दिन में दो बार लें। इस क्वाथ में लोह तथा एस्कोर्बीक एसीड (विटामिन सी) होते हैं।

क्र. 28. स्ट्रोबेरी के पत्र 20 ग्रामः एक बड़े चम्मच पत्र की चाय बनायें। दिन में 3बार पीयें। एक बहुविटामिनीय औषध के रूप में प्रभावी है।

क्र. 29. गुलाब तथा (काली सूखी द्राक्षा) के फल प्रत्येक 25 ग्रामः क्रमांक 30 में बताये अनुसार बनायें। आधा गिलास दिन में 3-4 बार बहु विटामिनीय औषध के रूप में पीयें।

क्र. 30. डेंडेलिओन के क्षुप तथा मूल 100 ग्रामः एक गिलास उबलता हुआ पानी एक चम्मच मिश्रण में डालकर धीमी आंच पर 10 मिनट के लिये उबालें। एक बड़ा चम्मच दिन में 3 बार लें।

धमनी भित्तियों का स्नैहिक काठिन्य (ATHEROSCLEROSIS)

क्र. 31.हॉंव थोर्न तथा स्ट्रोबेरी के फल-प्रत्येक 15 ग्रामः एक गिलास उबलता हुआ पानी 2 बडे चम्मच मिश्रण में डालकर एक तामचीनी पात्र में 30 मिनट के लिये उबालें। दस मिनट तक ठंडा होने दें, बाद में छान लें। आधा गिलास दिन में 3-4 बार भोजन से 30-45 मिनट पूर्व लें।

क्र. 32. लहशुन की कलियाँ 50 ग्राम, हावथोर्न के पुष्प 25 ग्रामः एक गिलास उबलता हुआ पानी एक चम्मच मिश्रण में डालकर एक रात भर रखें। छानकर एक गिलास दिन में 3 बार पीयें।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

क्र. 33. यार्टो के क्षुप 30 ग्राम, हावथोर्न के पुष्प 15 ग्राम, केले के क्षुप 15 ग्राम: एक गिलास पानी 2 चम्मच (10 ग्राम) मिश्रण में डालकर 15 मिनट तक उबालें। 45 मिनट तक ठंडा करें। छानकर एक गिलास दिन में 3 बार पीयें।

क्र. 34. हावथोर्न के पुष्प, नेटल के पत्र स्वीट क्लोवर के क्षुप, गुलाब तथा रास्पबेरी के फल प्रत्येक 100 ग्राम: एक गिलास उबलता हुआ पानी एक बड़े चम्मच में डालकर 2 घण्टे तक रखें। तत्पश्चात् छानकर 1/4 गिलास दिन में 3 बार पीयें।

क्र. 35. कॉमन इम्मोर्टेल के पुष्प, 1 भाग, हावथोर्न के फल 2 भाग, हेज नेटल के क्षुप 2 भाग, माजेरिम एक भाग, सेइंट जॉन्स वर्ट3 भाग, वेर्वेयन के क्षुप 1 भाग, अतसी के बीज 1/2 भाग, पुदीना के क्षुप 1/2 भाग, गुलाब के फल 1 भाग: एक थर्मोस में 2 अथवा 3 बड़े चम्मच मिश्रण में आधा लीटर उबलता हुआ पानी डालें। इसको दिन में 3 बार भोजन के 20-40 मिनट पूर्व पीयें।

क्र. 36. स्वीट क्लोवर के क्षुप 3 भाग, मार्जोरम के क्षुप 4 भाग, चिकोरी के पुष्प 4 भाग, पॉट मैरीगोल्ड के पुष्प 2 भाग, हेज नेटल के क्षुप 1 भाग: ऊपर दर्शाये अनुसार बनायें।

हृदयगति की अनियमितता (CARDIAC ARRHYTHMIA)

क्र. 37. हॉर्स टेइल के क्षुप 2 भाग, जाइंट वीड के क्षुप 3 भाग, चेरी के पुष्प 5 भाग: एक थर्मोस में एक बड़ा चम्मच मिश्रण लेकर उसमें एक गिलास उबलता हुआ पानी डालकर रात भर रखें। तत्पश्चात् छानकर 1/3-1/4 गिलास दिन में 3-4 बार धड़कन, त्रास तथा अनिद्रा के लिये पीयें।

क्र. 38. पीच (आड़ू) के फल : गर्मी से होने वाली व्याधियों के लिये इसको लें।

क्र. 39. मूली : ताजी निकाली हुई मूली का रस 1 बड़ा चम्मच दिन में 2-3 बार लें। उसमें एक बड़ा चम्मच मधु डालकर धड़कन के लिये दिन में 2-3 बार लें।

क्र. 40. काले अंगूर के फल 50 ग्राम : इनको गर्मी के व्याधियों के शमन के लिये ताजे अथवा सूखे लें।

क्र. 41. होरहाउना के क्षुप 50 ग्राम : दो छोटे चम्मच क्षुप पर एक गिलास उबला तथा ठण्डा किया हुआ पानी मिलाकर 4 घण्टे तक रखें। छानकर दिन में 1/3 गिलास हृद्गति की अनियमितता के लिये पीयें।

संधिशूल (ARTHRITIS-ARTHRALGIA)

क्र. 42. बुर्दोक के मूल 3 भाग, गोधूम घास का प्रकंद 2 भाग, वयोलेट के क्षुप 3 भाग, स्पीड वेल के क्षुप 2 भाग : एक बड़े चम्मच मिश्रण पर एक गिलास उबलता हुआ पानी मिलाकर धीमी आंच पर 10 मिनट तक उबालें। छानकर आधा गिलास दिन में 4-5 बार भोजन पश्चात् संधिशूल के लिये लें।

क्र. 43. नेटल के पत्र एक भाग, वयोलेट के क्षुप एक भाग, पर्सली के मूल एक भाग : उपरोक्त के अनुसार तैयार करें। आधा से पौना गिलास दिन में 3-4 बार संधिशूल के लिये पीयें।

क्र. 44. हार्स टेइल के क्षुप 20 ग्राम, जुनिपेर के मांस फल 20 ग्राम, बक्थोर्न की त्वक् 20 ग्राम, पार्सली के बीज 20 ग्राम : एक बड़े चम्मच मिश्रण में एक गिलास पानी मिलाकर एक तामचीनी पात्र में धीमी आंच पर 10-15 मिनट के लिये उबाले। तत्पश्चात् छानकर एक गिलास दिन में दो बार संधिशूल तथा संधिशोथ के लिये लें।

क्र. 45. बुर्दोक के मूल 20 ग्राम, गोधूम घास के प्रकंद 20 ग्राम, स्पीडवेल के क्षुप 20 ग्राम, वयोलेट के क्षुप 30 ग्राम, बुर-मेरीगोल्ड के क्षुप 20 ग्राम: चालीस ग्राम मिश्रण में एक लीटर पानी मिलाकर 15 मिनट के लिये उबालें। छानकर दिन में तीन बार पीयें, प्रथम बार खाली पेट लें।

क्र. 46. प्याज के मूल, सोप वर्ट 25 ग्राम, विलो की त्वक् 25 ग्राम : दो गिलास (400 मि०ली०) उबलता हुआ पानी 3 बड़े चम्मच (45 ग्राम) डालकर 10 मिनट के लिये रखें। तत्पश्चात् उबालकर छान लें। संधिशोथ के लिये दिन में 3 बार लें।

क्र. 47. एल्डर के पुष्प 3 भाग, नेटल के पत्र 2 भाग, हॉप के पुष्प 4 भाग, काले अंगूर के पत्र 3 भाग, केले के क्षुप 4 भाग, सुर-मेरीगोल्ड के क्षुप 5 भाग : एक लीटर पानी 4 बड़े चम्मच मिश्रण में मिलाकर उबालकर ठंडा करें और छान लें। संधिशूल के लिये स्नान करें।

क्र. 48.कामन वमवुड : एक गिलास उबलते हुए पानी को एक बड़े चम्मच कूटे हुए क्षुप में मिलाकर 2-3 घण्टे तक रखें। मलहम के रूप में लगायें।

क्र. 49. बुर्दोक : एक गिलास पानी दो चम्मच (10 ग्राम) कूटे हुए पौधों के शुष्क मूल में मिलाकर 15-20 मिनट तक एक तामचीनी पात्र में उबालें। एक बड़ा चम्मच दिन में 3-4 बार लें।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

क्र. 50. कोल्ट्स फुट : एक बड़ा चम्मच शुष्क क्षुप में एक गिलास उबलता हुआ पानी में मिलाकर दिन में 30 मिनट तक उबाले। एक बड़ा चम्मच दिन में 4-6 बार लें।

क्र. 51. सेइंट जॉनस वर्ट : एक बड़े चम्मच शुष्क क्षुप में एक गिलास उबलता हुआ पानी मिलाकर 20-30 मिनट तक रखें। छानकर मलहम के रूप में शूलयुक्त स्थान पर लगायें। एक बड़ा चम्मच दिन में 3-4 बार सेवन करें।

क्र. 52. थाइम : पंद्रह ग्राम शुष्म क्षुप में एक गिलास उबलता हुआ पानी मिलाकर 15 मिनट तक रहने दें। छानकर शूलयुक्त स्थान पर लगायें तथा दिन में 3-4 बार सेवन करें।

क्र. 53. नेटल : सात ग्राम शुष्क क्षुप पर एक गिलास उबलता हुआ पानी मिलाकर एक तामचीनी पात्र में 15-20 मिनट तक उबालें। दिन में एक बड़ा चम्मच सेवन करें।

क्र. 54. **संधिशूल के लिये मलहमः**- दो बड़े चम्मच स्वीट क्लोवर के पुष्प, हाँप्स के शंकु अथवा पुष्प के शुष्क मिश्रण के चूर्ण में 50 ग्राम वैसलीन मिलायें। अच्छी तरह मिलायें। मलहम के रूप में लगायें। अंधेरे, ठंडे स्थान पर संग्रह करें।

अर्श (HEMORRHOIDS) (PILES)

क्र. 55. मैट्रिकैरी के पुष्प 20 ग्राम, डांडेलिओन के मूल 15 ग्राम, सोपवर्ट के मूल 15 ग्राम : दो बड़े चम्मच मिश्रण पर कमरे के तापमान वाला पानी 1/2 लीटर मिलाकर 6 घण्टे के लिये रखकर उबालें। ठंडाकर छान लें, एक गिलास फांट से बस्ति प्रति 5 मिनिट्स में एक बार करें। ऐसे तीन बार करें।

क्र. 56. ओक की त्वक् 25 ग्राम, वैलेरिअन के प्रकंद 10 ग्राम : दो बड़े चम्मच मिश्रण पर कमरे के तापमान वाला आधा लीटर पानी मिलाकर 6 घण्टे के लिये रखें। उबालकर ठंडा करें तथा छान लें। एक गिलास से बस्ति प्रति 5 मिनट में एक बार ऐसे 3 बार लगायें।

क्र. 57. काँमन वमवुड के क्षुप 10 ग्राम : आधा गिलास (100 मि०ली०) इथाइल एल्कोहोल के क्षुप में मिलाकर 10 दिन के लिये रखें। तत्पश्चात् छान लें। बाहर से पंद्रह बूंद सीरप सुबह-शाम गुदा के शोथ की शुरूआत की अवस्था में लें।

क्र. 58. अतसी के पुष्प 1 भाग, ओक की त्वक् 1 भाग, लेडीस थम्ब का क्षुप 1 भाग : पिघली हुई सुकर वसा को पौधे के मिश्रण में डालकर 12 घण्टा के लिये रखें। बीच बीच में नियमित हिलाते रहें। छानकर एक पात्र में भर लें। इस मलहम वाली पट्टी शूल युक्त स्थान पर प्रति 4-5 घण्टे पर रखें। यह शूल का शमन करता है, व्रणशोथ को दूर करता है तथा रक्तस्राव को रोकता है।

क्र. 59. सेन्ना के पत्र 10 ग्राम, यारो के क्षुप 10 ग्राम, बकथोर्न की त्वक् 10 ग्राम, धान्यक के फल 10 ग्राम, यष्टिमधु के मूल 10 ग्रामः एक बड़े चम्मच मिश्रण पर एक गिलास उबलता हुआ पानी मिलाकर ठंडा होने तक रखें। छानकर 1/2 गिलास प्रति रात्रि लें।

क्र. 60. बकथोर्न की त्वक् एक भाग, अतसी के बीज एक भाग, मैट्रिकैरी के पुष्प एक भाग, काटन-वीड का क्षुप 1 भागः कदली का क्षुप 1 भाग, लैडीस थम्ब का क्षुप एक भाग : एक बड़े चम्मच मिश्रण पर एक गिलास उबलता हुआ पानी मिलाकर 20 मिनट के लिये उबालें। अर्श के कारण होने वाले रक्तस्राव में 1/3 गिलास दिन में तीन बार 20 मिनट भोजन से पूर्व लें।

क्र. 61. मुल्लेइन के पुष्प : एक चम्मच मिश्रण की चाय बनायें। एक गिलास दिन में 3-4 बार पीयें।

वृक्काश्मरी (NEPHROLITHIASIS)

क्र. 62. हाँर्स टंइल के क्षुप तथा सैंट जान्स वर्ट के क्षुप प्रत्येक 250 ग्राम यारो के क्षुप तथा बिअर के फल और वालव्स प्रत्येक 20 ग्राम : एक बड़ा चम्मच मिश्रण पर एक गिलास ठंडा पानी डालकर 6 घण्टे के लिये रखें। तत्पश्चात् 15 मिनट के लिये उबालकर छान लें। प्रतिदिन एक गिलास लें।

क्र. 63. जुनिपेर तथा गुलाब के फूल-प्रत्येक 20 ग्राम : एक चम्मच मिश्रण पर एक गिलास ठण्डा पानी डालकर 10 मिनट के लिये रखकर 5-7 मिनट के लिये उबालें। तत्पश्चात् छान लें। प्रतिदिन घूंट के रूप में पीयें।

क्र. 64. हाँर्स टेइल के क्षुप, यष्टीमधु के मूल, कारवी के बीज, जुनिपेर के फल प्रत्येक 20 ग्राम : एक बड़ा चम्मच मिश्रण की चाय बनायें। ठंडी करके छान लें। एक गिलास दिन में 1-2 बार लें।

क्र. 65. पुदीना तथा नेटल के पत्र प्रत्येक 50 ग्राम, हाँर्स-टेइल के क्षुप, एल्डस के पुष्प, गुलाब तथा जुनिपेर के फल प्रत्येक 15 ग्राम : एक बड़े चम्मच मिश्रण में एक गिलास ठण्डा पानी मिलाकर एक तामचीनी पात्र में 15-20 मिनट के लिये उबालें। पंद्रह मिनट रखकर छान लें। एक गिलास सुबह शाम भोजन पूर्व लें।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

क्र. 66. मूल 30 ग्राम, गोधुम तृण के कंद 40 ग्राम, अतसी के बीज 50 ग्राम : चार बड़े चम्मच मिश्रण में एक लीटर पानी मिलाकर 20-25 मिनट के लिये उबालें। तीस मिनट तक रखकर छान लें। दिन में कई बार लें।

क्र. 67. चार क्षुप 1/2 गिलास (300 मि०ली०) क्रमशः 5, 10, 15, और 0 दो बड़े चम्मच मिश्रण पर उबलता हुआ पानी 4-5 घण्टे के लिये रखकर 15 मिनट के लिये उबालें। छानकर एक बड़ा चम्मच 4 बार लें।

क्र. 68. मार्जोरम के क्षुप तथा कोल्ट्स फुट के पत्र 5 ग्राम, मार्शमैलो के मूल 20 ग्राम : दो चम्मच मिश्रण पर एक गिलास उबलता हुआ पानी डालकर ठंडा होने दें। दिन में आधा से पौना गिलास लें।

क्र. 69. नेटल के पत्र तथा मूल प्रत्येक 50 ग्राम यष्टीमधु के मूल 30 ग्राम : एक बड़ा चम्मच मिश्रण पर एक गिलास उबलता हुआ पानी मिलाकर रखें। छानकर दिन में 3 बार वृक्कशोथ के लिये लें।

क्र. 70. मार्जोरम के क्षुप 20 ग्राम, बार्बेरी कांड का (वच) 20 ग्राम cortex 20gm एक बड़े चम्मच मिश्रण पर एक गिलास उबलता हुआ पानी मिलाकर 30 मिनट तक रखें। छानकर एक गिलास दिन में 3 बार पीयें।

क्र. 71. वयोलेट, हॉर्स टेइल, सेइंट जॉन्स वर्ट, तथा दांदेलिओन के क्षुप प्रत्येक 30 ग्राम बकथोर्न, वयोलेट तथा हॉर्स टेइल के मूल प्रत्येक 25 ग्राम : एक बड़ा चम्मच मिश्रण में एक गिलास उबलता हुआ पानी मिलाकर 30 मिनट के लिये रखें। छानकर एक गिलास दिन में 3 बार लें।

क्र. 72. जुनिपेर के फल 10 ग्राम, बक्थोर्न की त्वक् 20 ग्राम, नाटवुड का क्षुप 170 ग्राम : पचास ग्राम मिश्रण में एक लीटर उबलता हुआ पानी मिलाकर ठण्डा होने तक रखकर छान लें। वृक्काश्मरी तथा पित्ताश्मरी के लिये दिन में 2-3 गिलास लें।

क्र. 73. जाइंट वीड़ के क्षुप 150 ग्राम, पुदीना पत्र 20 ग्राम : एक बड़े चम्मच मिश्रण में एक गिलास उबलता हुआ पानी मिलाकर 10-15 घण्टे के लिये गर्म स्थान पर रखें। तत्पश्चात् 5-7 मिनट के लिये उबालकर छान लें।

क्र. 74. मुल्लेइन के पुष्प 30 ग्राम, स्त्राबेरी के पत्र 60 ग्राम : एक बड़ा चम्मच मिश्रण में एक गिलास उबलता हुआ पानी मिलाकर 30 मिनट के लिये रखें। छानकर दिन में आधा गिलास वृक्काश्मरी तथा मूत्राशयशोथ में लें।

क्र. 75. काली द्राक्षा के पत्र 30 ग्राम, स्त्राबेरी के पत्र 60 ग्राम तथा मुलेइन के पुष्प 30 ग्राम : एक बड़े चम्मच मिश्रण में एक गिलास उबलता हुआ पानी मिलाकर 25-30 मिनट के लिये धीमी आंच पर उबालें। छानकर 1/2 गिलास दिन में 2-3 बार भोजन पूर्व वृक्काश्मरी तथा मूत्राशय शोथ के लिये लें।

क्र. 76. सेइंट जान्स वर्ट एवं कॉमन इम्मोर्टेल के क्षुप तथा पॉट मेरीगोल्ड के पुष्प प्रत्येक 40 ग्राम, चिकोरी के क्षुप तथा बक्थोर्न की त्वक् प्रत्येक 30 ग्राम, जोइंट वीड क्षुप 20 ग्राम, चेमोमेले के पुष्प 10 ग्राम : मिश्रण पर एक गिलास उबलता हुआ पानी डालकर 10-12 घण्टे के लिये रखें। तत्पश्चात् 5-7 घण्टे के लिये उबालकर 20-25 मिनट के लिये रखें। छानकर के लिये दिन में सेवन करें।

श्वासनलिका शोथ (BRONCHITIS)

क्र. 77. मार्शमैलो के मूल, कोल्टस के पत्र प्रत्येक 40 ग्राम, मार्जोरम के क्षुप 30 ग्राम : एक बड़ा चम्मच मिश्रण में एक गिलास उबलता हुआ पानी मिलाकर 20 मिनट के लिये रखें। छानकर आधा गिलास दिन में 3-4 बार लें।

क्र. 78. मार्शमैलो के मूल 40 ग्राम, यष्टिमधु के मूल 15 ग्राम तथा मिश्रेया के बीज 10 ग्रामः एक बड़ा चम्मच मिश्रण में एक गिलास ठण्डा पानी मिलाकर 2 घण्टे के लिये रखें। तत्पश्चात् 5 मिनट के लिये उबालें। ठंडा करके छान लें। दिन में तीन बार 1/3 गिलास लें।

क्र. 79. कोल्ट्स फुट के पत्र तथा कॉमन इम्मोंटल के पत्र, प्रिमरोज़ के मूल, प्रत्येक 15 ग्राम : दो चम्मच मिश्रण में एक गिलास उबलता हुआ पानी मिलाकर धीमी आंच पर 5 मिनट के लिये उबालें। पंद्रह मिनट के लिये ठण्डा करें। छानकर उपरोक्त कथनानुसार लीजिये।

क्र. 80. कोल्ट्स फुट के पत्र 40 ग्राम, कदली के पत्र तथा यष्टिमधु के मूल प्रत्येक 30 ग्राम : क्रमांक 77 में बताये अनुसार तैयार करें।

क्र. 81. कदली के तथा कोल्टस फुट के पत्र, यष्टिमधु के मूल, वायोलेट के क्षुप प्रत्येक 20 ग्राम : दस ग्राम मिश्रण में एक गिलास उबलता हुआ पानी मिलाकर 15 मिनट के लिये उबलने दें। पैंतालीस मिनट के लिये ठण्डा करें। छानकर 1/4 गिलास दिन में 4-6 बार लें।

क्र. 82. थाईम के क्षुप, कोल्ट्स फुट के पत्र, मार्शमैलों के मूल प्रत्येक 30 ग्राम डिल के तथा सेज के पत्र प्रत्येक 15 ग्राम : बीस ग्राम मिश्रण पर एक गिलास उबलता हुआ पानी डालकर 15 मिनट के लिये रखें। पैंतालीस मिनट तक ठण्डा होने दें। छानकर 1/4-1/3 गिलास दिन में 3-4 बार लें।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

क्र. 83. मार्शमैलो के मूल 40 ग्राम, यष्टिमधु के मूल 25 ग्राम, कोल्ट्स फुट के पत्र 20 ग्राम तथा मित्रेया के बीज 15 ग्राम : बीस ग्राम मिश्रण पर एक गिलास उबलता हुआ पानी मिलाकर 45 मिनट तक रखें। पैंतालीस मिनिट्स के लिये ठण्डा होने दें। छानकर 1/3-1/4 गिलास सुखोष्ण फांट दिन में 3-5 बार जीर्ण श्वासनलिका शोथ, पलमोनरी एम्फायझीमा तथा कास के लिये प्रयुक्त करें।

क्र. 84. स्वीट क्लोवर के क्षुप 5 ग्राम, थाईम के क्षुप 10 ग्राम, मित्रेया के फल 10 ग्राम, पुदीना के पत्र10 ग्राम, कदलीपत्र 15 ग्राम, यष्टिमधु के मूल 15 ग्राम, मार्शमैलो के मूल 15 ग्राम, कोलट्स फुट के पत्र 20 ग्राम : स्वीट क्लोवर श्वासनलिका शोथ, जीर्ण श्वासप्रणालि शोथ तथा शुष्क श्वास।

क्र. 85. पाईन की कलियां 40 ग्राम, कदलीपत्र तथा कोल्ट्स फुट के पत्र प्रत्येक 30 ग्राम कास, श्वासनलिका शोथ, जीर्ण श्वासप्रणाली शोथ तथा शुष्क श्वास। श्वास संबंधी संक्रमण, तमक श्वास तथा कुक्कुर कास के लिये 1/3-1/4 गिलास सुखोष्ण फांट दिन में 3 बार लें।

क्र. 86. मार्श मैलो के मूल, डब्रेरी एवं पुदीना के पत्र प्रत्येक 2 भाग, पाइन की कलियां तथा सेज के पत्र प्रत्येक 2 भाग, एल्डर के पुष्प, कामन इम्मोर्टेल के मूल प्रत्येक 1 भाग, सेइंट जान्स वर्ट के क्षुप 7 भाग : एक थर्मोस में 4-6 बड़े चम्मच मिश्रण में 0.7 लीटर उबलता हुआ पानी मिलायें। दूसरे दिन सुबह 3-4 बार श्वसन संस्थान की तीव्र व्याधि, प्रतिश्याय तथा श्वासनलिका शोथ में लें।

क्र. 87. मार्शमैलो तथा यष्टिमधु के मूल-प्रत्येक 2 भाग, पाईन की कलियां एवं सेज के पत्र प्रत्येक एक भाग : एक थर्मोस में एक बड़ा चम्मच मिश्रण लेकर उसमें एक लीटर उबलता हुआ पानी मिलायें। थोड़ी देर रखें। छानकर एक बड़ा चम्मच दिन में 4-5 बार, श्वसन नलिका शोथ में कफनि:सारक औषध के रूप में लें।

तमक श्वास (BRONCHIAL ASTHMA)

क्र. 88. थाईम के क्षुप, कोल्ट्स फुट के पत्र, वायोलेट के क्षुप, कॉमन इम्मोर्टेल के मूल प्रत्येक एक भाग : एक बड़ा चम्मच मिश्रण लेकर उसमें एक लीटर उबलता हुआ पानी डालकर 30 मिनट के लिये रखें। छानकर 1/3 गिलास दिन में 3 बार भोजन पश्चात् तमक् श्वास के लिये लें।

क्र. 89. थाईम के क्षुप, पाईन की कलियां, मिश्रेया के फल प्रत्येक एक भाग : एक बड़े चम्मच मिश्रण में एक गिलास पानी मिलाकर Water bath में 15 मिनट के लिये रखें। तत्पश्चात् 45 मिनट के लिये ठण्डा होने दें। छानकर प्रतिदिन 1/4-1/3 गिलास लें।

क्र. 90. थाईम के क्षुप, मित्रेया के फल, अतसी के बीज प्रत्येक 10 भाग : चार चम्मच (20 ग्राम) मिश्रण में कमरे के तापमान वाला पानी डालकर 2 घण्टे के लिये रखें। एक तामचीनी पात्र में इसको 5 मिनट के लिये उबालें छानकर 1/3 गिलास दिन में लें।

क्र. 91. मिश्रेया के फल, यष्टिमधु के मूल, पोप्लर की कलियां तथा थाईम का क्षुप-प्रत्येक 20 भाग: दस ग्राम मिश्रण में 200 मि०ली० पानी डालकर 15 मिनट के लिये उबालें। इसको 45 मिनट के लिये रखें। छानकर 1/4-1/3 गिलास दिन में 3 बार लें।

क्र. 92. यष्टिमधु के मूल 30 ग्राम, पाईन की कलियां, कोल्ट्स फुट के पत्र तथा मिश्रेया के फल प्रत्येक 15 ग्राम, मार्शमैलो के मूल, बुर मेरीगोल्ड के क्षुप उसी मात्रा में : जैसा ऊपर कहा गया है ऐसे ही तैयार करें।

आमाशय शोथ (अल्पस्राव)
GASTRITIS (HYPOSECRETION)

क्र. 93. सेज वमवुड के क्षुप 4 भाग, यारो के क्षुप एक भाग : एक थर्मोस में 2 बड़े चम्मच मिश्रण में एक गिलास उबलता हुआ पानी मिलाकर रात भर रखें। छानकर 1/3 गिलास दिन में 3 बार अल्प स्राव से उत्पन्न होने वाले जीर्ण आमाशय शोथ में लें।

क्र. 94. पुदीना के क्षुप, सेज-वमवुड तथा सेइंट जान्स वर्ट के क्षुप, चामामिले के पुष्प, कारवी के फल प्रत्येक एक भाग : एक थर्मोस में 2 बड़े चम्मच मिश्रण लेकर उसमें एक गिलास उबलता हुआ पानी डालकर रातभर रखें। तत्पश्चात् छानकर अल्प पित्त स्राव के कारण उत्पन्न जीर्ण आमाशय शोथ में 1/3 गिलास दिन में 3 बार लें।

क्र. 95. कारवी तथा मिश्रेया के फल, चामोमिले के पुष्प, अल्फाल्फा के पत्र, कदली क्षुप-प्रत्येक 15 ग्राम, पुदीना पत्र 20 ग्राम, यारो के क्षुप 25 ग्राम : एक बड़ा चम्मच मिश्रण में एक गिलास पानी मिलाकर इसको एक तामचीनी पात्र में धीमी आंच पर 15-20 मिनट के लिये उबालें। इस सुखोष्ण फांट को 1/3 गिलास मात्रा में लें।

क्र. 96. चामोनिले के पुष्प, पुदीना तथा सेज के पत्र, यारो के क्षुप एवं कॉमन वमवुड प्रत्येक 20 ग्राम एक बड़ा चम्मच शुष्क क्षुप में एक गिलास उबलता हुआ पानी में मिलाकर दिन में 30 मिनट तक उबालें। छानकर एक बड़ा चम्मच दिन में 4-6 बार लें।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

क्र. 97. पुदीना के पत्र, यारो तथा सेंचुयारी के क्षुप-प्रत्येक 25 ग्राम, ऊपर निर्दिष्ट अनुसार बनायें।

क्र. 98. डेंडिलिओन तथा चिकोरी के मूल, गोधूण तृण के प्रकंद-प्रत्येक 15 ग्राम पिपया के बीज 50 ग्राम : एक बड़े चम्मच मिश्रण पर एक गिलास पानी डालें। एक तामचीनी पात्र में धीमी आंच पर 15 मिनट के लिये उबालें। बीस मिनट के लिये ऐसे ही रखें। छानकर एक गिलास दिन में 2-3 बार लें।

क्र. 99. बक् थोर्न की त्वक् 50 ग्राम, फुमिटरी तथा यारो के क्षुप एवं गोधूम तृण के प्रकंद-प्रत्येक 15 ग्राम ऊपर दर्शाये अनुसार बनायें।

क्र. 100. कामन वमवुड के क्षुप, चिकोरी के मूल, जुनिपेर के फल-प्रत्येक 10 ग्राम, सेज के पत्र 15 ग्राम, एक चम्मच मिश्रण पर एक गिलास उबलता हुआ पानी मिलाकर रखें। तत्पश्चात् छान लें। खाली पेट कई गिलास लें।

क्र. 101. बक्थोर्न की त्वक्, शेफर्ड्स पक्ष के पत्र, हेआरि रूट के क्षुप-प्रत्येक 25 ग्राम : क्रमांक 98 में बताये अनुसार बनायें। सुबह 1-2 गिलास भोजन पश्चात् लें।

क्र. 102. सेइंट जॉन्स वर्ट, सेंचुअरी तथा यारो के क्षुप, फुमिटरी के क्षुप 20 ग्राम चार चम्मच मिश्रण में एक लीटर उबलता हुआ पानी मिलाकर 10-12 घण्टे के लिये रखें। एक तामचीनी पात्र में 5-7 मिनट के लिये उबालें। इसको 30 मिनट के लिये रखें। छानकर एक गिलास सुबह खाली पेट लें। बचा हुआ फांट दिन के दरम्यान पीयें।

क्र. 103. सेंचुअरी तथा सेंट जान्स वर्ट के क्षुप, जेंरिआन के प्रकंद, यारो के पुष्प तथा पत्र-प्रत्येक 20 ग्राम, चिकोरी के क्षुप-30 ग्राम फुमिटरी के क्षुप 4 ग्राम: मिश्रण पर एक लीटर ठंडा पानी मिलाकर 10-12 घण्टे के लिये रखें। एक तामचीनी पात्र में 5-7 मिनट के लिये उबालें। पंद्रह-बीस मिनिट्स के लिये रखें। छानकर एक गिलास खाली पेट लें। बचा हुआ फांट दिन के दरम्यान दिन में 3-4 बार लें।

क्र. 104. सेंचुअरी तथा यारो के क्षुप-प्रत्येक 25 ग्राम : तीन चम्मच मिश्रण में एक गिलास उबलता हुआ पानी मिलाकर तामचीनी पात्र में धीमी आंच पर उबालें। छानकर दिन में 3-4 बार अल्पस्रावजन्य जीर्ण आमाशय शोथ में लें।

आमाशय शोथ (सामान्य स्राव एवं अल्पस्राव) (GASTRITIS (NORMAL SECRETION AND HYPOSECRETION)

क्र. 105. चामोमिले के पुष्प, पुदीना पत्र, यारो के क्षुप तथा सेइंट जॉन्स वर्ट के क्षुप-प्रत्येक एक भाग: एक थर्मोस में दो चम्मच मिश्रण लेकर उसमें एक गिलास उबलता हुआ पानी मिलाकर छान लें। दिन में तीन बार 1/3 गिलास लें।

क्र. 106. अतसी के बीज, यष्टिमधु के मूल, मित्रेया के फल : एक थर्मोस में एक बड़े चम्मच मिश्रण में एक गिलास उबलता हुआ पानी मिलायें। छान लें। दिन में 2-3 बार भोजनपूर्व 1/3-1/2 गिलास लें।

क्र. 107. क्रुडवीड तथा सेंइट जान्स वर्ट प्रत्येक-2 भाग, पुदीना पत्र, यारो के पुष्प तथा डिल के फल-प्रत्येक एक भाग : एक बड़ा चम्मच मिश्रण में एक गिलास उबलता हुआ पानी मिलाकर 2 घण्टे तक रखें। छानकर 1/4-1/3 गिलास दिन में 3-4 बार भोजन से पूर्व लें।

क्र. 108. मिश्रेया के फल, पुदीना पत्र, सेंचुआरी तथा यारो के क्षुप-प्रत्येक 20 भाग : दो चम्मच मिश्रण में एक गिलास पानी मिलाकर धीमी आंच पर 7-10 मिनट के लिये उबालें। छानकर 1/2 गिलास भोजन पूर्व 30 मिनिट्स पूर्व लें।

क्र. 109. पुदीना पत्र 40 ग्राम सेंचुअरी के क्षुप 10 ग्राम : एक गिलास उबलता हुआ पानी मिलाकर थोडी देर रखें। छानकर एक गिलास दिन में 3 बार भोजन पूर्व 30 मिनट पूर्व लें।

क्र. 110. पुदीना तथा सेंचुअरी के पत्र, मिश्रेया के फल-प्रत्येक 15 ग्राम, सेइंट जान्स वर्ट के क्षुप 30 ग्राम : दो बड़े चम्मच मिश्रण पर 2 गिलास (400 मि०ली) उबलता हुआ पानी मिलाकर दो घण्टे के लिये रखें। छानकर आमाशय में अम्लाधिक्यता में इस क्वाथ को घूंट के रूप में दिन में पीते रहें।

क्र. 111. चामोमिले के पुष्प, सेइंट जॉन्स वर्ट प्रत्येक 20 ग्राम, मार्शमैलो के मूल 10 ग्राम : बीस ग्राम मिश्रण पर एक गिलास (200 मि०ली०) पानी मिलाकर एक Waterbarh में रखकर 20 मिनट के लिये उबालें। दस मिनट के लिये ठण्डा करें। एक गिलास उबलता हुआ पानी उसमें डालें। आमाशय शोथ के तीव्र वेग में आधा ग्लास दिन में 3-4 बार पीयें।

क्र. 112. चामोमिले तथा पॉट-मेरीगोल्ड के पुष्प, कदलीपत्र यारो, तथा बुर-मैरीगोल्ड के क्षुप-प्रत्येक 20 ग्राम : दस ग्राम मिश्रण में एक गिलास उबलता हुआ पानी डालकर 15 मिनट के लिये उबालें। पैंतालीस मिनट के बाद छान लें। जीर्ण आमाशय शोथ के लिये 1/3-1/2 गिलास दिन में 3-5 बार लें।

क्र. 113. सेंट जॉन्स वर्ट तथा यारो के क्षुप-प्रत्येक 30 ग्राम : दो बड़े चम्मच मिश्रण पर 1/2 लीटर उबलता हुआ पानी मिलाकर 30 मिनट के लिये रखें। छानकर आधा गिलास दिन में 4 बार लें।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

क्र. 114. सेइंट जॉन्स वर्ट के क्षुप 100 ग्राम : तीन बड़े चम्मच मिश्रण पर एक गिलास उबलता हुआ पानी डालकर 2 घण्टे के लिये रखें। अन्नवह संस्थान का कार्य सुधारने के लिये 1/3 गिलास दिन में तीन बार भोजन पूर्व लें।

क्र. 115. कदली के क्षुप 100 ग्राम : दस ग्राम क्षुप पर एक गिलास उबलता हुआ पानी मिलाकर एक तामचीनी पात्र में धीमी आंच पर 10 मिनट के लिये उबालें। अम्लपित्त में प्रतिदिन एक बड़ा चम्मच खाली पेट लें।

क्र. 116. पुदीना के क्षुप 100 ग्रामः दस ग्रामः क्षुप में आधा गिलास उबलता हुआ पानी मिलाकर एक तामचीनी पात्र में धीमी आंच पर 30 मिनट के लिये उबालें। आमाशय की अम्लाधिक्यता में एक बड़ा चम्मच दिन में 3 बार भोजन पूर्व लें।

उच्च रक्तचाप (HYPERTENSION)

क्र. 117. हाँथोर्न के पुष्प 30 ग्राम एक बड़ा चम्मच क्षुप के ऊपर एक गिलास उबलता हुआ पानी मिलाकर 10 मिनट के लिये रखें। छानकर 1/3 गिलास दिन में तीन बार भोजन के एक घण्टे पश्चात् लें।

क्र. 118. कुडवीड तथा मदर वर्ट के क्षुप 20 ग्राम, हाँथोर्न के पुष्प तथा कदली के क्षुप-प्रत्येक 10 ग्रामः बीस ग्राम मिश्रण में एक गिलास पानी मिलाकर एक तामचीनी पात्र में धीमी आंच पर 15 मिनट के लिये उबालें। कुछ मिनिट्स के लिये रखकर छान लें। शुरूआत के कद जितना उबलता हुआ पानी मिलाकर 1/4-1/3 गिलास दिन में 3-4 बार लें।

क्र. 119. यारो के क्षुप 30 ग्रामः हाँथोर्न के पुष्प, कदली के क्षुप-प्रत्येक 15 ग्रामः एक बड़ा चम्मच मिश्रण में एक गिलास गर्म पानी डालकर 3 घण्टे के लिये रखें। पश्चात् एक तामचीनी पात्र में धीमी आंच पर 5 मिनट के लिये उबालें। ठंडा करके छान लें। दिन में 3-4 बार 1/3-1/4 गिलास लें।

क्र. 120. हाँथोर्न के पुष्प 25 ग्राम, वैलेरियन के प्रकंद 20 ग्राम, कारवी के फल 15 ग्रामः एक बड़ा चम्मच मिश्रण पर एक गिलास उबलता हुआ पानी डालकर 2 घण्टे के लिये रखें। छानकर एक गिलास दिन में दो बार लें।

क्र. 121. जाममीन के फल, वैलेरियन के प्रकंद, हाँथोर्न के पुष्प-प्रत्येक 20 ग्रामः क्रमांक 27 में बताये अनुसार बनायें। उच्च रक्तचाप के लिये 1-2 गिलास भोजन पूर्व लें।

क्र. 122. सर्वीस ट्री तथा हाँथोर्न के फल, वैलेरिअन के प्रकंद-प्रत्येक 15 ग्राम, गाजर तथा मिश्रेया के फल, हार्स-टेल के क्षुप, सेंचुअरी के पुष्प प्रत्येक 10 ग्रामः क्रमांक 27 के अनुसार बनायें। रक्तचाप की वृद्धि degree 1 तथा degree 2 के लिये 1/4-1/2 गिलास दिन में 3 बार लें।

क्र. 123. मदरवर्ट के क्षुप 4 भाग, कुडवीड के क्षुप 2 भाग, पुदीना पत्र 1/2 भाग, हाँथोर्न, सर्वीस ट्री, तथा डिल के फल, रोफर्ड पर्स के क्षुप एक भाग, अतसी के बीज एक भाग, पत्र-2 भाग : एक थर्मोस में 2 से 3 बड़े चम्मच (रोगी के शरीर के भार अनुसार) मिश्रण में ढ़ाई गिलास (500 मि०ली०) उबलता हुआ पानी डालकर 6-8 घण्टे के लिये रखें। पूरा प्रवाही दिन में तीन बार भोजन पूर्व 20-40 मिनट पूर्व सुखोष्ण लें।

हायपरटोनीक व्याधि (HYPERTONIC DISEASE)

क्र. 124. वेरवेइन, मार्जोरम तथा सेइंट जॉन्स वर्ट के क्षुप क्रमशः 1, 2 तथा 7 भाग जुनिपेर के फल 1/2 भाग, जाइंट वीड के क्षुप 1 भाग, विलो क्षुप-2 भाग, पुदीनापत्र 1 भाग, केले के पत्र 2 भाग, गुलाब के फल 3 भागः एक थर्मोस में 2 अथवा 3 बड़े चम्मच (रोगी के शरीर के भार के अनुसार) लेकर उसमें 1/2 लीटर उबलता हुआ पानी मिलाकर रखें। दूसरे दिन पूरा प्रवाही दिन में 3 बार भोजन पूर्व 20-30 मिनट पहले सुखोष्ण लें।

क्र. 125. स्पीड्वेल, यारो तथा सेइंट जान्स वर्ट के क्षुप क्रमशः 1 भाग, 2 भाग तथा 7 भाग, स्ट्रोबेरी के पत्र-1 भाग, जुनिपेर तथा गुलाब के फल-प्रत्येक 1/2 भाग, चिकोरी के पुष्प-1 भागः ऊपर बताये अनुसार बनायें।

क्र. 126. स्पीडवेल के क्षुप 1 भाग, विलो क्षुप एक भाग, सेंइट जान्स वर्ट 5 भाग, कॉमन इम्मोरटेल के मूल तथा कंद 1 भाग, -2 भाग, गुलाब के फूल -3 भाग, पुदीना पत्र-1 भाग, स्कॉच शिथिल -5 भागः ऊपर बताये अनुसार तैयार करें तथा लें।

वृक्कशोथ GLOMERULONEPHRITIS, NEPHRITIS (PYELONEPHRITIS)

क्र.127. चामोमिले के पुष्प 15 ग्राम, मार्जोरम के पुष्प, जॉइंट वीड के क्षुप, एल्डर के मूल, कार्न के स्ती केयर सुक्ष प्रत्येक 20 ग्राम, पोप्लर की कलियां, कदली के क्षुप प्रत्येक 30 ग्राम सेंइट जान्स वर्ट के क्षुप 40 ग्राम : दो बड़े चम्मच मिश्रण पर एक लीटर उबलता हुआ पानी मिलाकर एक गर्म स्थान पर 10-12 घण्टे के लिये रखें बाद में 5-7

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

मिनट के लिये धीमी आंच पर उबालें। छानकर एक गिलास खाली पेट पीयें। बाकी बचे हुए औषध को दिन में 4 बार भोजन पश्चात् लें।

क्र. 128. वेरवेइन के पत्र, यारो के क्षुप, डेड नेटल के पुष्प, बुर मैरीगोल्ड के क्षुप प्रत्येक 10 ग्राम, बुर्दोक के मूल, स्ट्राबेरी के पत्र-प्रत्येक 15 ग्राम, वायोलेट के क्षुप-20 ग्रामः बीस ग्राम मिश्रण पर एक लीटर पानी मिलाकर 10 मिनट के लिये उबालें। छानकर जीर्ण वृक्कशोथ के लिये दो बड़े चम्मच प्रति घण्टे लें।

क्र. 129. शेफर्ड्स पर्स के क्षुप-10 ग्राम, मदर वर्ट के क्षुप -25 ग्रामः एक बड़ा चम्मच मिश्रण पर 1.5 लीटर उबलता हुआ पानी मिलाकर 3-4 घण्टे के लिये रखें। छान लें। जीर्ण उच्च रक्तचाप तथा वृक्कशोथ के लिये एक चम्मच (10 ग्राम) दिन में 3 बार भोजन पश्चात् लें।

क्र. 130. डिल के बीज 10 ग्राम, पाँट मैरीगोल्ड के पुष्प 15 ग्राम, कॉमन बाँम के क्षुप 25 ग्रामः ऊपर निर्दिष्ट अनुसार तैयार करें।

क्र. 131. सेज के क्षुप, पाट मैरीगोल्ड के पुष्प प्रत्येक 15 ग्राम, पोप्लर की कलियां तथा शेफर्ड्स पर्स के क्षुप-प्रत्येक 5 ग्राम, एक बड़ा चम्मच मिश्रण पर एक लीटर पानी डालकर इसको एक घण्टे के लिये उबलने दें। बच्चों में पायेलोनेफ्राइटीस के लिये एक चम्मच दिन में 3-4 बार भोजन के 15 मिनट पूर्व तथा सोने से पूर्व प्रयुक्त करें।

क्र. 132. येल्ले की त्वक्, हाँप के पौधे की शिंबियां प्रत्येक 20 ग्राम, मदरवर्ट के क्षुप 25 ग्राम, मार्शमैल्लो के मूल तथा एधुम तृण के प्रकंद-प्रत्येक 30 ग्राम, एक बड़ा चम्मच मिश्रण पर एक लीटर उबलता हुआ पानी मिलाकर 2 घण्टे के लिये रखें। छानकर एक बड़ा चम्मच दिन में 3-4 बार भोजन पश्चात् जीर्ण वृक्कशोथ के लिये लें।

क्र. 133. नेटल के पत्र-20 ग्राम, यारो के पुष्प तथा सेंइट जान्स वर्ट के क्षुप-प्रत्येक 25 ग्राम, कोल्ट्स फुट के पत्र 30 ग्रामः एक बड़ा चम्मच मिश्रण में एक लीटर पानी उबालकर दो घण्टे के लिये रखें। छान लें। वृक्कशोथ की तीव्रावस्था में 1/2 गिलास दिन में दो बार भोजन पश्चात् 25 दिन के लिये लें।

क्र. 134. हाँस टेइल के क्षुप 10 ग्राम, यष्टिमधु के मूल, पाट मैरीगोल्ड तथा चमोमिले के पुष्प एवं कदलीपत्र प्रत्येक 15 ग्रामः क्रमांक 27 में दर्शाये अनुसार तैयार करें। वृक्कशोथ के लिये 1/2-1/3 गिलास दिन में 3-4 बार लें।

क्र. 135. हाँर्स टेइल के क्षुप 30 ग्राम, वेरवेइन के प्रकंद 20 ग्राम, कदलीपत्र 40 ग्रामः उपरोक्त निर्देशानुसार तैयार करें। मूत्रवह संस्थान के शोथ में 1/2-3/4 गिलास सुखाष्ण फांट का सेवन करें।

क्र. 136. ब्लैक एल्डर तथा चामोमिले के पुष्प सेंइट जान्स वर्ट के क्षुप-प्रत्येक 25 ग्रामः क्रमांक 27 में दिये निर्देश अनुसार तैयार करें। मूत्रवह संस्थान के शोथ के लिये 2 गिलास सुखोष्ण क्वाथ का शाम में प्रयोग करें।

क्र. 137. बक्थोर्न की त्वक् 4 भाग, मित्रेया के फल 1 भागः एक बड़ा चम्मच मिश्रण में एक गिलास उबला हुआ पानी मिलाकर 30 मिनट के लिये रखें। छानकर शाम को पीयें।

क्र. 138. नेटल के पत्र, स्वीट क्लोवर के क्षुप, बक्थोर्न प्रत्येक एक भाग। एक बड़ा चम्मच मिश्रण में एक गिलास उबलता हुआ पानी डालकर 30 मिनट के लिये रखें छानकर आधा गिलास शाम को लें।

क्र. 139. चामोफिले के पुष्प तथा मार्जोरम के क्षुप-प्रत्येक एक भागः एक थर्मोस में दो बड़े चम्मच मिश्रण लेकर उस पर दो गिलास उबलता हुआ पानी डालकर थोडी देर रखें। छानकर सुबह-शाम पीयें।

क्र. 140. बक्थोर्न की त्वक्, मिश्रेया के फल तथा ब्लैक एल्डर के पत्र-प्रत्येक 30 ग्रामः एक बड़ा चम्मच मिश्रण में एक गिलास पानी मिलाकर एक तामचीनी पात्र में धीमी आंच पर 20 मिनट के लिये उबालें। छानकर भोजन पश्चात् सुबह शाम लें।

क्र. 141. पुदीना पत्र 35 ग्राम, बक्थोर्न की त्वक् 25 ग्रामः दो चम्मच मिश्रण में एक गिलास पानी मिलाकर 5-7 मिनट के लिये उबालें। छानकर शाम में लें।

पूययुक्त व्रण (PURULENT WOUNDS)

क्र. 142. हार्स टेइल के क्षुप, चामोमिले के पुष्प-प्रत्येक 30 ग्राम, सेइंट जान्स वर्ट के क्षुप 40 ग्रामः इस क्वाथ को 1/3-1/2 गिलास की मात्रा में दिन में 3 बार लें अथवा लोशन के रूप में लगायें।

क्र. 143. चामोमिले के पुष्प तथा सेज के पत्र-प्रत्येक 5 ग्राम, वरवेदन के पत्र, ओक की त्वक्, हाँर्स टेइल के क्षुप-प्रत्येक 10 ग्रामः मिश्रण पर एक लीटर पानी डालकर 15 मिनट के लिय उबालें। छानकर लोशन के रूप में लगायें अथवा सुखोष्ण क्वाथ से दिन में अनेक बार व्रण का प्रक्षालन करें।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

क्र. 144. हॉर्स टेइल के क्षुप तथा ओक की त्वक् प्रत्येक 10 ग्राम: मिश्रण पर 1-2 गिलास पानी डालकर उसको एक तामचीनी पात्र में उबालें। छानकर पूययुक्त व्रण तथा पोषण व्रण का सुखोष्ण क्वाथ से प्रक्षालन करें।

क्र. 145. अखरोट के पत्र, स्ट्राबेरी के पत्र, बुर-मैरीगोल्ड के क्षुप, वायोलेट के क्षुप-प्रत्येक 20 ग्राम: पचास ग्राम मिश्रण पर एक लीटर उबलता हुआ पानी डालकर 30 मिनट तक रखें। छानकर 1/3 गिलास दिन में 5-6 बार पूययुक्त व्रण के लिये लें।

क्र. 146. सेज के पत्र, मैत्रिकैरी के पुष्प-प्रत्येक 50 ग्राम, वेरवेइन के क्षुप, हॉर्स टेइल के क्षुप, गुलाब की पंखुडीयां, ओक की त्वक्-प्रत्येक 10 ग्राम: मिश्रण पर एक लीटर उबलता हुआ पानी मिलाकर 30 मिनट के लिये रखें। छानकर मलहम के रूप में लगायें।

क्र. 147. पॉट मैरीगोल्ड के पुष्प 100 ग्राम, दस ग्राम मिश्रण पर 1/2 गिलास उबलता हुआ पानी मिलाकर 30 मिनट के लिये रखें। लोशन के रूप में लगायें।

क्र. 148. कोल्ट्स के ताजे पत्र: व्रण पर ताजे पत्र लगायें।

क्र. 149. बुर-मैरीगोल्ड के क्षुप 100 ग्राम: तीन बड़े चम्मच क्षुप में 2 गिलास उबलता हुआ पानी मिलाकर उसको 10 मिनट के लिये एक तामचीनी पात्र में उबालें। एक घण्टे के लिये रखें। लोशन के रूप में लगायें।

क्र. 150. ओक की त्वक् 100 ग्राम, बीस ग्राम ओक की त्वक् पर एक गिलास उबलता हुआ पानी मिलाकर 12-15 मिनट के लिये धीमी आंच पर उबालें। एक घण्टे के लिये रखें। लोशन के रूप में प्रयुक्त करें।

हृदय दौर्बल्य (CARDIAC INSUFFICIENCY)

क्र. 151. हॉथोर्न के पुष्प तथा हॉर्स टेइल के क्षुप-प्रत्येक 50 ग्राम: दो बड़े चम्मच मिश्रण पर एक गिलास उबलता हुआ पानी मिलाकर 30 मिनट के लिये रखें, छानकर 3-5 बार दिन में पीयें।

क्र. 152. मैलेरिअन के मूल तथा प्रकंद-प्रत्येक 40 भाग, पुदीना पत्र तथा मिश्रेया के फल-प्रत्येक 30 भाग: एक बड़ा चम्मच मिश्रण में एक गिलास उबलता हुआ पानी डालकर 30 मिनट के लिये रखें। छानकर दिन में 3-5 बार लें।

क्र. 153. बार्बेरी के फल, हाथोर्न के फल, गुलाब के फल, नेटल के क्षुप तथा सेइंट जान्स वर्ट के क्षुप-प्रत्येक 20 ग्राम: क्रमांक 27 में दिये निर्देशानुसार बनायें। दिन में 2-3 बार 1/3-1/4 गिलास लें।

क्र. 154. मिश्रेया के फल 20 ग्राम, पुदीना के पत्र तथा वेलेरिअन के मूल एवं प्रकंद-प्रत्येक 40 ग्राम: ऊपर दिये गये निर्देशानुसार तैयार करें। दिन में 1/3-1/4 गिलास लें।

क्र. 155. पॉट मैरी गोल्ड के पुष्प, वैलेरिअन के मूल तथा प्रकंद, मदन वर्ट के क्षुप, स्वेदल चाय-प्रत्येक एक भाग, कार्न के स्त्री केसर वृद्धि 2-भाग: थर्मोस में एक गिलास उबलता हुआ पानी एक चम्मच मिश्रण में डालकर थोडी देर रहने दें। यकृतवृद्धि पादशोथ के लिये 1/2 गिलास दिन में 4-5 बार लें।

क्र. 156. कॉमन बाँम के पत्र, वैलेरिअन के मूल तथा प्रकंद प्रत्येक एक भाग, एक बड़ा चम्मच मिश्रण में उबलता हुआ पानी डालकर 3 घण्टे तक रखें। प्रदंह मिनट के लिये उबालें। छानकर हृद्रोग, नाडीरोग तथा अनिद्रा के लिये दिन में 1-2 बार लें।

क्र. 157. हाँथोर्न के पुष्प-एक भाग, पुदीनापत्र-3 भाग, मिश्रेया के फल 2 भाग, वैरेरिअन के मूल प्रकंद -4 भाग: एक थर्मोस में एक बड़ा चम्मच मिश्रण में एक गिलास उबलता हुआ पानी मिलाकर शाम को छान लें। हृद्रोग के लिये दिन में 3-5 बार लें।

क्र. 158. पुदीना पत्र, प्रिमरोज़ के मूल तथा प्रकंद वैलेरिअन के मूल तथा प्रकंद प्रत्येक-30 ग्राम, सुमाक के पत्र 10 ग्राम: एक बड़ा चम्मच मिश्रण में एक गिलास उबलता हुआ पानी मिलाकर थोडी देर रखें। छानकर माईग्रेन (एक तरह का शिर:शूल) के लिये दिन में दो गिलास पीयें।

क्र. 159. पुष्प 100 ग्राम: आधा ग्लास उबलता हुआ पानी एक बड़ा चम्मच सूखे पुष्प पर डालकर 10-15 मिनट के लिये रखें। छानकर आधा गिलास छोटे छोटे घूंट में ध ीरे से शिर:शूल, कर्णशूल, तमक श्वास तथा प्रतिश्याय के लिये पीयें।

क्र. 160. धान्यक के फल, काँमन बाँम के पत्र, पुदीना पत्र, प्रत्येक 20 ग्राम: आधा गिलास (100 मि०ली) मेडीकल स्पीरिट तथा 20 मि०ली० पानी इस मिश्रण पर डालें। चौबीस घण्टे के लिये रखें। छानकर शिर:शूल के लिये लोशन के रूप में कपोल पर तथा शिर के पृष्ठ में लगायें।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

स्वास्थ्यप्रद पेय
HEALTHFUL DRINKS

देश की वन्य तथा उगाये जाने वाले औषधियों के पौधों से स्वास्थ्यप्रद रस, फल, अवलेह, तथा मुरब्बा तैयार कर सकते हैं जो मनुष्यों के लिये लाभप्रद है।

औषधीय पौधों से बनाये गये स्वास्थ्यप्रद पेय में जीवन के लिये आवश्यक महत्वपूर्ण पदार्थ होते हैं। अगर आप लम्बे समय के लिये उपयोगी पेय लेते हैं तो आप जीवन्ततायुक्त तथा बलयुक्त बने रहेंगे। ये पेय आपके जठराग्नि का उद्दीपन करता है तथा मनःस्थिति को बढ़ाता है। ये सभी आपके लिये औषध हैं।

प्लम रस (Plum Juice) :– ये रस बनाने के लिये आपको जरूरत है एक किलोग्राम फल, 100 ग्राम शर्करा तथा एक लीटर पानी।

पौधे के फल को साफ करके एक तामचीनी पात्र में धीमी आंच पर उबालें। छलनी से छान लें। शर्करा तथा पानी डालकर मिलाये तथा फिर से उबालें। ठंडा होने पर पीयें।

दूध के साथ ड्युबेरी (Dewberry) रस :– दूध के साथ ड्युबेरी का रस बनाने के लिये आपको जरूरत होगी ड्युबेरी रस–200 मि०ली०, दूध 600 मि०ली०, चीनी 36 ग्राम तथा नमक दो चुटकी। ड्युबेरी रस में चीनी तथा नमक मिलाकर उसके ऊपर ठंडा दूध डालें।

गुलाब का विटामिन्स युक्त फांट :– गुलाब का विटामिन्स युक्त फांट बनाने के लिये आपको चाहिये गुलाब के सूखे फल–400 ग्राम, चीनी 20 ग्राम, कोफी, चक्की में गुलाब के फल को पीस लीजिये अथवा खरल में कूट लीजिये। चूर्ण पर गर्म पानी डालकर अंधेरे स्थान पर 4–5 घण्टे के लिये रखें। छानकर उसमें चीनी मिलायें। आधा गिलास भोजन पूर्व लें।

ड्यूबेरी का मधुयुक्त पेय :– ड्युबेरी का मधुयुक्त पेय बनाने के लिये आपको चाहिये ड्युबेरी रस 200 ग्राम, मधु 200 ग्राम, पानी 400 मि०ली० पानी को उबालकर उसमें मधु तथा ड्युबेरी रस मिलाकर फिर से उबालें पश्चात् ठंडा करें।

थाइम तथा ड्युबेरी का मधुयुक्त पेय :– इस पेय को बनाने के लिये आपको चाहिए शुष्क थाइम क्षुप 50 ग्राम, पानी 3 लीटर, ड्युबेरी रस 600 ग्राम, तथा मधु 200 ग्राम। क्षुप के ऊपर उबलता हुआ पानी मिलाकर 5 मिनट के लिये उबालें। छानकर एक कांच पात्र में संग्रहण करें।

बर्डोक मूल की कॉफी :– बर्डोक मूल की कॉफी बनाने के लिये आपको चाहिए 1–2 चम्मच चूर्ण तथा 200 मि०ली० उबलता हुआ पानी।

बर्डोक के चूर्ण की कॉफी बनाने के लिये :– एक साल पुराने बर्डोक के मूल लेकर, साफ करके सुखायें। उसको ओवन में पकायें तथा कॉफी चक्की में पीसें।

डेन्डेलीयोन मूल की कॉफी :– डेन्डेलीयोन मूल की कॉफी बनाने के लिये आपको चाहिए डेन्डेलीयोन मूल का चूर्ण तथा उबलता हुआ पानी। डेन्डेलीयोन मूल का चूर्ण बनाने के लिये डेन्डेलीयोन के मूल निकालकर साफ करें तथा अच्छी तरह सुखायें। ओवन में पका कर कॉफी चक्की में पीसें।

व्हीट–ग्रीन की कॉफी (Coffee of wheat-green) :- व्हीट–ग्रीन के मूल निकालकर साफ करें तथा अच्छी तरह सुखायें। ओवन में पकाकर कॉफी चक्की में पीसें। एक कांच पात्र में संग्रह करें।

चिकोरी की कॉफी :– चिकोरी के मूल को अच्छी तरह साफ करके छांव में सुखायें। धूंसर होने तक ओवन में पकायें। तत्पश्चात् कॉफी चक्की में पीसें और एक कांच पात्र में संग्रह करें। चूर्ण से कॉफी बनायें।

गुलाब के बीज की कॉफी :– यह कॉफी बनाने के लिये आपको चाहिये गुलाब के बीज 100 ग्राम, बर्डोक के मूल का चूर्ण 200 ग्राम, गुलाब के बीज से रोम हटाकर धोकर सुखा लें। उसके बाद खरल में पीसें तथा उसमें बर्डोक के मूल का चूर्ण मिलायें। इस चूर्ण से कॉफी बनायें।

थाइम का मुरब्बा :– थाइम का मुरब्बा बनाने के लिये आपको चाहिए थाइम के क्षुप 20 ग्राम, ब्रेड क्वास 1 लीटर, शर्करा 50 ग्राम, थाइम के क्षुप को एक लीटर ब्रेड, कवास के साथ उबालें। उसमें शर्करा मिलायें। दस–बारह घण्टे के लिये रखें। छान लें। ठंडा पीयें।

ड्युबेरी की लेह :– ड्युबेरी की लेइ बनाने के लिये आपको चाहिए ड्युबेरी के फल 400 ग्राम, शर्करा 120 ग्राम, आलु का स्टार्च 45 ग्राम, लेमन एसीड 2 ग्राम। ड्युबेरी के फल को उबालें। तत्पश्चात् छान लें। पीसे हुए फलों को ठंडा करें तथा उसमें उबला हुआ पानी, शर्करा तथा लेमन एसिड मिलायें। फिर से उबालें तथा ठंडा करें। फलों की चटनी में आलु का स्टार्च मिलायें।

स्टार्च को ठंडे पानी में मिलाकर उबालें। इस तरह तैयार स्टार्च को चटनी में मिलायें। आंच पर से हटायें तथा ठंडा करें।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

रूबार्ब के उबले हुए पत्र (Stewed Leaves of Rhubarb) :- रूबाब के पत्र 300 ग्राम, शर्करा 150 ग्राम, पानी एक लीटर। पत्र को साफ करके छोटे टुकड़ों में काट लीजिये तथा उसमें उबला हुआ पानी तथा शर्करा मिलायें। उबालें, ठंडा करें तथा पीयें।

गुलाब के उबले हुए फल :- उबले हुए फल बनाने के लिये आपको चाहिये गुलाब के फल 80 ग्राम, सेव 20 ग्राम, शर्करा 150 ग्राम, लेमन एसीड 1 ग्राम, पानी एक लीटर। फल में से बीज दूर करें। धोकर उसमें पानी मिलाकर उबालें। ठंडा करके पीयें।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

औषधीय चाय
MEDICINAL TEA

जठराग्नि चाय (APPETITE TEA) :

1. जठराग्नि चाय बनाने के लिये आपको चाहिये कोमन वोर्मवुड के क्षुप तथा यारो के पत्र एक भाग, एक बड़े चम्मच (15 ग्राम) मिश्रण पर एक गिलास (200 मि०ली०) उबलता हुआ पानी डालकर 20 मिनट तक रखें। कपड़े से छान लें। एक बड़ा चम्मच भोजन से 10-15 मिनट पूर्व दिन में 3-4 बार लें।

2. जठराग्नि चाय बनाने के लिये आपको चाहिये कामन वोर्मवुड के क्षुप 2 भाग, यारो के क्षुप 2 भाग तथा डेन्डेलीयोन के मूल एक भाग।

एक बड़ा चम्मच मिश्रण एक गिलास (200 मि०ली) उबलता हुआ पानी मिलाकर 20 मिनट तक उबालें। कपड़े से छानकर एक बड़ा चम्मच भोजन से 15-20 मिनट पूर्व लें।

आध्मानहर चाय (CARMINATIVE TEA):

आध्मानहर चाय बनाने के लिये आपको चाहिये मैट्रिकैरी के पुष्प एक भाग, मार्जोरम के क्षुप एक भाग दो बड़े चम्मच (10 ग्राम) मिश्रण पर एक गिलास (200 मि०ली) उबलता हुआ पानी मिलाकर 10 मिनट के लिये उबालें। कपड़े से छानकर ठंडा करें। एक गिलास सुबह शाम पीयें।

विटामिन चाय (VITAMIN TEA)

1. विटामिन चाय बनाने के लिये आपको चाहिये गुलाब के फल, तथा काली द्राक्षा के फल समान भाग लें चाय की तरह बनाकर पीयें।

2. विटामिन चाय बनाने के लिये आपको चाहिये द्राक्षा के फल एक भाग, नेटल के पत्र तथा गाजर के मूल प्रत्येक 3 भाग लेकर चाय की तरह बनाकर पीयें।।

उर:संबंधित चाय (PECTORAL TEA) :

1. उर:संबंधित चाय बनाने के लिये आपको चाहिये मार्शमैलो के मूल 2 भाग, कोलट्रस फुट के पत्र 2 भाग, माजोरम के क्षुप 1 भाग।

एक बड़ा चम्मच (15 ग्राम) मिश्रण पर दो गिलास (400 मि०ली०) उबलता हुआ पानी मिलाकर 20 मिनट के लिये रखें। कपड़े से छानकर आधा गिलास सुखोष्ण फांट प्रति 3 घण्टे पर लें।

2. उर:संबंधित चाय बनाने के लिये आपको चाहिये कोल्ट्स फुट के पत्र 4 भाग, कदलीपत्र तथा यष्टिमधु के मूल 3 भाग, एक बड़ा चम्मच मिश्रण पर दो गिलास (400 मि०ली) उबलता हुआ पानी मिलाकर 20 मिनट के लिये रखें। कपड़े से छानकर आधा गिलास सुखोष्ण फांट प्रति 3 घण्टे पर पीयें।

3. उर:संबंधित चाय बनाने के लिये आपको चाहिये कोल्टस फुट के पत्र, मार्शमैलो के मूल तथा यष्टिमधु के मूल।

एक बड़ा चम्मच मिश्रण पर एक गिलास उबलता हुआ पानी मिलाकर 20 मिनट के लिये रखें। कपड़े से छानकर आधा गिलास दिन में 3 बार कफनि:सारक नुस्खे के रूप में पीयें।

पित्तसारक चाय (CHOLAGOGIC TEA)

यह चाय बनाने के लिये आपको चाहिये कॉमन इम्मोर्टल के पुष्प 3 भाग, रूबार्ब के मूल 5 भाग, तथा यारो के क्षुप 2 भाग।

एक बड़े चम्मच मिश्रण पर एक गिलास उबलता हुआ पानी मिलाकर ठंडा होने दें। कपड़े से छानकर शाम को पित्ताश्मरी के लिये पीयें।

मूत्रल चाय (DIURETIC TEA)

मूत्रल चाय बनाने के लिये आपको चाहिये जुनिफेर के फल 2 भाग, हार्स टेइल के क्षुप 2 भाग, तथा गोधुम तृण के प्रकंद 5 भाग।

एक बडा चम्मच (15 ग्राम) मिश्रण पर दो गिलास (400 मि०ली०) उबलता हुआ पानी मिलाकर 15 मिनट के लिये रखें। कपड़े से छानकर चिकित्सकीय सलाह के अनुसार लें।

स्वेदल चाय (DIAPHORETIC TEA)

यह चाय बनाने के लिये आपको चाहिये की विलो त्वक् तथा कोल्ट्स फुट के पत्र 2 भाग, मार्जोरम के क्षुप एक भाग।

दो बड़े चम्मच मिश्रण पर 2 गिलास (400 मि०ली०) उबलता हुआ पानी मिलाकर 20 मिनट के लिये रखें। कपड़े से छानकर चाय की तरह पीयें।

गंडमालाहर चाय (ANTISCROFULOUS TEA)

गंडमालाहर चाय बनाने के लिये आपको चाहिये विओलेट त्रिकालोर के क्षुप 4 भाग तथा बुर-मैरीगोल्ड

एक बड़े चम्मच (15 ग्राम) मिश्रण पर एक गिलास (200 मि०ली०) उबलता हुआ पानी डालकर थोड़ी देर रखें। एक बड़ा चम्मच दिन में 3-4 बार लें।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

RUSSIAN-LATIN-TURKMEN GLOSSARY OF NAMES OF MEDICINAL PLANTS

Абрикос обыкновенный – Armeniaca vulgaris – Erik

Адиантум Венерин волос – Adiantum capillus-veneris – Sünbülsaç

Адонис весенний – Adonis vernalis – Ömrüzaýa

Адонис мелкоцветковый – Adonis parviflora – Güýlmene

Айва обыкновенная – Cydonia oblonga – Behi

Алкор крупнолистный – Mediasia makrophylla – Alkar

Аллохруза качимовидная – Allochrusa gypsohiloides – Behi, bugratiken

Алтей лекарственный – Althaea officinalis – Çerbiýe

Анхуза итальянская – Anchuza italica – Dennangara

Арбуз обыкновенный – Citrullus lanatus – Garpyz

Аргузия сибирская – Argusia sibirica – Güneýik, porsy ot

Арнебия простертая – Arnebia decumbens – Gyzyldüýp

Арум Королькова – Arum Korolkovii – Gargadil

Астрагал короткозубчатый – Astragalus brevidens – Gökgül

Астрагал оттопыренный – Astragalus squarrosus – Siňren

Астрагал подложный – Astragalus commixtus – Towşanot

Базилик обыкновенный – Ocimum basilicum – Nazbaýgül, reýhan

Барбарис туркменский – Berberis turcomanica – Sarytiken, zirk

Безвременник жёлтый – Colchicum luteum – Sawramjan

Безвременник Кессельринга – Colchicum kesselrindii – Sawramça

Белена туркменская – Hyoscyamus turcomanicus – Maňyralak, ülwen

Белена черная – Hyoscyamus niger – Maňyrsak

Бессмертник яйцеголовчатый – Helichrysum ooephalum – Solmazak

Биберштейния многонадрезанная – Biebersteinia multifida – Gandeper

Блошница болотная – Pulicaria uliginosa – Bürelije

Болиголов пятнистый – Conium maculatum – Alagamak

Бонгардия золотистая – Bongardia chrysogonum – Adamgataňňyr, gataňňyr

Бородач обыкновенный – Botriochloa ischaemum – Palan çaýyr

Боярышник понтийский – Crataegus pontica – Alyç

Боярышник туркменский – Crataegus turcomanica – Haraçeken

Бузина травянистая – Sambucus ebulus – Lüşi

Буниум афганский – Bunium afghanicum – Zire

Василек иберийский – Centaurea iberica – Guşgonmaz

Василистник изопироидный – Thalictrum isopyroides – Garapeçe

Василистник малый – Thalictrum minus – Üççüňkli

Вербена лекарственная – Verbena officinalis – Gaýtarma

Верблюжья колючка персидская – Alhagi persarum – Ýandak

Виноград культурный – Vitis vinifera – Üzüm

Вишня ложнопростертая – Cerasus pseudoprostrata – Garamyk

Володушка высокая – Bupleurum exaltatum – Jigergül

Ворсянка разрезная – Dipsacus laciniatus – Guşokara

Вьюнок полевой – Convolvulus arvensis – Ak peçek, çyrmaşyk, gara peçek, peçek

Вьюнок шерстистый – Concolvulus subhirsutus – Kert

Гадючий лук – Muscari leucostomum – Ýylan sogany

Галохарис щетинистоволосый – Halocharis hispida – Peşmek

Гармала обыкновенная – Peganum harmala – Adraspan, iswent, üzärlik, ýüzärlik

Гвоздика длинноготковая – Dianthus macronyx – Myhak

Гиацинт Литвинова – Hyacinthus litwinowii – Güli sünbül

Гименократер смолистый – Hymenocrater bituminosus – Tilkialma

Гипекоум мелкоцветный – Hypecoum parviflorum – Çymylgan

Глауциум бахромчатый – Glaucium fimbrilligerum – Gökgülälek

Глауциум изящный – Glaucium elegans – Gelşikli gökgülälek

Головчатка сирийская – Cephalaria syriaca – Başlyja

Горец почечуйный – Polygonum persicaria – Babasyl oty, gyrmyzy başly kyrkbogun

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

Горец птичий – Polygonum aviculare – Kyrkbogun

Горечавка Оливье – Gentiana olivieri – Ýerbahasy

Гравилат городской – Geum urbanum – Şirçaý

Гранат обыкновенный – Punica granatum – Nar

Гребенщик щетинистоволосый – Tamarix hispida – Ýylgyn

Грыжник гладкий – Herniaria glabra – Ingilije

Дактилориза теневая – Dactylorhiza umbrosa – Barmakköklüje

Девясил британский – Inula britanica – Akargül

Дереза прижатая – Lygium depressum – Gyzgan

Дереза русская – Lycium ruthenicum – Adaty gyzgan

Дескурения Софьи – Descurainia sophia – Sarysyza, sygyr siýdik

Додарция восточная – Dodartia orientalis – Gatraly, gatyja, tekesakgal

Донник лекарственный – Melilotus officinalis – Eşekýorunja, itýorunja

Дорема Эчисона – Dorema aitchisonii – Gamak

Дубровник беловойлочный – Teucrium polium – Bagşyýowşan, tilkiderman

Дурман обыкновенный – Datura stramonium – Dänegerçek, itöldürgiç

Дурнишник обыкновенный – Xanthium strumarium – Bürmek, gürmek, şagalburun

Дымянка Вайана – Fumaria vaillantii – Şaterne

Дыня обыкновенная – Melo sativus – Gawun

Ежевика анатолийская – Rubus anatolicus – Böwürslen

Ежевика сизая – Rubus caesius – Gögümtil böwürslen

Ежовник безлистный – Anabasis aphylla – Itsiýek öldürik

Ежовник солончаковый – Anabasis salsa – Buýurgyn

Живокость полубородатая – Delphinium semibarbatum – Saryçöp

Жостер кожистолистный – Rhamnus coriacea – Mydarça

Журавельник аистовый – Erodium ciconium – Çüňkli, durnabaş, guşdilli, temenlik

Журавельник остроносый – Erodium oxyrrhynchum – Çuluk

Зайцегуб опьяняющий – Lagochilus inebrians – Towşandodak

Заразиха сомнительная – Orobanche ambigua – Ýokançgül

Звездчатка средняя – Stellaria media – Ýyldyzgül

Зверобой продырявленный – Hypericum perforatum – Sarygül

Зизифора головчатая – Ziziphora capitata – Keýigoty

Зизифора тонкая – Ziziphora tenuior – Garadäne, käkilik oty

Золототысячник красивый – Gentaurium pulchellum – Altyngül

Зопник решетчатый – Phlomis cancellata – Şekerot

Ива джунгарская – Salix songarica – Söwüt, tal

Иксиолирон татарский – Ixioliron tataricum – Jümjüme

Имбирь настоящий – Zengiber officinale – Zenjebil

Индау посевной – Eruca sativa – Indew

Инжир афганистанский – Ficus afghanistanica – Owgan injiri

Каперсы травянистые – Capparis herbacea – Göýül

Капуста огородная – Brassica oleracea – Kelem

Карагач граболистный – Ulmus carpinifolia – Garagaç

Картофель – Solanum tuberosum – Kartoşka

Катран Кочи – Crambe kotschyana – Dadran

Каччиния крупнопыльниковая – Caccinia macranthera – Garadendan

Кизильник монетный – Cotoneaster nummularis – Yrgaý, ýylgaý

Клещевина обыкновенная – Ricinus communis – Çakjagunduz

Клоповник посевной – Lepidium sativum – Ajytere

Коельпиния линейная – Koelpinia linearis – Atelmik

Козелец Литвинова – Scorzonera litwinowii – Garla

Колючелистник железистый – Acanthophyllum glandulosum – Garapeç

Конопля посевная – Cannabis sativa – Kenep

Кориандр посевной – Coriandrum sativum – Kinza

Корица китайская – Cinnamomum cassian – Dalçyn

Коровяк джунгарский – Verbascum songaricum – Sygyrguýruk

Костец волосовидный – Asplenium trichomanes – Tüýli dalakça

Костец зелёный – asplenium viride – Ýaşyl dalakça

Костец чёрный – Aspenium adiantum-nigrum – Gara dalakça

Котовник кошачий – Nepeta cataria – Pişigoty

Кохия венечная – Kochia scoparia – Izen, sübselik

Краекучник орляковый – Cheilanthes pteridioides – Gyrasiňňillije

Крапива двудомная – Urtica dioica – Çitçiti, jeren

Красавка Комарова – Atropa komarovii – Melek, zenan oty

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

Крестовник малозубчатый – Senecio subdentatus – Sarysolmaz

Кукуруза – Zea mays – Mekgejöwen

Кумарчик широколистный – Agriophyllum latifolium – Eşek oty, gumdary, humarjyk

Кунжут индийский – Sesamum indicum – Künji

Купена Северцова – Polygonatum sewerzowii – Egrije, garamazyk

Куркума культурная – Curcuma domestica – Sarybuga

Лаллеманция Ройля – Lallemantia royleana – Başaşak, kirpikesen, narpyzyk

Ландыш майский – Convallaria majalis – Injigül

Лебеда татарская – Atriplex tatarica – Ak selme, selme

Лен обыкновенный – Linum usitatissimum – Zygyr

Леонтице Эверсмана – Leontice ewersmannii – Doňuzgataňňyr

Листовник сколопендровый – Phyllitis scolopendrium – Sugundili

Ломонос восточный – Clematis orientalis – Deltek, ýapyşak

Лопух белосемянный – Arctium leiospermum – Aýypenje

Лох восточный – Elaeagnus orientalis – Igde

Лук огородный – Allium cepa – Sogan

Лук порей – Allium porrum – Keber

Лук Суворова – Allium suvorovii – Anzur

Лук чеснок – Allium sativum – Sarymsak

Мак павлиний – Papaver pavoninum – Gülälek

Малина обыкновенная – Rubus idaeus – Bulduragan

Мандрагора туркменская – Mandragora turcomanica – Mährigöýä, selmelek

Марена красильная – Rubia tinctorum – Çöpboýa

Марь белая – Chenopodium album – Gara selme

Маслина европейская – Olea europaea – Zeýtun

Мать-и-мачеха обыкновенная – Tussilago farfara – Alaja, düroty

Маш, фасоль золотистая – Phaseolus aureus – Mäş

Мелкоголовник пластинчатый – Microcephala lamellata – Çopantelpek

Мелколепестник канадский – Erigeron canadensis – Derwüşoty

Мерендера крепкая – Merendera robusta – Däligöjele, göjele

Мимозка выполненная – Prosopis farcta – Pişikdyrnak

Миндаль обыкновенный – Amygdalus communis – Ajybadam, badam

Можжевельник зеравшанский – Juniperus seravschanica – Gara arça, zerewşan arçasy

Можжевельник туркменский – Juniperus turcomanica – Arça

Молочай одностолбиковый – Euphorbia monostyla – Awyternek

Мордовник обыкновенный – Echinops ritro – Aktiken, göktiken, kirpigül

Морковь обыкновенная – Daucus carota – Adaty käşir

Морковь посевная – Daucus sativus – Käşir

Мытник густоцветный – Pedicularis pycnantha – Bitoty

Мята длиннолистная – Mentha longifolia – Narpyz

Мята перечная – Mentha piperita – Ajy narpyz

Нанофитон ежовый – Nanophyton erinaceum – Taşbiýurgyn

Никандра физалиевидная – Nicandra physalodes – Şiraý

Одуванчик лекарственный – Taraxacum officinale – Süýtleňňiç, tozga

Орех грецкий – Juglans regia – Hoz

Пажитник сенной – Trigonella foenum-graecum – Boýdäne

Парнолистник амударьинский – Zygophyllum oxianum – Ak ýüzärlik, düýedaban

Парнолистник лебедовый – Zygophyllum atriplicoides – Ýaglyja, ýagodun

Паслен черный – Solanum nigrum – Itüzüm

Пастушья сумка – Capsella bursa-pastoris – Gyjy-gyjy

Первоцвет Федченко – Primula fedtschenkoi – Nowruzgül, ysmaz oty

Переступень белый – Bryonia alba – Ak andyz

Переступень двудомный – Bryonia dioica – Andyz

Перец однолетний – Capsicum annuum – Gyzylburç

Перец стручковый – Capsicum annuum – Burç

Первоския благовонная – Perovskia abrotanoides – Pütün

Персик обыкновенный – Persica vulgaris – Şetdaly

Песчаная акация Конолли – Ammodendron conollyi – Sözen

Петрушка курчавая – Petroselinum crispum – Badyýan

Пижма разнолистная – Tanacetum heterophyllum – Çopyrtelpek

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

Платан восточный – Platanus orientalis – Çynar

Повилика одностолбиковая – Cuscuta monogyna – Bir sütünli saryçyrmaşyk

Подмаренник Памиро-Алайский – Galium pamiro-alaicum – Şanoty, tilkisumaý

Подорожник большой – Plantago major – Atgulak

Подорожник ланцетолистный – Plantago lanceolata – Guzygulak

Подсолнечник однолетний – Helianthus annuus – Günebakar

Полынь Балханов – Artemisa balchanorum – Gyr ýowşan

Полынь беловатая – Artemisa leucodes – Agymtyl ýowşan

Полынь горькая – Artemisia absinthium – Ajyýowşan

Полынь копетдагская – Artemisa kopetdaghensis – Köpetdag ýowşany, ýowşan

Полынь метельчатая – Artemisa scoparia – Syza

Полынь поздняя – Artemisa serotina – Giçki ýowşan

Полынь цитваровидная – Artemisa ciniformis – Sitwar görnüşli ýowşan

Портулак огородный – Portulaca oleracea – Semzek

Просвирник пренебреженный – Malva neglecta – Mamamçörek

Прутняк Авраамово дерево – Vitex agnus-castus – Bitlik

Псоралея костянковая – Psoralea drupacea – Gandyrýar

Пузырник Атабаева – Colutea atabajevii – Haramçybyk

Пузырник ломкий – Cystopteris fragilis – Siňňillije

Пустынноколосник губастый – Eremostachys labiosa – Mäz oty, sygyrdili

Пустырник туркестанский – Leonurus turkestanicus – Şirguýruk

Пырей ползучий – Elytrigia repens – Bugdaýbogun, gyýak

Расторопша остро-пестрая – Silybum marianum – Alapakyr

Ревень туркестанский – Rheum turkestanicum – Garadamak, garaýapban, gara ýaprak, yşgyn

Редька посевная – Raphanus sativus – Turp

Ремерия гибридная – Roemeria hybrida – Mawygül

Ремерия отогнутая – Roemeria refracta – Pakpaky

Репейничек азиатский – Agrimonia asiatica – Aýypenjelije

Рис посевной – Oryza sativa – Şaly, tüwi

Рогоз широколистный – Typha latifolia – Ýeken

Рябчик Ольги – Fritillaria olgae – Alwan

Саксаул белый – Haloxylon persicum – Sazak

Саксаул черный – Haloxylon aphyllum – Ojar

Сведа высокая – Suaeda altissima – Syrkyn

Свинорой пальчатый – Cynodon dactylon – Çaýyr, garaçaýyr

Свинчатка европейская – Plumbago curopaea – Gurşungül

Сельдерей пахучий – Apium graveolens – Garauk

Синеголовник кавказский – Eryngium caucasicum – Gökbaş

Ситник морской – Juncus maritimus – Ülen

Скабиоза персидская – Scabiosa persica – Goturot

Скребница аптечная – Cetarah officinarum – Birsepere

Слива домашняя – Prunus domestica – Garaly

Смирновия туркестанская – Smirnowia turkestana – Sözenek

Смоковница обыкновенная – Ficus carica – Injir

Солерос европейский – Salicornia europaea – Ýata

Солодка голая – Glycyrrhiza glabra – Buýan, süýji buýan

Солянка Рихтера – Salsola richteri – Çerkez

Соляноколосник Беланже – Halostachys belangeriana – Ojargarak

Софора толстоплодная – Sophora pachycarpa – Ajybuýan

Спаржа персидская – asparagus persicus – Sersepil

Сумах дубильный – Rhus coriaria – Somak

Сушеница желто-белая – Gnaphalium luteo-album – Keçegül

Таволга зверобоелистная – Spiraea hypericifolia – Tuwolga

Татарник колючий – Onopordum acanthium – Alatiken, çakyrtiken

Тмин обыкновенный – Carum carvi – Çöregoty, garazire, jire

Тополь белый – Populus alba – Ak derek, derek

Тополь евфратский – Populus euphratica – Toraňňy

Тополь сизолистный – Populus pruinosa – Pette

Тростник южный – Phragmites australis – Gamyş

Трюфель пустынный – Terfeisia leonis – Domalan

Тутовник белый – Morus alba – Ak tut, tut

Тутовник черный – Morus nigra – Gara tut

Тыква обыкновенная – Cucurbita pepo – Daşkädi

Тысячелистник Биберштейна – Achillea biebersteinii – Gurtgyran

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

Тысячелистник керманский – Achilla kermanica – Kerman boý-bodrany

Тысячелистник обыкновенный – Achillea millefolium – Adaty boýbodran, boýbodran

Ужовник обыкновенный – Ophioglossum vulgatum – Ýylandili

Укроп пахучий – Anethum graveolens – Şibit

Унаби обыкновенный – Zizyphus jujuba – Arnap, elnap, ennap

Унгерния Виктора – Ungernia victoris – Gaýraç

Унгерния трехсферная – Ungernia trisphaera – Dokuzdonly

Фенхель обыкновенный – Foeniculum vulgare – Arpabadyýan

Ферула бадракема – Ferula badrakema – Badrakema çomujy, porsygamak

Ферула вонючая – Ferula foetida – Çomuç

Ферула выемчатая – Ferula foetida – Ýapyldak

Ферула смолистая – Ferula gummosa – Aňňyza, porsaňňyza, porsygama

Ферула яйценогая – Ferula oopoda – Keýigokara

Фиалка скрытая – Viola occulta – Benewşe

Физалис обыкновенный – Physalis aifefendi – Pakpak

Фисташка настоящая – Pistacia vera – Pisse

Хвойник средний – Ephedra intermedia – Ýaman borjak

Хвойник шишконосный – Ephedra strobilacea – Borjak

Хвощ полевой – Equisetum arvense – Atguýruk

Хлопчатник волосистый – Gossypium hirsutum – Gowaça

Хмель обыкновенный – Humulus lupulis – Maýa oty

Целозия гребенчатая – Celosia cristata – Täjihoraz

Цельнолистник остролистный – Haplophyllum acutifolium – Penirçek, porsyçöp

Цельнолистник разноцветный – Haplophyllum versicolor – Porsykert

Церцис Гриффита – Cercis griffithii – Arguwan

Цикорий обыкновенный – Cichorium intybus – Syçratgy

Чабрец закаспийский – Thymus transcaspicus – Käkiligot

Череда трехраздельная – Bidens tripartita – Goşadiş

Черноголовка обыкновенная – Prunella vulgaris – Garabaş, ruhoty

Чернокорень критский – Cynoglossum creticum – Itdili, syrlan

Чертополох сероватый – Carduus cinereus – Garamandalak, şeýtan taýagy

Чистец лавандолистный – Stachys lavandulifolia – Tilkiçaý

Шалфей колючий – Salvia spinosa – Ak kenepçe, kelepçe

Шалфей мускатный – Salvia sclarea – Bidenek

Шандра обыкновенная – Marrubium vulgare – Halmyratot, ýolgutly

Шафран Королькова – Crocus korolkowii – Zefren

Шафран Михельсона – Crocus michelsonii – Zagpyran

Шиповник Беггера – Rosa beggeriana – Beggeriň bägüli

Шиповник самаркандский – Rosa maracandica – Samarkant bägüli

Шиповник собачий – Rosa canina – Hamyrça, itburun

Шлемник обыкновенный – Scutellaria galericillata – Tuwulg-alyja

Шпажник итальянский – Gladiolus italicus – Ýylangül

Шпинат туркестанский – Spinacia turkestanica – Ysmanak

Щавель Галачи – Rumex halacsyi – Gyzylbaldak

Щавель курчавый – Rumex crispus – Turşuja

Щирица белая – Amaranthus albus – Ak hulpa

Щирица запрокинутая – Amaranthus retroflexus – Hulpa

Щитовник бородконосный – Dryopteris barbigera – Sarahs

Эпилазия полушерстистая – Epilasia hemilasia – Ýelmik

Эремурус Ольги – Eremurus olgae – Çyryş

Эспарцет Синтениса – Onobrychis sintenisii – Burkyn

Яблоня домашняя – Malus domestica – Alma

Якорцы стелющиеся – Tribulus terrestris – Çopançereken, demirtiken

Ятрышник ложнорыхлоцветковый – Orchis pseudolaxiflora – Salapça

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

CALENDAR OF GATHERING OF MEDICINAL PLANTS

	March	April	May	June	July	August	September	October	November
Adaty boýbodran			herbs	herbs	herbs	herbs			
Adaty käşir					fruit	fruit			
Agymtyl ýowşan						herbs	herbs		
Ajybuýan			herbs	herbs	herbs	herbs	herbs		
Ajy narpyz				herbs	herbs	herbs	herbs		
Ajytere			herbs	herbs					
Ajyýowşan			herbs	herbs					
Ak andyz							root	root	
Akargül							rootstock, root		
Akselme		leaves				seeds			
Ak tut					Cortex of a stem and cortex of a root, a fruit				
AIagamak		herbs	herbs						
Alapakyr			leaves	leaves	seeds				
AIatiken			leaves, heads of flowers						
Alkar				laves, root	laves, root				

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust
Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

	March	April	May	June	July	August	September	October	November
Alma				fruit, leaves, cortex of stem	fruit, leaves, cortex of stem				
Altyngül			herbs	herbs					
Alyç			flower	flower			fruit	fruit	
Andyz								root	root
Anzur		a bulb	a bulb						
Aňňyza			root	root, resin					
Arça			pine-needles	pine-needles				fruit	fruit
Arguwan		flower	flower						
Arnap		leaves			fruit	fruit	fruit		
Atgulak			leaves	seeds, herbs		leaves	seeds		
Atguýruk									
Ayypenje				leaves		leaves	root	root	
Aýypenjelije				root, root-stock, herbs		root, root-stock, herbs			
Babasyl oty				herbs	herbs				
Badam				fruit	fruit				
Badrakema çomujy	resin	resin						root	root
Bagşyýowşan			herbs	herbs					
Barmakköklüje				tuber root	tuber root				
Başlyja			flower	flower					

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

	March	April	May	June	July	August	September	October	November
Beggeriň bägüli						fruit	fruit	fruit	
Behi				herbs		root	root		
Benewşe		herbs	herbs						
Birsepere				herbs	herbs				
Bitlik				leaves		fruit	fruit	fruit	
Bitoty			herbs	herbs	herbs	herbs			
Borjak		shoot	shoot		fruit				
Boýbodran			herbs	herbs					
Boýdäne			seeds	seeds					
Bozagan						herbs	herbs		
Böwürslen			leaves	leaves	fruit	fruit	fruit		
Bulduragan			leaves	leaves	fruit	fruit			
Burç			fruit	fruit	fruit				
Burgunça		leaves	leaves						
Buýan	root								root
Büreli atgulak		herbs	herbs	seeds					
Bürmek				herbs	herbs	herbs	fruit	fruit	fruit
Bürmekçe		herbs	herbs						
Çakjagunduz							seeds	seeds	
Çerbiýe					root	root	root	root	
Çerkez	herbs	herbs	herbs				fruit	fruit	fruit
Çitçiti			leaves	leaves					
Çopyrtelpek			floscule	floscule	floscule	floscule			
Çynar		leaves	leaves	root, cortex	cortex of	cortex of		fruit	

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

	March	April	May	June	July	August	September	October	November
				of trunk	trunk	trunk			
Çyrmaşyk			herbs	herbs	herbs				
Çyryş	leaves	leaves, root	root	root	root				
Dadran		a graft	root, seed	seed					
Dagdan						fruit			
Dalakça				herbs		rootstock			
Dalamaz			corolla	corolla					
Dardar						branches	branches		
Daşbuýurgyn									
Daşkekre			flower	flower					
Demirtiken			herbs	herbs	herbs		herbs		
Demrewük			leaves	leaves			root	root	root
Dennangara		leaves, herbs	leaves, herbs						
Derek	Shoots	leaves	leaves						
Dere sogan			leaves, stem	a bulb					
Derwüşoty					herbs	herbs	herbs	herbs	herbs
Dänegerçek				leaves	leaves	seeds	seeds	seeds	seeds
Dideoty			herbs	herbs					
Diş-diş ýolgutly			herbs	herbs	herbs	herbs			
Doňuzgataňňyr	tuber	tuber							
Doňuztopalak	rootstock, tuber	rootstock, tuber						rootstock, tuber	rootstock, tuber

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

Düroty	March	April	May	June	July	August	September	October	November
Eçisonyň gamagy	flower	leaves root, resin	leaves root, resin					root	root
Egrije	leaves	leaves					rootstock	rootstock	rootstock
Ermeni çerbiýesi	root	root						root	root
Eýran gyrasiňňillijesi			leaves	leaves	leaves				
Eýran itüzümi				stem	stem			root	root
Eýran ýowşany				herbs	herbs		herbs		
Gamyş					stem			leaves	leaves
Gandeper				root	root				
Gara dalakça	stem				root	root	root	root	root
Garagaç					leaves	leaves			
Garapeçe	leaves	leaves, fruit	fruit		cortex				
Gara tut			herbs	herbs					
Gara selme		leaves	leaves		cortex	fruit			
Gargadil			leaves	leaves					
Garla	tuber	tuber						tuber	tuber
Gataňňyr	tuber	tuber							
Gaýraç		tuber	tuber	tuber					
Gaýtarma		leaves	leaves						
Gelşikli gökgülälek				herbs	herbs	herbs			

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust
Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

	March	April	May	June	July	August	September	October	November
Giçki ýowşan		herbs	seeds						
Golaý saryçyrmaşyk						herbs	herbs	herbs	herbs
Goşadiş			herbs leaves	herbs leaves	herbs	herbs	herbs		
Goturot				herbs	herbs				
Gogümtil böwürslen			leaves	leaves, fruit					
Gök baş				root	root				
Gökgülalek			herbs	herbs					
Göýül		fresh branches	flower	flower	fruit, bud	fruit, bud	fruit, bud	root	
Gurşungül						leaves, stem	leaves, root	root	
Guşokara				leaves	floscule				
Gülälek		flower, herbs	flower, herbs						
Gyrasiňňillije			leaves	leaves	leaves				
Gyzgan				fruit					
Güneýik		herbs	herbs	herbs		rootstock			
Gyjy-gyjy	herbs	herbs	herbs						
Gyr ýowşan						herbs	herbs		
Gyýak	rootstock	rootstock, herbs						rootstock	rootstock
Gyzyldüýp		herbs	herbs	root	root				
Haraçeken		leaves	flower,	flower			fruit		

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

	March	April	May	June	July	August	September	October	November
			leaves						
Hoz			leaves	leaves	unripe fruits	unripe fruits	fruit	fruit	
Hytaý saryçyrmaşygy									
Igde		leaves	leaves		gum	gum	fruit	fruit	
Ingilije				herbs	herbs				
Injir				leaves	leaves, fruit	leaves	leaves, fruit		
Itburun				leaves	fruit	fruit	fruit		
Itdili		leaves	leaves	fruit	fruit				
Itüzüm				leaves	leaves	fruit	leaves	fruit	
Jigergül			herbs	herbs					
Jümjüme			herbs	herbs	a bulb				
Keber						a bulb, seed	a bulb, seed	a bulb, herbs	a bulb
Keçegül			herbs					herbs	
Kelepçe		herbs	herbs	herbs	seeds				
Kerman boýbodrany		herbs	herbs	flower					
Keýigokara		root	root					root	root
Keýigoty		herbs, flower	herbs, flower	herbs, flower		spray	spray	spray	spray
Köpetdag ýowşany									
Lemanyň				herbs	herbs	herbs			

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

	March	April	May	June	July	August	September	October	November
saryçyrmaşygy									
Lüşi					flower	flower, fruit	fruit		
Mamamçörek			herbs, flower	herbs, flower		herbs, root	root		
Maňyrsak		herbs	herbs	fruit					
Myhak				herbs	herbs				
Narpyz				herbs, leaves	herbs, leaves				
Narpyzak		herbs	herbs						
Nowruzgül	flower	flower	rootstock			fruit	fruit		
Owgan injiri		leaves	leaves	fruit	fruit				
Pakpak		herbs	herbs						
Pakpaky			root			galls			galls
Pisse				herbs	herbs				
Pişigoty				herbs, flower	herbs, flower			rootstock	
Ruhoty	tuber root	tuber root							
Salapça					fruit	fruit			
Samarkant bägüli				leaves	leaves	leaves	rootstock		
Sarahs	rootstock	rootstock	herbs, flower	herbs, flower	herbs, flower				
Saryçöp			herbs	herbs	herbs				
Sarygül				tuber bulb					
Sawramça	tuber bulb	tuber bulb	tuber bulb						
Sawramjan	tuber	tuber	tuber						

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust
Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

	March	April	May	June	July	August	September	October	November
	bulb	bulb	bulb						
Semzek	herbs	herbs				seeds	seeds	seeds	
Sersepil	root					root	root	root	
Siňňirllije	rootstock		leaves	leaves		rootstock	rootstock	rootstock	
Siňren Sitwat görnüşli ýowşan		herbs	herbs			heads of flowers	heads of flowers		
Solmazak				inflorescence	inflorescence				
Sugundili					leaves	leaves	leaves		root
Sünbülsaç				herbs	herbs	herbs	herbs	herbs	
Syçratgy	root		herbs	herbs			root	root	root
Sygyrguýruk					corolla, herbs	herbs		root	root
Syza						herbs	herbs	herbs	herbs
Şaterne		herbs	herbs						
Şirçaý	rootstock	rootstock, herbs	rootstock, herbs						
Şirguýruk				herbs	herbs				
Temenlik	herbs	herbs	herbs						
Tilkiçaý		herbs	herbs	herbs	herbs				
Tilkisumaý			herbs	herbs	herbs				
Tozga	root					root	root		
Turşuja			leaves	leaves					
Tuwolga			leaves	leaves, flower	cortex of branch				
Tuwulgalyja			herbs	herbs	herbs	herbs	root		

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust
Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

	March	April	May	June	July	August	September	October	November
Tüýli galakça		herbs	herbs	herbs	herbs				
Üççüňkli			herbs	herbs	herbs				
Üzärlik			herbs	herbs				seeds	seeds
Ysmanak		herbs	herbs						
Yşgyn			root	root	a graft		root	root	
Ýaman borjak		small branches	small branches	small branches	fruit				
Ýandak			herbs	herbs	herbs	herbs			
Ýaşyl dalakça				leaves	leaves			rootstock	rootstock
Ýeken	rootstock								
Ýerbahasy	root, rootstock	root, rootstock					root, rootstock		
Ýolgutly				leaves, shoot	leaves, shoot	leaves, shoot			
Ýylan sogany		bulb	bulb						
Ýylandili	herbs	herbs			herbs	herbs			
Ýylduzgül	shoots	flower	leaves	leaves		fruit	bark, fruit	bark, fruit, root	
Ýylgaý									
Zagpyran	stigma	stigma							
Zenjebil									
Zerewşan arçasy								cone-berry	cone-berry
Zere			seed						
Zirk	root		leaves	leaves	fruit	fruit	fruit	root	root

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

BIBLIOGRAPHY:

1. Berdimuhamedow G. Türkmenistanda saglygy goraýşy ösdürmegiň ylmy esaslary. Aşgabat «Ylym» neşirýaty, 2007. - 96 s.

2. Abu Aly Ibn Sina. Lukmançylyk ylmynyň kanunlary.- Aşgabat, 2004.

3. Akmyradow A. Bathyz efemeroidleriniň bioekologiki aýratynlyklary we olaryň hojalyk ähmiýeti //Dissertasiýa (golýazma). Aşgabat, 1998. - 147 s.

4. Akmyradow A. Bathyz efemeroidleriniň amaly we hojalyk ähmiýeti //Türkmen ylmynyň amaly jähtleri. Aşgabat: Ylym. 2000. S. 62-64.

5. Akmyradow A. Bathyz efemeroidleriniň bioekologik aýratynlyklary we olaryň dermanlyk häsiýetleri //Saparmyrat Türkmenbaşynyň «Saglyk» maksatnamasynyň durmuşa geçirilmeginde tebigat ylymlarynyň roly diýen ýygyndysy. Çärjew. 1999.

6. Akmyradow A., Rustamow I.G. Bathyz efemeroidleriniň mediko-biologiki aýratynlyklary we ähmiýeti //Türkmenistanda saglyk problemasyny formirlemegiň mediki-biologiki we sosial aspektler (Ylmy işleriň ýygyndysy). Aşgabat 1995. S. 166-168.

7. Akmyradow A. Derman otlar. Aşgabat: Türkmenistan. 1993. -143 s.

344 8. Akmyradow A. Rahmanowa K., Esenow R. Göýül (Capparis herbacea) Türkmenistanyň hojalyk taýdan bähbitli dermanlyk we iýmitlik ösümligidir. //Ruhnama we bilim. Türkmenabat. 2001. S. 163-164.

9. Akmyradow A., Gurbanmämmedowa G. Milli nyşanly daragt //Saglyk. 2006. №4.

10. Akmyradow A. Birsepere //Saglyk. 2007 a. №2.

11. Akmyradow A. Güller we saglyk //Saglyk. 2007 b. №2.

12. Akmyradow A., Gurbanmämmedowa G. Hoz bişende... //Saglyk. 2008. №5.

13. Akmyradow A. Halk lukmançylygynda peýdalanylýan, Türkmenistanyň dermanlyk pteridoflorasyna syn //«Türkmenistanyň saglygy goraýyş ulgamynda ýetilen sepgitler» atly halkara ylmy maslahatynyň nutuklarynyň ýygyndysy. Aşgabat, 2008.

14. Akmyradow A. Haşal derman ösümlikler //Türkmenistanyň halk magaryfy. 1992. №1 S. 26-30.

15. Akmyradow A. Merkezi Köpetdagyň birseperelerі //Türkmenistanyň lukmançylygy. 2007. S. 35-39.

16. Akmyradow A. Türkmenistnanyň florasyndaky käbir dermanlyk we hoşboý-ysly ösümlikleri öwrenmeklik dogrusynda //Professor-mugallymlar düzüminiň Türkmenistanyň Garaşsyzlyk gününiň 10 – ýyllygyna we TDMI-niň 70 ýyllygyna bagyşlanan ylmy-amaly Maslahatyndaky çykyşlaryň gysgaça beýanlarynyň ýygyndysy. Aşgabat. 2001. S. 385-386.

17. Akmyradow A. Türkmenistanyň orta mekdeplerinde dermanlyk we hoşboý-tagam beriji ösümlikleri öwrenmeklik dogrusynda //Ruhnama we bilim. Türkmenabat. 2001. S. 161-163.

18. Akyýewa M. Türkmenistanyň peýdaly ösümlikleri. Aşgabat: Türkmenistan, 1980.

19. Ataýew G. Tebigy dermanhana. A.: «Magaryf», 1993, - 40 s.

20. Ataýew G. Türkmenistanyň tebigy derman otlary. A.: «Türkmenistan», 1998. - 44 s.

21. Gubaýew A. G. Orta – Aziýa tebipçiliginde ulanylýan ösümlikler we olaryň ulanylyşy. A.: Из-во ЦК КПТ, 1991, - 80 с.

22. Gurbanmämmedowa G., Akmyradow A. Igde // Saglyk. 2008. № 6.

23. Gurbanmämmedowa G., Akmyradow A. Merkezi we Gündogar Köpetdagyň dermanlyk dendroflorasy //«Türkmenistanyň saglygy goraýyş ulgamynda ýetilen sepgitler» atly halkara ylmy maslahatynyň nutuklarynyň ýygyndysy. Aşgabat, 2008.

24. Mohammet Huseýn. Mahzan al – adwiýa. Bombeý. 1844.

25. Seýit Ysmaýyl Jürjany. Tebipçiligiň ýan kitaby. Aşgabat. 1995.- 279 s.

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

26. Абу Али Ибн Сина (Авиценна) Канон врачебной науки. Кн. 2. О простых лекарствах, Ташкент. АН УзССР,1956-1966.

27. Абу Райхан Беруни. Избранные произведения. T.IV . (фармакогнозия в медицине). Ташкент, Фан,1973. - 1120 с

28. Агафонов А.Д., Андрист Б.В. Организация заготовок дикорастущих плодов, ягод, грибов и лекарственных трав. М., «Колос», 1975.

29. Акмурадов А. Обзор лекарственной птеридофлоры Туркменистана, применяемая в народной медицине //Сборник тезисов Международной научной конференции «Достижения здравоохранения Туркменистана». Ашгабад, 2008.

30. Акмурадов А. А. Редкие лекарственные папоротники Копетдагского государственного заповедника (Туркменистан) //Международная научно-практическая конференция, посвященная 10-летию «Богдинско-Баскунчакского заповедника, Ахтубинск, 2008 г.

31. Акопов И. Э. Кровоостанавливающие растения. Ташкент: Медицина УзССР, 1981.

32. Алексеев Б. Д. Важнейшие дикорастущие полезные растения Дагестана. Махачкала, 1967. - 141 с.

33. Алексеев Г. А., Якимов З. П. Лекарственные растения на территории Чувашии. Чебоксары, 1975. - 229 с.

34. Алиев Р. К. и др. Лекарственные растения Азербайджана. Баку, 1972. - 196 с.

35. Алимбаева П. К., Гончарова А. В. Дикорастущие лекарственные растения Киргизии. Фрунзе, 1971. - 99 с

36. Амандуртыев К. Биология Алкора (Mediasia makrophylla Regel. et Schmalh) M. Pimen. и введение его в культуру //Автореф. дисс., Ташкент, САГУ, 1977. - 28 с.

37. Амирханов Н. А. Катран (Crambe (Tourn.) L.) в Узбекистане // Автореф. док. дисс., Ташкентский Гос. Ун-т, 1974. - 41 с.

38. Андросов Н. В. Пряно-пищевые, травянистые, дикие растения Туркмении //Тр. ТФАН СССР, Ашхабад, 1942. № 2.

39. Анненков Н. Ботанический словарь. Справочная книга для ботаников, сельских хозяев, садоводов, фармацевтов, врачей, путешественников

40. в России и вообще сельских жителей. Спб., 1878. - 645 с.

41. Артамонов В. И. Редкие и исчезающие растения (По страницам Красной книги СССР): Кн. 1. М.: Агропромиздат, 1989. - 383 с.

42. Атлас ареалов и ресурсов лекарственные растения СССР. М.: Медицина, 1983.

43. Атлас лекарственных растений СССР. М., 1962. - 703 с.

44. Аширова А. А. Лекарственные растения флоры Туркмении и их применение в народной медицине //Автореф. канд. дисс., Ашхабад, 1944.

45. Аширова А. А. Лекарственные растения флоры Туркмении, применяемые в народной медицине. А. Магарыф, 1992. - 240 с

46. Бабаханов В. А. Платан восточный (Platanus orientalis L.) и его выращивание в поливных условиях Азербайджана //Автореф. канд. дисс., Баку, 1969.

47. Белоусова Л. С., Денисова Л. В. Редкие растения мира. М.: Лесн. промышленность, 1983. - 344 с.

48. Бочанцев В. П., Камелин Р. В., Горелова Т. Г. Сосудистые растения Батхызского заповедника (оперативно-информационный материал). М., 1990. - 56 с.

49. Вандышева В. И. и др. Лекарственные растения Киргизии и перспективы их использования. Фрунзе, 1977. - 66 с.

50. Васильева Б. Д. Распространение, экологическая и ресурсная характеристика барбариса обыкновенного // Автореф. дис. канд. биол. наук. М. 1979. - 19 с.

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

51. Виноградов А. С. Список лекарственных растений, применяемых в народной медицине Средней Азии. Тр. ТГМИ, т. 4, 1950.

52. Волкинд И. В. и др. Рецептурный справочник для врачей и фармацевтов. Л., 1976. - 647 с.

53. Вульф Е. В., Малеева О. Ф. Мировые ресурсы полезных растений. Л., 1969.

54. Гаммерман А. Ф., Гром И. И. Дикорастущие растения СССР. М., 1976. - 286 с.

55. Гаммерман А. Ф., Кадаев Г. Н., Яценко-Хмелевский Н. А. Лекарственные растения (растения-целители). М.: Высшая школа, 1983. - 400 с.

56. Гаммерман А. Ф., и др. Лекарственные растения научной медицины СССР, не включенные в фармакопею. Ашхабад. Изд. «Ылым». 1970. - 187 с.

57. Гаммерман А. Ф. Обзор лекарственных растений Туркмении //Тр. ТФАН СССР, 1942, вып. 2. С. 55-92.

58. Гаммерман А. Ф., Шупинская М. Д., Яценко-Хмелевский А. А. Растения целители. М., 1963.

59. Гельбахиани П.Г. Лекарственные богатства Грузии. Тбилиси, 1961. - 79 с.

60. Гиппократ. Избранные книги. Пер. с греч. Проф. В.И. Руднева. М., 1936.

61. Гладышев А. И., Камахина Г. Л. Природные растительные ресурсы горной Туркмении и их рациональное использование //Изв. АН ТССР. Сер. биол. наук. 1991.№ 2. С. 3-8.

62. Гоголева М. Е., Крылова И. Л., Токарева Д. И. Инструкция по сбору и сушке плодов шиповника //Правила сбора и сушки лекарственных растений (Сборник инструкций). М.: Медицина, 1985. - С. 293-296.

63. Головко Д. Н., Рожко Ф. М. Сбор, сушка, хранение и упаковка лекарственного сырья. М., 1950.

64. Голышенков П. П. Лекарственные растения и их использование. Саранск, 1982. - 312 с.

65. Государственная фармакопея СССР. Изд. 11, М.: Медицина, 1990.

66. Губанов И. А., Крылова И. Л. Дикорастущие полезные растения СССР. М., 1976. - 360 с.

67. Губанов И. А., Боцманова М. С. Лекарственные растение Киргизии. Фрунзе. Киргизиздат, 1968.

68. Доброхотова К. В., Чудинов В. В. Лекарственные растения Казахстана. Алма-Ата, 1961. - 120 с.

69. Дубянский В. А. Исследование лекарственной флоры Закаспийской области. Спб., 1917.

70. Дубянский В. А. Отчёт об исследование Закаспийской области в отношении лекарственных и технических растений. Пгр., 1918. - 74 с.

71. Дудченко Л. Г., Кривенко В. В. Плодовые и ягодные растения целители. – Киев: Наукова думка, 1987.

72. Запрягаева В. И. Дикорастущие плодовые Таджикистана. М. – Л., 1964.

73. Землинский С. Е. Лекарственные растения СССР. М.: Медгиз. 1958. - 603 с.

74. Золотницкая С. Я. Лекарственные ресурсы флоры Армении, т. 1 – 2. Ереван, 1957, 1965.

75. Иванченко В. А. Основные растения в медицине народов Востока. А.: Туркменистан, 1985. - 112 с.

76. Камахина Г. Л. Флора и растительность Центрального Копетдага (настоящее, прошлое и будущее). Ашхабад, 2005. - 245 с.

77. Капранов В., Хашим Р. Мудрость веков (Древняя таджикское медицина о сохранении здоровья). Душанбе.: Ирфон, 1981. - 216 с.

78. Каррыев М. О. Арча – лекарственное растение. Ашхабад. Ылым. 1971.

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

79. Каррыев М. О. Исследование растений флоры Туркменской ССР с целью изыскание биологически активных соединений и лекарственного растительного сырья //Автореф. док. дисс., Харьков. 1983. - 48 с.

80. Каррыев М. О. Лекарственные растения Туркменистана. Ашхабад. 1995.

81. Каррыев М. О. Лекарственные растения Туркменистана в научной и народной медицине. Ашхабад. 1988.

82. Каррыев М. О. Фармакохимия некоторых эфирномасличных растений флоры Туркмении. Ашхабад. Ылым. 1973. - 152 с.

83. Кербабаев Б. Б., Мещеряков А. А. Лекарственные растения Туркмении. Ашхабад. Ылым, 1975.

84. Кербабаев Б. Б. Народные и научные туркменские названия растений. А.: Ылым, 1992. - 192 с.

85. Кондратенко Н. Т., Кур С. Д., Рожко Ф. М. Заготовка, выращивание и обработка лекарственных растений. М., 1965.

86. Красная книга Туркменской ССР. Ашхабад: Туркменистан, 1985. - 413 с.

87. Красная книга Туркменистана. Ашхабад: Туркменистан, Т. 2. 1999. - 263 с.

88. Кузнецова М. А. Лекарственное растительное сырье. М.: Высшая школа. 1984.

89. Курбанов Дж. Конспект флоры западных низкогорий и среднегорий Копетдага (Северо-Западный Копетдаг и другие низкогорья Западной Туркмении). А.: Ылым, 1988. -260 с.

90. Ладынина Е. А., Морозова Р. С. Фитотерапия. – 2-е изд., доп. – Л.: Медицина, 1990. - 304.

91. Лазерев А́. И. Дары щедрого леса. Алма-Ата.: Кайнар, 1990.

92. Лекарственные растения Сибири для лечения сердечно-сосудистых заболеваний /Н. В. Казарипова, М. И. Ломоносова, В. М. Триль и др. – Новосибирск: Наука, Сиб. отд-ние, 1991. - 240 с.

93. Ломакина М. И., Ломакин Э. Н. Химический состав диких плодовых растений западного Копетдага //Растит. ресурсы, 1973. Т. 9, вып., 4. С. 573-577.

94. Массагетов П. С. Эфедра и эфедрин в СССР //Фармация и фармакология, 1938. № 6.

95. Мацку Я., Крейча И. Атлас лекарственных растений. Издательство Словацкой Академии Наук. Братислава. - 464 с.

96. Машанов В. И., Покровский А. А. Пряноароматические растения. М.: Агропромиздат, 1991. - 287 с.

97. Михайленко Е. Г., Радзинский В. Е., Захаров К. А. Лекарственные растения в акушерстве и гинекологии. Киев: Здоровье, 1987. - 191 с.

98. Муравьева Д. А. Тропические и субтропические лекарственные растения. М., 1983.

99. Некрасов В. Л. История изучения дикорастущих сырьевых растений в СССР М. – Л.: изд-во АН СССР, 1958.

100. Никитин В. В., Кербабаев Б. Б. Народные и научные туркменские названия растений. Изд. АН ТССР, 1962.

101. Никитин В. В., Гельдиханов А. М. Определитель растений Туркменистана. Л.: Наука, 1988. - 680 с.

102. Нуралиев Ю. Н. Фитотерапия импотенции (Из опыта народной, древневосточной и современной медицины). Душанбе, 1993. - 40 с.

103. Одо из Мена. О свойствах трав. – М., 1976.

104. Определитель растений Средней Азии. Том I – VII. Ташкент, Фан. 1968-1983.

105. Определитель растений Туркменистана, т.т. II – III, Ашхабад, «Ылым», 1980-1985.

106. Определитель хвощеобразных, папоротникообразных, голосеменных и однодольных растений Туркменистана. «Ылым», Ашхабад. - 328 с.

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

107. Павлов Н. В. Дикие полезные и технические растения СССР. М., 1942. - 640 с.

108. Петков В. Современная фитотерапия. Медицина и физкультура. София. 1988.

109. Петрова Е. Ф. Инжир в Средней Азии. Ашхабад. «Ылым», 1984.

110. Покровский Б. Подорожник – доктор и целитель. М. 2005. - 64 с. (серия «Азбука здоровья»).

111. Полуденный Л. В., Сотник В. Ф., Халпцев Е. Е. Эфирномасличные и лекарственные растения. М.: «Колос», 1979.

112. Правила сбора и сушка лекарственных растений (сборник инструкции). М.: Медицина, 1985. - 328 с.

113. Рабинович М. И. Лекарственные растения в ветеринарной практике. М.: Агропромиздат. 1987.

114. Раздинский В. Е., Аннаев Х. А., Аннаева О. М. Лекарственные растения Туркменистана в педиатрии и гинекологии. Ашгабат, 1993. - 176 с.

115. Растительные ресурсы СССР: Цветковые растения, их химический состав, использование. Т.Т. I – VII, Л.: Наука, 1984-1993 гг.

116. Рыбицкий Н. А., Гаврилов И. С. Дикорастущие плоды и ягоды. Лениздат. 1969.

117. Савельев А. Т., Шиманюк А. П. Дикорастущие плодовые, ягодные и орехоплодные растения наших лесов. М., 1970.

118. Самойлов А. Ф. Витаминоносители флоры Туркмении //Тр. ТФАН СССР. 1942. Вып. 4. С. 24-26.

119. Сахобиддинов С. С. Дикорастущие лекарственные растения Средней Азии. Ташкент, 1948. - 276 с.

120. Сахобиддинов С. С. Дикорастущие лекарственные растения Узбекистана. Ташкент, 1955. - 46 с.

121. Сахобиддинов С. С. Словарь местных и научных названий полезных и вредных растений Средней Азии. Ташкент, 1953.

122. Свиридов Г. М. Напитки здоровья. М. 1990.

123. Середин Р. М. Лекарственные растения Дагестана. Махачкала, 1961.

124. Середина Н. А., Середин Р. М. Распространение и запасы сырья алтея армянского и алтея аптечного // В кн.: Ресурсы дикорастущих лекарственных растений СССР. Л., «Наука», 1968.

125. Синельников Н. А. Лекарственное растение яндак или верблюжья колючка и её врачебное **Применение.** Ашхабад, «Туркменистан», 1965.

126. Скляровский Л. Я., Губанов И. А. Лекарственные растения в быту. – М., 1968.

127. Соколов В. С. Алкалоидоносные растения СССР. М., Л., 1952. - 380 с.

128. Соколов С. Я., Замотаев И. П. Справочник по лекарственным растениям. Фитотерапия. М.: «Металлургия», 1989.

129. Солодухин Е. Д. Аптека в лесу. М.: Агропрмиздат. 1989.

130. Спасский В. Н. Лекарственные растения древесные и кустарниковые. М., 1900.

131. Станков С. С. Дикорастущие полезные растения СССР. М., 1951. - 316 с.

132. Суворов Ю. П., Сахарова Н. А., Сутормина Н. В. Ресурсы лекарственного и плодово-ягодного сырья в Горном Алтае. Томск: Изд-во Том. ун-та, 1981. - 242 с.

133. Сырьевые ресурсы Туркмении и их промышленное использование. Ашхабат, 1943. - 140 с.

134. Турова А. Д. Лекарственные растения СССР и их Применение. М.: Медицина, 1974. - 424 с.

135. Ушбаева К. У., Курамысова И. И., Аксенова В. Ф. Целебные травы. Алма-Ата «Кайнар», 1975. - 200 с.

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

136. Федосеенко В. М. Новая энциклопедия растений: мифы, целебные свойства, гороскопы, растительный календарь. М., 2003. - 736 с.

137. Федченко Б. А. Изучение лекарственных растений Южного Туркестана. Спб. 1917.

138. Феофраст. Исследование о растениях. Л., изд. АН СССР. 1951.

139. Флора Туркмении. Т.Т. I – VII. Москва, Ленинград, Ашхабат. 1932-1960 гг.

140. Фруентов Н. К. Лекарственные растения Дальнего Востока. – Хабаровск, 1974.

141. Халимов Н. Б. Обзор медицинской рукописей //Памятники Туркменистана, 1976. № 2. С. 26-27.

142. Халматов Х. Х. Дикорастущие лекарственные растения Узбекистана. Ташкент, 1964.- 279 с.

143. Халматов Х. Х. Растения Узбекистана с диуретическим действием. Ташкент, 1979.- 180 с.

144. Ходжиматов М. Дикорастущие лекарственные растения Таджикистана. Душанбе, 1989. - 368.

145. Чарыева Г. А. История изучения и использования лекарственных растений Туркменистана. Ашхабат: «Ылым», 1988.

146. Черепанов С. К. Сосудистые растения СССР. Л., Наука, 1981. - 510 с.

147. Чиков П. С., Лаптев Ю. П. Витаминные и лекарственные растения. М., Колос, 1976.

148. Чиков П. С. Лекарственные растения. М.: Лесная промышленность, 1987.- 383 с.

149. Чиков П. С., Павлов М. И. Наука и лекарственные растения. М. : Знание, 1981. - 160 с.

150. Шалыт М. С. Дикорастущие полезные растения Туркменской ССР. М., 1951. - 222 с.

151. Шпиления С. Е., Иванов С. И. Азбука природы (Лекарственные растения). М.: Знание, 1989. - 224 с.

152. Шретер А. И., Крылова И. Л. Как находят лекарственные растения. М., Медицина, 1962.

153. Шретер А. И. и др. Лекарственная флора Кавказа. М., 1979, - 368 с.

154. Шретер А. И. Лекарственная флора советского Дальнего Востока. М., 1975. - 328 с.

155. Шретер Г. К. Лекарственные растения и растительное сырье, включенные в отечественные фармокопеи. М., 1972. - 119 с.

156. Шульга Т. П. Как собирать, хранить и применять лекарственные растения. М., 1991. - 96 с.

157. Akmuradov A. Turkmenistan medicinal pteridoflora surey, being applied in popular medicine //Abstracts of international scientific conference «Achieuements in health çare in Turkmenistan». Ashgabat, 2008.

158. Geylan A. Tibbi bitiler I. Bornova/Izmir. 1995. S. 140.

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

औषधीय पौधों के लातिन एवं वानस्पतिक नाम शब्दावली
LATIN—BOTANICAL—GLOSSARY OF NAMES OF MEDICINAL PLANTS

ACHILLEA BIEBERSTEINII	अकील्लेआ बिएबेर्स्तेइनिई
ACHILLEA KERMANICA	अकील्लेआ केर्मानिका
ACHILLEA MILLEFOLIUM-MILFOIL	अकील्लेआ मिल्लेफोलिउम-मिल्फोइल
ADIANTUM CAPILLUS VENERIS	अदिआन्तुम कपिल्लुस वेनेरिस
AGRIMONIA ASIATICA	आग्रीमोनिआ आसिआतिका
ALHAGI PERSARUM	अल्हागी पेर्सारुम
ALLIUM PARADOXUM	आल्लिउम पारादोक्सुम
ALLIUM PORRUM	आल्लिउम पोर्रुम
ALLIUM SUVOROVII	आल्लिउम सूवोरोविई
ALLOCHRUSA GYPSOHILOIDES	ऐलोक्रूसा जिप्सोहिलोइदेस
ALTHAEA ARMENIACA	आल्तेआ आर्मेनिआका
ALTHAEA OFFICINALIS	आल्तेआ ओफ़्फिचिनालिस
AMYGDALUS COMMUNIS	अमीग्दलुस कोम्यूनिस
ANCHUSA ITALICA	आंकुसा ईतलिका
ARCTIUM LEIOSPERMUM	आर्क्तिउम लेइओस्पेर्मुम
ARTEMISA PERSICA	आर्तेमीसा पेर्सिका
ARGUSIA SIBIRICA	आर्गुसिआ सिबिरिका
ARNEBIA DECUMBENS	आर्नेबिआ देकुम्बेन्स
ARTEMISIA BALCHANORUM	आर्तेमीसिआ बल्कानोरुम WORMWOOD वम्वुड
ARTEMISA ABSINTHIUM	आर्तेमीसिआ आब्सिंतिउम COMMON WORMWOOD कॉमन वम्वुड
ARTEMISIA ANNUA	आर्तेमीसिआ आन्नुआ
ARTEMISIA CINIFORMIS	आर्तेमीसिआ चीनीफोर्मिस
ARTEMISIA KOPETDAGHHENSIS	आर्तेमीसिआ कोपेतदघेन्सीस
(KOPETDAGH SAGEBRUSH)	(कोपेतदग सेजब्रस)
ARTEMISIA LEUCODES	आर्तेमीसिआ लेउकोदेस
ARTEMISIA SANTOLINA	आर्तेमीसिआ संतोलिना
ARTEMISIA SCOPARIA	आर्तेमीसिआ स्कोपारिआ
ARUM KOROLKOVII	आरुम कोरोलकोविई
ARTEMISIA SEROTINA	आर्तेमीसिआ सेरोतिना
ASTRAGALUS SQUARROSUS	आस्त्रागालुस स्कुआर्रोसुस
ASPARAGUS OFFICINALIS	अस्परागुस ओफ़्फिचिनालिस
ASPARAGUS PERSICUS	अस्परागुस पेर्सिचुस
ASPLENIUM ADIANTUM-NIGRUM	आस्प्लेनिउम अदिआंतुम-नीग्रुम
ASPLENIUM RUTA-MURARIA	आस्प्लेनिउम रूता-मुरारिआ
ASPLENIUM TRICHOMANES	आस्प्लेनिउम त्रिकोमनेस
ASPLENIUM VIRIDAE	आस्प्लेनिउम विरिदे
ATRIPLEX TATARICA	आत्रिप्लेक्स तातारिका
BERBERIS TURCOMANICA	बेर्बेरिस तुर्चोमानिचा
BIDENS TRIPARTITA	बिदेन्स त्रिपार्तिता
BIEBERSTEINIA MULTIFIDA	बिएबेर्स्तेइनिआ मुल्तिफ़िदा
BONGARDIA CHRYSOGONUM	बोंगार्दिआ क्रिसोगोनिउम
BRYONIA ALBA	ब्रिओनिआ आल्बा
BRYONIA DIOICA	ब्रिओनिआ दिओइका
BUNIUM AFGHANICUM	बूनिउम आफ्घानिकुम
BUPLEURUM EXALTATUM	बूप्लेउरम एक्सल्तातुम
CAPPARIS HERBACEA	काप्पारिस हेर्बाचेआ
CAPSELLA BURSA PASTORIS	काप्सेल्ला बुर्सा पास्तोरिस

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

CAPSICUM ANINUM	काप्सिकुम आन्नुउम
CELTIS CAUCASICA	चेल्तिस काउकसिका
CENTAUREA CYANUS	चेन्ताउर्रेआ चिअनुस
CENTAURIUM PULCHELLUM	चेन्ताउरिउम पुलकेल्लुम
CEPHALARIA SYRIACA	चेफालारिआ सीरिआका
CERCIS GRIFFITHII	चेर्चिस ग्रिफ्फितीई
CETARACH OFFICINARUM	चेताराक ओफ्फिचिनारुम
CHEILANTHES PERSICA	केइलांतेस पर्सीका
CHEILANTHES PTERIDIOIDES	केइलांतेस प्तेरीदिओइदेस
CHENOPODIUM ALBUM	केनोपोदिउम आल्बुम
CICHORIUM INTYBUS	चिकोरिउम इंतीबुस
CINNAMOMUM CASSIA	चिन्नामोमुम कास्सिआ
CNICUS BENEDICTUS	क्निकुस बेनेदिक्तुस
COLCHICUM KESSELRINGII	कोल्किकुम केस्सेल्रिंगीइ
COLCHICUM LUTEUM	कोल्कीकुम लूतेउम
CONIUM MACULATUM	कोनिउम माकुलातुम
CONVOLVULUS ARVENSIS	कोन्वोल्वुलुस आर्वेन्सिस
COTONEASTER NUMMULARIUS	कोतोनेआस्तेर नुम्मुलारिउस
CRAMBE KOTSCHYANA	क्राम्बे कोत्स्विआना
CRATAEGUS PONTICA	क्रातेगुस पोन्तिका
CRATAEGUS TURKESTANICA	क्रातेगुस तुर्केस्तानिका
CROCUS MICHELSONII	क्रकुस मीकेल्सोनिई
CURCUMA DOMESTICA	कुर्कुमा दोमेस्तिका
CUSCUTA APPROXIMATA	कुस्कूता आप्रोक्सिमाता
CUSCUTA CHINENSIS	कुस्कूता कीनेन्सिस
CUSCUTA LEHMANNIANA	कुस्कूता लेमान्निआना
CUSCUTA MONOGYNA	कुस्कूता मोनोजीना
CYNODON DACTYLON	चिनोदोन दाक्तिलोन
CYNOGLOSSUM CRETICUM	चिनोग्लोस्सुम क्रेतिकुम
CYPERUS ROTUNDUS	चिपेरुस रोतुंदुस
CYSTOPTERIS FRAGILS	चिस्तोप्तेरिस फ्राजिलिस
DACTYLORHIZA UMBROSA	दाक्तिलोरिजा उंब्रोसा
DATURE STRAMONIUM	दतूरे स्त्रामोनीउम
DAUCUS CAROTA	दाउकुस करोता
DELPHINIUM SEMIBARBATUM	डेल्फिनिउम सेमीबार्बातुम
DIANTHUS MACRONYX	दिआन्तुस माक्रोनीक्स
DIPSACUS LACINIATUS	दिप्साकुस लचिनिआतुस
DOREMA AITCHISONII	दोरेमा अइत्कीसोनिइ
DRYOPTERIS BARBIGERA	द्रिओप्तेरिस बार्बिजेरा
ELAEAGNUS ORIENTALIS	एलेआग्नुस ओरिएन्तालिस
ELYTRIGIA REPENS	एलित्रिजिआ रेपेन्स
EPHEDRA EQUISETINA	एफ़ेड्रा एक्वीसेतिना
EPHEDRA INTERMEDIA	एफ़ेड्रा इंतेरमेदिआ
EQUISETUM ARVENSE	एक्वीसेतुम आर्वेन्से
EREMURUS SUBALBIFLORUS	एरेमुरुस सुबाल्बिफ्लोरुस
ERODIUM CICONIUM	एरोदिउम चिचोनिउम
ERYGERON CANADENSIS	एरिजेरोन कनादेन्सिस
ERYNGIUM CAUCASICUM	एरिंजिउम काउकसिकुम
EUPHRASIA PECTINATA	एउफ्रासिआ पेक्तिनाता
FERULA BADRAKEMA	फ़ेरूला बाद्राकेमा
FERULA GUMMOSA	फ़ेरूला गुम्मोसा
FERULA OOPODA	फ़ेरूला ओपोदा
FICUS AFGHANISTANICA	फ़ीकुस अफ़गानिस्तानिका
FICUS CARICA	फ़ीकुस करीका

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

FRAXINUS SYRIACA	फ़्राक्सिनुस सीरिआका
FUMARIA VAILLANTII	फूमालुस दोमेस्तिका
GALIUM PAMIRO-ALAICUM	गालिउम पामिरो-अलाइकुम
GENTIANA OLIVERI	जेन्तिआना ओलीवेरी
GEUM URBANUM	जेउम उर्बानुम
GLAUCIUM ELEGANS	ग्लाउचिउम एलेगांस
GLAUCIUM FIBRILLIGERUM	ग्लाउचिउम फ़िब्रिल्लिजेरूम
GLYCYRRHIZA GLABRA	ग्लीचीरीज़ा ग्लाब्रा
GNAPHALIUM LUTEO-ALBUM	ग्नाफ़ालिउम लूतेओ-आल्बुम
HANTHIUM STRUMARIUM	हांतीउम स्त्रुमारिउम
HELICHRYSUM OOCEPHALUM	हेलीक्रीसुम ओओचेफालुम
HERNIARIA GLABRA	हेर्निआरिआ ग्लाब्रा
HYOSCYAMUS NIGER	हीओशिआमुस नीजेर
HYPERICUM PERFORATUM	हीपेरिकुम पेर्फोरातुम
INULA BRITANICA	इनुला ब्रितानिका
IXIOLIRION TATARICUM	इक्सिओलिरिओन तातारिकुम
JUGLANS REGIA	यूग्लांस रेजिआ
JUNIPERUS ZERAVSCHANICA	यूनिपेरुस जेराव्स्कानिका
JUNIPERUS TURCOMANICA	यूनिपेरुस तुर्कोमानिका
352 LALLEMANTIA ROYLEANA	लल्लेमांतिआ रोइलेआना
LAMIUM ALBUM	लामिउम आल्बुम
LEONTICE EWERSMANNII	लेओंतीचे एवेर्स्मान्निइ
LEONURUS TURKESTANICUS	लेओनुरुस तुर्केस्तानिकुस
LIPEDIUM SATIVUM (PEPPER-GRASS)	लिपेदिउम सतीवुम (पेप्पर ग्रास)
LYCIUM DEPRESSEUM	लीचिउम देप्रेस्सेउम
MALUS DOMESTICA	मालुस दोमेस्तिका
MALVA NEGLECTA	माल्वा निग्लेक्ता
MARRUBIUM ANISODON	मार्रुबिउम अनिसोदोन
MARRUBIUM VULGARE	मार्रुबिउम वुल्गारे
MEDIASIA MACROPHYLLA	मेदिआसिआ माक्रोफ़ील्ला
MENTHA ASIATICA	मेन्ता आसिआतिका
MENTHA LONGIFOLIA	मेन्ता लोंजीफ़ोलिआ
MENTHA PIPERITA (PEPPERMINT)	मेन्ता पिपेरिता (पेप्परमिंट)
MORUS ALBA (MULBERRY)	मोरुस आल्बा (मलबेरी)
MORUS NIGRA	मोरुस नीग्रा
MUSCARI LEUCOSTOMUM	मुस्कारि लेउकोस्तोमुम
NANOPHYTON ERINACEUM	नानोफितोन एरिनाचेउम
NEPETA CATARIA	नेपेता कतारिआ
ONOPODIUM ACANTHIUM	ओनोपोदिउम अकान्तिउम
OPHIOGLOSSUM VULGATUM	ओफिओग्लोस्सुम वुल्गातुम
ORCHIS PSEUDOLAXIFLORA	ओर्किस प्सेउदोलाक्सिफ्लोरा
PAPAVER PAVONINUM (RED POPPY)	पपावेर पावोनिनुम (लाल पोप्पी)
PEDICULARIS PYCNANTHA	पेदिकुलारिस पिक्नांता
PEGANUM HARMALA	पेगनुम हार्माला
PHRAGMITES AUSTRALIS	फ्राग्मितेस आउस्त्रालिस
PHYLLITIS SCOLOPENDRIUM	फ़ील्लितिस स्कोलोपेंद्रिउम
PHYSALIS ALKEKENGI	फ़ीसालिस अल्केकेन्जी
PISTACIA VERA	पिस्ताचा वेरा
PLANTAGO MAJOR	प्लांतागो मायोर
PLANTAGO SQUALIDA	प्लांतागो स्कुआलिदा
PLATANUS ORIENTALIS	प्लतानुस ओरिएन्तालिस
PLUMBAGO EUROPAEA	प्लुंबागो एउरोपेआ
POLYGONATUM SEWERZOWII	पोलीगोनातुम सेवेर्जोविइ
POLYGONUM AVICULARE (KNOT GRASS)	पोलीगोनुम आविकुलारे (नॉट ग्रास)

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

POLYGONUM PERSICARIA	पोलीगोनुम पेर्सिकारिआ
POPULUS ALBA	पोपुलुस आलबा
PORTULACA OLERACEA	पोर्तुलाका ओलेराचा
PRIMULA FEDTSHENKOI	प्रिमुला फेत्शेंकोई
PRUNELLA VULGARIS	प्रूनेल्ला वुल्गारिस
RANUNCULUS SEWERZOWII	रानुन्कुलुस सेवेर्ज़ोविइ
RHEUM TURKESTANICUM	रेउम तुर्केस्तानिकुम
RHUS CORARIA	रूस कोरारिआ
RICINUS COMMUNIS	रिचिनुस कोम्मूनिस
ROEMERIA REFRACTA	रोमेरिआ रेफ़्राक्ता
ROSA BEGGERIANA	रोज़ा बेग्गेरिआना
ROSA CANINA	रोज़ा कानीना
ROSA MARACANDICA	रोज़ा माराकांदिका
RUBUS ANATOLICUS	रूबुस अनातोलिकुस
RUBUS CAESIUS	रूबुस केसिउस
RUBUS IDAEUS	रूबुस ईदेउस
RUMEX CRISPUS	रुमेक्स क्रिस्पुस
SALSOLA RICHTERI	सल्सोला रिक्तेरि
SALVIA SPINOZA	साल्विआ स्पीनोज़ा
SAMBUCUS EBULUS-GRASS-ELDER	सांबूकुस एबुलुस-ग्रास एल्डर
SCABIOSA COLUMBARIA	स्कबिओसा कोलुंबारिआ
SCORZONERA LITVINOVII	स्कोर्ज़ोनेरा लित्विनोविइ
SCUTELLARIA GALERICULLATA	स्कुतेल्लारिआ गलेरिकुल्लाता
SIDERITIS MONTANA	सीदेरितिस मोन्ताना
SILYBUM MARIANUM	सिलिबुम मारिआनुम
SOLANUM NIGRUM	सोलानुम नीग्रुम
SOLANUM PERSICUM	सोलानुम पेर्सिकुम
SOPHORA PACHYCARPA (PAGODA-TREE)	सोफ़ोरा पकीकार्पा (पगोडा-ट्री)
SPINACIA TURKESTANICA	स्पीनाचा तुर्केस्तानिका
SPIRAEA HYPERICIFOLIA	स्पीरेआ हीपेरिचिफोलिआ
STACHYS LAVANDULIFILLA	स्तकीस लावांदुलिफिल्ला
STELLARIA MEDIA	स्तेल्लारिआ मेदिआ
TANACETUM HETEROPHYLLUM	तनचेतुम हेतेरोफील्लुम
TARAXACUM OFFICINALE (CANKERWORT)	ताराक्साकुम ओफ्फिचिनाले (कंकेरवर्ट)
TEUCRIUM SCORDIODES	तेउक्रिउम स्कोर्दिओदेस
THALICTRUM ISOPYROIDES	तालिक्त्रुम ईसोपीरोइदेस
THALICTRUM MINUS	तालिक्त्रुम मिनुस
THYMUS TRANSCASPICUS	तिमुस त्रांस्कास्पिकुस
TRIBULUS TERRESTIS	त्रिबुलुस तेर्रेस्तिस
TRIGONELLA FOENUM-GRAECUM	त्रिगोनेल्ला फ़ेनुम-ग्रेकुम
TUSSILAGO FARFARA	तुस्सिलागो फ़ार्फ़ारा
TYPHA LATIFOLIA	तीफ़ा लतिफ़ोलिआ
ULMUS CARPINIFOLIA	उल्मुस कार्पिनिफ़ोलिआ
UNGERNIA VICTORIS	उंजेर्निआ विक्तोरिस
URTICA DIOICA	उर्तीका दिओइका
VERBASCUM SONGARICUM	वेर्बास्कुम सोंगारिकुम
VERBENA OFFICINALIS	वेर्बेना ओफ्फिचिनालिस
VIOLA OCCULTA	विओला ओक्कुल्ता
VITEX AGNUS CASTUS	वीतेक्स आग्नुस कास्तुस
ZINGIBER OFFICINALE	जिंजिबेर ओफ्फिचिनाले
ZIZIPHORA CAPITATA	ज़ीजिफोरा कपिताता
ZIZIPHERUS JUJUBA	ज़ीजिफ़ेरुस यूयूबा

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

Gurbanguly Berdymuhamedov,
Doctor of Medicine

Medicinal plants of Turkmenistan

Printed in India

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

TÜRKMENISTANYŇ
ÖSÜMLIKLERI

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection